विश्वरूप जयादित्य जय विष्णो जयाच्युत। जय केशव ईशान जय कृष्ण नमोऽस्तु ते।। जयादित्य जय स्वाभिञ्जय भानो जयामल। जय वेदपते शश्वनारयास्मानहर्पते।।

श्रीसूर्याय नमः

श्रीसरस्वत्यै नमः
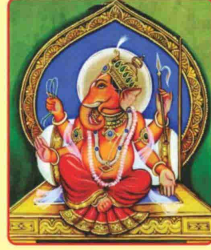
श्रीगणेशाय नमः

श्रीविष्णवे नमः

श्रीशंकराय नमः

श्रीसूर्यसिद्धान्त पर आधारित राजस्थान का एकमात्र

श्रीसर्वेश्वर - जयादित्य - पञ्चाङ्गम्

गणितकर्ता : आचार्य विनय झा (त्रिस्कन्ध ज्योतिर्विद्)
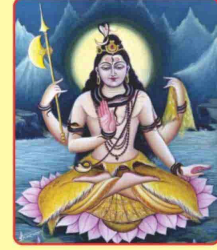
प्रधान सम्पादक : पं. अमित शर्मा (जयपुर)

युधिष्ठिर संवत्-5161
कलि संवत्-5126
विक्रम संवत्-2081
शक संवत्-1946
निम्बार्काब्द-5119-20
ईस्वी सन्-2024-25

संवत्सर - कालयुक्त
राजा - मंगल
मन्त्री - शनि
अक्षांश रेखांश
26/55 उत्तर तथा
75/48 पूर्व जयपुर

प्रकाशक
श्रीनिम्बार्कपरिषद्
मन्दिर श्रीसरसबिहारी जी
कलवाड़ा, तह. सांगानेर, जयपुर

मार्गदर्शक
अखिल भारतीय विद्वत्परिषद्
वाराणसी

।। श्रीसर्वेश्वरो जयति ।।

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

ठाकुर श्री सरसबिहारी जी सरकार

रुक्मिणीसत्यभामाव्रजस्त्रीविशिष्टः श्रीभगवान्
पुरुषोत्तम वासुदेवः सम्प्रदायिभिर्वैष्णवैः सदोपासनीयः
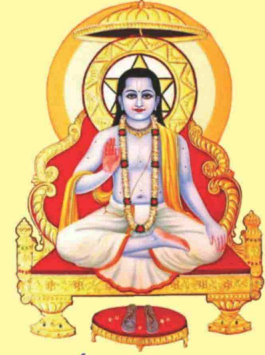
सुदर्शन चक्रावतार जगद्गुरु
भगवान श्रीनिम्बार्काचार्य

श्रीनिम्बार्क परिषद्

अनन्तश्री विभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज

सर्वज्ञो जगतः कर्ता भक्ताभीष्टप्रदो विभुः। यः केशवो नमामस्तं शरण्यं भक्तवत्सलम्।।
ॐ जय जयेङ्गितज्ञाता नियमानन्द आत्मवान्। नियमेन वशे कुर्वन्भगवन्मार्गदर्शकः।।

हे आचार्यशिरोमणे!

आपश्री के आश्रित ''श्रीनिम्बार्क परिषद्'' द्वारा समस्त शास्त्रवचन पोषित आर्ष
सूर्यसिद्धान्तीय गणना आधारित भारतवर्ष के मान्य आचार्यों द्वारा प्राप्त
सम्मति एवं विद्वानों के परिश्रम से निर्मित यह
''श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग''
आपश्री को ही समर्पित है।

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

विषयानुक्रमणिका

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

विश्वरूप **जयादित्य** जय विष्णो जयाच्युत ।
जय केशव ईशान जय कृष्ण नमोऽस्तु ते ॥- *व.पु.*

जयादित्य जय स्वामिञ्जय भानो जयामल।
जय वेदपते शश्वत्तारयास्मानहर्पते ॥- *स्क.पु.*

कालयुक्त नाम संवत्सर 2081, 2024-25 ई.

श्रीसूर्यसिद्धान्त पर आधारित
राजस्थान का एकमात्र पञ्चांग

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

✻ संरक्षक ✻

श्रीमहन्त श्रीवृन्दावनबिहारीदास जी महाराज
'काठिया बाबा' सुखचर, कोलकाता

महन्त श्रीबनवारीशरण जी महाराज
प्रन्यासी अ.भा. निम्बार्काचार्यपीठ, जूसरी, मकराना

महन्त श्रीवृन्दावनदास जी महाराज
महामंत्री अ.भा. श्रीनिम्बार्क महासभा, वृन्दावन

श्रीमहन्त महामण्डलेश्वर
श्रीपद्मनाभशरणदेवाचार्य जी महाराज
श्रीसर्वेश्वर सेवाधाम, जयपुर, परमाध्यक्ष श्रीनिम्बार्कपरिषद्

डॉ. कामेश्वर उपाध्याय
महासचिव, अखिल भारतीय विद्वत्परिषद्, वाराणसी

✻ मार्गदर्शक ✻

पं. आदित्यमोहन शर्मा
प्रधान सम्पादक, जयविनोदी जयपुर पञ्चांग

पं. गङ्गाधर पाठक
मुख्याचार्य श्रीरामजन्मभूमि शिलापूजन, अयोध्या

✻ पञ्चाङ्ग गणितकर्ता ✻

आचार्य श्री विनय झा
संरक्षक, अखिल भारतीय विद्वत्परिषद्, वाराणसी

✻ प्रधान सम्पादक ✻

पं. अमित शर्मा
महामंत्री, श्रीनिम्बार्कपरिषद्, जयपुर

✻ सह सम्पादक ✻

पं. पुरुषोत्तम शर्मा
राजज्योतिषी, कलवाड़ा, जयपुर

डॉ. गोविन्दचन्द्र द्विवेदी
ज्योतिषाचार्य, मीरजापुर, उ.प्र.

✻ प्रबन्ध सम्पादक ✻

मुदित मित्तल
ज्योतिषाचार्य, अ.भा.विद्वत्परिषद्, जयपुर

✻ प्रकाशक ✻

श्रीनिम्बार्क परिषद्

मन्दिर श्रीसरसबिहारी जी गढ़ के सामने,
कलवाड़ा, जयपुर, राजस्थान - 302037
7425824413, 7976006514
Email- ssjayadityapanchang@gmail.com
Website- www.nimbarkparishad.com

✻ मार्गदर्शक ✻

अखिल भारतीय विद्वत्परिषद्, वाराणसी
देवतायन, 96, जानकीनगर, वाराणसी, उत्तरप्रदेश

✻ समर्थक विद्वान एवं विशिष्ट सहयोग ✻

स्वामी श्रीसियारामदास जी महाराज नैयायिक
श्रीमहन्त, सर्वेश्वर श्रीरघुनाथ जी मंदिर, माउंट आबू

महन्त श्री अवधेशदास जी महाराज
श्रीसिद्धेश्वर हनुमान जी मंदिर, सोडाला, जयपुर

श्री हरिप्रियदास जी महाराज 'विद्याभूषण'
श्रीमद्भागवत मर्मज्ञ, पराभक्तिपीठम्, वृन्दावन

स्वामी श्री राघवेन्द्रदास जी महाराज
धर्मशास्त्रमर्मज्ञ, हृषीकेश

प्रो. अर्कनाथ चौधरी
पूर्व निदेशक, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर

डॉ. पारसनाथ ओझा
प्रधान संपादक, आदित्य पञ्चाङ्ग, काशी

पं. बजरंगलाल शर्मा
आचार्य, श्रीवैकुण्ठनाथ जी मन्दिर, हरिमार्ग, जयपुर

डॉ. नमिता मित्तल
सहा.आचार्य, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर

पं. रमाकान्त शर्मा ज्योतिषाचार्य, जयपुर
पं. मोहित शर्मा ज्योतिषाचार्य, जयपुर
डॉ. शचीन्द्रनाथ उपाध्याय दिल्ली वि.वि.
डॉ. सिद्धार्थ माहेश्वरी एटलांटा, यू.एस.ए.
पं. साकेत झा अ.भा. विद्वत्परिषद्
पं. गोविन्द झा

✻ नवग्रह चित्रांकन ✻

श्री दृढ़व्रत गॉरिक
Drdha Vrata Gorrick - Website: www.divyakala.com

✻ संवत् 2081 के व्रत पर्व निर्णय ✻

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

✻ **वर्षारम्भ तथा नवरात्र स्थापना** – चैत्र शुक्ल प्रतिपदा संवत 2081 मंगलवार दिनाँक 9 अप्रैल 2024 कालयुक्त नाम संवत्सर का प्रारम्भ होगा इस दिन प्रत्येक घर में ध्वजारोहण नवीन निम्बदल भक्षण, पञ्चांग श्रवण करना चाहिए इसी दिन वासंतिक नवरात्र प्रारम्भ होंगे। इस वर्ष वैधृति योग होने से अभिजित् काल में कलश-स्थापन होगा। **घटस्थापना मुहूर्त्त- अभिजित् 12:06 - 12:54** चौघड़िया देखकर स्थापना करना अशास्त्रीय है।

✻ **श्रीराम नवमी** – चैत्र शुक्ल नवमी के मध्याह्न में पुनर्वसु नक्षत्र, कर्क लग्न में प्रभु श्रीराम का जन्म हुआ था। व्रतपूर्वक श्रीरामजी का जन्माभिषेक कर श्रीरामचरितमानस, श्रीरामरक्षास्तोत्र का पाठ करे। इस वर्ष श्रीरामनवमी 17 अप्रैल 2024 बुधवार को है।

✻ **अक्षय तृतीया-** वैशाख शुक्ल तृतीया पूर्वाह्न व्यापिनी ग्रहण करनी चाहिये, रोहिणी नक्षत्र सहित तृतीया बुधवार से युक्त होने पर भी द्वितीया से विद्धा हो तो वर्जित है, यह तृतीया युगादि भी है और शुक्ल पक्ष की युगादि में पूजन श्राद्ध पूर्वाह्न में ही ग्राह्य है, दोनों दिन पूर्वाह्न व्यापिनी हो तो अगली ही लेनी चाहिए, शुक्ल पक्ष की युगादी तथा मन्वादी तिथियों में उदयव्यापिनी तिथि ही ग्राह्य है। 10 मई शुक्रवार 2024 को उदयकाल व्यापिनी तृतीया और रोहिणी नक्षत्र है, अतः इसी दिन अक्षय तृतीया है। व्रतोपवास में उदयकाल व्यापिनी तिथि लेनी चाहिये, इस मत से श्री परशुराम जयन्ती भी इसी दिन मानना उचित है।

✻ **रक्षाबन्धन** – संवत 2081 में शुद्ध श्रावण शुक्ल पूर्णिमा 19 अगस्त 2024 को है। रक्षाबन्धन श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को भद्रारहित अपराह्नकाल में कहा गया है। भद्रा में श्रावणी करने से राजा की हानि होती है। *''भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा। श्रावणी नृपति हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी॥''* – निर्णयसिन्धु। इस दिन दोपहर 13 बजकर 21 मिनट तक भद्रा रहेगी अतः **राखी बाँधने का शुद्ध मुहूर्त्त दोपहर 13:21 के पश्चात् रहेगा।**

✻ **महागणपति चतुर्थी** – भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को मध्याह्न काल में श्रीगणेश जी का पूजन करना चाहिए। **7 सितम्बर 2024** को 13:46 तक चतुर्थी तिथि रहेगी, मध्याह्न काल प्रातः 11:09 से 13:38 तक रहेगा। अतः **11:09 से 13:38 तक पूजन करना श्रेष्ठ रहेगा।**

✻ **शारदीय नवरात्र** – संवत 2081 में आश्विन शुक्ल प्रतिपदा 3 अक्टूबर 2024 को शारदीय नवरात्र आरम्भ होंगे। वैधृति एवं चित्रा रहित शुभमुहूर्त में कलशस्थापन होता है, परन्तु संवत 2081 में इस दिन सम्पूर्ण दिन चित्रा-वैधृति नहीं है। अतः **घटस्थापना मुहूर्त्त** – सूर्योदय से 10 घटी पर्यन्त श्रेष्ठ 06:22-10:22, व अभिजित् काल 11:50 - 12:38 में किया जाएगा।

✻ **शरद पूर्णिमा** – शरदपूर्णिमा के चन्द्रकिरणों में खीर रखना, कोजागरी पूजा, महारास पूजा आदि कृत्य 16 अक्टूबर को करना शास्त्रसम्मत रहेगा।

✻ **धन त्रयोदशी** – कार्तिक कृष्ण त्योदशी के दिन प्रदोषकाल में यमदीपदान करने से अपमृत्यु का नाश होता है। 29 अक्टूबर 2024 को प्रदोषकाल 17:41 से 20:05 तक है।

✻ **धन्वन्तरी जयन्ती** – उदयकाल व्यापिनी कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी 30 अक्टूबर 2024 को धन्वन्तरी जयन्ती है।

✻ **नरक चतुर्दशी-** कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को प्रदोषकाल में नरक नाश हेतु चार बत्ती संयुक्त दीपदान करना चाहिये, अक्टूबर 2024 को प्रदोषकाल 17:40 से 20:04 तक है।

✻ दीपावली पूजन समय ✻

✻ **दीपावली लक्ष्मी पूजन** – प्रदोष व्यापिनी अमावस्या को प्रदोषकाल में दीपदान-उल्का प्रदर्शन करके श्रीमहालक्ष्मी का पूजन करें फिर प्रसाद भोजन ग्रहण करें। संवत 2081 में 31 अक्टूबर 2024 को प्रदोषकाल व्यापिनी दर्श अमावस्या होने से दीपावली पर्व होगा। पूरे देश में इसी दिन 31 अक्टूबर को दीपावली मनाई जाएगी, 1 नवंबर को दीपावली मनाना शास्त्रविरुद्ध है। बिना मुहूर्त्त के दीपावली बनाना निष्फल होगा, अर्थात् उसका कुछ भी फल प्राप्त न होगा।

✻ **प्रदोषकाल** –	17:39 - 20:03
✻ **सर्वश्रेष्ठ स्थिर वृष लग्न** -	18:36 - 20:31
✻ **वृष लग्न में सिंह नवांश**-	18:46 - 18:57
✻ **वृष लग्न में वृष नवांश** -	19:23 - 19:35
✻ **रात्रिकालीन सिंह लग्न** -	25:06 - 27:22

दीपावली पूजन प्रदोषकाल में होता है अतः दिन में पूजन करने का कोई विधान/मुहूर्त नहीं है। चौघड़िया मात्र यात्रा का मुहूर्त्त है अतः पूजन में उसकी कोई उपयोगिता नहीं है।

✻ **गोवर्धन पूजा** - 1 नवंबर को 18:17 प्रतिपदा शुरू होकर 2 नवंबर को रात्रि में 20:22 बजे तक है। 2 नवंबर को 34 घटी 12 पल प्रतिपदा होने से इसी दिन गोवर्धन पूजा होगी। क्योंकि धर्मसिंधु में कहा है, गौक्रीड़ा गोवर्धन उत्सव चन्द्रदर्शन निषेध होने से ही पूर्वविद्धा प्रतिपदा में कहा है, परन्तु यदि उदय से दश मुहूर्त्त तक प्रतिपदा हो तो चन्द्रदर्शन नहीं होता और चन्द्रदर्शन जनित द्वितीयावेध का निषेध समाप्त हो जाने से गोवर्धनपूजा अन्नकूट आदि दूसरी प्रतिपदा में ही होते हैं। और चन्द्र का सूक्ष्म दर्शन तीन मुहूर्त्त द्वितीया के बाद और स्थूल दर्शन द्वितीया की 12 घटी बाद होता है। यदि प्रतिपदा दोनों दिन सायाह्नव्यापिनी हो तो उत्तरदिन द्वितीया से युक्त ही ग्राह्य है। 'वर्धमानतिथौ नन्दा यदा सार्धत्रियामिका। द्वितीया या वृद्धिगामित्वादुत्तरा तत्र चोच्यते।' 2 नवंबर को प्रतिपदा साढ़े तीन प्रहर से अधिक है, इसलिए 2 नवंबर को ही गोवर्धन पूजा, अन्नकूट महोत्सव करना शास्त्रसम्मत होगा।

✻ **होलिका दहन** – होलिका दहन फाल्गुन शुक्लपक्ष की भद्रारहित प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा को ग्राह्य है। संवत 2081 में फाल्गुन शुक्ल चतुर्दशी 13 मार्च 2025 ईस्वी को प्रदोषकाल व्यापिनी पूर्णिमा है। इस दिन रात्रि 22:59 तक भद्रा समाप्त होने के उपरान्त 13 मार्च 2025 में रात्रि 22:59 से मध्यरात्रि 24:37 के मध्य होलिका दहन होगा। *दिनार्धात् परतो या स्यात् फाल्गुनी पूर्णिमा यदि। रात्रौ भद्रावसाने तु होलिकां तत्र पूजयेत्॥ - भविष्योत्तर* अर्थात् यदि पहले दिन प्रदोष के समय भद्रा हो और दूसरे दिन सूर्यास्तसे पूर्व पूर्णिमा समाप्त हो जाए तो भद्रा के समाप्त होने की प्रतीक्षा करके रात्रि में होलिकादाह करना चाहिए। भद्राकाल रात्रि 22:59 पर ही समाप्त हो रहा है अतः 13 मार्च 2025 को रात्रि 22:59 से पहले होलिका दहन शास्त्र एवं परम्परा के विरुद्ध होगा।

✻ नम्र निवेदन ✻

सम्मानीय धर्मानुरागी जन !

'**श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग**' का तृतीय पुष्प विक्रम संवत् 2081 के समस्त व्रतपर्वोत्सवों हेतु आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है।

गत वर्षों के प्रकाशन के पश्चात् एक बात बारम्बार मुख्य रूप से पूछी गई की इतने पञ्चाङ्गों के होते हुए एक नए पञ्चाङ्ग की आवश्यकता क्यों? तो इसका एकमेव समाधान यही निवेदित है कि '**तिथिर्विष्णुस्तथा वारो नक्षत्रं विष्णुरेव च योगश्च करणं चैव सर्वं विष्णु मयं जगत्**' और उन धर्ममूर्ति भगवान् श्रीविष्णु के अनुगत समस्त धर्मपारायण जीवों द्वारा जिन वेद प्रतिपादित नियमों के पालन किया जाता है उनका नाम धर्म है और इन धर्मकृत्यों के व्यवस्थित पालन हेतु पञ्चाङ्ग नामक साधन का प्रणयन ऋषियों ने किया। सिद्धान्तग्रन्थों में इस रीति का विशद वर्णन है, जिसका अवलम्ब लेकर भारतवर्ष के प्रत्येक क्षेत्र से पञ्चाङ्ग प्रकाशित होते आये हैं। परन्तु विगत कुछ समय से पञ्चाङ्ग निर्माण की विधि को लेकर मतभेद प्रकट हुए हैं तथा भिन्न भिन्न गणना विधि से पञ्चाङ्ग बनने से सामान्य जन में व्रतोपवास एवं पर्वों को लेकर सतत् संशय की स्थिति निर्मित हो गयी है।

'**वेदप्रणिहितो धर्मो ह्यधर्मस्तद्विपर्ययः।**' वेद प्रतिपादित नियमों के पालन करने का नाम धर्म और उसके विपरीताचरण का नाम ही अधर्म है। धर्माचरण के निर्णय हेतु '**तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्य व्यवस्थितौ**' इस भगवद्वाक्यानुसार एकमात्र शास्त्र ही प्रमाण है।

समस्त सिद्धान्त-ग्रंथों और पुराणों के अनुसार सूर्यसिद्धान्त के अनुसार ही ग्रह साधन और तिथ्यादि का निर्धारण करना चाहिए। व्यास जी का स्पष्ट वचन है (विष्णुधर्मोत्तर पुराण) कि ग्रहण आदि घटनाओं में जहाँ दर्शन की आवश्यकता हो वहाँ ग्रहस्पष्ट आदि को दृक्कर्म संस्कार द्वारा दर्शन योग्य बनाना चाहिए, किन्तु तिथ्यादि में उनका प्रयोग कभी भी नहीं करना चाहिए। निर्णयसिन्धु का भी वचन है कि अदृष्ट-फल हेतु सूर्यसिद्धान्त का प्रयोग करें नारद पुराण में सूर्यसिद्धान्त का विस्तृत गणित भी दिया गया है। अन्य सभी पुराणों में गणना के लिये सूर्यसिद्धान्त का ही प्रयोग किया गया है और सूर्यसिद्धान्त का ही निचोड़ भी प्रस्तुत किया गया है। धर्मसम्राट स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज ने ने अपने कुम्भ तिथ्यादि निर्णय में स्कन्दपुराण के कलिमाहात्म्य से उद्धृत करते हुए लिखा है-

दृक्सिद्धखेटग्रहसाधितासु कुर्वन्ति केचित्तिथिषु प्रमादात् ।
श्राद्धादिकं तत्पितृशापतस्ते पुण्यक्षयं दुर्गतिमाप्नुवन्ति ।।
तथापि सन्तो बहवोऽत्र धार्मिकाः पुरातनाचारमथाजहन्तः ।
सूर्यांशजोक्तार्जितकाल एव कर्माणि कुर्वन्ति सुखं लभन्ते ।।

कुछ लोग प्रमाद के कारण दृक् सिद्धग्रह गणित के द्वारा निर्धारित तिथियों के अनुसार श्राद्धादि वैदिक कर्म करते हैं, वे पितृशाप के कारण पुण्यक्षीण होने से दुर्गति को प्राप्त होते हैं।

फिर भी यहां बहुत से ऐसे धार्मिक हैं, जो पुरातन आचारपद्धति को न छोड़ते हुए सूर्यपुत्र मय के द्वारा कहे गये सूर्यसिद्धान्त द्वारा निर्धारित काल में ही श्राद्धादि-कर्म करते हैं, व सुख प्राप्त करते हैं।

अदृष्ट-फल-सिध्यर्थ यथार्कगणितं कुरु ।
गणितं यदि दृष्टार्थ तद्दृष्ट्युद्भव तस्सदा ।। निर्णयसिन्धु

''अदृष्ट (प्रारब्ध) फल की सिद्धि हेतु सूर्यसिद्धान्त (अर्क-गणित) का प्रयोग करें, दृष्ट प्रयोजन यदि हो तो उसके लिए दृष्ट से उद्धृत गणित सदा प्रयुक्त करें।

कालिदास ज्योतिर्विदाभरण में लिखते हैं कि पञ्चाङ्ग में अधिकमास, क्षयमास, ग्रहों की संक्रान्ति आदि सूर्यसिद्धान्तीय गणना से ही लेनी चाहिए-

श्रीसूर्यसिद्धान्तमतोद्भवार्कात् साध्यौ तदा तावधिकक्षयौ।
मासौ तदा संक्रमकाल एव साध्यः सदा हौरिकशास्त्रविद्भिः।।

परम् आश्चर्य का विषय है कि सभी व्रत पर्वों के निर्धारण में सर्वमान्य एवं सर्वाधिक प्रतिष्ठित ग्रन्थ निर्णयसिन्धु है। उत्तरभारत के प्रायः सभी पञ्चाङ्ग निर्णयसिन्धु का अवलम्बन लेते हैं। इसी निर्णयसिन्धु के कर्ता सिद्धान्ततत्त्वविवेककार आचार्य कमलाकर भट्ट ने धर्मकृत्य निर्णय एवं फलादेश में दृश्यपक्ष को नकारकर सूर्यसिद्धान्त को ही परम प्रामाणिक मानते हुए इसे वेदवत कहा है, '**प्रमाणं श्रुतिवद् ग्राह्यम्।**' तब सूर्यसिद्धान्त को भ्रमजाल बताने वाले निर्णयसिन्धु का भी त्याग क्यों नहीं कर देते। इसी प्रकार 'धर्मसिन्धु' के टीकाकार महामहोपाध्याय पण्डित सदाशिव शास्त्री मुसलगाँवकर ने 5000 वर्षों के गणित का अध्ययन करने के उपरान्त सूर्यसिद्धान्त को ही परमप्रामाणिक सिद्ध किया व सन् 1924 में ग्वालियर स्टेट में शास्त्रार्थ में वे सूर्यसिद्धान्त के पक्ष से विजयी हुए। ऐसी स्थिति में तो सूर्यसिद्धान्त के विरोधियों को निर्णयसिन्धु एवं धर्मसिन्धु दोनों का ही त्याग कर देना चाहिए।

दृक्गणित के पक्षपातियों का स्वसिद्धान्त के पक्ष में एकमेव कथन यह है कि उनकी गणना से ग्रह दर्शन प्रत्यक्ष होता है। इनके इस कथन पर वह कथा स्मरण हो आती है की जब गङ्गापुत्र भीष्म अपने पिता शान्तनु का श्राद्ध करने हरिद्वार गए। एकाग्रचित होकर उन्होंने जैसे ही विधिवत पिण्डदान देना आरम्भ किया, तो पिण्डवेदी पर बिछे कुशों में से एक हाथ निकलकर बाहर आया। शान्तनु स्वयं अपने निमित्त पिण्डदान लेने के लिये उपस्थित हो गए थे। धर्मनिष्ठ पुरूष भीष्म ने पिण्ड का दान उनके हाथ में न करके इस हेतु बनाई गयी वेदी के ऊपर रखे कुशों पर ही किया, क्योंकि शास्त्रों में कुशों पर ही पिण्डदान करने का विधान है- '**पिण्डो देयः कुशोष्वीति।**' पुत्र भीष्म की इस शास्त्रनिष्ठा पर शान्तनु अत्यन्त प्रसन्न हुए। स्पष्ट है धर्माधर्म का विवेक सूक्ष्म और अदृष्ट है जो 'अपूर्व' को उत्पन्न करता है। उसी प्रकार ज्योतिष का प्रमाण भी फलादेश होता है, भौतिक ग्रहों की दृश्यता नहीं।

केवल ग्रहदर्शनार्थ ही दृक्कर्मसंस्कार का शास्त्र में आदेश है, तिथि आदि के निर्णय में नहीं। ग्रहों के उदय-अस्त, शृङ्ग तथा सूर्य-चन्द्र के ग्रहण में ही दृक्कर्मसंस्कार करे, यह स्वयं सूर्यसिद्धान्त ही कहता है। श्रीमद्भागवत दशम स्कन्ध अध्याय आठ के पांचवें श्लोक में भी ज्योतिष को अतीन्द्रीय ही कहा गया है, उसके फलज्ञान को साक्षात् कहा गया है -

'**ज्योतिषामयनं साक्षाद् यत्तज्ज्ञानं अतीन्द्रियम्।**'

परन्तु पिछली कुछ शताब्दियों से भौतिकवादियों का बोलबाला बढ़ गया है, जो भौतिक पिण्डों को ही ज्योतिषीय ग्रह मानते हैं, किन्तु ऐसा करने पर ज्योतिषीय-ग्रहस्पष्ट में कई अंशों तक का अंतर पड़ जाता है, और षोडश-वर्गों में कई तो एकदम अशुद्ध बन जाते हैं और फलादेश सही नहीं निकलते। हमारे पूर्वज अविवेकी नहीं थे जो अभी कुछ समय पूर्व तक केरल से लेकर तिब्बत तक सहस्रों वर्ष पर्यन्त सूर्यसिद्धान्तीय पञ्चाङ्गों का प्रयोग करते आ रहे थे और ना ही आधुनिक पञ्चाङ्गकर्ता इतने मनोनिग्रही हैं कि उनके द्वारा सूर्यसिद्धान्तीय गणना को नकारा जाना स्वीकार किया जा सके।

जयपुराधीश महाराजा सवाई श्रीजयसिंह जी जो स्वयं ज्योतिष के विद्वान् थे, उन्होंने वेधशालाएँ निर्मित करवाकर ग्रहवेध द्वारा नवीनीकृत सारणियाँ बनवाई तथापि उनके शासन में व्रतपर्व-तिथि आदि निर्णयार्थ सूर्यसिद्धान्तीय गणना साधित पञ्चाङ्ग ही प्रकाशित किया गया जो विगत कुछ वर्षों पूर्व तक प्राचीन आर्षगणना द्वारा ही लगभग ढ़ाई शताब्दी से निरन्तर प्रकाशित होता रहा है। यह भारतख्यात सूर्यसिद्धान्तीय पञ्चाङ्ग ऐसे समय में भी धर्म की ध्वजा को थामे हुए था जब नवीन पञ्चाङ्गकर्ताओं ने अमावस्या में ही नवरात्र स्थापना करवा डाली थी और प्रत्येक पर्व-त्यौहारों के दो दो दिन पड़ने का क्रम आरम्भ हो गया था। आधुनिक दृग्गणित के पक्षपातियों ने सूर्यसिद्धान्त को कालबाह्य घोषित कर एकमेव दृग्गणित आधारित पञ्चाङ्ग को ही सर्वथा ग्राह्य बतलाते हुए समस्त धर्मशास्त्रीय प्रक्रिया का अतिक्रमण कर लिया तब जयपुर से प्रकाशित एकमात्र सौर पञ्चाङ्ग को भी विवशता में सूर्यसिद्धान्तीय गणना का त्याग करना पड़ा। यह घटना राजस्थान के ज्योतिष क्षेत्र के लिए अत्यन्त दुःखद थी।

ग्रहगणना सिद्धान्त का विवाद तो एक ओर रहा परन्तु वर्तमान में दृक्पक्षीय पञ्चाङ्गकर्ताओं की मनमानी पर्वों के निर्धारण में भी हतप्रभ कर देने वाली है। पर्वों के निर्धारण में अब शास्त्रवचन नहीं 'वर्तमानकाल की व्यवहारिता' को प्रयोग में लाने लगे हैं। अस्तु यह विषय इतना जटिल हो चुका है की इसका निराकरण सहज सम्भव नहीं लगने पर भी अगम्य नहीं है। बीज रूप में ही सही पर सिद्धान्त की रक्षा अवश्य ही हो, इस पावन उद्देश्य को लेकर संवत् 2078 से इस 'श्रीसर्वेश्वर-जयादित्य-पञ्चाङ्ग' का प्रकाशन आरंभ हुआ है। श्रीसूर्यसिद्धान्तीय गणितज्ञ व त्रिस्कन्धज्योतिर्विद् आचार्य श्री विनय झा जी ने जयपुर के आराध्यदेव ठाकुर श्रीगोविन्ददेवजी मन्दिर के अक्षांश रेखांशों पर पञ्चाङ्ग हेतु सूर्यसिद्धान्तीय सूक्ष्मगणितसाधन किया। आचार्य जी द्वारा साधित गणना से काशी, दरभंगा आदि अनेक स्थानों से पञ्चाङ्ग प्रकाशित हो रहे हैं।

जयपुर के प्राचीनतम पञ्चाङ्ग के प्रधान सम्पादक पं. श्री आदित्यमोहन शर्मा जी ने जिस सरलता से इस प्रकल्प के प्रति अपना मार्गदर्शन व आशीर्वाद दिया वह अमूल्य धरोहर है।

इस कार्य में अखिल भारतीय विद्वत्परिषद्, काशी के महासचिव डॉ. श्री कामेश्वर उपाध्याय जी, व जयपुर निवासी प्रो. श्री मोहनलाल शर्मा जी का प्रारम्भ से ही सतत् मार्गदर्शन व सहयोग रहा है। पंचांग के प्रथम प्रकाशन के साथ ही जयपुर के वरिष्ठ विद्वान् महामहोपाध्याय आचार्य श्री कलानाथ शास्त्री जी, महामहोपाध्याय आचार्य श्री दयानन्द भार्गव जी, प्रो. श्री अर्कनाथ चौधरी जी ने इसे शुभाशंसन के साथ भूषित किया। डॉ. श्री गोविन्दचन्द्र जी द्विवेदी, पं. श्री साकेत जी झा ने पंचांग-निर्माण में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया है। प्रबन्ध सम्पादक श्री मुदित मित्तल का इस प्रकल्प हेतु परिश्रम अकथ्य है।

मार्गशीर्ष कृष्ण पञ्चमी, 2 दिसम्बर 2023 को श्रीमाधोबिहारी जी के मंदिर, जयपुर में आयोजित श्रीनिम्बार्क जयन्ती महोत्सव में श्रीशुकसम्प्रदाय पीठाधीश्वर अनन्तश्रीविभूषित श्रीअलबेलीमाधुरीशरण जी महाराज जयपुर, महन्त श्रीवृन्दावनदासजी वृन्दावन, आचार्य महामण्डलेश्वर श्रीमहन्त स्वामी श्रीपद्मनाभशरण देवाचार्यजी जयपुर, श्री प्रवीण जी महाराज, महंत श्री योगेश जी स्वामी, महंत श्री अशोक जी शर्मा, श्री देवेश चंद्र स्वामी अध्यक्ष श्रीनिम्बार्क परिषद् द्वारा इस पंचांग को श्रीसर्वेश्वर प्रभु और श्रीनिम्बार्क भगवान् को समर्पित कर विमोचन किया गया। श्रीनिम्बार्क परिषद् इन सभी महानुभावों के प्रति सदा कृतज्ञ है, इसके साथ ही परिषद् अपने सम्पादक मण्डल के सभी विद्वानों का इस यज्ञकर्म के सम्पादन हेतु भूरिशः अभिनन्दन करती है।

संवत्सर ही प्रजापति है, '**सम्वत्सर एव प्रजापतिः**' (शतपथ, 1|6|3|5)। काल ही सर्वेश्वर और प्रजापति का भी पिता है। '**कालो ह सर्वस्येश्वरो यः पितासीत् प्रजापतेः**'(अथर्व0 19.53.8)। भगवान् श्रीकृष्ण ने स्वयं को गीता में अक्षय काल '**अहमेवाक्षयः कालः**' कहा है। कालरूपी सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण का यह पञ्चाङ्ग जयपुर के धर्माकाश में भगवान् भुवनभास्कर आदित्य की भाँति उदित हुआ है। ऐसा यह '**श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग**' धार्मिकों के समक्ष प्रस्तुत है।

समस्त धर्मानुरागी जन धर्मफल की शाश्वत सिद्धि हेतु धर्मशास्त्रानुमोदित इस 'श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग' के अनुसार व्रतपर्वोत्सवों का पालन करें। इस पञ्चाङ्ग में जो कुछ भी श्रेष्ठ है वह सब श्रीसर्वेश्वर प्रभु के कृपाप्रसाद स्वरूप विद्वानों का अवदान है तथा प्रमादवश जो कुछ भी त्रुटि दृश्य हो, वह सब श्रीनिम्बार्क परिषद् की है जिनका परिमार्जन आप सभी के सहयोग एवं श्रीसर्वेश्वर प्रभु की कृपा से ही सम्भव हो सकेगा। श्रीसर्वेश्वर प्रभु हम सभी पर सदा कृपा रखें!

- अमित शर्मा

प्रधान-सम्पादक, श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग

महामंत्री, श्रीनिम्बार्क परिषद्, जयपुर

।। श्रीसर्वेश्वरो जयति ।।

स ईश्वरो व्यष्टिसमष्टिरूपोऽव्यक्तस्वरूपःप्रकटस्वरूपः। सर्वेश्वरः सर्वगः सर्ववित्ता समस्तशक्तिः परमेश्वराख्यः।।
नतोऽस्मि सर्वेश्वरमादिदेवं प्रपन्नसंरक्षणबद्धकक्षम्। कारुण्यवात्सल्यदयादिसिन्धुं जगद्गुरुं ब्रह्मशिवादिवन्द्यम्।।
विश्वरूप जयादित्य जय विष्णो जयाच्युत । जय केशव ईशान जय कृष्ण नमोऽस्तु ते ।।
जयस्व सर्वेश्वर विश्वमूर्ते सुरासुरैर्वन्दितपादपीठ । त्रैलोक्यमातुर्गुरवे वृषाङ्क भीतः शरण्यं शरणागतोऽस्मि।।
कालरूपं कलयतां कालकालेश कारण। कालादतीत कालस्य कालकाल नमोऽस्तु ते।।
प्रतिपन्मुख्यराकान्त तिथिमण्डलपूजिता। कलात्मिका कलानाथा काव्यालापविनोदिनी।
कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनी । विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते ।।
जयादित्य जय स्वामिञ्जय भानो जयामल । जय वेदपते शश्वत्तारयास्मानहर्पते ।।
लव निमेष परमानु जुग बरष कलप सर चण्ड। भजसि न मन तेहि राम को कालु जासु कोदण्ड।।
नियमेन यदानन्दो जगद्धासयतेऽखिलम् । तमहं नियमानन्दं वन्दे कृष्णं जगद्गुरुम् ।।
साङ्गोपाङ्गाय वेदाय ज्योतिषां ज्योतिषे नमः। सूर्याय सूर्यसिद्धान्तज्योतिर्विद्भ्यो नमो नमः।।

स्वस्ति श्रीः सूर्यसिद्धान्तमतेन समस्तजगदुत्पत्ति स्थिति लय नियमन-ज्ञानाज्ञानबन्धमोक्षकारणस्य स्वाभावतोऽपास्तसमस्तदोषोऽनन्ताचिन्त्य विचित्रयावदात्म-वृत्तिस्वाभाविककल्याणगुणशक्तिवैभवाश्रयो जगज्जन्मादिहेतुरखिलशास्त्रैकवेद्यो मुक्तप्राप्यः परब्रह्मभगवदादिशब्दाभिधेय-श्चिदचित्पदार्थभिन्नाभिन्नसंबन्धाश्रयः श्रीपुरुषोत्तमोरमानिवास श्रीमहाविष्णोर्नाभिकमलोद्भवस्य चतुर्मुखब्रह्मणः परमायुः वर्षशतम्। तत्र पूर्वार्धं गतम्। उत्तरार्धे प्रथमवर्षे प्रथममासे प्रथमदिने श्वेतवराहकल्पसंज्ञे प्रथमकल्पे अह्नि त्रयोदशघटिकाः द्विचत्वारिंशत् पलानि च व्यत्यायन्। कृतत्रेताद्वापरकलियुगैरेकं महायुगं भवति। तैरेकसप्ततिमहायुगैः एकं मन्वन्तरम् । तैश्चतुर्दशभिरेकः कल्पः। तत् ब्रह्मणो दिनम्। तावती रात्रिः। एतादृशैः षष्ट्यधिकशतत्रयदिवसैरेकः ब्रह्मणो वर्षः। वर्तमानब्रह्मणो दिनमध्ये षण्मनवो गताः। इदानीं वर्तमानः सप्तमो वैवस्वतो मनुः। वैवस्वतमन्वन्तरेऽपि एकसप्ततिमहायुगमध्ये सप्तविंशतिमहायुगानि गतानि। अष्टाविंशतितमेऽपि महायुगे कृतत्रेताद्वापराख्यास्त्रयो युगपादाः गताः। कलियुगेऽपि 5125 वर्षाः गताः।।

महायुगप्रमाणम् - 43 लक्ष 20 सहस्त्रवर्षाः ।
कृतयुगप्रमाणम् - 17 लक्ष 28 सहस्त्रवर्षाः । **त्रेतायुगप्रमाणम्** - 12 लक्ष 96 सहस्त्रवर्षाः।
द्वापरयुगप्रमाणम् - 8 लक्ष 64 सहस्त्रवर्षाः । **कलियुगप्रमाणम्** - 4 लक्ष 32 सहस्त्रवर्षाः।
कल्पादितः - 1972949125 वत्सराव्यतीताः । **सृष्ट्यादितश्च** - 1955885125 ।
श्रीरामरावणयोर्युद्धतो गताब्दाः - 880166 । **श्रीकृष्णावतारतो गताब्दाः** - 5250 ।
कुरुपाण्डवयुद्धतो गताब्दाः -5125 । **सम्राट-युधिष्ठिर राज्यात्संवत्** 5161 ।
सम्राट-विक्रमादित्य राज्यात्संवत् 2081 । **शाके** 1946 । **अंग्रेजी सन्** 2024-25 ई. ।
तत्र चैत्रशुक्लप्रतिपत् **2081** तिथिमारभ्य गुरुमानेन प्रभवादि षष्ट्यब्दानां मध्ये रूद्रविंशतिकायां

कालयुक्त नाम संवत्सरारम्भः ।

✻ कालयुक्त नाम संवत्सर एवं वर्षेशादि फल ✻

श्री शुभसंवत् 2081, शक 1946, कलियुगाब्दारम्भ 5126,
(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

✻✻ कालयुक्त संवत्सर का स्वरूप ✻✻

पिङ्गलः कालयुक्तिश्च रक्तास्यो रक्तलोचनः। जपतः श्वेतनीलांगौ वरेण्यनिम्बसन्निधौ ।।

पिङ्गल व कालयुक्त संवत्सर रक्तवर्ण के मुख व रक्त नेत्रों वाले हैं। इनके अंग श्वेत व नील हैं, यह संवत्सर उत्तम निम्ब(नीम) वृक्ष की सन्निधि में जप करते हैं।

✻✻ कालयुक्त सम्वत्सर के अधिष्ठातृ देव भगवान् श्रीकल्कि जी का ध्यान ✻✻

म्लेच्छावलिकृतद्वेषं कालयुक्तिकृताह्वयम् । आश्रयेकल्किमारूढं धनुर्बाणकरं सदा।।

म्लेच्छों की पंक्तियों से उत्पन्न घृणा व कालयुक्ति द्वारा आह्वान किए जाने वाले, जो सदा हाथ में धनुष बाण धारण करते हैं, कालयुक्त सम्वत्सर के अधिष्ठाता हैं, ऐसे श्वेतवर्ण के भगवान् श्रीकल्कि का मैं आश्रय ग्रहण करता हूँ।

✻✻ कालयुक्त संवत्सर का फल ✻✻

वत्सरे कालयुक्ताख्ये सुखिनः सर्वजन्तवः । सन्त्यथापि च सस्यानि प्रचुराणि तथा गदाः ।।
ईतयो यदपि रोगभीतयः स्युस्तथापि धनधान्य संचयः।
लोक लोकपतयो निराशयाः कालयुक्तशरदिश्युपाधयः।।

इस वर्ष कालयुक्त संवत्सर में मानव सुखी, प्रसन्न, सन्तोषयुक्त होंगे। अन्न ऊपज अच्छी तथा प्रजा में अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होंगे। फसलों में कीट, रोग-व्याधि व प्राकृतिक आपदा होती हैं फिर भी धनधान्य की वृद्धि होती है। जनता-नेताओं में निराशा व दिशाओं में उपद्रव होंगे।

✻✻ कालयुक्त संवत्सर में उत्पन्न जातकों के गुण ✻✻

अनल्प जल्पः प्रियतामुपेतस्ससाधुबुद्धिर्विधिनावियुक्तः।
कविप्रसंगः किलकालरूपोयः कालयुक्तिप्रभवः कृशांगः।।
कालज्ञो यदि कालयुक्तशरदि श्रीभोग सत्कर्मवान्।
कृषिवाणिज्यकर्ता च तैलभाण्डादि संग्रही। क्रयविक्रयकर्ता च कालयुक्ते भवेन्नरः।।

कालयुक्त सम्वत्सर में जन्म लेने वाला जातक बहुत वाचाल, जनप्रिय, सद्बुद्धि वाला, भाग्यहीन, कवित्वसम्पन्न, कालतत्वमर्मज्ञ व कृशकाय होता है। वह कालज्ञ, श्रीभोग करने वाला, और सत्कर्मी होता है। कालयुक्त नाम संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य कृषि और वाणिज्य में निपुण, तेल और बर्तनों का संग्रह करने वाला तथा क्रयविक्रय करने वाला होता है।

राजा मंगल

मन्त्री शनि **शस्येश मंगल** **धान्येश चन्द्र** **मेघेश शनि** **रसेश गुरु**
नीरसेश मंगल **फलेश शुक्र** **धनेश मंगल** **दुर्गेश शनि**

✻ संवत्सर 2081 की राज परिषद् ✻

✻✻ राजा मंगल ✻✻

भौमस्य राज्येऽग्निभयं धरित्री सस्येन हीना क्वचिदेव वृष्टिः ।
चौराः प्रभूता मनुजेश्वराणां स्याद्विग्रहोऽन्योन्य जयाय नूनम्।।

वातोद्धतश्चरति वह्निरतिप्रचण्डो ग्रामान् वनानि नगराणि च सन्दिधक्षुः।
हाहेति दस्युगणपातहता रटन्ति निस्वीकृता विपशवो भुविमर्त्यसंघाः।।

अभ्युन्नता वियति संहतमूर्तयोऽपि मुञ्चन्ति न क्वचिदपः प्रचुरं पयोदाः।
सीम्नि प्रजा तमपि शोषमुपैति सस्यं निष्पन्नमप्यविनयादपरे हरन्ति।।

भूपा न सम्यगभिपालनसक्तचित्ताः पित्तोत्यरुकप्रचुरता भुजगप्रकोपः ।
एवं विधैरुपहता भवति प्रजेयं संवत्सरेऽवनिसुतस्य विपन्नसस्या।।

इस वर्ष मंगल के राजा होने से अग्निभय, पृथ्वी पर अन्न की उपज में कमी, चोरी, डकैती, छिनैती आदि की बाहूल्यता, देश में यत्र-तत्र खण्डवृष्टि, विजय की कामना हेतु देश के शीर्षस्थ राजा (राजनेता) आपस में लड़ते रहेगें। मंगल वर्ष का स्वामी होने से वायु से उठी हुई अतिप्रचंड अग्नि ग्राम, वन और नगरों को जलाने की इच्छा करती है, पृथ्वी पर चोरों का भय होता है। कहीं बहुत सा जल नहीं वर्षता, पका हुआ धान्य सूख जाता है और कहीं दूसरे आदमी उसको हरण कर लेते हैं। राजा लोग भलीभांति से प्रजा को नहीं पालते। पित्त से उत्पन्न हुए रोगों की अधिकता होती है, और सर्पों का कोप होता है। अनाज और कृषि कम होती है।

✻✻ मन्त्री शनि ✻✻

मन्दे प्रधानेऽखिल लोकपीड़ा वह्नेर्भयं धान्यविनाशनं च ।
रोगाभिभूता जनता न पश्येत्सौख्यं तथाऽस्मिन्नतिहीन वृष्टिः।

इस वर्ष शनि के मन्त्री होने से प्रजा में अनेक प्रकार के रोग, दुःख, कष्ट आदि होंगे। अनेक दैवीय तथा मानवीय प्रकोप से फसल की उपज में कमी आएगी। जहाँ तहाँ खण्डवृष्टि होगी। मानव में शान्ति का अभाव रहेगा।

✻✻ शस्येश मंगल ✻✻

सीदन्ति सस्यनिचया भुवि भौम सस्यपे महोष्णभयात्।
अपराखिलधान्यचयं क्वचित्क्वचिद् भवति शस्त्रभयम्।।

मंगल के सस्येश होने से इस वर्ष बहुत गर्मी तथा गर्मी से जनहानि, रोगवृद्धि, धान्यादि में अनेक प्रकार के रोग की सम्भावना, परस्पर वैरभाव, खण्डवृष्टि का योग रहेगा।

✻✻ धान्येश चन्द्रमा ✻✻

सुभिक्षसंदर्शन जातहर्षाः प्रजेश्वराः कोशविवृद्धियुक्ताः।
गावो बहुक्षीरदुधा भवन्ति धान्याधिपो यत्र निशाकरः स्यात्।।

इस वर्ष चन्द्रमा के धान्याधिपति होने से प्रजा में प्रसन्नता, सुभिक्ष, लोग धनार्जन में संलग्न, गौ पालन में बढ़ोत्तरी एवं दूध घी आदि में वृद्धि देखी जायेगी।

✻✻ मेघेश शनि ✻✻

न क्वापि वृष्टिर्धरणीश्वराणां कोशोऽल्पकः शीतभयं क्वञ्चित् ।
अभूरि धान्यं प्रचुराभयश्च मेघाधिपो यत्र रवेः सुतः स्यात् ।।

इस वर्ष शनि के मेघेश होने से वर्षा औसतन कम होगी। राजकीय कोष में न्यूनता, अन्न की ऊपज में कमी एवं प्रजा में रोग की बाहूल्यता रहेगी।

✻✻ रसेश बृहस्पति ✻✻

चामीकरं स्यात्सुलभं तथाऽऽज्यं कौशेयकार्पासगुडाम्बराणी।
सुखेन लभ्यान्य तिवारिवृष्टिर्यदा सुरेज्यो रसनायकः स्यात्।।

गुरु के रसेश होने से सौन्दर्य की वस्तुऐं, घृत, दूध, रेशमी- वस्त्र, कपास, गुड़, वस्त्र आदि के भाव औसतन सस्ते होगें। वर्षा अच्छी होगी।

✻✻ नीरसेश मंगल ✻✻

नीरसेश यदा भौमः प्रवालरक्त वाससाम् ।
रक्तचन्दन ताम्राणामर्घवृद्धिः दिने दिने ।।

इस वर्ष मंगल के नीरसेश होने से मूँग दाल, लाल वस्त्र, चन्दन, ताम्बा आदि वस्तुओं में सदा वृद्धि होती रहेगी।

✻✻ फलेश शुक्र ✻✻

इस वर्ष शुक्र के फलेश होने से पृथ्वी अनेक प्रकार के कोमल घास फूल फलादि से युक्त रहेगी। सत्कर्मों में वृद्धि होगी। लोगों में धार्मिक कार्यों के प्रति रूचि बढ़ेगी। विप्रगण वेदाध्ययन, अध्यापन तथा यज्ञादि कार्यों में लिप्त रहेंगे।

✻✻ धनेश मंगल ✻✻

असममौल्यकरो धरणीसुतः शरदितापकरः तुष धान्ययत्।
सहसिमासि भवेद्विगुणं तरा नरपतिर्जनशोक विधायकः।।

इस वर्ष मंगल के धनेश होने से वस्तु के क्रय-विक्रय में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। जौ, गेहूँ, चैती फसल के लिए क्षतिकार रहेगा। संग्रहीत वस्तुओं को मार्गशीर्ष मास में बेचने से द्विगुणित लाभ होगा। देश के शीर्षस्थ नेता की मृत्यु होगी।

✻✻ दुर्गेश शनि ✻✻

रविसुते गढ़पालिनी विग्रहे सकल देशगताश्चलिता जनः ।
विविधवैरिविशशोषित नागराः कृषि धनं शलभैः मुषितुं भुवि ।।

इस वर्ष शनि के दुर्गेश होने से विश्व में अनेक प्रकार के उथल-पुथल होंगे। एक देश दूसरे देश के विरोधी होंगे। दुग्ध उत्पादन की मात्रा बढ़ेगी।

ब्रह्मा विंशति		विष्णु विंशति		रूद्र विंशति	
प्रभव	ईश्वर	सर्वजित	हेमलम्बी	प्लवंग	पिंगल
विभव	बहुधान्य	सर्वधारी	विलम्बी	कीलक	कालयुक्त
शुक्ल	प्रमाथी	विरोधी	विकारी	सौम्य	सिद्धार्थ
प्रमोद	विक्रम	विकृत	शार्वरी	साधारण	रौद्र
प्रजापति	वृष	खर	प्लव	विरोधकृत	दुर्मति
अंगिरा	चित्रभानु	नन्दन	शुभकृत	परिधावी	दुन्दुभि
श्रीमुख	सुभानु	विजय	शोभन	प्रमादी	रूधिरोद्गारी
भाव	तारण	जय	क्रोधी	आनन्द	रक्ताक्ष
युवा	पार्थिव	मन्मथ	विश्वावसु	राक्षस	क्रोधन
धाता	अव्यय	दुर्मुख	पराभव	अनल	क्षय

✻जयपुर केन्द्रित वर्षलग्न एवं जगल्लग्न का सामान्यफल ✻
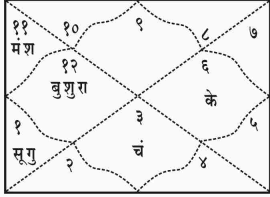
जगल्लग्न

दिनांक- 13 अप्रैल 2024
समय- 23:25
स्थान- श्री गोविन्ददेवजी, जयपुर
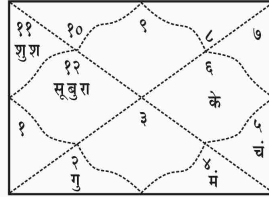
वर्षलग्न

दिनांक- 9 अप्रैल 2024
समय- 00:16
स्थान- श्री गोविन्ददेवजी, जयपुर

संवत् 2081 के वर्षेलग्न एवं जगल्लग्न दोनों के धनु लग्न हैं। संवत्सर के दशाधिकारियों में सात पाप ग्रह एवं तीन शुभ ग्रह हैं। मुख्य पद राजा मंगल, मन्त्री शनि एवं दुर्गेश शनि हैं। जगल्लग्नपति एवं वर्षपति गुरु त्रिकोण स्थान में स्थित हैं। दशाधिकारी वर्षपति (लग्नेश) एवं जगत्कुण्डली के लग्नेश के स्थिति के अनुसार देश के विकास के कार्यों में अनेक व्यवधान उत्पन्न होंगे। राज्य तथा केन्द्र के उच्चस्तरीय नेताओं आन्तरिक मतभेद रहेगा। विपक्षी दल सत्ता के लिए किसी भी हद पर जाएंगे। गैस, पेट्रोल, खाद्य पदार्थों में तेजी बनी रहेगी। शिक्षा एवं रोजगार के लिए अनेक योजनाएँ बनेगी।

देश एवं विदेशी व्यापार को बढ़ावा दिया जायेगा। देश एवं विदेश के शेयर एवं सट्टा के बाजार में तेजी की स्थिति बनी रहेगी। देश एवं विदेशी सीमाओं पर युद्ध की स्थिति रहेगी। वाहन रेल आदि की संसाधनों में सुधार हेतु पहल होगा । विदेशी मुद्राओं में तथा स्वर्ण आदि धातुओं में उतार-चढ़ाव की स्थिति रहेगी। भारत के शिक्षण संस्थान, अस्पताल, सरकारी कर्मचारियों के वेतन वृद्धि एवं महिलाओं के विकास हेतु कार्य किये जायेंगे।

देश के आर्थिक स्थिति में औसतन वृद्धि होगी। देश में अनेक प्रकार के आपदायें आयेगीं। आपदाओं के सुधार हेतु देश में अत्यधिक धनव्यय होगा। राजनैतिक आरजकता, आतंकी, हिंसक, अनेक घटनाएँ देश में होंगी। देश के राजनीतिक क्षेत्र में अनेक परिवर्तन दिखाई देगा। दशाधिकारियों में अधिक पापग्रह होने से देश में लूट-पाट, घूसखोरी, छिनैती आदि में बाहूल्यता रहेगी। साथ ही साथ देश औसतन धार्मिक, आध्यात्मिक कार्यों में वृद्धि रहेगी।

✻ सूर्य आर्द्रानक्षत्र प्रवेश सामान्य फल ✻
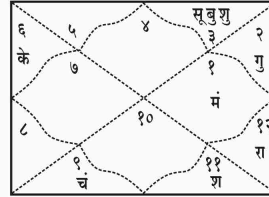
सूर्य आर्द्रा नक्षत्र प्रवेश

दिनांक- 22 जून 2024, समय- 08:33, स्थान- श्री गोविन्ददेवजी, जयपुर

इस वर्ष ज्येष्ठ पूर्णिमा बाद प्रतिपदा तिथि शनिवार मूल नक्षत्र, शुक्ल योग, बालव करण, कर्क लग्न, धनु राशि, दिवा 08:33 पर सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। आर्द्रा प्रवेश लग्न के ग्रहों के स्थिति के अनुसार झंझावात के साथ खण्डवृष्टि होगी। देश के दक्षिण पश्चिमोत्तर भाग में वर्षाधिक्य, आकाशीय विद्युत चक्रवात आदि जनधन की क्षति होगी। रोग-व्याधि की बाहुल्यता रहेगी। प्रजा असन्तुष्टि रहेगी।

देश के उच्चस्तरीय राज्य तथा केन्द्र नेताओं में समय-समय पर युद्धस्तर की स्थिति बनी रहेगी। जिससे देश के लिए उत्तम नहीं रहेगा, चोरी-डकैती, अपहरण, बलात्कार जैसी घटनाएँ औसतन अधिक होगी।

✻ स्तम्भ विचार ✻

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र, वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र है अतः इस संवत् में जल स्तम्भ व तृण स्तम्भ हैं। ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र व आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र होने के कारण वायु स्तम्भ व अन्न स्तम्भ है, अतः इस वर्ष चार स्तम्भ हैं। यह वर्ष उत्तम फल वाला रहेगा। इस वर्ष वर्षा, घास, जड़ी बूटियां, वायु व अनाज संतोषप्रद रहेंगे।

नतोऽस्मि सर्वेश्वरमादिदेवं प्रपन्नसंरक्षणबद्धकक्षम्।
कारुण्यवात्सल्यदयादिसिन्धुं जगद्गुरुं ब्रह्मशिवादिवन्द्यम्।।

✻ अग्नि-वास चक्र ✻

शु.प. तिथि	कृ.प. तिथि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
1, 9	2, 10	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
2, 10	3, 11	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
3, 11	4, 12	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
4, 12	5, 13	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
5, 13	4, 14	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
6, 14	7, 30	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
7, 15	8	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
8	1, 9	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी

✻ शिव-वास ✻

शु.प. तिथि	कृ.प. तिथि	शिव वासम्	फलम्
1, 8,	7, 14	श्मशाने	मृत्युः
2, 9	1, 8,	गौरीसन्निधौ	शुभम्
3, 10	2, 9	सभायाम्	तापकारक
4, 11	3, 10	क्रीडायाम्	विशिष्टकष्ट
5, 12	4, 11	कैलाशे	सुखम्
6, 13	5, 12	वृषे	श्री प्राप्तिः
7, 14	6, 13	भोजने	कष्टप्राप्तिः

✻भारतदेशीय विदिशा केन्द्रित सौर वर्षप्रवेश कुण्डली का सामान्यफल संवत् 2081 ✻

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

- मुदित मित्तल

श्रीसर्वेश्वर
जयादित्य
पञ्चांगम्
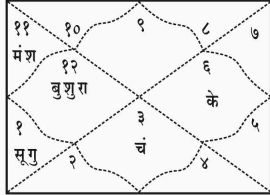
सौर वर्ष प्रवेश राशिचक्र
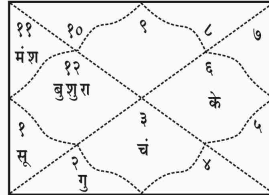
सौर वर्ष प्रवेश भावचलित चक्र

दिनांक- 13 अप्रैल 2024, समय- 23:25,
स्थान- विदिशा, मध्यप्रदेश, अक्षांश 23:31:19 उ., रेखांश 77:48:39 पू.

सम्वत 2081 के मेषारम्भ में मेरुपर्वत आधारित कुण्डली में भारतवर्ष सप्तम व अष्टम भाव में पड़ रहा है। सप्तम भाव में गुजरात के दक्षिणी भाग, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश का दक्षिण भाग व बिहार, बंगाल समेत सम्पूर्ण उत्तरपूर्वी व दक्षिण भारत आ रहा है तो उसके ऊपर का हिस्सा दिल्ली, राजस्थान से लेकर कश्मीर तक अष्टम भाव में है। वृश्चिक लग्न की कुंडली में सप्तमेश शुक्र पञ्चम में उच्च के होकर प्रबल शनि के साथ बैठे हैं। यद्यपि भारत के उत्तरी भाग में अपेक्षाकृत जलीय आपदाओं की अधिकता के योग बन रहे हैं, तथापि विश्व में भारतवर्ष का शिक्षा, धन में वर्चस्व व वैश्विक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। भारत अपने शत्रुओं को नियंत्रित करने में सफल रहेगा।

सूर्य के मेष राशि में प्रवेश के समय भारत के विदिशा से मेषारम्भ कुण्डली पर आधारित वर्षफल दिया जा रहा है। इस वर्षफल में संवत् 2081 में अप्रैल मई में होने वाले लोकसभा चुनावों से सम्बन्धित फलादेश भी सम्मिलित किया गया है।

भारतवर्ष की मेषारम्भ वर्षकुण्डली में इस वर्ष गुरु की स्थिति से देश में बाह्य व आन्तरिक शत्रुओं से प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से संघर्ष की स्थिति बनी रहेगी व इन संघर्षों से जनता परेशान होगी व, क्रोध बढ़ेगा परन्तु पराक्रमेश शनि राष्ट्र के पराक्रम में वृद्धि करेंगे व बड़ी ही बुद्धिमानी से शत्रुओं पर अंकुश लगाया जाएगा। मित्र देश भारत से सहयोग हेतु तत्पर रहेंगे। भारतवर्ष कूटनीति के प्रबल उपयोग द्वारा साम, दाम, दण्ड, भेद अपनाते हुए देश शत्रुओं को ठिकाने लगाते हुए आगे बढ़ेगा। राष्ट्रीय राजनीति में मालवा क्षेत्र को लाभ मिलेगा।

राष्ट्रीय धन, व्यापार, शेयर मार्केट, निर्यात में वृद्धि होगी व जनहित में सरकारी धन खर्च होने से जनता सुख का अनुभव करेगी। देश की परिवहन व्यवस्था, शिक्षा व्यवस्था व मीडिया, कला उद्योग में विकास होगा। देश की कृषि व्यवस्था के लिए इस बार अशुभ संकेत हैं, फसली रोग बढ़ेंगे। द्वितीय भाव में प्रभावी मकर राष्ट्रीय नेता की विदेश यात्राओं से व अन्तर्राष्ट्रीय सामञ्जस्य से भारत में धन आगमन के नए द्वार खोल रहा है। वहीं पराक्रम का कुम्भ देश को यशस्वी, अपने राष्ट्रीय संकल्प पूरे करने वाला बना रहा है। यद्यपि देश में चोरी व व्यभिचार में वृद्धि होगी व कुछ निर्णयों में विवेक की कमी दिखाई देगी। अशुभ शुक्र, दूषित बुध व राहु चतुर्थ भावस्थ हैं। इस वर्ष देश में माताओं को विशेष कष्ट का योग बन रहा है इसलिए नवजात शिशुओं की माँओं के स्वास्थ्य पर सरकार को विशेष ध्यान देना चाहिए व मातृ-मृत्यु दर कम करने के प्रयास करने चाहिए। क्रेश डेरप लेने में वृद्धि देखी जाएगी, धन सञ्चय बढ़ेगा। Real Estate, Textile, वाहन उद्योग में तेजी रहेगी व जनता को अधिक से अधिक गृहनिर्माण, भूमि व वाहन का सुख प्राप्त होगा। संघर्ष द्वारा देश की खोई हुई भूमि के पुनः अधिग्रहण की भी सम्भावना बलवती दिखाई देती है। भारत को जलमार्ग समुद्र व नदियों के माध्यम से विशेष लाभ होने जा रहा है। पूरे विश्व में भारतीय विद्याओं और ज्योतिष शास्त्र का आदर बढ़ेगा। भारत के किसी बड़े व्यक्तित्त्व की विदेश में या विदेशी शक्तियों के हाथ से मृत्यु सम्भावित है।

किसी महिला या महिला सम्बन्धी मुद्दे पर देश को वैश्विक स्तर पर दुविधा व विवाद का सामना करना पड़ सकता है। इस वर्ष देश में उदर रोगों व प्रमेह में वृद्धि देखी जाएगी। जिससे बृहस्पति ग्रह से प्रभावित जातक सबसे ज्यादा प्रभावित व पीड़ित होंगे। रोग प्रतिरोधक क्षमता घटेगी।

बुध जनता को धर्म व सत्य से जोड़ेंगे। वैवाहिक सम्बन्धों में दम्पत्तियों में इस वर्ष अविश्वास के कारण विवाहविच्छेद की दर बढ़ने के आसार बन रहे हैं। परिवारों में मनमुटाव बढ़ने के योग बन रहे हैं। चन्द्र के प्रभाव से भारतीय उद्योगों को कर्ज व पूँजी सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। उच्च व कनिष्ठ अधिकारियों में मतभेद होंगे, देश के शत्रुओं से अपनापन रखने वाले कुछ महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के नाम सामने आ सकते हैं।

प्रायः पश्चिमी महाराष्ट्र लग्न भाव में आ रहा है। यह क्षेत्र आन्तरिक व बाह्य शत्रुबाधा, संघर्षों व मतभेद का अखाड़ा बना रहेगा, परन्तु तीव्र घटनाएँ होने पर भी गुरु की शुभदृष्टि के कारण सम्भावित हानि पर अंकुश लगेगा। यहाँ से कड़े संघर्ष के बाद लोकसभा में सत्तारूढ़ दल को अच्छी सफलता मिलने के संकेत हैं।

द्वितीय व तृतीय भाव में दक्षिणी मध्यप्रदेश के छिन्दवाड़ा आदि, पूर्वी महाराष्ट्र से दक्षिणी छत्तीसगढ़ तक व दक्षिण भारत के सभी राज्य आन्ध्रप्रदेश, गोवा, तेलंगाना, तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल आ रहे हैं जो प्रबल व अशुभ प्रभाव में हैं। धनबल, बाहुबल, कूटनीति व विदेशी शक्ति सभी का दुष्प्रभाव इन क्षेत्रों में पूरी तरह आजमाया जाएगा व धर्म की स्थिति कमजोर रहेगी। इन क्षेत्रों का प्रभाव लोकसभा में बढ़ेगा। इन क्षेत्रों में व विशेष रूप से भारतवर्ष के दक्षिणी भाग में सत्तारूढ़ दल को कड़े संघर्ष करने के उपरान्त भी अधिक लाभ मिलता नहीं दिखाई दे रहा है।

चौथे भाव में पापग्रह व चतुर्थेश पापस्थ है। बुध निर्बल हो गया है। इस वर्ष चतुर्थ भाव के मध्य छत्तीसगढ़ व प्रायः उड़ीसा में प्रायः प्राकृतिक आपदाओं, खराब फल, दुर्घटना, षड्यन्त्र, हमले, अधार्मिक व अवैध गतिविधियों से वातावरण खराब होने के संकेत हैं।

भौम शिक्षाक्षेत्र में विकास कराएंगे। बंगाल, झारखण्ड, उत्तरी छत्तीसगढ़, पूर्वी मध्यप्रदेश, मेघालय, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, दक्षिणी आसाम आदि क्षेत्रों में स्वार्थी तत्त्व हावी रहेंगे। राजनेता लोक लुभावनी भाषा के छल, धनबल व बाहुबल के प्रयोग से वातावरण खराब करने का प्रयास करेंगे पर धर्मेश सूर्य के प्रभाव से अन्ततः यहाँ नरेन्द्र मोदी जी को लोकसभा में अप्रत्याशित समर्थन प्राप्ति के संकेत मिल रहे हैं। केन्द्र में सत्तारूढ़ दल को सफलता प्राप्ति के योग हैं, परन्तु शीर्ष राजनेताओं को सावधानी आवश्यक है। बांग्लादेश में भी उथल पुथल मचकर शुभ परिणाम होगा।

पूर्वी उत्तरप्रदेश, बिहार का अधिकांश भाग, सिक्किम, उत्तरी आसाम, अरुणाचल प्रदेश आ रहा है। यहाँ संघर्ष रोग षड्यन्त्र उठापटक आदि की स्थिति होगी पर लग्नेश गुरु के बैठने से प्रायः शुभफल की प्राप्ति होगी, आय बढ़ेगी। इस क्षेत्र में बड़े निवेश आकर धन व आय बढ़ेगी। पूर्वी नेपाल में भी ऐसा ही फल देखने को मिलेगा।

बुध की राशि के क्षेत्र शुक्र व राहु के संयुक्त पाप प्रभाव में रहेंगे। पश्चिमी व दक्षिणी राजस्थान मजबूत स्थिति में नहीं होंगे, यहाँ अनेक तरह की जन धन आदि की हानि के योग बन रहे हैं, यही अशुभ फल दक्षिणी पाकिस्तान में भी मिलेगा। वहीं मध्य उत्तर प्रदेश, बरेली-बदायूँ से हमीरपुर-बहराइच के क्षेत्र भी पाप प्रभावित होंगे। यहाँ देश व धर्म के प्रति षड्यन्त्र, अशोभनीय घटनाएँ, मतभेद, दुर्घटना व जन-धन की हानि कराने के योग बन रहे हैं। मित्र लगती हुई कुछ महिलाएं वास्तव में षड्यंत्र में लिप्त सिद्ध होंगी।

मध्यप्रदेश के मुरैना-भिण्ड, ग्वालियर, शिवपुरी, हरदोई से पहले तक का पूरा पश्चिमी उत्तरप्रदेश, उत्तराखण्ड, हिमाचल व लद्दाख के क्षेत्रों में चन्द्रमा के अशुभ प्रभाव से दुर्घटनाओं व रहस्यमयी वारदातों के योग अधिक हैं, जो गुप्त शत्रुओं द्वारा किये गए षड्यन्त्रों का परिणाम भी हो सकते हैं। शत्रुवर्ग द्वारा गुप्त षड्यन्त्र द्वारा स्त्रियों का प्रयोग किया जा सकता है।

सबसे प्रबल ग्रह सूर्य उच्च के होकर अत्यन्त शुभ राजयोग बना रहे हैं। देश में धर्म, अध्यात्म व देवताओं की राजसिक भक्ति का सञ्चार होगा व धर्म की प्रचण्ड विजय से देश हर्षित होगा। भारत में सन्तों महात्माओं का सम्मान बढ़ेगा। भारत की व सनातन धर्म की विश्व में जय जयकार होगी व भारत का भाग्य उज्वल रहेगा। भारत व धर्म के शत्रुओं को वर्षपर्यन्त कल्पना से परे भरपूर दण्ड मिलेगा। भारत के तीर्थस्थलों में विकास की गंगा बहेगी। न्यायिक व्यवस्था में सुधार होगा, न्यायालय से महत्त्वपूर्ण व शुभ निर्णय मिलने के संकेत हैं। विज्ञान के क्षेत्र में भारत की प्रगति होगी। सिंह राशि के क्षेत्र उत्तरी व पूर्वी राजस्थान, पश्चिमी हरियाणा पंजाब के क्षेत्रों, सूर्य से विद्ध अक्षर वाले नगरों व प्रदेशों से धार्मिक वर्चस्व वाले व्यक्तित्व उठेंगे व इन क्षेत्रों का प्रभुत्व बढ़ेगा व लोकसभा में इन क्षेत्रों से प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी को भरपूर मजबूती मिलेगी।

गुजरात का मध्य से उत्तरी भाग दक्षिणी राजस्थान व पश्चिमी मध्यप्रदेश के कुछ जिले पाप प्रभाव में रहने से लड़ाई गिड़े ज्यादा होंगे। महिला सम्बन्धी मुद्दे व विवाद हावी रहेंगे। गुजरात का मध्य से दक्षिणी भाग व मध्यप्रदेश के कुछ जिलों में सामान्य फल देखने को मिलेगा।

सर्वतोभद्र चक्र में शुभग्रहों सूर्य, गुरु, मंगल का वेध उ, य, म, ख अक्षरों पर है, जो इन प्रथमाक्षरों के व्यक्तियों, ग्राम, नगर आदि के लिए शुभदायक रहेगा। अशुभ ग्रहों चन्द्रमा, बुध, शुक्र, शनि, राहु, केतु का वेध च, ट, ल, द, क, प, भ, फ अक्षरों पर है जो सन्ताप, रोग, हानिदायक प्रभाव वाला है। रेवती नक्षत्र व मेष, सिंह, कुम्भ राशियां सर्वाधिक पाप विद्ध होने से अशुभता लिए हुए हैं।

इस वर्ष कृत्तिका नक्षत्र में बृहस्पति उदित होने से यह कार्त्तिक वर्ष होगा। इस वर्ष बंजारों, अग्नि से आजीविका वाले, व गाय आदि पशुओं को पीड़ा होगी। ऊर्जा क्षेत्र में हानि का योग है। शतभिषा में शनि सुमंगलकारक है अर्थात अत्यन्त वर्षा नहीं होती। शतभिषा व पूर्वाभाद्रपद में शनि विचरण कर रहा है। चिकित्सकों, साहित्यकारों, व्यापारियों व शराब कारोबारियों को विघ्न होगा।

✻ संवत् 2081 का राशिफल ✻

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

- मुदित मित्तल

श्रीसर्वेश्वर
जयादित्य
पञ्चांगम्

(यहाँ ग्रहयोग पर आधारित एक वर्ष का स्थूल राशिफल दिया जा रहा है।)

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो अ)

वर्षभर गुरु प्रायः द्वितीय भाव में, शनि आयस्थ, राहु व्ययस्थ व केतु षष्ठ भाव में रहेगा। धन की आवक अच्छी रहेगी, पारिवारिक सुख रहेगा, आपकी वाणी से लोग खुश रहेंगे, आपको ध्यान से सुनेंगे और सही समय पर सही बातें बोल देने से धनलाभ रहेगा। सत्कार्यों में व्यय, लोकप्रियता व ज्ञान अर्जित करेंगे। पिता को पाचन, पेट या मधुमेह की शिकायत हो सकती है, शान्त्यर्थ गुरुवार को हल्दी का दान करते रहें। शनि का फल इस वर्ष धन, वैभव, व्यवसाय, सन्तान, सम्मान व सभी तरह से शुभदायक है।

वृष (ई उ ए ओ वा वी वु वे वो)

वर्षभर गुरु प्रायः लग्न में, शनि दशम, राहु आय भावस्थ व केतु पंचम भाव में रहेगा। इस वर्ष आपको निवासस्थान से दूर जाना पड़ सकता है, आय अच्छी पर धन का नुकसान, विवादों से बचकर रहें, अगर साहित्य से जुड़े हैं तो सर्जन कर सकेंगे, धार्मिक प्रतीकों, देवताओं का अपमान भूलकर भी न करें। शनि व्यवसाय में मन्दी, घाटा, स्वास्थ्य में बाधा, सम्मान में कमी कर सकता है, उच्च लोगों से सहयोग मिलेगा।

मिथुन (का की कु घ ङ छ के को हा)

वर्षभर गुरु प्रायः व्यय भाव में, शनि नवम, राहु दशम, व केतु चतुर्थ भाव में रहेगा। अनावश्यक डर, चिन्ता, सरकारी नुकसान, शत्रुभय, धनहानि व मानहानि की संभावना है। पति या पत्नी को पेट सम्बन्धी समस्या की संभावना है। शान्त्यर्थ धार्मिक पुस्तकों का दान करें। भाइयों से सहयोग मिलेगा। नास्तिकता हावी हो सकती है। किसी बड़े सम्बन्धी गुरु, चाचा, मामा आदि को जीवनबाधा बन सकती है।

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो)

वर्षभर गुरु प्रायः आय भाव में, शनि अष्टम, राहु नवम व केतु तृतीय भाव में रहेगा। इस वर्ष सन्तान सुख, पद-प्रतिष्ठा प्रमोशन रूपी स्थान लाभ और सम्मान में वृद्धि होगी। शत्रु से धन लाभ होगा। गुरुभक्ति व पुण्यकार्य होंगे। पति या पत्नी के स्वास्थ्य में बाधा आ सकती है। शनि अष्टम भाव में होने से ढैय्या कारक है इसलिए यह धन व स्वास्थ्य की हानि करता है। बजरंगबली की पूजा उपासना विशेष फलदायक रहेगी।

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे)

वर्षभर गुरु प्रायः दशम भाव में, शनि सप्तम, राहु अष्टम व केतु दूसरे भाव में रहेगा। धन का नुकसान, नौकरी, पद या सम्मान में कोई अचानक अड़चन आ सकती है। सरकारी बाधा हटेंगी, कीर्ति बढ़ेगी, सुखप्राप्ति होगी। अपने पिता को प्रसन्न रखें, सेवा करें, और दूसरों की शिकायत करने से बचें। वातरोग, जीवनसाथी को स्वास्थ्य समस्या, कलह व व्यर्थ की यात्राओं से तनाव हो सकता है।

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो) -

वर्षभर गुरु प्रायः नवम भाव में, शनि षष्ठ, राहु सप्तम व केतु लग्न में रहेगा। इस वर्ष भाग्योदय होगा, लोकप्रियता बढ़ेगी, व्यवसाय में सफलता, सम्मान और शुभफल मिलेंगे, न्यायालय में व शत्रुओं पर विजय मिलेगी पर अपने रिश्तेदारों से विवाद, पुत्र से मतभेद, पुत्र को स्वास्थ्य बाधा रह सकती है। महिलाओं से सहयोग मिलेगा और आप नए कार्य शुरू करेंगे। विद्या व शिक्षा के क्षेत्र में कठिनाइयां व असफलता आ सकती है।

तुला (रा री रू रे रो ता ती तू ते)

वर्षभर गुरु प्रायः अष्टम भाव में, शनि पंचम, राहु षष्ठ व केतु व्यय भाव में रहेगा। व्यर्थ की यात्राओं से परेशान होना पड़ेगा, सरकारी नुकसान, धनहानि, रोग, सन्तान कष्ट आदि परेशानियों व कठिन परिश्रम से धनप्राप्ति का योग है। मन में अशांति, चिंता व सही सलाह देने वालों की बात नहीं मानेंगे। साफ सफाई व पवित्रता से रहें। मित्रों से सहयोग, व ईश्वर की भक्ति का योग है। हनुमान जी की पूजा उपासना लाभदायक होगी।

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो या यी यू)

वर्षभर गुरु प्रायः सप्तम भाव में, शनि चतुर्थ, राहु पंचम व केतु आय भाव में रहेगा। शुभकार्य हेतु यात्रा होगी, विवाह योग व वैवाहिक सुख, सन्तान सुख रहेगा। सम्मान बढ़ेगा व परोपकार में मन लगेगा। चतुर्थ भाव में गोचर का शनि होने से ढैय्या रहेगी जिससे धनहानि व कलह से बचना होगा। बजरंग बली हनुमान जी की पूजा उपासना से अशुभफल मिटेगा और शुभफल मिलेगा।

धनु (ये यो भा भी भू घा फा ढा भे)

इवर्षभर गुरु प्रायः षष्ठ भाव में, शनि तृतीय, राहु चतुर्थ व केतु दशम भाव में रहेगा। चचेरे भाई आदि से विवाद, शत्रुबाधा व शारीरिक कष्ट का योग है। माता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें व क्रोध से बचें। तृतीय का शनि पद नौकरी, व्यवसाय का लाभ, नौकरों और धन का लाभ कराएगा। भाइयों का सुख और मन में कार्य का साहस रहेगा।

मकर (भी जा जी खी खू खे खो गा गी)

वर्षभर गुरु प्रायः पंचम भाव में, शनि द्वितीय, राहु तृतीय व केतु नवम भाव में रहेगा। लंबे समय से चल रहे सरकारी विवाद का निराकरण, सरकारी लाभ व भले व्यक्तियों से मेलजोल होगा। सन्तान सुख रहेगा पर सन्तान के ऊपर खर्चा ज्यादा होगा। धन के आगमन में सरलता होगी व नए स्रोत बनेंगे परन्तु बचत अच्छी नहीं हो पाएगी।

कुम्भ (गू गे गो सा सी सू से सो दा)

वर्षभर गुरु चतुर्थ भाव में, शनि लग्न में, राहु द्वितीय व केतु अष्टम भाव में रहेगा। मित्रों के माध्यम से हानि हो सकती है व चौपाये वाहन से सावधानी बनाए रखें। भूमि भवन और सम्पत्ति का लाभ होगा, मातृपक्ष से भी धनलाभ हो सकता है। बड़े तीर्थ या धाम के दर्शन का संयोग बनेगा। इस वर्ष महाकुम्भ प्रयागराज में स्नान करने से बहुत शुभ रहेगा। मन में साहस बनेगा और शरीर में स्फूर्ति रहेगी। खर्चे बढ़ेंगे और कफ़फ से बचना होगा।

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची)

वर्षभर गुरु तृतीय भाव में, शनि व्ययस्थ, राहु लग्नस्थ व केतु सप्तम भाव में रहेगा। पद प्रतिष्ठा, सामाजिक व आर्थिक स्थिति में गिरावट, स्थानांतरण या यात्रा द्वारा परिवार से दूरी, कार्यों में विघ्न व स्वास्थ्य समस्या का योग है। यद्यपि अपने साहस से आप सभी बाधाओं को पार करेंगे व भाइयों व मातहत नौकरों या कर्मचारियों का सहयोग मिलेगा। शान्त्यर्थ धार्मिक पुस्तकों का दान करें। अच्छे कार्यों में खर्चे होंगे, विदेशियों से सम्पर्क बनेगा। गुस्से पर नियंत्रण करना होगा।

✲ संवत् 2081 में ग्रहों के गोचर, उदय-अस्त, वक्री-मार्गी आदि विचार ✲

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

✲ सूर्य संचार ✲

सूर्य की इन द्वादश संक्रान्तियों का स्वरूप, फल, एवं पुण्यकाल आदि पृष्ठ 14-15 पर दिया गया है।

राशि प्रवेश	सूर्य राशि संचार	
	दिनांक	समय घं.मि.
मेष	13 अप्रैल	23:25
वृषभ	14 मई	21:52
मिथुन	15 जून	07:57
कर्क	16 जुलाई	23:27
सिंह	17 अगस्त	10:44
कन्या	17 सितम्बर	11:08
तुला	17 अक्टूबर	21:35
वृश्चिक	16 नवम्बर	18:57
धनु	16 दिसम्बर	06:58
मकर	14 जनवरी 2025	14:53
कुम्भ	13 फरवरी 2025	01:48
मीन	14 मार्च 2025	21:20

✲ भौम संचार ✲

राशि प्रवेश	मंगल राशि संचार	
	दिनांक	समय घं.मि.
मीन	24 अप्रैल	18:10
मेष	2 जून	13:57
वृषभ	13 जुलाई	22:07
मिथुन	28 अगस्त	14:02
कर्क	23 अक्टूबर	20:58
मिथुन	27 जनवरी 2025	13:30
कर्क	4 अप्रैल 2025	10:38

मंगल वक्री - 27 दिसंबर 2024 07:11 बजे
मंगल मार्गी - 9 फरवरी 2025 07:57 बजे

संवत् 2081 में मंगल पूरे वर्ष उदित रहेगा

✲ बुध संचार ✲

राशि प्रवेश	बुध राशि संचार	
	दिनांक	घं.मि.
मेष	9 मई	19:10
वृषभ	28 मई	09:10
मिथुन	13 जून	05:55
कर्क	29 जून	12:10
सिंह	21 जुलाई	00:42
कर्क	7 अगस्त	11:14
सिंह	2 सितम्बर	03:21
कन्या	22 सितम्बर	14:29
तुला	9 अक्टूबर	16:48
वृश्चिक	27 अक्टूबर	16:52
धनु	4 जनवरी	18:21
मकर	22 जनवरी	22:10
कुम्भ	8 फरवरी	20:35
मीन	27 फरवरी	05:20

उदय अस्त	बुध उदय अस्त	
	दिनांक	घं.मि.
उदय पूर्व	22 अप्रैल	18:13
अस्त पूर्व	3 जून	11:04
उदय पश्चि.	23 जून	21:16
अस्त पश्चि.	6 अगस्त	19:59
उदय पूर्व	26 अगस्त	05:27
अस्त पूर्व	19 सितम्बर	09:30
उदय पश्चि.	23 अक्टूबर	15:13
अस्त पश्चि.	30 नवम्बर	07:19
उदय पूर्व	11 दिसम्बर	03:13
अस्त पूर्व	20 जनवरी	16:21
उदय पश्चि.	21 फरवरी	22:19
अस्त पश्चि.	18 मार्च	13:16

बुध वक्री - 02 अप्रैल 2024 00:25 बजे
बुध मार्गी - 24 अप्रैल 2024 15:23 बजे
बुध वक्री - 29 जुलाई 2024 09:16 बजे
बुध मार्गी - 20 अगस्त 2024 22:37 बजे
बुध वक्री - 20 नवम्बर 2024 18:39 बजे
बुध मार्गी - 13 दिसंबर 2024 04:24 बजे
बुध वक्री - 15 मार्च 2025 10:14 बजे
बुध मार्गी - 07 अप्रैल 2025 00:14 बजे

✲ गुरु संचार ✲

राशि प्रवेश	गुरु राशि संचार	
	दिनांक	समय घं.मि.
वृषभ	27 अप्रैल 2024	20:00

गुरु वक्री - 7 अक्टू. 2024 22:28 बजे
गुरु मार्गी - 9 फरवरी 2025 01:08 बजे
गुरु अस्त- 9 मई 2024 05:57 बजे, पश्चिम दिशा में
गुरु उदय- 3 जून 2024 11:57 बजे, पूर्व दिशा में

✲ शुक्र संचार ✲

राशि प्रवेश	शुक्र राशि संचार	
	दिनांक	समय घं.मि.
मेष	23 अप्रैल	17:26
वृषभ	18 मई	00:15
मिथुन	11 जून	09:51
कर्क	5 जुलाई	22:24
सिंह	30 जुलाई	12:11
कन्या	24 अगस्त	02:12
तुला	17 सितम्बर	16:58
वृश्चिक	12 अक्टूबर	10:18
धनु	6 नवम्बर	09:52
मकर	1 दिसम्बर	23:35
कुम्भ	29 दिसम्बर	00:50
मीन	30 जनवरी 2025	17:47
कुम्भ	19 मार्च 2025	17:30

शुक्र वक्री - 23 फरवरी 2025 20:58 बजे
शुक्र मार्गी - 7 अप्रैल 2025 05:29 बजे
शुक्र अस्त- 30 अप्रैल 2024, 24:30 बजे पश्चिम दिशा में
शुक्र उदय - 07 जुलाई 2024 16:20 बजे पूर्व दिशा में
शुक्र अस्त- 21 मार्च 2025 06:47 बजे पश्चिम दिशा में
शुक्र उदय - 25 मार्च 2025 22:35 बजे पूर्व दिशा में

✲ शनि संचार ✲

✲ संवत् 2081 मे शनि पूरे वर्ष कुम्भ राशि में रहेगा।

शनि वक्री - 27 जून 2024 02:54 बजे
शनि मार्गी - 11 नवम्बर 2024 02:02 बजे
शनि अस्त- 27 फरवरी 2025, 00:09 बजे, पश्चिम में
शनि उदय- 04 अप्रैल 2025, 06:37 बजे, पूर्व दिशा में

✲ राहु केतु संचार ✲

✲ संवत् 2081 में राहु पूरे वर्ष मीन राशि में रहेगा
✲ संवत् 2081 में केतु पूरे वर्ष कन्या राशि में रहेगा

✻ संवत् 2081 में सूर्य आदि ग्रहों के नक्षत्र प्रवेश ✻

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

✻ सूर्य नक्षत्रप्रवेश ✻

अश्विनी	13 अप्रैल	23:25 बजे
भरणी	27 अप्रैल	15:42 बजे
कृत्तिका	11 मई	10:43 बजे
रोहिणी	25 मई	08:11 बजे
मृगशिरा	08 जून	07:38 बजे
आर्द्रा	22 जून	08:33 बजे
पुनर्वसु	06 जुलाई	10:16 बजे
पुष्य	20 जुलाई	11:45 बजे
आश्लेषा	03 अगस्त	12:06 बजे
मघा	17 अगस्त	10:45 बजे
पूफा	31 अगस्त	07:13 बजे
उफा	14 सितंबर	01:07 बजे
हस्त	27 सितंबर	16:13 बजे
चित्रा	11 अक्टूबर	04:30 बजे
स्वाति	24 अक्टूबर	14:03 बजे
विशाखा	06 नवम्बर	21:06 बजे
अनुराधा	20 नवम्बर	02:00 बजे
ज्येष्ठा	03 दिसम्बर	05:09 बजे
मूल	16 दिसम्बर	06:59 बजे
पूर्वाषाढ़	29 दिसंबर	07:56 बजे
	2025	
उ.षाढ़	11 जनवरी	08:39 बजे
श्रवण	24 जनवरी	09:53 बजे
धनिष्ठा	06 फरवरी	12:09 बजे
शतभिषा	19 फरवरी	15:54 बजे
पू.भाद्र.	04 मार्च	21:34 बजे
उ.भाद्र.	18 मार्च	05:36 बजे
रेवती	31 मार्च	16:13 बजे

✻ बुध नक्षत्रप्रवेश ✻

अश्विनी	09 मई	19:10 बजे
भरणी	18 मई	18:37 बजे
कृत्तिका	26 मई	12:03 बजे
रोहिणी	02 जून	17:30 बजे
मृगशिरा	09 जून	18:06 बजे
आर्द्रा	16 जून	18:11 बजे
पुनर्वसु	23 जून	21:57 बजे
पुष्य	01 जुलाई	10:37 बजे
आश्लेषा	09 जुलाई	19:20 बजे
मघा	21 जुलाई	00:43 बजे
आश्लेषा	07 अगस्त	10:52 बजे
मघा	02 सितंबर	03:22 बजे
पूफा	12 सितंबर	06:48 बजे
उफा	20 सितंबर	15:07 बजे
हस्त	28 सितंबर	09:16 बजे
चित्रा	05 अक्टूबर	22:21 बजे
स्वाति	13 अक्टूबर	12:12 बजे
विशाखा	21 अक्टूबर	08:57 बजे
अनुराधा	29 अक्टूबर	23:06 बजे
ज्येष्ठा	09 नवंबर	21:33 बजे
अनुराधा	01 दिसंबर	06:09 बजे
ज्येष्ठा	25 दिसंबर	06:11 बजे
	2025	
मूल	04 जनवरी	18:21 बजे
पूर्वाषाढ़	13 जनवरी	05:35 बजे
उ.षाढ़	21 जनवरी	00:40 बजे
श्रवण	28 जनवरी	13:13 बजे
धनिष्ठा	05 फरवरी	01:10 बजे
शतभिषा	12 फरवरी	18:06 बजे
पू.भाद्र.	21 फरवरी	00:51 बजे
उ.भाद्र.	03 मार्च	00:56 बजे
पू.भाद्र.	29 मार्च	12:19 बजे

✻ शुक्र नक्षत्रप्रवेश ✻

रेवती	12 अप्रैल	23:11 बजे
अश्विनी	23 अप्रैल	17:27 बजे
भरणी	04 मई	12:09 बजे
कृत्तिका	15 मई	07:22 बजे
रोहिणी	26 मई	03:08 बजे
मृगशिरा	05 जून	23:28 बजे
आर्द्रा	16 जून	20:25 बजे
पुनर्वसु	27 जून	17:58 बजे
पुष्य	08 जुलाई	15:56 बजे
आश्लेषा	19 जुलाई	14:02 बजे
मघा	30 जुलाई	12:12 बजे
पू.फा.	10 अगस्त	10:24 बजे
उ.फा.	21 अगस्त	08:38 बजे
हस्त	01 सितंबर	07:00 बजे
चित्रा	12 सितंबर	05:34 बजे
स्वाति	23 सितंबर	04:32 बजे
विशाखा	04 अक्टूबर	04:05 बजे
अनुराधा	15 अक्टूबर	04:32 बजे
ज्येष्ठा	26 अक्टूबर	06:16 बजे
मूल	06 नवंबर	09:52 बजे
पूर्वाषाढ़	17 नवंबर	16:08 बजे
उ.षाढ़	29 नवंबर	02:15 बजे
श्रवण	10 दिसंबर	18:07 बजे
धनिष्ठा	22 दिसंबर	19:05 बजे
शतभिषा	04 जनवरी	11:39 बजे
पू.भाद्र.	18 जनवरी	09:54 बजे
उ.भाद्र.	04 फरवरी	17:20 बजे
पू.भाद्र.	14 मार्च	14:13 बजे

✻ मंगल नक्षत्रप्रवेश ✻

पू.भाद्र.	12 अप्रैल	02:43 बजे
उ.भाद्र.	28 अप्रैल	23:51 बजे
रेवती	16 मई	02:30 बजे
अश्विनी	02 जून	13:58 बजे
भरणी	20 जून	13:21 बजे
कृत्तिका	09 जुलाई	03:47 बजे
रोहिणी	28 जुलाई	12:52 बजे
मृगशिरा	17 अगस्त	21:53 बजे
आर्द्रा	08 सितंबर	16:23 बजे
पुनर्वसु	02 अक्टूबर	17:57 बजे
पुष्य	01 नवंबर	04:12 बजे
पुनर्वसु	19 जनवरी	01:50 बजे

✻ बृहस्पति नक्षत्रप्रवेश ✻

कृत्तिका	13 अप्रैल	11:25 बजे
रोहिणी	08 जून	18:56 बजे
मृगशिरा	10 अगस्त	15:53 बजे
रोहिणी	09 दिसंबर	14:19 बजे

✻ शनि नक्षत्रप्रवेश ✻

पू.भा.	06 मई	20:41 बजे
शतभिषा	14 अगस्त	00:48 बजे
	2025	
पू.भा.	01 फरवरी	08:01 बजे

✻ राहु केतु नक्षत्रप्रवेश ✻

केतु हस्त	19 अप्रैल	04:29 बजे
राहु उ.भा.	23 अगस्त	00:17 बजे
केतु उ.फा.	26 दिसंबर	19:59 बजे

✻ संवत् 2081 के व्रत-पर्व ✻

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

श्रीसर्वेश्वर
जयादित्य पञ्चांगम्

✻ पक्षों का आरम्भ दिन ✻

पक्ष	दिनांक
चैत्र शुक्ल	09 अप्रैल
वैशाख कृष्ण	24 अप्रैल
वैशाख शुक्ल	09 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	24 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	07 जून
आषाढ़ कृष्ण	23 जून
आषाढ़ शुक्ल	06 जुलाई
श्रावण कृष्ण	22 जुलाई
श्रावण शुक्ल	05 अगस्त
भाद्र. कृष्ण	20 अगस्त
भाद्र. शुक्ल	04 सितम्बर
आश्विन कृष्ण	19 सितम्बर
आश्विन शुक्ल	03 अक्टूबर
कार्त्तिक कृष्ण	18 अक्टूबर
कार्त्तिक शुक्ल	02 नवम्बर
मार्ग. कृष्ण	16 नवम्बर
मार्ग. शुक्ल	02 दिसम्बर
पौष कृष्ण	16 दिसम्बर
पौष शुक्ल	31 दिसम्बर
2025	
माघ कृष्ण	14 जनवरी
माघ शुक्ल	30 जनवरी
फाल्गु. कृष्ण	13 फरवरी
फाल्गु. शुक्ल	01 मार्च
चैत्र कृष्ण	15 मार्च

✻संकष्टी गणेश चतुर्थी✻

मास	दिनांक
वैशाख कृष्ण	27 अप्रै.
ज्येष्ठ कृष्ण	26 मई
आषाढ़ कृष्ण	25 जून
श्रावण कृष्ण	24 जुला.
भाद्र. कृष्ण	22 अग.
आश्विन कृष्ण	21 सित.
कार्त्तिक कृष्ण	20 अक्टू.
मार्ग. कृष्ण	18 नव.
पौष कृष्ण	18 दिस.
माघ कृष्ण	17 जन.
फाल्गु. कृष्ण	16 फर.
चैत्र कृष्ण	17 मार्च

✻वैनायकी गणेश चतुर्थी✻

मास	दिनांक
चैत्र शुक्ल	12 अप्रैल
वैशाख शुक्ल	11 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	10 जून
आषाढ़ शुक्ल	09 जुला.
श्रावण शुक्ल	08 अग.
भाद्र. शुक्ल	07 सित.
आश्विन शुक्ल	06 अक्टू.
कार्त्तिक शुक्ल	05 नव.
मार्ग. शुक्ल	05 दिस.
पौष शुक्ल	03 जन.
माघ शुक्ल	02 फर.
फाल्गु. शुक्ल	03 मार्च

✻ प्रदोष व्रत ✻

पक्ष	दिनांक
चैत्र शुक्ल	21 अप्रैल
वैशाख कृष्ण	05 मई
वैशाख शुक्ल	21 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	04 जून
ज्येष्ठ शुक्ल	19 जून
आषाढ़ कृष्ण	03 जुलाई
आषाढ़ शुक्ल	18 जुलाई
श्रावण कृष्ण	01 अगस्त
श्रावण शुक्ल	17 अगस्त
भाद्र. कृष्ण	31 अगस्त
भाद्र. शुक्ल	15 सितम्बर
आश्विन कृष्ण	30 सितम्बर
आश्विन शुक्ल	15 अक्टूबर
कार्त्तिक कृष्ण	29 अक्टूबर
कार्त्तिक शुक्ल	13 नवम्बर
मार्ग. कृष्ण	28 नवम्बर
मार्ग. शुक्ल	13 दिसम्बर
पौष कृष्ण	28 दिसम्बर
पौष शुक्ल	11 जनवरी
माघ कृष्ण	27 जनवरी
माघ शुक्ल	10 फरवरी
फाल्गु. कृष्ण	25 फरवरी
फाल्गु. शुक्ल	11 मार्च
चैत्र कृष्ण	27 मार्च

✻ एकादशी व्रत ✻

पक्ष	दिनांक	सम्प्रदाय
चैत्र शुक्ल	19 अप्रैल	सर्वेषाम्
वैशाख कृष्ण	4 मई	सर्वेषाम्
वैशाख शुक्ल	19 मई	सर्वेषाम्
ज्येष्ठ कृष्ण	2 जून	वैष्णव, स्मार्त
	3 जून	निम्बार्क
ज्येष्ठ शुक्ल	17 जून	वैष्णव, स्मार्त
	18 जून	निम्बार्क
आषाढ़ कृष्ण	2 जुलाई	सर्वेषाम्
आषाढ़ शुक्ल	17 जुलाई	सर्वेषाम्
श्रावण कृष्ण	31 जुलाई	सर्वेषाम्
श्रावण शुक्ल	15 अगस्त	स्मार्त
	16 अगस्त	वैष्णव
भाद्र. कृष्ण	29 अगस्त	वैष्णव, स्मार्त
	30 अगस्त	निम्बार्क
भाद्र. शुक्ल	14 सितम्बर	सर्वेषाम्
आश्विन कृष्ण	28 सितम्बर	सर्वेषाम्
आश्विन शुक्ल	13 अक्तूबर	वैष्णव, स्मार्त
	14 अक्तूबर	निम्बार्क
कार्त्तिक कृष्ण	28 अक्तूबर	सर्वेषाम्
कार्त्तिक शुक्ल	12 नवम्बर	सर्वेषाम्
मार्ग. कृष्ण	26 नवम्बर	वैष्णव, स्मार्त
	27 नवम्बर	निम्बार्क
मार्ग. शुक्ल	11 दिसंबर	वैष्णव, स्मार्त
	12 दिसंबर	निम्बार्क
पौष कृष्ण	26 दिसंबर	सर्वेषाम्
पौष शुक्ल	10 जनवरी	सर्वेषाम्
माघ कृष्ण	25 जनवरी	सर्वेषाम्
माघ शुक्ल	8 फरवरी	सर्वेषाम्
फाल्गु. कृष्ण	24 फरवरी	सर्वेषाम्
फाल्गु. शुक्ल	10 मार्च	सर्वेषाम्

✻ चन्द्र पूर्णिमा व्रत ✻

मास	दिनांक
चैत्र	23 अप्रैल
वैशाख	22 मई
ज्येष्ठ	21 जून
आषाढ़	20 जुलाई
श्रावण	19 अगस्त
भाद्रपद	17 सितम्बर
आश्विन	16 अक्तूबर
कार्त्तिक	14 नवम्बर
मार्गशीर्ष	14 दिसंबर
पौष	13 जनवरी
माघ	11 फरवरी
फाल्गुन	13 मार्च

✻सत्यनारायण पूर्णिमा✻

(स्नान-दान)

मास	दिनांक
चैत्र	23 अप्रैल
वैशाख	23 मई
ज्येष्ठ	22 जून
आषाढ़	21 जुलाई
श्रावण	19 अगस्त
भाद्रपद	18 सितम्बर
आश्विन	17 अक्तूबर
कार्त्तिक	15 नवम्बर
मार्गशीर्ष	15 दिसंबर
पौष	13 जनवरी
माघ	12 फरवरी
फाल्गुन	14 मार्च

* संवत् 2081 के व्रत-पर्व, पंचक, त्रिपुष्कर योग आदि *

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

* मासिक शिवरात्रि *
(कृष्ण चतुर्दशी)

वैशाख	06 मई
ज्येष्ठ	04 जून
आषाढ़	04 जुलाई
श्रावण	02 अगस्त
भाद्रपद	01 सितम्बर
आश्विन	30 सितम्बर
कार्तिक	30 अक्तूबर
मार्गशीर्ष	29 नवम्बर
पौष	29 दिसंबर
माघ	28 जनवरी
फाल्गुन	26 फरवरी
चैत्र	28 मार्च

* मासिक कालाष्टमी *
(कृष्णपक्ष)

वैशाख	01 मई
ज्येष्ठ	30 मई
आषाढ़	28 जून
श्रावण	28 जुलाई
भाद्रपद	26 अगस्त
आश्विन	24 सितम्बर
कार्तिक	24 अक्टूबर
मार्गशीर्ष	23 नवम्बर
पौष	22 दिसम्बर
माघ	21 जनवरी
फाल्गुन	20 फरवरी
चैत्र	22 मार्च

* पितृकार्य अमावस्या *
(श्राद्ध)

वैशाख	07 मई
ज्येष्ठ	06 जून
आषाढ़	05 जुलाई
श्रावण	04 अगस्त
भाद्रपद	02 सितम्बर
आश्विन	02 अक्तूबर
कार्तिक	01 नवम्बर
मार्गशीर्ष	30 नवम्बर
पौष	30 दिसंबर
माघ	29 जनवरी
फाल्गुन	27 फरवरी
चैत्र	29 मार्च

* देवकार्य अमावस्या *
(स्नान दान)

वैशाख	08 मई
ज्येष्ठ	06 जून
आषाढ़	05 जुलाई
श्रावण	04 अगस्त
भाद्रपद	02 सितम्बर
आश्विन	02 अक्तूबर
कार्तिक	01 नवम्बर
मार्गशीर्ष	01 दिसंबर
पौष	30 दिसंबर
माघ	29 जनवरी
फाल्गुन	28 फ़रवरी

* पितृपक्ष श्राद्ध तिथि *

18 सितम्बर	प्रतिपदा का श्राद्ध
19 सितम्बर	द्वितीया का श्राद्ध
20 सितम्बर	तृतीया का श्राद्ध
21 सितम्बर	चतुर्थी का श्राद्ध
22 सितम्बर	पंचमी का श्राद्ध
23 सितम्बर	षष्ठी का श्राद्ध
24 सितम्बर	सप्तमी का श्राद्ध
25 सितम्बर	अष्टमी का श्राद्ध
26 सितम्बर	नवमी का श्राद्ध
27 सितम्बर	दशमी का श्राद्ध
28 सितम्बर	एकादशी का श्राद्ध द्वादशी को करें
29 सितम्बर	एकादशी, द्वादशी का श्राद्ध
30 सितम्बर	त्रयोदशी का श्राद्ध
1 अक्टूबर	केवल शस्त्र,विष आदि से मृतकों का श्राद्ध
2 अक्टूबर	अमावस्या, चतुर्दशी व पूर्णिमा का श्राद्ध

पितरों का श्राद्ध अवश्य करना चाहिए

* एकादशी श्राद्ध निषेध के वाक्य प्राप्त होते हैं विशेषकर वैष्णवों को एकादशी का श्राद्ध द्वादशी में करना चाहिये।

* सुहागिन माता का श्राद्ध किसी भी तिथि को हो नवमी में ही करना चाहिये।

* चतुर्दशी को जो शस्त्रादि अपमृत्यु को प्राप्त हुए हैं उनका ही श्राद्ध होता है, जिनकी तिथि चतुर्दशी हो उनका श्राद्ध अमावस्या अथवा त्रयोदशी को करें।

* पंचक *

वर्षारम्भ	से	09 अप्रैल	08:29 तक
02 मई	11:43 से	06 मई	16:31 तक
29 मई	19:49 से	03 जून	00:40 तक
26 जून	03:59 से	30 जून	08:54 तक
23 जुलाई	12:08 से	27 जुलाई	17:06 तक
19 अगस्त	20:09 से	24 अगस्त	01:12 तक
16 सितम्बर	04:04 से	20 सितम्बर	09:12 तक
13 अक्टूबर	11:57 से	17 अक्टूबर	17:14 तक
09 नवम्बर	19:55 से	14 नवम्बर	01:23 तक
07 दिसम्बर	04:02 से	11 दिसम्बर	09:42 तक
03 जनवरी	12:15 से	07 जनवरी	18:06 तक
30 जनवरी	20:23 से	04 फरवरी	02:25 तक
27 फरवरी	04:20 से	03 मार्च	10:34 तक
26 मार्च	12:08 से		वर्षान्त तक

* त्रिपुष्कर योग *

15 अप्रैल	05:22 से सूर्योदय तक
20 अप्रैल	14:43 से 23:01 तक
30 अप्रैल	सूर्योदय से 1 मई 01:33 तक
04 मई	17:52 से 19:45 तक
18 मई	14:47 से अगले सूर्योदय तक
23 जून	18:17 से 28:22 तक
02 जुलाई	08:38 से 3 जुला. 04:37 तक
07 जुलाई	03:50 से 05:02 तक
25 अगस्त	22:12 से अगले सूर्योदय तक
14 सितंबर	16:06 से 17:22 तक
29 अक्टूबर	सूर्योदय से 10:27 तक
02 नवंबर	18:27 से 3 नवं.05:07 तक
17 दिसंबर	सूर्योदय से 12:09 तक
22 दिसंबर	07:44 से 15:14 तक
01 जनवरी	03:50 से सूर्योदय तक
05 जनवरी	20:49 से 21:18 तक
09 फरवरी	18:49 से 20:05 तक
25 फरवरी	सूर्योदय से 10:31 तक
01 मार्च	सूर्योदय से 13:41 तक
15 अप्रैल	05:22 से सूर्योदय तक
20 अप्रैल	14:43 से 23:01 तक

* द्विपुष्कर योग *

20 अप्रैल	सूर्योदय पूर्व 03:01 से सूर्योदय तक
23 जुलाई	सूर्योदय से 12:30 तक
11 अगस्त	01:44 से 03:16 तक
24 सितंबर	सूर्योदय से 17:37 तक
17 नवंबर	19:49 से 23:11 तक
27 नवंबर	सूर्योदय पूर्व 05:11 से सूर्योदय तक
7 दिसंबर	09:04 से 15:33 तक
21 जनवरी	सूर्योदय से 11:17 तक
16 मार्च	10:21 से 15:08 तक
26 मार्च	00:22 से सूर्योदय तक

* गुरुपुष्य योग *

24 अक्टूबर	11:11 से अगले सूर्योदय तक
21 नवंबर	सूर्योदय से 19:30 तक

* रविपुष्य योग *

07 जुलाई	अहोरात्र
04 अगस्त	सूर्योदय से 13:43 तक

❊ दीपावली निर्णय: 31 अक्टूबर 2024 को ही दीपावली शास्त्रसम्मत ❊

कार्त्तिक मास के कृष्णपक्ष में अमावस्या के दिन रात्रि में दीपावली पर्व व लक्ष्मीपूजा होती है। लक्ष्मीपूजा हेतु कार्त्तिक कृष्णपक्ष की दर्श अमावस्या प्रदोषव्यापिनी ली जाती है।

दिनांक	अमावस्या आरंभ	अमावस्या समाप्ति	जयपुर में सूर्योदय	जयपुर में सूर्यास्त	प्रदोष काल	दर्श आरम्भ	दर्श समाप्ति
31 अक्टू	14:39	-	06:40	17:38	17:39-20:03	17:54	-
1 नवंबर	-	16:41	06:41	17:39	17:39-20:03	-	10:10

सूर्यसिद्धान्तीय पंचांग में स्पष्टतः 31 अक्टूबर को प्रदोष में दर्श व्याप्ति हो रही है और दूसरे दिन 1 नवम्बर की रात्रि (प्रदोष) में अमावस्या की किंचित् भी प्राप्ति नहीं हो रही है। इसलिए निर्विवाद रूप से पहले दिन 31 अक्टूबर में ही दीपावली लक्ष्मीपूजा शास्त्रसम्मत है।

परन्तु दृश्यपक्षीय पंचांगों में संवत् 2081 में कार्त्तिक अमावस्या 31 अक्टूबर को सम्पूर्ण प्रदोषव्याप्ति और 1 नवंबर को प्रदोषकाल का किंचित् स्पर्श कर रही है, जिस कारण कुछ दृक्पक्षीय पंचांगकर्ताओं में मतभेद है और कुछ दृश्य पंचांगों द्वारा 1 नवंबर को दीपावली निर्णय दिया गया है। जिससे 2081 में देशभर में दीपावली जैसे हिन्दुओं के शीर्षस्थानीय वैश्विक पर्व पर भ्रम की स्थिति बनने के आसार बन रहे हैं, जो किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। ऐसी स्थिति में पुनः सिद्ध हो जाता है कि व्रत-पर्वों के निर्धारण हेतु श्रीसूर्यसिद्धान्तीय गणित ही आर्ष व शास्त्रसम्मत है।

कुछ समय पहले जब से दृश्यपंचांगों का प्रयोग बढ़ा है, तब से प्रत्येक दूसरे तीसरे पर्व पर भ्रम की स्थिति उत्पन्न होने लगी है और धार्मिकों को अनेक बार अधर्मिकों के सम्मुख संकोच व उपहास की स्थिति का सामना करने हेतु विवश होना पड़ता है। यही वेदतुल्य शास्त्र श्रीसूर्यसिद्धान्त के त्याग का दुष्परिणाम है। आने वाले समय में भी हिन्दू व्रत-पर्वों के निर्णय में अग्राह्य दृश्यगणित के अनाधिकारिक अशास्त्रीय प्रयोग से ऐसी समस्याएं उत्पन्न होती रहेंगी, जिसका एकमेव समाधान श्रीसूर्यसिद्धान्त आधारित पंचांग ही है।

300 से अधिक वर्षों से निरन्तर प्रकाशित '**जयविनोदी जयपुर पंचांग**' के सम्पादक 'विद्वद्भूषण' आचार्य श्री आदित्यमोहन शर्मा जी ने दीपावली निर्णय पर शास्त्रीय प्रमाणों से युक्त लेख अपने दृक्पक्षीय पंचांग में प्रकाशित किया है, व प्रचुर शास्त्रप्रमाणों व धर्मशास्त्रों के सूक्ष्म व गंभीर अध्ययनोपरान्त सिद्ध किया है कि दृक्पक्षीय मत में भी दीपावली 31 अक्टूबर को होना ही शास्त्रसम्मत है।

दीपावली निर्णयार्थ शास्त्रप्रमाण युक्त उक्त भ्रमभंजक लेख को भारतवर्ष के मूर्धन्य धर्मशास्त्रज्ञों, ज्योतिषाचार्यों, धर्माचार्यों द्वारा सहमति प्रदान की गई है। प्रमुख रूप से काशी सुमेरु पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी जी श्री नरेन्द्रानन्द सरस्वती जी महाराज, आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी श्री पद्मनाभशरणदेवाचार्य जी महाराज जयपुर, वैष्णवाचार्य स्वामी श्री राघवेन्द्रदास जी महाराज ऋषिकेश, अखिल भारतीय विद्वत्परिषद् वाराणसी के महासचिव ज्योतिषाचार्य डॉ. कामेश्वर उपाध्याय जी, मुख्याचार्य श्रीरामजन्मभूमि शिलापूजन अयोध्या तथा गीताप्रेस गोरखपुर के संपादक सदस्य आचार्य गंगाधर जी पाठक, विभागाध्यक्ष धर्मशास्त्रविद्याशाखा विभाग केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर प्रो. कृष्णा शर्मा व अनेक विद्वानों द्वारा 31 अक्टूबर, 2024 को दीपावली के पक्ष में सहमति प्रदान की गई है।

भारत सरकार द्वारा कोलकाता से प्रकाशित राष्ट्रीय पंचांग Nautical Almanac, महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखंड, उड़ीसा व कर्नाटक के अधिकांश पंचांगों में, गीताप्रेस गोरखपुर की डायरी में, 31 अक्टूबर 2024 को ही दीपावली निर्णीत की गई है। भारत सरकार व राज्य सरकारों द्वारा दीपावली का अवकाश भी 31 अक्टूबर का ही घोषित किया गया है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार **श्रीरामजन्मभूमि मन्दिर अयोध्या में पाँच शताब्दियों पश्चात् निर्मित नवीन मन्दिर में प्रथम दीपावली भव्यतम रूप से 31 अक्टूबर को ही मनाई जाएगी।** सम्पूर्ण शास्त्रीय प्रमाणों से युक्त **यह लेख जयविनोदी जयपुर पंचांग से उद्धृत किया जा रहा है**:-

कार्तिक कृष्ण अमावस्या की संज्ञा दीपावली है। इस दिन प्रातः अभ्यंग स्नान, श्राद्ध, श्रीलक्ष्मी पूजन, उल्कादान आदि मुख्य हैं तथा यह सुखरात्रिका भी कही जाती है, यह प्रदोषकालव्यापिनी ग्राह्य है। दो दिन प्रदोष में व्याप्ति होने पर दूसरे दिन लेनी चाहिए। जयसिंहकल्पद्रुम के अनुसार दोनों दिन प्रदोष में अव्याप्ति होने पर अर्धरात्रव्यापिनी अमावस्या लेनी चाहिए। प्रदोष और अर्धरात्रिव्यापिनी अमावस्या ही मुख्य है।

ज्योतिःशास्त्र, तिथितत्त्व, ज्योतिर्निबन्ध व अन्यान्य स्थलों में स्कन्दपुराण का वाक्य कहा है-

दण्डैकरजनीयोगे दर्शः स्यात्तु परेऽहनि ।
तदा विहाय पूर्वेद्युः परेऽह्नि सुखरात्रिके ।।

दण्डैकरजनीयोगे -रात्रि में एक दण्ड योग होने पर, **दर्शः** - दर्श का, **स्यात् तु** - यदि कभी, **परेऽहनि** - पर दिन में, **तदा** - तब, **विहाय** - छोड़कर, **पूर्वेद्युः** - पूर्व दिन की को, **परेऽह्नि**- पर दिन में, **सुखरात्रिके** - सुखरात्रि होगी

यदि दूसरे दिन की रात्रि में दर्श का एक दण्ड योग (व्याप्ति) हो, तो पहले दिन को छोड़कर दूसरे दिन सुखरात्रिका होती है।

❊ दीपावली निर्णय: 31 अक्टूबर 2024 को ही दीपावली शास्त्रसम्मत ❊

दीपावली निर्णय में शास्त्रकारों एवं निबंधकारों ने बारम्बार दर्श शब्द का प्रयोग किया है। **यहाँ शास्त्रकारों ने सामान्य अमावस्या की बात न करके दीपावली हेतु सर्वत्र अमावस्या के दर्श भाग का ग्रहण किया है।**

वस्तुतः अमावस्या का शुद्ध व अविद्ध भाग दर्श है। अमावस्या की भिन्न भिन्न स्थितियों में सिनीवाली, दर्श व कुहू भी विशिष्ट होती हैं। इसलिए वर्तमान स्थिति में दर्श का काल जानना आवश्यक है।

दर्श की परिभाषा हेतु **धर्मसिन्धु** में कहा है,

'तत्रामावस्यायाः प्रथमो यामः सिनीवाली। अन्त्योपान्त्ययामौ कुहूः। मध्यवर्तिपञ्चयामा दर्श इति केचित्।'

अमावस्या के प्रथम प्रहर को सिनीवाली कहते हैं। अन्त और अन्त के पहले वाले, इन दो प्रहरों को कुहू कहते हैं। बीच वाले पांच प्रहरों को दर्श कहते हैं।

मुहूर्त्तचिन्तामणि की पीयूषधारा टीका में भी कहा है,

'...पुनस्तस्यामेवामावास्यायां प्रथमप्रहरानन्तरं सप्तमप्रहरादर्वाक्प्रहरपंचकात्मकः कालो दर्शशब्दवाच्यः इति।'

उस अमावस्या में अमावस्या के प्रथम प्रहर के अनन्तर व सप्तम से पूर्व तक का पाँच प्रहरात्मक काल दर्श कहलाता है।

आगे कहा, **'एवमेकस्यामेवामावास्यायांकालभेदेनत्रयंसम्भवति।'**, अर्थात्, एक ही अमावस्या में काल के भेद से तीन संभव होती हैं, सिनीवाली, दर्श एवं कुहू।

दृश्य पंचांग अनुसार भारत में कार्तिक अमावस्या के प्रारम्भ व समाप्ति की स्थिति निम्न है:

दिनांक	अमावस्या आरंभ	अमावस्या समाप्ति	जयपुर में सूर्योदय	जयपुर में सूर्यास्त	प्रदोष काल	दर्श आरम्भ	दर्श समाप्ति
31 अक्टू	15:53	-	06:40	17:42	17:42-20:06	19:11	-
1 नवंबर	-	18:17	06:41	17:41	17:41-20:05	-	11:41

दृश्य पञ्चाङ्ग में 31 अक्टूबर को 15:53 बजे अमावस्या का आरम्भ, व 1 नवम्बर को 18:17 बजे समाप्ति हो रही है। अमावस्या का कुल मान 26 घण्टे 24 मिनट प्राप्त हो रहा है।

अहोरात्र या तिथि के आठवें भाग को एक याम या एक प्रहर कहते हैं। अतः उपर्युक्त अमावस्या मान के 8 भाग करने पर :- (26 घण्टे 24 मिनट) / 8 = 3 घण्टे 18 मिनट अमावस्या का एक प्रहर 03 घण्टे 18 मिनट का होगा। अतः

अमावस्या का भाग	आरंभ	समाप्ति
सिनीवाली पहला प्रहर	31 अक्टूबर 15:53	31 अक्टूबर 19:11
दर्श मध्य के 5 प्रहर	31 अक्टूबर 19:11	1 नवंबर 11:41
कुहू अन्तिम 2 प्रहर	1 नवंबर 11:41	1 नवंबर 18:17

यहाँ पर दूसरे दिन 1 नवम्बर की रात्रि (प्रदोष) में दर्श की प्राप्ति नहीं हो रही है क्योंकि दर्श 1 नवंबर को 11:41 बजे ही समाप्त हो जा रहा है। इसलिए दूसरे दिन 1 नवंबर में न होकर **पहले दिन 31 अक्टूबर में ही सुखरात्रि (दीपावली) शास्त्रसम्मत होगी।**

पहले दिन 31 अक्टूबर के प्रदोषकाल 17:42 - 20:06 में दर्श का एक घटी से अधिक का योग प्राप्त हो रहा है, जिससे 31 अक्टूबर को ही दीपावली शास्त्रसम्मत होगी।

धर्मशास्त्रों में व प्राचीन आचार्यों ने दीपावली निर्णय में 'दर्श' शब्द का विशेष रूप से प्रयोग किया है, जबकि अन्य स्थानों पर ऐसा नहीं है, अतः दीपावली निर्णय में अमावस्या के दर्श भाग का प्रदोष से संसर्ग प्रमुख है। यहाँ धर्मशास्त्रों को उद्धृत किया जा रहा है :-

दीपावली के लिए **धर्मसिन्धु** में कहा है,

'अथाश्विनामावास्यायां प्रातरभ्यङ्गः प्रदोषे दीपदानलक्ष्मीपूजनादि विहितम्। तत्र सूर्योदयं व्याप्यास्तोत्तरं घटिकाधिकरात्रिव्यापिनि दर्शे सति न सन्देहः।'

आश्विन की अमावास्या(अमान्त मास पक्ष से, उत्तरभारत में कार्तिक अमावस्या) में प्रातःकाल अभ्यंगस्नान, प्रदोष में दीपदान और लक्ष्मीपूजा आदि कहा है। इसमें सूर्योदय को व्याप्त करके और सूर्यास्त के बाद रात्रि में एक घटी से अधिक दर्श हो तो उस दिन दीपावली होने में कोई संदेह नहीं है।

राजमार्तण्ड में कहा है,

दण्डैकंरजनी प्रदोषसमये दर्शो यदा संस्पृशेत् ।
कर्त्तव्या सुखरात्रिकात्र विधिना दर्शाद्यभावे तदा ।।
पूज्या चाब्जधरा सदैव च तिथिः सैवाहनि प्राप्यते ।
कार्या भूतविमिश्रिता जगुरिति व्यासादिगर्गादयः ।।

अर्थात्, यदि रात्रि को प्रदोष के समय एक दण्ड(घटी) भी दर्श का स्पर्श हो रहा हो, तो उस दिन रात्रि में दर्श आदि के अभाव में भी विधिपूर्वक सुखरात्रिका करे। लक्ष्मी की पूजा सदैव उसी दिन करनी चाहिए जिस दिन प्रदोषव्यापिनी तिथि(दर्श) की प्राप्ति होती हो, यह चतुर्दशी मिश्रित अमावस्या में भी करनी चाहिए ऐसा व्यास, गर्ग आदि ऋषियों का कथन है।

इसे उद्धृत कर **तिथिनिर्णय** में कहा है,

यदि चोत्तरत्र दिवैव दर्शः प्राप्यते समाप्यते, पूर्वदिने च प्रदोषे लभ्यते तदा चतुर्दशीविद्धापि ग्राह्येत्यर्थः। *ज्योतिःशास्त्रे-*

दण्डैकरजनीयोगे दर्शः स्याच्च परेऽहनि ।
तदा विहाय पूर्वेद्युः परेऽह्नि सुखरात्रिका ॥
अमावास्या यदा रात्रौ दिवाभागे चतुर्दशी ।
पूजनीया तदा लक्ष्मीर्विज्ञेया सुखरात्रिका ॥

इति वचनद्वयमुभयत्र प्रमाणं वेदितव्यम् ।

अर्थात्, "**यदि दूसरे दिन दिवाभाग में ही दर्श मिले और समाप्त हो जाए व पहले दिन के प्रदोष में दर्श मिल रहा हो तो चतुर्दशी विद्धा अमावस्या भी ग्राह्य है**, यह अर्थ है। ज्योतिःशास्त्र में कहा है, यदि दूसरे दिन की रात्रि में दर्श का एक दण्ड योग (व्याप्ति) हो, तो पहले दिन को छोड़कर दूसरे दिन सुखरात्रिका होती है।

रात्रि में अमावस्या हो और दिन में चतुर्दशी हो तो उसी रात्रि में लक्ष्मी पूजा करनी चाहिए, इसे सुखरात्रिका कहते हैं।

इन दोनों वचनों को दोनों ही स्थानों में प्रमाण समझा जाना चाहिए।"

इस प्रकार इस वर्ष संवत् 2081 में दूसरे दिन प्रदोष काल में दर्श का एक दंड योग नहीं होने से पहले दिन ही सुखरात्रिका(दीपावली) शास्त्रसम्मत होगी।

❊ शब्दकल्पद्रुम में दीपावली के अंगभूत श्राद्ध, उल्कादान व लक्ष्मीपूजा का कालनिर्णय ❊

शब्दकल्पद्रुम (1828 ई.) स्यार राजा राधाकांतदेव बहादुर द्वारा 7 खंडों में निर्मित संस्कृत का महाशब्दकोश है। इसमें सुखरात्रि के विषय में श्राद्ध, उल्कादान और लक्ष्मीपूजा के काल को पृथक पृथक स्पष्टता से बताया गया है:-

यद्येवं पूर्वदिन एव प्रदोषव्यापिन्यमावास्या तदा पूर्वदिन एव श्राद्धमकृत्वापि उल्कादानं कर्त्तव्यम् । आचारात् पञ्चभूतोपाख्यानञ्च श्रोतव्यम् । उभयतः प्रदोषव्याप्तौ परदिन एव युग्मात् । उभयतः प्रदोषाप्राप्तावपि उल्कादानं परदिने पार्व्वणानुरोधात् । ***अत्रैव पूर्व्वदिने लक्ष्मी रात्रौ पूज्या ।***

"अमावस्या यदा रात्रौ दिवाभागे चतुर्द्दशी । पूजनीया तदा लक्ष्मीर्व्विज्ञेया सुखरात्रिका ॥"

इति वचनात् । ***लक्ष्मीपूजाविषयेऽप्येवं व्यवस्था*** *। ततो गृहमध्ये उत्तराभिमुखो लक्ष्मीं पूजयेत् ।*

अर्थात्, यदि पहले दिन प्रदोषव्यापिनी अमावस्या हो तो पहले दिन ही श्राद्ध न करके भी उल्कादान करे। आचार से पंचभूत उपाख्यान सुनना चाहिए। यदि दोनों दिन प्रदोष व्याप्त हो तो दूसरे दिन उल्कादान करे। दोनों दिन प्रदोष में अमावस्या की प्राप्ति न हो तो भी पार्वण श्राद्ध के अनुरोध से दूसरे दिन उल्कादान करे। **ऐसी स्थितियों में भी पहले दिन की रात्रि में ही लक्ष्मी पूजा करे। क्योंकि कहा गया है, 'रात्रि में अमावस्या हो और दिन में चतुर्दशी हो तो उसी रात्रि में लक्ष्मी पूजा करनी चाहिए, इसे सुखरात्रिका कहते हैं।' लक्ष्मीपूजा के विषय में यही व्यवस्था है।**

- शब्दकल्पद्रुमः, चौखम्भा संस्कृत ग्रन्थमाला, कार्त्तिककृत्यम्

"अमावस्या यदा रात्रौ दिवाभागे चतुर्द्दशी।
पूजनीया तदा लक्ष्मीर्व्विज्ञेया सुखरात्रिका॥"

शब्दकल्पद्रुम के साथ यह श्लोक तर्कवाचस्पति तारानाथ भट्टाचार्य द्वारा अपने प्रख्यात ग्रन्थ वाचस्पत्यम् (1866) में भी उद्धृत है, वहाँ इसे ज्योतिर्वचनात् लिखा है। इसके अतिरिक्त तिथिनिर्णय, तिथितत्त्व, कृत्यसार, कालतत्त्वविवेचन आदि अनेक निन्ध ग्रंथों में यह श्लोक उद्धृत करके प्रातः चतुर्दशी होने पर भी प्रदोष-रात्रिव्यापिनी अमावस्या को ही सुखरात्रिका अर्थात् दीपावली कहा गया है।

शब्दकल्पद्रुम के विवेचन से भी स्पष्ट होता है कि इस वर्ष संवत् 2081 में पहले दिन यानि 31 अक्टूबर 2024 के प्रदोषकाल में ही लक्ष्मीपूजा व सुखरात्रि विहित है।

कालतत्त्वविवेचनम्

आचार्य रघुनाथ भट्ट सम्राट्स्थापति ने अपने ग्रन्थ 'कालतत्त्वविवेचनम्'(1620 ई.) में इसी मत को प्रतिपादित किया है। 'कालतत्त्वविवेचनम्' ग्रन्थ जयपुर राजगुरु कथाभट्ट वंश के आचार्य नन्दकिशोर शर्मा के सम्पादन में काशी से 1932 में प्रकाशित हुआ है।

अमावास्या कर्त्तव्यदीपदानं च यद्यपि 'कृत्वा तु पार्वणश्राद्धम्' इत्यभिधाय 'ततोऽपराह्णसमये' इत्यादिराजकर्त्तव्याभिधानमध्ये' 'दीपमालाकुलेरम्ये विध्वस्तध्वान्तसंचये । प्रदोषे दोषरहिते शस्ते दोषागमे शुभे ॥'

इत्यभिधानात्सर्वैरपि श्राद्धानन्तरं कर्त्तव्यमिति प्रतीयते। श्राद्धदिने प्रदोषव्यापिन्यां च तस्यां तत्संभवत्येव। तथापि यदा पूर्वेद्युरेव प्रदोषव्यापिन्यमावास्या श्राद्धयोग्या च द्वितीयदिने ***तदा पूर्वेद्युरेव प्रदोषे लक्ष्मीं यथाविभवं पूजयित्वा*** *दीपदानं च कृत्वा ब्राह्मणादिभ्यश्च भोजनं दत्त्वा स्वयं बान्धवैः सह भोजनं कार्यम्-*

❊ दीपावली निर्णय: 31 अक्टूबर 2024 को ही दीपावली शास्त्रसम्मत ❊

'दिवा तत्र न भोक्तव्यमृते बालातुराज्जनात् । प्रदोषसमये लक्ष्मीं पूजयित्वा यथाक्रमम् ।।
दीपवृक्षास्तथा कार्याः शक्त्या देवगृहेषु च इत्यभिधाय –
'ब्राह्मणान् भोजयित्वादौ संभोज्य च बुभुक्षितान् । अलंकृतेन भोक्तव्यं नववस्त्रोपशोभिना ।।
स्निग्धैर्मुग्धैर्विदग्धैश्च निवृत्तैर्बान्धिवैः सह ।
इत्यादित्यपुराणेऽभिधानात् ।
विधेयत्वेऽपि कालविरोधे क्रमस्यानादृत्यत्वात् । वस्तुतस्तु स्वकालप्राप्तश्राद्धानुवादात् क्रमस्यात्राविधानमेव । औत्सर्गिकाखण्डतिथेरेव प्रायोव्यवहारविषयत्वेन तस्य प्राप्तत्वात् । उल्कादानमपि प्रदोष एव ज्योतिर्ग्रन्थे विहितं तत्रैव कार्यम् ।
'तुलासंस्थे सहस्रांशौ प्रदोषे भूतदर्शयोः । उल्काहस्ता नराः कुर्युः पितृणां मार्गदर्शनम् ।।' इति ।
स्पष्टं च पूर्वाग्राह्यत्वमुक्तं तत्रैव ।
''अमावास्या यदा रात्रौ दिवाभागे चतुर्दशी ।
पूजनीया तदा लक्ष्मीर्विज्ञेया सुखरात्रिका ।।'' *इति ।*

अर्थात्, ''अमावस्या को कर्त्तव्य दीपदान यद्यपि 'अपराह्नकाल में पार्वण श्राद्ध के बाद' करे, जैसा कि राजा के कर्त्तव्यों में कहा गया है, 'दीपमालाओं से परिपूर्ण, अंधकार से रहित दोषरहित शुभ प्रदोष काल में कल्याणमयी प्रशस्त रात्रि के आने पर', से प्रतीत होता है कि सभी को श्राद्ध के बाद दीपावली कर्म करना चाहिए। श्राद्ध के दिन यदि अमावस्या प्रदोषव्यापिनी हो तो यह संभव हो सकता है। परन्तु यदि पहले दिन प्रदोषव्यापिनी अमावस्या हो और द्वितीय दिन श्राद्धयोग्य हो तो पहले दिन प्रदोषकाल में लक्ष्मी को पूजकर, दीपदान कर, ब्राह्मणादि को भोजन देकर स्वयं बंधुओं के साथ भोजन करना चाहिए।

आगे कहा है– क्रम का विधान प्रतीत होने पर भी काल का विरोध उपस्थित होने के कारण क्रम का अनादर करना चाहिए। वस्तुतः यहाँ अमावस्या होने पर अपने स्वकाल से प्राप्त श्राद्ध का अनुवाद मात्र है, विधान नहीं, अतः क्रम का भी यहाँ विधान नहीं है। सामान्यतः अखण्डतिथि ही प्रायः व्यवहार की विषय होती है क्योंकि उसी की प्राप्ति होती है।

उल्कादान भी प्रदोषकाल में ही करना चाहिए, ऐसा ज्योतिर्ग्रंथ में बताया गया है। 'सूर्य तुला राशि में स्थित हो और चतुर्दशी और अमावस्या की संधि वाला प्रदोषकाल हो तो, हाथ में उल्का लेकर पितरों को मार्ग दिखाना चाहिए।'

यहीं पर स्पष्ट रूप से पूर्वा को ही ग्राह्य बताया गया है, 'रात्रि में अमावस्या हो और दिन में चतुर्दशी हो तो उसी रात्रि में लक्ष्मी पूजा करनी चाहिए, इसे सुखरात्रिका कहते हैं।'''

इस प्रकार शास्त्रों में श्राद्ध, उल्कादान और लक्ष्मीपूजा के विषय में स्पष्टतः उन्हें तत्तत् विहितकाल में, श्राद्ध अपराह्नव्यापिनी अमावस्या में, उल्कादान और लक्ष्मीपूजा शुद्ध अव्यवहित दर्शयुक्त प्रदोषकाल में ही करणीय बताया गया है, जैसा कि भविष्यपुराण में व्यासजी ने प्रदोषकाल की शुद्धता पर बल देते हुए कहा है,

दीपमालाकुले रम्ये विध्वस्तध्वांतसञ्चये ।
प्रदोषे दोषरहिते शस्तदोषागमे शुभे ।।

प्रदोषकाल का अमावस्या के दर्शभाग से व्याप्त होना, यह दीपावली के प्रदोषकाल की विशेषता है। यहाँ प्रदोषकाल के लिए विशेष रूप से 'दोषरहित' विशेषण प्रयुक्त किया गया है, तब ऐसे निर्दोष प्रदोष के प्राप्त होने पर उसके अनन्तर आने वाली रात्रि को दीपावली में प्रशस्त कहा है। यहाँ प्रदोष का दर्श से रहित होना ही दीपावली के प्रदोष में दोष हो सकता है, अन्य नहीं, अतः यहाँ दर्श से भलीभाँति व्याप्त दोषरहित प्रदोषकाल ही दीपावली में ग्राह्य है, ऐसा भाव है।

❊ दीपावली महोत्सव में प्रदोष व अर्धरात्रिव्यापिनी अमावस्या का महत्त्व ❊

जयसिंह कल्पद्रुम में कहा है,

'दीपदानेऽमावस्या प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या। तस्य कर्मकालत्वोक्तेः। दिनद्वये प्रदोषव्याप्तौ परैव। 'दण्डैकरजनीयोगो दर्शस्य स्यात्कदाचन। तदा विहाय पूर्वेद्युः परोह्नि सुखसुप्तिका ।' इति तिथितत्त्वे ज्योतिर्निबन्धवचनात्। उभयदिने प्रदोषव्याप्त्यभावेऽर्धरात्रव्यापिनी ग्राह्या। तस्या लक्ष्म्यागमनकालत्वाभिधानात्।

दिवोदासीये तु प्रदोषस्य कर्मकालत्वाद 'अर्धरात्रे भ्रमत्येव लक्ष्मीराश्रयितुं गृहान्। अतः स्वलंकृता लिप्ता दीपैजगज्जनोत्सवाः। सुधाधवलिताः कार्याः पुष्पमालोपयोजिताः।' इति ब्राह्मोक्तेश्च। 'प्रदोषार्धरात्रव्यापिनी मुख्या। एकैकव्याप्तौ परैव। प्रदोषस्य मुख्यत्वादर्धरात्रेऽनुष्ठेयाभावाच्चेति।'

यहाँ जयसिंह कल्पद्रुम व अन्य ग्रंथों में '*प्रदोषार्धरात्रव्यापिनी मुख्या*' आदि वाक्यों से प्रदोष के साथ ही अर्धरात्रिव्यापिनी अमावस्या का महत्त्व भी कथित है। तथापि प्रदोष को कर्म अर्थात् अनुष्ठान का काल कहा गया है, *'प्रदोषस्य कर्मकालत्वाद।'* **लक्ष्मी जी गृहों का आश्रयण करने के लिए कार्त्तिक अमावस्या की अर्धरात्रि में ही भ्रमण करती हैं**, ऐसी ब्राह्मोक्ति है, *'अर्धरात्रे भ्रमत्येव लक्ष्मीराश्रयितुं गृहान्।'* इसलिए जयसिंहकल्पद्रुम ने तो प्रदोष में अमावस्या न मिलने पर अर्धरात्रिव्यापिनी अमावस्या का ग्रहण कहा है, क्योंकि अमावस्या से व्याप्त अर्धरात्रि लक्ष्मी के आगमन का काल कहा है, *'लक्ष्म्यागमनकालत्वाभिधानात्'*।

और भविष्यपुराण में दीपावली के दिन अर्धरात्रि में राजा के कर्त्तव्यों में भी कहा है कि, *'ततोऽर्द्धरात्रसमये स्वयं राजा व्रजेत्पुरम्।। अवलोकयितुं रम्यं पद्भ्यामेव शनैःशनैः।।...*

बलिराज्यप्रमोदं च ततः स्वगृहमाव्रजेत्।' दीपावली की अमावस्या की अर्धरात्रि के समय, राजा को अपने नगर में मनाए जा रहे दीपावली महोत्सव का रमणीय दृश्य देखने की इच्छा से स्वयं धीरे धीरे पैदल चलना चाहिए। और बलिराज्य का प्रमोद प्राप्त कर पुनः अपने महल लौटना चाहिए।

और **बलिराज्य की अर्धरात्रि कौनसी है?** इसपर भविष्यपुराण में स्पष्ट कहा है, *''एकमेव हि भोगार्थं बलिराज्येतिचिह्नितम्। सरहस्यं तदेतत्ते कथयामि नरोत्तम।। कार्त्तिके कृष्णपक्षस्य पञ्चदश्यां निशागमे। यथेष्टचेष्टा दैत्यानां राज्यं तेषां महीतले।।''* अर्थात् बलिराज्य के चिह्नस्वरूप एक ही वस्तु दैत्यों के भोगार्थ प्रदान की गई है, वह है कार्त्तिक कृष्णपक्ष की अमावस्या की रात्रि आने पर पृथ्वी पर दैत्यों का यथेच्छ राज्य होता है।

और अमावस्या की अर्धरात्रि बीत जाने पर अलक्ष्मी का निःसारण भविष्यपुराण और निर्णयामृत में कहा है, *'एवं गते निशार्धे तु जने निद्रार्द्धलोचने। तावन्नगरनारीभिः शूर्पडिण्डिमवादनैः।। निष्क्राम्यते प्रहृष्टाभिरलक्ष्मीः स्वगृहाङ्गणात्।'* अर्थात्, अर्धरात्रि बीत जाने के बाद, गाढ़ी निद्रा से लोगों के नेत्र आधे बंद हुए होने पर नगर की स्त्रियों को सूप का डिंडिम वादन करते हुए अलक्ष्मी को अपने आंगन से बाहर निकालना चाहिए।

इस प्रकार कार्तिक मास की अर्धरात्रिव्यापिनी अमावस्या का दीपावली के अनेक अंगभूत कर्मों में महत्त्व स्पष्टतः प्रतिपादित है, जो 31 अक्टूबर 2024 को ही प्रदोष व अर्धरात्रि दोनों में पूर्ण रुप से मिल रही है, **अतः 31 अक्टूबर को ही दीपावली लक्ष्मी पूजन प्रशस्त है।**

✻ श्राद्ध कब होगा? ✻

जयसिंहकल्पद्रुम में कहा गया है – *''यदा पूर्वेद्युरेव प्रदोषव्यापिन्यमावास्या श्राद्धयोग्या च द्वितीयदिने तदा पूर्वेद्युरेव प्रदोषे लक्ष्मीं संपूज्य दीपदानं कार्यम्। श्राद्धं परदिने पराह्ने कार्यम्। यस्तु 'अपराह्ने प्रकर्तव्यं श्राद्धं पितृपरायणैः। प्रदोषसमये राजकर्तव्या दीपमालिका।' इति क्रमः स संपूर्णतिथ्यभिप्रायेणानुवादो न विधिः। तत्कर्मकालव्यातेर्बलवत्त्वात्। संपूर्णतिथौ प्राप्त्या खण्डतिथावप्राप्त्या विध्यनुनाद- विरोधाच। अत्र च रात्रिभोजननिषेधेऽपि रात्रिभोजनं कार्यम्। निषेधस्य रागप्राप्त- विषयत्वात्। विधिस्पृष्टे निषेधानवकाशाच्च।''*

अर्थात्, जब पहले दिन में प्रदोषव्याविनी अमावस्या हो, और द्वितीय दिन में श्राद्ध के योग्य अमावस्या हो, तब पहले दिन के ही प्रदोषकाल में लक्ष्मी की पूजा करके दीपदान करना चाहिए। तथा श्राद्ध द्वितीय दिन में करना चाहिए। जो पितृपारायणों को अपराह्नकाल में श्राद्ध करना चाहिए, प्रदोषकाल में दीपमालिका (दीपदान) करना चाहिए, ऐसा क्रम कहा गया है, वह सम्पूर्ण तिथि के अभिप्राय से कहा अनुवाद मात्र है, कोई विधि नहीं है। क्योंकि तत्तत् कर्मकाल व्याप्ति की बलवत्ता होती है।

तथा सम्पूर्ण तिथि में प्राप्ति व खण्डतिथि में अप्राप्ति के कारण विधि अनुवाद में विरोध होता है। इसमें रात्रिभोजन का निषेध होने पर भी रात्रिभोजन करना चाहिए। क्योंकि रागतः प्राप्त भोजन ही निषेध का विषय है। विधिद्वारा प्राप्त भोजन के निषेध का कोई अवकाश ही नहीं है।

अतः 31 अक्टूबर 2024 को प्रदोष काल में दीपावली लक्ष्मीपूजा होगी व 1 नवंबर 2024 को अपराह्न में अमावस्या श्राद्ध होगा। इसमें संशय नहीं है, यह ऊपर कालतत्त्वविवेचनम् की व्याख्या से भी स्पष्ट है।

✻ कालीपूजा भी 31 अक्टूबर को ही ✻

भविष्यपुराण में इसी दिन अर्धरात्रि में कालीपूजा – *''प्रतिसंवत्सरं कुर्यात् कालिकाया महोत्सवम् । कार्तिके तु विशेषेण अमावास्या निशाधके।। तस्यां संपूजयेद्देवी भोगमोक्षप्रदायिनीम्।''* इसी तरह कामाख्यातन्त्रादि में निशीथकाल में पूजा का विधान है। अमावास्या दो दिन निशीथव्यापिनी हो तो जिस दिन प्रदोष में रहे उसी दिन ग्रहण करें – *''प्रदोषव्यापिनी यत्र महानिशि च सा भवेत्। तदैव कालिका पूज्या दक्षिणा मोक्षदायिनी।''* अमावास्या के दो दिन रहने पर चतुर्दशीयुक्त ग्राह्य है *''अर्धरात्रे महेशानि अमावास्या यदा भवेत्। चतुर्दशीयुता ग्राह्या चामुण्डापूजने सदा।।''*

देशभर के अधिकांश पंचांगों व अयोध्या में 31 अक्टूबर 2024 को ही दीपावली

विक्रम संवत 2081 में होने वाले दीपावली पर्व पर दिनांक 31 अक्टूबर 2024 के सहमति देने वाले पंचांग –

1. राष्ट्रीय पंचांग, Nautical Almanac, भारत सरकार, 2. विश्व पंचांग, बी.एच.यू., वाराणसी, 3. हृषिकेश पंचांग, वाराणसी, 4. वल्लभ मनीराम पंचांग, राजस्थान, 4. विश्वविद्यालय पंचांग, दरभंगा, 5. उत्तरादि मठ पंचांग, उडुपी, कर्नाटक, 6. आदित्य पंचांग, वाराणसी, 7. श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पंचांग, जयपुर, 8. श्री दर्शन पंचांग, भीनमाल, राजस्थान, 8. जन्मभूमि पंचांग मुंबई, 9. गायत्री पंचांग अहमदाबाद, 10. गुजरात समाचार पंचांग अहमदाबाद, 11. हरिलाल पंचांग राजकोट, 12. भुवनेश्वरी पंचांग गोंडल, 13. हिम्मतलाल प्रेस राजकोट, 14. श्री कृष्णा पंचांग अहमदाबाद, 15. आदित्य प्रत्यक्ष पंचांग, अहमदाबाद, 16. जोशी जी का पंचांग, जोधपुर, 17. त्रिकाल पंचांग जोधपुर मंडोर, 18. सिमंधर स्वामी पंचांग मेहसाणा, 19. सभी जैन पंचांग, 20. श्री सरस्वती पंचांग, 21. ठाकुर दास पंचांग, श्रीनाथजी टिप्पणी नाथद्वारा, पंचांग कालडका पंचांग कोल्हापुर, डॉ केशव भट्ट लक्ष्मण मूर्ति श्री सिद्धांत हैदराबाद, श्री वेंकटेश्वर शर्मा अवधानी हैदराबाद, इसके साथ ही महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखण्ड, उड़ीसा, कर्नाटक के अधिकांश पंचांगों व राजस्थान के भी अनेक पंचांगों में 31 अक्टूबर 2024 को ही दीपावली मानी गई है।

❊ सूर्य की 12 संक्रान्तियों का फल एवं स्वरूप ❊

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

मेष संक्रान्ति - 13 अप्रैल 2024 - 23:25 से,
संक्रान्ति पुण्यकाल - 12:29 (दिनमध्य) - 18:47 (सूर्यास्त)
वसन्त ऋतु, खरमास समाप्ति, शनिवार, मृगशिरा नक्षत्र, कौलव करण, विषुव संक्रान्ति।

यह मेष संक्रान्ति कौलव करण में होने से सर्प जाति की, वराह वाहन पर, नीला वस्त्र पहने, तलवार लिए, भिक्षान्न खाते हुए, लाल चन्दन का लेपन किए, बकुल अशोक का पुष्प लिए, गतालक वय में, रति अवस्था में खड़ी हुई प्रवेश कर रही है। खड़ी संक्रान्ति धर्म हेतु श्रेष्ठ, अन्नादि के भाव सस्ते व वृष्टिकारक होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ है। इस सूर्य संक्रमण काल में खड़े नहीं रहना चाहिए। मेष संक्रान्ति बाघ पर सवार, जटिला, अग्निरूपा, तीन नेत्रों वाली, रक्तवर्णा कपालहस्ता, एकमुखी व कराली नाम की होती है। इसका सूर्य धाता है। इसमें मेषदान शुभ होता है। मृगशिरा की संक्रान्ति 30 मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव समान रहता है। मृगशिरा जातकों को कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान। इस एक महीने में **मेष**- परिश्रम, धन खर्च, परिस्थिति प्रतिकूलतावश क्रोध, यात्रा भागादौड़ी। **वृष**- क्लेश, धनहानि, ज्वर आदि रोग, मित्र ही शत्रुता करें। **मिथुन**- स्थान प्राप्ति, सम्मान वृद्धि, द्रव्य लाभ, रोगमुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य। **कर्क**- जिस कार्यसिद्धि, सफलता, शुभकार्य से हर्ष। **सिंह**- विपत्ति, दीनता, प्रियजनों से विरह, कार्यों में असफलता। **कन्या**- रोग, भय, चिन्ता, लड़ाई-झगड़ा, विवाद, सरकारी बाधा-हानि। **तुला**- भागादौड़ी, पेट-पाचन सम्बन्धी पीड़ा, विवशता, सम्मान हानि। **वृश्चिक**- रोगनाश, शत्रुनाश, शोक, मोह क्लेश का नाश, स्वस्थ चित्त। **धनु**- क्षोभ, रोग, मोह आदि के कारण मानसिक विकलता। **मकर**- स्वास्थ्यबाधा, सुख में विघ्न-बाधा, गृहक्लेश, ह्रदयपीड़ा। **कुम्भ**- स्थान प्राप्ति, धनागमन, शुभ समाचार प्राप्ति, शुभकार्य, शत्रुनाश। **मीन**- धननाश, सुख में कमी, जिद्दीपना, धोखा मिलना।

वृष संक्रांति - 14 मई 2024 - 21:52 से,
संक्रान्ति पुण्यकाल - 12:23 (दिनमध्य) - 19:03 (सूर्यास्त)
ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, मंगलवार, आश्लेषा नक्षत्र, वणिज करण, विष्णुपद संक्रान्ति।

यह वृष संक्रान्ति वणिज करण में होने से मृग जाति की, महिष वाहन पर, काले वस्त्र पहने, बाण लिए, दही खाते हुए, हल्दी लेपन किए, आक का पुष्प लिए, प्रगल्भा वय में, जरा अवस्था में बैठी हुई प्रवेश कर रही है। बैठी संक्रान्ति इष्ट अनिष्ट कुछ नहीं करती, धर्म आयु वर्षा हेतु समभाव होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में बैठे नहीं रहना चाहिए। वृष संक्रान्ति सिंह पर सवार, त्रिनेत्रा कपालहस्ता, श्वेतवर्णा, द्विहस्ता, एकमुखी व महाघोरा नाम की होती है। सूर्य अर्यमा। गौदान शुभ। आश्लेषा की संक्रान्ति 15 मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव महंगा। आश्लेषा जातकों को कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान। इस एक महीने में **मेष**- धननाश, सुख में कमी, जिद्दीपना, धोखा मिलना। **वृष**- परिश्रम, धन खर्च, परिस्थिति प्रतिकूलतावश क्रोध, यात्रा भागादौड़ी। **मिथुन**- क्लेश, धनहानि, ज्वर आदि रोग, मित्र ही शत्रुता करें। **कर्क**- स्थान प्राप्ति, सम्मान वृद्धि, द्रव्य लाभ, रोगमुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य। **सिंह**- जिस कार्यसिद्धि, सफलता, शुभकार्य से हर्ष। **कन्या**- विपत्ति, दीनता, प्रियजनों से विरह, कार्यों में असफलता। **तुला**- रोग, भय, चिन्ता, लड़ाई-झगड़ा, विवाद, सरकारी बाधा-हानि। **वृश्चिक**- भागादौड़ी, पेट-पाचन सम्बन्धी पीड़ा, विवशता, सम्मान हानि। **धनु**- रोगनाश, शत्रुनाश, शोक, मोह क्लेश का नाश, स्वस्थ चित्त। **मकर**- क्षोभ, रोग, मोह आदि के कारण मानसिक विकलता। **कुम्भ**- स्वास्थ्यबाधा, सुख में विघ्न-बाधा, गृहक्लेश, ह्रदयपीड़ा। **मीन**- स्थान प्राप्ति, धनागमन, शुभ समाचार प्राप्ति, शुभकार्य, शत्रुनाश।

मिथुन संक्रांति - 15 जून 2024 - 07:57 से,
संक्रान्ति पुण्यकाल - 07:57 - 14:21
ग्रीष्म ऋतु, शनिवार, हस्त नक्षत्र, बालव करण, षडशीतिमुख संक्रान्ति।

यह मिथुन संक्रान्ति बालव करण में होने से भूत जाति की, बाघ पर सवार, पीले वस्त्र पहने, गदा लिए, खीर खाते हुए, कुंकुम लेपन किए, जातीपुष्प लिए, कुमार वय में, भोग अवस्था में बैठी हुई प्रवेश कर रही है।बैठी संक्रान्ति इष्ट अनिष्ट कुछ नहीं करती, धर्म आयु वर्षा हेतु समभाव होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में बैठे नहीं रहे। मिथुन संक्रान्ति वराह पर सवार, त्रिनेत्रा, एकमुखी, हरित वर्णा, अभयमुद्राधारी और कपालहस्ता, शुभ व विरुपाक्षी नाम की होती है। इसका सूर्य मित्र है। इसमें वस्त्र, अन्न, जल का दान शुभ होता है। हस्त की संक्रान्ति 30 मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव समान रहता है। हस्त जातकों को कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें। इस एक महीने में **मेष**- स्थान प्राप्ति, धनागमन, शुभ समाचार प्राप्ति, शुभकार्य, शत्रुनाश। **वृष**- धननाश, सुख में कमी, जिद्दीपना, धोखा मिलना। **मिथुन**- परिश्रम, धन खर्च, परिस्थिति प्रतिकूलतावश क्रोध, यात्रा भागादौड़ी। **कर्क**- क्लेश, धनहानि, ज्वर आदि रोग, मित्र ही शत्रुता करें। **सिंह**- स्थान प्राप्ति, सम्मान वृद्धि, द्रव्य लाभ, रोगमुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य। **कन्या**- जिस कार्यसिद्धि, सफलता, शुभकार्य से हर्ष। **तुला**- विपत्ति, दीनता, प्रियजनों से विरह, कार्यों में असफलता। **वृश्चिक**- रोग, भय, चिन्ता, लड़ाई-झगड़ा, विवाद, सरकारी बाधा-हानि। **धनु**- भागादौड़ी, पेट-पाचन सम्बन्धी पीड़ा, विवशता, सम्मान हानि। **मकर**- रोगनाश, शत्रुनाश, शोक, मोह क्लेश का नाश, स्वस्थ चित्त। **कुम्भ**- क्षोभ, रोग, मोह आदि के कारण मानसिक विकलता। **मीन**- स्वास्थ्यबाधा, सुख में विघ्न-बाधा, गृहक्लेश, ह्रदयपीड़ा।

कर्क संक्रांति - 16 जुलाई 2024, 23:27 से
संक्रान्ति पुण्यकाल - 12:31 (दिनमध्य) - 19:19 (सूर्यास्त)
वर्षा ऋतु आरम्भ, दक्षिणायन आरम्भ, मंगलवार, विशाखा नक्षत्र, वणिज करण, याम्यायन संक्रान्ति।

यह कर्क संक्रान्ति वणिज करण में होने से मृग जाति की, महिष वाहन पर, काले वस्त्र पहने, बाण लिए, दही खाते हुए, हल्दी लेपन किए, आक का पुष्प लिए, प्रगल्भा वय में, जरा अवस्था में बैठी हुई प्रवेश कर रही है। बैठी संक्रान्ति इष्ट अनिष्ट कुछ नहीं करती, धर्म आयु वर्षा हेतु समभाव होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में बैठे नहीं रहना चाहिए। कर्क संक्रान्ति अश्व पर सवार, गुलाबी रंग की, एकमुखी, द्विहस्ता, कपालहस्ता, कटका व महोदरी नाम की होती है। इसका सूर्य अरुण है। इसमें घृतधेनु का दान शुभ होता है। विशाखा की संक्रान्ति 45 मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव सस्ता होता है। विशाखा नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें। इस एक महीने में **मेष**- स्वास्थ्यबाधा, सुख में विघ्न-बाधा, गृहक्लेश, ह्रदयपीड़ा। **वृष**- स्थान प्राप्ति, धनागमन, शुभ समाचार प्राप्ति, शुभकार्य, शत्रुनाश। **मिथुन**- धननाश, सुख में कमी, जिद्दीपना, धोखा मिलना। **कर्क**- परिश्रम, धन खर्च, परिस्थिति प्रतिकूलतावश क्रोध, यात्रा भागादौड़ी। **सिंह**- क्लेश, धनहानि, ज्वर आदि रोग, मित्र ही शत्रुता करें। **कन्या**- स्थान प्राप्ति, सम्मान वृद्धि, द्रव्य लाभ, रोगमुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य। **तुला**- जिस कार्यसिद्धि, सफलता, शुभकार्य से हर्ष। **वृश्चिक**- विपत्ति, दीनता, प्रियजनों से विरह, कार्यों में असफलता। **धनु**- रोग, भय, चिन्ता, लड़ाई-झगड़ा, विवाद, सरकारी बाधा-हानि। **मकर**- भागादौड़ी, पेट-पाचन सम्बन्धी पीड़ा, विवशता, सम्मान हानि। **कुम्भ**- रोगनाश, शत्रुनाश, शोक, मोह क्लेश का नाश, स्वस्थ चित्त। **मीन**- क्षोभ, रोग, मोह आदि के कारण मानसिक विकलता।

❋ सूर्य की 12 संक्रान्तियों का फल एवं स्वरूप ❋

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

सिंह संक्रांति - 17 अगस्त 2024, 10:44 से,
संक्रान्ति पुण्यकाल - 06:01 (सूर्योदय) - 10:45 (दिनमध्य)
वर्षा ऋतु, शनिवार, उत्तराषाढ़ नक्षत्र, कौलव करण, विष्णुपद संक्रान्ति।

यह सिंह संक्रान्ति कौलव करण में होने से सर्प जाति की, वराह वाहन पर, नीला वस्त्र पहने, तलवार लिए, भिक्षान्न खाते हुए, लाल चन्दन का लेपन किए, बकुल अशोक का पुष्प लिए, गतालक वय में, रति अवस्था में खड़ी हुई प्रवेश कर रही है। खड़ी संक्रान्ति धर्म हेतु श्रेष्ठ, अन्नादि के भाव सस्ते व वृष्टिकारक होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ है। इस सूर्य संक्रमण काल में खड़े नहीं रहना चाहिए। सिंह संक्रान्ति शुनक पर सवार, एकमुखी, रक्तवर्णा, कपालहस्ता व चामरधारी व जिंहिका नाम की होती है। इसका सूर्य इन्द्र है। इसमें छाता व स्वर्ण शुभ होता है। उत्तराषाढ़ की संक्रान्ति 45 मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव सस्ता होता है। उत्तराषाढ़ नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें। इस एक महीने में **मेष**- क्षोभ, रोग, मोह आदि के कारण मानसिक विकलता। **वृष**- स्वास्थ्यबाधा, सुख में विघ्न-बाधा, गृहक्लेश, हृदयपीड़ा। **मिथुन**- स्थान प्राप्ति, धनागमन, शुभ समाचार प्राप्ति, शुभकार्य, शत्रुनाश। **कर्क**- धननाश, सुख में कमी, जिद्दीपना, धोखा मिलना। **सिंह**- परिश्रम, धन खर्च, परिस्थिति प्रतिकूलतावश क्रोध, यात्रा भागादौड़ी। **कन्या**- क्लेश, धनहानि, ज्वर आदि रोग, मित्र ही शत्रुता करें। **तुला**- स्थान प्राप्ति, सम्मान वृद्धि, द्रव्य लाभ, रोगमुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य। **वृश्चिक**- जिस कार्यसिद्धि, सफलता, शुभकार्य से हर्ष। **धनु**- विपत्ति, दीनता, प्रियजनों से विरह, कार्यों में असफलता। **मकर**- रोग, भय, चिन्ता, लड़ाई-झगड़ा, विवाद, सरकारी बाधा-हानि। **कुम्भ**- भागादौड़ी, पेट-पाचन सम्बन्धी पीड़ा, विवशता, सम्मान हानि। **मीन**- रोगनाश, शत्रुनाश, शोक, मोह क्लेश का नाश, स्वस्थ चित्त।

कन्या संक्रान्ति 17 सितम्बर 2024, 11:08 से,
संक्रान्ति पुण्यकाल - 11:08 - 17:32
शरद ऋतु आरम्भ, मंगलवार, शतभिषा नक्षत्र, विष्टि करण, षडशीतिमुख संक्रान्ति।

यह कन्या संक्रान्ति विष्टि करण में होने से ब्राह्मण जाति की, घोड़ा वाहन पर, श्याम वस्त्र पहने, मुद्गर लिए, खिचड़ी खाते हुए, जौखार का लेपन किए, दूर्वा का पुष्प लिए, वृद्धा वय में, भुक्ता अवस्था में बैठी हुई प्रवेश कर रही है। बैठी संक्रान्ति इष्ट अनिष्ट कुछ नहीं करती, धर्म आयु वर्षा हेतु समभाव होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में बैठे नहीं रहना चाहिए। कन्या संक्रान्ति गज पर सवार, त्रिनेत्रा, कपालधारी, कृष्ण मुख व रक्तिम वर्ण की देह वाली, व सिंहिका नाम की होती है। इसका सूर्य विवस्वत है। इसमें वस्त्र व गौदान शुभ होता है। शतभिषा की संक्रान्ति 15 मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव महंगा होता है। शतभिषा नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें। इस एक महीने में **मेष**- रोगनाश, शत्रुनाश, शोक, मोह क्लेश का नाश, स्वस्थ चित्त। **वृष**- क्षोभ, रोग, मोह आदि के कारण मानसिक विकलता। **मिथुन**- स्वास्थ्यबाधा, सुख में विघ्न-बाधा, गृहक्लेश, हृदयपीड़ा। **कर्क**- स्थान प्राप्ति, धनागमन, शुभ समाचार प्राप्ति, शुभकार्य, शत्रुनाश। **सिंह**- धननाश, सुख में कमी, जिद्दीपना, धोखा मिलना। **कन्या**- परिश्रम, धन खर्च, परिस्थिति प्रतिकूलतावश क्रोध, यात्रा भागादौड़ी। **तुला**- क्लेश, धनहानि, ज्वर आदि रोग, मित्र ही शत्रुता करें। **वृश्चिक**- स्थान प्राप्ति, सम्मान वृद्धि, द्रव्य लाभ, रोगमुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य। **धनु**- जिस कार्यसिद्धि, सफलता, शुभकार्य से हर्ष। **मकर**- विपत्ति, दीनता, प्रियजनों से विरह, कार्यों में असफलता। **कुम्भ**- रोग, भय, चिन्ता, लड़ाई-झगड़ा, विवाद, सरकारी बाधा-हानि। **मीन**- भागादौड़ी, पेट-पाचन सम्बन्धी पीड़ा, विवशता, सम्मान हानि।

तुला संक्रान्ति 17 अक्टूबर 2024, 21:35 से,
संक्रान्ति पुण्यकाल - 12:11 (दिनमध्य) - 17:52 (सूर्यास्त)
शरद ऋतु, गुरुवार, अश्विनी नक्षत्र, बालव करण, विषुव संक्रांति।

यह तुला संक्रान्ति बालव करण में होने से भूत जाति की, बाघ पर सवार, पीले वस्त्र पहने, गदा लिए, खीर खाते हुए, कुंकुम लेपन किए, जातीपुष्प लिए, कुमार वय में, भोग अवस्था में बैठी हुई प्रवेश कर रही है।बैठी संक्रान्ति इष्ट अनिष्ट कुछ नहीं करती, धर्म आयु वर्षा हेतु समभाव होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में बैठे नहीं रहे। तुला संक्रान्ति कुक्कुर पर सवार, षडानन, त्रिनेत्रा, नीलवर्णा, कपालधारी, व मन्दा नाम की होती है। इसका सूर्य त्वष्टा है। इसमें धान्य व बीजों का दान शुभ होता है। अश्विनी की संक्रान्ति 30 मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव समान रहता है। अश्विनी नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें। इस एक महीने में **मेष**- भागादौड़ी, पेट-पाचन सम्बन्धी पीड़ा, विवशता, सम्मान हानि। **वृष**- रोगनाश, शत्रुनाश, शोक, मोह क्लेश का नाश, स्वस्थ चित्त। **मिथुन**- क्षोभ, रोग, मोह आदि के कारण मानसिक विकलता। **कर्क**- स्वास्थ्यबाधा, सुख में विघ्न-बाधा, गृहक्लेश, हृदयपीड़ा। **सिंह**- स्थान प्राप्ति, धनागमन, शुभ समाचार प्राप्ति, शुभकार्य, शत्रुनाश। **कन्या**- धननाश, सुख में कमी, जिद्दीपना, धोखा मिलना। **तुला**- परिश्रम, धन खर्च, परिस्थिति प्रतिकूलतावश क्रोध, यात्रा भागादौड़ी। **वृश्चिक**- क्लेश, धनहानि, ज्वर आदि रोग, मित्र ही शत्रुता करें। **धनु**- स्थान प्राप्ति, सम्मान वृद्धि, द्रव्य लाभ, रोगमुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य। **मकर**- जिस कार्यसिद्धि, सफलता, शुभकार्य से हर्ष। **कुम्भ**- विपत्ति, दीनता, प्रियजनों से विरह, कार्यों में असफलता। **मीन**- रोग, भय, चिन्ता, लड़ाई-झगड़ा, विवाद, सरकारी बाधा-हानि।

वृश्चिक संक्रांति - 16 नवम्बर 2024, 18:57 से,
संक्रान्ति पुण्यकाल - 12:10 (दिनमध्य) - 17:30 (सूर्यास्त)
हेमन्त ऋतु आरम्भ, शनिवार, कृत्तिका नक्षत्र, कौलव करण, विष्णुपद संक्रान्ति।

यह वृश्चिक संक्रान्ति कौलव करण में होने से सर्प जाति की, वराह वाहन पर, नीला वस्त्र पहने, तलवार लिए, भिक्षान्न खाते हुए, लाल चन्दन का लेपन किए, बकुल अशोक का पुष्प लिए, गतालक वय में, रति अवस्था में खड़ी हुई प्रवेश कर रही है। खड़ी संक्रान्ति धर्म हेतु श्रेष्ठ, अन्नादि के भाव सस्ते व वृष्टिकारक होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ है। इस सूर्य संक्रमण काल में खड़े नहीं रहना चाहिए। वृश्चिक संक्रान्ति अजा पर सवार, त्रिनेत्रा, कपालहस्ता, शक्तिधारी, नीलवर्णा, व आह्लादिनी नाम की होती है। इसका सूर्य विष्णु है। इसमें वस्त्रदान, दीपकदान शुभ होता है। कृत्तिका की संक्रान्ति 30 मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव समान रहता है। कृत्तिका नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें। इस एक महीने में **मेष**- रोग, भय, चिन्ता, लड़ाई-झगड़ा, विवाद, सरकारी बाधा-हानि। **वृष**- भागादौड़ी, पेट-पाचन सम्बन्धी पीड़ा, विवशता, सम्मान हानि। **मिथुन**- रोगनाश, शत्रुनाश, शोक, मोह क्लेश का नाश, स्वस्थ चित्त। **कर्क**- क्षोभ, रोग, मोह आदि के कारण मानसिक विकलता। **सिंह**- स्वास्थ्यबाधा, सुख में विघ्न-बाधा, गृहक्लेश, हृदयपीड़ा। **कन्या**- स्थान प्राप्ति, धनागमन, शुभ समाचार प्राप्ति, शुभकार्य, शत्रुनाश। **तुला**- धननाश, सुख में कमी, जिद्दीपना, धोखा मिलना। **वृश्चिक**- परिश्रम, धन खर्च, परिस्थिति प्रतिकूलतावश क्रोध, यात्रा भागादौड़ी। **धनु**- क्लेश, धनहानि, ज्वर आदि रोग, मित्र ही शत्रुता करें। **मकर**- स्थान प्राप्ति, सम्मान वृद्धि, द्रव्य लाभ, रोगमुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य। **कुम्भ**- जिस कार्यसिद्धि, सफलता, शुभकार्य से हर्ष। **मीन**- विपत्ति, दीनता, प्रियजनों से विरह, कार्यों में असफलता।

❊ सूर्य की 12 संक्रान्तियों का फल एवं स्वरूप ❊

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

धनु संक्रांति - 16 दिसम्बर 2024, 06:58 से,
संक्रान्ति पुण्यकाल - 07:13 (सूर्योदय) - 12:21 (दिनमध्य)

हेमंत ऋतु, खरमास आरम्भ, सोमवार, आर्द्रा नक्षत्र, कौलव करण, षडशीतिमुख संक्रान्ति।

यह धनु संक्रान्ति कौलव करण में होने से सर्प जाति की, वराह वाहन पर, नीला वस्त्र पहने, तलवार लिए, भिक्षान्न खाते हुए, लाल चन्दन का लेपन किए, बकुल अशोक का पुष्प लिए, गतालक वय में, रति अवस्था में खड़ी हुई प्रवेश कर रही है। खड़ी संक्रान्ति धर्म हेतु श्रेष्ठ, अन्नादि के भाव सस्ते व वृष्टिकारक होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ है। इस सूर्य संक्रमण काल में खड़े नहीं रहना चाहिए। धनु संक्रान्ति महिष पर सवार, त्रिनेत्रा, कपालधारी, चित्रवर्णा व उज्वला नाम की होती है। इसका सूर्य अंशु है। इसमें वस्त्र व वाहनदान शुभ होता है। आर्द्रा की संक्रान्ति 15 मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव महंगा होता है। आर्द्रा नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें। इस एक महीने में **मेष**- विपत्ति, दीनता, प्रियजनों से विरह, कार्यों में असफलता। **वृष**- रोग, भय, चिन्ता, लड़ाई-झगड़ा, विवाद, सरकारी बाधा-हानि। **मिथुन**- भागादौड़ी, पेट-पाचन सम्बन्धी पीड़ा, विवशता, सम्मान हानि। **कर्क**- रोगनाश, शत्रुनाश, शोक, मोह क्लेश का नाश, स्वस्थ चित्त। **सिंह**- क्षोभ, रोग, मोह आदि के कारण मानसिक विकलता। **कन्या**- स्वास्थ्यबाधा, सुख में विघ्न-बाधा, गृहक्लेश, हृदयपीड़ा। **तुला**- स्थान प्राप्ति, धनागमन, शुभ समाचार प्राप्ति, शुभकार्य, शत्रुनाश। **वृश्चिक**- धननाश, सुख में कमी, जिद्दीपना, धोखा मिलना। **धनु**- परिश्रम, धन खर्च, परिस्थिति प्रतिकूलतावश क्रोध, यात्रा भागादौड़ी। **मकर**- क्लेश, धनहानि, ज्वर आदि रोग, मित्र ही शत्रुता करें। **कुम्भ**- स्थान प्राप्ति, सम्मान वृद्धि, द्रव्य लाभ, रोगमुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य। **मीन**- जिस कार्यसिद्धि, सफलता, शुभकार्य से हर्ष।

मकर संक्रांति - 14 जनवरी 2025, 14:53 से,
संक्रान्ति पुण्यकाल - 07:23 (सूर्योदय) - 17:48 (सूर्यास्त)

शिशिर ऋतु, उत्तरायण आरम्भ, खरमास समाप्ति, मंगलवार, पुष्य नक्षत्र, बालव करण, सौम्यायन संक्रान्ति।

यह मकर संक्रान्ति **बालव करण में होने से** भूत जाति की, बाघ पर सवार, पीले वस्त्र पहने, गदा लिए, खीर खाते हुए, कुंकुम लेपन किए, जातीपुष्प लिए, कुमार वय में, भोग अवस्था में बैठी हुई प्रवेश कर रही है।बैठी संक्रान्ति इष्ट अनिष्ट कुछ नहीं करती, धर्म आयु वर्षा हेतु समभाव होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में बैठे नहीं रहे। मकर संक्रान्ति ऊँट पर सवार, त्रिनेत्रा, दंष्ट्रिकानना, रक्तवर्णा, कपालहस्ता व वज्रधारी, व राक्षसी नाम की होती है। अन्य विवरण से द्विमुख, त्रिनेत्रा, कृष्णवर्ण, चार बाँहों, सात हाथों और तीन पैरों वाली, ऊपर देखती हुई, सात आयुध धारण किये हुए- दाएं हाथों में मुसल, तलवार, बाण, व बाएं हाथों में गदा, खेटक, पात्र, व शरासन धारण करती है। इसका सूर्य भग है। इसमें अग्निदान शुभ होता है। पुष्य की संक्रान्ति 30 मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव समान रहता है। पुष्य नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें। इस एक महीने में **मेष**- जिस कार्यसिद्धि, सफलता, शुभकार्य से हर्ष। **वृष**- विपत्ति, दीनता, प्रियजनों से विरह, कार्यों में असफलता। **मिथुन**- रोग, भय, चिन्ता, लड़ाई-झगड़ा, विवाद, सरकारी बाधा-हानि। **कर्क**- भागादौड़ी, पेट-पाचन सम्बन्धी पीड़ा, विवशता, सम्मान हानि। **सिंह**- रोगनाश, शत्रुनाश, शोक, मोह क्लेश का नाश, स्वस्थ चित्त। **कन्या**- क्षोभ, रोग, मोह आदि के कारण मानसिक विकलता। **तुला**- स्वास्थ्यबाधा, सुख में विघ्न-बाधा, गृहक्लेश, हृदयपीड़ा। **वृश्चिक**- स्थान प्राप्ति, धनागमन, शुभ समाचार प्राप्ति, शुभकार्य, शत्रुनाश। **धनु**- धननाश, सुख में कमी, जिद्दीपना, धोखा मिलना। **मकर**- परिश्रम, धन खर्च, परिस्थिति प्रतिकूलतावश क्रोध, यात्रा भागादौड़ी। **कुम्भ**- क्लेश, धनहानि, ज्वर आदि रोग, मित्र ही शत्रुता करें। **मीन**- स्थान प्राप्ति, सम्मान वृद्धि, द्रव्य लाभ, रोगमुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य।

कुम्भ संकान्ति - 13 फरवरी 2025, 01:48 से,
संक्रान्ति पुण्यकाल - 07:11 (सूर्योदय) - 12:42 (दिनमध्य)

शिशिर ऋतु, गुरुवार, मघा नक्षत्र, बालव करण, विष्णुपद संक्रान्ति।

यह कुम्भ संक्रान्ति बालव करण में होने से भूत जाति की, बाघ पर सवार, पीले वस्त्र पहने, गदा लिए, खीर खाते हुए, कुंकुम लेपन किए, जातीपुष्प लिए, कुमार वय में, भोग अवस्था में बैठी हुई प्रवेश कर रही है।बैठी संक्रान्ति इष्ट अनिष्ट कुछ नहीं करती, धर्म आयु वर्षा हेतु समभाव होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में बैठे नहीं रहे। कुम्भ संक्रान्ति तुरग पर सवार, कपालहस्ता, नीलवर्णा, व भंजिका नाम की होती है। इसका सूर्य पूषा है। इसमें गौ के लिए घास- जलदान शुभ। मघा की संक्रान्ति 30 मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव समान रहता है। मघा जातकों को 1 मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल,हल्दी,सरसों मिले जल से स्नान। इस एक महीने में **मेष**- स्थान प्राप्ति, सम्मान वृद्धि, द्रव्य लाभ, रोगमुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य। **वृष**- जिस कार्यसिद्धि, सफलता, शुभकार्य से हर्ष। **मिथुन**- विपत्ति, दीनता, प्रियजनों से विरह, कार्यों में असफलता। **कर्क**- रोग, भय, चिन्ता, लड़ाई-झगड़ा, विवाद, सरकारी बाधा-हानि। **सिंह**- भागादौड़ी, पेट-पाचन सम्बन्धी पीड़ा, विवशता, सम्मान हानि। **कन्या**- रोगनाश, शत्रुनाश, शोक, मोह क्लेश का नाश, स्वस्थ चित्त। **तुला**- क्षोभ, रोग, मोह आदि के कारण मानसिक विकलता। **वृश्चिक**- स्वास्थ्यबाधा, सुख में विघ्न-बाधा, गृहक्लेश, हृदयपीड़ा। **धनु**- स्थान प्राप्ति, धनागमन, शुभ समाचार प्राप्ति, शुभकार्य, शत्रुनाश। **मकर**- धननाश, सुख में कमी, जिद्दीपना, धोखा मिलना। **कुम्भ**- परिश्रम, धन खर्च, परिस्थिति प्रतिकूलतावश क्रोध, यात्रा भागादौड़ी। **मीन**- क्लेश, धनहानि, ज्वर आदि रोग, मित्र ही शत्रुता करें।

मीन संक्रांति - 14 मार्च 2025, 21:20 से,
संक्रान्ति पुण्यकाल - 12:37 (दिनमध्य)- 18:31 (सूर्यास्त)

वसंत ऋतु प्रारम्भ, खरमास आरम्भ, शुक्रवार, उ.फा. नक्षत्र, बालव करण, षडशीतिमुख संक्रान्ति।

यह मीन संक्रान्ति बालव करण में होने से भूत जाति की, बाघ पर सवार, पीले वस्त्र पहने, गदा लिए, खीर खाते हुए, कुंकुम लेपन किए, जातीपुष्प लिए, कुमार वय में, भोग अवस्था में बैठी हुई प्रवेश कर रही है।बैठी संक्रान्ति इष्ट अनिष्ट कुछ नहीं करती, धर्म आयु वर्षा हेतु समभाव होती है। यह ऊपर कहे अस्त्र, वाहन, भोजन सम्बन्धी आजीविका व्यवहार वाले प्राणियों के लिए अशुभ होती है। इस सूर्य संक्रमण काल में बैठे नहीं रहे। मीन संक्रान्ति भालू पर सवार, त्रिनेत्रा, कपालहस्ता, अरुण वर्णा व वक्रा नाम की होती है। इसका सूर्य पर्जन्य है। इसमें भूमि व माला का दान शुभ होता है। उ.फा. की संक्रान्ति 45 मुहूर्त्त की होने से अन्नादि का भाव सस्ता होता है। उ.फा. नक्षत्र जातकों को एक मास कष्ट धननाश, शान्त्यर्थ कमल, हल्दी, सरसों मिले जल से स्नान करें। इस एक महीने में **मेष**- क्लेश, धनहानि, ज्वर आदि रोग, मित्र ही शत्रुता करें। **वृष**- स्थान प्राप्ति, सम्मान वृद्धि, द्रव्य लाभ, रोगमुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य। **मिथुन**- जिस कार्यसिद्धि, सफलता, शुभकार्य से हर्ष। **कर्क**- विपत्ति, दीनता, प्रियजनों से विरह, कार्यों में असफलता। **सिंह**- रोग, भय, चिन्ता, लड़ाई-झगड़ा, विवाद, सरकारी बाधा-हानि। **कन्या**- भागादौड़ी, पेट-पाचन सम्बन्धी पीड़ा, विवशता, सम्मान हानि। **तुला**- रोगनाश, शत्रुनाश, शोक, मोह क्लेश का नाश, स्वस्थ चित्त। **वृश्चिक**- क्षोभ, रोग, मोह आदि के कारण मानसिक विकलता। **धनु**- स्वास्थ्यबाधा, सुख में विघ्न-बाधा, गृहक्लेश, हृदयपीड़ा। **मकर**- स्थान प्राप्ति, धनागमन, शुभ समाचार प्राप्ति, शुभकार्य, शत्रुनाश। **कुम्भ**- धननाश, सुख में कमी, जिद्दीपना, धोखा मिलना। **मीन**- परिश्रम, धन खर्च, परिस्थिति प्रतिकूलतावश क्रोध, यात्रा भागादौड़ी।

❀ वर–वधु मेलापक सारिणी ❀

वर / वधू			मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
			अ4	भ4	कृ1	कृ3	रो4	मृ2	मृ2	आ4	पु3	पु1	पु4	श्ले4	म4	पू4	उ1	उ3	ह4	चि2	चि2	स्वा4	वि3	वि1	अनु4	ज्ये4	मु4	पू4	उ1	उ3	श्र4	ध2	ध2	श4	पू3	पू1	उ4	र4
			चू चे चो ला	लि लू ले लो	अ	इ उ ए	ओ वा वि वु	वे वो	क कि	कू घ ङ छ	के को ह	ही	हु हे हो डा	डी डू डे डो	म मी मू मे	मो टा टी टू	टे	टो प पी	पू ष ण ठ	पे पो	र री	रू रे रो ता	ति तू ते	तो	न नी नू ने	नो या यी यू	ये यो भ भी	भू धा फा ढा	भे	भो ज जी	खि खू खे खो	ग गि	गु गे	गो सा सी सू	से सो द	दी	दू थ झ ञ	दे दो चा ची
मेष	अ4	चू चे चो ला	28 3	33 0	28.5	18.5 4	21.5 -4	22.5 -4	26	17 3	19 3	23.5 3	31.5	28	21 +5	25 +5	15.5 35	11 36	9 236	13 6	22.5	26.5 -2	22.5	18.5 -6	25.5 -6	14 36	13 35	25 +5	23.5 +5	25	26	20	20	15 3	16 3	14.5 34	24.5 +4	26 +4
	भ4	लि लू ले लो	34	28 3	29 01	19 041	22.5 -4	14.5 34	18 3	26	27	31.5	23.5 3	25.5 1	20 -15	18 35	26 +5	21.5 6	20 6	4 136	13.5 13	29.5	21.5 -1	17.5 -16	17.5 36	19.5 -16	20 -15	18 35	26 +5	27.5	26	10 132	10 132	20 -1	24 -2	22.5 ×24	17.5 34	26.5 +4
	कृ1	अ	27.5	29 1	28 3	18 34	10 1340	16.5 4	20	20 1	21	25.5	26.5	23.5 3	16.5 35	20 15	20 15	15.5 16	15.5 6	18 6	27.5	15.5 3	19.5 3	15.5 36	19.5 -6	25.5 -6	24.5 +5	18 125	12 315	13.5 13	11.5 23	25	25	27	19 1	17.5 14	19.5 14	11.5 34
वृष	कृ3	इ उ ए	18.5 4	20 14	19 34	28 3	20 013	26.5	17.5 +4	17.5 14	18.5 +4	22	23	20 3	18.5 3	22 1	22 1	21 15	21 +5	23.5 +5	22.5 -6	10.5 36	14.5 36	20.5 3	24.5	30.5	20 6	13.5 126	7.5 136	12 135	10 352	23.5 +5	29.5	31.5	23.5 1	20 1	22 1	14 3
	रो4	ओ वा वी वू	23.5 -4	23.5 4	11 341	20 31	28 3	36 0	27 04	23.5 +4	22.5 +4	26	27	12 31	10.5 31	24.5	27	26 +5	26 +5	20 -15	19 -16	15.5 36	9.5 316	15.5 31	29.5	23.5 1	14 16	19 6	11.5 326	16 352	17 35	20 -15	26 -1	24.5 -1	30.5	27	27	19 3
	मृ2	वे वो	23.5 -4	14.5 34	18.5 -4	27.5	35	28 3	19 34	24 04	22.5 +4	26	19 3	21	19.5	15.5 3	24.5	23.5 +5	26 +5	13 35	12 36	25 -6	18.5 -6	24.5	21.5 3	24.5	15 6	10 36	17 26	21.5 ×25	25 +5	13 35	19 3	27	29.5	26	18 3	27
मिथुन	मृ2	क की	27	18 3	22	19.5 +4	27 +4	20 34	28 3	33 0	31.5	19 -4	12 34	14 4	23.5	19.5 3	28.5	31.5	34	21 3	14 35	27 +5	20.5 +5	14 6	11 36	14 6	23	18 3	25 +2	20 -26	23.5 -6	11.5 36	13 35	21 +5	23.5 +5	25.5	17.5 3	26.5
	आ4	कू घ ङ छ	19 3	27	21 1	18.5 ×14	24.5 +4	26 +4	34	28 3	25 30	12.5 034	20 -4	13 14	23.5 1	29.5	21.5 3	24.5 3	24.5 3	27 1	20 -15	27 +5	20 ×15	13.5 16	17 26	3 1326	16 13	28	28	23 -6	23 -6	17.5 -16	19 ×15	12 135	17 35	19 3	26.5	26.5
	पु3	के को ह	20 3	27	23	20.5 +4	22.5 +4	23.5 +4	31.5	24 3	28 3	15.5 -34	22.5 40	17 -4	22.5 +2	26.5 +2	21.5 3	24.5 3	25.5 3	27.5	20.5 +5	28 +5	22 +5	15.5 6	21.5 6	7 36	14 3	27	27	22 -6	23 -6	17 -6	18.5 +5	14 35	16 35	18 3	28	27.5
कर्क	पु1	ही	22.5 3	29.5	25.5	22	24	25	18 4	10.5 34	14.5 34	28 3	35 0	29.5	16.5 ×24	20.5 24	15.5 34	18 3	19 3	21	20.5	28	22	20 +5	26 +5	11.5 35	8 36	21 -6	21 -6	26	27	21	12.5 6	8 36	10 36	16 35	26 +5	25.5 +5
	पु4	हु हे हो डा	30.5	21.5 3	26.5	23	25	18 3	11 34	18 4	21.5 4	35	28 3	30 0	19.5 +4	15.5 34	23.5 +4	26	27	12 3	11.5 3	26.5	21	19 +5	18 35	21 -5	17	11 236	21 6	26	25 -2	13 3	4.5 36	14.5 6	18 6	24 +5	18 35	27 +5
	श्ले4	डी डू डे डो	26.5	24.5 1	22.5 3	19 3	11 31	19	12 4	12 14	15 4	28.5	29	28 3	15 0342	15.5 142	18.5 14	21 1	21	26	25.5	12.5 3	17.5 3	15.5 35	20 +5	26 -5	22.5 6	16 16	8 316	13 13	13 3	26	17.5 6	19.5 6	11.5 16	17.5 15	21 15	13 35
सिंह	म4	म मी मू मे	20 +5	20 15	16.5 35	17.5 3	9.5 31	17.5	21.5	22.5 1	20.5 -2	16.5 ×24	19.5 +4	16 342	28 3	30 01	27.5 1	16.5 14	16.5 +4	21.5 4	24.5	11.5 3	16.5 3	22.5 3	25.5	33	25 +5	19 15	8.5 135	3.5 316	4.5 36	18.5 6	24.5	25.5	18.5 1	18.5 -16	19.5 16	13 36
	पू4	मो टा टी टू	26 +5	18 35	20 -15	21 1	23.5	15.5 3	19.5 3	28.5	26.5 -2	22.5 ×24	17.5 34	16.5 124	30 -1	28 3	35 0	24 04	22.5 +4	7.5 134	10.5 13	25.5	18.5 1	24.5 -1	23.5 3	25.5 -1	19 ×15	17 35	24 +5	19 6	18.5 6	4.5 136	10.5 13	19.5 1	24.5	24.5 -6	17.5 36	25.5 -6
	उ1	टे	16.5 35	26 +5	20 -15	21 1	26	24.5	28.5	20.5 3	21.5 3	17.5 34	25.5 +4	19.5 -14	27.5 -1	35	28 3	17 34	16 034	13.5 142	16.5 12	25.5	16.5 12	22.5 -12	31.5	17.5 13	9.5 135	25 +5	25 +5	20 6	20 6	11.5 16	17.5 1	11.5 13	15.5 3	15.5 36	26.5 -6	25.5 -6
कन्या	उ3	टो प पी	13 36	22.5 6	16.5 16	21 ×15	26 +5	24.5 +5	31.5	23.5 3	24.5 3	20 3	28	22 1	17.5 14	25.5 +4	18 34	28 3	27 30	24.5 ×12	16.5 124	25.5 +4	16.5 124	18 12	27	13 13	14 13	29.5	29.5	24.5 +5	24.5 +5	16 +15	16.5 -16	10.5 316	14.5 36	17.5 3	28.5	27.5
	ह4	पू ष ण ठ	10 236	20 6	17.5 6	22 +5	25 +5	26 +5	33	22.5 3	24.5 3	20 3	28	23	18.5 +4	22.5 +4	16 34	26 3	28 3	28 0	20 04	26.5 +4	18.5 +4	20	26	13 3	15 3	27	28.5	23.5 +5	24.5 +5	18.5 +5	19 -6	8.5 362	13.5 36	16.5 3	26.5	27.5
	चि2	पे पो	13 6	5 136	19 6	23.5 +5	20 15	12 35	19 3	26 1	25.5	21	12 3	27	22.5 +4	8.5 134	14.5 124	24.5 12	27	28 3	20 34	19 04	26.5 +4	28	11 3	25	27	14 13	22 1	17 15	18.5 +5	15.5 35	16 36	24 -6	16.5 16	19.5 1	10.5 132	19.5

यहाँ सारिणी में ऊपर, दायें से बाये मेष मे मीन तक वर की राशि, नक्षत्र चरण व नाम का प्रथम अक्षर है ऊपर से नीचे कन्या की राशि, नक्षत्र चरण व नाम का प्रथम अक्षर है। अष्टकूट मेलापक सारिणी में कुल गुणों का योग व नीचे दोषों के चिह्न दिये हैं। इन दोषों को इकाई के रूप में इस प्रकार समझना चाहिए। 1 – गणदोष, 2 – वैर योनि, 3 – नाड़ी दोष, 4 – द्विर्द्वादश दोष, 5 – नवम पंचम, 6 – षडाष्टक तथा जहाँ 0 लिखा है यह वर के नक्षत्र से पूर्व वधु के नक्षत्र की सूचना देता है। जो कि महादोष माना गया है। – का चिह्न दोष की न्यूनता दर्शाता है। × एवं + का चिह्न दोष का पूरा निर्वाह करता है।

वर–वधु मेलापक सारिणी

वर / वधू			मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
			अ4	भ4	कृ1	कृ3	रो4	मृ2	मृ2	आ4	पु3	पु1	पु4	श्ले4	म4	पू4	उ1	उ3	ह4	चि2	चि2	स्वा4	वि3	वि1	अनु4	ज्ये4	मु4	पू4	उ1	उ3	उ4	ध2	ध2	श4	पू3	पू1	उ4	र4
			चू चे चो ला	लि लू ले लो	अ	इ उ ए	ओ वा वि वु	वे वो	क कि	कू घ ङ छ	के को ह	ही	हु हे हो डा	डी डू डे डो	म मी मू मे	मो टा टी टू	टे	टो प पी	पू ष ण ठ	पे पो	र री	रू रे रो ता	ति तू ते	तो	न नी नू ने	नो या यी यू	ये यो भ भी	भू धा फा ढ़ा	भे	भो ज जी	खि खू खे खो	ग गि	गु गे	गो सा सी सू	से सो द	दी	दू थ झ ञ	दे दो चा ची
तुला	चि2	र री	22.5	14.3 13	28.5	23.5 +6	20 16	12 36	13 35	21 15	19.5 +5	20.5	11.5 3	26.5	25.5	11.5 13	17.5 12	17.5 124	20 +4	21 34	28 3	27 0	34.5	23.5 4	6.5 34	20.5 4	27	14 13	22 1	25 1	26.5	23.5 3	18 35	26 +5	18.5 15	12.5 16	3.5 6213	12.5 6
	स्वा4	रू रे रो ता	27.5 +2	29.5	17.5 3	12.5 36	15.5 36	26 -6	27 +5	26 +5	28 +5	29	27.5	14.5 3	13.5 3	25.5	25.5	25.5 +4	27.5 +4	21 +4	28	28 3	20 30	9 340	21.5 4	16.5 4	23	27	19 3	22 3	23 3	26.5	21 +5	20 ×52	25 +5	19 6	19.5 6	12.5 36
	वि3	ति तू ते	22.5	22.5 1	20.5 3	15.5 36	10.5 136	18.5 -6	19.5 +5	20 15	21 +5	22	21	18.5 3	17.5 3	19.5 1	17.5 12	17.5 142	18.5 +4	27.5 +4	34.5	19 3	28 3	17 34	16 04	20.5 4	27	22 1	14 13	17 13	17 3	30	24.5 +5	26 +5	20 15	14 16	13 162	4.5 36
वृश्चिक	वि1	तो	16.5 +6	16.5 16	14.5 36	19.5 3	14.5 13	22.5	12 6	12.5 16	13.5 6	19 -5	18 -5	15.5 -5	21.5 3	23.5 1	21.5 12	17 12	18	27	22.5 4	7 34	16 34	28 3	27 0	31.5	21.5 +4	16.5 41	8.5 134	12 13	12 3	25	24	25.5	19.5 1	19 15	18 15	9.5 325
	अनु4	न नी नू ने	24.5 -6	15.5 36	19.5 -6	24.5	27.5	20.5 3	10 36	15 26	20.5 6	26 -5	18 35	21 -5	24.5	20.5 3	29.5	25	26	11 3	6.5 34	21.5 4	16 4	28	28 3	31 0	15.5 ×24	13.5 34	21.5 +4	25	26	12 3	11 3	21	24.5	24 +5	18 35	27 +5
	ज्ये4	नो या यी यू	12 36	18.5 16	24.5 -6	29.5	22.5 1	22.5	12 6	2 3126	5 63	10.5 53	20 +5	26 -5	31	23.5 1	16.5 13	12 13	12 3	24	19.5 4	15.5 4	19.5 4	31.5	30	28 3	14 0234	16.5 14	16.5 14	20 1	20	25	24	18 3	10 13	9.5 135	21 15	21 +5
धनु	मु4	ये यो भ भी	12 35	20 15	24.5 +5	19 6	13 16	13 6	21	15 13	12 3	8 36	17 6	23.5 6	25 +5	19 15	9.5 153	13 31	13 3	26	26	21	26	22.5 +4	15.5 ×24	15 342	28 3	28 01	26.5 1	15 14	15 4	20 4	28.5	21.5 3	14.5 13	16 13	25 1	26.5
	पू4	भू धा फा ढ़ा	26 +5	18 35	18 125	12.5 162	18 6	10 36	18 3	27	27	23 6	12 236	17 16	19 -15	17 35	25 +5	28.5	27	13 13	13 13	27	21 1	17.5 -14	15.5 34	17.5 -14	28 +1	28 3	34 0	22.5 04	23 4	6 134	14.5 13	23.5 1	28.5	30	23 3	31
	उ1	भे	24.5 +5	26 +5	12 135	6.5 136	10.5 236	17 26	25 +2	27	27	23 6	23 6	9 163	8.5 153	24 +5	25 +5	28.5	28.5	21 1	21 1	19 3	13 13	9.5 134	23.5 +4	17.5 -14	26.5 -1	34	28 3	16.5 34	14.5 340	15 14	23.5 1	23.5 1	29.5	31	31	23 3
मकर	उ3	भो ज जी	27	28.5	14.5 13	12 135	16 235	22.5 ×25	20 ×26	22 -6	22 -6	28	28	14 13	4.5 136	20 6	21 6	24.5 +5	24.5 15	17 15	24 -1	22 3	16 13	13 31	27	21 1	16 14	23.5 4	17.5 34	28 3	26 30	26.5 +1	17 ×14	17 ×14	23 +4	30.5	30.5	22.5 3
	उ4	खि खू खे खो	27	26	13.5 32	11 352	16 35	25 +5	22.5 -6	21 -6	22 -6	28	26 +2	15 3	6.5 36	18.5 6	20 6	23.5 +5	24.5 +5	19.5 5	26.5	22 3	17 3	14 3	27	22	17 4	23 4	14.5 34	25 3	28 3	28 -0	18.5 04	18 +4	21 +4	28.5	29.5	22.5 3
	ध2	ग गि	20	11 132	26	23.5 +5	20 15	12 35	9.5 36	16.5 16	16 -6	22	13 3	28	19.5 6	5.5 136	12.5 16	16 15	17.5 +5	15.5 35	22.5 3	24.5	29	26	12 3	26	21 4	7 341	16 41	26.5 1	27	28 3	18.5 34	23.5 40	19 14	26.5 1	15.5 13	22.5 +2
कुम्भ	ध2	गू गे	20	11 132	26	30.5	27 1	19 3	12 35	19 15	18.5 +5	13.5 6	4.5 36	19.5 6	25.5	11.5 13	18.5 1	17.5 16	19 +6	17 36	18 35	20 -5	24.5 -5	25	11 3	25	29.5	15.5 13	24.5 1	18 14	18.5 +4	19.5 34	28 3	33 0	28.5 1	18 14	7 134	14 42
	श4	गो गा सी सू	15 3	21 1	28	32.5	25.5 1	27	20 +5	12 135	13 35	8.5 36	14.5 6	20.5 6	26.5	20.5 1	12.5 13	11.5 136	8.5 1236	25 6	25 +5	19 +5	26 +5	26.5	21	19 3	22.5 3	24.5 1	24.5 1	18 14	18 +4	24.5 +4	33	28 3	19 013	8.5 1340	17 14	16 4
	पू3	से सो द	18 3	25 +2	20 -1	24.5 -1	31.5	31.5	24.5 +5	17 35	18 35	13 36	20 6	13.5 16	19.5 1	25.5	16.5 3	15.5 36	15.5 ×36	17.5 16	18.5 -15	26 +5	20 -15	20.5 1	26.5	11 13	15.5 13	29.5	30.5	24 +4	23 +4	20 -14	28.5 -1	19 13	28 3	17.5 34	22.5 04	20 42
मीन	पू1	दी	14.5 346	21.5 +426	16.5 -146	19 1	26	26	25.5	18 3	19 3	18 35	25 5	18.5 15	17.5 -16	23.5 +6	14.5 36	16.5 3	16.5 3	18.5 +1	11.5 16	19 6	13 16	19 -15	25 +5	9.5 135	15 13	29	30	29.5	28.5	25.5 1	17 14	7.5 134	16.5 34	28 3	33 0	30.5 +2
	उ4	दू थ झ ञ	24.5 +4	16.5 34	18.5 -14	21 1	26	18 3	17.5 3	25.5	28	27 5	19 35	21 15	18.5 -16	16.5 36	25.5 +6	27.5	26.5	9.5 132	2.5 3216	19.5 6	12 162	18 152	19 35	21 -15	24 -1	22 3	30	29.5	29.5	14.5 13	6 134	16 14	21.5 4	33	28 3	35 0
	र4	दे दो चा ची	25 +40	24.5 +4	11.5 34	14 3	17 3	16	25.5	24.5	26.5	25.5 5	27 5	14 35	13 36	23.5 +6	23.5 +6	25.5	26.5	19.5	12.5 6	11.5 36	4.5 36	10.5 35	27 -5	22 +5	26.5	29	21	20.5 3	21.5 3	22.5 -2	14 42	16 4	18 42	29.5 +2	34	28 3

यहाँ दोषों को इकाई के रूप में मानना चाहिए। जैसे वर की राशि धनु में पूर्व 4 चरण तथा कन्या की राशि वृष कृतिका 3 चरण का मेलापक देखने पर कुल गुण योग 13.5 तथा दोष में 126 लिखा है। यहाँ 1 – गण दोष, 2 – वैर योनि, 6 – षडाष्टक दोष प्राप्त होता है।

वर–कन्या वैवाहिक अष्टकूट मेलापक सारणियाँ इत्यादि

१ – वर्णस्यगुणाः

वरस्य (columns) / कन्यायाः (rows)

वर्णाः	ब्रा·	क्ष·	वै·	शू·
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

२ – वश्यगुणाः

वरस्य (columns) / कन्यायाः (rows)

वश्याः	च·	मा·	ज·	व·	की·
चतुष्पद	२	१	१	०	१
मानव	१	२	१	०	१
जलचर	१	१	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

४ – योनिकूटस्य गुणज्ञानाय चक्रमिदम्

वरस्य (columns) / कन्यायाः (rows)

योनयः	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	२	२	२	२	२	३	१	१	३	३	२	१
गज	२	४	३	२	२	२	२	२	३	२	२	२	२	०
मेष	३	३	४	३	२	३	२	३	३	१	३	०	३	१
सर्प	२	२	३	४	२	२	१	१	२	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	२	२	३	२	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	२	३	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	३	२	३	१	२	२	२	४	३	०	३	२	३	१
महिष	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	२	१	२	२
मृग	३	३	३	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	३
नकुल	२	२	३	०	२	२	१	३	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	१	१	२	१	२	१	१	३	२	२	३	२	४

६ – गणगुणाः

वरस्य (columns) / कन्यायाः (rows)

गण	देव	मनुष्य	राक्षस
देव	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	०	०	६

८ – नाड़ीगुणाः

वरस्य (columns) / कन्यायाः (rows)

नाड़ी	आदि	मध्य	अन्त्य
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त्य	८	८	०

३ – तारायाः गुणाः

वरस्य (columns) / कन्यायाः (rows)

तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
जन्म १	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
संपत् २	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
विपत् ३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१
क्षेम ४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
प्रत्यरि ५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१
साधक ६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
वध ७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१
मैत्र ८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
अतिमैत्र ९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

५ – ग्रहमैत्रकस्य गुणाः

वरस्य (columns) / कन्यायाः (rows)

ग्रह	सू	च	मं	बु	गु	शु	श
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्र	५	५	४	१	४	॥	॥
मंगल	५	४	५	॥	५	३	॥
बुध	४	१	॥	५	॥	५	४
गुरु	५	४	५	॥	५	॥	३
शुक्र	०	॥	३	५	॥	५	५
शनि	०	॥	॥	४	३	५	५

निराभिजिद् गणना

स्थानम्	नक्ष·	फलानि
शीर्षे	३	हानिः
मुखे	३	सिद्धिः
कण्ठे	३	मृत्युः
हस्ते	४	शत्रुभयं
हृदये	४	इष्टाप्तिः
उदरे	३	हानिः
कटयां	३	इष्टाप्तिः
चरणे	४	धनाप्तिः

अष्टकूट मेलापक

विवाह–मेलापक विचार में वर्ण में १, वश्य में २, तारा में ३, योनि में ४, ग्रहमैत्री में ५, गणमैत्री में ६, भकूट में ७ तथा नाड़ी में ८ गुण होते हैं। इन कुल ३६ गुणों में से १८ गुण से ऊपर विवाह अत्यन्त शुभ माना जाता है। तारा देखने के लिये कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक तथा वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर जो आये, उसमें अलग–अलग ९ का भाग देने से जो शेष बचे, उसे तारा जाने।

अथ मेलापके विशेषस्तत्राह।

अज्ञातजन्मनां नृणां नाम्नि भं परिकल्पयेत्।
तेनैव चिन्तयेत्सर्वं राशिकूटादि जन्मवत्।।१।।
जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभम्।

७ – राशिकूटस्य गुणाः

वरस्य (columns) / कन्यायाः (rows)

राशि	मेष	वृष	मि·	कर्क	सिंह	क·	तुला	वृ·	धनु	म·	कुंभ	मीन
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुंभ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
सूर्य	चं·मं·गु·	बुधः	शु·श·
चन्द्र	सू· बु·	मं·गु·शु·श·	०
मंगल	चं·सू·गु·	शुक्र, शनि	बुध
बुध	सू· शु·	मं,गु,श·	चन्द्र
गुरु	सू·चं·मं·	शनि	बु·शु·
शुक्र	बु· श·	मंगल,गुरु	सू·चं·
शनि	बु· शु·	गुरु	सू·चं·मं·

प्रीतिषडष्टक	मृत्युषडष्टक	शुभद्विर्दादशक	अशुभद्विर्दादशक	शुभनवपंचक	अशुभनवपंचक
सिंह–मीन	मेष–कन्या	मीन–मेष	वृष–मिथनु	मेष–सिंह	धनु–मेष
तुला–वृश्चिक	तुला–मीन	कर्क–सिंह	कुम्भ–मीन	वृष–कन्या	मकर–वृष
कुम्भ–कन्या	मिथुन–वृश्चिक	सिंह–कन्या	मेष–वृष	मिथुन–तुला	कर्क–वृश्चिक
मिथुन–मकर	मकर–सिंह	मकर–कुम्भ	मिथुन–कर्क	सिंह–धनु	कन्या–मकर
मेष–वृश्चिक	कुम्भ–कर्क	तुला–कन्या	तुला–वृश्चिक	तुला–कुम्भ	कुम्भ–मिथु·
धनु–कर्क	धनु–वृष	धनु–वृश्चिक	मकर–धनु	वृश्चिक–मीन	मीन–कर्क

✲ विवाह मुहूर्त्त 2081 ✲

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

✲ **विवाह के मास-** चैत्र (मेषकासूर्य), वैशाख (वृषकासूर्य), ज्येष्ठ (वृष-मिथुनकासूर्य), आषाढ़ (मिथुनकासूर्य, शुक्लदशमीतक), कार्तिक (वृश्चिककासूर्य), मार्गशीर्ष (वृश्चिककासूर्य), पौष (मकरकासूर्य), माघ (मकरकासूर्य), फाल्गुन (कुम्भकासूर्य)। कार्तिक व पौष में प्रायः वृश्चिक और मकर का सूर्य नहीं मिलता है। ✲ **वर्जित मास-** श्रावण, भाद्रपद, आश्विन।

✲ **विवाह के वार-** रवि, सोम, बुध, गुरू, शुक्र।

✲ **विवाह तिथियाँ-** 2, 3, 5, 7, 10, 11, 12, 13

✲ **विवाह नक्षत्र-** रोहिणी, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, मूल व रेवती।

✲ **पारस्कर गृह्यसूत्रोक्त-** अश्विनी, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा।

✲ मृत्युबाण में विवाह वर्जित होता है। सूर्य के 1, 10, 19, 28 गतांश पर मृत्युबाण होता है।

✲ **पारस्कर गृह्यसूत्रोक्त नक्षत्र चतुष्टयी** को मुहूर्त्तों में सम्मिलित किया गया है।

✲ **विवाह हेतु वर्जित काल :-** ✲ **मीन मलमास -** वर्षारम्भ से 13 अप्रैल 2024 तक। ✲ **देवशयन काल-** 17 जुलाई से 12 नवम्बर 2024 तक ✲ **कर्क संक्रान्ति दोष-** 17 जुलाई 2024।

✲ **शुक्र अस्त** बालत्व वृद्धत्व वर्जित काल - 27 अप्रैल से 10 जुलाई 2024 तक, 18 मार्च से 28 मार्च 2025 तक। ✲ **गुरू अस्त** बालत्व वृद्धत्व वर्जित काल - 6 मई से 6 जून 2024 तक।

✲ **धनु मलमास -** 16 दिसम्बर 2024 से 14 जनवरी 2025। ✲ **होलाष्टक -** 7 मार्च से 14 मार्च 2025 तक। ✲ **मीन मलमास-** 14 मार्च 2025 से वर्षान्त तक।

विवाह के मुहूर्त्तों में त्रिबल शुद्धि में सूर्य के 1, 2, 5, 7, 9वें स्थान पर होने से पूजा का, 4, 8, 12वें स्थान पर निन्दित, 3, 6, 10, 11वें स्थान पर शुभ। गुरु के 1, 3, 6, 10वें स्थान पर होने से पूजा का, 4, 8, 12वें स्थान पर निन्दित, 2, 5, 7, 9, 11वें स्थान पर शुभ। चन्द्र के 1, 2, 5, 9वें स्थान पर पूजा का, 4, 8, 12वें स्थान पर निन्दित, व 3, 6, 7, 10व 11वें स्थान पर शुभ माना है।

कुछ आचार्यों ने द्वादश चन्द्र को पूजा का कहा है। हमने यहाँ पर द्वादश चन्द्र को निन्दित ही माना है। तिथि क्षय, नक्षत्र क्षय, मन्वादिः युगादिः तिथियाँ, रिक्ता तिथि का विचार परम्परा से विवाह के मुहूर्त्तों में नहीं होता है। क्रूर ग्रहों की युति का परिहार चन्द्रमा की अपनी उच्च राशि (वृष) या मित्र राशि (सूर्य, व बुध) में होने पर हो जाता है। विवाह में लग्नशुद्धि का विचार पीयूषधारा के निम्न वाक्य के अनुसार ही किया जाता है-

''त्याज्यलग्नेऽब्धयो मंदात्षष्ठेशुकेंदुलग्नपाः। रंध्रेचन्द्रादयः पंचसर्वेस्तेब्जगुरु समौ।''

✲ गोधूलि लग्न काल में निषिद्ध ग्रह स्थिति ✲

गोधूलि लग्न का विचार करते समय, लग्न, छठे व आठवें स्थान में चन्द्रमा को शुभ नहीं माना गया है। क्रान्तिसाम्य का दोष भी गोधूलि लग्न में शुभ नहीं होता है। लग्न से 2, 3 व 11वें स्थान पर चन्द्रमा को अति शुभ माना गया है। लग्न, छठे व आठवे स्थान पर चन्द्र नहीं होना चाहिए। 2-3-11वे स्थान पर चन्द्र होने पर लग्न गोधूलि होता है। अन्य स्थानों पर चन्द्र होने पर लग्न अन्य गोधूलि कहा जाता है।

गोधूलि लग्न में कुलिक दोष का विचार किया जाता है। शनिवार व गुरुवार को कुलिक दोष रहता है। शनिवार को सूर्यास्त तक तथा गुरुवार को सूर्यास्त के पश्चात् यह दोष रहता है। गोधूलि के अतिरिक्त लग्न शुद्धि का विचार निम्न बिन्दुओं के आधार पर किया जाता है-

(1) लग्न में शनि-रवि-सोम-मंगल को शुभ नहीं माना जाता है।
(2) छठे स्थान पर शुक्र, चन्द्रमा व लग्न पति को शुभ नहीं माना जाता है।
(3) सातवें स्थान पर कोई भी ग्रह शुभ नहीं होता है, मात्र चन्द्र व गुरु को सम माना जाता है।
(4) अष्टम स्थान में चन्द्र-मंगल-बुध-गुरु व शुक्र को शुभ नहीं माना जाता है।

पापौ कर्तरिकारको रिपुगृहे नीचास्तगी कर्तरीदोषो नैव सितेऽरिनीचगृहर्गतत्षष्ठदोषोऽपि नः।
भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद्भीमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिः फाष्टारिदोषोऽपि नः ।।

(1) छठे स्थान का शुक्र अशुभ कहा गया है किन्तु अपने शत्रु (कर्क-सिंह) या नीच राशि कन्या पर होने से षष्ठस्थ शुक्र दोष परिहार हो जाता है। **(2)** मंगल अष्टम स्थान में दोष कारक होता है किन्तु सूर्य के साथ अस्त होने पर, अपने शत्रु राशि (मिथुन-कन्या) या नीच राशि कर्क में होने पर अष्टमस्थ मंगल के दोष का परिहार हो जाता है। **(3)** छठे आठवें व बारहवें स्थान का चन्द्रमा भी दोषकारक माना गया है किन्तु अपनी नीच वृश्चिक राशि या वृश्चिक के नवमांश में होने पर इस दोष का परिहार हो जाता है। **विशेष-** विवाह लग्न से 12वें शनि, 10वें मंगल व 3रे शुक्र का विचार परम्परा से नहीं किया जाता है।

विवाह के लग्न का विंशोपक बल निकालने का प्रकार- विवाह काल के लग्न के समय 3,6,8,11वें स्थान में सूर्य-शनि-राहु या केतु शुभ होते हैं। 3,6,11वें स्थान में मंगल शुभ होता है। 2,3,11वें स्थान में चन्द्रमा शुभ होता है। 1,2,3,4,5,6,9,10,12वें स्थान में बुध व गुरु शुभ होते हैं। 1,2,4,5,9,10,11,12वें स्थान में शुक्र शुभ होता है। बुध व शुक्र के 2, 2, चन्द्रमा के 5, सूर्य के 3.5, गुरु के 3, शनि-राहु-केतु मंगल के 1.5-1.5 बल होते हैं। विवाह काल के समय जितने ज्यादा बल हों वह लग्न उतना ही उत्तम होता है।

जन्म मास में विवाह- जन्म मास, जन्म नक्षत्र, जन्मतिथि व जन्म लग्न में प्रथम उत्पन्न पुत्र व कन्या का विवाह शुभ नहीं माना जाता है। परन्तु द्वितीय पुत्र या कन्या का विवाह पुत्र का देने वाला व पण्डितों से प्रशंसित है। (मु. चिन्तामणि)

ज्येष्ठ माह में विशेष- ज्येष्ठ कन्या, ज्येष्ठ वर व ज्येष्ठ का महीना ये तीन ज्येष्ठ शुभ नहीं होते हैं। ज्येष्ठ महीना व ज्येष्ठ वर या ज्येष्ठ कन्या ये दो ज्येष्ठ मध्यम होते हैं। **परिहार-** ज्येष्ठ माह में यदि सूर्य कृतिका नक्षत्र का त्याग कर चुका हो तब दो ज्येष्ठ मध्यम फल के स्थान पर शुभ फलप्रद हो जाता है परन्तु 3 ज्येष्ठ तो कभी भी शुभ नहीं माने जाते हैं।

✲ विवाह मुहूर्त्त 2081 ✲

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	चन्द्र नक्षत्र (विवाह नक्षत्र)	सूर्य राशि	चन्द्र राशि	रेखा संख्या	विवाह लग्न समय		चन्द्र शुद्धि 4,8,12 वां निन्दित चन्द्र छोड़कर व अन्य दोषों का विवरण
						दिवा लग्न	रात्रि लग्न	
18 अप्रैल	चैत्र शुक्ल 10 गुरुवार	मघा 09:52 बाद	मेष	सिंह	7	नक्षत्र गण्डान्त दोष से मुहूर्त का अभाव	गोधूलि 18:38-19:02 वृश्चिक-धनु 20:48-25:12 मीन 28:22-28:48	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चि. धनु कुम्भ मीन
19 अप्रैल	चैत्र शुक्ल 11 शुक्रवार	मघा	मेष	सिंह	9	वृष 07:24-08:01 (अग्रे भद्रा)	भद्रा दोष, नक्षत्राभाव	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चि. धनु कुम्भ मीन
20 अप्रैल	चैत्र शुक्ल 12 शनिवार	उ.फा. 14:43 बाद	मेष	सिंह 21:22 तक	6	नक्षत्राभाव	गोधूलि 18:39-19:03 वृश्चिक-धनु 20:40-25:04	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चि. धनु कुम्भ मीन 21:22 तक (उ.फा. में सूर्यविध दोष)
21 अप्रैल	चैत्र शुक्ल 13 रविवार	उ.फा./हस्त	मेष	कन्या	8	वृष-मिथुन 07:16-11:25	गोधूलि 18:39-19:03 वृश्चिक-धनु 20:36-25:00	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन (उफा में सूर्यविध, हस्त में केतुयुति दोष)
25 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 2 गुरुवार	अनुराधा 25:27 बाद	मेष	वृश्चिक	9	नक्षत्राभाव	मीन 28:10-29:24 (पूर्वे व्यतीपात)	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
26 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 2 शुक्रवार	अनुराधा	मेष	वृश्चिक	7	वृष-मिथुन 06:56-11:06	भद्रा दोष	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
11 जुलाई	आषाढ़ शुक्ल 5 गुरुवार	उ.फा. 12:22 बाद	मिथुन	सिंह 19:00 तक	10	कन्या 12:22-12:59	गोधूलि 19:08-19:32 वृष 25:58-27:53	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चि. धनु कुम्भ मीन 19:00 तक (उ.फा. में राहुवेध दोष)
12 जुलाई	आषाढ़ शुक्ल 6 शुक्रवार	उ.फा./हस्त	मिथुन	कन्या	8	परिघ दोषात् मुहूर्त अभाव	गोधूलि 19:08-19:32 वृष 25:54-27:49	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन (उ.फा. में राहुवेध दोष)
13 जुलाई	आषाढ़ शुक्ल 7 शनिवार	हस्त	मिथुन	कन्या	7	सिंह-कन्या 08:20-12:22 (अग्रे भद्रा)	भद्रा दोष	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन (हस्त में केतुयुति दोष)

✻ विवाह मुहूर्त्त 2081 ✻

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	चन्द्र नक्षत्र (विवाह नक्षत्र)	सूर्य राशि	चन्द्र राशि	रेखा संख्या	विवाह लग्न समय		चन्द्र शुद्धि 4,8,12 वां निन्दित चन्द्र छोड़कर व अन्य दोषों का विवरण
						दिवा लग्न	रात्रि लग्न	
17 नवंबर	मार्गशीर्ष कृष्ण 2 रविवार	रोहिणी	वृश्चिक	वृष	9	वृश्चिक 06:49-09:07	गोधूलि 17:17-17:41 रात्रि में मृत्युबाण से लग्नाभाव	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
22 नवंबर	मार्गशीर्ष कृष्ण 7 शुक्रवार	मघा 22:13 से	वृश्चिक	सिंह	7	नक्षत्राभाव	कन्या 25:55-28:10 लग्न शुद्धि का अभाव	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चि. धनु कुम्भ मीन
23 नवंबर	मार्गशीर्ष कृष्ण 8 शनिवार	मघा	वृश्चिक	सिंह	8	वृश्चिक-धनु 06:25-10:49	वैधृति दोष 15:15 से	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चि. धनु कुम्भ मीन
24 नवंबर	मार्गशीर्ष कृष्ण 9 रविवार	उ.फा. 24:14 से	वृश्चिक	सिंह	6	वैधृति दोषात् लग्नाभाव	कन्या 25:47-28:02 लग्नशुद्धि का अभाव	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चि. धनु कुम्भ मीन (उफा में केतुयुति दोष)
25 नवंबर	मार्गशीर्ष कृष्ण 10 सोमवार	उ.फा.	वृश्चिक	कन्या	6	धनु 08:36-10:41	कन्या 25:43-27:58 (भद्रा 12:26-25:25 तक लग्नाभाव)	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन (उफा में केतुयुति दोष)
26 नवंबर	मार्गशीर्ष कृष्ण 11 मंगलवार	हस्त	वृश्चिक	कन्या	8	धनु 08:32-10:37	मृत्युबाण दोष से मुहूर्त्त अभाव	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन (हस्त में राहुवेध दोष)
2 दिसंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 1 सोमवार	मूल 15:45 बाद	वृश्चिक	धनु	7	नक्षत्राभाव	कन्या 25:16-27:31	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चिक धनु कुम्भ मीन
3 दिसंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 2 मंगलवार	मूल	वृश्चिक	धनु	8	धनु 08:04-10:10	नक्षत्राभाव	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चिक धनु कुम्भ मीन
4 दिसंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 3 बुधवार	उ.षा. 17:02 से	वृश्चिक	मकर	9	नक्षत्राभाव	गोधूलि 17:14-17:38 रात्रि में भद्रा दोष से लग्नाभाव	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन

✻ विवाह मुहूर्त्त 2081 ✻

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	चन्द्र नक्षत्र (विवाह नक्षत्र)	सूर्य राशि	चन्द्र राशि	रेखा संख्या	विवाह लग्न समय		चन्द्र शुद्धि 4,8,12 वां निन्दित चन्द्र छोड़कर व अन्य दोषों का विवरण
						दिवा लग्न	रात्रि लग्न	
10 दिसंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 10 मंगलवार	रेवती	वृश्चिक	मीन	8	व्यतीपात दोष	कन्या 25:44-26:59	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन (उभा में राहुयुति दोष)
15 दिसंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 15 रविवार	मृगशिरा	वृश्चिक	वृष 15:32 तक	6	अभिजित् 12:01-12:43	गोधूलि 17:17-17:41 कन्या 25:25-26:40	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन 15:32 तक
16 जनवरी	माघ कृष्ण 3 गुरुवार	मघा 12:02 से	मकर	सिंह	9	मृत्युबाण	वृश्चिक 28:24-29:11 (पूर्वे भद्रा)	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चि. धनु कुम्भ मीन
17 जनवरी	माघ कृष्ण 4 शुक्रवार	मघा 13:25 तक	मकर	सिंह	10	मेष 11:52-13:25	नक्षत्राभाव	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चि. धनु कुम्भ मीन
18 जनवरी	माघ कृष्ण 5 शनिवार	उ.फा. 15:15 से	मकर	सिह	7	नक्षत्राभाव	गोधूलि 17:40-18:04	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चि. धनु कुम्भ मीन (उफा में केतुयुति दोष)
19 जनवरी	माघ कृष्ण 6 रविवार	उ.फा./हस्त	मकर	कन्या	8	वृष 13:20-15:15	गोधूलि 17:41-18:05 वृश्चिक 26:40-28:59	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन (उफा में केतुयुति, हस्त में राहुवेध दोष)
21 जनवरी	माघ कृष्ण 7 मंगलवार	स्वाती	मकर	तुला	8	नक्षत्राभाव	वृश्चिक 26:32-27:14 (अग्रे शूल)	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ (स्वाती में शनिवेध दोष)
22 जनवरी	माघ कृष्ण 8 बुधवार	स्वाती	मकर	तुला	7	मेष 11:32-13:08	गोधूलि 17:43-18:07 कन्या 21:54-24:09	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ (स्वाती में शनिवेध दोष)
3 फरवरी	माघ शुक्ल 5 सोमवार	रेवती	मकर	मीन	8	वृष 12:20-16:30 वसन्त पंचमी	गोधूलि 17:53-18:17 कन्या 21:07-23:22	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन (रेवती में केतुवेध दोष)

✻ विवाह मुहूर्त्त 2081 ✻

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	चन्द्र नक्षत्र (विवाह नक्षत्र)	सूर्य राशि	चन्द्र राशि	रेखा संख्या	विवाह लग्न समय		चन्द्र शुद्धि 4,8,12 वां निन्दित चन्द्र छोड़कर व अन्य दोषों का विवरण
						दिवा लग्न	रात्रि लग्न	
6 फरवरी	माघ शुक्ल 9 गुरुवार	रोहिणी 21:39 से	मकर	वृष	8	नक्षत्राभाव	कन्या 20:55-23:10 वृश्चिक 25:29-27:48	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
7 फरवरी	माघ शुक्ल 10 शुक्रवार	रोहिणी	मकर	वृष	8	मेष 10:29-12:05	गोधूलि 17:56-18:13 (अग्रे वैधृति)	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
12 फरवरी	माघ शुक्ल 15 बुधवार	मघा 19:40 से	मकर	कन्या	7	नक्षत्राभाव	वृश्चिक 25:05-27:24	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन (मघा में सूर्यवेध दोष)
13 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 1 गुरुवार	मघा 20:56 तक	कुम्भ	सिंह	8	मेष-वृष 10:05-13:36	18:01-18:25 रात्रि में नक्षत्राभाव	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चि. धनु कुम्भ मीन (मघा में सूर्यवेध दोष)
14 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 2 शुक्रवार	उ.फा. 22:40 से	कुम्भ	सिंह	6	नक्षत्राभाव	वृश्चिक-धनु 25:13-29:17	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चि. धनु कुम्भ मीन (उफा में केतुयुति)
15 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 3 शनिवार	उ.फा/ हस्त	कुम्भ	कन्या	7	भद्रा दोष	वृश्चिक 25:53-27:12	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन (हस्त में राहुवेध दोष)
18 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 6 मंगलवार	स्वाती	कुम्भ	तुला	8	मेष 09:45-11:21	गोधूलि 18:05-18:29 वृश्चिक-धनु 24:41-28:52 (अग्रे भद्रा)	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
20 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 7 गुरुवार	अनुराधा 10:51 से	कुम्भ	वृश्चिक	10	वृष 11:13-13:09	गोधूलि 18:06-18:30 वृश्चिक 24:33-26:52	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
21 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 8 शुकवार	अनुराधा 12:58 तक	कुम्भ	वृश्चिक	8	वृष 11:09-13:05	नक्षत्राभाव	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन

✼ विवाह मुहूर्त्त 2081 ✼

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	चन्द्र नक्षत्र (विवाह नक्षत्र)	सूर्य राशि	चन्द्र राशि	रेखा संख्या	विवाह लग्न समय		चन्द्र शुद्धि 4,8,12 वां निन्दित चन्द्र छोड़कर व अन्य दोषों का विवरण
						दिवा लग्न	रात्रि लग्न	
25 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 12 मंगलवार	उ.षा. 16:50 तक	कुम्भ	मकर	8	मेष-वृष 09:18-12:49	नक्षत्राभाव	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
6 मार्च	फाल्गुन शुक्ल 7 गुरूवार	रोहिणी	कुम्भ	वृष	8	मेष-वृष 08:42-12:13	भद्रा दोष, होलाष्टक आरम्भ	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
✼ पारस्कर गृह्यसूत्रोक्त विवाह मुहूर्त्त 2081 ✼								
27 नवंबर	मार्गशीर्ष कृष्ण 12 बुधवार	चित्रा	वृश्चिक	कन्या	8	मृत्युबाण दोष	गोधूलि 17:15-17:39 कन्या 25:39-27:54	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
6 दिसंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 5 शुक्रवार	श्रवण/ धनिष्ठा	वृश्चिक	मकर	8	मृत्युबाण दोष	गोधूलि 17:15-17:39 कन्या 25:00-27:15	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
7 दिसंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 6 शनिवार	धनिष्ठा 15:33 तक	वृश्चिक	कुम्भ	9	धनु 07:48-09:54	नक्षत्राभाव	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
21 जनवरी	माघ कृष्ण 7 मंगलवार	चित्रा	मकर	कन्या	8	मीन 10:10-11:36	नक्षत्राभाव	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
25 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 12 मंगलवार	श्रवण 16:50 से	कुम्भ	मकर	7	गोधूलि 18:09-18:33	कन्या 19:40-21:55 वृश्चिक-धनु 24:14-28:38	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
3 मार्च	फाल्गुन शुक्ल 4 सोमवार	अश्विनी	कुम्भ	मेष	8	अभिजित् 12:15-13:03	गोधूलि 18:13-18:37 रात्रि में मृत्युबाण दोष	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चिक धनु कुम्भ मीन

❊ उपनयन (यज्ञोपवीत, व्रतबन्ध) मुहूर्त्त 2081 ❊

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

❊ उपनयन के नाम- उपनयन को व्रतबन्ध, यज्ञोपवीत या जनेऊ संस्कार भी कहते हैं। इस संस्कार से ब्रह्मविद्या, वेदाध्ययन का अधिकार मिलता है।

❊ उपनयन की आयु- पंचम, षष्ठ, अष्टम, एकादश, द्वादश वर्ष में उपनयन कराना चाहिए।

❊ उपनयन अयन- उपनयन संस्कार केवल उत्तरायण में ही किया जाता है।

❊ उपनयन मास- माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ मास। (चैत्र मास में केवल ब्राह्मण बटुकों का उपनयन होता है।)

❊ उपनयन के वार- रवि, सोम, बुध, गुरू, शुक्र (शनि वर्जित)।

❊ उपनयन तिथियाँ- **शुक्लपक्ष-** 2, 3, 5, 10, 11, 12, 13 **कृष्णपक्ष-** 2, 3, 5

❊ उपनयन नक्षत्र- अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठ, शतभिषा, रेवती (कुल 22 नक्षत्र)।

❊ वर्जित नक्षत्र- भरणी, कृत्तिका, ज्येष्ठा, विशाखा, मघा (कुल 5 नक्षत्र)।

पुनर्वसु में विप्र बटुकों का उपनयन वर्जित है- *पुनर्वसौ कृतो विप्रः पुनः संस्कारमर्हति।(राजमार्तण्ड)*

❊ उपनयन लग्न- 2, 3, 4, 5, 6, 7, 9, 12 **❊ वर्जित लग्न-** 1, 8, 10, 11

❊ उपनयन काल- पूर्वाह्न एवं मध्याह्न (अपराह्न वर्जित)

❊ उपनयन में बाणदोष- रोगबाण में उपनयन नहीं होता है (अन्य चार बाणों में होता है) । सूर्य के 8, 17, 26 अंश पर रोगबाण होता है।

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	नक्षत्र	यज्ञोपवीत मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्र राशि	सूर्य राशि	चन्द्र शुद्धि 4,8,12वां निन्दित चन्द्र छोड़कर
18 अप्रैल	चैत्र शुक्ल 10 गुरुवार	आश्लेषा	वृष-मिथुन 07:28 - 09:52	कर्क	मेष	वृष मिथु. कर्क कन्या तुला वृश्चि मकर कुम्भ मीन
26 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 2 शुक्रवार	अनुराधा	वृष-मिथुन 06:56 - 11:06, सिंह 13:26 - 15:42	वृश्चिक	मेष	वृष मिथु कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
8 जुलाई	आषाढ़ शुक्ल 3 सोमवार	आश्लेषा	सिंह-कन्या 08:39 - 13:11	कर्क	मिथुन	वृष मिथु. कर्क कन्या तुला वृश्चि मकर कुम्भ मीन
15 जनवरी	माघ कृष्ण 2 बुधवार	आश्लेषा	कुम्भ- मीन 09:05 - 12:00, वृष 13:36 - 15:31	कर्क	मकर	वृष मिथु. कर्क कन्या तुला वृश्चि मकर कुम्भ मीन
16 जनवरी	माघ कृष्ण 3 गुरुवार	आश्लेषा	कुम्भ- मीन 09:01 - 11:56	कर्क	मकर	वृष मिथु. कर्क कन्या तुला वृश्चि मकर कुम्भ मीन
2 फरवरी	माघ शुक्ल 5 रविवार	उ.भा.	वृष-मिथुन 12:24 - 16:34	मीन	मकर	वृष मिथु कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
3 फरवरी	माघ शुक्ल 5 सोमवार	रेवती	कुम्भ- मीन 07:49 - 10:45, वृष-मिथुन 12:20 - 16:30	मीन	मकर	वृष मिथु कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
7 फरवरी	माघ शुक्ल 10 शुक्रवार	रोहिणी	कुम्भ- मीन 07:34 - 10:29, वृष-मिथुन 12:05 - 16:14	वृष	मकर	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
10 फरवरी	माघ शुक्ल 13 सोमवार	पुनर्वसु	कुम्भ- मीन 07:22 - 10:17, वृष-मिथुन 11:53 - 16:06	मिथुन	मकर	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
14 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 2 शुक्रवार	पू.फा.	मीन 09:24 - 10:01, वृष-मिथुन 11:37 - 15:47	सिंह	कुम्भ	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चि. धनु कुम्भ मीन
17 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 5 सोमवार	चित्रा	वृष-मिथुन 11:25 - 15:35	कन्या	कुम्भ	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
9 मार्च	फाल्गुन शुक्ल 10 रविवार	पुनर्वसु	वृष-मिथुन 10:06 - 14:16	मिथुन	कुम्भ	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
10 मार्च	फाल्गुन शुक्ल 11 सोमवार	पुष्य	वृष-मिथुन 10:02 - 14:12	कर्क	कुम्भ	वृष मिथु. कर्क कन्या तुला वृश्चि मकर कुम्भ मीन

✲ गृहारम्भ मुहूर्त्त (नींव) 2081 ✲

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

✲ **गृहारम्भ मास-** वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, पौष एवं फाल्गुन
✲ **गृहारम्भ नक्षत्र-** रोहिणी, मृगशीर्ष, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (कुल 14 नक्षत्र)
✲ **गृहारम्भ तिथि-** 1, 2, 3, 5, 7, 10, 11, 13, 15 तिथियाँ
✲ **गृहारम्भ वार-** सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार
✲ **गृहारम्भ में सूर्यराशि-** जब सूर्य मेष, वृष, कर्क, सिंह, वृश्चिक, मकर या कुम्भ राशिस्थ हो

✲ **गृहारम्भ में वर्ज्य-** अग्निबाण(सूर्य के 2,11,20,29 गतांश) पंचक और भूशयनदोष (परिहारपूर्वक)
✲ चैत्र, ज्येष्ठ, आषाढ़, भाद्रपद, कार्तिक और माघ में गृहारम्भ नहीं करना चाहिए।
✲ चैत्र में शोक, ज्येष्ठ में मृत्यु, आषाढ़ में पशुनाश, भाद्रपद में मृत्यु, आश्विन में कलह, कार्तिक में हानि और माघ में अग्निभय उत्पन्न होता है। ✲ **गृहारम्भ लग्न-** 2, 3, 5, 6, 8, 9, 11, 12
✲ **लग्न शुद्धि-** लग्न से 1, 4, 7, 10, 5, 9 में शुभग्रह, लग्न से 3, 6, 11 में पापग्रह
✲ चक्रशुद्धि सहित मुहूर्तों को ✓ चिह्न से दर्शाया गया है, अन्य मुहूर्त्त चक्रशुद्धि रहित हैं।

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	गृहारम्भ नक्षत्र	चक्र शुद्धि	गृहारम्भ मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	नींव की दिशा		चन्द्रराशि	चन्द्र शुद्धि 4,8,12वां निन्दित चन्द्र छोड़कर
					गृहारम्भ	देवालय		
24 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 1 बुधवार	स्वाती	✓	वृष-मिथुन 07:04 से 11:14, सिंह-कन्या 13:34 से 18:05	वायव्य	अग्नि	तुला	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
26 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 2 शुक्रवार	अनुराधा	✓	वृष-मिथुन 06:56 से 11:06, सिंह-कन्या 13:26 से 17:57	वायव्य	अग्नि	वृश्चिक	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
22 जुलाई	श्रावण कृष्ण 1 सोमवार	श्रावण	✓	सिंह-कन्या 07:44 से 12:16, वृश्चिक 14:35 से 16:54	नैऋत्य	ईशान	मकर	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
27 जुलाई	श्रावण कृष्ण 7 शनिवार	रेवती	-	वृश्चिक-धनु 14:15 से 18:39 (भद्रान्त 13:52 पश्चात्)	नैऋत्य	ईशान	मीन	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
31 जुलाई	श्रावण कृष्ण 11 बुधवार	रोहिणी/मृग.	-	सिंह-कन्या 07:09 से 11:40, वृश्चिक 13:59 से 16:18	नैऋत्य	ईशान	वृष	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
1 अगस्त	श्रावण कृष्ण 12 गुरुवार	मृगशिरा 11:59 तक	-	सिंह-कन्या 07:05 से 11:36	नैऋत्य	ईशान	मिथुन	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
14 अगस्त	श्रावण शुक्ल 10 बुधवार	अनुराधा 08:47 तक	✓	सिंह-कन्या 06:14 से 08:47 (नक्षत्रान्त)	नैऋत्य	ईशान	वृश्चिक	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
19 अगस्त	श्रावण शुक्ल 15 सोमवार	धनिष्ठा	✓	वृश्चिक- धनु 13:21 से 17:08 (भद्रान्त 13:21 पश्चात्)	आग्नेय	ईशान	मकर	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन

✲ गृहारम्भ मुहूर्त्त (नींव) 2081 ✲

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	गृहारम्भ नक्षत्र	चक्र शुद्धि	गृहारम्भ मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	नींव की दिशा		चन्द्रराशि	चन्द्र शुद्धि 4,8,12वां निन्दित चन्द्र छोड़कर
					गृहारम्भ	देवालय		
22 अगस्त	भाद्रपद कृष्ण 3 गुरुवार	उ.भा.	✓	सिंह 06:03 से 06:43 (अग्रे भद्रा)	आग्नेय	ईशान	मीन	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
23 अगस्त	भाद्रपद कृष्ण 4 शुक्रवार	रेवती	-	धनु 15:01 से 16:53 (रिक्तान्त 15:01 बाद)	आग्नेय	ईशान	मीन	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
28 अगस्त	भाद्रपद कृष्ण 10 बुधवार	मृगशिरा	-	सिंह-कन्या 06:06 से 09:50 वृश्चिक-धनु 12:09 से 16:26(अग्रे भद्रा)	आग्नेय	ईशान	मिथुन	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
4 सितंबर	भाद्रपद शुक्ल 1 बुधवार	उ.फा.	-	कन्या 07:07 से 09:22 वृश्चिक-धनु 11:41 से 16:05	आग्नेय	ईशान	कन्या	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
16 सितंबर	भाद्रपद शुक्ल 13 सोमवार	धनिष्ठा	✓	वृश्चिक 10:54 से 12:47 (अग्रे रिक्ता)	आग्नेय	ईशान	कुम्भ	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
8 नवंबर	कार्तिक शुक्ल 7 शुक्रवार	उ.षा./ श्रवण	-	वृश्चिक-धनु 07:24 से 11:49 कुम्भ-मीन 13:33 से 16:28	आग्नेय	वायव्य	मकर	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
13 नवंबर	कार्तिक शुक्ल 12 बुधवार	रेवती	✓	वृश्चिक-धनु 07:04 से 11:29 कुम्भ 13:13 से 14:03, मीन 15:15 से 16:08	आग्नेय	वायव्य	मीन	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
18 नवंबर	मार्गशीर्ष कृष्ण 3 सोमवार	मृगशिरा	✓	वृश्चिक-धनु 06:52 से 10:19 (अग्रे भद्रा)	ईशान	वायव्य	मिथुन	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
25 नवंबर	मार्गशीर्ष कृष्ण 10 सोमवार	उ.फा.	-	वृश्चिक-धनु 06:59 से 10:41 (भद्रारम्भ 12:26 से)	ईशान	वायव्य	कन्या	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
27 नवंबर	मार्गशीर्ष कृष्ण 12 बुधवार	चित्रा	-	वृश्चिक-धनु 06:59 से 10:33 कुम्भ-मीन 12:18 से 15:13	ईशान	वायव्य	कन्या	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
28 नवंबर	मार्गशीर्ष कृष्ण 13 गुरुवार	चित्रा	-	वृश्चिक-धनु 07:00 से 10:29 कुम्भ-मीन 12:14 से 15:09	ईशान	वायव्य	तुला	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ

✻ गृहारम्भ मुहूर्त्त (नींव) 2081 ✻

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	गृहारम्भ नक्षत्र	चक्र शुद्धि	गृहारम्भ मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	नींव की दिशा		चन्द्रराशि	चन्द्र शुद्धि 4,8,12वां निन्दित चन्द्र छोड़कर
					गृहारम्भ	देवालय		
5 दिसंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 4 गुरुवार	उ.षा.	-	कुम्भ-मीन 11:46 से 14:41 (भद्रान्त 11:35 बाद)	ईशान	वायव्य	मकर	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
6 दिसंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 5 शुक्रवार	धनिष्ठा	-	वृश्चिक-धनु 07:06 से 09:58 (व्याघात आरम्भ 10:41 से पूर्व)	ईशान	वायव्य	कुम्भ	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
7 दिसंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 6 शनिवार	धनिष्ठा	-	वृश्चिक-धनु 07:07 से 09:54 कुम्भ-मीन 11:38 से 14:34	ईशान	वायव्य	कुम्भ	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
11 दिसंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 11 बुधवार	रेवती 09:42 तक	✓	वृश्चिक-धनु 07:10 से 09:32 (अग्रे भद्रा)	ईशान	वायव्य	मीन	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
15 जनवरी	माघ कृष्ण 2 बुधवार	पुष्य 11:09 तक	✓	कुम्भ-मीन 09:05 से 11:09	ईशान	नैऋत्य	कर्क	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
18 जनवरी	माघ कृष्ण 5 शनिवार	उ.फा. 15:15 बाद	-	मिथुन 15:19 से 17:34	ईशान	नैऋत्य	सिंह	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चि. धनु कुम्भ मीन
7 फरवरी	माघ शुक्ल 10 शुक्रवार	रोहिणी	✓	कुम्भ-मीन 07:34 से 10:29 वृष-मिथुन 12:05 से 16:14	ईशान	नैऋत्य	वृष	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
10 फरवरी	माघ शुक्ल 13 सोमवार	पुनर्वसु	✓	कुम्भ-मीन 07:22 से 10:17 वृष-मिथुन 11:53 से 16:06	ईशान	नैऋत्य	कर्क	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
15 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 3 शनिवार	उ.फा.	✓	कुम्भ-मीन 07:02 से 09:47(अग्रे भद्रा)	वायव्य	नैऋत्य	कन्या	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
17 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 5 सोमवार	चित्रा	-	वृष-मिथुन 11:25 से 15:35	वायव्य	नैऋत्य	कन्या	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
6 मार्च	फाल्गुन शुक्ल 7 गुरुवार	रोहिणी	-	वृष-मिथुन 10:18-14:28 (भद्रारम्भ 15:30 से)	वायव्य	नैऋत्य	वृष	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
10 मार्च	फाल्गुन शुक्ल 11 सोमवार	पुष्य	✓	(भद्रान्त 09:55 बाद) वृष-मिथुन 10:02 से 14:12	वायव्य	नैऋत्य	कर्क	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन

✲ नवीन व जीर्ण गृहप्रवेश मुहूर्त्त 2081 ✲

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

✲ **नूतन गृहप्रवेश- मास-** माघ, फाल्गुन, वैशाख एवं ज्येष्ठ मास (सौम्यायन) का गृहप्रवेश सर्वोत्तम होता है- *अथ प्रवेशो नवसद्मनश्च सौम्यायने जीवसिते बलाढ्ये (वसिष्ठसंहिता)। अथ सौम्यायने कार्यं नववेश्मप्रवेशनम् (नारदसंहिता)। माघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठ मासेषु शोभनः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्याकार्त्तिक- मासयोः (नारदसंहिता) (सौम्य = मार्गशीर्ष)।*

✲ कार्त्तिक और मार्गशीर्ष में गृहप्रवेश मध्यम बताया गया है।

✲ **गृहप्रवेश में वर्जित मास -** चैत्र, आषाढ़, भाद्रपद, आश्विन, पौष में नूतन गृहप्रवेश सर्वथा वर्जित है।

✲ गृहप्रवेश में चान्द्रमास लिया जाता है, सौरमास नहीं।

✲ **नूतन गृहप्रवेश नक्षत्र-**रोहिणी, मृगशीर्ष, तीनों उत्तरा, चित्रा, अनुराधा, रेवती। (कुल8)

✲ **गृहप्रवेश तिथि-** 1, 2, 3, 5, 6, 7, 8, 10, 11, 12, 13 तिथियाँ

✲ **गृहप्रवेश वार -** सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार और शनिवार

✲ जीर्ण गृहप्रवेश के मुहूर्त्तों में नूतन गृहप्रवेश नहीं किया जाता है।

✲ **जीर्ण गृहप्रवेश-** दूसरे या अपने द्वारा बनाए गए पुराने घर में, अग्नि, जल, राजा आदि के कारण जीर्ण घर को पुनः बनाने के बाद जो गृहप्रवेश किया जाता है, इसे जीर्ण गृहप्रवेश कहा जाता है, पुराने फ्लैट भी इसी के अन्तर्गत आते हैं। जीर्ण गृहप्रवेश में गुरु शुक्र के उदय अस्त, बाल्यावस्था-वृद्धावस्था, सिंह-मकरस्थ गुरु, लुप्त सम्वत्सर आदि का विचार आवश्यक नहीं होता है, '*वेशोअम्बुपेज्यानिलवासवेषु नावश्यमस्तादिविचारणात्र* ' *(मु.चि.प्रक.13,श्लो.2)*। इसमें नवीन गृहप्रवेश के सभी मुहूर्त्तों के अतिरिक्त निम्न मास व नक्षत्र भी ग्राह्य होते हैं:-

✲ **जीर्ण गृहप्रवेश मास-** श्रावण, कार्त्तिक एवं मार्गशीर्ष- *मार्गोर्जयोः श्रावणिकेऽपि सत्स्यात्।*

✲ **जीर्ण गृहप्रवेश नक्षत्र -** शतभिषा, पुष्य, स्वाती, धनिष्ठा। *(मु.चि.प्रक.13,श्लो.2)*

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	नूतन गृहप्रवेश नक्षत्र	जीर्ण गृहप्रवेश नक्षत्र	चक्र शुद्धि	गृहप्रवेश मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्रराशि	चन्द्र शुद्धि 4,8,12वां निन्दित चन्द्र छोड़कर
24 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 1 बुधवार	-	स्वाती	-	वृष-मिथुन 07:04 से 11:14, सिंह-कन्या 13:34 से 18:05	तुला	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
26 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 2 शुक्रवार	अनुराधा		-	वृष-मिथुन 06:56 से 11:06, सिंह-कन्या 13:26 से 17:57	वृश्चिक	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
03 मई	वैशाख कृष्ण 10 शुक्रवार	-	शतभिषा	✓	वृष-मिथुन 06:28-09:30 (अग्रे भद्रा)	कुम्भ	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
06 मई	वैशाख कृष्ण 13 सोमवार	-	रेवती	✓	वृष-मिथुन 06:17-10:26 सिंह 12:46-13:02 (अग्रे रिक्ता-भद्रा)	मीन	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
10 मई	वैशाख शुक्ल 02 शुक्रवार	-	रोहिणी	-	**अक्षय तृतीया** वृष-मिथुन 06:01-10:11 सिंह-कन्या 12:31-17:02	वृष	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
13 मई	वैशाख शुक्ल 6 सोमवार	-	पुष्य	✓	सिंह-कन्या 13:49-16:50	कर्क	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
20 मई	वैशाख शुक्ल 12 सोमवार	-	चित्रा	✓	वृष-मिथुन 05:40-09:31 सिंह 11:51-12:11 (अग्रे व्यतिपात)	कन्या	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
24 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 01 शुक्रवार	-	अनुराधा 10:00 पूर्व	-	वृष-मिथुन 05:38-09:15	वृश्चिक	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन

✻ नवीन व जीर्ण गृहप्रवेश मुहूर्त्त 2081 ✻

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	नूतन गृहप्रवेश नक्षत्र	जीर्ण गृहप्रवेश नक्षत्र	चक्र शुद्धि	गृहप्रवेश मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्रराशि	चन्द्र शुद्धि 4,8,12वां निन्दित चन्द्र छोड़कर
29 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 06 बुधवार	-	धनिष्ठा	-	वृष-मिथुन 05:36-08:56 सिंह 11:16-13:03 (अग्रे भद्रा)	मकर	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
07 जून	ज्येष्ठ शुक्ल 01 शुक्रवार	-	मृगशिरा	-	मिथुन 06:06-08:20 सिंह-कन्या 10:41-15:12	मिथुन	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
10 जून	ज्येष्ठ शुक्ल 04 सोमवार	-	पुष्य	-	रिक्ता भद्रान्त 16:50 बाद वृश्चिक 17:19-19:16	कर्क	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
17 जून	ज्येष्ठ शुक्ल 11 सोमवार	-	चित्रा	✓	मिथुन 05:35-07:41 सिंह-कन्या 10:01-14:33 (भद्रारम्भ 15:44 पूर्व)	कन्या	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
19 जून	ज्येष्ठ शुक्ल 12 बुधवार	-	अनुराधा 16:27 बाद	✓	वृश्चिक 16:44-19:03	वृश्चिक	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
24 जून	आषाढ़ कृष्ण 03 सोमवार	-	उ.षा.	-	मिथुन 05:36-07:14 सिंह-कन्या 09:34-13:57(अग्रे वैधृति)	मकर	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
26 जून	आषाढ़ कृष्ण 05 बुधवार	-	धनिष्ठा	-	मिथुन 05:36-07:06, सिंह-कन्या 09:26-13:58, वृश्चिक 16:17-18:35	मकर	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
27 जून	आषाढ़ कृष्ण 06 गुरुवार	-	शतभिषा 13:31 पूर्व	-	सिंह-कन्या 09:22-13:31	कुम्भ	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
28 जून	आषाढ़ कृष्ण 07 शुक्रवार	-	उ.भा. 12:11 से	-	कन्या 12:11-13:50 वृश्चिक 16:09-17:52(तिथ्यन्त)	मीन	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
11 जुलाई	आषाढ़ शुक्ल 05 गुरूवार	-	उ.फा. 12:22 से	✓	वृश्चिक-धनु 15:18-19:20	कन्या	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
26 जुलाई	श्रावण कृष्ण 6 शुक्रवार	-	उ.भा.	-	सिंह-कन्या 07:29 से 12:00 वृश्चिक-धनु 14:19 से 18:43	मीन	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
27 जुलाई	श्रावण कृष्ण 7 शनिवार	-	रेवती	-	वृश्चिक-धनु 14:15 से 18:39 (भद्रान्त 13:52 पश्चात्)	मीन	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
31 जुलाई	श्रावण कृष्ण 11 बुधवार	-	रोहिणी/मृग.	✓	सिंह-कन्या 07:09 से 11:40, वृश्चिक 13:59 से 16:18	वृष	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन

❊ नवीन व जीर्ण गृहप्रवेश मुहूर्त्त 2081 ❊

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	नूतन गृहप्रवेश नक्षत्र	जीर्ण गृहप्रवेश नक्षत्र	चक्र शुद्धि	गृहप्रवेश मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्रराशि	चन्द्र शुद्धि 4,8,12वां निन्दित चन्द्र छोड़कर
1 अगस्त	श्रावण कृष्ण 12 गुरुवार	-	मृगशिरा 11:59 तक	✓	सिंह-कन्या 07:05 से 11:36	मिथुन	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
14 अगस्त	श्रावण शुक्ल 10 बुधवार	-	अनुराधा 08:47 तक	✓	सिंह-कन्या 06:14 से 08:47 (नक्षत्रान्त)	वृश्चिक	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
17 अगस्त	श्रावण शुक्ल 13 शनिवार	-	उ.षा.	✓	कन्या 10:04 से 10:33 वृश्चिक-धनु 12:52 से 17:16	मकर	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
19 अगस्त	श्रावण शुक्ल 15 सोमवार	-	धनिष्ठा	-	वृश्चिक- धनु 13:21 से 17:08 (भद्रान्त 13:21 पश्चात्)	मकर	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
21 अक्टूबर	कार्तिक कृष्ण 04 सोमवार	-	मृगशिरा	-	रिक्तान्त 08:33 बाद परिघ 16:50 पूर्व। वृश्चिक-धनु 08:36-13:00, कुम्भ-मीन 14:44-16:50	मिथुन	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
24 अक्टूबर	कार्तिक कृष्ण 08 गुरुवार	-	पुष्य	✓	धनु 11:11-12:48 कुम्भ-मीन 14:32-17:27	कर्क	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
28 अक्टूबर	कार्तिक कृष्ण 11 सोमवार	-	उ.फा.	-	मीन 16:56-17:12	कन्या	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
7 नवंबर	कार्तिक शुक्ल 6 गुरुवार	-	उ.षा.	✓	वृश्चिक-धनु 10:19-11:52 कुम्भ- मीन 13:37-16:32	मकर	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
8 नवंबर	कार्तिक शुक्ल 7 शुक्रवार	-	उ.षा.	✓	वृश्चिक 07:24 से 08:58	मकर	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
13 नवंबर	कार्तिक शुक्ल 12 बुधवार	-	रेवती	✓	वृश्चिक-धनु 07:04 से 11:29 कुम्भ 13:13 से 14:03, मीन 15:15 से 16:08	मीन	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
18 नवंबर	मार्गशीर्ष कृष्ण 3 सोमवार	-	मृगशिरा	-	वृश्चिक-धनु 06:52 से 10:19 (अग्रे भद्रा)	मिथुन	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
25 नवंबर	मार्गशीर्ष कृष्ण 10 सोमवार	-	उ.फा.	✓	वृश्चिक-धनु 06:59 से 10:41 (भद्रारम्भ 12:26 से)	कन्या	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
27 नवंबर	मार्गशीर्ष कृष्ण 12 बुधवार	-	चित्रा	✓	वृश्चिक-धनु 06:59 से 10:33 कुम्भ-मीन 12:18 से 15:13	कन्या	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन

❊ नवीन व जीर्ण गृहप्रवेश मुहूर्त्त 2081 ❊

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	नूतन गृहप्रवेश नक्षत्र	जीर्ण गृहप्रवेश नक्षत्र	चक्र शुद्धि	गृहप्रवेश मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्रराशि	चन्द्र शुद्धि 4,8,12वां निन्दित चन्द्र छोड़कर
28 नवंबर	मार्गशीर्ष कृष्ण 13 गुरुवार	-	चित्रा	✓	वृश्चिक-धनु 07:00 से 10:29 कुम्भ-मीन 12:14 से 15:09	तुला	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
5 दिसंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 4 गुरुवार	-	उ.षा.	-	कुम्भ-मीन 11:46 से 14:41 (भद्रान्त 11:35 बाद)	मकर	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
6 दिसंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 5 शुक्रवार	-	धनिष्ठा	✓	वृश्चिक-धनु 07:06 से 09:58 (व्याघात आरम्भ 10:41 से पूर्व)	कुम्भ	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
7 दिसंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 6 शनिवार	-	धनिष्ठा	✓	वृश्चिक-धनु 07:07 से 09:54 कुम्भ-मीन 11:38 से 14:34	कुम्भ	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
11 दिसंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 11 बुधवार	-	रेवती 09:42 तक	✓	वृश्चिक-धनु 07:10 से 09:32 (अग्रे भद्रा)	मीन	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
15 जनवरी	माघ कृष्ण 2 बुधवार	-	पुष्य 11:09 तक	-	कुम्भ-मीन 09:05 से 11:09	कर्क	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
18 जनवरी	माघ कृष्ण 5 शनिवार	उ.फा. 15:15 बाद		-	मिथुन 15:19 से 17:34	सिंह	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चि. धनु कुम्भ मीन
22 जनवरी	माघ कृष्ण 8 बुधवार	-	स्वाती	✓	कुम्भ-मीन 08:37 से 11:32 वृष 13:08 से 13:27 (अग्रे रिक्ता)	तुला	मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुम्भ
7 फरवरी	माघ शुक्ल 10 शुक्रवार	रोहिणी		✓	कुम्भ-मीन 07:34 से 10:29 वृष-मिथुन 12:05 से 16:14	वृष	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
15 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 3 शनिवार	उ.फा.		-	कुम्भ-मीन 07:02 से 09:47 (अग्रे भद्रा)	कन्या	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
17 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 5 सोमवार	चित्रा		-	वृष-मिथुन 11:25 से 15:35	कन्या	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
21 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 8 शुक्रवार	अनुराधा		-	कुम्भ-मीन 07:04 से 08:30 (अग्रे रिक्ता)	वृश्चिक	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
6 मार्च	फाल्गुन शुक्ल 7 गुरुवार	रोहिणी		-	वृष-मिथुन 10:18-14:28 (भद्रारम्भ 15:30 से)	वृष	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
10 मार्च	फाल्गुन शुक्ल 11 सोमवार	-	पुष्य	✓	(भद्रान्त 09:55 बाद) वृष-मिथुन 10:02 से 14:12	कर्क	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन

✻ नवीन व जीर्ण गृहप्रवेश मुहूर्त्त 2081 ✻

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

✻ मुहूर्त्त पारिजातोक्त गृहप्रवेश मुहूर्त्त –

मुहूर्त्त पारिजात ग्रन्थ में 5 नक्षत्रों- अश्विनी, पुनर्वसु, हस्त, मूल व श्रवण को भी गृहप्रवेश में ग्राह्य कहा है, कई पंचांगों में इनके आधार पर मुहूर्त्त दिए जा रहे हैं। अपरिहार्य या अधिक आवश्यकता की स्थिति में जीर्ण गृहप्रवेश में स्वमतानुसार इन्हें उपयोग में लिया जा सकता है। इन मुहूर्त्तों में चक्रशुद्धि नहीं दी जा रही है।

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	नूतन गृहप्रवेश नक्षत्र	जीर्ण गृहप्रवेश नक्षत्र	गृहप्रवेश मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्रराशि	चन्द्र शुद्धि 4,8,12वां निन्दित चन्द्र छोड़कर
15 अप्रैल	चैत्र शुक्ल 7 सोमवार	-	पुनर्वसु	वृष-मिथुन 07:39 से 11:49, सिंह 14:09 से 15:55(अग्रे भद्रा)	कर्क	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
13 मई	वैशाख शुक्ल 6 सोमवार	-	पुनर्वसु	वृष-मिथुन 05:49-09:59 सिंह-कन्या 12:54-13:49	कर्क	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
03 जून	ज्येष्ठ कृष्ण 12 सोमवार	-	अश्विनी	मिथुन 06:22-08:36 सिंह-कन्या 10:56-15:28	मेष	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चिक धनु कुम्भ मीन
13 जुलाई	आषाढ़ शुक्ल 07 शनिवार	-	हस्त	सिंह-कन्या 08:20-12:22 (अग्रे भद्रा)	कन्या	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
19 जुलाई	आषाढ़ शुक्ल 13 शुक्रवार	-	मूल	सिंह-कन्या 07:56-12:28 वृश्चिक-धनु 14:46-19:11	धनु	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चिक धनु कुम्भ मीन
22 जुलाई	श्रावण कृष्ण 1 सोमवार	-	श्रवण	सिंह-कन्या 07:44 से 12:16, वृश्चिक 14:35 से 16:54	मकर	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
15 अगस्त	श्रावण शुक्ल 10 गुरुवार	-	मूल	वृश्चिक/धनु - 13:05 से 17:24	धनु	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चिक धनु कुम्भ मीन
16 अगस्त	श्रावण शुक्ल 11 शुक्रवार	-	मूल	सिंह/कन्या - 06:06 से 10:07	धनु	मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चिक धनु कुम्भ मीन
8 नवंबर	कार्तिक शुक्ल 7 शुक्रवार	-	उ.षा./ श्रवण	वृश्चिक-धनु 07:24 से 11:49 कुम्भ-मीन 13:33 से 16:28	मकर	मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चि. धनु मकर मीन
10 फरवरी	माघ शुक्ल 13 सोमवार	-	पुनर्वसु	कुम्भ-मीन 07:22 से 10:17 वृष-मिथुन 11:53 से 16:06	कर्क	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन
24 अक्टूबर	कार्तिक कृष्ण 08 गुरुवार	-	पुनर्वसु-पुष्य	वृश्चिक-धनु 08:24-12:48 कुम्भ-मीन 14:32-17:27	कर्क	वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चि. मकर कुम्भ मीन

✻ मुण्डन मुहूर्त्त 2081 ✻

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

✻ **मुण्डन के नाम-** मुण्डन को चौल, चूड़ा या वपन कहते हैं।

✻ **मुण्डन काल-** एक वर्ष के भीतर, तीसरे वर्ष या विषम वर्ष में किया जाता है।

✻ **मुण्डन अयन-** मुण्डन उत्तरायण में किया जाता है- *चौलोपवीतं नैवयाम्यायने स्यात्। मुहूर्त्तचिन्तामणि, 5.26*

✻ **मुण्डन मास-** माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ मास में हरिशयनपूर्व

✻ **मुण्डनमें वर्जितमास-** चैत्र में मुण्डन वर्जित है- *चैत्रे चौलं न कारयेत्।*

✻ **मुण्डन पक्ष-** कृष्णपक्ष में पंचमी तिथि पर्यन्त एवं सम्पूर्ण शुक्लपक्ष में।

✻ **मुण्डन के वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र - *शेन्दुशुक्रेज्यकानाम्।*

✻ **मुण्डन नक्षत्र-** अश्विनी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, ज्येष्ठ, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (12 नक्षत्र)।

✻ **वर्जित नक्षत्र-** रोहिणी, तीनों उत्तरा एवं अनुराधा (5 नक्षत्र)। इसके अतिरिक्त भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, तीनों पूर्वा, विशाखा, मूल भी वर्जित हैं ।

✻ **मुण्डन लग्न-** 2, 3, 4, 5, 6, 7, 9, 12 ✻ **वर्जित लग्न-** 1, 8, 10, 11

✻ **मुण्डन तिथियाँ-** 2,3,5,7,10,11,13 (कुल 7)

✻ **वर्जित तिथियाँ-** 1, 4,6, 8, 9,12, 14, 15, 30

✻ **मुण्डन समय-** पूर्वाह्न व मध्याह्न

मुण्डन वाले 5 वर्ष से छोटे बालक की माता यदि पाँच माह से अधिक गर्भवती हो तो बालक का मुण्डन नहीं करना चाहिए। पहली सन्तान का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए। माता के रजस्वला या प्रसूता (पुत्र जन्म के बाद 20 दिन, कन्या जन्म के बाद 30 दिन तक) होने पर भी मुण्डन नहीं करना चाहिए। किसी धार्मिक स्थल पर, कुलदेवी के यहाँ बिना मुहूर्त्त के भी मुण्डन कराने की परम्परा लोक में है। विशेष आवश्यकता हेतु मार्गशीर्ष में मुहूर्त्त दिया जा रहा है। संवत 2081 में निम्न अबूझ मुहूर्त हैं- चैत्र नवरात्रारम्भ 9 अप्रैल, अक्षय तृतीया 10 मई जानकी नवमी 17 मई, पीपल पूर्णिमा 23 मई, गंगादशमी 16 जून, भड्डली नवमी 15 जुलाई, देवशयन 17 जुलाई, विजयदशमी 12 अक्टूबर, धन त्रयोदशी 29 अक्टूबर, देव प्रबोधिनी 12 नवम्बर, वसन्त पंचमी 3 फरवरी, फुलेरा दौज 1 मार्च

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	नक्षत्र	मुण्डन मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्र राशि
24 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 01 बुधवार	स्वाती	वृष-कन्या 13:34-18:05	तुला
18 नवंबर	मार्गशीर्ष कृष्ण 03 सोमवार	मृगशिरा	भद्रारम्भ 10:19 पूर्व। धनु 09:04-10:19	मिथुन
20 नवंबर	मार्गशीर्ष कृष्ण 05 बुधवार	पुनर्वसु	धनु 08:56-11:01, मीन 14:15-15:41	कर्क
21 नवंबर	मार्गशीर्ष कृष्ण 06 गुरुवार	पुष्य	धनु 08:52-10:57, मीन 14:11-15:37	कर्क
28 नवंबर	मार्गशीर्ष कृष्ण 13 गुरुवार	चित्रा/ स्वाती	धनु 08:24-10:29, मीन 13:43-15:09	तुला
06 दिसंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 05 शुक्रवार	श्रवण	व्याघात 10:41 पूर्व। धनु 07:52-09:58	मकर
11 दिसंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 11 बुधवार	रेवती	भद्रारम्भ 11:32 पूर्व। धनु 07:33-09:38	मीन
15 जनवरी	माघ कृष्ण 02 बुधवार	पुष्य	पुष्य अन्त 11:09 पूर्व। मीन 10:34-11:09	कर्क
03 फरवरी	माघ शुक्ल 05 सोमवार	रेवती	मीन 09:19-10:45, वृष-मिथुन 12:20-16:30	मीन
10 फरवरी	माघ शुक्ल 13 सोमवार	पुनर्वसु	मीन 08:51-10:17, वृष-मिथुन 11:53-16:03	कर्क
17 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 05 सोमवार	चित्रा	वृष-मिथुन 11:25-15:35 (गण्ड षड्घटी दोषान्त 10:20 बाद)	तुला
10 मार्च	फाल्गुन शुक्ल 11 सोमवार	पुष्य	भद्रान्त 09:55 बाद पुष्य में। वृष-मिथुन 10:02-14:12	कर्क

❊ कर्णवेध संस्कार मुहूर्त्त 2081 ❊

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

❊ **कर्णवेध नक्षत्र-** अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती। ❊ **तिथि-** 2, 3, 5, 6, 7, 10, 12, 13 ❊ **लग्न-** 2, 3, 4, 6, 7, 9, 12

❊ जन्मदिन से 12वें या 16वें दिन, जन्म से 6, 7 या 8वें माह में अथवा जन्म से तीसरे या पांचवे वर्ष में कर्णवेध संस्कार किया जाता है। ❊ **कर्णवेध वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र

❊ चैत्र, व पौष मास में, तिथिक्षय में, व हरिशयन अर्थात् आषाढ़ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशी तक कर्णवेध संस्कार नहीं किया जाता।

❊ **संवत् 2081 में निम्न अबूझ मुहूर्त हैं-** चैत्र नवरात्रारम्भ 9 अप्रैल, अक्षय तृतीया 10 मई, गंगादशमी 16 जून, भड़ली नवमी 15 जुलाई, देवशयन 17 जुलाई, विजयदशमी 12 अक्टूबर, धन त्रयोदशी 29 अक्टूबर, देव प्रबोधिनी 12 नवम्बर, वसन्त पंचमी 3 फरवरी, फुलेरा दौज 1 मार्च

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	नक्षत्र	कर्णवेध मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्र राशि
24 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 01 बुधवार	स्वाती	वृष-कन्या 13:34-18:05	तुला
26 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 2 शुक्रवार	अनुराधा	वृष-मिथुन 06:56 से 11:06, सिंह-कन्या 13:26 से 17:57	वृश्चिक
18 नवंबर	मार्गशीर्ष कृष्ण 03 सोमवार	मृगशिरा	भद्रारम्भ 10:19 पूर्व। धनु 09:04-10:19	मिथुन
20 नवंबर	मार्गशीर्ष कृष्ण 05 बुधवार	पुनर्वसु	धनु 08:56-11:01, मीन 14:15-15:41	कर्क
21 नवंबर	मार्गशीर्ष कृष्ण 06 गुरुवार	पुष्य	धनु 08:52-10:57, मीन 14:11-15:37	कर्क
27 नवंबर	मार्गशीर्ष कृष्ण 12 बुधवार	चित्रा	वृश्चिक-धनु 06:59 से 10:33 कुम्भ-मीन 12:18 से 15:13	तुला

दिनांक	मास पक्ष तिथि वार	नक्षत्र	कर्णवेध मुहूर्त्त समय (लग्नादि)	चन्द्र राशि
06 दिसंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 05 शुक्रवार	श्रवण	व्याघात 10:41 पूर्व। धनु 07:52-09:58	मकर
12 दिसंबर	मार्गशीर्ष शुक्ल 12 गुरुवार	अश्विनी 08:03 तक	धनु 07:29-08:03	मेष
15 जनवरी	माघ कृष्ण 02 बुधवार	पुष्य	पुष्य अन्त 11:09 पूर्व। मीन 10:34-11:09	कर्क
03 फरवरी	माघ शुक्ल 05 सोमवार	रेवती	मीन 09:19-10:45, वृष-मिथुन 12:20-16:30	मीन
10 फरवरी	माघ शुक्ल 13 सोमवार	पुनर्वसु	मीन 08:51-10:17, वृष-मिथुन 11:53-16:03	कर्क
17 फरवरी	फाल्गुन कृष्ण 05 सोमवार	चित्रा	वृष-मिथुन 11:25-15:35 (गण्ड षड्घटी दोषान्त 10:20 बाद)	तुला

✻ देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त 2081 ✻

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

✻ देव प्रतिष्ठा नक्षत्र- अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (कुल 16 नक्षत्र)।
जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा सौम्यायने जीवशशाङ्क शुक्रे। दृश्ये मृदुक्षिप्रचरध्रुवे स्यात् पक्षेसिते स्वर्क्षतिथिक्षणे वा।। मु.चि.,2.61

✻ देव प्रतिष्ठा मास- चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, माघ, फाल्गुन (हरिशयनपूर्व) बृहस्पति के मतानुसार पौष और माघ सभी देवों की प्रतिष्ठा हेतु ग्राह्य हैं- *सर्वेषां पौषमाघौ द्वौ विबुधस्थापने शुभौ।*
आषाढ़ यजमान विनाशक, श्रावण राज्य-राष्ट्रनाशक, भाद्रपद पृथ्वीनाशक, आश्विन राज्यनाशक, कार्तिक एवं मार्गशीर्ष शत्रुवर्धक (बृहदैवज्ञरंजन)।

✻ देव प्रतिष्ठा तिथि- 2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 12, 13, 15 *द्वितीयसादिद्वयोः पञ्चम्यादितः तिसृषु क्रमात् । दशम्यादिचतसृषु पौर्णमास्यां विशेषतः।। - नारदसंहिता*
मुहूर्त्त चिन्तामणि के अनुसार प्रतिमा प्रतिष्ठा रिक्ता तिथि (4, 9, 14) को छोड़कर सभी तिथियाँ ग्राह्य हैं- रिक्तारवर्जे अर्थात् 1, 8 तिथि भी ग्राह्य है।

✻ उग्रदेव प्रतिष्ठा- काली, नृसिंह, वराह, वामन, महिषवाहिनी, महाविद्या, श्मशानदेवता, भैरव आदि की प्रतिष्ठा दक्षिणायन में भी होती है (वैखानससंहिता)।

✻ विशेषदेवता प्रतिष्ठा- **विष्णु-** पुष्य, श्रवण, अभिजित्, कन्या। **सूर्य-** हस्त नक्षत्र, सिंह लग्न। **चन्द्रादि अष्टग्रह-** पुष्य नक्षत्र। **ब्रह्मा-** पुष्य, श्रवण, अभिजित्, कुम्भ। **शिव-पार्वती-** पुष्य, श्रवण, अभिजित्, मिथुन। **दुर्गा-** मूल नक्षत्र। **कुबेर-कार्तिकेय-** अनुराधा नक्षत्र।

✻ देव प्रतिष्ठा वार- सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, रवि। **✻ मंगलवार** को निषेध है। **✻ देव प्रतिष्ठा लग्न-** 2, 3, 5, 6, 8, 11, 12

15 अप्रैल चैत्र शुक्ल 07 सोमवार पुनर्वसु में भद्रारम्भ 15:55 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 07:39-11:49, सिंह 14:09-15:55

20 अप्रैल चैत्र शुक्ल 12 शनिवार 14:43 बाद उ.फा. में।
समय- सिंह-कन्या 14:43-18:21

21 अप्रैल चैत्र शुक्ल 13 रविवार उ.फा. में।
समय- वृष-मिथुन 07:16-11:25, सिंह-कन्या 13:46-18:17

24 अप्रैल वैशाख कृष्ण 01 बुधवार स्वाती में।
समय- वृष-मिथुन 07:04-11:14, सिंह-कन्या 13:34-18:05

26 अप्रैल वैशाख कृष्ण 02 शुक्रवार अनुराधा में।
समय- वृष-मिथुन 06:56-11:06, सिंह-कन्या 13:26-17:57

7 जुलाई आषाढ़ शुक्ल 02 रविवार पुष्य में।
समय- सिंह-कन्या 08:43-13:15, वृश्चिक-धनु 15:34-19:21

11 जुलाई आषाढ़ शुक्ल 05 गुरूवार उ.फा. आरम्भ 12:22 बाद।
समय- वृश्चिक-धनु 15:18-19:20

13 जुलाई आषाढ़ शुक्ल 07 शनिवार हस्त में भद्रारम्भ 12:22 पूर्व।
समय- सिंह-कन्या 08:20-12:22

21 जुलाई आषाढ़ शुक्ल 15 रविवार उ.षा. में।
समय- सिंह-कन्या 07:48-12:20, वृश्चिक-धनु 14:38-19:03

22 जुलाई श्रावण कृष्ण 01 सोमवार श्रवण में।
समय- सिंह-कन्या 07:44-12:16, वृश्चिक 14:35-16:54

18 अक्टूबर कार्त्तिक कृष्ण 01 शुक्रवार अश्विनी अन्त 15:36 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 08:47-13:12, कुम्भ 14:56-15:36

26 जुलाई श्रावण कृष्ण 05 शुक्रवार उभा में।
समय- सिंह-कन्या 07:29-12:00, वृश्चिक 14:19-18:43

27 जुलाई श्रावण कृष्ण 07 शनिवार रेवती में।
समय- वृश्चि-धनु-14:15-18:39, भद्रान्त 13:52 बाद

31 जुलाई श्रावण कृष्ण 11 बुधवार मृगशिरा में 12:21 बाद।
समय- वृश्चिक 13:59- 16:18

09 अगस्त श्रावण शुक्ल 05 शुक्रवार हस्त में।
समय- सिंह-कन्या 06:33-11:05, वृश्चिक 13:24-17:48

11 अगस्त श्रावण शुक्ल 07 रविवार स्वाती में।
समय- सिंह-कन्या 06:25-10:57, वृश्चिक 13:16-17:40

14 अगस्त श्रावण शुक्ल 10 बुधवार अनुराधा अन्त 08:47 तक में।
समय- सिंह-कन्या 06:14-08:47 तक

19 अगस्त श्रावण शुक्ल 15 सोमवार धनिष्ठा में भद्रान्त 13:21 बाद।
समय- वृश्चिक-धनु 13:21-17:08

21 अक्टूबर कार्त्तिक कृष्ण 04 सोमवार मृग. में रिक्तान्त 08:33 बाद परिघ 16:50 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 08:36-13:00, कुम्भ-मीन 14:44-16:50

24 अक्टूबर कार्त्तिक कृष्ण 08 गुरुवार पुनर्वसु-पुष्य में।
समय- वृश्चिक-धनु 08:24-12:48, कुम्भ-मीन 14:32-17:27

✲ देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त 2081 ✲

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

30 अक्टूबर कार्तिक कृष्ण 13 बुधवार हस्त में वैधृति 10:16 बाद भद्रारम्भ 12:30 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 10:16-12:24

03 नवंबर कार्तिक शुक्ल 02 रविवार अनुराधा में।
समय- वृश्चिक-धनु 07:44-12:08, कुम्भ-मीन 13:53-16:48

07 नवंबर कार्तिक शुक्ल 06 गुरुवार 10:19 बाद उ.षा. में
समय- वृश्चिक-धनु 10:19-11:52, कुम्भ- मीन 13:37-16:32

08 नवंबर कार्तिक शुक्ल 07 शुक्रवार उ.षा. में
समय- वृश्चिक-धनु 07:24-11:49, कुम्भ- मीन 13:33-16:28

13 नवंबर कार्तिक शुक्ल 12 बुधवार रेवती में।
समय- वृश्चिक-धनु 07:04-11:29, कुम्भ 13:13-14:03 (अग्रे वज्र त्रिघटी वर्जित), मीन 15:15-16:08

17 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 02 रविवार रोहिणी में।
समय- वृश्चिक-धनु 06:49-11:13, मीन 14:27-15:52

18 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 03 सोमवार मृगशिरा में भद्रारम्भ 10:19 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 06:52-10:19

20 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 05 बुधवार पुनर्वसु में।
समय- वृश्चिक-धनु 06:53-11:01, कुम्भ-मीन 12:46-15:41

21 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 06 गुरुवार पुष्य में।
समय- वृश्चिक-धनु 06:54-10:57, कुम्भ-मीन 12:42-15:37

25 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 10 सोमवार उ.फा. में भद्रारम्भ 12:26 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 06:57-10:41

27 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 12 बुधवार चित्रा में।
समय- वृश्चिक-धनु 06:59-10:33, कुम्भ-मीन 12:18-15:13

28 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 13 गुरुवार चित्रा/स्वाती में।
समय- वृश्चिक-धनु 07:00-10:29, कुम्भ-मीन 12:14-15:09

29 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 13 शुक्रवार स्वाती में रिक्ता भद्रा 07:46 पूर्व।
समय- वृश्चिक 07:00-07:46

05 दिसंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 04 गुरुवार उ.षा. में रिक्ता-भद्रान्त 11:35 बाद।
समय- कुम्भ-मीन 11:46-14:41

06 दिसंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 05 शुक्रवार श्रवण में व्याघात 10:41 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 07:06-09:58

07 दिसंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 06 शनिवार श्रवण में तिथ्यंत 09:04 बाद।
समय- वृश्चिक-धनु 09:04-09:54, कुम्भ-मीन 11:38-14:34

11 दिसंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 11 बुधवार रेवती में भद्रारम्भ 11:32 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 07:10-09:38

15 जनवरी माघ कृष्ण 02 बुधवार पुष्य अन्त 11:09 पूर्व।
समय- कुम्भ-मीन 09:05-11:09

18 जनवरी माघ कृष्ण 05 शनिवार उ.फा. आरम्भ 15:15 बाद।
समय- मिथुन 15:19-17:34

03 फरवरी माघ शुक्ल 05 सोमवार रेवती में।
समय- कुम्भ-मीन 07:49-10:45, वृष-मिथुन 12:20-16:30

07 फरवरी माघ शुक्ल 10 शुक्रवार वैधृति पूर्व रोहिणी में।
समय- कुम्भ-मीन 07:34-10:29, वृष-मिथुन 12:05-16:14

10 फरवरी माघ शुक्ल 13 सोमवार पुनर्वसु में।
समय- कुम्भ-मीन 07:22-10:17, वृष-मिथुन 11:53-16:03

15 फरवरी फाल्गुन कृष्ण 03 शनिवार भद्रा 09:47 पूर्व उ.फा. में ।
समय- कुम्भ-मीन 07:02-09:47 (भद्रारम्भ)

17 फरवरी फाल्गुन कृष्ण 05 सोमवार चित्रा में।
समय- वृष-मिथुन 11:25-15:35 (गण्ड षड्घटी दोषान्त 10:20 बाद)

01 मार्च फाल्गुन शुक्ल 02 शनिवार उ.भा. 13:41 बाद।
समय- मिथुन 13:41-14:47, सिंह 17:08-18:24

02 मार्च फाल्गुन शुक्ल 03 रविवार उ.भा. में।
समय- मीन 07:32-08:58, वृष-मिथुन 10:34-14:43, सिंह 17:04-18:24

06 मार्च फाल्गुन शुक्ल 07 गुरुवार भद्रारम्भ 15:30 पूर्व रोहिणी में।
समय- मीन 07:16-08:42, वृष-मिथुन 10:18-14:28, सिंह 16:48-18:27

16 मार्च चैत्र कृष्ण 02 रविवार हस्त में।
समय- वृष-मिथुन 08:59-13:09, सिंह 15:29-17:45

24 मार्च चैत्र कृष्ण 10 सोमवार उ.षा. में भद्रारम्भ 12:53 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 09:07-12:53

26 मार्च चैत्र कृष्ण 12 बुधवार धनिष्ठा में।
समय- वृष-मिथुन 08:59-13:09, सिंह 15:29-17:45

27 मार्च चैत्र कृष्ण 13 गुरुवार शतभिषा में
समय- वृष-मिथुन 08:55-13:05, सिंह-कन्या 15:25-18:38

❊ प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त 2081 ❊

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

❊ सन्तानोत्पत्ति के छठवें एवं बारहवें दिन प्रसूतिका स्नान करती है। इसे लोक में छठी एवं बरही का स्नान कहते हैं। यह संस्कार अनिवार्य कृत्य होने के कारण आवश्यक करणीय है। **प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त में लग्न शुद्धि विचार आवश्यक नहीं है।** स्नान के दिन चन्द्रमा की दिशा का विचार किया जाता है। स्नान करते समय चन्द्रमा प्रसूतिका के सम्मुख या दक्षिण होना चाहिए।

❊ **स्नान के नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, रेवती।

❊ **स्नान में त्याज्य नक्षत्र-** भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, मघा, चित्रा, विशाखा, मूल, श्रवण।

❊ **स्नान में मध्यम नक्षत्र-** आश्लेषा, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, शतभिषा।

❊ **स्नान के वार-** रवि, मंगल, बृहस्पति। रवीज्यकुजेषु शस्तम्। मुहूर्त्तचिन्तामणि, 5/12।

❊ **स्नान की तिथियाँ-**1, 2, 3, 5, 7, 10, 11, 13, 15, 30।

❊ **स्नान में त्याज्य-** रिक्तातिथि 4, 9, 14 तथा 6, 8, 12 तिथियाँ। भद्रा एवं वैधृतिदोष।

❊ प्रसूतिका स्नान का अर्थ जनन अशौच की निवृत्ति नहीं होता है, जनन अशौच की निवृत्ति दश रात्रि बीतने के पश्चात् ही होती है।

09 अप्रैल — चैत्र शुक्ल 01 मंगलवार को वैधृति बाद अश्विनी में।
समय- 15:39 से 18:45 तक

18 अप्रैल — चैत्र शुक्ल 10 गुरुवार को आश्लेषा में।
समय- 06:05 से 09:52 तक

30 अप्रैल — वैशाख कृष्ण 07 मंगलवार भद्रान्त बाद उ.षा. में।
समय- 15:36 से 18:55 तक

05 मई — वैशाख कृष्ण 12 रविवार उ.भा. में।
समय- 15:25 से 18:58 तक

07 मई — वैशाख कृष्ण 14 रविवार रिक्तान्त बाद अश्विनी में।
समय- 10:48 से 15:05 तक

14 मई — वैशाख शुक्ल 07 मंगलवार आश्लेषा में।
समय-15:14 से 19:03 तक

21 मई — वैशाख शुक्ल 13 मंगलवार व्यतीपात बाद स्वाती में रिक्तापूर्व।
समय- 12:32 से 16:49 तक

23 मई — वैशाख शुक्ल 15 गुरुवार अनुराधा में।
समय- 08:55 से 19:08 तक

28 मई — ज्येष्ठ कृष्ण 05 मंगलवार उ.षा. में।
समय- 05:36 से 09:33 तक

02 जून — ज्येष्ठ कृष्ण 11 रविवार रेवती में।
समय- 05:35 से 19:13 तक

06 जून — ज्येष्ठ कृष्ण 30 गुरुवार रोहिणी में।
समय- 05:35 से 19:15 तक

11 जून — ज्येष्ठ शुक्ल 05 मंगलवार आश्लेषा में।
समय- 05:34 से 17:50 तक

13 जून — ज्येष्ठ शुक्ल 07 गुरुवार पू.फा. में।
समय- 05:34 से 19:17 तक

16 जून — ज्येष्ठ शुक्ल 10 रविवार हस्त में।
समय- 05:35 से 10:17 तक

20 जून — ज्येष्ठ शुक्ल 13 गुरुवार रिक्तापूर्व अनुराधा में।
समय- 05:35 से 06:24 तक

23 जून — आषाढ़ कृष्ण 01 रविवार पू.षा. में।
समय- 05:36 से 19:20 तक

30 जून — आषाढ़ कृष्ण 09 रविवार रिक्ता बाद अश्विनी में।
समय- 12:58 से 19:21 तक

11 जुलाई — आषाढ़ शुक्ल 05 गुरुवार पू.फा. में।
समय- 05:42 से 08:23 तक

18 जुलाई — आषाढ़ शुक्ल 12 बाद गुरुवार ज्येष्ठा में।
समय- 18:07 से 19:21 तक

21 जुलाई — आषाढ़ शुक्ल 15 रविवार उ.षा. में।
समय- 05:47 से 19:17 तक

23 जुलाई — श्रावण कृष्ण 02 मंगलवार धनिष्ठा में।
समय- 05:48 से 19:17 तक

30 जुलाई — श्रावण कृष्ण 10 मंगलवार भद्रा बाद रोहिणी में।
समय- 18:30 से 19:13 तक

11 अगस्त — श्रावण शुक्ल 07 रविवार स्वाती में।
समय- 05:58 से 19:04 तक

20 अगस्त — भाद्रपद कृष्ण 01 मंगलवार धनिष्ठा में।
समय- 06:02 से 18:56 तक

22 अगस्त — भाद्रपद कृष्ण 03 गुरुवार भद्रापूर्व उ.भा. में।
समय- 06:03 से 6:43 तक

03 सितंबर — भाद्रपद कृष्ण 01 मंगलवार पू.फा. में।
समय- 06:09 से 18:42 तक

✻ प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त 2081 ✻

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

05 सितंबर भाद्रपद शुक्ल 02 गुरुवार हस्त में।
समय- 06:10 से 18:40 तक

08 सितंबर भाद्रपद शुक्ल 05 रविवार स्वाती में।
समय- 06:11 से 12:41 तक

10 सितंबर भाद्रपद शुक्ल 07 मंगलवार अनुराधा में।
समय- 06:12 से 17:38 तक

12 सितंबर भाद्रपद शुक्ल 09 गुरुवार रिक्ताबाद पू.षा. में।
समय- 17:51 से 18:32 तक

15 सितंबर भाद्रपद शुक्ल 12 रविवार धनिष्ठा में।
समय- 16:35 से 18:28 तक

17 सितंबर भाद्रपद शुक्ल 14 मंगलवार रिक्ताभद्रा बाद पू.भा. में।
समय- 17:13 से 18:26 तक

19 सितंबर आश्विन कृष्ण 01 गुरुवार उ.भा. में।
समय-06:16 से 18:24 तक

24 सितंबर आश्विन कृष्ण 07 मंगलवार व्यतीपात पूर्व मृगशिरा में।
समय- 06:18 से 09:36 तक

03 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 01 गुरुवार हस्त में।
समय- 06:22 से 14:52 तक

13 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 11 रविवार भद्रापूर्व धनिष्ठा में।
समय- 06:27 से 14ः58 तक

15 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 13 मंगलवार पूभा में।
समय- 06:29 से 17:54 तक

17 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 15 गुरुवार भद्राबाद रेवती में।
समय-07:04 से 17:52 तक

27 अक्टूबर कार्तिक कृष्ण 10 रविवार पू.फा. में।
समय- 14:49 से 17:43 तक

03 नवंबर कार्त्तिक शुक्ल 02 रविवार अनुराधा में।
समय- 06:40 से 17:37 तक

14 नवंबर कार्तिक शुक्ल 13 गुरुवार रिक्तापूर्व अश्विनी में।
समय- 06:49 से 07:13 तक

17 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 02 रविवार रोहिणी में।
समय- 06:51 से 17:29 तक

26 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 11 मंगलवार हस्त में।
समय- 06:58 से 17:27 तक

28 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 13 गुरुवार स्वाती में ।
समय- 07:49 से 17:27 तक

01 दिसंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 30 रविवार अनुराधा में।
समय- 07:02 से 17:26 तक

03 दिसंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 02 मंगलवार पू.षा. में।
समय- 16:39 से 17:26 तक

05 दिसंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 04 गुरुवार रिक्ता भद्रा बाद उ.षा. में।
समय- 11:35 से 16:57 तक

15 दिसंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 15 रविवार मृगशिरा में।
समय- 07:12 से 17:29 तक

22 दिसंबर पौष कृष्ण 07 रविवार उ.फा. में।
समय- 07:16 से 15:14 तक

26 दिसंबर पौष कृष्ण 11 गुरुवार स्वाती में।
समय- 07:18 से 17:34 तक

31 दिसंबर पौष शुक्ल 01 मंगलवार पू.षा. में।
समय- 07:20 से 17:37 तक

16 जनवरी माघ कृष्ण 03 गुरुवार आश्लेषा में।
समय- 07:23 से 12:02 तक

02 फरवरी माघ शुक्ल 04 रविवार रिक्ता भद्रा बाद उ.भा. में।
समय- 12:15 से 18:04 तक

23 फरवरी फाल्गुन कृष्ण 10 रविवार भद्रा बाद पू.षा. में।
समय- 15:53 से 18:20 तक

25 फरवरी फाल्गुन कृष्ण 12 मंगलवार व्यतिपात बाद उ.षा. में।
समय- 10:31 से 16:50 तक

02 मार्च फाल्गुन शुक्ल 03 रविवार उ.भा. में।
समय- 06:56 से 18:24 तक

04 मार्च फाल्गुन शुक्ल 05 मंगलवार अश्विनी में।
समय- 06:54 से 08:53 तक

06 मार्च फाल्गुन शुक्ल 07 गुरुवार भद्रा पूर्व रोहिणी में।
समय- 06:51 से 15:29 तक

11 मार्च फाल्गुन शुक्ल 12 मंगलवार आश्लेषा में।
समय- 09:34 से 18:30 तक

16 मार्च चैत्र कृष्ण 02 रविवार हस्त में।
समय- 06:41 से 10:21 तक

❊ अन्नप्राशन मुहूर्त्त 2081 ❊

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

❊ **अन्नप्राशन तिथियाँ-** 2,3,5,7,10,13,15 ❊ **अन्नप्राशन वार-** सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार ❊ **अन्नप्राशन मास-** षष्ठ मास से आरम्भ कर सम मास बालकों के लिए एवं पंचम से आरम्भ कर विषम मास कन्याओं के लिए ❊ **अन्नप्राशन नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (कुल 16)

संवत 2081 में निम्न अबूझ मुहूर्त हैं- चैत्र नवरात्रारम्भ 9 अप्रैल, **अक्षय तृतीया** 10 मई, **गंगादशमी** 16 जून, **भड्ली नवमी** 15 जुलाई, **विजयदशमी** 12 अक्टूबर, **धन त्रयोदशी** 29 अक्टूबर, **वसन्त पंचमी** 3 फरवरी, **फुलेरा दौज** 1 मार्च

12 अप्रैल चैत्र शुक्ल 04 शुक्रवार रोहिणी में भद्रान्त 17:07 बाद।
समय- कन्या 17:07-18:47

15 अप्रैल चैत्र शुक्ल 07 सोमवार पुनर्वसु में भद्रारम्भ 15:55 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 07:39-11:49, सिंह 14:09-15:55

26 अप्रैल वैशाख कृष्ण 02 शुक्रवार अनुराधा में।
समय- वृष-मिथुन 06:56-11:06, सिंह-कन्या 13:26-17:57

03 मई वैशाख कृष्ण 10 शुक्रवार शतभिषा में भद्रारम्भ 9:30 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 06:28-09:30

06 मई वैशाख कृष्ण 13 सोमवार रेवती में रिक्ता भद्रारम्भ 13:02 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 06:17-10:26, सिंह 12:46-13:02

10 मई वैशाख शुक्ल 02 शुक्रवार रोहिणी में। **अक्षय तृतीया**
समय- वृष-मिथुन 06:01-10:11, सिंह-कन्या 12:31-17:02

20 मई वैशाख शुक्ल 12 सोमवार चित्रा में व्यतिपात आरम्भ 12:11 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 05:40-09:31, सिंह 11:51-12:11

23 मई वैशाख शुक्ल 15 गुरुवार अनुराधा में 08:55 बाद।
समय- मिथुन 08:55-09:19, सिंह-कन्या 11:39-16:11

03 जून ज्येष्ठ कृष्ण 12 सोमवार अश्विनी में।
समय- मिथुन 06:22-08:36, सिंह-कन्या 10:56-15:28

10 जून ज्येष्ठ शुक्ल 04 सोमवार पुष्य में रिक्ता भद्रान्त 16:50 बाद।
समय- वृश्चिक 17:19-19:16

24 जून आषाढ़ कृष्ण 03 सोमवार उ.षा. में वैधृति 13:57 पूर्व ।
समय- मिथुन 05:36-07:14, सिंह-कन्या 09:34-13:57

26 जून आषाढ़ कृष्ण 05 बुधवार धनिष्ठा में।
समय- मिथुन 05:36-07:06, सिंह-कन्या 09:26-13:58, वृश्चिक 16:17-18:35

28 जून आषाढ़ कृष्ण 07 शुक्रवार उ.भा. आरम्भ 12:11 से।
समय- कन्या 12:11-13:50, वृश्चिक 16:09-17:52(तिथ्यन्त)

11 जुलाई आषाढ़ शुक्ल 05 गुरुवार उ.फा. आरम्भ 12:22 बाद।
समय- वृश्चिक-धनु 15:18-19:20

22 जुलाई श्रावण कृष्ण 02 सोमवार श्रवण में।
समय- वृश्चिक 14:35-16:54

26 जुलाई श्रावण कृष्ण 05 शुक्रवार उभा में।
समय- सिंह-कन्या 07:29-12:00, वृश्चिक 14:19-18:43

01 अगस्त श्रावण कृष्ण 12 गुरुवार मृगशिरा में।
समय- सिंह-कन्या 7:05-11:36

02 अगस्त श्रावण कृष्ण 13 शुक्रवार पुनर्वसु में 12:04 बाद रिक्तारम्भ 15:27 पूर्व
समय - वृश्चिक 13:51-15:27

09 अगस्त श्रावण शुक्ल 05 शुक्रवार हस्त में।
समय- सिंह-कन्या 06:33-11:05, वृश्चिक 13:24-17:48

14 अगस्त श्रावण शुक्ल 10 बुधवार अनुराधा अन्त 08:47 तक में।
समय- सिंह-कन्या 06:14-08:47 तक

19 अगस्त श्रावण शुक्ल 15 सोमवार धनिष्ठा में भद्रान्त 13:21 बाद।
समय- वृश्चिक-धनु 13:21-17:08

22 अगस्त भाद्रपद कृष्ण 03 गुरुवार उ.भा. में।
समय- सिंह 06:03-06:43(भद्रा पूर्व)

23 अगस्त भाद्रपद कृष्ण 05 तिथि अंत 15:01 तक शुक्रवार रेवती में।
समय- धनु 15:01-16:53

28 अगस्त भाद्रपद कृष्ण 10 बुधवार मृगशिरा में भद्रारम्भ 16:26 पूर्व।
समय- सिंह-कन्या 06:06-09:50, वृश्चिक-धनु 12:09-16:26

04 सितंबर भाद्रपद शुक्ल 02 बुधवार उ.फा. में।
समय- कन्या 07:47-09:22, वृश्चिक-धनु 11:41-16:05

05 सितंबर भाद्रपद शुक्ल 02 गुरुवार हस्त में।
समय- कन्या 07:03-09:18, वृश्चिक-धनु 11:33-15:57

16 सितंबर भाद्रपद शुक्ल 13 सोमवार रिक्ता 12:47 पूर्व धनिष्ठा में।
समय- वृश्चिक 10:54-12:47

05 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 03 शनिवार स्वाती में।
समय- कन्या 06:23-07:20, वृश्चिक-धनु 09:39-14:03, कुम्भ-मीन 15:47-18:05

❊ अन्नप्राशन मुहूर्त्त 2081 ❊

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

07 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 05 सोमवार अनुराधा में।
समय- कन्या 06:24-07:12, वृश्चिक-धनु 09:31-13:55, कुम्भ-मीन 15:40-18:03

14 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 12 सोमवार शतभिषा में।
समय- वृश्चिक-धनु 09:03-13:27, कुम्भ-मीन 15:12-18:07

17 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 15 गुरुवार अश्विनी में।
समय- वृश्चिक-धनु-08:51-13:16, कुम्भ-मीन 15:00-17:55

21 अक्टूबर कार्तिक कृष्ण 04 सोमवार मृगशिरा में रिक्तान्त 08:33 बाद परिघ 16:50 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 08:36-13:00, कुम्भ-मीन 14:44-16:50

30 अक्टूबर कार्तिक कृष्ण 13 बुधवार हस्त में वैधृति 10:16 बाद भद्रारम्भ 12:30 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 10:16-12:24

08 नवंबर कार्तिक शुक्ल 07 शुक्रवार उ.षा. में
समय- वृश्चिक-धनु 07:24-11:49, कुम्भ- मीन 13:33-16:28

13 नवंबर कार्तिक शुक्ल 12 बुधवार रेवती में।
समय- वृश्चिक-धनु 07:04-11:29, कुम्भ 13:13-14:03(अग्रे वज्र त्रिघटी वर्जित), मीन 15:15-16:08

18 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 03 सोमवार मृगशिरा में भद्रारम्भ 10:19 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 06:52-10:19

20 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 05 बुधवार पुनर्वसु में।
समय- वृश्चिक-धनु 06:53-11:01, कुम्भ-मीन 12:46-15:41

25 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 10 सोमवार उ.फा. में भद्रारम्भ 12:26 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 06:57-10:41

27 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 12 बुधवार चित्रा में।
समय- वृश्चिक-धनु 06:59-10:33, कुम्भ-मीन 12:18-15:13

28 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 13 गुरुवार चित्रा/स्वाती में।
समय- वृश्चिक-धनु 07:00-10:29, कुम्भ-मीन 12:14-15:09

29 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 13 शुक्रवार स्वाती में रिक्ता भद्रा 07:46 पूर्व।
समय- वृश्चिक 07:00-07:46

05 दिसंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 04 गुरुवार उ.षा. में रिक्ता-भद्रान्त 11:35 बाद।
समय- कुम्भ-मीन 11:46-14:41

06 दिसंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 05 शुक्रवार श्रवण में व्याघात 10:41 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 07:06-09:58

07 दिसंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 06 शनिवार श्रवण में तिथ्यंत 09:04 बाद।
समय- वृश्चिक-धनु 09:04-09:54, कुम्भ-मीन 11:38-14:34

15 जनवरी माघ कृष्ण 02 बुधवार पुष्य अन्त 11:09 पूर्व।
समय- कुम्भ-मीन 09:05-11:09

03 फरवरी माघ शुक्ल 05 सोमवार रेवती में।
समय- कुम्भ-मीन 07:49-10:45, वृष-मिथुन 12:20-16:30

07 फरवरी माघ शुक्ल 10 शुक्रवार वैधृति पूर्व रोहिणी में।
समय- कुम्भ-मीन 07:34-10:29, वृष-मिथुन 12:05-16:14

10 फरवरी माघ शुक्ल 13 सोमवार पुनर्वसु में।
समय- कुम्भ-मीन 07:22-10:17, वृष-मिथुन 11:53-16:03

17 फरवरी फाल्गुन कृष्ण 05 सोमवार चित्रा में।
समय- वृष-मिथुन 11:25-15:35 (गण्ड षड्घटी दोषान्त 10:20 बाद)

06 मार्च फाल्गुन शुक्ल 07 गुरुवार भद्रारम्भ 15:30 पूर्व रोहिणी में।
समय- मीन 07:16-08:42, वृष-मिथु 10:18-14:28, सिंह 16:48-18:27

10 मार्च फाल्गुन शुक्ल 11 सोमवार भद्रान्त 09:55 बाद पुष्य में।
समय- वृष-मिथुन 10:02-14:12

14 मार्च फाल्गुन शुक्ल 15 शुक्रवार उ.फा. में तिथि अन्त 11:37 पूर्व
समय- वृष-मिथुन 09:46-13:56

24 मार्च चैत्र कृष्ण 10 सोमवार उ.षा. में भद्रारम्भ 12:53 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 09:07-12:53

26 मार्च चैत्र कृष्ण 12 बुधवार धनिष्ठा में।
समय- वृष-मिथुन 08:59-13:09, सिंह 15:29-17:45

27 मार्च चैत्र कृष्ण 13 गुरुवार शतभिषा में
समय- वृष-मिथुन 08:55-13:05, सिंह-कन्या 15:25-18:38

❊ गर्गाचार्य और ज्योतिषशास्त्र की महानता ❊

ज्योतिषामयनं साक्षाद् यत्तज्ज्ञानमतीन्द्रियम् । प्रणीतं भवता येन पुमान्वेद परावरम् ।।

- श्रीमद्भागवत महापुराण, दशम स्कन्ध, अष्टम अध्याय, श्लोक 5

श्रीनन्दबाबा महर्षि गर्ग से बोले, ग्रहादि से सम्बन्धित ज्ञान इन्द्रियातीत है। आपने इस ज्ञान को प्रतिपादित करने वाले शास्त्र की रचना की है। इसके द्वारा कोई व्यक्ति भूत और भविष्य से सम्बन्धित ज्ञान प्राप्त कर सकता है। महर्षि गर्ग ने अन्यत्र कहा कि यह शास्त्र परमगति प्रदान करता है -

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्। ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद स याति परमां गतिम् ।।

ज्योतिष् चक्र समस्त लोगों के शुभ और अशुभ का ज्ञान कराता है। जिसे ज्योतिष् विद्या का ज्ञान है, वह परमगति को प्राप्त करता है।

✻ नामकरण एवं जातकर्म संस्कार मुहूर्त्त 2081 ✻

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

✻ **तिथियाँ-** 1,2,3,5,6,7,10,11,12,13 ✻ **वार-** सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार ✻ **समय-** कुलपरम्परा अनुसार

✻ **नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (कुल 16)

संवत 2081 में निम्न अबूझ मुहूर्त हैं- चैत्र नवरात्रारम्भ 9 अप्रैल, **अक्षय तृतीया** 10 मई, **जानकी नवमी** 17 मई, **पीपल पूर्णिमा** 23 मई, **गंगादशमी** 16 जून, **भड़ली नवमी** 15 जुलाई, **देवशयन** 17 जुलाई, **विजयदशमी** 12 अक्टूबर, **धन त्रयोदशी** 29 अक्टूबर, **देव प्रबोधिनी** 12 नवम्बर, **वसन्त पंचमी** 3 फरवरी, **फुलेरा दौज** 1 मार्च

12 अप्रैल चैत्र शुक्ल 04 शुक्रवार रोहिणी में भद्रान्त 17:07 बाद।
समय- कन्या 17:07-18:47

15 अप्रैल चैत्र शुक्ल 07 सोमवार पुनर्वसु में भद्रारम्भ 15:55 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 07:39-11:49, सिंह 14:09-15:55

24 अप्रैल वैशाख कृष्ण 01 बुधवार स्वाती में।
समय- वृष-मिथुन 07:04-11:14, सिंह-कन्या 13:34-18:05

26 अप्रैल वैशाख कृष्ण 02 शुक्रवार अनुराधा में।
समय- वृष-मिथुन 06:56-11:06, सिंह-कन्या 13:26-17:57

03 मई वैशाख कृष्ण 10 शुक्रवार शतभिषा में भद्रारम्भ 9:30 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 06:28-09:30

06 मई वैशाख कृष्ण 13 सोमवार रेवती में रिक्ता भद्रारम्भ 13:02 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 06:17-10:26, सिंह 12:46-13:02

10 मई वैशाख शुक्ल 02 शुक्रवार रोहिणी में। **अक्षय तृतीया**
समय- वृष-मिथुन 06:01-10:11, सिंह-कन्या 12:31-17:02

20 मई वैशाख शुक्ल 12 सोमवार चित्रा में व्यतिपात आरम्भ 12:11 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 05:40-09:31, सिंह 11:51-12:11

24 मई ज्येष्ठ कृष्ण 01 शुक्रवार अनुराधा अन्त 10:00 पूर्व में।
समय- वृष-मिथुन 05:38-09:15

03 जून ज्येष्ठ कृष्ण 12 सोमवार अश्विनी में।
समय- मिथुन 06:22-08:36, सिंह-कन्या 10:56-15:28

07 जून ज्येष्ठ शुक्ल 01 शुक्रवार मृगशिरा में।
समय- मिथुन 06:06-08:20, सिंह-कन्या 10:41-15:12

10 जून ज्येष्ठ शुक्ल 04 सोमवार पुष्य में रिक्ता भद्रान्त 16:50 बाद।
समय- वृश्चिक 17:19-19:16

17 जून ज्येष्ठ शुक्ल 11 सोमवार चित्रा में भद्रा 15:44 पूर्व।
समय- मिथुन 05:35-07:41, सिंह-कन्या 10:01-14:33

19 जून ज्येष्ठ शुक्ल 12-13 बुधवार अनुराधा में 16:27 बाद।
समय- वृश्चिक 16:44-19:03

24 जून आषाढ़ कृष्ण 03 सोमवार उ.षा. में वैधृति 13:57 पूर्व ।
समय- मिथुन 05:36-07:14, सिंह-कन्या 09:34-13:57

26 जून आषाढ़ कृष्ण 05 बुधवार धनिष्ठा में।
समय- मिथुन 05:36-07:06, सिंह-कन्या 09:26-13:58, वृश्चिक 16:17-18:35

28 जून आषाढ़ कृष्ण 07 शुक्रवार उ.भा. आरम्भ 12:11 से।
समय- कन्या 12:11-13:50, वृश्चिक 16:09-17:52(तिथ्यन्त)

11 जुलाई आषाढ़ शुक्ल 05 गुरूवार उ.फा. आरम्भ 12:22 बाद।
समय- वृश्चिक-धनु 15:18-19:20

22 जुलाई श्रावण कृष्ण 01 सोमवार श्रवण में।
समय- सिंह-कन्या 07:44-12:16, वृश्चिक 14:35-16:54

26 जुलाई श्रावण कृष्ण 05 शुक्रवार उभा में।
समय- सिंह-कन्या 07:29-12:00, वृश्चिक 14:19-18:43

31 जुलाई श्रावण कृष्ण 11 बुधवार मृगशिरा में 12:21 बाद।
समय- वृश्चिक 13:59- 16:18

01 अगस्त श्रावण कृष्ण 12 गुरुवार मृगशिरा में।
समय- सिंह-कन्या 7:05-11:36

02 अगस्त श्रावण कृष्ण 13 शुक्रवार पुनर्वसु में 12:04 बाद रिक्तारम्भ 15:27 पूर्व
समय - वृश्चिक 13:51-15:27

09 अगस्त श्रावण शुक्ल 05 शुक्रवार हस्त में।
समय- सिंह-कन्या 06:33-11:05, वृश्चिक 13:24-17:48

14 अगस्त श्रावण शुक्ल 10 बुधवार अनुराधा अन्त 08:47 तक में।
समय- सिंह-कन्या 06:14-08:47 तक

22 अगस्त भाद्रपद कृष्ण 03 गुरुवार उ.भा. में।
समय- सिंह 06:03-06:43(भद्रा पूर्व)

23 अगस्त भाद्रपद कृष्ण 05 तिथि अंत 15:01 तक शुक्रवार रेवती में।
समय- धनु 15:01-16:53

28 अगस्त भाद्रपद कृष्ण 10 बुधवार मृगशिरा में भद्रारम्भ 16:26 पूर्व।
समय- सिंह-कन्या 06:06-09:50, वृश्चिक-धनु 12:09-16:26

04 सितंबर भाद्रपद शुक्ल 02 बुधवार उ.फा. में।
समय- कन्या 07:47-09:22, वृश्चिक-धनु 11:41-16:05

05 सितंबर भाद्रपद शुक्ल 02 गुरुवार हस्त में।
समय- कन्या 07:03-09:18, वृश्चिक-धनु 11:33-15:57

✻ नामकरण एवं जातकर्म संस्कार मुहूर्त्त 2081 ✻

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

16 सितंबर भाद्रपद शुक्ल 13 सोमवार रिक्ता 12:47 पूर्व धनिष्ठा में।
समय- वृश्चिक 10:54-12:47

03 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 01 गुरुवार हस्त-चित्रा में।
समय- कन्या 06:22-07:28, वृश्चिक-धनु 09:47-14:11, कुम्भ-मीन 15:55-18:07

05 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 03 शनिवार स्वाती में।
समय- कन्या 06:23-07:20, वृश्चिक-धनु 09:39-14:03, कुम्भ-मीन 15:47-18:05

07 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 05 सोमवार अनुराधा में।
समय- कन्या 06:24-07:12, वृश्चिक-धनु 09:31-13:55, कुम्भ-मीन 15:40-18:03

14 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 12 सोमवार शतभिषा में।
समय- वृश्चिक-धनु 09:03-13:27, कुम्भ-मीन 15:12-18:07

18 अक्टूबर कार्तिक कृष्ण 01 शुक्रवार अश्विनी अन्त 15:36 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 08:47-13:12, कुम्भ 14:56-15:36

21 अक्टूबर कार्त्तिक कृष्ण 04 सोमवार मृगशिरा में रिक्तान्त 08:33 बाद परिघ 16:50 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 08:36-13:00, कुम्भ-मीन 14:44-16:50

30 अक्टूबर कार्त्तिक कृष्ण 13 बुधवार हस्त में वैधृति 10:16 बाद भद्रारम्भ 12:30 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 10:16-12:24

08 नवंबर कार्त्तिक शुक्ल 07 शुक्रवार उ.षा. में
समय- वृश्चिक-धनु 07:24-11:49, कुम्भ- मीन 13:33-16:28

13 नवंबर कार्त्तिक शुक्ल 12 बुधवार रेवती में।
समय- वृश्चिक-धनु 07:04-11:29, कुम्भ 13:13-14:03(अग्रे वज्र त्रिघटी वर्जित), मीन 15:15-16:08

18 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 03 सोमवार मृगशिरा में भद्रारम्भ 10:19 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 06:52-10:19

20 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 05 बुधवार पुनर्वसु में।
समय- वृश्चिक-धनु 06:53-11:01, कुम्भ-मीन 12:46-15:41

21 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 06 गुरुवार पुष्य में।
समय- वृश्चिक-धनु 06:54-10:57, कुम्भ-मीन 12:42-15:37

25 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 10 सोमवार उ.फा. में भद्रारम्भ 12:26 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 06:57-10:41

27 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 12 बुधवार चित्रा में।
समय- वृश्चिक-धनु 06:59-10:33, कुम्भ-मीन 12:18-15:13

28 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 13 गुरुवार चित्रा/स्वाती में।
समय- वृश्चिक-धनु 07:00-10:29, कुम्भ-मीन 12:14-15:09

29 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 13 शुक्रवार स्वाती में रिक्ता भद्रा 07:46 पूर्व।
समय- वृश्चिक 07:00-07:46

05 दिसंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 04 गुरुवार उ.षा. में रिक्ता-भद्रान्त 11:35 बाद।
समय- कुम्भ-मीन 11:46-14:41

06 दिसंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 05 शुक्रवार श्रवण में व्याघात 10:41 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 07:06-09:58

11 दिसंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 11 बुधवार रेवती में भद्रारम्भ 11:32 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 07:10-09:38

15 जनवरी माघ कृष्ण 02 बुधवार पुष्य अन्त 11:09 पूर्व।
समय- कुम्भ-मीन 09:05-11:09

03 फरवरी माघ शुक्ल 05 सोमवार रेवती में।
समय- कुम्भ-मीन 07:49-10:45, वृष-मिथुन 12:20-16:30

07 फरवरी माघ शुक्ल 10 शुक्रवार वैधृति पूर्व रोहिणी में।
समय- कुम्भ-मीन 07:34-10:29, वृष-मिथुन 12:05-16:14

10 फरवरी माघ शुक्ल 13 सोमवार पुनर्वसु में।
समय- कुम्भ-मीन 07:22-10:17, वृष-मिथुन 11:53-16:03

17 फरवरी फाल्गुन कृष्ण 05 सोमवार चित्रा में।
समय- वृष-मिथुन 11:25-15:35 (गण्ड षड्घटी दोषान्त 10:20 बाद)

06 मार्च फाल्गुन शुक्ल 07 गुरुवार भद्रारम्भ 15:30 पूर्व रोहिणी में।
समय- मीन 07:16-08:42, वृष-मिथु 10:18-14:28, सिंह 16:48-18:27

10 मार्च फाल्गुन शुक्ल 11 सोमवार भद्रान्त 09:55 बाद पुष्य में।
समय- वृष-मिथुन 10:02-14:12

14 मार्च फाल्गुन शुक्ल 15 शुक्रवार उ.फा. में तिथि अन्त 11:37 पूर्व
समय- वृष-मिथुन 09:46-13:56

24 मार्च चैत्र कृष्ण 10 सोमवार उ.षा. में भद्रारम्भ 12:53 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 09:07-12:53

26 मार्च चैत्र कृष्ण 12 बुधवार धनिष्ठा में।
समय- वृष-मिथुन 08:59-13:09, सिंह 15:29-17:45

27 मार्च चैत्र कृष्ण 13 गुरुवार शतभिषा में
समय- वृष-मिथुन 08:55-13:05, सिंह-कन्या 15:25-18:38

✲ वाहन खरीदने का मुहूर्त्त 2081 ✲

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

✲ **तिथि:** 2,3,5,7,10,11,12,13,15 ✲ **पक्ष:** शुक्ल व कृष्ण ✲ **वार:** सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, रवि ✲ **नक्षत्र:** अश्विनी, स्वाति, चित्रा, रेवती, शतभिषा, श्रवण, मृगशिरा, मूल, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, धनिष्ठा, अनुराधा *(मुहूर्त्त चिन्तामणि)* ✲ **संवत 2081 में निम्न अबूझ मुहूर्त हैं- चैत्र नवरात्रारम्भ** 9 अप्रैल, **अक्षय तृतीया** 10 मई, **जानकी नवमी** 17 मई, **पीपल पूर्णिमा** 23 मई, **गंगादशमी** 16 जून, **भड्ली नवमी** 15 जुलाई, **देवशयन** 17 जुलाई, **विजयदशमी** 12 अक्टूबर, **धन त्रयोदशी** 29 अक्टूबर, **देव प्रबोधिनी** 12 नवम्बर, **वसन्त पंचमी** 3 फरवरी, **फुलेरा दौज** 1 मार्च

तिथि	विवरण
15 अप्रैल	चैत्र शुक्ल 07 सोमवार पुनर्वसु में भद्रारम्भ 15:55 पूर्व। **समय**- वृष-मिथुन 07:39-11:49, सिंह 14:09-15:55
24 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 01 बुधवार स्वाती में। **समय**- वृष-मिथुन 07:04-11:14, सिंह-कन्या 13:34-18:05
26 अप्रैल	वैशाख कृष्ण 02 शुक्रवार अनुराधा में। **समय**- वृष-मिथुन 06:56-11:06, सिंह-कन्या 13:26-17:57
03 मई	वैशाख कृष्ण 10 शुक्रवार शतभिषा में भद्रारम्भ 9:30 पूर्व। **समय**- वृष-मिथुन 06:28-09:30
06 मई	वैशाख कृष्ण 13 सोमवार रेवती में रिक्ता भद्रारम्भ 13:02 पूर्व। **समय**- वृष-मिथुन 06:17-10:26, सिंह 12:46-13:02
10 मई	वैशाख शुक्ल 02 शुक्रवार रोहिणी में। **अक्षय तृतीया** **समय**- वृष-मिथुन 06:01-10:11, सिंह-कन्या 12:31-17:02
12 मई	वैशाख शुक्ल 5 रविवार पुनर्वसु में 12:54 बाद। **समय**- वृष-मिथुन 05:53-10:03, सिंह 12:23-12:54
13 मई	वैशाख शुक्ल 6 सोमवार पुनर्वसु-पुष्य में गण्ड 6 घटी 10:14-12:38 छोड़कर। **समय**- वृष-मिथुन 05:49-09:59, सिंह-कन्या 12:54-16:50
19 मई	वैशाख शुक्ल 11-12 रविवार हस्त में भद्रान्त 13:21 बाद। **समय**- सिंह-कन्या 13:21-16:27
20 मई	वैशाख शुक्ल 12 सोमवार चित्रा में व्यतिपात आरम्भ 12:11 पूर्व। **समय**- वृष-मिथुन 05:40-09:31, सिंह 11:51-12:11
23 मई	वैशाख शुक्ल 15 गुरुवार अनुराधा में 08:55 बाद। **समय**- मिथुन 08:55-09:19, सिंह-कन्या 11:39-16:11
24 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 01 शुक्रवार अनुराधा अन्त 10:00 पूर्व में। **समय**- वृष-मिथुन 05:38-09:15
29 मई	ज्येष्ठ कृष्ण 06 बुधवार धनिष्ठा में भद्रारम्भ 13:03 पूर्व। **समय**- वृष-मिथुन 05:36-08:56, सिंह 11:16-13:03
03 जून	ज्येष्ठ कृष्ण 12 सोमवार अश्विनी में। **समय**- मिथुन 06:22-08:36, सिंह-कन्या 10:56-15:28
07 जून	ज्येष्ठ शुक्ल 01 शुक्रवार मृगशिरा में। **समय**- मिथुन 06:06-08:20, सिंह-कन्या 10:41-15:12
9 जून	ज्येष्ठ शुक्ल 03 रविवार पुनर्वसु में **समय**- मिथुन 05:58-08:13, सिंह-कन्या 10:33-15:04
10 जून	ज्येष्ठ शुक्ल 04 सोमवार पुष्य में रिक्ता भद्रान्त 16:50 बाद। **समय**- वृश्चिक 17:19-19:16
16 जून	ज्येष्ठ शुक्ल 10 रविवार हस्त में। **समय**- मिथुन 05:35-07:45, सिंह-कन्या 10:05-14:37, वृश्चिक 16:56-19:15
17 जून	ज्येष्ठ शुक्ल 11 सोमवार चित्रा में भद्रा 15:44 पूर्व। **समय**- मिथुन 05:35-07:41, सिंह-कन्या 10:01-14:33
19 जून	ज्येष्ठ शुक्ल 12-13 बुधवार अनुराधा में 16:27 बाद। **समय**- वृश्चिक 16:44-19:03
26 जून	आषाढ़ कृष्ण 05 बुधवार धनिष्ठा में। **समय**- मिथुन 05:36-07:06, सिंह-कन्या 09:26-13:58, वृश्चिक 16:17-18:35
27 जून	आषाढ़ कृष्ण 06 गुरुवार शतभिषा में 13:31 पूर्व। **समय**- सिंह-कन्या 09:22-13:31
30 जून	आषाढ़ कृष्ण 09 रविवार अश्विनी में रिक्तान्त 12:58 बाद। **समय**- कन्या 12:58-13:42, वृश्चिक 16:01-18:20
7 जुलाई	आषाढ़ शुक्ल 02 रविवार पुष्य में। **समय**- सिंह-कन्या 08:43-13:15, वृश्चिक-धनु 15:34-19:21
13 जुलाई	आषाढ़ शुक्ल 07 शनिवार हस्त में भद्रारम्भ 12:22 पूर्व। **समय**- सिंह-कन्या 08:20-12:22

✻ वाहन खरीदने का मुहूर्त्त 2081 ✻

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

19 जुलाई आषाढ़ शुक्ल 13 शुक्रवार मूल में।
समय- सिंह-कन्या 07:56-12:28, वृश्चिक-धनु 14:46-19:11

22 जुलाई श्रावण कृष्ण 01 सोमवार श्रवण में।
समय- सिंह-कन्या 07:44-12:16, वृश्चिक 14:35-16:54

26 जुलाई श्रावण कृष्ण 05 शुक्रवार उभा में।
समय- सिंह-कन्या 07:29-12:00, वृश्चिक 14:19-18:43

27 जुलाई श्रावण कृष्ण 07 शनिवार रेवती में।
समय- वृश्चि-धनु-14:15-18:39, भद्रान्त 13:52 बाद

28 जुलाई श्रावण कृष्ण 08 रविवार अश्विनी अन्त 15:33 पूर्व में।
समय- सिंह-कन्या 07:21-11:52, वृश्चिक 14:11-15:33

31 जुलाई श्रावण कृष्ण 11 बुधवार मृगशिरा में 12:21 बाद।
समय- वृश्चिक 13:59- 16:18

01 अगस्त श्रावण कृष्ण 12 गुरुवार मृगशिरा में।
समय- सिंह-कन्या 7:05-11:36

02 अगस्त श्रावण कृष्ण 13 शुक्रवार पुनर्वसु में 12:04 बाद रिक्तारम्भ 15:27 पूर्व
समय - वृश्चिक 13:51-15:27

09 अगस्त श्रावण शुक्ल 05 शुक्रवार हस्त में।
समय- सिंह-कन्या 06:33-11:05, वृश्चिक 13:24-17:48

11 अगस्त श्रावण शुक्ल 07 रविवार स्वाती में।
समय- सिंह-कन्या 06:25-10:57, वृश्चिक 13:16-17:40

14 अगस्त श्रावण शुक्ल 10 बुधवार अनुराधा अन्त 08:47 तक में।
समय- सिंह-कन्या 06:14-08:47 तक

15 अगस्त श्रावण शुक्ल 10 गुरुवार मूल में वैधृति 13:05 बाद भद्रा 17:46 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 13:05-17:24

16 अगस्त श्रावण शुक्ल 11 शुक्रवार मूल अंत 10:07 पूर्व में।
समय- सिंह-कन्या 06:06-10:07

19 अगस्त श्रावण शुक्ल 15 सोमवार धनिष्ठा में भद्रान्त 13:21 बाद।
समय- वृश्चिक-धनु 13:21-17:08

23 अगस्त भाद्रपद कृष्ण 05 तिथि अंत 15:01 तक शुक्रवार रेवती में।
समय- धनु 15:01-16:53

24 अगस्त भाद्रपद कृष्ण 05 शनिवार अश्विनी में।
समय- सिंह-कन्या 06:04-10:06, वृश्चिक 12:24-16:49

28 अगस्त भाद्रपद कृष्ण 10 बुधवार मृगशिरा में भद्रारम्भ 16:26 पूर्व।
समय- सिंह-कन्या 06:06-09:50, वृश्चिक-धनु 12:09-16:26

31 अगस्त भाद्रपद कृष्ण 13 शनिवार पुष्य में।
समय- सिंह-कन्या 06:08-09:38, वृश्चिक-धनु 11:57-16:21

05 सितंबर भाद्रपद शुक्ल 02 गुरुवार हस्त में।
समय- कन्या 07:03-09:18, वृश्चिक-धनु 11:33-15:57

08 सितंबर भाद्रपद शुक्ल 05 रविवार स्वाती अन्त 12:41 पूर्व।
समय- कन्या 06:51-09:06, वृश्चिक 11:25-12:41

15 सितंबर भाद्रपद शुक्ल 12 रविवार श्रवण में।
समय- कन्या 06:34-08:39, वृश्चिक-धनु 10:58-15:22

16 सितंबर भाद्रपद शुक्ल 13 सोमवार रिक्ता 12:47 पूर्व धनिष्ठा में।
समय- वृश्चिक 10:54-12:47

03 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 01 गुरुवार हस्त-चित्रा में।
समय- कन्या 06:22-07:28, वृश्चिक-धनु 09:47-14:11, कुम्भ-मीन 15:55-18:07

05 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 03 शनिवार स्वाती में।
समय- कन्या 06:23-07:20, वृश्चिक-धनु 09:39-14:03, कुम्भ-मीन 15:47-18:05

07 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 05 सोमवार अनुराधा में।
समय- कन्या 06:24-07:12, वृश्चिक-धनु 09:31-13:55, कुम्भ-मीन 15:40-18:03

09 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 06 बुधवार मूल में।
समय- कन्या 06:25-07:04, वृश्चिक-धनु 09:23-13:47, कुम्भ-मीन 15:32-18:01

12 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 10 शनिवार श्रवण में।**विजयादशमी**
समय- कन्या 06:27-06:52, वृश्चिक-धनु 09:11-13:35, कुम्भ-मीन 15:20-17:57

✲ वाहन खरीदने का मुहूर्त्त 2081 ✲

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

13 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 11 रविवार धनिष्ठा में भद्रारम्भ 14:58 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 09:07-13:31

14 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 12 सोमवार शतभिषा में।
समय- वृश्चिक-धनु 09:03-13:27, कुम्भ-मीन 15:12-18:07

17 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 15 गुरूवार अश्विनी में।
समय- वृश्चिक-धनु-08:51-13:16, कुम्भ-मीन 15:00-17:55

18 अक्टूबर कार्तिक कृष्ण 01 शुक्रवार अश्विनी अन्त 15:36 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 08:47-13:12, कुम्भ 14:56-15:36

21 अक्टूबर कार्तिक कृष्ण 04 सोमवार मृगशिरा में रिक्तान्त 08:33 बाद परिघ 16:50 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 08:36-13:00, कुम्भ-मीन 14:44-16:50

24 अक्टूबर कार्तिक कृष्ण 08 गुरुवार पुनर्वसु-पुष्य में।
समय- वृश्चिक-धनु 08:24-12:48, कुम्भ-मीन 14:32-17:27

30 अक्टूबर कार्तिक कृष्ण 13 बुधवार हस्त में वैधृति 10:16 बाद भद्रारम्भ 12:30 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 10:16-12:24

03 नवंबर कार्तिक शुक्ल 02 रविवार अनुराधा में।
समय- वृश्चिक-धनु 07:44-12:08, कुम्भ-मीन 13:53-16:48

06 नवंबर कार्तिक शुक्ल 05 बुधवार मूल अन्त 08:53 पूर्व। **लाभ पंचमी**
समय- वृश्चिक 07:32-8:53

13 नवंबर कार्तिक शुक्ल 12 बुधवार रेवती में।
समय- वृश्चिक-धनु 07:04-11:29, कुम्भ 13:13-14:03(अग्रे वज्र त्रिघटी वर्जित) मीन 15:15-16:08

18 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 03 सोमवार मृगशिरा में भद्रारम्भ 10:19 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 06:52-10:19

20 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 05 बुधवार पुनर्वसु में।
समय- वृश्चिक-धनु 06:53-11:01, कुम्भ-मीन 12:46-15:41

21 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 06 गुरुवार पुष्य में।
समय- वृश्चिक-धनु 06:54-10:57, कुम्भ-मीन 12:42-15:37

27 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 12 बुधवार चित्रा में।
समय- वृश्चिक-धनु 06:59-10:33, कुम्भ-मीन 12:18-15:13

28 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 13 गुरुवार चित्रा/स्वाती में।
समय- वृश्चिक-धनु 07:00-10:29, कुम्भ-मीन 12:14-15:09

29 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 13 शुक्रवार स्वाती में रिक्ता भद्रा 07:46 पूर्व।
समय- वृश्चिक 07:00-07:46

06 दिसंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 05 शुक्रवार श्रवण में व्याघात 10:41 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 07:06-09:58

07 दिसंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 06 शनिवार श्रवण में तिथ्यंत 09:04 बाद।
समय- वृश्चिक-धनु 09:04-09:54, कुम्भ-मीन 11:38-14:34

11 दिसंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 11 बुधवार रेवती में भद्रारम्भ 11:32 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 07:10-09:38

15 जनवरी माघ कृष्ण 02 बुधवार पुष्य अन्त 11:09 पूर्व।
समय- कुम्भ-मीन 09:05-11:09

03 फरवरी माघ शुक्ल 05 सोमवार रेवती में।
समय- कुम्भ-मीन 07:49-10:45, वृष-मिथुन 12:20-16:30

10 फरवरी माघ शुक्ल 13 सोमवार पुनर्वसु में।
समय- कुम्भ-मीन 07:22-10:17, वृष-मिथुन 11:53-16:03

17 फरवरी फाल्गुन कृष्ण 05 सोमवार चित्रा में।
समय- वृष-मिथुन 11:25-15:35 (गण्ड षड्घटी दोषान्त 10:20 बाद)

09 मार्च फाल्गुन शुक्ल 10 रविवार पुनर्वसु में।
समय- वृष-मिथुन 10:43-14:16

10 मार्च फाल्गुन शुक्ल 11 सोमवार भद्रान्त 09:55 बाद पुष्य में।
समय- वृष-मिथुन 10:02-14:12

16 मार्च चैत्र कृष्ण 02 रविवार हस्त में।
समय- वृष-मिथुन 08:59-13:09, सिंह 15:29-17:45

26 मार्च चैत्र कृष्ण 12 बुधवार धनिष्ठा में।
समय- वृष-मिथुन 08:59-13:09, सिंह 15:29-17:45

27 मार्च चैत्र कृष्ण 13 गुरुवार शतभिषा में
समय- वृष-मिथुन 08:55-13:05, सिंह-कन्या 15:25-18:38

❊ विपणि व्यापार मुहूर्त्त 2081 ❊

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

❊ **तिथि:** 2,3,5,7,8,10,11,12,13,15 ❊ **पक्ष:** शुक्ल व कृष्ण ❊ **वार:** सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, रवि ❊ **मंगलवार का निषेध**

❊ **नक्षत्र:** तीनों उत्तरा, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, चित्रा, मूल, पुष्य, हस्त, धनिष्ठा, रेवती, स्वाती, अनुराधा, श्रवण

12 अप्रैल चैत्र शुक्ल 04 शुक्रवार रोहिणी में भद्रान्त 17:07 बाद।
समय- कन्या 17:07-18:47

20 अप्रैल चैत्र शुक्ल 12 शनिवार 14:43 बाद उ.फा. में।
समय- सिंह-कन्या 14:43-18:21

21 अप्रैल चैत्र शुक्ल 13 रविवार उ.फा. में।
समय- वृष-मिथुन 07:16-11:25, सिंह-कन्या 13:46-18:17

24 अप्रैल वैशाख कृष्ण 01 बुधवार स्वाती में।
समय- वृष-मिथुन 07:04-11:14, सिंह-कन्या 13:34-18:05

26 अप्रैल वैशाख कृष्ण 02 शुक्रवार अनुराधा में।
समय- वृष-मिथुन 06:56-11:06, सिंह-कन्या 13:26-17:57

06 मई वैशाख कृष्ण 13 सोमवार रेवती में रिक्ता भद्रारम्भ 13:02 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 06:17-10:26, सिंह 12:46-13:02

10 मई वैशाख शुक्ल 02 शुक्रवार रोहिणी में। **अक्षय तृतीया**
समय- वृष-मिथुन 06:01-10:11, सिंह-कन्या 12:31-17:02

20 मई वैशाख शुक्ल 12 सोमवार चित्रा में व्यतिपात आरम्भ 12:11 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 05:40-09:31, सिंह 11:51-12:11

24 मई ज्येष्ठ कृष्ण 01 शुक्रवार अनुराधा अन्त 10:00 पूर्व में।
समय- वृष-मिथुन 05:38-09:15

29 मई ज्येष्ठ कृष्ण 06 बुधवार धनिष्ठा में भद्रारम्भ 13:03 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 05:36-08:56, सिंह 11:16-13:03

03 जून ज्येष्ठ कृष्ण 12 सोमवार अश्विनी में।
समय- मिथुन 06:22-08:36, सिंह-कन्या 10:56-15:28

07 जून ज्येष्ठ शुक्ल 01 शुक्रवार मृगशिरा में।
समय- मिथुन 06:06-08:20, सिंह-कन्या 10:41-15:12

10 जून ज्येष्ठ शुक्ल 04 सोमवार पुष्य में रिक्ता भद्रान्त 16:50 बाद।
समय- वृश्चिक 17:19-19:16

16 जून ज्येष्ठ शुक्ल 10 रविवार हस्त में।
समय- मिथुन 05:35-07:45, सिंह-कन्या 10:05-14:37, वृश्चिक 16:56-19:15

24 जून आषाढ़ कृष्ण 03 सोमवार उ.षा. में वैधृति 13:57 पूर्व ।
समय- मिथुन 05:36-07:14, सिंह-कन्या 09:34-13:57

26 जून आषाढ़ कृष्ण 05 बुधवार धनिष्ठा में।
समय- मिथुन 05:36-07:06, सिंह-कन्या 09:26-13:58, वृश्चिक 16:17-18:35

28 जून आषाढ़ कृष्ण 07 शुक्रवार उ.भा. आरम्भ 12:11 से।
समय- कन्या 12:11-13:50, वृश्चिक 16:09-17:52(तिथ्यन्त)

30 जून आषाढ़ कृष्ण 09 रविवार अश्विनी में रिक्तान्त 12:58 बाद।
समय- कन्या 12:58-13:42, वृश्चिक 16:01-18:20

07 जुलाई आषाढ़ शुक्ल 02 रविवार पुष्य में।
समय- सिंह-कन्या 08:43-13:15, वृश्चिक-धनु 15:34-19:21

11 जुलाई आषाढ़ शुक्ल 05 गुरूवार उ.फा. आरम्भ 12:22 बाद।
समय- वृश्चिक-धनु 15:18-19:20

13 जुलाई आषाढ़ शुक्ल 07 शनिवार हस्त में भद्रारम्भ 12:22 पूर्व।
समय- सिंह-कन्या 08:20-12:22

19 जुलाई आषाढ़ शुक्ल 13 शुक्रवार मूल में।
समय- सिंह-कन्या 07:56-12:28, वृश्चिक-धनु 14:46-19:11

21 जुलाई आषाढ़ शुक्ल 15 रविवार उ.षा. में।
समय- सिंह-कन्या 07:48-12:20, वृश्चिक-धनु 14:38-19:03

22 जुलाई श्रावण कृष्ण 01 सोमवार श्रवण में।
समय- सिंह-कन्या 07:44-12:16, वृश्चिक 14:35-16:54

26 जुलाई श्रावण कृष्ण 05 शुक्रवार उभा में।
समय- सिंह-कन्या 07:29-12:00, वृश्चिक 14:19-18:43

27 जुलाई श्रावण कृष्ण 07 शनिवार रेवती में।
समय- वृश्चि-धनु-14:15-18:39, भद्रान्त 13:52 बाद

28 जुलाई श्रावण कृष्ण 08 रविवार अश्विनी अन्त 15:33 पूर्व में।
समय- सिंह-कन्या 07:21-11:52, वृश्चिक 14:11-15:33

❊ विपणि व्यापार मुहूर्त्त 2081 ❊

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

31 जुलाई श्रावण कृष्ण 11 बुधवार रोहिणी/मृग में।
समय- सिंह-कन्या 07:09-11:40, वृश्चिक 13:59- 16:18

01 अगस्त श्रावण कृष्ण 12 गुरुवार मृगशिरा में।
समय- सिंह-कन्या 7:05-11:36

09 अगस्त श्रावण शुक्ल 05 शुक्रवार हस्त में।
समय- सिंह-कन्या 06:33-11:05, वृश्चिक 13:24-17:48

11 अगस्त श्रावण शुक्ल 07 रविवार स्वाती में।
समय- सिंह-कन्या 06:25-10:57, वृश्चिक 13:16-17:40

14 अगस्त श्रावण शुक्ल 10 बुधवार अनुराधा अन्त 08:47 तक में।
समय- सिंह-कन्या 06:14-08:47 तक

15 अगस्त श्रावण शुक्ल 10 गुरुवार मूल में।
समय- वृश्चिक-धनु 13:05-17:24, वैधृति 13:05 बाद भद्रा 17:46 पूर्व

16 अगस्त श्रावण शुक्ल 11 शुक्रवार मूल अंत 10:07 पूर्व में।
समय- सिंह-कन्या 06:06-10:07

19 अगस्त श्रावण शुक्ल 15 सोमवार धनिष्ठा में भद्रान्त 13:21 बाद।
समय- वृश्चिक-धनु 13:21-17:08

22 अगस्त भाद्रपद कृष्ण 03 गुरुवार उ.भा. में।
समय- सिंह 06:03-06:43(भद्रा पूर्व)

23 अगस्त भाद्रपद कृष्ण 05 तिथि अंत 15:01 तक शुक्रवार रेवती में।
समय- धनु 15:01-16:53

24 अगस्त भाद्रपद कृष्ण 05 शनिवार अश्विनी में।
समय- सिंह-कन्या 06:04-10:06, वृश्चिक 12:24-16:49

28 अगस्त भाद्रपद कृष्ण 10 बुधवार मृगशिरा में भद्रारम्भ 16:26 पूर्व।
समय- सिंह-कन्या 06:06-09:50, वृश्चिक-धनु 12:09-16:26

31 अगस्त भाद्रपद कृष्ण 13 शनिवार पुष्य में।
समय- सिंह-कन्या 06:08-09:38, वृश्चिक-धनु 11:57-16:21

04 सितंबर भाद्रपद शुक्ल 01 बुधवार उ.फा. में।
समय- कन्या 07:07-09:22, वृश्चिक-धनु 11:41-16:05

05 सितंबर भाद्रपद शुक्ल 02 गुरुवार हस्त में।
समय- कन्या 07:03-09:18, वृश्चिक-धनु 11:33-15:57

08 सितंबर भाद्रपद शुक्ल 05 रविवार स्वाती अन्त 12:41 पूर्व।
समय- कन्या 06:51-09:06, वृश्चिक 11:25-12:41

15 सितंबर भाद्रपद शुक्ल 12 रविवार श्रवण में।
समय- कन्या 06:34-08:39, वृश्चिक-धनु 10:58-15:22

16 सितंबर भाद्रपद शुक्ल 13 सोमवार रिक्ता 12:47 पूर्व धनिष्ठा में।
समय- वृश्चिक 10:54-12:47

03 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 01 गुरुवार हस्त-चित्रा में।
समय- कन्या 06:22-07:28, वृश्चिक-धनु 09:47-14:11, मीन 17:24-18:07

05 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 03 शनिवार स्वाती में।
समय- कन्या 06:23-07:20, वृश्चिक-धनु 09:39-14:03, मीन 17:16-18:05

07 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 05 सोमवार अनुराधा में।
समय- कन्या 06:24-07:12, वृश्चिक-धनु 09:31-13:55, मीन 17:08-18:03

09 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 06 बुधवार मूल में।
समय- कन्या 06:25-07:04, वृश्चिक-धनु 09:23-13:47, मीन 17:00-18:01

12 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 10 शनिवार श्रवण में
समय- कन्या 06:27-06:52, वृश्चिक-धनु 09:11-13:35, मीन 16:49-17:57

17 अक्टूबर आश्विन शुक्ल 15 गुरुवार अश्विनी में।
समय- वृश्चिक-धनु-08:51-13:16, मीन 16:29-17:55

18 अक्टूबर कार्त्तिक कृष्ण 01 शुक्रवार अश्विनी अन्त 15:36 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 08:47-13:12

21 अक्टूबर कार्त्तिक कृष्ण 04 सोमवार मृगशिरा में रिक्तान्त 08:33 बाद परिघ 16:50 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 08:36-13:00, मीन 16:13-16:50

30 अक्टूबर कार्त्तिक कृष्ण 13 बुधवार हस्त में वैधृति 10:16 बाद भद्रारम्भ 12:30 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 10:16-12:24

❊ विपणि व्यापार मुहूर्त्त 2081 ❊

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

03 नवंबर कार्त्तिक शुक्ल 02 रविवार अनुराधा में।
समय- वृश्चिक-धनु 07:44-12:08, मीन 15:22-16:48

06 नवंबर कार्त्तिक शुक्ल 05 बुधवार मूल अन्त 08:53 पूर्व।
समय- वृश्चिक 07:32-8:53, लाभ पंचमी

08 नवंबर कार्त्तिक शुक्ल 07 शुक्रवार उ.षा. में
समय- वृश्चिक-धनु 07:24-11:49, मीन 15:02-16:28

13 नवंबर कार्त्तिक शुक्ल 12 बुधवार रेवती में।
समय- वृश्चिक-धनु 07:04-11:29, (वज्र त्रिघटी बाद)
मीन 15:15-16:08

17 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 02 रविवार रोहिणी में।
समय- वृश्चिक-धनु 06:49-11:13, मीन 14:27-15:52

18 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 03 सोमवार मृगशिरा में भद्रारम्भ 10:19 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 06:52-10:19

21 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 06 गुरुवार पुष्य में।
समय- वृश्चिक-धनु 06:54-10:57, मीन 14:11-15:37

25 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 10 सोमवार उ.फा. में भद्रारम्भ 12:26 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 06:57-10:41

27 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 12 बुधवार चित्रा में।
समय- वृश्चिक-धनु 06:59-10:33, मीन 13:47-15:13

28 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 13 गुरुवार चित्रा/स्वाती में।
समय- वृश्चिक-धनु 07:00-10:29, मीन 13:43-15:09

29 नवंबर मार्गशीर्ष कृष्ण 13 शुक्रवार स्वाती में रिक्ता भद्रा 07:46 पूर्व।
समय- वृश्चिक 07:00-07:46

05 दिसंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 04 गुरुवार उ.षा. में रिक्ता-भद्रान्त 11:35 बाद।
समय- मीन 13:15-14:41

06 दिसंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 05 शुक्रवार श्रवण में व्याघात 10:41 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 07:06-09:58

07 दिसंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 06 शनिवार श्रवण में तिथ्यंत 09:04 बाद।
समय- वृश्चिक-धनु 09:04-09:54, मीन 13:08-14:34

11 दिसंबर मार्गशीर्ष शुक्ल 11 बुधवार रेवती में भद्रारम्भ 11:32 पूर्व।
समय- वृश्चिक-धनु 07:10-09:38

15 जनवरी माघ कृष्ण 02 बुधवार पुष्य अन्त 11:09 पूर्व।
समय- मीन 10:34-11:09

18 जनवरी माघ कृष्ण 05 शनिवार उ.फा. आरम्भ 15:15 बाद।
समय- मिथुन 15:19-17:34

03 फरवरी माघ शुक्ल 05 सोमवार रेवती में।
समय- मीन 09:19-10:45, वृष-मिथुन 12:20-16:30

07 फरवरी माघ शुक्ल 10 शुक्रवार वैधृति पूर्व रोहिणी में।
समय- मीन 09:03-10:29, वृष-मिथुन 12:05-16:14

15 फरवरी फाल्गुन कृष्ण 03 शनिवार भद्रा 09:47 पूर्व उ.फा. में ।
समय- मीन 08:31-09:47 (भद्रारम्भ)

17 फरवरी फाल्गुन कृष्ण 05 सोमवार चित्रा में।
समय- वृष-मिथुन 11:25-15:35 (गण्ड षड्घटी दोषान्त 10:20 बाद)

01 मार्च फाल्गुन शुक्ल 02 शनिवार उ.भा. 13:41 बाद।
समय- मिथुन 13:41-14:47, सिंह 17:08-18:24

02 मार्च फाल्गुन शुक्ल 03 रविवार उ.भा. में।
समय- मीन 07:32-08:58, वृष-मिथुन 10:34-14:43,
सिंह 17:04-18:24

06 मार्च फाल्गुन शुक्ल 07 गुरुवार भद्रारम्भ 15:30 पूर्व रोहिणी में।
समय- मीन 07:16-08:42, वृष-मिथुन 10:18-14:28,
सिंह 16:48-18:27

10 मार्च फाल्गुन शुक्ल 11 सोमवार भद्रान्त 09:55 बाद पुष्य में।
समय- वृष-मिथुन 10:02-14:12

16 मार्च चैत्र कृष्ण 02 रविवार हस्त में।
समय- वृष-मिथुन 08:59-13:09, सिंह 15:29-17:45

24 मार्च चैत्र कृष्ण 10 सोमवार उ.षा. में भद्रारम्भ 12:53 पूर्व।
समय- वृष-मिथुन 09:07-12:53

26 मार्च चैत्र कृष्ण 12 बुधवार धनिष्ठा में।
समय- वृष-मिथुन 08:59-13:09, सिंह 15:29-17:45

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग में अधिकांश आवश्यक मुहूर्त्त निर्णय दिया गया है। मुहूर्त्त शास्त्रों में अनेकविध कृत्यों के मुहूर्त्त दिए गए हैं, जिनमें से कुछ का विवरण यहाँ दिया जा रहा है।

✻ गर्भाधान मुहूर्त्त✻

✻ **तिथि-** क्षीणचन्द्रमा रहित 1, 2, 3, 5, 7, 10, 11, 12, 13 **तिथि**। ✻ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र। ✻ **नक्षत्र-** रोहिणी, मृगशि, उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, हस्त, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, चित्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्विनी। ✻ **विशेष-** रजोदर्शन की चतुर्थ रात्रि से 12 रात्रियों तक। ✻ **त्याज्य-** 4, 6, 8, 9, 14, 30 **तिथि**, प्रातः, सायं, सन्ध्या, ग्रहण, संक्रान्ति, श्राद्ध।✻ **लग्नशुद्धि-** शुभग्रह केन्द्र त्रिकोणस्थ व पापग्रह त्रिषडाय में।

✻ सीमन्तोन्नयन पुंसवन मुहूर्त्त ✻

पुंसवन गर्भाधान से तृतीय मास में करना चाहिए। सीमन्तोन्नयन षष्ठ वा अष्टम मास में करना चाहिए। ✻ **तिथि-** शुक्लपक्ष- 1, 2, 3, 5, 7, 10, 11, 13, कृष्णपक्ष-1, 2, 3, 5। ✻ **वार-** सोम, मंगल, गुरुवार में। अन्यमतेन सोम, शुक्रवार को पूर्वाह्न में। ✻ **नक्षत्र-** मृगशिरा, पुष्य, श्रवण, पुनर्वसु, हस्त, रोहिणी, रेवती, तीनों उत्तरा (जन्मनक्षत्र त्याज्य)। ✻ **लग्नशुद्धि-** 1, 4, 5, 7, 9, 10 भावों में शुभग्रह, 2, 3, 4, 5, 9, 10, 11 स्थानों में चन्द्र तथा 4, 8, 10 में पापग्रह वर्जित ।

✻ जातकर्म मुहूर्त्त ✻

शिशु के ग्रहदोष निवारण व आयुवृद्धि हेतु जन्म-समय में या एकादश या द्वादश दिन में पिता को जातकर्म करना चाहिए। ✻ **नक्षत्र-** चित्रा, अनुराधा, रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा। ✻ **तिथि-** 1, 2,3,5,7,10,11,12,13 ✻ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र। ✻ **लग्न-** 2, 3, 4, 6, 7, 9 12, लग्न व नवांश की शुद्धि अनिवार्य।

✻ नामकरण मुहूर्त्त ✻

✻ **तिथि**- 1,2,3,5,7,10,11,12,13। वार-सोम,बुध,गुरु,शुक्र। पूर्वाह्न में शुभ, मध्याह्न में मध्यम। ✻ **नक्षत्र**- स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, अश्वि, पुष्य, अभिजित्, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, शतभिषा, अनुराधा। ✻ **लग्न**- 2,3,5,6,8,9,11,12। ✻ **लग्नशुद्धि-** 1, 4, 5, 7, 9, 10 भावों में शुभग्रह, 2, 3, 5, 9, 10, 11 स्थानों में चन्द्र, त्रिषडाय में पापग्रह हो। शुभग्रहदृष्टलग्न।

✻ अन्नप्राशन मुहूर्त्त ✻

✻ **तिथि**- 2,3,5,7,10,13,15। क्षीणचन्द्र वर्जित। ✻ **वार**- सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार। ✻ **नक्षत्र**- जन्म नक्षत्र एवं अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती। ✻ **लग्न**- 2,3,5,6,7,9,11,12। ✻ **लग्नशुद्धि-** जन्मलग्न व जन्म राशि से अष्टमलग्न व नवांश वर्जित है। दशम भाव में चन्द्र के अतिरिक्त अन्य ग्रह वर्जित। 1,6, 8 भाव में चन्द्रवर्जित। ✻ **बालकों का अन्नप्राशन**- 6,8,10,12 मासों में, **बालिकाओं** का 5, 7, 9, 11 मासों में। पूर्वाह्न शुभ।

✻ कर्णवेध मुहूर्त्त ✻

1,2,6 मास में व विषमवर्ष में, रिक्ता एवं समवर्ष त्याज्य है। ✻ **कालशुद्धि**- सौर चैत्र व पौषमास, क्षयदिन, हरिशयन (आषाढ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल दशमी तक) एवं जन्ममास त्याज्य है। पूर्वाह्न एवं मध्याह्न में। ✻ **तिथि**- 1, 2, 3, 5, 6, 7, 8, 10, 11, 12, 13, 15 ✻ **वार**- सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार। ✻ **नक्षत्र**- अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती। ✻ **लग्नशुद्धि**- वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनु व मीन लग्न प्रशस्त। लग्न से अष्टम भाव शुद्धि।

✻ चूड़ाकर्म मुण्डन मुहूर्त्त ✻

✻ **कालशुद्धि**- उत्तरायण। गुरुशुक्रास्त वर्ज्य। पूवाह्न व मध्याह्न शुभ। 1,2,6 मास में व विषमवर्ष में, समवर्ष त्याज्य है। सौर चैत्र व पौषमास, क्षयदिन, हरिशयन (आषाढ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल दशमी तक) एवं जन्ममास त्याज्य है। ✻ **मास-** माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ मास में हरिशयनपूर्व। ✻ **वर्जितमास-** चैत्र। ✻ **पक्ष-**कृष्णपक्ष में पंचमी तिथि पर्यन्त एवं सम्पूर्ण शुक्लपक्ष में। ✻ **तिथियाँ-** 2,3,5,7,10,11,13 (कुल 7)। ✻ **वर्जित तिथियाँ-** 1, 4,6, 8, 9,12, 14, 15, 30। ✻ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र ✻ **नक्षत्र-** अश्विनी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, ज्येष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (12 नक्षत्र)। ✻ **वर्जित नक्षत्र-** रोहिणी, तीनों उत्तरा एवं अनुराधा (5 नक्षत्र)। इसके अतिरिक्त भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, तीनों पूर्वा, विशाखा, मूल भी वर्जित हैं । ✻ **लग्न-** 2, 3, 4, 5, 6, 7, 9, 12। ✻ **वर्जित लग्न-** 1, 8, 10, 11। ✻ **लग्नशुद्धि**-जन्मलग्न व जन्मराशि से अष्टम लग्न वर्जित। अष्टम स्थानशुद्धि। केन्द्र में क्षीणचन्द्र, मंगल, शनि व सूर्य अशुभ।

✻ अक्षरारम्भ मुहूर्त्त ✻

उत्तरायण, गुरु शुक्र के अस्तादि विचारणीय। ✻ **तिथि**- 2, 3, 5, 6, 10, 11, 12। ✻ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र। ✻ **नक्षत्र-** अश्विनी, आर्द्रा, पुन, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु., श्रवण, रेवती। ✻ **लग्न-** 2,3,6,9,12 शुभ, 5,8,11 मध्यम।

✻ उपनयन मुहूर्त्त ✻

✻ **मास-** माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ। ✻ **तिथि-** शुक्लपक्ष- 2,3,5,10,11,12। कृष्णपक्ष- 2,3,5 । ✻ **वार**- सूर्य, सोम, बुध, गुरु व शुक्रवार। ✻ **नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, तीनों पूर्वा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु, मूल, श्रवण, धनि., शत, तीनों उत्तरा, रेवती। ✻ **समयशुद्धि**- उत्तरायण में। देवशयन, गुरु-शुक्र अस्तादि वर्जित। पूवाह्न व मध्याह्न तक ही उपनयन शुभ। अपराह्न निषिद्ध। ✻ **लग्नशुद्धि-** षष्ठ व अष्टम भाव में शुक्र, गुरु, चन्द्र व लग्नेश वर्जित। द्वादश भाव में चन्द्र व शुक्र वर्जित। लग्न पञ्चम व अष्टम में पापग्रह वर्जित। ✻ **त्याज्य-** आषाढ शुक्ल दशमी, ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया, पौष शुक्ल एकादशी, मघा शुक्ल द्वादशी तथा संक्रान्ति दिन। सूर्य के 8, 17, 26 अंश पर रोगबाण में वर्जित।

✻ प्रथम रजोदर्शन विचार ✻

✻ **मास**- वैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, आश्विन, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन ✻ **तिथि**- 1,2,3,5,7,10,11,12,13,15 । ✻ **वार**- सोम, बुध, गुरु व शुक्रवार। ✻ **नक्षत्र**- अश्विनी, रोहिणी, मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती। ✻ **लग्न-** 2,3,4,6,7,9,12 शुभयुक्त एवं दृष्ट लग्न राशि। ✻ **विशेष**- प्रथम रजोदर्शन में कुयोग (परिघ, व्यतिपात, वैधृति आदि) भद्रा, सूर्यचन्द्र ग्रहण, मासान्त, सन्ध्या, निद्रावस्था आदि अशुभ कहा गया है। यदि इन कुयोगो में प्रथम ऋतुमति हो तो गायत्री मन्त्र से तिल, घृत, दूर्वा सहित 108 आहुति देने से कुयोगों की शान्ति होती है।

✻ विद्यारम्भ मुहूर्त्त ✻

उत्तरायण, गुरु-शुक्र अस्तादि शुद्धि विचारणीय। ✻ **तिथि**- 2, 3, 5, 6, 10, 11, 12। ✻ **वार**- सूर्य, बुध, गुरु, शुक्रवार। ✻ **नक्षत्र-** अश्विनी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, तीनों पूर्वा, हस्त, चित्रा, स्वाती, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा। अन्यमतेन रोहिणी, तीनों उत्तरा, अनुराधा, रेवती भी ग्राह्य हैं। ✻ **लग्न**- 2,3,5,6,8,9,11,12

❊ विवाह मुहूर्त्त ❊

गुरु शुक्र अस्तादि शद्धि, देवशयनादि विचार आवश्यक। ❊ **मास-** मीन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला व धनु के सूर्य में वर्जित। सौरमासों में वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, मार्गशीर्ष, माघ व फाल्गुन ग्राह्य। दोनों पक्षों की ❊ **तिथि-** 2, 3, 5, 6, 7, 8, 10, 11, 12, 13 व शुक्लपक्ष की 15। ❊ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र। रवि, शनि-मध्यम। मंगल त्याज्य (मु.चि. 6/55)। ❊ **नक्षत्र-** रोहिणी, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, मूल व रेवती। ❊ **कात्यायन गृह्यसूत्रोक्त-** अश्विनी, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा। ❊ **लग्न-** लग्नस्थ चन्द्र, पापग्रह, तृतीयस्थ शुक्र, षष्ठस्थ चन्द्र, शुक्र व लग्नेश, सप्तम में सभी ग्रह, अष्टमस्थ चन्द्र, लग्नेश, मंगल व शुभग्रह, दशमस्थ मंगल व द्वादशस्थ शनि वर्जित।

❊ वधूप्रवेश मुहूर्त्त ❊

❊ **कालशुद्धि-** 'वधूप्रवेशो न दिवा प्रशस्त:' के अनुसार वधू का प्रवेश रात्रि में ही शुभ होता है, शेष विवाह मुहूर्त्त के समान। ❊ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र व शनिवार। **तिथि-** 1, 2, 3, 5, 6, 7, 8, 10, 11, 12, 13, 15। ❊ **नक्षत्र-** अश्विनी, रो, मृग, पुष्य, मघा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, तीनों उत्तरा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, व रेवती। ❊ **लग्नशुद्धि-** वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ राशि के लग्न शुभ। चतुर्थाष्टम शुद्धि चाहिए। ❊ **त्याज्य-** भद्रा, व्यति, क्षयतिथि, रिक्ता, अमा., ग्रहण, वैधृति व संक्रान्ति।

❊ द्विरागमन मुहूर्त्त ❊

कुम्भ, वृश्चिक व मेष राशि में सूर्य के रहने पर ही द्विरागमन विहित है। ❊ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार। ❊ **तिथि-** 1, 2, 3, 5, 6, 7, 8, 10, 11, 12, 13, 15 ❊ **नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा रेवती। ❊ **वर्जित लग्न-** 1,4,7,10

❊ प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त ❊

❊ **स्नान के नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, रेवती। ❊ **स्नान में त्याज्य नक्षत्र-** भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, मघा, चित्रा, विशाखा, मूल, श्रवण। ❊ **स्नान में मध्यम नक्षत्र-** आश्लेषा, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, शतभिषा। ❊ **स्नान के वार-** रवि, मंगल, बृहस्पति। रवीज्यकुजेषु शस्तम्। मुहूर्त्तचिन्तामणि, 5/12। ❊ **स्नान की तिथियाँ-**1, 2, 3, 5, 7, 10, 11, 13, 15, 30।

❊ **स्नान में त्याज्य-** रिक्तातिथि 4, 9, 14 तथा 6, 8, 12 **तिथियाँ**। भद्रा एवं वैधृतिदोष।

❊ गृहारम्भ मुहूर्त्त ❊

गुरु-शुक्र अस्तादि विचार आवश्यक है। पर देवशयन विचार आवश्यक नहीं। ❊ **चान्द्रमास-** वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, पौष, फाल्गुन। ❊ **सौरमास-** मेष, वृष, कर्क, सिंह, वृश्चिक, मकर, कुम्भ राशिस्थ। ❊ **तिथि-** 2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 12, 13, 15। ❊ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनिवार। ❊ **नक्षत्र-** रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती(मु. चि. 12/15) पराशरमतानुसार- अश्विनी, पुनर्वसु, मूल व श्रवण भी ग्राह्य। वास्तु राजवल्लभ के अनुसार ज्येष्ठा भी ग्राह्य। **योग व करण-** वैधृति, शूल, गण्ड, परिघ, व्याघात, वज्र, विष्कुम्भ एवं व्यतीपात योग तथा भद्रा वर्जित। ❊ **लग्न-** 2,3,5,6,8,9,11,12। अष्टम, द्वादश भाव की शुद्धि।

❊ नवीन गृहप्रवेश मुहूर्त्त ❊

उत्तरायण विशेष शुभ। गुरु-शुक्र अस्तादिविचार आवश्यक। दिन व रात दोनों ही में प्रवेश शुभ। ❊ **मास-** माघ, फाल्गुन, वैशाख व ज्येष्ठ श्रेष्ठ। मार्गशीर्ष, कार्तिक मध्यम। ❊ **तिथि-** दोनों पक्षों की- 1,2,3, 5,6,7,8,10। एवं शु.प. 11,12,13,15 ❊ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि। ❊ **नक्षत्र-** रोहिणी, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, चित्रा, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती। मतान्तर से अश्विनी, पुष्य, स्वाती, मूल व श्रवण भी ग्राह्य (मुहूर्त्तपारिजात)। ❊ **लग्न-** 2,3, 5,6,8,9,11,12। लग्न से चतुर्थाष्टम शुद्धि आवश्यक। ❊ **समय-शुद्धि-** भद्रा, व्यतीपात, वैधृति योग त्याज्य, परिघ का आधा मान, शूल योग की आदि 5 घटी, गण्ड व अतिगण्ड योग की आदि 6 घटी, व्याघात की 9 घटी, विष्कुम्भ व वज्र की 3-3 घटी मुहूर्त्त में त्याज्य।

❊ जीर्ण गृह प्रवेश मुहूर्त्त ❊

नवीन गृह प्रवेश मुहूर्त के समान ही। पर श्रावण, मार्गशीर्ष एवं कार्तिक मास भी ग्राह्य। नवीन गृह प्रवेश मुहूर्त में भी प्रवेश। गुरु शुक्र अस्तादि विचार की आवश्यकता नहीं। ❊ **जीर्ण गृहप्रवेश नक्षत्र -** शतभिषा, पुष्य, स्वाती, धनिष्ठा।

❊ सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त ❊

उत्तरायण, गुरु-शुक्र अस्तादि का विचार आवश्यक। मकर, कुम्भ, मीन, मेष, वृष एवं मिथुन में सूर्य के रहने पर।

❊ **देव प्रतिष्ठा नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (कुल 16 नक्षत्र)। ❊ **देव प्रतिष्ठा मास-** चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, माघ, फाल्गुन (हरिशयनपूर्व) ❊ **वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, रवि। मंगलवार को निषेध है। ❊ **लग्न-** 2, 3, 5, 6, 8, 11, 12 । ❊ **तिथि-** 2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 12, 13, 15 ।

❊ ऋण देने का मुहूर्त्त ❊

❊ **वार-** चन्द्र, गुरु, शुक्र, शनि नक्षत्र स्वाती, पुनर्वसु, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, मूल, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा। ❊ **लग्न-** 1, 4, 7, 10 लग्न में। ❊ **तिथि-** 1, 2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 12, 13, 15। ❊ **कर्ज देने में निषिद्ध समय-** बुधवार, भरणी, कृतिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, तीनों पूर्वा, चित्रा, ज्येष्ठा नक्षत्रों में, भद्रा एवं पात योगों में निषिद्ध होता है। ❊ **कर्ज लेने में निषिद्ध समय-** रविवार, मंगलवार, संक्रान्ति, हस्त नक्षत्र में ऋणग्रहण नहीं करना चाहिए।

❊ औषधि/दवाई ग्रहण करने का मुहूर्त्त ❊

❊ **वार-** सूर्य, सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार। ❊ **नक्षत्र-** अश्विनी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रोहिणी में शुभ। ❊ **लग्न-**3, 6, 9, 12। शुभग्रह 3, 6, 9, 12 राशिमें स्थित हो, तथा लग्न से 7, 8, 12 स्थान ग्रहरहित हों, इसमें औषधि ग्रहण शुभ।

❊ ऑपरेशन का मुहूर्त्त ❊

❊ **वार-** सूर्य, मंगल, गुरुवार। ❊ **नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, अभिजित्, श्रवण, शतभिषा। ❊ **तिथि-** 4, 9, 14, 15, 30 वर्जित।

❊ भूमि क्रय विक्रय मुहूर्त्त ❊

❊ **वार-** गुरु, शुक्र। ❊ **तिथि-** दोनों पक्षों की- 5, 6, 10, 11, पूर्णिमा व कृष्णपक्ष की 1। ❊ **नक्षत्र-** मृगशिरा, पुनर्वसु, आश्लेषा, मघा, विशाखा, अनुराधा, तीनों पूर्वा, मूल, रेवती। ❊भद्रा एवं कुयोग त्याज्य

❊ व्यवहार पत्रारम्भ मुहूर्त्त ❊

❊ **तिथि-** 1,2,3,5,7,10,11,13 ❊ **वार-** रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवार। ❊ **नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, अभिजित्, श्रवण, रेवती।

चैत्र शुक्लपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, ९ अप्रैल से २३ अप्रैल, २०२४ ईस्वी

ग्रहस्थिति ९:४:२०२४ :–मार्गी गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः, मार्गी शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, वक्री बुधःपश्चिमास्तः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	ॐ व्रत–पर्व–उत्सव ॐ
अप्रैल	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	अप्रैल	९ अप्रैल से २३ अप्रैल, २०२४
९	१ मं	३९:३६	२२·०४	रेवती	०५:३७	०८·२९	वैधृ·	२३:३३	१५·३९	बव	१२:१७	बाल	३९:३६	३१:१७	६:१४	१८:४५	मे·०५:३७	०८·२९	शुभ	९	**विक्रम नववर्ष आरम्भः, नवरात्र घटस्थापना**
१०	२ बु	३४:४२	२०·०६	अश्वि· भरणी	०२:१३ ५७:१३	०७·०६ २९:०६	विष्कु·	१६:३७	१२·५२	बाल	०७:०५	कौल	३४:४२	३१:२१	६:१३	१८:४६	मेष	अहोरात्र	मृत्यु	१०	**सिंजारा**, बालेन्दु चन्द्रपूजन
११	३ गु	३०:३४	१८·२६	कृत्ति·	५७:३०	२९·१२	प्रीति	१०:१६	१०·१८	तैति	०२:३३	गर	३०:३४	३१:२५	६:१२	१८:४६	वृ·१३:५४	११·४५	लुम्ब	११	**गणगौर पूजा, श्रीमत्स्यावतार जयन्ती**, मन्वादि
१२	४ शु	२७:२०	१७·०७	रोहि·	५६:३२	२८·४८	आयु· सौभाग्य	०४:३६ ५५:०७	०८·०१ २८:१४	विष	२७:२०	बव	५६:०५	३१:२९	६:११	१८:४७	वृष	अहोरात्र	मित्र	१२	**अंगारकी वैनायकी श्रीगणेशचतुर्थी**
१३	५ श	२५:१०	१६·१४	मृग·	५६:४२	२८·५०	शोभ·	५५:४५	२८·२८	बाल	२५:१०	कौल	५४:३०	३१:३३	६:१०	१८:४७	मि·२६:२९	१६·४५	वज्र	१३	**श्रीपंचमी, रंगपंचमी**, श्रीरामराज्य महोत्सव, कल्पादि
१४	६ र	२४:११	१५·४९	आर्द्रा	५८:०३	२९·२२	अतिग·	५२:४७	२७·१६	तैति	२४:११	गर	५४:०९	३१:३७	६:०९	१८:४८	मिथुन	अहोरात्र	ध्वांक्ष	१४	श्रीयमुना जयन्ती, स्कन्द षष्ठी
१५	७ चं	२४:२८	१५·५५	पुन·	६०:००	अहोरात्र	सुकर्मा	५०:५०	२६·२७	वणि	२४:२८	विष	५५:०४	३१:४१	६:०८	१८:४८	क·४४:५५	२४·०६	धूम्र	१५	महानिशा पूजा (निशीथव्यापिनी अष्टम्यां)
१६	८ मं	२६:०२	१६·३१	पुन·	००:४२	०६·२४	धृति	४९:५१	२६·०३	बव	२६:०२	बाल	५७:१५	३१:४४	६:०७	१८:४९	कर्क	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	१६	**श्रीमहाष्टमी**, अशोकाष्टमी, नवपद पूजा (जैन)
१७	९ बु	२८:४७	१७·३७	पुष्य	०४:३२	०७·५४	शूल	४९:४७	२६·०१	कौल	२८:४७	तैति	६०:००	३१:४८	६:०६	१८:४९	कर्क	अहोरात्र	मातङ्ग	१७	**श्रीरामनवमी, नवरात्र समाप्ति, श्रीमहानवमी**
१८	१० गु	३२:३८	१९·०८	आश्ले·	०९:२८	०९·५२	गण्ड	५०:२९	२६·१६	तैति	००:३६	गर	३२:३८	३१:५२	६:०५	१८:५०	सिं·०९:२८	०९·५२	अमृत	१८	**नवरात्रोत्थापन, नवरात्र व्रतपारणा**, जयन्ती ग्रहणम्
१९	११ शु	३७:१७	२०·५८	मघा	१५:१७	१२·१०	वृद्धि	५१:४४	२६·४५	वणि	०४:५३	विष	३७:१७	३१:५६	६:०४	१८:५०	सिंह	अहोरात्र	काण	१९	**श्रीकामदा एकादशी (सर्वेषाम्)**, लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव
२०	१२ श	४२:२५	२३·०१	पू·फा·	२१:४१	१४·४३	ध्रुव	५३:१८	२७·२२	बव	०९:५०	बाल	४२:२५	३२:००	६:०३	१८:५१	कं·३८:१९	२१·२२	लुम्ब	२०	**हरि दमनोत्सव**, मदन द्वादशी, वामन द्वादशी
२१	१३ र	४७:३६	२५·०४	उ·फा·	२८:१६	१७·२०	व्याघ·	५४:५१	२७·५८	कौल	१५:०३	तैति	४७:३६	३२:०३	६:०२	१८:५१	कन्या	अहोरात्र	मित्र	२१	**प्रदोष व्रतम्, श्रीमहावीर जयन्ती** (जैन)
२२	१४ चं	५२:२३	२६·५८	हस्त	३४:३६	१९·५१	हर्षण	५६:०४	२८·२६	गर	२०:०५	वणि	५२:२३	३२:०७	६:०१	१८:५२	कन्या	अहोरात्र	वज्र	२२	**शिव दमनोत्सव चतुर्दशी, श्रीनृसिंह दोलोत्सव**
२३	१५ मं	५६:२६	२८·३४	चित्रा	४०:१८	२२·०७	वज्र	५६:४४	२८·४१	विष	२४:३२	बव	५६:२६	३२:११	६:००	१८:५२	तु·०७:३४	०९·०१	ध्वांक्ष	२३	**चैत्रपूर्णिमा** (व्रत–स्नान–दान), **श्रीहनुमानजयन्ती**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क अप्रैल	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	वक्री बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
९	१ मं	११:२५:२२:३३	११:२८:४०:१०	१०:१७:४४:३७	११:२७:०६:२६	००:२५:४२:५४	११:१२:०४:२५	१०:१७:१७:३९	०५:२३:५१:३४	४५:३८:५३	उ·०७:१६:२८	– २:४७	०६:२३
१०	२ बु	११:२६:२१:२४	००:१२:४८:४२	१०:१८:३२:०८	११:२६:२४:३१	००:२५:५६:२३	११:१३:१८:४९	१०:१७:२४:१६	०५:२३:४८:२३	४५:४०:५१	उ·०७:३९:२०	– २:२९	०७:०४
११	३ गु	११:२७:२०:१४	००:२६:४७:२२	१०:१९:१९:३९	११:२५:३९:०९	००:२६:०९:५४	११:१४:३३:१३	१०:१७:३०:५१	०५:२३:४५:१३	४५:४२:४९	उ·०८:०२:०५	– २:१२	०७:४८
१२	४ शु	११:२८:१९:०१	०१:१०:३३:४५	१०:२०:०७:१०	११:२४:५१:१७	००:२६:२३:२९	११:१५:४७:३६	१०:१७:३७:२३	०५:२३:४२:०२	४५:४४:४६	उ·०८:२४:४२	– १:५५	०८:३५
१३	५ श	११:२९:१७:४५	०१:२४:०६:०२	१०:२०:५४:४१	११:२४:०२:०१	००:२६:३७:०६	११:१७:०१:५८	१०:१७:४३:५२	०५:२३:३८:५१	४५:४६:४३	द·२१:१८:०५	– १:३९	०९:२७
१४	६ र	००:००:१६:२८	०२:०७:२३:०६	१०:२१:४२:१२	११:२३:१२:३६	००:२६:५०:४६	११:१८:१६:१९	१०:१७:५०:१८	०५:२३:३५:४१	४५:४८:३९	उ·०९:०९:३०	– १:२३	१०:२०
१५	७ चं	००:०१:१५:०८	०२:२०:२४:३९	१०:२२:२९:४३	११:२२:२४:१९	००:२७:०४:२८	११:१९:३०:४०	१०:१७:५६:४१	०५:२३:३२:३०	४५:५०:३५	उ·०९:३१:४०	– १:०७	११:१८
१६	८ मं	००:०२:१३:४६	०३:०३:११:०५	१०:२३:१७:१२	११:२१:३८:१७	००:२७:१८:१३	११:२०:४५:००	१०:१८:०३:०१	०५:२३:२९:२०	४५:५२:३०	उ·०९:५३:४१	– ०:५१	१२:१४
१७	९ बु	००:०३:१२:२२	०३:१५:४३:३५	१०:२४:०४:४०	११:२०:५५:३०	००:२७:३२:०१	११:२१:५९:१९	१०:१८:०९:१८	०५:२३:२६:०९	४५:५४:२४	उ·१०:१५:३२	– ०:३६	१३:१०
१८	१० गु	००:०४:१०:५५	०३:२८:०४:०१	१०:२४:५२:०६	११:२०:१६:५३	००:२७:४५:५०	११:२३:१३:३८	१०:१८:१५:३२	०५:२३:२२:५८	४५:५६:१८	उ·१०:३७:१३	– ०:२१	१४:०६
१९	११ शु	००:०५:०९:२७	०४:१०:१४:५३	१०:२५:३९:३२	११:१९:४३:१३	००:२७:५९:४२	११:२४:२७:५६	१०:१८:२१:४२	०५:२३:१९:४८	४५:५८:११	उ·१०:५८:४४	– ०:०६	१५:००
२०	१२ श	००:०६:०७:५६	०४:२२:१९:१०	१०:२६:२६:५५	११:१९:१५:०७	००:२८:१३:३६	११:२५:४२:१३	१०:१८:२७:४९	०५:२३:१६:३७	४६:००:०४	उ·११:२०:०३	+ ०:०८	१५:५२
२१	१३ र	००:०७:०६:२३	०५:०४:२०:१३	१०:२७:१४:१८	११:१८:५३:०४	००:२८:२७:३२	११:२६:५६:३०	१०:१८:३३:५२	०५:२३:१३:२६	४६:०१:५६	उ·११:४१:११	+ ०:२२	१६:४४
२२	१४ चं	००:०८:०४:४७	०५:१६:२१:५६	१०:२८:०१:३८	११:१८:३७:२५	००:२८:४१:३०	११:२८:१०:४६	१०:१८:३९:५२	०५:२३:१०:१६	४६:०३:४७	उ·१२:०२:०८	+ ०:३६	१७:३७
२३	१५ मं	००:०९:०३:१०	०५:२८:२८:००	१०:२८:४८:५७	११:१८:२८:२१	००:२८:५५:३०	११:२९:२५:०१	१०:१८:४५:४८	०५:२३:०७:०५	४६:०५:३७	उ·१२:२२:५३	+ ०:४८	१८:२९

१२ अप्रैल सूर्योदयकालीन तिथि:**४**

२३ अप्रैल सूर्योदयकालीन तिथि:**११**

बु शु रा
१
३
२
१२
११
सू गु
४
१०
मं श
७
५
९
चं.
६
८
के
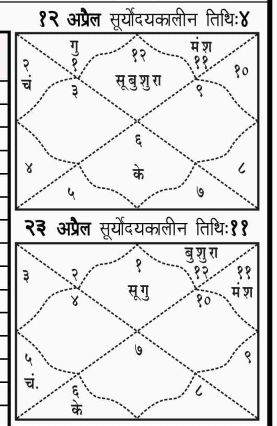
चैत्र शुक्लपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, ९ अप्रैल से २३ अप्रैल, २०२४ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःदक्षिण । ऋतुःवसन्त । उत्तरायणं ।
याम्य गोलः मेषार्कतः सौम्यगोलः । ति·१५ अयनांशाः२२:५२:३१

दिनाङ्क अप्रैल	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
९	१ मं	**पंचांग फलश्रवण, गुड़ी पड़वा, गण्डान्तः१४:०७, पंचकान्तः८:२९,** कल्पादि, (१)
१०	२ बु	। (१) वैधृति पुण्यम्, चेटीचण्ड–श्रीझूलेलाल जयन्ती, हेडगेवार जयन्ती।
११	३ गु	**भद्रारंभः२९:४२घं·**, गौरी तृतीया, मनोरथ तृतीया, मेवाड़ उत्सव आरम्भ।
१२	४ शु	**भद्रांतः१७:०७घं·**, पूर्वभाद्रेमङ्गलःघं·०२:४३, रेवत्यांशुक्रःघं·२३:११।
१३	५ श	मेवाड़ उत्सव पूर्ण, **पुण्यकालं, १२:२९–१८:४७घं·**, गुरु हरगोविन्द पुण्यदिवस (२)
१४	६ र	अशोक षष्ठी (बंगाल), मीन मलमास समाप्त।
१५	७ चं	**भद्रा १५:५५–२८:०९घं·**, दुर्गापूजा प्रारम्भ (बंगाल) सूर्यसप्तमी, मोदन व्रत।
१६	८ मं	श्री भवानी उत्पत्ति, बलिदान, अशोककलिका प्राशनम्।
१७	९ बु	**श्रीरामजन्मभूमि नूतन मन्दिरे प्रथम जन्मोत्सव अयोध्या, पाठ हवन पूर्णाहुति बलिदान,** (३)
१८	१० गु	**गण्डान्तः१६:२५**, धर्मराजदशमी। (३) **गण्डान्तारम्भः२७:२१।**
१९	११ शु	**भद्रा ८:०१–२०:५८घं·**, उत्तरफल्गुन्यांकेतुःघं·०४:२९।
२०	१२ श	श्यामबाबा द्वादशी। (२) कड़क पूजा (बंगाल), दशलक्षण पर्व आरम्भ, (२)
२१	१३ र	अनंग त्रयोदशी। (२) आश्वन्यांमेषेरविःघं·२३:२५, कृत्तिकायांगुरुःघं·११:२५।
२२	१४ चं	**भद्रारंभः२६:५८घं·**, दशलक्षण पर्व समाप्त।
२३	१५ मं	**भद्रांतः१५:४९घं·, वैशाखस्नान आरम्भ, श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा,** सर्वदेव दमनकोत्सव, मन्वादि, छत्रपति शिवाजी पुण्यदिवस, आश्वन्यांशुक्रःघं·१७:२७।

❀ चैत्रशुक्लपक्ष – कृत्य एवं मुहूर्त्त ❀

❀ **नववर्षारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा–** यदि उदयकाल में प्रतिपदा का मान स्वल्प भी हो तो उसी दिन वर्षारम्भ होता है। यह चान्द्रवर्ष होता है– *तत्रौदयिकी प्रतिपद् ग्राह्या। दिनद्वये उदयव्यासौ अव्यासौ वा पूर्वा (धर्मसिन्धु, परिच्छेद २, वर्षनिर्णय)।*

❀ **वासन्तिक नवरात्रि–** चैत्र शुक्ल प्रतिपदा मुहूर्त्तमात्र भी द्वितीयायुक्त ग्राह्य होती है– *''परयुता मुहूर्त्तमात्रापि प्रतिपद् ग्राह्या (धर्मसिन्धु, द्वितीय परिच्छेद)।''* **घटस्थापना मुहूर्त्त – अभिजित मुहूर्त्त में १२:०६ से १२:५४ तक** नवरात्रि में चित्रा नक्षत्र एवं वैधृति योग में कभी भी कलशस्थापन नहीं करना चाहिए।(रुद्रयामल) इस वर्ष वैधृति योग होने से अभिजित मुहूर्त्त में कलश–स्थापन का श्रेष्ठ मुहूर्त्त है।

अखण्ड दीप जलाने का मन्त्र – अखण्डदीपकं देव्याः प्रीतये नवरात्रिकम्। प्रज्वालयेद् अहोरात्रं एकचित्तं दृढव्रतः।।

❀ **श्रीरामनवमी–** चैत्र शुक्ल नवमी के मध्याह्न में पुनर्वसु नक्षत्र, कर्क लग्न में प्रभु श्रीराम का जन्म हुआ था। व्रतपूर्वक श्रीरामजी का जन्माभिषेक कर श्रीरामचरितमानस, श्रीरामरक्षास्तोत्र का पाठ करे। श्रीरामचन्द्रजी व तीनों भाइयों को निम्न मंत्र से अर्घ्य दें– *दशाननवधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च। राक्षसानां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च।*
परित्राणाय साधूनां जातो रामः स्वयं हरिः । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं भ्रातृभिः सहितोनघ ।।

❀ **दुर्गापाठ हवन व बलिदान–** नवमी तिथि में दुर्गापाठ का हवन करना चाहिए– *''नवम्यां पूजां विधाय होमः कार्यः''* (धर्मसिन्धु)। नवरात्रि पारणा दशमी में होती है– *''दशम्यामेव पारणा''*।

❀ **निम्बपत्रभक्षण–** चैत्र शुक्लपक्ष में निम्ब की सुकोमल पत्तियों एवं पुष्पों का चूर्ण बनाकर उसमें मरीचि (कालीमिर्च), सेंधा नमक, हींग, जीरा एवं आजवाइन को सम मात्रा में मिला कर खाने से वर्षपर्यन्त रक्तविकार एवं चर्मरोग नहीं होता है।
''पारिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषतः । सपुष्पाणि समानीय चूर्णं कृत्वा विधानतः।
मरीचिं लवणं हिंगुं जीरकेण च संयुतम्। अजमोदयुतं कृत्वा भक्षयेद्रोगशान्तये।।''

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	१२:०४–१३:४४
३०	१२:००–१३:४३

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

अप्रैल	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीनः
९	०६:२७	०८:०३	०९:५९	१२:१३	१४:३३	१६:४९	१९:०४	२१:२३	२३:४२	०१:४७	०३:३२	०५:०१
१०	०६:२३	०७:५९	०९:५५	१२:०९	१४:२९	१६:४५	१९:००	२१:१९	२३:३८	०१:४३	०३:२८	०४:५७
११	०६:१९	०७:५५	०९:५१	१२:०५	१४:२५	१६:४१	१८:५६	२१:१५	२३:३४	०१:३९	०३:२४	०४:५३
१२	०६:१५	०७:५१	०९:४७	१२:०१	१४:२१	१६:३८	१८:५२	२१:११	२३:३०	०१:३६	०३:२०	०४:४९
१३	०६:११	०७:४७	०९:४३	११:५७	१४:१७	१६:३४	१८:४९	२१:०७	२३:२६	०१:३२	०३:१६	०४:४५
१४	०६:०७	०७:४३	०९:३९	११:५३	१४:१३	१६:३०	१८:४५	२१:०३	२३:२२	०१:२८	०३:१२	०४:४१
१५	०६:०३	०७:३९	०९:३५	११:४९	१४:०९	१६:२६	१८:४१	२०:५९	२३:१८	०१:२४	०३:०८	०४:३७
१६	०६:००	०७:३५	०९:३१	११:४५	१४:०५	१६:२२	१८:३७	२०:५६	२३:१४	०१:२०	०३:०४	०४:३३
१७	०५:५६	०७:३२	०९:२७	११:४१	१४:०१	१६:१८	१८:३३	२०:५२	२३:१०	०१:१६	०३:००	०४:२९
१८	०५:५२	०७:२८	०९:२३	११:३७	१३:५७	१६:१४	१८:२९	२०:४८	२३:०६	०१:१२	०२:५६	०४:२६
१९	०५:४८	०७:२४	०९:१९	११:३३	१३:५३	१६:१०	१८:२५	२०:४४	२३:०३	०१:०८	०२:५२	०४:२२
२०	०५:४४	०७:२०	०९:१५	११:२९	१३:५०	१६:०६	१८:२१	२०:४०	२२:५९	०१:०४	०२:४९	०४:१८
२१	०५:४०	०७:१६	०९:११	११:२५	१३:४६	१६:०२	१८:१७	२०:३६	२२:५५	०१:००	०२:४५	०४:१४
२२	०५:३६	०७:१२	०९:०७	११:२२	१३:४२	१५:५८	१८:१३	२०:३२	२२:५१	००:५६	०२:४१	०४:१०
२३	०५:३२	०७:०८	०९:०३	११:१८	१३:३८	१५:५४	१८:०९	२०:२८	२२:४७	००:५२	०२:३७	०४:०६

अप्रैल	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
९	**सर्वार्थ** ०८·२९ से, **अमृत** २२·०४ से
१०	**सिद्ध** २०·०६ तक, **सर्वार्थ** ०७·०६ से, **रवियोग** ०७·०६ से (१)
११	**अमृत** १८·२६ तक, **रवियोग** २९·१२ तक, (१) द·ति·२
१२	**अमृत** १७·०७ तक, **रवियोग** २८·४८ से
१३	**रवियोग** २८·५० तक, **अमृत** १६·१४ से, **रवियोग** २८·५० से
१४	**रवियोग** २९·२२ तक, **त्रिपुष्करः** २९·२२ से, द·ति·६
१६	**सिद्ध** १६·३१ तक
१७	**रवियोग** ०७·५४ से
१८	**सिद्ध** १९·०८ तक, **रवियोग** अहोरात्र
१९	**सिद्ध** २०·५८ तक, **रवियोग** १२·१० तक
२०	**त्रिपुष्करः** १४·४३ से २३·०१ तक
२१	**सर्वार्थ** १७·२० तक, **सिद्ध** २५·०४ से, **सर्वार्थ** १७·२० से **रवियोग** १७·२० से
२२	**रवियोग** १९·५१ तक, **अमृत** २६·५८ से, द·न·चि

❀ सृष्टि और सतयुग का आरम्भ **चैत्र शुक्ल प्रतिपदा** को हुआ था। इस दिन संवत्सर पूजन, नवरात्रि घटस्थापन, पंचांग श्रवण, निज गृह पर ध्वजारोपण करें, श्रीठाकुरजी को नवीन पोशाक धारण करावें, वंदनवार लगावें, शंखध्वनि पूर्वक **नव संवत्सर** का अभिनन्दन करें।

❀ **चैत्र शुक्ल नवमी** को उपवास व भक्तिपूर्वक विधिविधान से भगवान् श्री रामचन्द्रजी का प्राकट्य महोत्सव करें। **श्रीरामनवमी** पूर्वविद्धा त्याज्य है। नवमी पूर्वविद्धा हो तो दशमी में व्रत करे और दशमी की वृद्धि ना हो तो पारणा का त्याग करने में भी कोई दोष नहीं।

❀ श्रीसनत्कुमारों ने कहा है– **चैत्र शुक्ल एकादशी** को श्रीभगवान् को डोल पर विराजमान करके भक्तिपूर्वक पूजाकर उन्हें झुलावें।

❀ **चैत्र शुक्ल पूर्णिमा** को परम महाभागवत अंजनीनन्दन श्री हनुमान्जी का जयन्ती उत्सव उल्लासपूर्वक संपन्न करें।

वैशाख कृष्णपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, २४ अप्रैल से ८ मई, २०२४ ईस्वी

ग्रहस्थिति २४:४:२०२४:– मार्गी गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपूर्वास्तः, मार्गी शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, वक्री बुधःपूर्वोदितः,

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
अप्रैल	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	अप्रैल	२४ अप्रैल से ८ मई, २०२४
२४	१ बु	५९:२७	२९·२७	स्वाती	४५:०५	२४·०१	सिद्धि	५६:३५	२८·३६	बाल	२८:०६	कौल	५९:२७	३२:१४	५:५८	१८:५२	तुला	अहोरात्र	धूम्र	२४	श्रीएकलिंगजी पाटोत्सव
२५	२ गु	६०:००	अहोरात्र	विशा·	४८:४५	२५·२७	व्यति·	५५:३२	२८·१०	तैति	३०:३२	गर	६०:००	३२:१८	५:५७	१८:५३	वृश्·३२:५७	१९·०८	प्रवर्द्ध	२५	व्यतीपात पुण्यम्
२६	२ शु	०१:१९	०६:२८	अनु·	५१:११	२६·२५	वरी·	५३:३०	२७·२०	गर	०१:१९	वणि	३१:४४	३२:२२	५:५६	१८:५३	वृश्चिक	अहोरात्र	राक्षस	२६	आशा द्वितीया
२७	३ श	०१:५२	०६:४०	ज्ये·	५२:२२	२६·५२	परिघ	५०:२७	२६·०६	विष	०१:५२	बव	३१:३८	३२:२५	५:५६	१८:५४	ध·५२:२२	२६·५२	मुसल	२७	**संकष्टी श्रीगणेशचतुर्थी, चन्द्रोदय घं·२२:१५**
२८	४ र ५ र	०१:०८ ५८:०२	०६:२२ २९:०८	मूल	५२:२१	२६·५१	शिव	४६:२७	२४·२९	बाल	०१:०८	कौल	३०:१८	३२:२९	५:५५	१८:५४	धनु	अहोरात्र	सिद्धि	२८	सती अनुसुइया जयन्ती
२९	६ चं	५६:०८	२८·२१	पू·षा·	५१:१५	२६·२४	सिद्ध	४१:३२	२२·३१	गर	२७:४८	वणि	५६:०८	३२:३२	५:५४	१८:५५	धनु	अहोरात्र	उत्पात	२९	श्रीकोकिला षष्ठी, गुरु तेगबहादुर जयन्ती
३०	७ मं	५२:०९	२६·४५	उ·षा·	४९:११	२५·३३	साध्य	३५:५०	२०·१३	विष	२४:१६	बव	५२:०९	३२:३६	५:५३	१८:५५	म·०५:५०	०८·१३	मानस	३०	गुरु अर्जुनदेव जयन्ती
मई	८ बु	४७:२२	२४·४९	श्रवण	४६:१९	२४·२४	शुभ	२९:२७	१७·३९	बाल	१९:५२	कौल	४७:२२	३२:३९	५:५२	१८:५६	मकर	अहोरात्र	छत्र	मई	**श्रीकालाष्टमी, बूढ़ा बास्योड़ा, श्रीशीतलाष्टमी**
२	९ गु	४१:५८	२२·३९	धनि·	४२:५१	२३·०१	शुक्ल	२२:३१	१४·५२	तैति	१४:४५	गर	४१:५८	३२:४३	५:५१	१८:५७	कुं·१४:४०	११·४३	श्रीवत्स	२	
३	१० शु	३६:०९	२०·१८	शत·	३८:५७	२१·२५	ब्रह्म	१५:११	११·५५	वणि	०९:०७	विष	३६:०९	३२:४६	५:५०	१८:५७	कुंभ	अहोरात्र	सौम्य	३	
४	११ श	३०:०५	१७·५२	पू·भा·	३४:४९	१९·४५	ऐन्द्र वैधृति	०७:३६ ५२:१७	०८·५२ २६:४५	बव	०३:०९	बाल	३०:०५	३२:४९	५:५०	१८:५८	मी·२०:५२	१४·११	कालदंड	४	**श्रीवरूथिनी एकादशी (सर्वेषाम्)**
५	१२ र	२३:५९	१५·२५	उ·भा·	३०:४१	१८·०५	विष्कु·	५२:१६	२६·४३	तैति	२३:५९	गर	५०:५९	३२:५३	५:४९	१८:५८	मीन	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	५	**प्रदोष व्रतम्**
६	१३ चं	१८:०४	१३·०२	रेवती	२६:४६	१७·३०	प्रीति	४४:५४	२३·४६	वणि	१८:०४	विष	४५:१४	३२:५६	५:४८	१८:५९	मे·२६:४६	१७·३०	मातङ्ग	६	**मास शिवरात्रि**
७	१४ मं	१२:३२	१०·४८	अश्वि·	२३:१४	१५·०५	आयु·	३७:५५	२०·५७	शकु	१२:३२	चतु	३९:५७	३२:५९	५:४७	१८:५९	मेष	अहोरात्र	अमृत	७	**अमावस्या (पितृकार्य),**
८	३० बु	०७:३३	०८·४८	भरणी	२०:१९	१३·५४	सौभा·	३१:२७	१८·२२	नाग	०७:३३	किं	३५:१९	३३:०२	५:४७	१९:००	वृ·३४:४२	१९·३९	काण	८	**अमावस्या (देवकार्य)**, श्रीशुकदेव जयन्ती

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क अप्रैल	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः (मा/व) रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
२४	१ बु	००:१०:०१:३०	०६:१०:४१:४१	१०:२९:३६:१४	मार्गी१८:२५:५९	००:२९:०९:३२	००:००:३९:१५	१०:१८:५१:४१	०५:२३:०३:५४	४६:०७:२७	उ·१२:४३:२६	+ १:०१	१९:२४
२५	२ गु	००:१०:५९:४९	०६:२३:०५:४८	११:००:२३:३०	११:१८:३०:१८	००:२९:२३:३६	००:०१:५३:२८	१०:१८:५७:३०	०५:२३:००:४४	४६:०९:१५	उ·१३:०३:४६	+ १:१३	२०:२१
२६	२ शु	००:११:५८:०५	०७:०५:४२:४१	११:०१:१०:४३	११:१८:४१:१३	००:२९:३७:४१	००:०३:०७:४१	१०:१९:०३:१५	०५:२२:५७:३३	४६:११:०३	उ·१३:२३:५४	+ १:२५	२१:१७
२७	३ श	००:१२:५६:१९	०७:१८:३३:५७	११:०१:५७:५४	११:१८:५८:३५	००:२९:५१:४७	००:०४:२१:५३	१०:१९:०८:५६	०५:२२:५४:२२	४६:१२:५०	उ·१३:४३:४८	+ १:३६	२२:१५
२८	४ र	००:१३:५४:३१	०८:०१:४०:३४	११:०२:४५:०३	११:१९:२२:११	०१:००:०५:५५	००:०५:३६:०४	१०:१९:१४:३३	०५:२२:५१:१२	४६:१४:३६	उ·१४:०३:२९	+ १:४६	२३:१२
२९	६ चं	००:१४:५२:४०	०८:१५:०२:४२	११:०३:३२:१०	११:१९:५१:४६	०१:००:२०:०५	००:०६:५०:१५	१०:१९:२०:०६	०५:२२:४८:०१	४६:१६:२२	उ·१४:२२:५६	+ १:५७	२४:०४
३०	७ मं	००:१५:५०:४८	०८:२८:३९:४५	११:०४:१९:१५	११:२०:२७:०६	०१:००:३४:१६	००:०८:०४:२४	१०:१९:२५:३५	०५:२२:४४:५०	४६:१८:०६	उ·१४:४२:०९	+ २:०६	२४:५५
मई	८ बु	००:१६:४८:५४	०९:१२:३०:२४	११:०५:०६:१७	११:२१:०७:५४	०१:००:४८:२८	००:०९:१८:३३	१०:१९:३०:५९	०५:२२:४१:४०	४६:१९:४९	उ·१५:०१:०७	+ २:१५	२५:३९
२	९ गु	००:१७:४६:५८	०९:२६:३२:३८	११:०५:५३:१७	११:२१:५३:५२	०१:०१:०२:४१	००:१०:३२:४२	१०:१९:३६:२०	०५:२२:३८:२९	४६:२१:३१	उ·१५:१९:५१	+ २:२४	२६:२३
३	१० शु	००:१८:४४:५९	१०:१०:४३:५०	११:०६:४०:१५	११:२२:४४:४३	०१:०१:१६:५५	००:११:४६:४९	१०:१९:४१:३६	०५:२२:३५:१८	४६:२३:१२	उ·१५:३८:२०	+ २:३२	२७:०२
४	११ श	००:१९:४२:५९	१०:२५:००:५६	११:०७:२७:१०	११:२३:४०:११	०१:०१:३१:१०	००:१३:००:५६	१०:१९:४६:४७	०५:२२:३२:०८	४६:२४:५२	उ·१५:५६:३३	+ २:४०	२७:४०
५	१२ र	००:२०:४०:५७	११:०९:२०:३०	११:०८:१४:०२	११:२४:३९:५८	०१:०१:४५:२६	००:१४:१५:०१	१०:१९:५१:५४	०५:२२:२८:५७	४६:२६:३१	उ·१६:१४:३०	+ २:४७	२८:१९
६	१३ चं	००:२१:३८:५३	११:२३:३८:३२	११:०९:००:५२	११:२५:४३:५०	०१:०१:५९:४३	००:१५:२९:०६	१०:१९:५६:५७	०५:२२:२५:४७	४६:२८:०९	उ·१६:३२:११	+ २:५३	२८:५७
७	१४ मं	००:२२:३६:४६	००:०७:५१:२९	११:०९:४७:३८	११:२६:५१:३१	०१:०२:१४:०१	००:१६:४३:११	१०:२०:०१:५५	०५:२२:२२:३६	४६:२९:४५	उ·१६:४९:३६	+ २:५९	२९:४२
८	३० बु	००:२३:३४:३८	००:२१:५६:११	११:१०:३४:२२	११:२८:०२:४६	०१:०२:२८:१९	००:१७:५७:१४	१०:२०:०६:४८	०५:२२:१९:२५	४६:३१:२१	उ·१७:०६:४५	+ ३:०४	०६:२६

२८ अप्रैल सूर्योदयकालीन तिथि:४
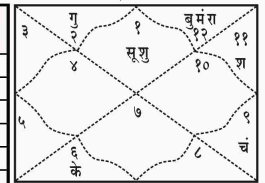
४ मई सूर्योदयकालीन तिथि:११
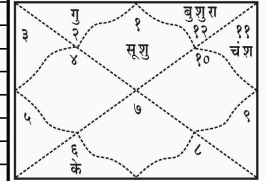
वैशाख कृष्णपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, २४ अप्रैल से ८ मई, २०२४ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःदक्षिण । ऋतुःवसन्त । उत्तरायणं । सौम्यगोलः । ति·३० अयनांशा:२२:५२:३३

दिनाङ्क अप्रैल	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
२४	१ बु	मीनेमङ्गलःघं·१८:१०, मार्गी बुधःघं·१५:२३।
२५	२ गु	मेला श्रीमहावीर जी समाप्त।
२६	२ शु	**भद्रारंभ:१८:३८घं·।**
२७	३ श	**भद्रांत:६:४१घं·, गण्डान्तारम्भ:२०:४९,** भरण्यांरविःघं·१५:४२, वृषेगुरुःघं·२०:०१।
२८	४ र	**गण्डान्त:८:५५,** श्रीमलूकदासजी जयन्ती, उत्तरभाद्रेमङ्गलः घं·२३:५१।
२९	६ चं	**भद्रारंभ:२८:२२घं·।**
३०	७ मं	**भद्रांत:१५:३६घं·, अभिजित:१९:४७–२७:०५।**
मई	८ बु	**बुधाष्टमी,** विश्व मजदूर दिवस।
२	९ गु	**पंचकारंभ:११:४३।**
३	१० शु	**पंचक, भद्रा ९:३०–२०:१९घं·।**
४	११ श	**पंचक, श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती,** वैधृति पुण्यम्, भरण्यांशुक्रःघं·१२:०९।
५	१२ र	**पंचक।**
६	१३ चं	**पंचकान्त:१६:३१, भद्रा १३:०२–२३:५४घं·, गण्डान्त:१०:५४–२२:०९,** ①
७	१४ मं	। ② पूर्वभाद्रेशनिःघं·२०:४१।
८	३० बु	।

ति	**श्राद्धकाल** घं·मि·
१	११:५९–१३:४३
३०	११:५७–१३:४३

❀ वैशाख मास कृत्य ❀

इस मास में भगवान् श्रीहरि की पूजा करने से दारुण पाप जलकर भस्म हो जाते हैं। वैशाख में प्रात:काल पीपल वृक्ष की जड़ में प्रतिदिन जल देने से अपूर्व पुण्य की प्राप्ति व कुल का तारण होता है- ''**अनेन अनेककुलतारणं फलम् ।**''

वैशाख स्नान का महत्त्व- चैत्र पूर्णिमा से लेकर वैशाख पूर्णिमा तक सूर्योदयपूर्व संकल्पपूर्वक स्नान करने से समस्त पाप का नाश होता है। अशक्त होने की स्थिति में वैशाख शुक्ल त्रयोदशी से पूर्णिमा तक सूर्योदयपूर्व स्नान करना चाहिए। वैशाखमास में तुलसीपत्र से भगवान् विष्णु की त्रिकाल पूजा करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है-

माधवं सकलं मासं तुलस्या योऽर्चयेन्नरः ।
त्रिसन्ध्यं मधुहन्तारं नास्ति तस्य पुनर्भवः।

❀ शनि, रवि, मंगल को दाढ़ी-बाल न बनवायें ❀

शनि, रवि और मंगलवार को दाढ़ी, बाल, नाखून कटवाने से आयु घटती है। शेष दिनों में क्षौर कराने से आयु बढ़ती है। अनुराधा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, कृत्तिका और मघा नक्षत्र में भी दाढ़ी-बाल कटवाने से आयु की हानि होती है। **युक्षयोऽनुराधाग्नित्र्युत्तरारोहिणीमघे।।** जो लोग प्रतिदिन दाढ़ी बनाते हैं, उनपर यह दोष नहीं लगता है।

❀ नागशाप, कालसर्प व राहु-केतु शान्त्यर्थ वैदिक प्रयोग ❀

संकल्प- ॐ ... देशकाल संकीर्त्य ... अमुक गोत्रोत्पन्नोहं अमुक नामाहं मम जन्मकुण्डल्यां सामुद्रिकलक्षणे वा सर्पशापजनित-दोषोपशान्तये च ममेह जन्मनि जन्मान्तरे वा ज्ञानाद् अज्ञानाद् वा कृतस्य सर्पवधस्य तदुत्थदोषस्य परिहारार्थं जीविका- व्यवसाय- विद्या- विवाह- सत्पुत्र स्वास्थ्य- राजसत्ता- पदप्रतिष्ठासम्बन्धी समस्तविघ्ननिरसनपूर्वकं साफल्यं सम्प्राप्तये, प्राप्तश्रीरक्षणार्थं, राहुकेतुजनित समस्त-अशुभफल निवारणार्थं शुभफलप्राप्तिकामनया नागशापशान्त्यर्थं कालसर्पदोषशान्त्यर्थं च श्रीसर्पदेवताप्रीत्यर्थं यजुर्वेदीय त्रिमन्त्रात्मक सर्पसूक्तस्य द्वादशशत पाठ कर्माऽहं करिष्ये/ ब्राह्मणानां कारयिष्ये।

विनियोगः - ॐ अस्य सर्पसूक्तस्य देवश्रवा ऋषिः भुरिगुष्णिक् अनुष्टुप् निचृदनुष्टुप् नानाछन्दांसि सर्पसमूह देवता मम संकल्प सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

सर्पगायत्री-भुजङ्गेशाय विद्महे सर्पराजाय धीमहि । तन्नो नागः प्रचोदयात्।।

❀ सर्पसूक्तम् ❀

ॐ नमो अस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।।१।।
येऽदो रोचने दिवो ये वा सूर्यस्य रश्मिषु ।
येषामप्सु सदः कृतं तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।।२।।
या इषवो यातुधानानां ये वा वनस्पतीँरनु ।
ये वा वटेषु शेरते तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।।३।।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

अप्रैल	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीनः
२४	०५:२८	०७:०४	०८:५९	११:१४	१३:३४	१५:५०	१८:०५	२०:२४	२२:४३	००:४८	०२:३३	०४:०२
२५	०५:२४	०७:००	०८:५५	११:१०	१३:३०	१५:४६	१८:०१	२०:२०	२२:३९	००:४४	०२:२९	०३:५८
२६	०५:२०	०६:५६	०८:५२	११:०६	१३:२६	१५:४२	१७:५७	२०:१६	२२:३५	००:४०	०२:२५	०३:५४
२७	०५:१६	०६:५२	०८:४८	११:०२	१३:२२	१५:३८	१७:५३	२०:१२	२२:३१	००:३६	०२:२१	०३:५०
२८	०५:१२	०६:४८	०८:४४	१०:५८	१३:१८	१५:३४	१७:४९	२०:०८	२२:२७	००:३२	०२:१७	०३:४६
२९	०५:०८	०६:४४	०८:४०	१०:५४	१३:१४	१५:३१	१७:४५	२०:०४	२२:२३	००:२९	०२:१३	०३:४२
३०	०५:०४	०६:४०	०८:३६	१०:५०	१३:१०	१५:२७	१७:४२	२०:००	२२:१९	००:२५	०२:०९	०३:३८
मई	०५:००	०६:३६	०८:३२	१०:४६	१३:०६	१५:२३	१७:३८	१९:५६	२२:१५	००:२१	०२:०५	०३:३४
२	०४:५६	०६:३२	०८:२८	१०:४२	१३:०२	१५:१९	१७:३४	१९:५२	२२:११	००:१७	०२:०१	०३:३०
३	०४:५२	०६:२८	०८:२४	१०:३८	१२:५८	१५:१५	१७:३०	१९:४९	२२:०७	००:१३	०१:५७	०३:२६
४	०४:४८	०६:२४	०८:२०	१०:३४	१२:५४	१५:११	१७:२६	१९:४५	२२:०३	००:०९	०१:५३	०३:२२
५	०४:४४	०६:२१	०८:१६	१०:३०	१२:५०	१५:०७	१७:२२	१९:४१	२२:००	००:०५	०१:४९	०३:१९
६	०४:४१	०६:१७	०८:१२	१०:२६	१२:४६	१५:०३	१७:१८	१९:३७	२१:५६	००:०१	०१:४५	०३:१५
७	०४:३७	०६:१३	०८:०८	१०:२२	१२:४३	१४:५९	१७:१४	१९:३३	२१:५२	२३:५७	०१:४२	०३:११
८	०४:३३	०६:०९	०८:०४	१०:१८	१२:३९	१४:५५	१७:१०	१९:२९	२१:४८	२३:५३	०१:३८	०३:०७

अप्रैल	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
२४	**अमृत** २९·२७ तक, **सिद्ध** २९·२७ से
२६	**सर्वार्थ** २६·२५ तक, **दग्ध·नक्षत्र·ज्ये·** २६·२५ से
२७	**सिद्ध** ०६·४० से
२८	**सर्वार्थ** २६·५१ तक, **अमृत** ०६·२२ से
२९	**सिद्ध** २८·२१ तक, **रवियोग** २६·२४ से, **दग्ध·तिथि·६** २८·२१ तक
३०	**अमृत** २६·५४ तक, **त्रिपुष्कर** अहोरात्र, **सिद्ध** २६·४५ से, **रवियोग** २५·३३ तक, **दग्ध·नक्षत्र·उषा** २५·३३ तक
१	**दग्ध·नक्षत्र·धनि·** २४·२४ से
२	**सिद्ध** २२·३९ से
३	**सिद्ध** २०·१८ से
४	**अमृत** १७·५२ तक, **त्रिपुष्कर** १७·५२ से १९·४५ तक
५	**सर्वार्थ** १८·०५ तक, **सिद्ध** १५·२५ से
७	**सर्वार्थ** १५·०५ तक
८	**अमृत** ०८·४८ से, **सर्वार्थ** १३·५४ से

❀ वैशाख मास में विशेष दान ❀

वैशाख में जलदान करने का विशेष पुण्य है। मिट्टी के घड़े द्रोण कलश में सुगन्धित शीतल जल भरकर दान करने का अपूर्व महत्व होता है। **इस मास में शिवलिंग पर कलश से जल टपकाने की व्यवस्था करना अक्षय पुण्यकारी होता है।** गर्मी से बचाने वाली वस्तु, मटका, जल दान, जूता, चप्पल, छाता, कपड़ा, पंखा, चंदन, मलमल वस्त्र, कर्पूर, ताम्बूल, फूल माला, सुगन्धित पदार्थ, शर्बत, अंगूर, तरबूज, खीरा, आम्र आदि दान करने से अक्षयफल की प्राप्ति होती है। वैशाख में प्रपा (प्याऊ) लगाने का महत्व है। प्यासे पशु पक्षियों को पानी दें।

प्रपा कार्याच वैशाखे देवे देया गलन्तिका।
उपानद्व्यजनंछत्रं सूक्ष्मवासांसि चंदनम् ॥

वैशाख शुक्लपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, ९ मई से २३ मई, २०२४ ईस्वी

ग्रहस्थितिः ९:५:२०२४– मार्गी गुरुःपश्चिमास्तः, मार्गी शुक्रःपूर्वास्तः, मार्गी शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, मार्गी बुधःपूर्वोदितः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
मई	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	अप्रैल	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	मई	९ मई से २३ मई, २०२४
९	१ गु २ गु	०३:२० ५६:३८	०७·०६ २८:२५	कृत्ति·	१८:१०	१३·०२	शोभ·	२५:४०	१६·०२	बव	०३:२०	बाल	३१:३१	३३:०५	५:४६	१९:००	वृष	अहोरात्र	लुम्ब	९	गुरु अंगददेव जयन्ती, छत्रपति शिवाजी जयन्ती
१०	३ शु	५७:४१	२८·५०	रोहि·	१६:५८	१२·३३	अतिग·	२०:४०	१४·०१	तैति	२८:४२	गर	५७:४१	३३:०८	५:४५	१९:०१	मि·४६:४५	२४·२७	मित्र	१०	**अक्षय तृतीया, श्रीपरशुराम जयन्ती**
११	४ श	५६:३५	२८·२३	मृग·	१६:५१	१२·२९	सुकर्मा	१६:३३	१२·२२	वणि	२६:६०	विष	५६:३५	३३:११	५:४५	१९:०१	मिथुन	अहोरात्र	वज्र	११	**श्रीपरशुराम जयन्ती (निम्बार्क), वैनायकी गणेशचतुर्थी**
१२	५ र	५६:४४	२८·२६	आर्द्रा	१७:५५	१२·५४	धृति	१३:२४	११·०६	बव	२६:३१	बाल	५६:४४	३३:१४	५:४४	१९:०२	मिथुन	अहोरात्र	ध्वांक्ष	१२	**श्री आद्य शंकराचार्य जयन्ती, श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती**
१३	६ चं	५८:११	२९·००	पुन·	२०:१४	१३·४९	शूल	११:१५	१०·१४	कौल	२७:१९	तैति	५८:११	३३:१७	५:४३	१९:०३	क·०४:३३	०७·३२	धूम्र	१३	**श्रीस्कन्दषष्ठी,**
१४	७ मं	६०:००	अहोरात्र	पुष्य	२३:४७	१५·१४	गण्ड	१०:०७	०९·४६	गर	२९:२१	वणि	६०:००	३३:२०	५:४३	१९:०३	कर्क	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	१४	**श्रीगंगासप्तमी**, कामदा सप्तमी, शर्करा सप्तमी
१५	७ बु	००:५०	०६·०२	आश्ले·	२८:२८	१७·०५	वृद्धि	०९:५४	०९·४०	वणि	००:५०	विष	३२:३३	३३:२३	५:४२	१९:०४	सिं·२८:२८	१७·०५	राक्षस	१५	
१६	८ गु	०४:३३	०७·३१	मघा	३४:०६	१९·२०	ध्रुव	१०:३१	०९·५४	बव	०४:३३	बाल	३६:४३	३३:२६	५:४२	१९:०४	सिंह	अहोरात्र	मुसल	१६	**श्रीदुर्गाष्टमी, श्रीबगलामुखी जयन्ती, अन्नपूर्णा अष्टमी**
१७	९ शु	०९:०५	०९·१९	पू·फा·	४०:२३	२१·५०	व्याघ·	११:४३	१०·२२	कौल	०९:०५	तैति	४१:३३	३३:२९	५:४१	१९:०५	कं·५७:०१	२८·२९	सिद्धि	१७	**श्रीजानकी नवमी (वैष्णव),**
१८	१० श	१४:०६	११·१९	उ·फा·	४६:५८	२४·२८	हर्षण	१३:१८	११·००	गर	१४:०६	वणि	४६:४०	३३:३१	५:४१	१९:०५	कन्या	अहोरात्र	उत्पात	१८	**श्रीमहावीर स्वामी कैवल्यज्ञान**
१९	११ र	१९:१२	१३·२१	हस्त	५३:२३	२७·०१	वज्र	१४:५७	११·३९	विष	१९:१२	बव	५१:३७	३३:३४	५:४०	१९:०६	कन्या	अहोरात्र	मानस	१९	**श्रीमोहिनी एकादशी (सर्वेषाम्), श्रीहितहरिवंश महाप्रभु जयन्ती**
२०	१२ चं	२३:५५	१५·१३	चित्रा	५९:१५	२९·२१	सिद्धि	१६:२०	१२·११	बाल	२३:५५	कौल	५६:०१	३३:३७	५:४०	१९:०६	तु·२६:२५	१६·१३	मुद्गर	२०	**प्रदोष व्रतम्,** श्रीपरशुराम द्वादशी, मधुसूदन द्वादशी
२१	१३ मं	२७:५४	१६·४९	स्वाती	६०:००	अहोरात्र	व्यति·	१७:११	१२·३२	तैति	२७:५४	गर	५९:३१	३३:३९	५:३९	१९:०७	तुला	अहोरात्र	ध्वज	२१	**श्रीनृसिंह जयन्ती प्रदोषे (स्मार्त्त)**
२२	१४ बु	३०:५२	१८·००	स्वाती	०४:१७	०७·२१	वरी·	१७:१८	१२·३४	वणि	३०:५२	विष	६०:००	३३:४१	५:३९	१९:०७	वृश्·५२:१८	२६·३४	धूम्र	२२	**श्रीनृसिंह जयन्ती (वैष्णव), पूर्णिमा (व्रत)**
२३	१५ गु	३२:४०	१८·४२	विशा·	०८:१२	०८·५५	परिघ	१६:३०	१२·१४	विष	०१:५६	बव	३२:४०	३३:४४	५:३८	१९:०८	वृश्चिक	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	२३	**वैशाखी पूर्णिमा (स्नान–दान), बुद्ध पूर्णिमा**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क मई	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
९	१ गु	००:२४:३२:२९	०१:०५:४९:५५	११:११:२१:०४	११:२९:१७:२२	०१:०२:४२:३८	००:१९:११:१७	१०:२०:११:३६	०५:२२:१६:१५	४६:३२:५५	उ·१७:२३:३६	+ ३:०९	०६:२५
१०	३ शु	००:२५:३०:१७	०१:१९:३०:२८	११:१२:०७:४२	००:००:३५:०६	०१:०२:५६:५७	००:२०:२५:१८	१०:२०:१६:२०	०५:२२:१३:०४	४६:३४:२७	उ·१७:४०:१०	+ ३:१३	०७:१७
११	४ श	००:२६:२८:०३	०२:०२:५६:२२	११:१२:५४:१७	००:०१:५५:४६	०१:०३:११:१७	००:२१:३९:१९	१०:२०:२०:५९	०५:२२:०९:५३	४६:३५:५८	उ·१७:५६:२६	+ ३:१७	०८:०९
१२	५ र	००:२७:२५:४८	०२:१६:०६:५०	११:१३:४०:४९	००:०३:१९:१०	०१:०३:२५:३७	००:२२:५३:२०	१०:२०:२५:३३	०५:२२:०६:४३	४६:३७:२८	उ·१८:१२:२५	+ ३:२०	०९:०६
१३	६ च	००:२८:२३:३१	०२:२९:०१:५१	११:१४:२७:१८	००:०४:४५:०७	०१:०३:३९:५७	००:२४:०७:१९	१०:२०:३०:०१	०५:२२:०३:३२	४६:३८:५६	उ·१८:२८:०५	+ ३:२२	१०:०३
१४	७ म	००:२९:२१:१२	०३:११:४२:१०	११:१५:१३:४३	००:०६:१३:२८	०१:०३:५४:१८	००:२५:२१:१८	१०:२०:३४:२५	०५:२२:००:२१	४६:४०:२३	उ·१८:४३:२७	+ ३:२४	११:००
१५	७ बु	०१:००:१८:५१	०३:२४:०९:१७	११:१६:००:०६	००:०७:४४:०३	०१:०४:०८:३९	००:२६:३५:१६	१०:२०:३८:४३	०५:२१:५७:११	४६:४१:४९	उ·१८:५८:३०	+ ३:२५	११:५६
१६	८ गु	०१:०१:१६:२९	०४:०६:२५:२१	११:१६:४६:२५	००:०९:१६:४३	०१:०४:२२:६०	००:२७:४९:१३	१०:२०:४२:५६	०५:२१:५३:६०	४६:४३:१२	उ·१९:१३:१४	+ ३:२६	१२:५१
१७	९ शु	०१:०२:१४:०५	०४:१८:३३:०५	११:१७:३२:४०	००:१०:५१:२०	०१:०४:३७:२०	००:२९:०३:०९	१०:२०:४७:०४	०५:२१:५०:४९	४६:४४:३४	उ·१९:२७:३९	+ ३:२६	१३:४३
१८	१० श	०१:०३:११:३९	०५:००:३५:३९	११:१८:१८:५२	००:१२:२७:४६	०१:०४:५१:४१	०१:००:१७:०४	१०:२०:५१:०७	०५:२१:४७:३९	४६:४५:५५	उ·१९:४१:४४	+ ३:२६	१४:३६
१९	११ र	०१:०४:०९:१२	०५:१२:३६:३५	११:१९:०५:०१	००:१४:०५:५४	०१:०५:०६:०१	०१:०१:३०:५९	१०:२०:५५:०४	०५:२१:४४:२८	४६:४७:१४	उ·१९:५५:२९	+ ३:२५	१५:२८
२०	१२ च	०१:०५:०६:४३	०५:२४:३९:५२	११:१९:५१:०६	००:१५:४५:३७	०१:०५:२०:२१	०१:०२:४४:५३	१०:२०:५८:५६	०५:२१:४१:१७	४६:४८:३१	उ·२०:०८:५४	+ ३:२३	१६:२१
२१	१३ म	०१:०६:०४:१२	०६:०६:४८:५९	११:२०:३७:०८	००:१७:२६:४९	०१:०५:३४:४१	०१:०३:५८:४६	१०:२१:०२:४२	०५:२१:३८:०६	४६:४९:४६	उ·२०:२१:५९	+ ३:२१	१७:१६
२२	१४ बु	०१:०७:०१:४०	०६:१९:०६:६०	११:२१:२३:०५	००:१९:०९:२३	०१:०५:४९:०१	०१:०५:१२:३८	१०:२१:०६:२२	०५:२१:३४:५६	४६:५०:५९	उ·२०:३४:४३	+ ३:१८	१८:१२
२३	१५ गु	०१:०७:५९:०७	०७:०१:३६:३२	११:२२:०८:५९	००:२०:५३:१४	०१:०६:०३:२०	०१:०६:२६:३०	१०:२१:०९:५७	०५:२१:३१:४५	४६:५२:११	उ·२०:४७:०६	+ ३:१५	१९:०८

११ मई सूर्योदयकालीन तिथिः**४**

१९ मई सूर्योदयकालीन तिथिः**११**
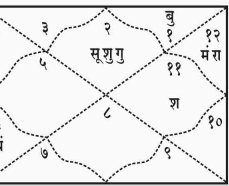
वैशाख शुक्लपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, ९ मई से २३ मई, २०२४ ईस्वी

पक्षान्तः– कालःपश्चिम । ऋतुःवसन्त वृषार्कतः ऋतुःग्रीष्म । उत्तरायणं । सौम्यगोलः, ति·१५ अयनांशाः२२:५२:३६

दिनाङ्क मई	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
९	१ गु	आश्विन्यांबुधःघं·१९:१०।
१०	३ शु	चन्दन श्रृंगार, त्रेतायुगादि, कल्पादि, श्रीमातंगी जयन्ती, जलकलश दान।
११	४ श	**भद्रा १६:३३–२८:२३घं·**, कृत्तिकायांरविःघं·१०:४३।
१२	५ र	संत श्री सूरदास जयन्ती। ② श्रीकमला सप्तमी, वृषेरविःघं·२१:५२।
१३	६ चं	, चन्दनषष्ठी।
१४	७ मं	**भद्रारंभः३०:०३घं·, वृष संक्रान्ति पुण्यकालं १२:२३–१९:०३घं·**, ②
१५	७ बु	**गण्डान्तः१०:३६–२३:३८, भद्रा ६:०३–१८:४४घं·**, निम्ब सप्तमी, ③
१६	८ गु	श्रीजानकी नवमी (स्मार्त्त), रेवत्यांमङ्गलःघं·०२:३०। ③ कृत्तिकायांशुक्रःघं·०७:२२।
१७	९ शु	।
१८	१० श	**भद्रारंभः२४:२१घं·**, वृषेशुक्रःघं·००:१५, भरण्यांबुधःघं·१८:३७।
१९	११ र	**भद्रांतः१३:२१घं·, श्री लक्ष्मीनारायण एकादशी।**
२०	१२ चं	श्री रुक्मिणी द्वादशी।
२१	१३ मं	**प्रदोषे श्री छिन्नमस्ता जयन्ती**, व्यतीपात पुण्यम्।
२२	१४ बु	**भद्रा १८:००–३०:२५घं·**, गुरु अमरदास जयन्ती।
२३	१५ गु	**भद्रांतः६:२५घं·, श्रीकूर्म जयन्ती, श्रीराधारमणजी पाटोत्सव, श्रीबुद्ध जयन्ती, श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा, पीपल पूर्णिमा**, मेला देवयानी सांभर।

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
१	११:५७–१३:४३
१५	११:५६–१३:४४

❀ वैशाख मास कृत्य ❀

❀ **अक्षयतृतीया**– वैशाख शुक्ल तृतीया को अक्षय तृतीया पूर्वाह्नव्यापिनी ग्राह्य होती है। दो दिन पूर्वाह्न में होने पर अगली तिथि ग्राह्य होती है। द्वितीया विद्धा अग्राह्य व चतुर्थी विद्धा शुभ होती है–

वैशाखशुक्लतृतीया अक्षय्यतृतीयोच्यते।
सापूर्वाह्नव्यापिनीग्राह्या। दिनद्वयेपितद्व्याप्तौपरैव।

(निर्णयसिन्धु)। इसमें जप, होम, पितृतर्पण, तिल या स्वर्ण आदि दान का अक्षयफल होता है। यह युगादि तिथि भी है।

❀ **चन्दनोत्सव**– भी इसी दिन करें। श्रीठाकुरजी को अभ्यंग पूर्वक स्नान कराकर गुलाब जल में घिसे हुए केशर–कपूर–चन्दन का सर्वांग में लेपन करें, अत्यन्त महीन–वस्त्र धारण करावें, आभूषण–पुष्पादि से श्रृंगार कर सिंहासन पर विराजमान करें।

❀ **श्रीगंगासप्तमी**– वैशाख शुक्ल सप्तमी के दिन महर्षि जह्नु ने अपने दाहिने कान से गंगा को पृथ्वी पर छोड़ा था। गंगा सप्तमी मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्य होती है। दोनों दिन मध्याह्न व्यापिनी होने, या न होने पर पूर्वातिथि ग्राह्य होती है।

❀ श्रीनृसिंह मंत्रराज ❀

विनियोगः- ॐ अस्य श्री नृसिंह मन्त्रराजस्य ब्रह्मा ऋषिः अनुष्टुप् छंदः नृसिंह देवता हं बीजं ई शक्तिः श्रीनृसिंहप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः

सौम्य ध्यान -जान्वोरासक्ततीक्ष्णस्वनखरुचिलसद्बाहुसंस्पृष्टं,
केशश्चक्रं खड्गं च दोभ्यां दधदनलसमज्योतिषा ग्रस्तदैत्यः ।
ज्वालामालापरीतं रविशशिदहनत्रीक्षणं दीप्तजिह्वं,
दंष्ट्रोग्रं धूतकेशं वदनमपि वहन् पातु वो नारसिंहः ।।

मन्त्रः- **ॐ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतो मुखम् ।**
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युं मृत्युं नमाम्यहम् ।

इस मन्त्र के दस हज़ार जप से पुरश्चरण होता है व ३२ हज़ार जप के बाद मन्त्र प्रयोग का अधिकारी बनता है। जप पूर्णता के लिए प्रतिदिन श्रीनरसिंह भगवान् की पूजा करते रहना चाहिए। इस मंत्र के जप के बाद द्वादशाक्षर मन्त्र का जप भी करना चाहिए।

❀ द्वादशाक्षर मन्त्र ❀

विनियोगः-ॐ अस्य श्रीद्वादशाक्षरमन्त्रस्य प्रजापति ऋषिः गायत्री छन्दः वासुदेव देवता ॐ बीजं नमः शक्तिः श्रीवासुदेवप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

ध्यानम्ः-

हरिमुज्ज्वल चक्रदराब्ज गदाकुलदोः परिघं सितपद्मगतम्।
वलयांगदहारकिरीटधरं नवकुन्दरुचं प्रणमामि सदा। (प्रपंचसारे)

मन्त्रः - **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

मई	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
९	०४:२९	०६:०५	०८:००	१०:१४	१२:३५	१४:५१	१७:०६	१९:२५	२१:४४	२३:४९	०१:३४	०३:०३
१०	०४:२५	०६:०१	०७:५६	१०:११	१२:३१	१४:४७	१७:०२	१९:२१	२१:४०	२३:४५	०१:३०	०२:५९
११	०४:२१	०५:५७	०७:५२	१०:०७	१२:२७	१४:४३	१६:५८	१९:१७	२१:३६	२३:४१	०१:२६	०२:५५
१२	०४:१७	०५:५३	०७:४८	१०:०३	१२:२३	१४:३९	१६:५४	१९:१३	२१:३२	२३:३७	०१:२२	०२:५१
१३	०४:१३	०५:४९	०७:४४	०९:५९	१२:१९	१४:३५	१६:५०	१९:०९	२१:२८	२३:३३	०१:१८	०२:४७
१४	०४:०९	०५:४५	०७:४१	०९:५५	१२:१५	१४:३१	१६:४६	१९:०५	२१:२४	२३:२९	०१:१४	०२:४३
१५	०४:०५	०५:४१	०७:३७	०९:५१	१२:११	१४:२७	१६:४२	१९:०१	२१:२०	२३:२६	०१:१०	०२:३९
१६	०४:०१	०५:३७	०७:३३	०९:४७	१२:०७	१४:२४	१६:३८	१८:५७	२१:१६	२३:२२	०१:०६	०२:३५
१७	०३:५७	०५:३३	०७:२९	०९:४३	१२:०३	१४:२०	१६:३५	१८:५३	२१:१२	२३:१८	०१:०२	०२:३१
१८	०३:५३	०५:२९	०७:२५	०९:३९	११:५९	१४:१६	१६:३१	१८:४९	२१:०८	२३:१४	००:५८	०२:२७
१९	०३:४९	०५:२५	०७:२१	०९:३५	११:५५	१४:१२	१६:२७	१८:४६	२१:०४	२३:१०	००:५४	०२:२३
२०	०३:४५	०५:२१	०७:१७	०९:३१	११:५१	१४:०८	१६:२३	१८:४२	२१:००	२३:०६	००:५०	०२:२०
२१	०३:४२	०५:१७	०७:१३	०९:२७	११:४७	१४:०४	१६:१९	१८:३८	२०:५७	२३:०२	००:४६	०२:१६
२२	०३:३८	०५:१३	०७:०९	०९:२३	११:४३	१४:००	१६:१५	१८:३४	२०:५३	२२:५८	००:४३	०२:१२
२३	०३:३४	०५:१०	०७:०५	०९:१९	११:३९	१३:५६	१६:११	१८:३०	२०:४९	२२:५४	००:३९	०२:०८

मई	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
९	**अमृत** ०७·०६ से
१०	**रवियोग** १२·३३ से, **अमृत** २८·५० से
११	**सिद्ध** २८·२३ तक, **रवियोग** १२·२९ तक, **रवियोग** १२·२९
१२	**अमृत** २८·२६· तक , **रवियोग** १२·५४ तक
१३	**सिद्ध** २९·०० तक, **सर्वार्थ** १३·४९ से, **रवियोग** १३·४९ से ①
१४	**अमृत** अहोरात्र, **रवियोग** १५·१४ तक, **सर्वार्थ** १५·१४ से
१५	**सिद्ध** ०६·०२ तक ① **दग्ध·तिथि·६** २९·०० तक
१६	**अमृत** ०७·३१ तक, **रवियोग** १९·२० से
१७	**अमृत** ०९·१९ तक, **रवियोग** अहोरात्र
१८	**रवियोग** २४·२८ तक, **अमृत** ११·१९ से
१९	**सर्वार्थ** २७·०१ तक, **द्विपुष्कर** २७·०१ से
२०	**रवियोग** २९·२१ से, **दग्ध·नक्षत्र·चि·** २९·२१ तक
२१	**सिद्ध** १६·४९ तक, **रवियोग** अहोरात्र
२२	**रवियोग** ०७·२१ तक
२३	**सिद्ध** १८·४२ तक, **सर्वार्थ** ०८·५५ से

❀ **वैशाख शुक्ल तृतीया** को भगवान् श्री परशुरामजी का अवतार व त्रेतायुग की प्रवृत्ति हुई। उस दिन वेद धर्म की प्रवृत्ति हुई। यह अक्षय तृतीया श्रीहरि भगवान् को बहुत प्यारी है, इस में स्नान, दान, पूजा, श्राद्ध, जप और पितृ–तर्पण का अक्षय फल प्राप्त होता है।

❀ **वैशाख शुक्ल चतुर्दशी** को श्रीनृसिंह भगवान् का व्रतपूर्वक, विधिपूर्वक जन्मोत्सव करें। यह व्रत नृसिंह भगवान् की तुष्टि के लिए पूर्णिमा से युक्त चतुर्दशी में करें। जो मनुष्य अज्ञानता से त्रयोदशी विद्ध चतुर्दशी का व्रत करता है, वह धन और सन्तान से वियोग पाता है इस कारण त्रयोदशी से युक्त चतुर्दशी का परित्याग करें, ऐसी स्कन्द पुराण में श्रीनृसिंह भगवान् की उक्ति है।

ज्येष्ठ कृष्णपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, २४ मई से ६ जून, २०२४ ईस्वी

ग्रहस्थितिः २४:५:२०२४– मार्गी गुरुःपश्चिमास्त, मार्गी शुक्रःपूर्वास्तः, मार्गी शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, मार्गी बुधःपूर्वोदितः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	卐 व्रत-पर्व-उत्सव 卐
मई	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	मई	२४ मई से ६ जून, २०२४
२४	१ शु	३३:१२	१८·५४	अनु·	१०:५५	१०·००	शिव	१४:४४	११·३२	बाल	०३:०६	कौल	३३:१२	३३:४६	५:३८	१९:०८	वृश्चिक	अहोरात्र	राक्षस	२४	**श्रीठाकुरजी की जलसेवा आरम्भ,**
२५	२ श	३२:२७	१८·३६	ज्ये·	१२:२२	१०·३४	सिद्ध	११:५८	१०·२४	तैति	०२:५९	गर	३२:२७	३३:४८	५:३७	१९:०९	ध·१२:२२	१०·३४	मुसल	२५	**देवर्षि श्रीनारद जयन्ती,** वृन्दावन परिक्रमा व वनविहार
२६	३ र	३०:२९	१७·४९	मूल	१२:३७	१०·४०	साध्य	०८:१२	०८·५४	वणि	०१:३७	विष	३०:२९	३३:५१	५:३७	१९:०९	धनु	अहोरात्र	सिद्धि	२६	**संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय घं·२१:५५**
२७	४ चं	२७:२६	१६·३५	पू·षा·	११:४४	१०·१८	शुभ शुक्ल	०३:३१ ५४:२८	०७·०१ २७:२४	बाल	२७:२६	कौल	५५:३१	३३:५३	५:३७	१९:१०	म·२६:२१	१६·०९	उत्पात	२७	
२८	५ मं	२३:२५	१४·५८	उ·षा·	०९:५२	०९·३३	ब्रह्म	५१:४८	२६·१९	तैति	२३:२५	गर	५१:०६	३३:५५	५:३६	१९:११	मकर	अहोरात्र	पद्म	२८	कृष्ण पंचमी (जैन)
२९	६ बु	१८:३६	१३·०३	श्रवण	०७:१०	०८·२८	ऐन्द्र	४५:००	२३·३६	वणि	१८:३६	विष	४५:५७	३३:५७	५:३६	१९:११	कुं·३५:३३	१९·४९	छत्र	२९	
३०	७ गु	१३:१०	१०·५२	धनि· शत·	०३:४८ ५६:०९	०७·०७ २८:०४	वैधृ·	३७:४६	२०·४२	बव	१३:१०	बाल	४०:१६	३३:५९	५:३६	१९:१२	कुंभ	अहोरात्र	श्रीवत्स	३०	**श्रीकालाष्टमी**
३१	८ शु	०७:१८	०८·३१	पू·भा·	५५:५१	२७·५६	विष्कु·	३०:१६	१७·४२	कौल	०७:१८	तैति	३४:१५	३४:०१	५:३६	१९:१२	मी·४१:५४	२२·२१	ध्वांक्ष	३१	मार्गी बुधः घं·०९:२५, श्री दादूदयाल पुण्यदिवस
जून	९ श १० श	०१:११ ५३:४९	०६·०४ २७:०७	उ·भा·	५१:४१	२६·१६	प्रीति	२२:३६	१४·३८	गर	०१:११	वणि	२८:०५	३४:०२	५:३५	१९:१२	मीन	अहोरात्र	धूम्र	जून	
२	११ र	४९:००	२५·११	रेवती	४७:४०	२४·३९	आयु·	१४:६०	११·३५	बव	२१:५८	बाल	४९:००	३४:०४	५:३५	१९:१३	मे·४७:४०	२४·३९	प्रवर्द्ध	२	**श्रीअपरा एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त)**
३	१२ चं	४३:२३	२२·५६	अश्वि·	४४:०२	२३·१२	सौभा·	०७:३६	०८·३७	कौल	१६:०९	तैति	४३:२३	३४:०६	५:३५	१९:१३	मेष	अहोरात्र	राक्षस	३	**श्रीअपरा एकादशी (निम्बार्क)**, मधुसूदन द्वादशी
४	१३ मं	३८:१८	२०·५४	भरणी	४०:५६	२१·५७	शोभ· अतिगण्ड	००:३२ ५३:२६	०५·४८ २५:५७	गर	१०:४६	वणि	३८:१८	३४:०७	५:३५	१९:१४	वृ·५५:१६	२७·४१	मुसल	४	**प्रदोष व्रत,** मास शिवरात्रि, **वटसावित्री व्रतारम्भ** (उत्तरभारत)
५	१४ बु	३३:५७	१९·१०	कृत्ति·	३८:३६	२१·०१	सुकर्मा	४८:०४	२४·४८	विष	०६:०२	बव	३३:५७	३४:०९	५:३५	१९:१४	वृष	अहोरात्र	सिद्धि	५	**वटसावित्री द्वितीय दिन,** मुनि शान्तिनाथ जयन्ती
६	३० गु	३०:३०	१७·४६	रोहि·	३७:०८	२०·२६	धृति	४२:५५	२२·४५	चतु	०२:०७	नाग	३०:३०	३४:१०	५:३५	१९:१५	वृष	अहोरात्र	उत्पात	६	**ज्येष्ठी अमावस्या (देव–पितृकार्य), वटसावित्री व्रतपूर्ति**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क मई	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
२४	१ शु	०१:०८:५६:३२	०७:१४:१९:३७	११:२२:५४:५०	००:२२:३८:१७	०१:०६:१७:३९	०१:०७:४०:२०	१०:२१:१३:२६	०५:२१:२८:३४	४६:५३:२०	उ·२०:५९:०८	+ ३:११	२०:०५
२५	२ श	०१:०९:५३:५५	०७:२७:१७:३७	११:२३:४०:३६	००:२४:२४:२६	०१:०६:३१:५९	०१:०८:५४:१०	१०:२१:१६:४९	०५:२१:२५:२४	४६:५४:२८	उ·२१:१०:४९	+ ३:०७	२१:०३
२६	३ र	०१:१०:५१:१७	०८:१०:३१:०८	११:२४:२६:१९	००:२६:११:३६	०१:०६:४६:१९	०१:१०:०७:६०	१०:२१:२०:०६	०५:२१:२२:१३	४६:५५:३४	उ·२१:२२:०७	+ ३:०२	२१:५५
२७	४ चं	०१:११:४८:३८	०८:२४:००:०१	११:२५:११:५७	००:२७:५९:४४	०१:०७:००:३८	०१:११:२१:४८	१०:२१:२३:१८	०५:२१:१९:०२	४६:५६:३८	उ·२१:३३:०४	+ २:५७	२२:४७
२८	५ मं	०१:१२:४५:५७	०९:०७:४३:२१	११:२५:५७:३२	००:२९:४८:४४	०१:०७:१४:५८	०१:१२:३५:३५	१०:२१:२६:२३	०५:२१:१५:५२	४६:५७:३९	उ·२१:४३:३९	+ २:५१	२३:३३
२९	६ बु	०१:१३:४३:१५	०९:२१:३९:२९	११:२६:४३:०२	०१:०१:३८:३२	०१:०७:२९:१८	०१:१३:४९:२२	१०:२१:२९:२३	०५:२१:१२:४१	४६:५८:३९	उ·२१:५३:५२	+ २:४५	२४:१७
३०	७ गु	०१:१४:४०:३२	१०:०५:४६:०९	११:२७:२८:२९	०१:०३:२९:०५	०१:०७:४३:३७	०१:१५:०३:०८	१०:२१:३२:१६	०५:२१:०९:३०	४६:५९:३६	उ·२२:०३:४२	+ २:३८	२४:५८
३१	८ शु	०१:१५:३७:४७	१०:२०:००:३०	११:२८:१३:५१	०१:०५:२०:१९	०१:०७:५७:५६	०१:१६:१६:५३	१०:२१:३५:०४	०५:२१:०६:२०	४७:००:३१	उ·२२:१३:०९	+ २:३१	२५:३६
जून	९ श	०१:१६:३५:०१	११:०४:१९:१८	११:२८:५९:१०	०१:०७:१२:०८	०१:०८:१२:१५	०१:१७:३०:३६	१०:२१:३७:४५	०५:२१:०३:०९	४७:०१:२४	उ·२२:२२:१३	+ २:२३	२६:१५
२	११ र	०१:१७:३२:१४	११:१८:३८:५३	११:२९:४४:२४	०१:०९:०४:२९	०१:०८:२६:३३	०१:१८:४४:१९	१०:२१:४०:२०	०५:२०:५९:५८	४७:०२:१५	उ·२२:३०:५४	+ २:१५	२६:५३
३	१२ चं	०१:१८:२९:२६	००:०२:५५:१८	००:००:२९:३४	०१:१०:५७:१७	०१:०८:४०:५१	०१:१९:५८:०१	१०:२१:४२:४९	०५:२०:५६:४७	४७:०३:०४	उ·२२:३९:१२	+ २:०७	२७:३५
४	१३ मं	०१:१९:२६:३६	००:१७:०५:१३	००:०१:१४:३९	०१:१२:५०:२९	०१:०८:५५:०८	०१:२१:११:४२	१०:२१:४५:११	०५:२०:५३:३७	४७:०३:५०	उ·२२:४७:०६	+ १:५८	२८:१९
५	१४ बु	०१:२०:२३:४६	०१:०१:०५:३८	००:०१:५९:४०	०१:१४:४४:०२	०१:०९:०९:२५	०१:२२:२५:२२	१०:२१:४७:२८	०५:२०:५०:२६	४७:०४:३४	उ·२२:५४:३७	+ १:४९	२९:०८
६	३० गु	०१:२१:२०:५४	०१:१४:५४:०२	००:०२:४४:३७	०१:१६:३७:५२	०१:०९:२३:४०	०१:२३:३९:०१	१०:२१:४९:३७	०५:२०:४७:१५	४७:०५:१५	उ·२३:०१:४४	+ १:३९	०६:००

२७ मई सूर्योदयकालीन तिथिः४

२ जून सूर्योदयकालीन तिथिः११

ज्येष्ठ कृष्णपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, २४ मई से ६ जून, २०२४ ईस्वी

पक्षान्तः– कालः पश्चिम । ऋतुः ग्रीष्म । उत्तरायणं । सौम्यगोलः । ति·३० अयनांशाः २२:५२:३८

दिनाङ्क मई	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
२४	१ शु	**गण्डान्तारम्भः२८:२९।**
२५	२ श	**गण्डान्तः१६:३९, रोहिणी नौतपा आरम्भ,** रोहिण्यांरविःघं·०८:११।
२६	३ र	**भद्रा ६:१७–१७:४९घं·,** कृत्तिकायांबुधःघं·१२:०३, रोहिण्यांशुक्रःघं·०३:०८।
२७	४ चं	**अभिजितारम्भः२७:४६।**
२८	५ मं	**अभिजितान्तः११:०५,** वृषेबुधःघं·०८:१०।
२९	६ बु	**पंचकारंभः१९:४९, भद्रा १३:०३–२३:५९घं·।**
३०	७ गु	**पंचक,** वैधृति पुण्यम्, मेला चनानी माताजी।
३१	८ शु	**पंचक।**
जून	९ श	**पंचक, भद्रा १६:५०–२७:३६घं·।**
२	११ र	**पंचकान्तः२४:४०, गण्डान्तारम्भः१९:०३, जलक्रीड़ा एकादशी उड़ीसा ①**
३	१२ चं	**गण्डान्तः६:१७,** मुनि अनन्तनाथ जयन्ती।
४	१३ मं	**भद्रारंभः२०:५४घं·।** ① रोहिण्यांबुधःघं·१७:३०, आश्वन्यांमङ्गलःघं·१३:५८।
५	१४ बु	**भद्रांतः७:६०घं·,** विश्व पर्यावरण दिवस, मृगशिरायांशुक्रःघं·२३:२८।
६	३० गु	**श्रीशनि जयन्ती, बड़पूजन,** संत श्री ज्ञानेश्वर जयन्ती।

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
१	११:५६–१३:४४
३०	११:५७–१३:४७

❀ ज्येष्ठ मास कृत्य ❀

❀ **शनिजयन्ती–** ज्येष्ठ अमावास्या के दिन शनि देव की जयन्ती मनायी जाती है। आज शनि का पूजन एवं दान किया जाता है। कालावस्त्र, तिल, तेल का दान शनिजनित कष्ट को दूर करता है।

शनिग्रह का ध्यानमंत्र– नीलाम्बरः शूलधरः किरीटी, गृध्रस्थितः शस्त्रधरो धनुष्मान्।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः, सदास्तु मह्यं वरदोस्तु नित्यम् ।।

नीलवस्त्र धारण करने वाले, शूल धारण करने वाले, मुकुट धारण करने वाले, गृध्रवाहन पर स्थित शस्त्रधारण करने वाले, धनुष से युक्त, चार भुजाधारी भगवान् सूर्य के पुत्र प्रशान्त शनि हमारे लिए हमेशा वरदायी हों।

शनि गायत्री– ॐ भगभवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नो शनिः प्रचोदयात्।।

शनिमन्त्र– ॐ नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

यात्रा, विवाह, व्यापार आरम्भ करना तथा कर्ज का लेन–देन इन तीनों में दग्धतिथि से बचना चाहिए।

दग्धतिथि का फल – *एभिर्यातो स जीवेत यदि शक्रसमो भवेत्।*
विवाहे विधवा नारी वाणिज्ये मूलनाशनम्।कुशीदस्य विवादः स्यात् यात्रायां मरणं ध्रुवम्।।

अर्थात् इसमें यात्रा करने वाला यदि इन्द्र के समान प्रतापी होगा तभी जीवित रहेगा। विवाह करने से नारी विधवा होती है, व्यापार करने से मूलधन भी नष्ट हो जाता है। कर्ज लेन–देन करने से विवाद होता है तथा यात्रा में निश्चित मरण होता है।

रविवार को भरणी, सोमवार को चित्रा, मंगल को उषा, बुध को धनिष्ठा, गुरु को उफा, शुक्र को ज्येष्ठा एवं शनि को रेवती दग्ध संज्ञक नक्षत्र हैं, इनमें शुभ कार्य करना वर्जित है।

❀ शनि दोष शान्ति के उपाय

पुस्तक – 'नवग्रह विज्ञान'

छायादान– लोहा, कांसा या स्टील की कटोरी या कड़ाही में सरसों तेल भरकर पाँच का सिक्का एवं काली तिल डालकर शनिवार के दिन दोपहर में तेल में अपने चेहरे की छाया देखकर दान करने से शनिग्रह का दोष तत्काल दूर होता है। इससे स्वास्थ्य एवं मन पर शीघ्र शुभ प्रभाव पड़ता है।

उतारा(भैरवप्रयोग)–एक रोटी में गुड़–घी लगाके अपने सिर पर से सात बार घड़ी की तरह घुमाकर शनिवार को कुत्ते को खिलाने से व्यापक लाभ होता है। रोटी घुमाते समय कोई टोके नहीं। इससे प्रभामण्डल ठीक हो जाता है।

सिक्का का उतारा– शनिवार रात्रि में किसी चौराहे पर जाकर पाँच सिक्कों को मुट्ठी में बंदकर अपने सिर पर से सात बार घड़ी की तरह घुमाकर वहीं पर छोड़ दें। यह प्रयोग एक या दो बार करने से ही अद्भुत लाभ देता है।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

मई	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२४	०३:३०	०५:०६	०७:०१	०९:१५	११:३६	१३:५२	१६:०७	१८:२६	२०:४५	२२:५०	००:३५	०२:०४
२५	०३:२६	०५:०२	०६:५७	०९:११	११:३२	१३:४८	१६:०३	१८:२२	२०:४१	२२:४६	००:३१	०२:००
२६	०३:२२	०४:५८	०६:५३	०९:०८	११:२८	१३:४४	१५:५९	१८:१८	२०:३७	२२:४२	००:२७	०१:५६
२७	०३:१८	०४:५४	०६:४९	०९:०४	११:२४	१३:४०	१५:५५	१८:१४	२०:३३	२२:३८	००:२३	०१:५२
२८	०३:१४	०४:५०	०६:४५	०९:००	११:२०	१३:३६	१५:५१	१८:१०	२०:२९	२२:३४	००:१९	०१:४८
२९	०३:१०	०४:४६	०६:४२	०८:५६	११:१६	१३:३२	१५:४७	१८:०६	२०:२५	२२:३१	००:१५	०१:४४
३०	०३:०६	०४:४२	०६:३८	०८:५२	११:१२	१३:२८	१५:४३	१८:०२	२०:२१	२२:२७	००:११	०१:४०
३१	०३:०२	०४:३८	०६:३४	०८:४८	११:०८	१३:२५	१५:४०	१७:५८	२०:१७	२२:२३	००:०७	०१:३६
जून	०२:५८	०४:३४	०६:३०	०८:४४	११:०४	१३:२१	१५:३६	१७:५४	२०:१३	२२:१९	००:०३	०१:३२
२	०२:५४	०४:३०	०६:२६	०८:४०	११:००	१३:१७	१५:३२	१७:५१	२०:०९	२२:१५	२३:५९	०१:२९
३	०२:५१	०४:२६	०६:२२	०८:३६	१०:५६	१३:१३	१५:२८	१७:४७	२०:०५	२२:११	२३:५५	०१:२५
४	०२:४७	०४:२३	०६:१८	०८:३२	१०:५२	१३:०९	१५:२४	१७:४३	२०:०२	२२:०७	२३:५२	०१:२१
५	०२:४३	०४:१९	०६:१४	०८:२८	१०:४८	१३:०५	१५:२०	१७:३९	१९:५८	२२:०३	२३:४८	०१:१७
६	०२:३९	०४:१५	०६:१०	०८:२४	१०:४५	१३:०१	१५:१६	१७:३५	१९:५४	२१:५९	२३:४४	०१:१३

मई	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
२४	**सर्वार्थ** १०·०० तक, **सिद्ध** १८·५४ तक, **दग्ध·नक्षत्र·ज्ये** १०·०० से
२६	**सर्वार्थ** १०·४० तक, **सिद्ध** १७·४९ तक
२७	**अमृत** १६·३५ से, **दग्ध·तिथि·४** १६·३५ तक
२८	**दग्ध·नक्षत्र·उषा·** ०९·३३ तक
२९	**अमृत** १३·०३ तक, **रवियोग** ०८·२८ से, **दग्ध·नक्षत्र·धनि·** ०८·२८ से, **सिद्ध** १३·०३ से
३०	**रवियोग** ०७·०७ तक, **अमृत** १०·५२ से
३१	**अमृत** ०८·३१ से
१	**सिद्ध** ०६·०४ तक, **दग्ध·नक्षत्र·रेव·** २६·१६ से,
जून	**अमृत** ०६·०४ से
२	**सर्वार्थ** २४·३९ से
४	**सिद्ध** २०·५४ तक, **सर्वार्थ** २१·५७ से
५	**सर्वार्थ** २१·०१ तक, **सर्वार्थ** २१·०१ से
६	**सिद्ध** १७·४६ तक

❀ **सम्पूर्ण ज्येष्ठ मास** में जलमंदिर के मध्य संपादित उपचारों से श्रीहरि की सेवा करें। जल क्रीड़ा के उपयोगी सब सामग्री और भोग धरें।

❀ **माँ गंगा का स्वरूप –** १· चतुर्भुजा, २· त्रिनेत्रा, ३· एक हाथ में पूर्णकुम्भ, ४· एक हाथ में श्वेत कमल, ५· एक हाथमें अभयमुद्रा, ६· एक हाथ में वरद मुद्रा, ७· नदी नद से सुशोभित, ८· श्वेतछत्र से सुशोभित, ९· छरहरी देह युक्त, १०· देव, ऋषि आदि से संस्तुत।
–(स्कन्दपुराण, काशीखण्ड– २७/१४२–१४५)

❀ **गंगा पूजा –** दश संख्या की वस्तु से गंगा पूजन का विशेष महत्व है। दशविध पुष्प, दशांग, दशविध फल, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूलादि से पूजा करें।

❀ **कलौ गंगा हि केवलम्–** कलियुग में मनुष्य के उद्धार के लिए एकमात्र गंगा ही साधन हैं–

ध्यानं कृते मोक्ष हेतुः त्रेतायां पुष्करं परम् ।
द्वापरे तद्वद् यज्ञाः कलौ गंगैव केवलम् ॥

गंगातट पर वास मात्र से ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति होती है–

वास एव हि गंगायां ब्रह्मज्ञानस्य कारणम्॥

ज्येष्ठ शुक्लपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, ७ जून से २२ जून, २०२४ ईस्वी

ग्रहस्थितिः ७:६:२०२४– मार्गी गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपूर्वास्त, मार्गी शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, मार्गी बुधःपूर्वास्तः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
जून	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	जून	७ जून से २२ जून, २०२४
७	१ शु	२८:०५	१६·४९	मृग·	३६:४५	२०·१६	शूल	३८:३८	२१·०२	बव	२८:०५	बाल	५७:१९	३४:११	५:३४	१९:१५	मि·०६:४८	०८·१८	मानस	७	करवीर व्रत, गंगा दशाश्वमेध स्नानप्रारम्भ १० तिथि यावत्
८	२ श	२६:५१	१६·१९	आर्द्रा	३७:३१	२०·३५	गण्ड	३५:१९	१९·४२	कौल	२६:५१	तैति	५६:४१	३४:१३	५:३४	१९:१६	मिथुन	अहोरात्र	मुद्गर	८	
९	३ र	२६:५१	१६·१९	पुन·	३९:३२	२१·२३	वृद्धि	३२:६०	१८·४६	गर	२६:५१	वणि	५७:२०	३४:१४	५:३४	१९:१६	क·२३:५५	१५·०८	ध्वज	९	**रम्भा तृतीया, श्री महाराणा प्रताप जयन्ती, हल्दीघाटी मेला**
१०	४ चं	२८:०९	१६·५०	पुष्य	४२:४८	२२·४१	ध्रुव	३१:४१	१८·१५	विष	२८:०९	बव	५९:१४	३४:१५	५:३४	१९:१६	कर्क	अहोरात्र	धाता	१०	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी**, गुरु अर्जुनदेव पुण्य दिवस
११	५ मं	३०:३८	१७·५०	आश्ले·	४७:१२	२४·२७	व्याघ·	३१:१९	१८·०६	बाल	३०:३८	कौल	६०:००	३४:१६	५:३४	१९:१७	सिं·४७:१२	२४·२७	आनन्द	११	मेला भन्दे के बालाजी (जयपुर), साईं टेऊँराम पुण्यतिथि
१२	६ बु	३४:१३	१९·१६	मघा	५२:३८	२६·३७	हर्षण	३१:४८	१८·१७	कौल	०२:१८	तैति	३४:१३	३४:१७	५:३४	१९:१७	सिंह	अहोरात्र	सुस्थिर	१२	**श्री स्कन्दषष्ठी**, श्री अरण्य षष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा
१३	७ गु	३८:३८	२१·०२	पू·फा·	५८:४७	२९·०५	वज्र	३२:५६	१८·४५	गर	०६:२१	वणि	३८:३८	३४:१७	५:३४	१९:१७	सिंह	अहोरात्र	गद	१३	
१४	८ शु	४३:३४	२३·००	उ·फा·	६०:००	अहोरात्र	सिद्धि	३४:३०	१९·२२	विष	११:०४	बव	४३:३४	३४:१८	५:३४	१९:१८	कं·१५:२३	११·४४	शुभ	१४	**श्रीदुर्गाष्टमी, मेला क्षीरभवानी कश्मीरे**, श्रीधूमावती जयन्ती
१५	९ श	४८:३६	२५·०१	उ·फा·	०५:१९	०७·४२	व्यति·	३६:११	२०·०३	बाल	१६:०६	कौल	४८:३६	३४:१९	५:३४	१९:१८	कन्या	अहोरात्र	उत्पात	१५	**श्रीमहेश नवमी (माहेश्वरी समाज)**, श्रीहरि जयन्ती
१६	१० र	५३:१६	२६·५३	हस्त	११:४७	१०·१७	वरी·	३७:४०	२०·३९	तैति	२१:००	गर	५३:१६	३४:१९	५:३५	१९:१८	तु·४४:५२	२३·३१	मानस	१६	**श्रीगंगा दशहरा व्रतम्, बटुकभैरव जयन्ती**, श्रीगायत्री जयन्ती
१७	११ चं	५७:१५	२८·२९	चित्रा	१७:४८	१२·४२	परिघ	३८:४१	२१·०३	वणि	२५:२३	विष	५७:१५	३४:२०	५:३५	१९:१९	तुला	अहोरात्र	मुद्गर	१७	**श्रीनिर्जला एकादशी (वैष्णव,स्मार्त्त), श्रीसरसबिहारीजीपाटोत्सव**
१८	१२ मं	६०:००	अहोरात्र	स्वाती	२३:००	१४·४७	शिव	३८:५८	२१·१०	बव	२८:५३	बाल	६०:००	३४:२०	५:३५	१९:१९	तुला	अहोरात्र	ध्वज	१८	**श्रीनिर्जला भीमसेनी एकादशी (निम्बार्क), वन्जुली महाद्वादशी**
१९	१२ बु	००:१४	०५·४१	विशा·	२७:१०	१६·२७	सिद्ध	३८:२३	२०·५६	बाल	००:१४	कौल	३१:१८	३४:२०	५:३५	१९:१९	वृश्·११:१४	१०·०५	धाता	१९	**प्रदोष व्रत, वटसावित्री व्रतारम्भ (दक्षिण भारत)**
२०	१३ गु	०२:०३	०६·२४	अनु·	३०:०९	१७·३९	साध्य	३६:५०	२०·१९	तैति	०२:०३	गर	३२:२९	३४:२१	५:३५	१९:२०	वृश्चिक	अहोरात्र	आनन्द	२०	**वटसावित्री व्रत द्वितीय दिन**
२१	१४ शु	०२:३७	६·३८	ज्ये·	३१:५३	१८·२०	शुभ	३४:१७	१९·१८	वणि	०२:३७	विष	३२:२४	३४:२१	५:३५	१९:२०	ध·३१:५३	१८·२०	सुस्थिर	२१	**पूर्णिमा (व्रत), विश्व योग दिवस, वटसावित्री व्रतपूर्ति**
२२	१५ श १ श	०१:५३ ५८:०४	०६·२१ २८·४९	मूल	३२:२३	१८·३३	शुक्ल	३०:४३	१७·५३	बव	०१:५३	बाल	३१:०४	३४:२१	५:३५	१९:२०	धनु	अहोरात्र	गद	२२	**पूर्णिमा (स्नान–दान)**, ज्येष्ठाभिषेक, **श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
जून	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
७	१ शु	०१:२२:१८:०१	०१:२८:२८:३३	००:०३:२९:३०	०१:१८:३१:५७	०१:०९:३७:५५	०१:२४:५२:४०	१०:२१:५१:४१	०५:२०:४४:०५	४७:०५:५४	उ·२३:०८:२६	+ १:२९	०६:००
८	२ श	०१:२३:१५:०७	०२:११:४७:५७	००:०४:१४:१८	०१:२०:२६:१३	०१:०९:५२:१०	०१:२६:०६:१७	१०:२१:५३:३८	०५:२०:४०:५४	४७:०६:३१	उ·२३:१४:४५	+ १:१९	०६:५५
९	३ र	०१:२४:१२:१३	०२:२४:५१:४९	००:०४:५९:०१	०१:२२:२०:३७	०१:१०:०६:२३	०१:२७:१९:५३	१०:२१:५५:२८	०५:२०:३७:४३	४७:०७:०५	उ·२३:२०:३९	+ १:०८	०७:५३
१०	४ च	०१:२५:०९:१७	०३:०७:४०:२८	००:०५:४३:४०	०१:२४:१५:०७	०१:१०:२०:३५	०१:२८:३३:२९	१०:२१:५७:१२	०५:२०:३४:३३	४७:०७:३७	उ·२३:२६:०९	+ ०:५७	०८:४९
११	५ म	०१:२६:०६:२०	०३:२०:१४:५८	००:०६:२८:१५	०१:२६:०९:३९	०१:१०:३४:४६	०१:२९:४७:०३	१०:२१:५८:५०	०५:२०:३१:२२	४७:०८:०६	उ·२३:३१:१५	+ ०:४६	०९:४६
१२	६ बु	०१:२७:०३:२२	०४:०२:३७:०९	००:०७:१२:४५	०१:२८:०४:१०	०१:१०:४८:५५	०२:०१:००:३७	१०:२२:००:२०	०५:२०:२८:११	४७:०८:३३	उ·२३:३५:५६	+ ०:३५	१०:४२
१३	७ गु	०१:२८:००:२४	०४:१४:४९:२४	००:०७:५७:१०	०१:२९:५८:३४	०१:११:०३:०४	०२:०२:१४:१०	१०:२२:०१:४५	०५:२०:२५:००	४७:०८:५७	उ·२३:४०:१२	+ ०:२३	११:३५
१४	८ शु	०१:२८:५७:२४	०४:२६:५४:३९	००:०८:४१:३१	०२:०१:५२:४९	०१:११:१७:११	०२:०३:२७:४२	१०:२२:०३:०२	०५:२०:२१:५०	४७:०९:१९	उ·२३:४४:०३	+ ०:११	१२:२८
१५	९ श	०१:२९:५४:२४	०५:०८:५६:१३	००:०९:२५:४६	०२:०३:४६:५०	०१:११:३१:१७	०२:०४:४१:१३	१०:२२:०४:१३	०५:२०:१८:३९	४७:०९:३८	उ·२३:४७:३०	– ०:०१	१३:२०
१६	१० र	०२:००:५१:२३	०५:२०:५७:५६	००:१०:०९:५८	०२:०५:४०:३६	०१:११:४५:२१	०२:०५:५४:४३	१०:२२:०५:१८	०५:२०:१५:२८	४७:०९:५४	उ·२३:५०:३१	– ०:१३	१४:१३
१७	११ च	०२:०१:४८:२१	०६:०३:०३:३६	००:१०:५४:०४	०२:०७:३४:०४	०१:११:५९:२३	०२:०७:०८:१३	१०:२२:०६:१५	०५:२०:१२:१७	४७:१०:०८	उ·२३:५३:०८	– ०:२५	१५:०६
१८	१२ म	०२:०२:४५:१८	०६:१५:१६:२८	००:११:३८:०६	०२:०९:२७:०९	०१:१२:१३:२४	०२:०८:२१:४१	१०:२२:०७:०६	०५:२०:०९:०७	४७:१०:१९	उ·२३:५५:१९	– ०:३७	१६:०१
१९	१२ बु	०२:०३:४२:१५	०६:२७:३९:२९	००:१२:२२:०३	०२:११:१९:५०	०१:१२:२७:२३	०२:०९:३५:०९	१०:२२:०७:५०	०५:२०:०५:५६	४७:१०:२८	उ·२३:५७:०५	– ०:५०	१६:५८
२०	१३ गु	०२:०४:३९:१०	०७:१०:१४:६०	००:१३:०५:५५	०२:१३:१२:०२	०१:१२:४१:२०	०२:१०:४८:३६	१०:२२:०८:२७	०५:२०:०२:४५	४७:१०:३४	उ·२३:५८:२७	– १:०२	१७:५५
२१	१४ शु	०२:०५:३६:०६	०७:२३:०४:४६	००:१३:४९:४२	०२:१५:०३:४४	०१:१२:५५:१५	०२:१२:०२:०२	१०:२२:०८:५८	०५:१९:५९:३४	४७:१०:३८	उ·२३:५९:२३	– १:१५	१८:५३
२२	१५ श	०२:०६:३३:००	०८:०६:०९:४९	००:१४:३३:२४	०२:१६:५४:५०	०१:१३:०९:०८	०२:१३:१५:२७	१०:२२:०९:२२	०५:१९:५६:२४	४७:१०:३८	उ·२३:५९:५३	– १:२७	१९:४८

१० जून सूर्योदयकालीन तिथि:**४**

४ चं | ३ | २ सूबुशुगु | मं १ | १२ रा | ५ | ११ श | ६ | ८ | १० | ७ | ९

१७ जून सूर्योदयकालीन तिथि:**११**

ज्येष्ठ शुक्लपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, ७ जून से २२ जून, २०२४ ईस्वी

पक्षान्तः–कालः पश्चिम । ऋतुः ग्रीष्म । उत्तरायणं । सौम्यगोलः । ति·१५ अयनांशाः २२:५२:४०

दिनाङ्क जून	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
७	१ शु	।
८	२ श	मृगशिरायांरविः घं·०७:३८, रोहिण्यांगुरुः घं·१८:५६।
९	३ र	**भद्रारंभः२८:३१घं·**, मृगशिरायांबुधः घं·१८:०६।
१०	४ चं	**भद्रांतः१६:५०घं·**, उमाचतुर्थी (बंगाल)।
११	५ मं	**गण्डान्तारम्भः१७:५९**, श्रुति पंचमी (जैन), मिथुनेशुक्रः घं·०९:५१ ①
१२	६ बु	**गण्डान्तः६:५९**, आरोग्य षष्ठी। ① महादेव विवाह (उड़ीसा)।
१३	७ गु	**भद्रारंभः२१:०२घं·**, मिथुनेबुधः घं·०५:५५।
१४	८ शु	**भद्रांतः१०:००घं·**। ② मिथुनेरविः घं·०७:५७।
१५	९ श	**मिथुन संक्रान्ति पुण्यकालं ०७:५७–१४:२१घं·**, व्यतीपात पुण्यम् ②
१६	१० र	आर्द्रायांबुधः घं·१८:११, आर्द्रायांशुक्रः घं·२०:२५।
१७	११ चं	**भद्रा १५:४४–२८:२९घं·**।
१८	१२ मं	**चम्पाद्वादशी**, ।
१९	१२ बु	मुनि सुपार्श्वनाथ जयन्ती।
२०	१३ गु	भरण्यांमङ्गलः घं·१३:२१।
२१	१४ शु	**भद्रा ६:३८–१८:३४घं·**, **गण्डान्तः१२:१३–२४:२७**।
२२	१५ श	जलसेवा पूर्ति, मन्वादि, बिल्व त्रिरात्रि व्रत, सन्त कबीर जयन्ती, सरयू जयन्ती, आर्द्रायांरविः घं·०८:३३।

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	११:५७–१३:४७
१५	१२:००–१३:५०

❀ ज्येष्ठ मास कृत्य ❀

❀ **निर्जला एकादशी–** आज के दिन आचमन को छोड़कर अन्य किसी भी प्रकार से जल का ग्रहण नहीं किया जाता है। इसे करने से विष्णुलोक की प्राप्ति होती है। एकादशी व्रत करके द्वादशी में जलकुम्भ और शर्करा दान करे। दान देते समय निम्नलिखित मन्त्र का प्रयोग करे–

देव देव हृषीकेश संसारार्णवतारक।
उदकुम्भप्रदानेन यास्यामि परमां गतिम्।।

❀ **त्रिविक्रम(वामन) पूजन–** ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी तिथि में भगवान् त्रिविक्रम विष्णु की दिन–रात पूजा की जाती है। इस पूजन के प्रभाव से गो–अयन यज्ञ का पुण्य प्राप्त होता है।

❀ **बिल्वत्रिरात्रिव्रत(स्कन्दपुराण)–** ज्येष्ठ पूर्णिमा को ज्येष्ठा नक्षत्र और मंगलवार हो, तब यह व्रत होता है। इस वर्ष यह दुर्लभ संयोग बन रहा है। इस दिन सरसों मिले हुए जल से स्नान करके 'श्रीवृक्ष'(बिल्ववृक्ष) का गन्ध पुष्पादि से पूजन करे और एक समय भोजन करे। बिल्ववृक्ष के समीप उमा महेश्वर का पूजन करके इस मन्त्र से प्रार्थना करे।

'श्रीनिकेत नमस्तुभ्यं हरप्रिय नमोऽस्तु ते।
अवैधव्यं च मे देहि श्रियं जन्मनि जन्मनि।।'

तो सब प्रकार के अभीष्ट सिद्ध हो जाते हैं। *(संक्षिप्त)*

❀ बिल्ववृक्ष स्थापना विधि ❀ (भविष्यपुराणोक्त)

❀ **इस मंत्र से बिल्व वृक्ष का स्थापन करे –** ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्। उर्वारुकमिव बन्धनाद् इतो मुक्षीय मामुतः।।

❀ **इस मन्त्र से वृक्ष को गंधोदक से स्नान करवाए –**

ॐ सुनावम् आ रुहेयम् अस्रवन्तीम् अनागसम्। शतारित्रा ँ स्वस्तये।।

❀ **इस मन्त्र से वृक्ष पर अक्षत चढ़ाए –**

ॐ मित्रावरुणाभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामि। इन्द्राय त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामि। इन्द्राग्निभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामि। इन्द्रावरुणाभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामि। इन्द्राबृहस्पतिभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामि। इन्द्राविष्णुभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामि ।।

❀ **इस मन्त्र से धूप, वस्त्र, माला चढ़ाए –**

ॐ कया नश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठ या वृता ।।

तदुपरान्त रुद्रदेव, दुर्गा और कुबेर का पूजन करे। दूसरे दिन ७ ब्राह्मणों को भोजन करवाए। सुन्दर पुष्प, चूर्ण आदि से बिल्ववृक्ष को रंजित करे। लाल सूत्र से ५, ७ या ९ बार वेष्टित करे। वृक्ष के मूल में धान्य बोए। उत्तराभिमुख होकर शिव, विष्णु, ब्रह्मा, गणेश, शेष, अनन्त, इन्द्र, वनपाल, सोम, सूर्य व पृथ्वी का पूजन करे। तिल अक्षत से हवन करें तथा घी और भात का नैवेद्य दे। यक्षों के लिए उड़द और भात का भोग लगाए। ग्रहों की तुष्टि के लिए बाँस के पात्र पर नैवेद्य दे। बिल्व वृक्ष को दक्षिण दिशा से दूध की धारा प्रदान करें। यूप का आरोपण करें। वृक्ष का कर्णविध संस्कार करें और भगवान् सूर्य को अर्घ्य प्रदान करें। ब्राह्मण को दक्षिणा प्रदान करें।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

जून	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
७	०२:३५	०४:११	०६:०६	०८:२०	१०:४१	१२:५७	१५:१२	१७:३१	१९:५०	२१:५५	२३:४०	०१:०९
८	०२:३१	०४:०७	०६:०२	०८:१६	१०:३७	१२:५३	१५:०८	१७:२७	१९:४६	२१:५१	२३:३६	०१:०५
९	०२:२७	०४:०३	०५:५८	०८:१३	१०:३३	१२:४९	१५:०४	१७:२३	१९:४२	२१:४७	२३:३२	०१:०१
१०	०२:२३	०३:५९	०५:५४	०८:०९	१०:२९	१२:४५	१५:००	१७:१९	१९:३८	२१:४४	२३:२८	००:५७
११	०२:१९	०३:५५	०५:५१	०८:०५	१०:२५	१२:४१	१४:५६	१७:१५	१९:३४	२१:४०	२३:२४	००:५३
१२	०२:१५	०३:५१	०५:४७	०८:०१	१०:२१	१२:३८	१४:५२	१७:११	१९:३०	२१:३६	२३:२०	००:४९
१३	०२:११	०३:४७	०५:४३	०७:५७	१०:१७	१२:३४	१४:४९	१७:०७	१९:२६	२१:३२	२३:१६	००:४५
१४	०२:०७	०३:४३	०५:३९	०७:५३	१०:१३	१२:३०	१४:४५	१७:०४	१९:२२	२१:२८	२३:१२	००:४२
१५	०२:०४	०३:४०	०५:३५	०७:४९	१०:०९	१२:२६	१४:४१	१७:००	१९:१९	२१:२४	२३:०८	००:३८
१६	०२:००	०३:३६	०५:३१	०७:४५	१०:०५	१२:२२	१४:३७	१६:५६	१९:१५	२१:२०	२३:०५	००:३४
१७	०१:५६	०३:३२	०५:२७	०७:४१	१०:०१	१२:१८	१४:३३	१६:५२	१९:११	२१:१६	२३:०१	००:३०
१८	०१:५२	०३:२८	०५:२३	०७:३७	०९:५८	१२:१४	१४:२९	१६:४८	१९:०७	२१:१२	२२:५७	००:२६
१९	०१:४८	०३:२४	०५:१९	०७:३३	०९:५४	१२:१०	१४:२५	१६:४४	१९:०३	२१:०८	२२:५३	००:२२
२०	०१:४४	०३:२०	०५:१५	०७:३०	०९:५०	१२:०६	१४:२१	१६:४०	१८:५९	२१:०४	२२:४९	००:१८
२१	०१:४०	०३:१६	०५:११	०७:२६	०९:४६	१२:०२	१४:१७	१६:३६	१८:५५	२१:००	२२:४५	००:१४
२२	०१:३६	०३:१२	०५:०८	०७:२२	०९:४२	११:५८	१४:१३	१६:३२	१८:५१	२०:५७	२२:४१	००:१०

जून	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
७	**सिद्ध** १६·४९ तक ① **दग्ध·तिथि·४** १६·५० तक
९	**सिद्ध** १६·१९ तक, **सर्वार्थ–रवियोग** २१·२३ से,
१०	**सर्वार्थ–रवियोग** २२·४१ तक, **अमृत** १६·५० से ①
११	**सर्वार्थ** २४·२७ तक, **रवियोग** २४·२७ से
१२	**अमृत** १९·१६ तक, **रवियोग** २६·३७ तक, **सिद्ध** १९·१६ से
१३	**अमृत** २१·०२ से, **दग्ध·नक्षत्र·उफा·** २९·०५ से
१४	**अमृत** २३·०० से ② **दग्ध·नक्षत्र·चि·** १२·४२ तक
१५	**सिद्ध** २५·०१ तक, **रवियोग** ०७·४२ से
१६	**सर्वार्थ** १०·१७ से, **अमृत** २६·५३ तक, **रवियोग** अहोरात्र
१७	**सिद्ध** २८·२९ तक, **रवियोग** १२·४२ तक, ②
१८	**अमृत** अहोरात्र, **त्रिपुष्कर** १४·४७ से
१९	**सिद्ध** ०५·४१ तक, **सर्वार्थ–रवियोग** १६·२७ से
२०	**अमृत** ०६·२४ तक, **सर्वार्थ–रवियोग** १७·३९ तक
२१	**अमृत** २६·३८ तक, **दग्ध·नक्षत्र·ज्ये·** १८·२० तक
२२	**अमृत** ०६·२१ से

卐 **गंगा दशहरा –** ज्येष्ठ, शुक्लपक्ष, दशमी, बुधवार, **हस्त** नक्षत्र, व्यतीपात योग, गर करण, आनंद योग, कन्या राशिस्थ चन्द्रमा, वृषभ राशिस्थ सूर्य, ये दस योग से गंगा दशमी कहलाती है। इस दिन गंगास्नान करने से मनुष्य सब पापों से छूट जाता है। यह नवमीविद्धा दशमी हो वा एकादशी विद्धा हो जिसमें योग अधिक हो, वही ग्रहण करना चाहिये। पूजन का विशेष मन्त्र है– **ॐ नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गंगायै स्वाहा।** इसी मन्त्र से भगवती गंगा का बार बार स्मरण कर पूजन पदार्थ अर्पित करे। गंगा दशहरा को अबूझ मुहूर्त्त माना जाता है, इस दिन किया जप, तप, दान आदि कोई भी कार्य अक्षय फल प्रदान करता है।

卐 **निर्जला एकादशी–** वृष वा मिथुन राशिस्थ सूर्य हो, तब ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी को यत्नपूर्वक निर्जल व्रत करें। इस एक ही व्रत के प्रभाव से बारह द्वादशियों के व्रत करने का फल प्राप्त होता है। – पद्मपुराण

आषाढ़ कृष्णपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, २३ जून से ५ जुलाई, २०२४ ईस्वी

ग्रहस्थितिः २३:६:२०२४– मार्गी गुरुः पूर्वोदितः, मार्गी शुक्रः पूर्वास्त, मार्गी शनिः पूर्वोदितः, मार्गी कुजः पूर्वोदितः, मार्गी बुधः पूर्वास्त

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	✠ व्रत–पर्व–उत्सव ✠
जून	वार	घ.प.	घं:मि	नक्षत्र	घ.प.	घं:मि	योग	घ.प.	घं:मि	क१	घ.प.	क२	घ.प.	घ.प.	घं:मि	घं:मि	राशि घ.प.	घं:मि	योग	जून	२३ जून से ५ जुलाई, २०२४
२३	२ र	५६:५५	२८.२२	पू.षा.	३१:४४	१८.१७	ब्रह्म	२६:१४	१६.०५	तैति	२८:३४	गर	५६:५५	३४:२१	५:३६	१९:२०	म.४६:२४	२४.०९	शुभ	२३	गुरु हरगोविन्द सिंह जयन्ती
२४	३ चं	५२:५५	२६.४६	उ.षा.	३०:०३	१७.३७	ऐन्द्र	२०:५३	१३.५७	वणि	२५:०१	विष	५२:५५	३४:२१	५:३६	१९:२०	मकर	अहोरात्र	मृत्यु	२४	
२५	४ मं	४८:०७	२४.५१	श्रवण	२७:३१	१६.३७	वैधृ.	१४:४९	११.३२	बव	२०:३६	बाल	४८:०७	३४:२०	५:३६	१९:२१	कुं.५५:५८	२७.५९	लुम्ब	२५	**संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी चन्द्रोदय घं.२२:१३**
२६	५ बु	४२:४०	२२.४०	धनि.	२४:१६	१५.१९	विष्कु.	०८:०८	०८.५२	कौल	१५:२७	तैति	४२:४०	३४:२०	५:३६	१९:२१	कुंभ	अहोरात्र	मित्र	२६	कोकिला पंचमी (जैन)
२७	६ गु	३६:४६	२०.१९	शत.	२०:३१	१३.३१	प्रीति आयु.	००:५९ ५२:३२	०६.०० २६:३८	गर	०९:४६	वणि	३६:४६	३४:२०	५:३७	१९:२१	कुंभ	अहोरात्र	वज्र	२७	
२८	७ शु	३०:३७	१७.५२	पू.भा.	१६:२६	१२.११	सौभा.	४५:५३	२३.५८	विष	०३:४३	बव	३०:३७	३४:१९	५:३७	१९:२१	मी.०२:२८	०६.३६	ध्वांक्ष	२८	**श्रीकालाष्टमी**
२९	८ श	२४:२४	१५.२३	उ.भा.	१२:१४	१०.३१	शोभ.	३८:१५	२०.५६	कौल	२४:२४	तैति	५१:२१	३४:१९	५:३७	१९:२१	मीन	अहोरात्र	धूम्र	२९	
३०	९ र	१८:२१	१२.५८	रेवती	०८:०९	०८.५३	अतिग.	३०:४८	१७..५७	गर	१८:२१	वणि	४५:२७	३४:१८	५:३८	१९:२१	मे.०८:०९	०८.५३	प्रवर्द्ध	३०	
जुलाई	१० चं	१२:३८	१०.४१	अश्वि.	०४:२३	०७.२३	सुकर्मा	२३:४०	१५.०६	विष	१२:३८	बव	३९:५९	३४:१७	५:३८	१९:२१	मेष	अहोरात्र	राक्षस	जुलाई	मुनि नेमीनाथ जयन्ती
२	११ मं	०७:२८	०८.३८	भरणी कृत्तिका	०१:०८ ५७:२७	०६.०६ २८:३७	धृति	१७:०१	१२.२७	बाल	०७:२८	कौल	३५:०९	३४:१६	५:३८	१९:२१	वृ.१५:२५	११.४९	मुसल	२	**योगिनी एकादशी (सर्वेषाम्)**
३	१२ बु १३ बु	०३:०२ ५६:२६	०६.५१ २८:१३	रोहि.	५६:५४	२८.२४	शूल	१०:५८	१०.५८	तैति	०३:०२	गर	३१:०७	३४:१५	५:३९	१९:२१	वृष	अहोरात्र	शुभ	३	**प्रदोष व्रतम्,**
४	१४ गु	५६:५५	२८.२५	मृग.	५६:१४	२८.०९	गण्ड	०५:४०	०७.५५	विष	२८:०३	बव	५६:५५	३४:१४	५:३९	१९:२१	मि.२६:२५	१६.१३	मृत्यु	४	**मास शिवरात्रि, स्वामी विवेकानन्द पुण्य दिवस**
५	३० शु	५५:३३	२७.५३	आर्द्रा	५६:४२	२८.२०	वृद्धि ध्रुव	०१:१२ ५६:३०	०६.०८ २८:१६	चतु	२६:०५	नाग	५५:३३	३४:१३	५:४०	१९:२१	मिथुन	अहोरात्र	पद्म	५	**अमावस्या (देवकार्य, पितृकार्य)**

✱ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ✱

दिनाङ्क जून	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः (मा/व) रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मिःसे	चन्द्रोदयः
२३	२ र	०२:०७:२९:५४	०८:१९:३०:२६	००:१५:१७:०१	०२:१८:४५:१९	०१:१३:२२:५९	०२:१४:२८:५२	१०:२२:०९:३९	०५:१९:५३:१३	४७:१०:३७	उ.२३:५९:५९	– १:४०	२०:४०
२४	३ चं	०२:०८:२६:४८	०९:०३:०६:०६	००:१६:००:३३	०२:२०:३५:०७	०१:१३:३६:४८	०२:१५:४२:१५	१०:२२:०९:४९	०५:१९:५०:०२	४७:१०:३२	उ.२३:५९:४०	– १:५२	२१:२९
२५	४ मं	०२:०९:२३:४१	०९:१६:५५:३६	००:१६:४४:०१	०२:२२:२४:०९	०१:१३:५०:३५	०२:१६:५५:३८	१०:२२:०९:५३	०५:१९:४६:५१	४७:१०:२५	उ.२३:५८:५५	– २:०५	२२:१३
२६	५ बु	०२:१०:२०:३४	१०:००:५६:५८	००:१७:२७:२३	०२:२४:१२:२३	०१:१४:०४:१९	०२:१८:०९:०१	वक्री २२:०९:५०	०५:१९:४३:४१	४७:१०:१६	उ.२३:५७:४५	– २:१७	२२:५५
२७	६ गु	०२:११:१७:२६	१०:१५:०७:४०	००:१८:१०:४०	०२:२५:५९:४४	०१:१४:१८:०१	०२:१९:२२:२२	१०:२२:०९:४०	०५:१९:४०:३०	४७:१०:०३	उ.२३:५६:१०	– २:२९	२३:३४
२८	७ शु	०२:१२:१४:१८	१०:२९:२४:४१	००:१८:५३:५२	०२:२७:४६:०८	०१:१४:३१:४०	०२:२०:३५:४३	१०:२२:०९:२३	०५:१९:३७:१९	४७:०९:४९	उ.२३:५४:११	– २:४१	२४:१२
२९	८ श	०२:१३:११:०९	११:१३:४४:३७	००:१९:३६:५९	०२:२९:३१:३०	०१:१४:४५:१६	०२:२१:४९:०३	१०:२२:०८:६०	०५:१९:३४:०८	४७:०९:३१	उ.२३:५१:४६	– २:५३	२४:५१
३०	९ र	०२:१४:०८:००	११:२८:०३:३०	००:२०:२०:०१	०३:०१:१५:४७	०१:१४:५८:५०	०२:२३:०२:२२	१०:२२:०८:३०	०५:१९:३०:५८	४७:०९:११	उ.२३:४८:५६	– ३:०५	२५:३१
जुलाई	१० चं	०२:१५:०४:५२	००:१२:१७:४३	००:२१:०२:५८	०३:०२:५८:५२	०१:१५:१२:२१	०२:२४:१५:४१	१०:२२:०७:५३	०५:१९:२७:४७	४७:०८:४९	उ.२३:४५:४२	– ३:१७	२६:१५
२	११ मं	०२:१६:०१:४३	००:२६:२४:०२	००:२१:४५:४९	०३:०४:४०:४२	०१:१५:२५:४९	०२:२५:२८:५९	१०:२२:०७:०९	०५:१९:२४:३६	४७:०८:२४	उ.२३:४२:०३	– ३:२८	२७:०१
३	१२ बु	०२:१६:५८:३४	०१:१०:१९:४०	००:२२:२८:३६	०३:०६:२१:११	०१:१५:३९:१४	०२:२६:४२:१६	१०:२२:०६:१९	०५:१९:२१:२५	४७:०७:५६	उ.२३:३७:५९	– ३:३९	२७:५३
४	१४ गु	०२:१७:५५:२५	०१:२४:०२:२१	००:२३:११:१७	०३:०८:००:१३	०१:१५:५२:३६	०२:२७:५५:३५	१०:२२:०५:२२	०५:१९:१८:१५	४७:०७:२६	उ.२३:३३:३०	– ३:५०	२८:४५
५	३० शु	०२:१८:५२:१६	०२:०७:३०:३०	००:२३:५३:५३	०३:०९:३७:४३	०१:१६:०५:५५	०२:२९:०८:५३	१०:२२:०४:१९	०५:१९:१५:०४	४७:०६:५४	उ.२३:२८:३७	– ४:०१	०५:४४

२५ जून सूर्योदयकालीन तिथिः४
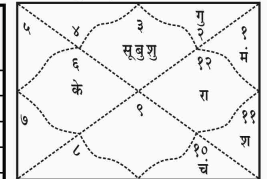
२ जुलाई सूर्योदयकालीन तिथिः११

आषाढ़ कृष्णपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, २३ जून से ५ जुलाई, २०२४ ईस्वी

पक्षान्तः–कालःपश्चिम । ऋतुःग्रीष्म । उत्तरायणं । सौम्यगोलः । ति·३० अयनांशाः२२:५२:४२

दिनाङ्क जून	तिथि वार	व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·)
२३	२ र	पुनर्वसौबुधःघं·२१:५७।
२४	३ चं	**अभिजितः११:५०–१९:१०७ भद्रा १५:३७–२६:४६घं·।**
२५	४ मं	**पंचकारंभः२७:५९,** वैधृति पुण्यम्, मृत्युबाण घं·१५:३२:१७उ·।
२६	५ बु	**पंचक,** नागपंचमी बंगाल, वक्रःशनिःघं·२६:५४।
२७	६ गु	**पंचक, भद्रारंभः२०:२०घं·,** पुनर्वसौशुक्रःघं·१७:५८।
२८	७ शु	**पंचक, भद्रांतः७:०७घं·।**
२९	८ श	**पंचक, गण्डान्तारम्भः२७:१८,** कर्केबुधःघं·१२:१०।
३०	९ र	**पंचकान्तः८:५४, गण्डान्तः१४:३१, भद्रारंभः२३:४९घं·, ।**
जुलाई	१० चं	**भद्रांतः१०:४२घं·,** पुष्येबुधःघं·१०:३७, वक्रःशनिः५३:११।
२	११ मं	।
३	१२ बु	**भद्रारंभः२९:२६घं·।**
४	१४ गु	**भद्रांतः१६:५३घं·।**
५	३० शु	कर्केशुक्रःघं·२२:२४।

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	१२:०१–१३:५१
३०	१२:०३–१३:५३

❀ आषाढ़ मास कृत्य ❀

वृष्टिविचार– आषाढ़ कृष्णपक्ष प्रतिपदा के दिन आकाश में वर्षा सम्बन्धी यदि पञ्चनिमित्त न दिखें, तो दो मास तक वृष्टि नहीं होती है, ये पञ्चनिमित्त हैं– १.बादल २.गर्जन ३.वायु ४.विद्युत् तथा ५.वर्षण–

आषाढमासे प्रथमे च पक्षे निरभ्रदृष्टे रविमण्डले च।
विद्युत्नगजर्त्यथ नैव मेघो मासद्वयं तत्र न वर्षणं स्यात् ।।

योगिनी एकादशी– आषाढ कृष्ण एकादशी को योगिनी एकादशी कहते हैं। इस एकादशी व्रत के प्रभाव से कुष्ठनाश होता है। अतः इस व्रत को करने वाला त्वचारोग से रहित होता है– *आषाढे कृष्णपक्षे तु योगिनी–व्रतमाचरेत्। अस्य व्रतस्य पुण्येन कुष्ठो नश्यति वै ध्रुवम्।।*

❀ त्रयोदशदिनात्मकपक्ष फलम् ❀

यदा न जायते पक्ष त्रयोदशदिनात्मकः । भवेल्लोकक्षयो घोरो मुण्डमालायुता मही ।।

आषाढ़ कृष्ण पक्षविचार–द्वितिया तिथि तथा चतुर्थी तिथि की हानि होने से यह पक्ष १३ दिनों का है। यह त्रयोदश १३ दिन का पक्ष होने से पृथ्वी पर जनहानि युद्ध की विभिषिका होगी। जिस वर्ष १३ दिन का पक्ष होता है उस वर्ष सम्पूर्ण विश्व के लिए हानिकारक होता है। विशेष कर द्वितीया तिथि से चतुर्दशी तिथि पर्यन्त दो तिथि का क्षय हो तो विशेष रूप से विश्व के लिए क्षतिकारक होता है। यह पक्ष मंगल कार्यों हेतु निषेध है। यथा– **केचिद्विश्वघस्त्रेऽपि पक्षे त्रयोदशदिने पक्षे यस्मिन् पक्षे ।। त्रयोदशदिनात्मकः तिथिद्वयह्रासः स पक्षोऽतिनिन्द्यः । तदुक्तं ज्योतिर्निबन्धे– पक्षस्य मध्ये द्वितिथि पतेतां तदा भवेद्रौरवकालयोगः। पक्षे विनष्टे सकलं विनष्टमित्याहुराचार्यवराः समस्ताः ।।**

एकपक्षे यदा यान्ति तिथियश्च त्रयोदश। त्रयस्तत्र क्षयं यान्ति वाजिनो मनुजा गजाः
त्रयोदश दिने पक्षे तदा संहरेत् जगत् । अपि वर्षे सहस्रेण कालयोगः प्रकीर्तितः ।।
द्वितीयामारभ्य चतुर्दश्यन्तं तिथिद्वये ह्रासे त्रयोदश दिनात्मकः पक्षोऽति दोषवतो भवति ।

आषाढ़ मास प्रारंभ हो रहा है। आषाढ़ मास के प्रथम दिन यदि सूर्यमण्डल बादलों व विद्युत गर्जन तथा वृष्टि रहित हो तो दो मास पर्यन्त वर्षा का अभाव रहेगा।

❀ श्रीमद्भागवत महापुराण के स्कन्ध ७ के अध्याय ११ में धर्म के ३० लक्षण बतलाये गये हैं–
१. सत्य २. दया ३. तप ४. शौच ५. तितीक्षा ६. शम ७. दम ८. अहिंसा ९. ब्रह्मचर्य १०. त्याग ११. स्वाध्याय १२. आर्जव (सीधापन) १३. संतोष १४. समदृष्टि १५. सेवा १६. भोगनिवृत्ति १७. अनहंकार १८. मौन १९. आत्मविमर्श २०. बलिवैश्वदेव(संविभाग) २१. प्राणियों में आत्मदेवता बुद्धि २२. श्रवण २३. कीर्तन २४. स्मरण २५. सेवा २६. पूजा २७ प्रणाम २८. दास्य भाव २९. मित्र भाव तथा ३०. आत्मसमर्पण

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

जून	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२३	०१:३२	०३:०८	०५:०४	०७:१८	०९:३८	११:५४	१४:०९	१६:२८	१८:४७	२०:५३	२२:३७	००:०६
२४	०१:२८	०३:०४	०५:००	०७:१४	०९:३४	११:५१	१४:०६	१६:२४	१८:४३	२०:४९	२२:३३	००:०२
२५	०१:२४	०३:००	०४:५६	०७:१०	०९:३०	११:४७	१४:०२	१६:२०	१८:३९	२०:४५	२२:२९	२३:५९
२६	०१:२१	०२:५६	०४:५२	०७:०६	०९:२६	११:४३	१३:५८	१६:१७	१८:३५	२०:४१	२२:२५	२३:५५
२७	०१:१७	०२:५३	०४:४८	०७:०२	०९:२२	११:३९	१३:५४	१६:१३	१८:३२	२०:३७	२२:२२	२३:५१
२८	०१:१३	०२:४९	०४:४४	०६:५८	०९:१८	११:३५	१३:५०	१६:०९	१८:२८	२०:३३	२२:१८	२३:४७
२९	०१:०९	०२:४५	०४:४०	०६:५४	०९:१५	११:३१	१३:४६	१६:०५	१८:२४	२०:२९	२२:१४	२३:४३
३०	०१:०५	०२:४१	०४:३६	०६:५०	०९:११	११:२७	१३:४२	१६:०१	१८:२०	२०:२५	२२:१०	२३:३९
जुलाई	०१:०१	०२:३७	०४:३२	०६:४७	०९:०७	११:२३	१३:३८	१५:५७	१८:१६	२०:२१	२२:०६	२३:३५
२	००:५७	०२:३३	०४:२९	०६:४३	०९:०३	११:१९	१३:३४	१५:५३	१८:१२	२०:१७	२२:०२	२३:३१
३	००:५३	०२:२९	०४:२५	०६:३९	०८:५९	११:१५	१३:३०	१५:४९	१८:०८	२०:१४	२१:५८	२३:२७
४	००:४९	०२:२५	०४:२१	०६:३५	०८:५५	११:११	१३:२६	१५:४५	१८:०४	२०:१०	२१:५४	२३:२३
५	००:४५	०२:२१	०४:१७	०६:३१	०८:५१	११:०८	१३:२३	१५:४१	१८:००	२०:०६	२१:५०	२३:१९

जून	सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग
२३	**सर्वार्थ** १८·१७ से, **सिद्ध** २८·२२ से, **त्रिपुष्कर** १८·१७ से २८·२२ तक
२४	**सर्वार्थ** १७·३७ से ① **दग्ध·नक्षत्र·रेव**·१०·३१ से
२६	**अमृत** २२·४० से, **दग्ध·नक्षत्र·धनि**·१५·१९तक
२७	**रवियोग** १३·३१ से
२८	**रवियोग** १२·११ तक
२९	**सिद्ध** १५·२३ से, **दग्ध·तिथि·८** १५·२३ तक ①
३०	**सर्वार्थ** ०८·५३ से, **अमृत** १२·५८ से
१	**अमृत** १०·४१ तक, **सिद्ध** १०·४१ से
२	**सर्वार्थ** ०६·०६ से, **अमृत** ०८·३८ से, **त्रिपुष्कर** ०८·३८ से
३	**सर्वार्थ** २८·२४ तक, **सिद्ध** ०६·५१ तक, **सर्वार्थ** २८·२४ से
४	**सिद्ध** २८·२५ से
५	**सिद्ध** २७·५३ से, **सर्वार्थ** २८·२० से

व्रतों में **एकादशी व्रत** प्रधान है। एकादशी और भगवत्महोत्सव एक व्रत में गिने जाते हैं। जब तक एकादशी और भगवत्महोत्सव हों तब तक उपवास रखना चाहिये। दशमी को असुरों तथा एकादशी में देवताओं की उत्पत्ति हुई है, दशमी में भी अर्धरात्र का समय असुरों की उत्पत्ति का कारण है। अतः एकादशी में दशमी का वेध निषिद्ध माना जाता है। कूर्मपुराण,

अर्धरात्रमति क्रम्य दशमी दृश्यते यदि।
तदाह्येकादशीं त्यक्त्वा द्वादशीं समुपोषयेत् ।।

जो सूर्योदय पूर्व ५५ घटी (४५ घटी निम्बार्क) के उपरान्त यदि दशमी हो तो निश्चय ही उस एकादशी को छोड़ कर द्वादशी में व्रत करे। वैष्णवाचार्यों ने पूर्वविद्धा तिथि का त्याग वैष्णवों का लक्षण माना है– *"पूर्वविद्धा तिथिस्त्यागो वैष्णवस्य हि लक्षणम्"*। इस नारदपंचरात्र के प्रमाणानुसार पूर्वविद्धा तिथि का त्याग ही वैष्णव का लक्षण है। अतः वैष्णव व्रतोपवासादि में पूर्वविद्धा तिथि छोड़ परविद्धा तिथि ही ग्राह्य है।

आषाढ़ शुक्लपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, ६ जुलाई से २१ जुलाई, २०२४ ईस्वी

ग्रहस्थितिः ६:७:२०२४– मार्गी गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः, वक्री शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, मार्गी बुधःपश्चिमोदितः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः			
जुलाई	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·
६	१ श	५५:२५	२७·५०	पुन·	५८:२५	२९·०२	व्याघ·	५५:११	२७·४४	किं	२५:१९	बव	५५:२५
७	२ र	५६:३४	२८·१८	पुष्य	६०:००	अहोरात्र	हर्षण	५३:४१	२७·०९	बाल	२५:५०	कौल	५६:३४
८	३ चं	५८:५६	२९·१५	पुष्य	०१:२२	०६·१४	वज्र	५३:०८	२६·५६	तैति	२७:३६	गर	५८:५६
९	४ मं	६०:००	अहोरात्र	आश्ले·	०५:३०	०७·५३	सिद्धि	५३:२८	२७·०४	वणि	३०:३२	विष	६०:००
१०	४ बु	०२:२४	०६·३९	मघा	१०:४१	०९·५८	व्यति·	५४:२९	२७·२९	विष	०२:२४	बव	३४:२९
११	५ गु	०६:४३	०८·२३	पू·फा·	१६:४१	१२·२२	वरी·	५५:५९	२८·०६	बाल	०६:४३	कौल	३९:०७
१२	६ शु	११:३६	१०·२१	उ·फा·	२३:०८	१४·५८	परिघ	५७:४०	२८·४६	तैति	११:३६	गर	४४:०७
१३	७ श	१६:३६	१२·२२	हस्त	२९:३८	१७·३४	शिव	५९:१२	२९·२४	वणि	१६:३६	विष	४९:०१
१४	८ र	२१:१८	१४·१५	चित्रा	३५:४६	२०·०२	सिद्ध	६०:००	अहोरात्र	बव	२१:१८	बाल	५३:२५
१५	९ चं	२५:१९	१५·५२	स्वाती	४१:११	२२·१२	सिद्ध	००:१७	०५·५१	कौल	२५:१९	तैति	५६:५९
१६	१० मं	२८:२२	१७·०५	विशा·	४५:३४	२३·५८	साध्य	००:४२	०६·०१	गर	२८:२२	वणि	५९:२८
१७	११ बु	३०:१६	१७·५१	अनु·	४८:४९	२५·१७	शुभ शुक्ल	००:१७ ५८:३९	०५·५२ २९:१३	विष	३०:१६	बव	६०:००
१८	१२ गु	३०:५४	१८·०७	ज्ये·	५०:४९	२६·०५	ब्रह्म	५६:३२	२८·२२	बव	००:४४	बाल	३०:५४
१९	१३ शु	३०:१६	१७·५२	मूल	५१:३५	२६·२४	ऐन्द्र	५३:०८	२७·०१	कौल	००:४४	तैति	३०:१६
२०	१४ श	२८:२५	१७·०८	पू·षा·	५१:१०	२६·१५	वैधृ·	४८:४८	२५·१८	वणि	२८:२५	विष	५७:०४
२१	१५ र	२५:२७	१५·५८	उ·षा·	४९:४२	२५·४०	विष्कु·	४३:३५	२३·१३	बव	२५:२७	बाल	५३:३५

दिनाङ्क	दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	✠ व्रत–पर्व–उत्सव ✠
जुलाई	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	जुलाई	६ जुलाई से २१ जुलाई, २०२४
६	३४:१२	५:४०	१९:२१	क·४२:५२	२२·४९	छत्र	६	**गुप्त नवरात्र आरम्भः**
७	३४:११	५:४०	१९:२१	कर्क	अहोरात्र	श्रीवत्स	७	**श्रीजगन्नाथ रथयात्रा**, श्रीरामबलराम रथोत्सव
८	३४:१०	५:४१	१९:२१	कर्क	अहोरात्र	धाता	८	
९	३४:०८	५:४१	१९:२१	सिं·०५:३०	०७·५३	आनन्द	९	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी**
१०	३४:०७	५:४२	१९:२१	सिंह	अहोरात्र	सुस्थिर	१०	व्यतीपात पुण्यम्
११	३४:०५	५:४२	१९:२०	कं·३३:१६	१९·००	गद	११	द्वारकाधीश पाटोत्सव कांकरोली, **साईं टेऊँराम जयन्ती**
१२	३४:०३	५:४३	१९:२०	कन्या	अहोरात्र	शुभ	१२	**श्रीस्कन्द षष्ठी**, कर्दमषष्ठी, मनसापूजा (बंगाल)
१३	३४:०२	५:४३	१९:२०	कन्या	अहोरात्र	मृत्यु	१३	विवस्वत सप्तमी, विवस्वत सूर्यपूजा
१४	३४:००	५:४४	१९:२०	तु·०२:४६	०६·५०	पद्म	१४	**श्रीदुर्गाष्टमी**, श्रीपरशुराम अष्टमी (उड़ीसा)
१५	३३:५८	५:४४	१९:१९	तुला	अहोरात्र	छत्र	१५	**आषाढ़ गुप्तनवरात्र समाप्तिः, भड़ल्या नवमी**
१६	३३:५६	५:४४	१९:१९	वृश्·२९:३५	१७·३४	श्रीवत्स	१६	**गुप्तनवरात्रोत्थापन, आशादशमी**, गिरिजा पूजा, मन्वादि
१७	३३:५४	५:४५	१९:१९	वृश्चिक	अहोरात्र	सौम्य	१७	**श्रीहरिशयनी एकादशी (सर्वेषाम्), चातुर्मास्य व्रतारम्भः**
१८	३३:५२	५:४५	१९:१९	ध·५०:४९	२६·०५	कालदंड	१८	**श्रीवासुदेव द्वादशी, प्रदोष व्रतम्**
१९	३३:५०	५:४६	१९:१८	धनु	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	१९	
२०	३३:४८	५:४६	१९:१८	धनु	अहोरात्र	मातङ्ग	२०	**श्रीशिवशयनचतुर्दशी, पूर्णिमा** (व्रत), चौमासी चौदस
२१	३३:४६	५:४७	१९:१७	म·०५:५३	०८·०८	अमृत	२१	**पूर्णिमा (स्नान, दान), गुरुपूर्णिमा, वेदव्यास जयन्ती**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क जुलाई	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि
६	१ श	०२:१९:४९:०७	०२:२०:४३:१५	००:२४:३६:२४	०३:११:१३:३२	०१:१६:१९:१०	०३:००:२२:११
७	२ र	०२:२०:४५:५९	०३:०३:४०:३०	००:२५:१८:५०	०३:१२:४७:३५	०१:१६:३२:२२	०३:०१:३५:२९
८	३ च	०२:२१:४२:५०	०३:१६:२२:५५	००:२६:०१:१०	०३:१४:१९:४४	०१:१६:४५:३१	०३:०२:४८:४७
९	४ म	०२:२२:३९:४२	०३:२८:५१:५४	००:२६:४३:२५	०३:१५:४९:५१	०१:१६:५८:३६	०३:०४:०२:०५
१०	४ बु	०२:२३:३६:३५	०४:११:०९:३३	००:२७:२५:३४	०३:१७:१७:४८	०१:१७:११:३८	०३:०५:१५:२२
११	५ गु	०२:२४:३३:२८	०४:२३:१८:३१	००:२८:०७:३८	०३:१८:४३:२५	०१:१७:२४:३५	०३:०६:२८:४०
१२	६ शु	०२:२५:३०:२१	०५:०५:२१:५६	००:२८:४९:३७	०३:२०:०६:३३	०१:१७:३७:२९	०३:०७:४१:५७
१३	७ श	०२:२६:२७:१५	०५:१७:२३:१७	००:२९:३१:२९	०३:२१:२७:०१	०१:१७:५०:१९	०३:०८:५५:१४
१४	८ र	०२:२७:२४:०९	०५:२९:२६:३४	०१:००:१३:१७	०३:२२:४४:३९	०१:१८:०३:०५	०३:१०:०८:३१
१५	९ च	०२:२८:२१:०४	०६:११:३५:१८	०१:००:५४:५९	०३:२३:५९:१५	०१:१८:१५:४७	०३:११:२१:४८
१६	१० म	०२:२९:१८:००	०६:२३:५२:३८	०१:०१:३६:३५	०३:२५:१०:३७	०१:१८:२८:२४	०३:१२:३५:०५
१७	११ बु	०३:००:१४:५७	०७:०६:२१:१४	०१:०२:१८:०५	०३:२६:१८:३१	०१:१८:४०:५७	०३:१३:४८:२२
१८	१२ गु	०३:०१:११:५४	०७:१९:०३:१२	०१:०२:५९:३०	०३:२७:२२:४३	०१:१८:५३:२६	०३:१५:०१:३८
१९	१३ शु	०३:०२:०८:५२	०८:०१:५९:६०	०१:०३:४०:४९	०३:२८:२२:५८	०१:१९:०५:५०	०३:१६:१४:५५
२०	१४ श	०३:०३:०५:५१	०८:१५:१२:१८	०१:०४:२२:०३	०३:२९:१९:०२	०१:१९:१८:०९	०३:१७:२८:१२
२१	१५ र	०३:०४:०२:५०	०८:२८:४०:०२	०१:०५:०३:१०	०४:००:१०:३९	०१:१९:३०:२४	०३:१८:४१:२८

दिनाङ्क जुलाई	वक्री शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
६	१०:२२:०३:०९	०५:१९:११:५३	४७:०६:१९	उ·२३:२३:२०	– ४:११	०५:४४
७	१०:२२:०१:५२	०५:१९:०८:४२	४७:०५:४२	उ·२३:१७:३९	– ४:२१	०६:४२
८	१०:२२:००:२९	०५:१९:०५:३२	४७:०५:०२	उ·२३:११:३३	– ४:३०	०७:३९
९	१०:२१:५८:५९	०५:१९:०२:२१	४७:०४:२०	उ·२३:०५:०४	– ४:३९	०८:३५
१०	१०:२१:५७:२३	०५:१८:५९:१०	४७:०३:३६	उ·२२:५८:११	– ४:४८	०९:२९
११	१०:२१:५५:४१	०५:१८:५५:५९	४७:०२:४९	उ·२२:५०:५४	– ४:५७	१०:२२
१२	१०:२१:५३:५२	०५:१८:५२:४८	४७:०२:००	उ·२२:४३:१४	– ५:०५	११:१४
१३	१०:२१:५१:५७	०५:१८:४९:३८	४७:०१:०९	उ·२२:३५:१०	– ५:१२	१२:०७
१४	१०:२१:४९:५६	०५:१८:४६:२७	४७:००:१५	उ·२२:२६:४४	– ५:१९	१२:५९
१५	१०:२१:४७:४८	०५:१८:४३:१६	४६:५९:२०	उ·२२:१७:५४	– ५:२६	१३:५४
१६	१०:२१:४५:३५	०५:१८:४०:०५	४६:५८:२२	उ·२२:०८:४२	– ५:३२	१४:४९
१७	१०:२१:४३:१५	०५:१८:३६:५४	४६:५७:२३	उ·२१:५९:०७	– ५:३७	१५:४६
१८	१०:२१:४०:५०	०५:१८:३३:४४	४६:५६:२१	उ·२१:४९:१०	– ५:४३	१६:४२
१९	१०:२१:३८:१८	०५:१८:३०:३३	४६:५५:१७	उ·२१:३८:५१	– ५:४७	१७:४०
२०	१०:२१:३५:४१	०५:१८:२७:२२	४६:५४:११	उ·२१:२८:१०	– ५:५१	१८:३१
२१	१०:२१:३२:५८	०५:१८:२४:११	४६:५३:०४	उ·२१:१७:०७	– ५:५५	१९:२४

१० जुलाई सूर्योदयकालीन तिथिः४

१७ जुलाई सूर्योदयकालीन तिथिः११
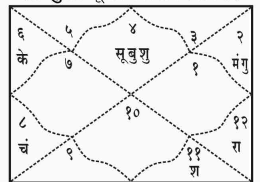
आषाढ़ शुक्लपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, ६ जुलाई से २१ जुलाई, २०२४ ईस्वी

पक्षान्तः– कालःपश्चिम । ऋतुःग्रीष्म । सौम्यगोलः । कर्कार्कतः
ऋतुःवर्षा दक्षिणायनं । ति·१५ अयनांशाः२२:५२:४४

दिनाङ्क जुलाई	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
६	१ श	पुनर्वसौरविः घं·१०:१६।
७	२ र	।
८	३ चं	**गण्डान्तारम्भः२५:२६**, पुष्येशुक्रः घं·१५:५६। ① कृत्तिकायांमङ्गलः घं·०३:४७।
९	४ मं	**भद्रा १७:५५–३०:३९घं·**, **गण्डान्तः१४:२३**, आश्लेषयांबुधः घं·१९:२० ①
१०	४ बु	**भद्रांतः६:४०घं·**।
११	५ गु	श्री वल्लभाचार्य गोलोकगमन।
१२	६ शु	**श्रीमहावीर स्वामी गर्भ कल्याणक**।
१३	७ श	**भद्रा १२:२२–२५:२०घं·**, वृषेमङ्गलः घं·२२:०७।
१४	८ र	महिषघ्नी व्रत।
१५	९ चं	कन्दर्प नवमी, ऐन्द्री पूजा। ② कर्केरविः घं·२३:२७।
१६	१० मं	**भद्रारंभः२९:३२घं·**, **कर्क संक्रान्ति पुण्यकालं १२:३१–१९:१९घं·**, ②
१७	११ बु	श्रीविष्णुशयनोत्सव, **भद्रांतः१७:५२घं·**,।
१८	१२ गु	**गण्डान्तारम्भः१९:५६**, हरिवासराभाव।
१९	१३ शु	**गण्डान्तः८:१३**, आश्लेषयांशुक्रः घं·१४:०२।
२०	१४ श	**भद्रा १७:०९–२८:३७घं·**, वैधृति पुण्यम्, पुष्येरविः घं·११:४५।
२१	१५ र	**श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा, वायु धारिणी पूर्णिमा, अभिजितः१९:५०–२७:१३**, मन्वादि, कोकिला व्रत, वायु परीक्षण, मघायांसिंहेबुधः घं·00:४२।

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
१	१२:0३–१३:५३
१५	१२:0६–१३:५६

❀ आषाढ़ मास कृत्य ❀

❀ **आषाढ़ी गुप्त नवरात्रि–** आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा से लेकर नवमी पर्यन्त गुप्त नवरात्रि होती है। इसमें भगवती का आराधन करना चाहिए। वासन्तिक (चैत्र) एवं शारदीय (आश्विन) नवरात्रि प्रकट होती हैं, व आषाढ़ी एवं माघी नवरात्रि गुप्त होती हैं।

– **चैत्रेऽश्विने तथाषाढे माघे कार्यो महोत्सवः नवरात्रे महाराज! पूजा कार्या विशेषतः।।** – श्रीमद्देवीभागवत, ३/२४/२१।।

गुप्त नवरात्रि में अपने इष्टदेव की आराधना, पाठ, जपादि कर्म परम सिद्धिदायक हो जाता है।

❀ **रथयात्रादर्शन–** आषाढ़ शुक्ल द्वितीया के दिन रथयात्रा उत्सव करें। तिथि का अभाव हो, अर्थात् द्वितीया तिथि न हो, तो केवल पुष्य नक्षत्र में ही उस उत्सव को नहीं करना चाहिये। क्योंकि, ''तिथि न होने पर जो मनुष्य (रथयात्रा आदि) कर्म करते हैं, उनका किया हुआ सब कर्म वृथा हो जाता है, और वे अपने को नरक में ले जाते हैं।''–ऐसा गर्गाचार्य का कथन है। विद्धाधिक होने पर दूसरे दिन तृतीया में उत्सव करें।

❀ **श्रीहरि(विष्णु) शयन–** आषाढ़ शुक्ल एकादशी श्रीहरिशयनी अथवा पद्मा कहलाती है। इस दिन से भगवान् विष्णु क्षीरसागर में शेषशैय्या पर चार मास के लिए शयन करते हैं। फलतः इन चार मासों में सभी प्रकार के शुभकर्म वर्जित हैं। श्रीविष्णु शयनोत्सव की रात्रि में श्रीभगवान् की पूजा करे। वस्त्र–चन्दनादि, छत्र, चामर, ध्वजा, पताकाादि अर्पण कर भगवान् को सन्तुष्ट करे। श्रीभगवान् को पालकी में जलाशय के निकट ले जाकर पूजा करके जूही के फूल से प्रार्थनापूर्वक पुष्पाञ्जलि दे –

सुप्ते त्वयि जगन्नाथे जगत्सुप्तं भवेदिदम् । विबुद्धे त्वयि बुध्येत तत्सर्वं सचराचरम् ।

(हे भगवान् विष्णु! आपके सोने से संसार सो जाता है। आपके जागने से यह चराचर जगत् जाग उठता है।)

❀ **श्री गुर पद नख मनि गन जोती। सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती।। दलन मोह तम सो सप्रकासू। बड़े भाग उर** आवइ **जासू।।**

श्री गुरुदेव भगवान् के चरण नखों की ज्योति मणियों के प्रकाश के समान है, जिसके स्मरण करते ही हृदय में दिव्य दृष्टि उत्पन्न हो जाती है। वह प्रकाश अज्ञान रूपी अन्धकार का नाश करने वाला है, वह जिसके हृदय में आ जाता है, उसके बड़े भाग्य हैं।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

जुलाई	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
६	00:४१	0२:१७	0४:१३	0६:२७	0८:४७	११:0४	१३:१९	१५:३७	१७:५६	२0:0२	२१:४६	२३:१५
७	00:३७	0२:१३	0४:0९	0६:२३	0८:४३	११:00	१३:१५	१५:३४	१७:५२	१९:५८	२१:४२	२३:१२
८	00:३४	0२:0९	0४:0५	0६:१९	0८:३९	१0:५६	१३:११	१५:३0	१७:४९	१९:५४	२१:३८	२३:0८
९	00:३0	0२:0६	0४:0१	0६:१५	0८:३५	१0:५२	१३:0७	१५:२६	१७:४५	१९:५0	२१:३५	२३:0४
१0	00:२६	0२:0२	0३:५७	0६:११	0८:३१	१0:४८	१३:0३	१५:२२	१७:४१	१९:४६	२१:३१	२३:00
११	00:२२	0१:५८	0३:५३	0६:0७	0८:२८	१0:४४	१२:५९	१५:१८	१७:३७	१९:४२	२१:२७	२२:५६
१२	00:१८	0१:५४	0३:४९	0६:0३	0८:२४	१0:४0	१२:५५	१५:१४	१७:३३	१९:३८	२१:२३	२२:५२
१३	00:१४	0१:५0	0३:४५	0६:00	0८:२0	१0:३६	१२:५१	१५:१0	१७:२९	१९:३४	२१:१९	२२:४८
१४	00:१0	0१:४६	0३:४१	0५:५६	0८:१६	१0:३२	१२:४७	१५:0६	१७:२५	१९:३0	२१:१५	२२:४४
१५	00:0६	0१:४२	0३:३८	0५:५२	0८:१२	१0:२८	१२:४३	१५:0२	१७:२१	१९:२६	२१:११	२२:४0
१६	00:0२	0१:३८	0३:३४	0५:४८	0८:0८	१0:२४	१२:३९	१४:५८	१७:१७	१९:२३	२१:0७	२२:३६
१७	२३:५८	0१:३४	0३:३0	0५:४४	0८:0४	१0:२0	१२:३५	१४:५४	१७:१३	१९:१९	२१:0३	२२:३२
१८	२३:५४	0१:३0	0३:२६	0५:४0	0८:00	१0:१७	१२:३२	१४:५0	१७:0९	१९:१५	२0:५९	२२:२८
१९	२३:५0	0१:२६	0३:२२	0५:३६	0७:५६	१0:१३	१२:२८	१४:४६	१७:0५	१९:११	२0:५५	२२:२४
२0	२३:४६	0१:२२	0३:१८	0५:३२	0७:५२	१0:0९	१२:२४	१४:४३	१७:0१	१९:0७	२0:५१	२२:२0
२१	२३:४२	0१:१८	0३:१४	0५:२८	0७:४८	१0:0५	१२:२0	१४:३९	१६:५७	१९:0३	२0:४७	२२:१७

जुलाई	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
६	**अमृत** २७·५० तक, **त्रिपुष्कर** २७·५० से २९·०२ तक
७	**सर्वार्थ** ६०·०० से, **सिद्ध** २८·१८ से, **रवि पुष्य योग** अहोरात्र
८	**सर्वार्थ** ०६·१४ तक
९	**सर्वार्थ** ०७·५३ तक, **रवियोग** ०७·५३ से
१०	**रवियोग** ०९·५८ तक
११	**सिद्ध** ०८·२३ तक, **रवियोग–दग्ध·नक्षत्र·उफा·** १२·२२ से
१२	**सिद्ध** १०·२१ तक, **रवियोग** १४·५८ तक, **मृत्यु** १०·२१ से
१४	**सिद्ध** १४·१५ तक,**रवियोग** २०·०२ से, **दग्ध·तिथि·८** १४·१५ तक
१५	**रवियोग** २२·१२ तक, **अमृत** १५·५२ से, **रवियोग** २२·१२ से
१६	**रवियोग** २३·५८ तक
१७	**सर्वार्थ** २५·१७ तक, **अमृत** १७·५१तक, **सिद्ध** १७·५१ से
१८	**अमृत** १८·०७ से, **रवियोग** २६·०५ से
१९	**रवियोग** २६·२४ तक, **अमृत** १७·५२ से
२०	**सिद्ध** १७·०८ तक, **रवियोग** २६·१५ तक
२१	**सर्वार्थ** २५·४० तक, **अमृत** १५·५८ तक

卐 **देवशयनी एकादशी** को श्रीहरि क्षीरसागर में शयन करते हैं। इस मन्त्र से पूजा करें–

सुप्ते त्वयि जगन्नाथे जगत्सुप्तं भवेदिदम्।
विबुद्धे च विबुध्येत प्रसन्नो मे भवाव्यय॥

अभीष्ट फलप्राप्ति हेतु चातुर्मास में ४ माह के लिए लिये पदार्थों का त्याग और ग्रहण करे। स्वर्गप्राप्तिके लिये पुष्पादि भोगों का त्याग करे। देह–शुद्धि के लिये पंचगव्य पान करे, वंश–वृद्धिके लिये नियमित दूध का, सर्वपापक्षयपूर्वक सकल पुण्यफल प्राप्त करने के लिये एकभुक्त, नक्तव्रत, अयाचित भोजन या सर्वथा उपवास का व्रत ग्रहण करे।

卐 आषाढ़ी **गुरु पूर्णिमा** पर समस्त आचार्य परम्परा सहित निजगुरुदेव का पूजन करना चाहिये। यह पूर्णिमा मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्य है। परंतु दोनों दिन मध्याह्नव्यापिनी हो तो परदिन की पूर्णिमा ग्रहण करनी चाहिये।

श्रावण कृष्णपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, २२ जुलाई से ४ अगस्त, २०२४ ईस्वी

ग्रहस्थितिः २२:७:२०२४– मार्गी गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः, वक्री शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, मार्गी बुधःपश्चिमोदितः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
जुलाई	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	जुलाई	२२ जुलाई से ४ अगस्त, २०२४
२२	१ चं	२१:३०	१४·२४	श्रवण	४७:१९	२४·४३	प्रीति	३७:३७	२०·५०	कौल	२१:३०	तैति	४९:१४	३३:४३	५:४७	१९:१७	मकर	अहोरात्र	सिद्धि	२२	**हिण्डोला प्रारम्भ, श्रावण सोमवार व्रत,**
२३	२ मं	१६:४५	१२·३०	धनि·	४४:१२	२३·२९	आयु·	३१:०१	१८·१२	गर	१६:४५	वणि	४४:०७	३३:४१	५:४८	१९:१७	कुं·१५:५०	१२·०८	उत्पात	२३	जयापार्वती व्रतारम्भ (गुजरात), मंगलागौरी पूजन
२४	३ बु	११:२०	१०·२१	शत·	४०:३२	२२·०१	सौभा·	२३:५५	१५·२२	विष	११:२०	बव	३८:२७	३३:३८	५:४९	१९:१६	कुंभ	अहोरात्र	मानस	२४	**संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय घं·२१:३१**
२५	४ गु ५ गु	०५:२८ ५३:५३	०८·०० २७:२२	पू·भा·	३६:३०	२०·२५	शोभ·	१६:२८	१२·२४	बाल	०५:२८	कौल	३२:२६	३३:३६	५:४९	१९:१६	मी·२२:३१	१४·५०	मुद्गर	२५	**नाग पञ्चमी (जयपुर परम्परागत)**
२६	६ शु	५३:०७	२७·०५	उ·भा·	३२:१७	१८·४४	अतिग·	०८:४९	०९·२१	गर	२६:१३	वणि	५३:०७	३३:३३	५:५०	१९:१५	मीन	अहोरात्र	ध्वज	२६	
२७	७ श	४७:०३	२४·३९	रेवती	२८:०९	१७·०६	सुकर्मा धृति	०१:०९ ५२:२९	०६·१८ २६:५०	विष	२०:०३	बव	४७:०३	३३:३१	५:५०	१९:१५	मे·२८:०९	१७·०६	धाता	२७	भानुसप्तमी
२८	८ र	४१:१९	२२·२२	अश्वि·	२४:१७	१५·३३	शूल	४६:२४	२४·२४	बाल	१४:०७	कौल	४१:१९	३३:२८	५:५१	१९:१४	मेष	अहोरात्र	आनन्द	२८	**श्रीकालाष्टमी**
२९	९ चं	३६:०६	२०·१७	भरणी	२०:५२	१४·१२	गण्ड	३९:३७	२१·४२	तैति	०८:३७	गर	३६:०६	३३:२५	५:५१	१९:१४	वृ·३५:०७	१९·५४	सुस्थिर	२९	**श्रावण सोमवार व्रतम्**
३०	१० मं	३१:३६	१८·३०	कृत्ति·	१८:०७	१३·०७	वृद्धि	३३:२५	१९·१४	वणि	०३:४४	विष	३१:३६	३३:२३	५:५२	१९:१३	वृष	अहोरात्र	गद	३०	मंगलागौरी पूजा
३१	११ बु	२७:५७	१७·०३	रोहि·	१६:१२	१२·२१	ध्रुव	२७:५५	१७·०२	बाल	२७:५७	कौल	५६:३२	३३:२०	५:५२	१९:१२	मि·४५:३७	२४·०७	शुभ	३१	**श्रीकामदा एकादशी (सर्वेषाम्)**
अगस्त	१२ गु	२५:२१	१६·०१	मृग·	१५:१६	११·५९	व्याघ·	२३:१५	१५·११	तैति	२५:२१	गर	५४:२९	३३:१७	५:५३	१९:१२	मिथुन	अहोरात्र	मृत्यु	अगस्त	**प्रदोष व्रतम्**
२	१३ शु	२३:५४	१५·२७	आर्द्रा	१५:२७	१२·०४	हर्षण	१९:३१	१३·४२	वणि	२३:५४	विष	५३:३८	३३:१४	५:५३	१९:११	मिथुन	अहोरात्र	पद्म	२	**मास शिवरात्रि व्रतम्**
३	१४ श	२३:४१	१५·२२	पुन·	१६:५२	१२·३८	वज्र	१६:४६	१२·३६	शकु	२३:४१	चतु	५४:०४	३३:११	५:५४	१९:१०	क·०१:२३	०६·२७	छत्र	३	वक्री शुक्रः घं·२७:३१
४	३० र	२४:४५	१५·४८	पुष्य	१९:३१	१३·४३	सिद्धि	१५:०२	११·५५	नाग	२४:४५	किं	५५:४६	३३:०८	५:५४	१९:१०	कर्क	अहोरात्र	श्रीवत्स	४	**हरियाली अमावस्या (देव–पितृकार्य)**, मन्वादि

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क जुलाई	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः (मा/व) रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	वक्री शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
२२	१ चं	०३:०४:५९:५१	०९:१२:२२:२३	०१:०५:४४:१२	०४:००:५७:३१	०१:१९:४२:३४	०३:१९:५४:४५	१०:२१:३०:१०	०५:१८:२१:००	४६:५१:५४	उ·२१:०५:४३	– ५:५८	२०:०८
२३	२ मं	०३:०५:५६:५२	०९:२६:१७:४५	०१:०६:२५:०८	०४:०१:३९:२३	०१:१९:५४:३८	०३:२१:०८:०१	१०:२१:२७:१६	०५:१८:१७:५०	४६:५०:४२	उ·२०:५३:५८	– ५:००	२०:५२
२४	३ बु	०३:०६:५३:५४	१०:१०:२३:५५	०१:०७:०५:५८	०४:०२:१५:५७	०१:२०:०६:३८	०३:२२:२१:१७	१०:२१:२४:१६	०५:१८:१४:३९	४६:४९:२९	उ·२०:४१:५२	– ६:०२	२१:३१
२५	४ गु	०३:०७:५०:५८	१०:२४:३८:०७	०१:०७:४६:४३	०४:०२:४६:५७	०१:२०:१८:३३	०३:२३:३४:३३	१०:२१:२१:११	०५:१८:११:२८	४६:४८:१४	उ·२०:२९:२५	– ६:०३	२२:१०
२६	६ शु	०३:०८:४८:०२	११:०८:५७:०८	०१:०८:२७:२१	०४:०३:१२:०७	०१:२०:३०:२२	०३:२४:४७:५०	१०:२१:१८:०१	०५:१८:०८:१७	४६:४६:५७	उ·२०:१६:३८	– ६:०४	२२:४९
२७	७ श	०३:०९:४५:०७	११:२३:१७:२०	०१:०९:०७:५३	०४:०३:३१:१३	०१:२०:४२:०६	०३:२६:०१:०६	१०:२१:१४:४६	०५:१८:०५:०६	४६:४५:३९	उ·२०:०३:३०	– ६:०४	२३:२७
२८	८ र	०३:१०:४२:१३	००:०७:३४:४६	०१:०९:४८:१९	०४:०३:४४:०२	०१:२०:५३:४४	०३:२७:१४:२२	१०:२१:११:२५	०५:१८:०१:५६	४६:४४:१९	उ·१९:५०:०३	– ६:०३	२४:११
२९	९ चं	०३:११:३९:२१	००:२१:४६:००	०१:१०:२८:४०	वक्री ०३:५०:२३	०१:२१:०५:१७	०३:२८:२७:३८	१०:२१:०७:६०	०५:१७:५८:४५	४६:४२:५७	उ·१९:३६:१६	– ६:०२	२४:५५
३०	१० मं	०३:१२:३६:२९	०१:०५:४८:०१	०१:११:०८:५४	०४:०३:५०:१०	०१:२१:१६:४४	०३:२९:४०:५४	१०:२१:०४:२९	०५:१७:५५:३४	४६:४१:३४	उ·१९:२२:०९	– ५:००	२५:४६
३१	११ बु	०३:१३:३३:३९	०१:१९:३८:१५	०१:११:४९:०२	०४:०३:४३:२०	०१:२१:२८:०५	०४:००:५४:१०	१०:२१:००:५४	०५:१७:५२:२३	४६:४०:०९	उ·१९:०७:४४	– ५:५८	२६:३८
अगस्त	१२ गु	०३:१४:३०:४९	०२:०३:१४:४२	०१:१२:२९:०४	०४:०३:२९:५६	०१:२१:३९:२०	०४:०२:०७:२६	१०:२०:५७:१४	०५:१७:४९:१२	४६:३८:४३	उ·१८:५२:६०	– ५:५५	२७:३५
२	१३ शु	०३:१५:२८:०१	०२:१६:३६:०८	०१:१३:०८:५९	०४:०३:१०:०८	०१:२१:५०:२९	०४:०३:२०:४२	१०:२०:५३:३०	०५:१७:४६:०१	४६:३७:१५	उ·१८:३७:५७	– ५:५१	२८:३३
३	१४ श	०३:१६:२५:१४	०२:२९:४२:०१	०१:१३:४८:४९	०४:०२:४४:१२	०१:२२:०१:३२	०४:०४:३३:५८	१०:२०:४९:४१	०५:१७:४२:५१	४६:३५:४६	उ·१८:२२:३६	– ५:४७	२९:३०
४	३० र	०३:१७:२२:२९	०३:१२:३२:३५	०१:१४:२८:३२	०४:०२:१२:३३	०१:२२:१२:२९	०४:०५:४७:१३	१०:२०:४५:४९	०५:१७:३९:४०	४६:३४:१५	उ·१८:०६:५७	– ५:४२	०६:२७

२५ जुलाई सूर्योदयकालीन तिथि:**४**
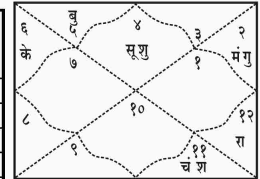
३१ जुलाई सूर्योदयकालीन तिथि:**११**
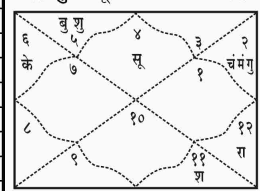
श्रावण कृष्णपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, २२ जुलाई से ४ अगस्त, २०२४ ईस्वी

पक्षान्तः–कालःपश्चिम । ऋतुः वर्षा । सौम्यगोलः । दक्षिणायनं । ति·३० अयनांशाः२२:५२:४६

दिनाङ्क जुलाई	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
२२	१ चं	**अशून्य शयन व्रतम्, मैथिल नववर्ष आरम्भ।**
२३	२ मं	**पंचकारंभः१२:०८, भद्रारंभः२३:२७घं·।**
२४	३ बु	**पंचक, भद्रांतः१०:२१घं·।**
२५	४ गु	**पंचक,** हरदेवजी पूजा (जयपुरे)।
२६	६ शु	**पंचक, भद्रारंभः२७:०५घं·,** द·ति·६।
२७	७ श	**पंचकान्तः१७:०६, भद्रांतः१३:५२घं·, गण्डान्तः११:३०–२२:४२।**
२८	८ र	रोहिण्यांमङ्गलःघं·१२:५२, मन्वादि।
२९	९ चं	गुरु हरकिशन जयन्ती, वक्री बुधःघं·०९:१६।
३०	१० मं	**भद्रा ७:२२–१८:३०घं·,** मघायांसिंहेशुक्रःघं·१२:१२।
३१	११ बु	।
अगस्त	१२ गु	।
२	१३ शु	**भद्रा १५:२७–२७:२१घं·।**
३	१४ श	आश्लेषयांरविःघं·१२:०६।
४	३० र	**श्रीसरसमाधुरी जयन्ती शुकपीठ** (जयपुर), **कर्क संक्रान्ति पुण्यकालं,१०:५१–१७:१५घं·।**

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	१२:०६–१३:५४
३०	१२:०६–१३:५२

❀ श्रावण मास कृत्य ❀

❀ **नागपंचमी**– जयपुर में श्रावण कृष्णपक्ष की पंचमी को नागपंचमी मनाई जाती है, अन्य क्षेत्रों में परम्पराभेद से श्रावण शुक्लपक्ष अथवा भाद्र कृष्ण की पञ्चमी को मनाई जाती है। यह षष्ठीयुक्ता शुभ होती है, ***"पञ्चमी नागपूजायां कार्या षष्ठीसमन्विता।*** आज सर्पों की पूजा करे। घर के मुख्य दरवाजे के दोनों पार्श्वों में नागों के चित्र सटाकर अथवा गोबर से नागों की आकृति बनाकर अनन्त आदि नागों की पूजा दूध, घी, नैवेद्य, दधि, अक्षत, दूर्वा, कुशा, गन्ध, पुष्प आदि से करके प्रार्थना करे कि हमारे जीवन में सर्पों का भय न हो। भविष्यपुराण में कहा है कि प्रत्येक पञ्चमी तिथि में नागपूजा करे। सर्पस्तोत्र के पाठ से कालसर्पदोष एवं सर्पशाप की शान्ति होती है। **सर्पस्तोत्र** –

ब्रह्मलोके च ये सर्पाः शेषनागपुरोगमाः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ।।१।।
विष्णुलोके च ये सर्पा वासुकिप्रमुखाश्च ये। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ।।२।।
रुद्रलोके च ये सर्पास्तक्षकप्रमुखास्तथा। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ।।३।।
खाण्डवस्य तथा दाहे स्वर्गं ये च समाश्रिताः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ।।४।।
सर्पसत्रे च ये सर्पा आस्तिकेन च रक्षिताः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ।।५।।
मलये चैव ये सर्पाः कर्कोटकप्रमुखाश्च ये। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ।।६।।
धर्मलोके च ये सर्पा वैतरण्यां समाश्रिताः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ।।७।।
ये सर्पाः पार्वतीयेषु दरीसंधिषु संस्थिताः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ।।८।।
ग्रामे वा यदि वारण्ये ये सर्पाः प्रचरन्ति हि । नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ।।९।।
पृथिव्यां चैव ये सर्पा ये सर्पा बिलसंस्थिताः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ।।१०।।
रसातले च ये सर्पा अनन्ताद्या महाबलाः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ।।११।।

❀ **सर्प गायत्री** -- भुजङ्गेशाय विद्महे सर्पराजाय धीमहि । तन्नो नागः प्रचोदयात् ।

शकुन के आधार पर वर्षा विचारः-

१. गोरैया धूल में स्नान करे या चातक बोले तो शीघ्र वर्षा होती है। **२.** शतभिषा नक्षत्र के दिन दक्षिण हवा जोर से बहे तो शीघ्र वर्षा होती है। **३.** गाय या गिरगिट सूर्य की ओर देखे, कुत्ता घर से बाहर जाने को अधिक उद्यत हो तो वर्षा होती है। **४.** पशु, कुत्ता खुरों से मिट्टी खोदे, आधी रात को मुर्गा बोले तो शीघ्र वर्षा होती है। **५.** लाल चीटी अंडों के साथ ऊपर की ओर चढ़े अथवा शमी वृक्ष पर चढ़े तो वर्षा होती हैं। ६. गोबर में अधिक कीड़ा हो जाए, धूप में तेजी रहे, पपीहा बोले तो शीघ्र वर्षा होती है। ७. जहाँ तहाँ बगुला पंख फैलाकर पंक्ति में दिखे तो २–३ प्रहरों के बीच वर्षा होती है। ८. मक्खी, भ्रमर–पंक्ति में उड़े, गोबर की ओर जाय तो वर्षा होती है। ९. मछली जमीन की ओर आने को उद्यत हो और मेढ़क जोर से शब्द करे तो शीघ्र वर्षा होती है। १०. गुड़, नमक, मक्खन (घी), अनायास पिघले तो वर्षा होती है।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

जुलाई	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२२	२३:३८	०१:१४	०३:१०	०५:२४	०७:४४	१०:०१	१२:१६	१४:३५	१६:५४	१८:५९	२०:४३	२२:१३
२३	२३:३५	०१:११	०३:०६	०५:२०	०७:४०	०९:५७	१२:१२	१४:३१	१६:५०	१८:५५	२०:४०	२२:०९
२४	२३:३१	०१:०७	०३:०२	०५:१६	०७:३६	०९:५३	१२:०८	१४:२७	१६:४६	१८:५१	२०:३६	२२:०५
२५	२३:२७	०१:०३	०२:५८	०५:१२	०७:३३	०९:४९	१२:०४	१४:२३	१६:४२	१८:४७	२०:३२	२२:०१
२६	२३:२३	००:५९	०२:५४	०५:०८	०७:२९	०९:४५	१२:००	१४:१९	१६:३८	१८:४३	२०:२८	२१:५७
२७	२३:१९	००:५५	०२:५०	०५:०४	०७:२५	०९:४१	११:५६	१४:१५	१६:३४	१८:३९	२०:२४	२१:५३
२८	२३:१५	००:५१	०२:४६	०५:०१	०७:२१	०९:३७	११:५२	१४:११	१६:३०	१८:३५	२०:२०	२१:४९
२९	२३:११	००:४७	०२:४२	०४:५७	०७:१७	०९:३३	११:४८	१४:०७	१६:२६	१८:३१	२०:१६	२१:४५
३०	२३:०७	००:४३	०२:३८	०४:५३	०७:१३	०९:२९	११:४४	१४:०३	१६:२२	१८:२७	२०:१२	२१:४१
३१	२३:०३	००:३९	०२:३४	०४:४९	०७:०९	०९:२५	११:४०	१३:५९	१६:१८	१८:२३	२०:०८	२१:३७
अगस्त	२२:५९	००:३५	०२:३१	०४:४५	०७:०५	०९:२१	११:३६	१३:५५	१६:१४	१८:१९	२०:०४	२१:३३
२	२२:५५	००:३१	०२:२७	०४:४१	०७:०१	०९:१७	११:३२	१३:५१	१६:१०	१८:१६	२०:००	२१:२९
३	२२:५१	००:२७	०२:२३	०४:३७	०६:५७	०९:१४	११:२८	१३:४७	१६:०६	१८:१२	१९:५६	२१:२५
४	२२:४७	००:२३	०२:१९	०४:३३	०६:५३	०९:१०	११:२५	१३:४३	१६:०२	१८:०८	१९:५२	२१:२१

जुलाई	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
२२	**सर्वार्थ** २४·१९ तक, **सिद्ध** १४·२४ तक
२३	**अमृत–द्विपुष्कर** १२·३० तक, **सिद्ध** १२·३० से
२५	**सिद्ध** ०८·०० से ① **दग्ध·तिथि·६** २७·०५ तक
२६	**सिद्ध** २७·०५ तक, **सर्वार्थ–रवियोग** १८·४४ से ①
२७	**रवियोग** १७·०६ तक, **दग्ध·नक्षत्र·रेव·**१७·०६ तक
२८	**सर्वार्थ** १५·३३ तक, **सिद्ध** २२·२२ तक, **दग्ध·नक्षत्र·भर·** १५·३३ से
२९	**अमृत** २०·१७ से
३०	**सर्वार्थ** १३·०७ तक
३१	**सर्वार्थ** अहोरात्र, **अमृत** १७·०३ तक, **सिद्ध** १७·०३ से
१	**अमृत** १६·०१ से
२	**सर्वार्थ** १२·०४ से, **अमृत** १५·२७ से
३	**सिद्ध** १५·२२ तक ② **रविपुष्य योग** १३·४३ तक
४	**सर्वार्थ** १३·४३ तक, **अमृत** १५·४८ तक ②

卐 **अशून्यशयन व्रत** का आरम्भ श्रावण मास में होता है। इसके प्रभावसे विवाहविच्छेद की संभावना नष्ट हो जाती है। श्रावण में जो श्री शिव–पार्वती की युग्मपूजा करेगा उसका शुभ विवाह होगा और उपवासपूर्वक श्रावण कृष्ण द्वितीया की रात्रि में जो श्री विष्णुलक्ष्मी की पूजा बिस्तर पर करेंगी उनका विवाह–विच्छेद नहीं होगा–

यथा त्वशून्यं तव देव तल्पं समं हि लक्ष्म्या वरदाच्युतेश।
सत्येन तेनामितवीर्य विष्णो गार्हस्थ्यनाशो मम नास्तु देव।

हे विष्णु! आप और लक्ष्मीजी का गृहस्थ जीवन कभी नष्ट नहीं होता, आपकी पूजासे मेरा भी नष्ट न हो।

卐 **नागपंचमी** को नागों और सर्पों की पूजा कर कालसर्प दोष से मुक्ति की प्रार्थना की जायेगी। सर्पदोष निवारक वैदिक मन्त्र –

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये ऽन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

श्रावण शुक्लपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, ५ अगस्त से १९ अगस्त, २०२४ ईस्वी

ग्रहस्थितिः ५:८:२०२४– मार्गी गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः, वक्री शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, वक्री बुधःपश्चिमास्तः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क
अगस्त	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	अगस्त
५	१ चं	२७:०३	१६·४४	आश्ले·	२३:२३	१५·१६	व्यति·	१४:१६	११·३७	बव	२७:०३	बाल	५८:३९	३३:०५	५:५५	१९:०९	सिं·२३:२३	१५·१६	सौम्य	५
६	२ मं	३०:२८	१८·०७	मघा	२८:२०	१७·१५	वरी·	१४:२३	११·४१	कौल	३०:२८	तैति	६०:००	३३:०२	५:५५	१९:०८	सिंह	अहोरात्र	कालदंड	६
७	३ बु	३४:४७	१९·५०	पू·फा·	३४:०९	१९·३६	परिघ	१५:१५	१२·०२	तैति	०२:३१	गर	३४:४७	३२:५९	५:५६	१९:०८	कं·५०:४३	२६·१३	प्रवर्द्ध	७
८	४ गु	३९:३९	२१·४८	उ·फा·	४०:३१	२२·०९	शिव	१६:३७	१२·३५	वणि	०७:०९	विष	३९:३९	३२:५६	५:५६	१९:०७	कन्या	अहोरात्र	मातङ्ग	८
९	५ शु	४४:४२	२३·५०	हस्त	४७:०३	२४·४६	सिद्ध	१८:१४	१३·१५	बव	१२:१०	बाल	४४:४२	३२:५२	५:५७	१९:०६	कन्या	अहोरात्र	अमृत	९
१०	६ श	४९:२८	२५·४४	चित्रा	५३:१७	२७·१६	साध्य	१९:४६	१३·५२	कौल	१७:०७	तैति	४९:२८	३२:४९	५:५७	१९:०५	तु·२०:१३	१४·०२	काण	१०
११	७ र	५३:३४	२७·२४	स्वाती	५८:५२	२९·३१	शुभ	२०:५६	१४·२०	गर	२१:३६	वणि	५३:३४	३२:४६	५:५८	१९:०४	तुला	अहोरात्र	लुम्ब	११
१२	८ चं	५६:४४	२८·४०	विशा·	६०:००	अहोरात्र	शुक्ल	२१:२७	१४·३३	विष	२५:१६	बव	५६:४४	३२:४२	५:५८	१९:०४	वृश्·४७:२७	२४·५७	मित्र	१२
१३	९ मं	५८:४४	२९·२९	विशा·	०३:२९	०७·२३	ब्रह्म	२१:०९	१४·२७	बाल	२७:५२	कौल	५८:४४	३२:३९	५:५९	१९:०३	वृश्चिक	अहोरात्र	श्रीवत्स	१३
१४	१० बु	५९:३०	२९·४७	अनु·	०६:५९	०८·४७	ऐन्द्र	१९:५६	१३·५८	तैति	२९:१६	गर	५९:३०	३२:३६	५:५९	१९:०२	वृश्चिक	अहोरात्र	सौम्य	१४
१५	११ गु	५८:५९	२९·३५	ज्ये·	०९:१६	०९·४२	वैधृ·	१७:४२	१३·०५	वणि	२९:२३	विष	५८:५९	३२:३२	६:००	१९:०१	ध·०९:१६	०९·४२	कालदंड	१५
१६	१२ शु	५७:१४	२८·५४	मूल	१०:१८	१०·०७	विष्कु·	१४:२७	११·४७	बव	२८:१५	बाल	५७:१४	३२:२९	६:००	१९:००	धनु	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	१६
१७	१३ श	५४:२२	२७·४६	पू·षा·	१०:०८	१०·०४	प्रीति	१०:१५	१०·०७	कौल	२५:५६	तैति	५४:२२	३२:२५	६:०१	१८:५९	म·२४:५६	१५·५९	मातङ्ग	१७
१८	१४ र	५०:३१	२६·१४	उ·षा·	०८:५३	०९·३५	आयु· सौभाग्य	०५:०९ ५४:०९	०८·०५ २७:४१	गर	२२:३२	वणि	५०:३१	३२:२२	६:०१	१८:५८	मकर	अहोरात्र	मुसल	१८
१९	१५ चं	४५:५१	२४·२२	श्रवण	०६:४२	०८·४३	शोभ·	५२:४७	२७·०९	विष	१८:१६	बव	४५:५१	३२:१८	६:०२	१८:५७	कुं·३५:१९	२०·०९	सिद्धि	१९

दिनाङ्क	卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
अगस्त	५ अगस्त से १९ अगस्त २०२४
५	शुक्र पूर्वोदित घं·२६:०३, **श्रावण सोमवार व्रत**
६	**सिंजारा**, मंगलागौरी पूजन, स्वामी श्रीकरपात्री जयन्ती
७	**हरियाली तीज, झूलनोत्सव**, तीज मेला जयपुर
८	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी**, मेला बूढ़ी तीज जयपुर
९	**नागपञ्चमी (शास्त्रीय,अन्यक्षेत्रे)**
१०	**श्रीस्कन्दषष्ठी, श्रीकल्कि जयन्ती**, श्रीनेमीनाथ जयन्ती
११	**श्री तुलसीदास जयन्ती**, कुमारी पूजा, मोक्ष सप्तमी (जैन)
१२	**श्रीदुर्गाष्टमी, श्रावण सोमवार व्रत**
१३	**कौमारी नवमी**, जीवन्तिका पूजन
१४	**कलश दशमी**, बुध पश्चिमास्त घं·०७:०१
१५	**श्रीपवित्रा एकादशी (स्मार्त्त), भारतीय स्वतंत्रता दिवस, ध्वजारोहण**
१६	**श्रीपवित्रा एकादशी (वैष्णव)**, श्रीदामोदर द्वादशी
१७	**शनि प्रदोष व्रत**, आखेट त्रयोदशी (उड़ीसा)
१८	**श्रीशिव पवित्रारोपण**, चरण जयन्ती ⑧ **श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा**
१९	**श्रावण पूर्णिमा (व्रत, स्नान, दान), रक्षाबन्धन, श्रावणी उपाकर्म** ⑧

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	वक्री बुधः	गुरुः	शुक्रः	वक्री शनिः	केतुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
अगस्त	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
५	१ च	०३:१८:१९:४४	०३:२५:०८:५२	०१:१५:०८:०८	०४:०१:३५:४३	०१:२२:२३:१९	०४:०७:००:२९	१०:२०:४१:५१	०५:१७:३६:२९	४६:३२:४४	उ·१७:५१:०१	– ५:३६	०६:२८
६	२ म	०३:१९:१७:०१	०४:०७:३२:३५	०१:१५:४७:३९	०४:००:५४:२५	०१:२२:३४:०३	०४:०८:१३:४५	१०:२०:३७:५०	०५:१७:३३:१८	४६:३१:१०	उ·१७:३४:४७	– ५:३०	०७:२३
७	३ बु	०३:२०:१४:१९	०४:१९:४६:०५	०१:१६:२७:०३	०४:००:०९:२७	०१:२२:४४:४०	०४:०९:२७:००	१०:२०:३३:४५	०५:१७:३०:०७	४६:२९:३६	उ·१७:१८:१६	– ५:२४	०८:१७
८	४ गु	०३:२१:११:३९	०५:०१:५२:१७	०१:१७:०६:२०	०३:२९:२१:४७	०१:२२:५५:११	०४:१०:४०:१६	१०:२०:२९:३६	०५:१७:२६:५६	४६:२८:००	उ·१७:०१:२८	– ५:१६	०९:०९
९	५ शु	०३:२२:०८:६०	०५:१३:५४:२६	०१:१७:४५:३१	०३:२८:३२:२६	०१:२३:०५:३४	०४:११:५३:३१	१०:२०:२५:२४	०५:१७:२३:४६	४६:२६:२४	उ·१६:४४:२४	– ५:०९	१०:०१
१०	६ श	०३:२३:०६:२२	०५:२५:५६:२१	०१:१८:२४:३५	०३:२७:४२:३४	०१:२३:१५:५१	०४:१३:०६:४७	१०:२०:२१:०८	०५:१७:२०:३५	४६:२४:४६	उ·१६:२७:०४	– ५:००	१०:५४
११	७ र	०३:२४:०३:४६	०६:०८:०१:५१	०१:१९:०३:३३	०३:२६:५३:२९	०१:२३:२६:००	०४:१४:२०:०२	१०:२०:१६:४९	०५:१७:१७:२४	४६:२३:०७	उ·१६:०९:२८	– ४:५१	११:४७
१२	८ च	०३:२५:०१:११	०६:२०:१४:१७	०१:१९:४२:२४	०३:२६:०६:१८	०१:२३:३६:०३	०४:१५:३३:१७	१०:२०:१२:२६	०५:१७:१४:१३	४६:२१:२७	उ·१५:५१:३६	– ४:४२	१२:४२
१३	९ म	०३:२५:५८:३८	०७:०२:३६:३६	०१:२०:२१:०८	०३:२५:२२:०२	०१:२३:४५:५८	०४:१६:४६:३२	१०:२०:०८:००	०५:१७:११:०२	४६:१९:४५	उ·१५:३३:३०	– ४:३१	१३:३८
१४	१० बु	०३:२६:५६:०६	०७:१५:११:१३	०१:२०:५९:४६	०३:२४:४१:३६	०१:२३:५५:४५	०४:१७:५९:४८	१०:२०:०३:३२	०५:१७:०७:५१	४६:१८:०३	उ·१५:१५:०८	– ४:२१	१४:३४
१५	११ गु	०३:२७:५३:३६	०७:२७:५९:५८	०१:२१:३८:१६	०३:२४:०५:४७	०१:२४:०५:२५	०४:१९:१३:०२	१०:१९:५९:००	०५:१७:०४:४१	४६:१६:२०	उ·१४:५६:३२	– ४:०९	१५:३१
१६	१२ शु	०३:२८:५१:०७	०८:११:०३:५६	०१:२२:१६:४०	०३:२३:३५:१५	०१:२४:१४:५८	०४:२०:२६:१७	१०:१९:५४:२६	०५:१७:०१:३०	४६:१४:३६	उ·१४:३७:४१	– ३:५८	१६:२४
१७	१३ श	०३:२९:४८:४०	०८:२४:२३:२९	०१:२२:५४:५६	०३:२३:१०:२९	०१:२४:२४:२२	०४:२१:३९:३२	१०:१९:४९:५०	०५:१६:५८:१९	४६:१२:५१	उ·१४:१८:३६	– ३:४५	१७:१६
१८	१४ र	०४:००:४६:१५	०९:०७:५८:११	०१:२३:३३:०६	०३:२२:५१:५४	०१:२४:३३:३९	०४:२२:५२:४६	१०:१९:४५:११	०५:१६:५५:०८	४६:११:०५	उ·१३:५९:१८	– ३:३२	१८:०३
१९	१५ च	०४:०१:४३:५१	०९:२१:४६:५२	०१:२४:११:०९	०३:२२:३९:४२	०१:२४:४२:४८	०४:२४:०६:०१	१०:१९:४०:३०	०५:१६:५१:५७	४६:०९:१९	उ·१३:३९:४६	– ३:१९	१८:४७

८ अगस्त सूर्योदयकालीन तिथि:**४**
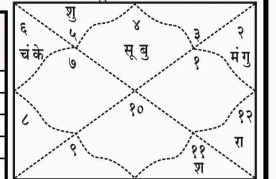
१५ अगस्त सूर्योदयकालीन तिथि:**११**

श्रावण शुक्लपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, ५ अगस्त से १९ अगस्त, २०२४ ईस्वी

पक्षान्तः –कालः उत्तर । ऋतुः वर्षा । दक्षिणायनं । सौम्यगोलः । ति·१५ अयनांशाः२२:५२:४९

दिनाङ्क अगस्त	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
५	१ चं	**गण्डान्तः८:५१–२१:४४**, व्यतीपात पुण्यम्।
६	२ मं	**रोटक व्रत।**
७	३ बु	मधुश्रवा तीज, कर्केआश्लेषयांबुधःघं·१०:५२।
८	४ गु	**भद्रा ८:४८–२१:४८घं·।**
९	५ शु	तक्षक पूजा।
१०	६ श	पूर्वफल्गुन्यांशुक्रःघं·१०:२४, मृगशिरायांगुरुःघं·१५:५३।
११	७ र	**भद्रारंभः२७:२४घं·**, पंचदिवसीय श्रीडिग्गी कल्याणजी यात्रारम्भ (जयपुर)।
१२	८ चं	**भद्रांतः१६:०५घं·।**
१३	९ मं	। ② मघायांसिंहेरविःघं·१०:४५, मृगशिरायांमङ्गलःघं·२१:५३।
१४	१० बु	**गण्डान्तारम्भः२७:३२**, शतभिषायांशनिःघं·००:४८।
१५	११ गु	**भद्रा १७:४६–२९:३६घं·, गण्डान्तः१५:५२**, वैधृति पुण्यम्।
१६	१२ शु	**पवित्रारोपण**, बुद्ध द्वादशी।
१७	१३ श	**अभिजितारम्भः२७:४५, सिंह संक्रान्ति पुण्यकालं ६:०१–१०:४५घं·**, ②
१८	१४ र	**अभिजितान्तः११:०७, भद्रारंभः२६:१४घं·।** ③ गोगामेड़ी मेला आरम्भ।
१९	१५ चं	**पंचकारंभः२०:०९, भद्रांतः१३:२१घं·, संस्कृत दिवस**, अमरनाथ यात्रा, ③

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
१	१२:०६–१३:५२
१५	१२:०४–१३:४७

❀ श्रावण मास कृत्य ❀

❀ **उपाकर्म (श्रावणी)**– श्रावण पूर्णिमा के दिन अथवा हस्त नक्षत्र युक्त श्रावण शुक्ल पंचमी के दिन श्रावणीकर्म किया जाता है। यदि पूर्णिमा भद्रा या ग्रहण से दूषित हो, तभी हस्त एवं पञ्चमी के योग में श्रावणी कर्म किया जाता है – ***भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा। श्रावणी नृपति हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी।।*** (पूर्णिमा में भद्रा होने पर श्रावणी और होलिकादाह नहीं करते हैं।) शुक्ल यजुर्वेदी उपनीत द्विज श्रावण पूर्णिमा को ही श्रावणी करते हैं। विधिपूर्वक वेदारम्भ कर्म का नाम उपाकर्म या श्रावणी-कर्म है। द्विजों को इस दिन अधिकाधिक गायत्री जप करना चाहिए। इस दिन ऋषि-तर्पण भी करने से ऋषितेज की प्राप्ति होती है।

❀ **रक्षाबन्धन मुहूर्त्त** – श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के दिन रक्षाबन्धन का पर्व मनाया जाता है। **भद्रा समाप्ति पश्चात्** – १३:२१ पश्चात्

रक्षा बन्धन का मंत्र इस प्रकार से है– **येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वामभिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल।।**

रक्षाबन्धन पर्व भद्रारहित अपराह्नकाल में कहा गया है। पूर्णिमा न्यूनतम त्रिमुहूर्तव्यापिनी होनी चाहिए। इससे कम होने पर पूर्व दिन प्रदोष काल में रक्षा बन्धन करने का विधान है (धर्मसिन्धु)।

❀ सदन्त शिशु जन्मफल एवं शान्ति विधि ❀

यदि शिशु का दाँत सहित जन्म होता है तो वह माता, पिता, अपना, मामा एवं स्वकुल का विनाशक होता है। अतः यत्न करके कल्याणार्थ इसकी शान्ति करानी चाहिए। सर्व प्रथम बालक को सर्वौषधि से स्नान तदनन्तर शुद्ध जल से स्नान कराकर माता-पिता एवं बालक सहित धाता, अग्नि, सोम, वायु, पर्वत और केशव भगवान विष्णु की प्रतिमाओं की पूजा कलश पर स्थापित कर करें। तदनन्तर नवग्रह तथा कुल देवताओं की पूजा करनी चाहिये। संकल्प में *'सदन्त जनन सूचित सर्वारिष्टेत्यादि शान्त्यर्थ''* जोड़ना चाहिये। पूजन के बाद प्रत्येक स्थापित देव मन्त्रों से यथाशक्ति १००० या १०० या २८ आहूति देकर हवन करना चाहिये। अन्त में ब्राह्मण भोजन कराकर यथा शक्ति दक्षिणा देनी चाहिए। यथा --

मातरं पितरं खादेदात्मानं वापि मातुलान्।
सदन्तं बालकं विद्याद्राक्षसं तत्कुलान्तकृत् ।।
देवदेवं केशवं च वृद्धि सोमं समीरणम्।
धातरं च विधातारं कुलदेवं नवग्रहान् ।।
यजेत्तल्लिंगजैर्मन्त्रैः नाममन्त्रैरथापि वा।
यथा शक्ति सहस्रं वा शतं वाथाष्ट विंशतिः ।।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

अगस्त	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
५	२२:४३	००:१९	०२:१५	०४:२९	०६:४९	०९:०६	११:२१	१३:३९	१५:५८	१८:०४	१९:४८	२१:१७
६	२२:३९	००:१५	०२:११	०४:२५	०६:४५	०९:०२	११:१७	१३:३५	१५:५४	१८:००	१९:४४	२१:१३
७	२२:३५	००:११	०२:०७	०४:२१	०६:४१	०८:५८	११:१३	१३:३२	१५:५०	१७:५६	१९:४०	२१:०९
८	२२:३१	००:०७	०२:०३	०४:१७	०६:३७	०८:५४	११:०९	१३:२८	१५:४६	१७:५२	१९:३६	२१:०५
९	२२:२७	००:०३	०१:५९	०४:१३	०६:३३	०८:५०	११:०५	१३:२४	१५:४२	१७:४८	१९:३२	२१:०२
१०	२२:२३	२३:५९	०१:५५	०४:०९	०६:२९	०८:४६	११:०१	१३:२०	१५:३९	१७:४४	१९:२८	२०:५८
११	२२:१९	२३:५५	०१:५१	०४:०५	०६:२५	०८:४२	१०:५७	१३:१६	१५:३५	१७:४०	१९:२४	२०:५४
१२	२२:१६	२३:५१	०१:४७	०४:०१	०६:२२	०८:३८	१०:५३	१३:१२	१५:३१	१७:३६	१९:२१	२०:५०
१३	२२:१२	२३:४८	०१:४३	०३:५७	०६:१८	०८:३४	१०:४९	१३:०८	१५:२७	१७:३२	१९:१७	२०:४६
१४	२२:०८	२३:४४	०१:३९	०३:५३	०६:१४	०८:३०	१०:४५	१३:०४	१५:२३	१७:२८	१९:१३	२०:४२
१५	२२:०४	२३:४०	०१:३५	०३:४९	०६:१०	०८:२६	१०:४१	१३:००	१५:१९	१७:२४	१९:०९	२०:३८
१६	२२:००	२३:३६	०१:३१	०३:४५	०६:०६	०८:२२	१०:३७	१२:५६	१५:१५	१७:२०	१९:०५	२०:३४
१७	२१:५६	२३:३२	०१:२७	०३:४१	०६:०२	०८:१८	१०:३३	१२:५२	१५:११	१७:१६	१९:०१	२०:३०
१८	२१:५२	२३:२८	०१:२३	०३:३७	०५:५८	०८:१४	१०:२९	१२:४८	१५:०७	१७:१२	१८:५७	२०:२६
१९	२१:४८	२३:२४	०१:१९	०३:३४	०५:५४	०८:१०	१०:२५	१२:४४	१५:०३	१७:०८	१८:५३	२०:२२

अगस्त	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
५	**सिद्ध** १६·४४ तक
६	**अमृत** १८·०७ तक, **सिद्ध** १८·०७ से
७	**रवियोग** १९·३६ से
८	**रवियोग–दग्ध·नक्षत्र·उफा·** २२·०९ तक,**सिद्ध** २१·४९ से
१०	**अमृत** २५·४४ तक, **रवियोग** २७·१६ तक, **द्विपुष्कर** २५·४४ से २७·१६ तक, **सर्वार्थ** २७·१६ से ①
११	**सिद्ध** २७·२४ से ① **दग्ध·तिथि·६** २५·४४ तक
१३	**रवियोग** ०७·२३ से
१४	**सर्वार्थ** ०८·४७ तक, **रवियोग** अहोरात्र, **अमृत** २९·४७ से
१५	**रवियोग** ०९·४२ तक
१६	**मृत्यु** २८·५४ तक
१७	**रवियोग** १०·०४ से, **सिद्ध** २७·४६ से
१८	**सर्वार्थ** ०९·३५ तक,**रवियोग** ०९·३५ से,**अमृत** २६·१४ से
१९	**सर्वार्थ–रवियोग** ०८·४३ तक, **अमृत** २४·२२ तक, **सिद्ध** २४·२२ से

पारणा की अनिवार्यता– वारव्रत और श्रीगणेश (संकष्टी) चतुर्थीव्रत में रात्रि में भोजन करना आवश्यक है। पारणा व्रत का अंग है। पारणा दूसरे के अन्न से न करे –

व्रतेरात्रिभोजनमेवकार्यम्। (धर्मसिन्धु)

उदयातिथि का महत्व– स्नान, जप, दान, नवरात्र पाठ का हवन उदयातिथि में ही होता है। यह सम्पूर्ण दिन ग्राह्य होती है–

यां तिथिम् समनुप्राप्य उदयं यातिभास्करः।
सा तिथिःसकला ज्ञेया स्नान दान जपादिषु।

प्रदोष व्रत– सूर्यास्त बाद त्रयोदशी यदि प्रदोषकाल में हो तो उसी दिन प्रदोष व्रत होता है। यह कभी द्वादशी तिथि में प्रदोषकाल में मिलती है तो कभी त्रयोदशी के दिन सायंकाल में मिलती है। जब दोनों दिन प्रदोषकाल में त्रयोदशी हो तो परा (बाद वाली) ग्राह्य है। प्रदोष व्रत से संतानप्राप्ति, ऋणमुक्ति, समृद्धि, कष्टनिवारण तथा शिवसान्निध्य की प्राप्ति होती है।

भाद्रपद कृष्णपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, २० अगस्त से ३ सितम्बर, २०२४ ईस्वी

ग्रहस्थितिः २०:८:२०२४– मार्गी गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः, वक्री शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, मार्गी बुधःपूर्वोदितः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क
अगस्त	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	अगस्त
२०	१ मं	४०:३०	२२·१४	धनि·	०३:४३	०७·३२	अतिग·	४५:४४	२४·२०	बाल	१३:१४	कौल	४०:३०	३२:१५	६:०२	१८:५६	कुंभ	अहोरात्र	उत्पात	२०
२१	२ बु	३४:४१	१९·५५	शत· पू·भा·	००:०९ ५६:०३	०६·०६ २८:२८	सुकर्मा	३८:१८	२१·२२	तैति	०७:३७	गर	३४:४१	३२:११	६:०३	१८:५५	मी·४२:१३	२२·५६	मानस	२१
२२	३ गु	२८:३५	१७·२९	उ·भा·	५२:००	२६·५१	धृति	३०:३८	१८·१९	वणि	०१:३९	विष	२८:३५	३२:०७	६:०३	१८:५४	मीन	अहोरात्र	छत्र	२२
२३	४ शु	२२:२४	१५·०१	रेवती	४७:४९	२५·११	शूल	२२:५५	१५·१४	बाल	२२:२४	कौल	४९:२१	३२:०४	६:०४	१८:५३	मे·४७:४९	२५·११	श्रीवत्स	२३
२४	५ श	१६:२१	१२·३६	अश्वि·	४३:५१	२३·३७	गण्ड	१५:१७	१२·११	तैति	१६:२१	गर	४३:२७	३२:००	६:०४	१८:५२	मेष	अहोरात्र	सौम्य	२४
२५	६ र	१०:३७	१०·२०	भरणी	४०:१९	२२·१२	वृद्धि	०७:५६	१९·१५	वणि	१०:३७	विष	३७:५७	३१:५६	६:०५	१८:५१	वृ·५४:३२	२७·५३	कालदंड	२५
२६	७ चं	०५:२४	०८·१५	कृत्ति·	३७:२४	२१·०३	ध्रुव व्याघात	००:५९ ५३:३९	१६·२९ २७:३९	बव	०५:२४	बाल	३३:०४	३१:५३	६:०५	१८:५०	वृष	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	२६
२७	८ मं ९ मं	००:५४ ५६:२३	०६·२७ २८:३९	रोहि·	३५:१६	२०·१२	हर्षण	४८:५६	२५·४०	कौल	००:५४	तैति	२८:५८	३१:४९	६:०६	१८:४९	वृष	अहोरात्र	मातङ्ग	२७
२८	१० बु	५४:३९	२७·५८	मृग·	३४:०५	१९·४४	वज्र	४४:०२	२३·४३	वणि	२५:४९	विष	५४:३९	३१:४५	६:०६	१८:४८	मि·०४:३२	०७·५५	अमृत	२८
२९	११ गु	५३:११	२७·२३	आर्द्रा	३३:६०	१९·४२	सिद्धि	४०:०३	२२·०८	बव	२३:४५	बाल	५३:११	३१:४१	६:०७	१८:४७	मिथुन	अहोरात्र	काण	२९
३०	१२ शु	५२:५८	२७·१८	पुन·	३५:०६	२०·१०	व्यति·	३७:०१	२०·५६	कौल	२२:५४	तैति	५२:५८	३१:३७	६:०७	१८:४६	क·१९:४२	१४·००	लुम्ब	३०
३१	१३ श	५४:०१	२७·४४	पुष्य	३७:२८	२१·०७	वरी·	३५:०१	२०·०८	गर	२३:१९	वणि	५४:०१	३१:३४	६:०८	१८:४५	कर्क	अहोरात्र	मित्र	३१
सितम्बर	१४ र	५६:१९	२८·४०	आश्ले·	४१:०३	२२·३३	परिघ	३३:५९	१९·४४	विष	२५:०१	बव	५६:१९	३१:३०	६:०८	१८:४४	सिं·४१:०३	२२·३३	वज्र	सितम्बर
२	३० चं	५९:४५	३०·०३	मघा	४५:४६	२४·२७	शिव	३३:५२	१९·४१	चतु	२७:५३	नाग	५९:४५	३१:२६	६:०८	१८:४३	सिंह	अहोरात्र	ध्वांक्ष	२

दिनाङ्क	卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
अगस्त	२० अगस्त से ३ सितम्बर, २०२४
२०	
२१	अशून्यशयन व्रत
२२	**संकष्टी गणेशचतुर्थी चन्द्रोदय घं·२०:४५,कज्जली तीज**
२३	
२४	नाग पंचमी (गुजरात), कोकिला पंचमी (जैन)
२५	**श्रीहल षष्ठी,**
२६	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (स्मार्त्त), श्रीकालाष्टमी**
२७	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णव), गोकुलाष्टमी**
२८	**नन्दोत्सव**, विश्व साक्षरता दिवस
२९	**श्रीअजा एकादशी (वैष्णव,स्मार्त्त)**
३०	**श्रीअजा एकादशी (निम्बार्क)**, गौवत्स द्वादशी
३१	**शनि प्रदोष व्रतम्, पर्यूषण पर्व आरम्भ** (श्वेताम्बर) ①
सितम्बर	**मासशिवरात्रि व्रतम्**, अघोर चतुर्दशी ① कलियुगादि
२	**कुशोत्पाटिनी अमावस्या (देव–पितृकार्य)**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः (मा/व)	गुरुः	शुक्रः	वक्री शनिः	केतुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
अगस्त	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
२०	१ मं	०४:०२:४१:२९	१०:०५:४७:३७	०१:२४:४९:०४	मार्गी२२:३४:०१	०१:२४:५१:४८	०४:२५:१९:१५	१०:१९:३५:४७	०५:१६:४८:४६	४६:०७:३१	उ·१३:२०:०२	– ३:०५	१९:२८
२१	२ बु	०४:०३:३९:०८	१०:१९:५७:५८	०१:२५:२६:५२	०३:२२:३४:५३	०१:२५:००:४१	०४:२६:३२:२९	१०:१९:३१:०२	०५:१६:४५:३६	४६:०५:४३	उ·१३:००:०४	– २:५१	२०:०६
२२	३ गु	०४:०४:३६:५०	११:०४:१४:५५	०१:२६:०४:३३	०३:२२:४२:१३	०१:२५:०९:२४	०४:२७:४५:४३	१०:१९:२६:१५	०५:१६:४२:२५	४६:०३:५४	उ·१२:३९:५५	– २:३६	२०:४५
२३	४ शु	०४:०५:३४:३३	११:१८:३५:०६	०१:२६:४२:०६	०३:२२:५५:५३	०१:२५:१७:६०	०४:२८:५८:५६	१०:१९:२१:२७	०५:१६:३९:१४	४६:०२:०४	उ·१२:१९:३३	– २:२०	२१:२४
२४	५ श	०४:०६:३२:१८	००:०२:५४:३७	०१:२७:१९:३३	०३:२३:१५:४२	०१:२५:२६:२७	०५:००:१२:१०	१०:१९:१६:३८	०५:१६:३६:०३	४६:००:१४	उ·११:५८:५९	– २:०५	२२:०४
२५	६ र	०४:०७:३०:०४	००:१७:०९:४४	०१:२७:५६:५१	०३:२३:४१:२७	०१:२५:३४:४५	०५:०१:२५:२३	१०:१९:११:४७	०५:१६:३२:५२	४५:५८:२३	उ·११:३८:१४	– १:४९	२२:४९
२६	७ चं	०४:०८:२७:५३	०१:०१:१७:१३	०१:२८:३४:०२	०३:२४:१२:५१	०१:२५:४२:५४	०५:०२:३८:३६	१०:१९:०६:५५	०५:१६:२९:४१	४५:५६:३१	उ·११:१७:१८	– १:३२	२३:३६
२७	८ मं	०४:०९:२५:४३	०१:१५:१४:१३	०१:२९:११:०५	०३:२४:४९:३९	०१:२५:५०:५४	०५:०३:५१:४९	१०:१९:०२:०२	०५:१६:२६:३१	४५:५४:३९	उ·१०:५६:११	– १:१५	२४:३०
२८	१० बु	०४:१०:२३:३५	०१:२८:५८:२७	०१:२९:४८:०१	०३:२५:३१:३३	०१:२५:५८:४५	०५:०५:०५:०१	१०:१८:५७:०८	०५:१६:२३:२०	४५:५२:४६	उ·१०:३४:५४	– ०:५७	२५:२४
२९	११ गु	०४:११:२१:२९	०२:१२:२८:१४	०२:००:२४:४८	०३:२६:१८:१७	०१:२६:०६:२७	०५:०६:१८:१४	१०:१८:५२:१४	०५:१६:२०:०९	४५:५०:५२	उ·१०:१३:२७	– ०:४०	२६:२३
३०	१२ शु	०४:१२:१९:२६	०२:२५:४२:३८	०२:०१:०१:२८	०३:२७:०९:३३	०१:२६:१३:६०	०५:०७:३१:२६	१०:१८:४७:२०	०५:१६:१६:५८	४५:४८:५८	उ·०९:५१:४९	– ०:२१	२७:२०
३१	१३ श	०४:१३:१७:२३	०३:०८:४१:३१	०२:०१:३७:६०	०३:२८:०५:०५	०१:२६:२१:२३	०५:०८:४४:३७	१०:१८:४२:२५	०५:१६:१३:४७	४५:४७:०४	उ·०९:३०:०३	– ०:०३	२८:१८
सितम्बर	१४ र	०४:१४:१५:२३	०३:२१:२५:२६	०२:०२:१४:२४	०३:२९:०४:३७	०१:२६:२८:३७	०५:०९:५७:४८	१०:१८:३७:३०	०५:१६:१०:३६	४५:४५:०८	उ·०९:०८:०७	+ ०:१६	२९:१५
२	३० चं	०४:१५:१३:२५	०४:०३:५५:४६	०२:०२:५०:३९	०४:००:०७:५३	०१:२६:३५:४१	०५:११:१०:५९	१०:१८:३२:३५	०५:१६:०७:२५	४५:४३:१३	उ·०८:४६:०२	+ ०:३५	०६:०९

२३ अगस्त सूर्योदयकालीन तिथिः४
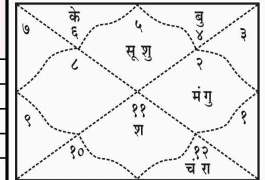
२९ अगस्त सूर्योदयकालीन तिथिः११
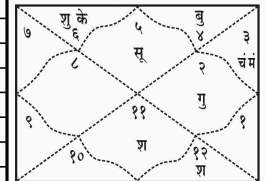
भाद्रपद कृष्णपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, २० अगस्त से ३ सितम्बर, २०२४ ईस्वी

पक्षान्तः– कालःउत्तर । ऋतुः वर्षा । दक्षिणायनं । सौम्यगोलः । ति·३० अयनांशाः२२:५२:५१

दिनाङ्क अगस्त	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
२०	१ मं	**पंचक**, मार्गी बुधः२२:३७। ① **श्रीबहुला चतुर्थी।**
२१	२ बु	**पंचक, सातूड़ी तीज**, उत्तरफल्गुन्यांशुक्रःघं·०८:३८ ①
२२	३ गु	**पंचक, भद्रा ६:४३–१७:३०घं·।**
२३	४ शु	**पंचकान्तः२५:१२, गण्डान्तारम्भः१९:३७।**
२४	५ श	**गण्डान्तः६:४७**, कन्यायांशुक्रःघं·०२:१२।
२५	६ र	**भद्रा १०:२०–२१:१६घं·।**
२६	७ चं	।
२७	८ मं	**श्रीगोगानवमी।**
२८	१० बु	**भद्रा १६:२६–२७:५८घं·**, मिथुनेमङ्गलःघं·१४:०२।
२९	११ गु	। ② हस्तेशुक्रःघं·०७:००।
३०	१२ शु	**बछ बारस**, अघोर द्वादशी, व्यतीपात पुण्यम्।
३१	१३ श	**भद्रारंभः२७:४५घं·**, पूर्वफल्गुन्यांरविःघं·०७:१३।
सितम्बर	१४ र	**भद्रांतः१६:०९घं·, गण्डान्तः१६:१०–२९:००,** ②
२	३० चं	लोहार्गल यात्रा, सतीपूजन (अग्रवंश), राणीसती दादी माँ मेला (झुंझुनू), पिठैरी अमावस (जैन), सप्तपुरी अमावस्या (उड़ीसा), आलोक अमावस्या, मघायांसिंहेबुधःघं·०३:२१।

❀ सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण के प्राकट्योत्सव जन्माष्टमी का संक्षिप्त कृत्य ❀

जन्माष्टमी को पूरा दिन यथाशक्ति कठोर व्रत रखे। प्रातःकाल उठकर स्नानादि नित्यकर्म से निवृत्त होकर व्रत का निम्न संकल्प करे – ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य अमुक नामसंवत्सरे सूर्य दक्षिणायने वर्षतौ भाद्रपदमासे कृष्णपक्षे श्रीकृष्णजन्माष्टम्यां तिथौ अमुक वासरे _ नामाहं मम चतुर्वर्गसिद्धिद्वारा श्रीकृष्णदेवप्रीतये जन्माष्टमीव्रताङ्गत्वेन श्रीकृष्णदेवस्य यथामिलितोपचारैः पूजनं करिष्ये।

केले के खम्भे, आम–अशोक के पल्लव, बहुविध पुष्पादि से श्रीठाकुरजी की दिव्य झाँकी सजाए, सारा दिन संकीर्तन आदि से श्रीकृष्णचन्द्र परमानंदकंद की भक्ति करे। रात्रि में पञ्चामृत एवं दुग्धाभिषेक के साथ माता देवकीसहित श्रीबालकृष्ण का षोडशोपचार से पूजन करे। विविध शृङ्गारादिक वस्तुओं से विशेषरूप से अलंकृत करे। **'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'**–इस मन्त्र से पूजन करता हुआ सुसज्जित करके भगवान् को सुन्दर सजे हुए हिंडोले में प्रतिष्ठित करे। अन्नरहित नैवेद्य तथा सुस्वादु मिष्टान्न, नमकीन पदार्थों, फल, पुष्पों और नारियल, छुहारे, अनार, पंजीरी, नारियल के मिष्टान्न तथा नाना प्रकार के मेवे का प्रसाद सजाकर श्रीभगवान् को अर्पण करे। पूजन में देवकी, वसुदेव, वासुदेव, बलदेव, नन्द, यशोदा और लक्ष्मी–इन सबका क्रमशः नाम निर्दिष्ट करना चाहिये। अन्त में **'प्रणमे देवजननीं त्वया जातस्तु वामनः।'** वसुदेव को तथा **'कृष्णो नमस्तुभ्यं नमो नमः।। सपुत्रार्घ्यं प्रदत्तं मे गृहाणेमं नमोऽस्तु ते।'** से देवकी को अर्घ्य दे और **'धर्माय धर्मेश्वराय धर्मपतये धर्मसम्भवाय गोविन्दाय नमो नमः।'** से श्रीकृष्ण को 'पुष्पांजलि' अर्पण करे। विशेषार्घ्य प्रदानपूर्वक धूप, दीप, नैवेद्य नीराजनपर्यन्त सेवा सम्पादन करके पुष्पाञ्जलि अर्पण करे। जन्मोत्सव के पश्चात् कर्पूरादि प्रज्जवलित कर समवेत स्वर से भगवान् की आरती–स्तुति करे, पश्चात् प्रसाद वितरण करे। तत्पश्चात् **'सोमाय सोमेश्वराय सोमपतये सोमसम्भवाय सोमाय नमो नमः।'** से चन्द्रमा का पूजन करे और फिर शंख में जल, फल, कुश, कुसुम और गन्ध डालकर दोनों घुटने जमीन में लगावे और **'क्षीरोदार्णवसंभूत अत्रिनेत्रसमुद्भव। गृहाणार्घ्यं शशांकेमं रोहिण्या सहितो मम।। ज्योत्स्नापते नमस्तुभ्यं नमस्ते ज्योतिषां पते। नमस्ते रोहिणीकान्त अर्घ्यं मे प्रतिगृह्यताम्'** से चन्द्रमा को अर्घ्य दे।

इसके द्वितीय दिन अर्थात् नवमी को दधिकांदो या (नन्दमहोत्सव) किया जाता है। इस समय भगवान् पर कपूर, हल्दी, दही, घी, जल, तेल तथा केसर आदि चढ़ाकर लोग परस्पर विलेपन तथा सेचन करते हैं। वाद्य यन्त्रों से कीर्तन करते हैं तथा मिठाइयाँ बाँटते हैं।

इस प्रकार नन्दनन्दन भगवान् श्रीकृष्ण का प्राकट्योत्सव प्रीतिपूर्वक सम्पन्न करे।

ति	श्राद्धकाल घं·मि·
१	१२:०४–१३:४७
३०	१२:०१–१३:४१

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

अगस्त	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२०	२१:४४	२३:२०	०१:१५	०३:३०	०५:५०	०८:०६	१०:२१	१२:४०	१४:५९	१७:०४	१८:४९	२०:१८
२१	२१:४०	२३:१६	०१:११	०३:२६	०५:४६	०८:०२	१०:१७	१२:३६	१४:५५	१७:००	१८:४५	२०:१४
२२	२१:३६	२३:१२	०१:०७	०३:२२	०५:४२	०७:५८	१०:१३	१२:३२	१४:५१	१६:५६	१८:४१	२०:१०
२३	२१:३२	२३:०८	०१:०४	०३:१८	०५:३८	०७:५५	१०:०९	१२:२८	१४:४७	१६:५३	१८:३७	२०:०६
२४	२१:२८	२३:०४	०१:००	०३:१४	०५:३४	०७:५१	१०:०६	१२:२४	१४:४३	१६:४९	१८:३३	२०:०२
२५	२१:२४	२३:००	००:५६	०३:१०	०५:३०	०७:४७	१०:०२	१२:२०	१४:३९	१६:४५	१८:२९	१९:५८
२६	२१:२०	२२:५६	००:५२	०३:०६	०५:२६	०७:४३	०९:५८	१२:१६	१४:३५	१६:४१	१८:२५	१९:५४
२७	२१:१६	२२:५२	००:४८	०३:०२	०५:२२	०७:३९	०९:५४	१२:१२	१४:३१	१६:३७	१८:२१	१९:५०
२८	२१:१२	२२:४८	००:४४	०२:५८	०५:१८	०७:३५	०९:५०	१२:०९	१४:२७	१६:३३	१८:१७	१९:४६
२९	२१:०८	२२:४४	००:४०	०२:५४	०५:१४	०७:३१	०९:४६	१२:०५	१४:२३	१६:२९	१८:१३	१९:४२
३०	२१:०४	२२:४०	००:३६	०२:५०	०५:१०	०७:२७	०९:४२	१२:०१	१४:२०	१६:२५	१८:०९	१९:३८
३१	२१:००	२२:३६	००:३२	०२:४६	०५:०६	०७:२३	०९:३८	११:५७	१४:१६	१६:२१	१८:०५	१९:३५
सितम्बर	२०:५६	२२:३२	००:२८	०२:४२	०५:०२	०७:१९	०९:३४	११:५३	१४:१२	१६:१७	१८:०१	१९:३१
२	२०:५३	२२:२८	००:२४	०२:३८	०४:५८	०७:१५	०९:३०	११:४९	१४:०८	१६:१३	१७:५८	१९:२७

अगस्त	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
२०	**अमृत** २२·१४ से
२१	**सिद्ध** १९·५५ से
२२	**अमृत** १७·२९ से, **सर्वार्थ** २६·५१ से
२३	**सर्वार्थ** अहोरात्र, **अमृत** १५·०१ तक
२४	**अमृत** १२·३६ से, **रवियोग** २३·३७ से
२५	**रवियोग–दग्ध·नक्षत्र·भर·** २२·१२ तक, **त्रिपुष्कर** २२·१२ से
२६	**सर्वार्थ** २१·०३ से
२७	**सिद्ध** ०६·२७ तक
२८	**सर्वार्थ** १९·४४ तक, **अमृत** २७·५८ से ①
२९	**सर्वार्थ** १९·४२ से ① **दग्ध·तिथि·१०** २७·५८ तक
३०	**सर्वार्थ** २०·१० तक
३१	**सिद्ध** २७·४४ से
१	**अमृत** २८·४० से
२	**अमृत** ३०·०३ तक, **सिद्ध** ३०·०३ से

भाद्रपद कृष्ण अष्टमी के दिन नराकृति परब्रह्म स्वराटपुरुष भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र का जन्मोत्सव है। "इस दिन चारों वर्णों को यथाशक्ति उपवास करना चाहिये। जो जानकर भी श्रीकृष्णजन्माष्टमी का व्रत नहीं करते हैं वे वनमें सर्प और व्याघ्र होते हैं। हे द्विजोत्तम्! जो मनुष्य **श्रीकृष्णजन्माष्टमी** के दिन भोजन कर लेता है, उसका वह भोजन नहीं है किंतु वह तीनों लोकों के पाप को भक्षण करता है इसमें कुछ भी संदेह नहीं है।" **–स्कन्द पुराण**

"सप्तमी सहित अष्टमी यत्नपूर्वक वर्जित करें और बिना रोहिणी नक्षत्र के नवमी सहित अष्टमी का व्रत करें।" **–ब्रह्मवैवर्त**

"पूर्व सप्तमी से विद्ध अष्टमी नवमी के दिन सूर्योदय में मुहूर्त्त मात्र भी हो तो वह अष्टमी संपूर्ण होती है। नवमी के दिन यदि कला, काष्ठा वा मुहूर्त्त मात्र भी अष्टमी तिथि हो तो वही अष्टमी ग्राह्य है, परंतु सप्तमी सहित अष्टमी कभी ग्रहण नहीं करना चाहिये।" **–पद्मपुराण**

ॐ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणतः क्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः।

भाद्रपद शुक्लपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, ४ सितम्बर से १८ सितम्बर, २०२४ ईस्वी

ग्रहस्थितिः ३:९:२०२४– मार्गी गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः, वक्री शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, मार्गी बुधःपूर्वोदितः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
सितम्बर	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सितम्बर	४ सितम्बर से १८ सितम्बर, २०२४
३	१ मं	६०:००	अहोरात्र	पू·फा	५१:२४	२६:४३	सिद्ध	३४:३१	१९:५७	किं	३१:४९	बव	६०:००	३१:२२	६:०९	१८:४२	सिंह	अहोरात्र	धूम्र	३	
४	१ बु	०४:०४	०७·४७	उ·फा·	५७:४०	२९·१३	साध्य	३५:४४	२०·२७	बव	०४:०४	बाल	३६:२९	३१:१८	६:०९	१८:४१	कं·०७:५४	०९·१९	प्रवर्द्ध	४	
५	२ गु	०८:५९	०९·४५	हस्त	६०:००	अहोरात्र	शुभ	३७:१५	२१·०४	कौल	०८:५९	तैति	४१:३४	३१:१४	६:१०	१८:४०	कन्या	अहोरात्र	राक्षस	५	मेला रुणीचा रामदेवरा आरम्भ जैसलमेर
६	३ शु	१४:०६	११·४९	हस्त	०४:१०	०७·५०	शुक्ल	३८:४६	२१·४१	गर	१४:०६	वणि	४६:३६	३१:१०	६:१०	१८:३९	तु·३७:२४	२१·०८	अमृत	६	**हरितालिका तीज, श्रीवाराह जयन्ती, चतुर्थी चन्द्रदर्शन निषेध**
७	४ श	१८:५८	१३·४६	चित्रा	१०:३०	१०·२३	ब्रह्म	३९:५८	२२·१०	विष	१८:५८	बव	५१:११	३१:०६	६:११	१८:३७	तुला	अहोरात्र	काण	७	**श्रीमहागणपति चतुर्थी**, मोतीडूंगरी गणेशजी मेला जयपुर
८	५ र	२३:११	१५·२८	स्वाती	१६:१५	१२·४१	ऐन्द्र	४०:३५	२२·२५	बाल	२३:११	कौल	५४:५८	३१:०३	६:११	१८:३६	तुला	अहोरात्र	लुम्ब	८	**श्रीऋषि पञ्चमी, पर्यूषण पर्वारम्भ (दिगम्बर जैन)**, सप्तर्षि पूजा
९	६ चं	२६:२८	१६·४७	विशा·	२१:०८	१४·३९	वैधृ·	४०:२४	२२·२१	तैति	२६:२८	गर	५७:४१	३०:५९	६:१२	१८:३५	वृश्·०५:००	०८·१२	मित्र	९	**श्रीबलराम जयन्ती, श्रीलोलार्क सूर्यषष्ठी (पञ्चगव्य प्राशन)**
१०	७ मं	२८:३५	१७·३८	अनु·	२४:५४	१६·१०	विष्कु·	३९:२०	२१·५६	वणि	२८:३५	विष	५९:१३	३०:५५	६:१२	१८:३४	वृश्चिक	अहोरात्र	वज्र	१०	देवनारायणजी का मेला, सन्तानसप्तमी, सूर्यसप्तमी
११	८ बु	२९:२९	१८·००	ज्ये·	२७:२८	१७·१२	प्रीति	३७:१५	२१·०७	बव	२९:२९	बाल	५९:२७	३०:५१	६:१२	१८:३३	ध·२७:२८	१७·१२	ध्वांक्ष	११	**श्रीराधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ, दूर्वाष्टमी**, बुधाष्टमी
१२	९ गु	२९:०५	१७·५१	मूल	२८:४७	१७·४४	आयु·	३४:१०	१९·५३	कौल	२९:०५	तैति	५८:२५	३०:४७	६:१३	१८:३२	धनु	अहोरात्र	धूम्र	१२	श्रीमद्भागवत सप्ताहारम्भ, अदुःख नवमी, तालनवमी (बंगाल)
१३	१० शु	२७:२७	१५·१२	पू·षा·	२८:५३	१७·४६	सौभा·	३०:०७	१८·१६	गर	२७:२७	वणि	५६:१३	३०:४३	६:१३	१८:३१	म·४३:४४	२३·४३	प्रवर्द्ध	१३	**बाबा श्री रामदेव जयन्ती, श्री तेजा दशमी**, सुगंध दशमी
१४	११ श	२४:४१	१६·०६	उ·षा·	२७:५२	१७·२२	शोभ·	२५:०९	१६·१७	विष	२४:४१	बव	५२:५६	३०:३९	६:१४	१८:२९	मकर	अहोरात्र	राक्षस	१४	**श्रीपद्मा जलझूलनी एकादशी (सर्वेषाम्), डोल ग्यारस**
१५	१२ र	२०:५५	१४·३६	श्रवण	२५:५२	१६·३५	अतिग·	१९:२३	१४·००	बाल	२०:५५	कौल	४८:४४	३०:३५	६:१४	१८:२८	कुं·५४:३४	२८·०४	गद	१५	**प्रदोष व्रतम्, श्रीवामन द्वादशी, श्रीविजया महाद्वादशी**
१६	१३ चं	१६:२०	१२·४७	धनि·	२३:०४	१५·२८	सुकर्मा	१२:५७	११·२५	तैति	१६:२०	गर	४३:४७	३०:३१	६:१५	१८:२७	कुंभ	अहोरात्र	शुभ	१६	पाली व्रत (वरुण)
१७	१४ मं	११:०४	१०·४१	शत·	१९:३६	१४·०५	धृति शूल	०५:५६ ५२:३७	०८·३८ २७:१८	वणि	११:०४	विष	३८:१६	३०:२७	६:१५	१८:२६	कुंभ	अहोरात्र	मृत्यु	१७	**श्रीअनन्त चतुर्दशी, पूर्णिमा व्रत पूर्णिमा श्राद्ध अमावस्या को**
१८	१५ बु 1 बु	०५:२० ५३:६०	०८·२३ २७:५१	पू·भा·	१५:४२	१२·३२	गण्ड	५०:५३	२६·३७	बव	०५:२०	बाल	३२:२१	३०:२३	६:१५	१८:२५	मी·०१:४२	०६·५६	पद्म	१८	**पूर्णिमा (स्नान–दान), पितृपक्ष आरम्भ–प्रतिपदा श्राद्ध**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क सितम्बर	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	वक्री शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
३	१ म	०४:१६:११:२९	०४:१६:१४:३३	०२:०३:२६:४६	०४:०१:१४:३९	०१:२६:४२:३५	०५:१२:२४:१०	१०:१८:२७:४०	०५:१६:०४:१५	४५:४१:१७	उ·०८:२३:४९	+ ०:५५	०७:०२
४	१ बु	०४:१७:०९:३५	०४:२८:२४:२३	०२:०४:०२:४५	०४:०२:२४:४०	०१:२६:४९:१९	०५:१३:३७:२०	१०:१८:२२:४५	०५:१६:०१:०४	४५:३९:२०	उ·०८:०१:२७	+ १:१४	०७:०२
५	२ गु	०४:१८:०७:४३	०५:१०:२८:२२	०२:०४:३८:३५	०४:०३:३७:४४	०१:२६:५५:५३	०५:१४:५०:३०	१०:१८:१७:५०	०५:१५:५७:५३	४५:३७:२३	उ·०७:३८:५८	+ १:३४	०७:५४
६	३ शु	०४:१९:०५:५३	०५:२२:२९:५८	०२:०५:१४:१७	०४:०४:५३:३८	०१:२७:०२:१७	०५:१६:०३:३९	१०:१८:१२:५५	०५:१५:५४:४२	४५:३५:२६	उ·०७:१६:२१	+ १:५५	०८:४७
७	४ श	०४:२०:०४:०५	०६:०४:३३:१०	०२:०५:४९:५०	०४:०६:१२:१०	०१:२७:०८:३१	०५:१७:१६:४८	१०:१८:०८:००	०५:१५:५१:३१	४५:३३:२८	उ·०६:५३:३७	+ २:१५	०९:३९
८	५ र	०४:२१:०२:२०	०६:१६:४१:३१	०२:०६:२५:१४	०४:०७:३३:०९	०१:२७:१४:३४	०५:१८:२९:५७	१०:१८:०३:०६	०५:१५:४८:२०	४५:३१:३०	उ·०६:३०:४६	+ २:३६	१०:३४
९	६ च	०४:२२:००:३६	०६:२८:५८:१३	०२:०७:००:३०	०४:०८:५६:२६	०१:२७:२०:२७	०५:१९:४३:०५	१०:१७:५८:११	०५:१५:४५:०९	४५:२९:३२	उ·०६:०७:४८	+ २:५७	११:२९
१०	७ म	०४:२२:५८:५४	०७:११:२५:५९	०२:०७:३५:३६	०४:१०:२१:४९	०१:२७:२६:१०	०५:२०:५६:१२	१०:१७:५३:१७	०५:१५:४१:५९	४५:२७:३३	उ·०५:४४:४५	+ ३:१८	१२:२५
११	८ बु	०४:२३:५७:१५	०७:२४:०६:५८	०२:०८:१०:३३	०४:११:४९:११	०१:२७:३१:४२	०५:२२:०९:१९	१०:१७:४८:२४	०५:१५:३८:४८	४५:२५:३४	उ·०५:२१:३५	+ ३:३९	१३:२१
१२	९ गु	०४:२४:५५:३८	०८:०७:०२:४१	०२:०८:४५:२१	०४:१३:१८:२३	०१:२७:३७:०३	०५:२३:२२:२५	१०:१७:४३:३२	०५:१५:३५:३७	४५:२३:३५	उ·०४:५८:२०	+ ४:०१	१४:१६
१३	१० शु	०४:२५:५४:०३	०८:२०:१३:५३	०२:०९:१९:६०	०४:१४:४९:१७	०१:२७:४२:१३	०५:२४:३५:३१	१०:१७:३८:४०	०५:१५:३२:२६	४५:२१:३५	उ·०४:३४:५९	+ ४:२२	१५:०७
१४	११ श	०४:२६:५२:३०	०९:०३:४०:३३	०२:०९:५४:२९	०४:१६:२१:४६	०१:२७:४७:१२	०५:२५:४८:३६	१०:१७:३३:५०	०५:१५:२९:१५	४५:१९:३६	उ·०४:११:३४	+ ४:४४	१५:५८
१५	१२ र	०४:२७:५०:५९	०९:१७:२१:५५	०२:१०:२८:४८	०४:१७:५५:४२	०१:२७:५१:६०	०५:२७:०१:४१	१०:१७:२९:०१	०५:१५:२६:०४	४५:१७:३५	उ·०३:४८:०४	+ ५:०५	१६:४१
१६	१३ च	०४:२८:४९:३०	१०:०१:१६:२८	०२:११:०२:५७	०४:१९:३०:५९	०१:२७:५६:३७	०५:२८:१४:४५	१०:१७:२४:१४	०५:१५:२२:५४	४५:१५:३५	उ·०३:२४:३०	+ ५:२७	१७:२५
१७	१४ म	०४:२९:४८:०४	१०:१५:२२:०२	०२:११:३६:५७	०४:२१:०७:३१	०१:२८:०१:०२	०५:२९:२७:४८	१०:१७:१९:२८	०५:१५:१९:४३	४५:१३:३५	उ·०३:००:५२	+ ५:४९	१८:०३
१८	१५ बु	०५:००:४६:४०	१०:२९:३५:५२	०२:१२:१०:४७	०४:२२:४५:१३	०१:२८:०५:१६	०६:००:४०:५०	१०:१७:१४:४४	०५:१५:१६:३२	४५:११:३४	उ·०२:३७:११	+ ६:११	१८:४२

७ सितम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः४
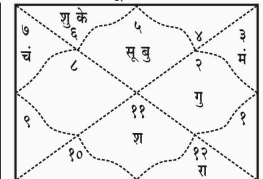
१४ सितम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः११
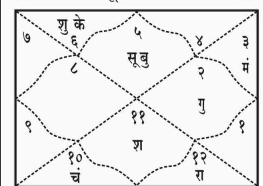
भाद्रपद शुक्लपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, ४ सितम्बर से १८ सितम्बर, २०२४ ईस्वी

पक्षान्तः– कालः उत्तर । ऋतुः वर्षा कन्यार्कतः ऋतुः शरद ।
दक्षिणायनं । सौम्यगोलः । ति·१५ अयनांशाः२२:५२:५३

卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐

दिनाङ्क सितम्बर	तिथि वार	व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार
३	१ मं	।
४	१ बु	।
५	२ गु	श्री शंकरदेव तिथि (आसाम)।
६	३ शु	**भद्रारंभः२४:४९घं·, रोट तीज, श्री श्यामाचरण जयन्ती शुकपीठ (जयपुर)**, मन्वादि।
७	४ श	**भद्रांतः१३:४६घं·, सौभाग्य चतुर्थी, वरदा चतुर्थी।**
८	५ र	संवत्सरी पंचमी (जैन), गर्ग जयन्ती, अंगिरा जयन्ती, रक्षा पंचमी (बंगाल), आर्द्रायांमङ्गलः घं·१६:२३।
९	६ चं	चन्दन षष्ठी (जैन), ललिता षष्ठी (गुजरात), वैधृति पुण्यम्।
१०	७ मं	**भद्रा १७:३९–२९:५४घं·।**
११	८ बु	स्वामी श्रीहरिदास जयन्ती, दधीचि जयन्ती, अपराजिता पूजा **गण्डान्तः१०:५९–२३:२३।**
१२	९ गु	श्रीचन्द्र जयन्ती (उदासीन सम्प्रदाय), पूर्वफल्गुन्यांबुधः घं·०६:४८, चित्रायांशुक्रः घं·०५:३४।
१३	१० शु	**भद्रारंभः२८:४३घं·**, दशावतार व्रत।
१४	११ श	**अभिजितः११:३१–१८:५६, भद्रांतः१६:०७घं·**, उत्तरफल्गुन्यांरविः घं·०१:०७।
१५	१२ र	**पंचकारंभः२८:०४, श्रवण द्वादशी, विष्णुश्रृंखल**, लवणरहित भोजन, हरिवासर, भुवनेश्वरी जयन्ती।
१६	१३ चं	**पंचक।** ② इन्द्रगोविन्द पूजा (उड़ीसा), कदली व्रत, कन्यायांरविः घं·११:०८, तुलायांशुक्रः घं·१६:५८।
१७	१४ मं	**पंचक, भद्रा १०:४१–२१:३४घं·, कन्या संक्रान्ति पुण्यकालं ११:०८–१७:३२घं·**, विश्वकर्मा पूजन, ②
१८	१५ बु	**पंचक, श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा, कुमारीणां साँझी–सन्ध्या पूजनारम्भः**, श्रीमद्भागवत सप्ताह समाप्त।

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
१	१२:०१–१३:४१
१५	११:५३–१३:३३

❀ भाद्रपद मास कृत्य ❀

❀ **हरितालिका तीज व्रत**– भाद्रपद शुक्ल तृतीया यदि उदयकाल में मुहूर्त्तमात्र हो, तो भी परा ग्राह्य है। यदि क्षय के कारण द्वितीया में हो तो द्वितीयायुता ग्राह्य होती है। दो दिन होने पर परातिथि ग्राह्य है।

तत्र मुहूर्त्तमात्रा ततो न्यूनापि परा ग्राह्या। यदा क्षयवशात्परदिने नास्ति तदा द्वितीयायुतापि ग्राह्या।।

❀ **श्रीअनन्त चतुर्दशी व्रत**– भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी तिथि के दिन अनन्तव्रत में मध्याह्न में भगवान् अनन्त की पूजा करे। इस व्रत में चौदह गाँठ की डोर में अनन्त भगवान् की स्थापना करके भुजा में धारण किया जाता है।

❀ **श्रीवामन द्वादशी** – भाद्रपद में शुक्ल द्वादशी के दिन अभिजित् मुहूर्त में अर्थात् श्रवण नक्षत्र के प्रथम पाद में ग्रह नक्षत्र तारा आदि अनुकूल होने पर द्वादशी को मध्याह्न में वामन भगवान् के आविर्भाव का उत्सव मनावें। श्रीसनकादिकों की आज्ञा है – भाद्रपद शुक्ला द्वादशी श्रवण युक्त हो तो उसे महाद्वादशी समझें, एकादशी तथा द्वादशी दोनों दिन उपवास करें। यहाँ विधि का लोप नहीं समझना चाहिये, क्योंकि दोनों के देवता एक ही हैं। अतः एकादशी व्रत का पारणा किये बिना द्वादशी का व्रत कर सकते हैं। श्रीवामन भगवान् को पञ्चामृत से महास्नान कराकर महाभोग समर्पण करें। गायन–वादन द्वारा श्रीवामन जयन्ती उत्सव मनावें प्रसाद वितरण करें।

❀ **पाली व्रत भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी**– तालाब, जलाशय(पाली) के समीप वरुण दम्पत्ति को अर्घ्य दे, समुद्र की भी प्रार्थना करे। इस भविष्यपुरणोक्त व्रत से व्रती समस्त पातकों से मुक्त हो जाता है और वरुण वारुणी का पूजन करने वाले को अचल भूमि की प्राप्ति होती है। शतभिषा नक्षत्र के जातक नक्षत्रस्वामी वरुणदेव की प्रसन्नता हेतु कर सकते हैं। **अर्घ्य में** – पुष्प, फल, वस्त्र, दीपक, महावर, चन्दन, अनाग्नि, पाक तिल चावल मिश्रित सिद्धान्न, खजूर, नारियल, बिजौरा, नींबू, किशमिश, अनार, सुपारी, ककड़ी आदि यथोपलब्ध सामग्री रखे।

अर्घ्य मन्त्र – वरुणाय नमस्तुभ्यं नमस्ते यादसां पते। अपाम्पते नमस्तुभ्यं रसानां पतये नमः।।

प्रार्थना मन्त्र – मा क्लेदं मा च दौर्गन्ध्यं वैरस्यं मा मुखेऽस्तु मे। वरुणो वारुणीभर्ता वरदोऽस्तु सदा मम।।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

सितम्बर	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
३	२०:४९	२२:२५	००:२०	०२:३४	०४:५४	०७:११	०९:२६	११:४५	१४:०४	१६:०९	१७:५४	१९:२३
४	२०:४५	२२:२१	००:१६	०२:३०	०४:५०	०७:०७	०९:२२	११:४१	१४:००	१६:०५	१७:५०	१९:१९
५	२०:४१	२२:१७	००:१२	०२:२६	०४:४६	०७:०३	०९:१८	११:३७	१३:५६	१६:०१	१७:४६	१९:१५
६	२०:३७	२२:१३	००:०८	०२:२२	०४:४३	०६:५९	०९:१४	११:३३	१३:५२	१५:५७	१७:४२	१९:११
७	२०:३३	२२:०९	००:०४	०२:१८	०४:३९	०६:५५	०९:१०	११:२९	१३:४८	१५:५३	१७:३८	१९:०७
८	२०:२९	२२:०५	००:००	०२:१४	०४:३५	०६:५१	०९:०६	११:२५	१३:४४	१५:४९	१७:३४	१९:०३
९	२०:२५	२२:०१	२३:५६	०२:११	०४:३१	०६:४७	०९:०२	११:२१	१३:४०	१५:४५	१७:३०	१८:५९
१०	२०:२१	२१:५७	२३:५२	०२:०७	०४:२७	०६:४४	०८:५८	११:१७	१३:३६	१५:४१	१७:२६	१८:५५
११	२०:१७	२१:५३	२३:४८	०२:०३	०४:२३	०६:४०	०८:५५	११:१३	१३:३२	१५:३८	१७:२२	१८:५१
१२	२०:१३	२१:४९	२३:४५	०१:५९	०४:१९	०६:३६	०८:५१	११:०९	१३:२८	१५:३४	१७:१८	१८:४७
१३	२०:०९	२१:४५	२३:४१	०१:५५	०४:१५	०६:३२	०८:४७	११:०५	१३:२४	१५:३०	१७:१४	१८:४३
१४	२०:०५	२१:४१	२३:३७	०१:५१	०४:११	०६:२८	०८:४३	११:०२	१३:२०	१५:२६	१७:१०	१८:३९
१५	२०:०१	२१:३७	२३:३३	०१:४७	०४:०७	०६:२४	०८:३९	१०:५८	१३:१६	१५:२२	१७:०६	१८:३५
१६	१९:५७	२१:३३	२३:२९	०१:४३	०४:०३	०६:२०	०८:३५	१०:५४	१३:१२	१५:१८	१७:०२	१८:३१
१७	१९:५३	२१:२९	२३:२५	०१:३९	०३:५९	०६:१६	०८:३१	१०:५०	१३:०९	१५:१४	१६:५८	१८:२८
१८	१९:४९	२१:२५	२३:२१	०१:३५	०३:५५	०६:१२	०८:२७	१०:४६	१३:०५	१५:१०	१६:५४	१८:२४

卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, अमृत, रवि आदि योग 卐

सितम्बर	योग
४	**अमृत** ०७·४७ तक, **सिद्ध** ०७·४७ से, **सर्वार्थ** २९·१३ से
५	**अमृत** ०९·४५ से
६	**रवियोग** ०७·५० से, **अमृत** ११·४९ से
७	**सिद्ध** १३·४६ तक, **रवियोग** १०·२३ तक, **सर्वार्थ** १०·२३ से
८	**अमृत** १५·२८ तक, **रवियोग** १२·४१ से
९	**सिद्ध** १६·४७ तक, **रवियोग** १४·३९ तक, **सर्वार्थ** १४·३९ से
१०	**अमृत** २८·३५ तक, **सिद्ध** १७·३८ से
११	**रवियोग** १७·१२ से ① **दग्ध·तिथि·१०** १५·१२ तक
१२	**रवियोग** १७·४४ तक, **रवियोग** १७·४४ से, **सिद्ध** १७·५१ से
१३	**रवियोग** १७·४६ तक, **सिद्ध** १५·१२ से, **रवियोग** १७·४६ से ①
१४	**अमृत** १६·०६ तक, **त्रिपुष्कर** १६·०६ से १७·२२ तक, ②
१५	**सिद्ध** १४·३६ से ② **रवियोग** १७·२२ तक, **सर्वार्थ** १७·२२ से
१६	**रवियोग** १५·२८ से
१७	**रवियोग** १४·०५ तक
१८	**अमृत** ०८·२३ से, **सिद्ध** ०८·२३ से

❀ **भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी** को श्रीगणेशजी प्रकटे, *नभस्ये मासि शुक्लायां चतुर्थ्यां मम जन्मनि। दूर्वाभिः नामभिः पूजां तर्पणं विधिवत् चरेत्।।* श्रीगणेशजी को दूर्वा व शमी और मंदार के पुष्प बहुत प्रिय है। दूर्वा नरक नाशक, वंशवर्धक, आयुवर्धक, तेजवर्धक होती है– *हरिता श्वेतवर्णा वा पंचत्रिपत्र संयुताः। दूर्वांकुरा मया दत्ता एकविंशतिः सम्मिताः।*

❀ **श्रीगणेश चतुर्थी** पर चन्द्र दर्शन निषिद्ध है। दूसरों से कड़वे और अपशब्द सुनकर व्यक्ति कलंक मुक्त हो पाता है।

गणेशजी का मन्त्र– "ॐ गं गणपतये नमः" है। श्रीगणेशजी की आराधना निम्न क्रम में करे १· षोडशोपचार पूजन, २· श्रीगणेश स्तवराज पाठ, ३· श्रीगणेश कवच का पाठ, ४· श्रीगणपति अथर्वशीर्ष पाठ, ५· श्रीगणेश शतनाम पाठ और ६· श्रीगणेश सहस्रनाम का पाठ करें।

आश्विन कृष्णपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, १९ सितम्बर से २ अक्टूबर, २०२४ ईस्वी

ग्रहस्थितिः १९:९:२०२४– मार्गी गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः, वक्री शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, मार्गी बुधःपूर्वोदितः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
सितम्बर	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	सितम्बर	१९ सितम्बर से २ अक्टूबर, २०२४
१९	२ गु	५३:१२	२७·३३	उ·भा·	११:३२	१०·५३	वृद्धि	४३:०६	२३·३०	तैति	२६:१४	गर	५३:१२	३०:१९	६:१६	१८:२४	मीन	अहोरात्र	छत्र	१९	द्वितीया श्राद्ध, अशून्यशयन व्रत
२०	३ शु	४७:१२	२५·०९	रेवती	०७:१९	०९·१२	ध्रुव	३५:२३	२०·२६	वणि	२०:०९	विष	४७:१२	३०:१५	६:१६	१८:२२	मे·०७:१९	०९·१२	श्रीवत्स	२०	तृतीया श्राद्ध
२१	४ श	४१:३१	२२·५३	अश्वि· भरणी	०३:१७ ५६:२३	०७·३६ २८·५०	व्याघ·	२७:५४	१७·२६	बव	१४:१७	बाल	४१:३१	३०:११	६:१७	१८:२१	मेष	अहोरात्र	सौम्य	२१	चतुर्थी श्राद्ध, संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय घं·२०:४३
२२	५ र	३६:२१	२०·५०	कृत्ति·	५६:३५	२८·५५	हर्षण	२०:४७	१४·३६	कौल	०८:५१	तैति	३६:२१	३०:०६	६:१७	१८:२०	वृ·१३:४८	११·४९	धूम्र	२२	पञ्चमी श्राद्ध, चन्द्र षष्ठी व्रत चन्द्रोदये घं·२१:२८
२३	६ चं	३१:५४	१९·०३	रोहि·	५४:१५	२८·००	वज्र	१४:११	११·५८	गर	०४:००	वणि	३१:५४	३०:०२	६:१८	१८:१९	वृष	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	२३	षष्ठी श्राद्ध
२४	७ मं	२८:१७	१७·३७	मृग·	५२:५०	२७·२६	सिद्धि	०८:१५	०९·३६	बव	२८:१७	बाल	५६:५३	२९:५८	६:१८	१८:१८	मि·२३:२४	१५·४०	राक्षस	२४	सप्तमी श्राद्ध, श्रीमहालक्ष्मीव्रत, श्रीमहालक्ष्मी व्रत समापन
२५	८ बु	२५:४३	१६·३६	आर्द्रा	५२:२९	२७·१८	व्यति· वरी	०३:०५ ५५:४५	०७·३३ २८·३७	कौल	२५:४३	तैति	५४:५२	२९:५४	६:१९	१८:१७	मिथुन	अहोरात्र	मुसल	२५	अष्टमी श्राद्ध, जीवितपुत्रिका व्रत, व्यतीपात पुण्यम्
२६	९ गु	२४:१८	१६·०२	पुन·	५३:१८	२७·३८	परिघ	५५:३१	२८·३१	गर	२४:१८	वणि	५४:०४	२९:५०	६:१९	१८:१५	क·३७:५९	२१·३०	सिद्धि	२६	नवमी श्राद्ध, मातृनवमी श्राद्ध, अन्वष्टका श्राद्ध
२७	१० शु	२४:०८	१५·५९	पुष्य	५५:२३	२८·२९	शिव	५३:११	२७·३६	विष	२४:०८	बव	५४:३२	२९:४६	६:२०	१८:१४	कर्क	अहोरात्र	उत्पात	२७	दशमी श्राद्ध, गुरु नानकदेव पुण्यतिथि
२८	११ श	२५:१५	१६·२६	आश्ले·	५८:४२	२९·४९	सिद्ध	५१:५१	२७·०४	बाल	२५:१५	कौल	५६:१८	२९:४२	६:२०	१८:१३	सिं·५८:४२	२९·४९	मानस	२८	श्रीइन्दिरा एकादशी (सर्वेषाम्), एकादशी श्राद्ध
२९	१२ र	२७:३७	१७·२३	मघा	६०:००	अहोरात्र	साध्य	५१:२६	२६·५५	तैति	२७:३७	गर	५९:१५	२९:३८	६:२०	१८:१२	सिंह	अहोरात्र	मुद्गर	२९	द्वादशी श्राद्ध, संन्यासी–यति श्राद्ध, वैष्णवानां एकादशी श्राद्ध
३०	१३ चं	३१:०७	१८·४८	मघा	०३:०७	०७·३६	शुभ	५१:५०	२७·०५	वणि	३१:०७	विष	६०:००	२९:३४	६:२१	१८:११	सिंह	अहोरात्र	ध्वांक्ष	३०	त्रयोदशी श्राद्ध, प्रदोष व्रतम्, मासशिवरात्रि व्रतम्
अक्टूबर	१४ मं	३५:३३	२०·३४	पू·फा·	०८:३४	०९·४७	शुक्ल	५२:५१	२७·३०	विष	०३:१३	बव	३५:३३	२९:३०	६:२१	१८:१०	कं·२५:०३	१६·२३	धूम्र	अक्टूबर	चतुर्दशी श्राद्ध (केवल शस्त्रहत पितरों के लिए)
२	३० बु	४०:३४	२२·३५	उ·फा·	१४:४३	१२·१५	ब्रह्म	५४:१५	२८·०४	चतु	०७:५९	नाग	४०:३४	२९:२६	६:२२	१८:०८	कन्या	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	२	अमावस्या (देव–पितृकार्य), सर्वपितृ श्राद्ध, महालय समाप्ति

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	वक्री शनिः	केतुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
सितम्बर	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
१९	२ गु	०५:०१:४५:१८	११:१३:५४:४७	०२:१२:४४:२६	०४:२४:२३:५८	०१:२८:०९:१९	०६:०१:५३:५२	१०:१७:१०:०३	०५:१५:१३:२१	४५:०९:३३	उ·०२:१३:२६	+ ६:३३	१९:२०
२०	३ शु	०५:०२:४३:५९	११:२८:१५:१३	०२:१३:१७:५५	०४:२६:०३:४२	०१:२८:१३:१०	०६:०३:०६:५३	१०:१७:०५:२३	०५:१५:१०:१०	४५:०७:३२	उ·०१:४९:३९	+ ६:५४	१९:५९
२१	४ श	०५:०३:४२:४१	००:१२:३३:१०	०२:१३:५१:१३	०४:२७:४४:२०	०१:२८:१६:४९	०६:०४:१९:५३	१०:१७:००:४५	०५:१५:०६:५९	४५:०५:३१	उ·०१:२५:४९	+ ७:१६	२०:४३
२२	५ र	०५:०४:४१:२६	००:२६:४५:१२	०२:१४:२४:२१	०४:२९:२५:४७	०१:२८:२०:१७	०६:०५:३२:५३	१०:१६:५६:१०	०५:१५:०३:४८	४५:०३:३०	उ·०१:०१:५६	+ ७:३८	२१:२८
२३	६ चं	०५:०५:४०:१४	०१:१०:४८:१३	०२:१४:५७:१८	०५:०१:०७:५८	०१:२८:२३:३३	०६:०६:४५:५१	१०:१६:५१:३७	०५:१५:००:३८	४५:०१:२८	उ·००:३८:०२	+ ७:००	२२:२१
२४	७ म	०५:०६:३९:०३	०१:२४:३९:३७	०२:१५:३०:०४	०५:०२:५०:५१	०१:२८:२६:३७	०६:०७:५८:४९	१०:१६:४७:०७	०५:१४:५७:२७	४४:५९:२७	उ·००:१४:०७	+ ८:२१	२३:१४
२५	८ बु	०५:०७:३७:५५	०२:०८:१७:२३	०२:१६:०२:३९	०५:०४:३४:२०	०१:२८:२९:२९	०६:०९:११:४५	१०:१६:४२:४०	०५:१४:५४:१६	४४:५७:२५	द·००:०९:५०	+ ८:४३	२४:१२
२६	९ गु	०५:०८:३६:४९	०२:२१:४०:११	०२:१६:३५:०२	०५:०६:१८:२३	०१:२८:३२:०९	०६:१०:२४:४१	१०:१६:३८:१६	०५:१४:५१:०५	४४:५५:२४	द·००:३३:४७	+ ९:०४	२५:१०
२७	१० शु	०५:०९:३५:४५	०३:०४:४७:२७	०२:१७:०७:१४	०५:०८:०२:५४	०१:२८:३४:३७	०६:११:३७:३५	१०:१६:३३:५५	०५:१४:४७:५४	४४:५३:२२	द·००:५७:४५	+ ९:२५	२६:०८
२८	११ श	०५:१०:३४:४४	०३:१७:३९:२०	०२:१७:३९:१४	०५:०९:४७:५२	०१:२८:३६:५३	०६:१२:५०:२९	१०:१६:२९:३८	०५:१४:४४:४३	४४:५१:२०	द·०१:२१:४३	+ ९:४६	२७:०५
२९	१२ र	०५:११:३३:४५	०४:००:१६:४९	०२:१८:११:०३	०५:११:३३:११	०१:२८:३८:५६	०६:१४:०३:२२	१०:१६:२५:२४	०५:१४:४१:३२	४४:४९:१९	द·०१:४५:४१	+१०:०७	२८:०१
३०	१३ च	०५:१२:३२:४८	०४:१२:४१:३३	०२:१८:४२:३९	०५:१३:१८:५०	०१:२८:४०:४७	०६:१५:१६:१३	१०:१६:२१:१३	०५:१४:३८:२२	४४:४७:१७	द·०२:०९:३८	+१०:२७	२८:५४
अक्टूबर	१४ म	०५:१३:३१:५४	०४:२४:५५:५२	०२:१९:१४:०३	०५:१५:०४:४४	०१:२८:४२:२६	०६:१६:२९:०३	१०:१६:१७:०६	०५:१४:३५:११	४४:४५:१५	द·०२:३३:३४	+१०:४८	२९:४६
२	३० बु	०५:१४:३१:०२	०५:०७:०२:३८	०२:१९:४५:१४	०५:१६:५०:५१	०१:२८:४३:५३	०६:१७:४१:५२	१०:१६:१३:०३	०५:१४:३१:६०	४४:४३:१४	द·०२:५७:२९	+११:०८	०६:३९

२१ सितम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः४

२८ सितम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः११

आश्विन कृष्णपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, १९ सितम्बर से २ अक्टूबर, २०२४ ईस्वी

पक्षान्तः– कालः उत्तर । ऋतुः शरद । दक्षिणायनं । सौम्यगोलः । ति·३0 अयनांशाः २२:५२:५५

दिनाङ्क सितम्बर	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
१९	२ गु	**पंचक**, जैन क्षमावाणी पर्व, पड़वा ढ़ोक, **गण्डान्तारम्भः२७:३८**।
२0	३ शु	**पंचकान्तः९:१२, भद्रा १४:२0–२५:१0घं·, गण्डान्तः१४:४८**, ①
२१	४ श	**भरणी श्राद्ध**। ① उत्तरफल्गुन्यांबुधःघं·१५:0७।
२२	५ र	कन्यायांबुधःघं·१४:२९।
२३	६ चं	**भद्रा १९:0४–३0:१७घं·**, स्वात्यांशुक्रःघं·0४:३२।
२४	७ मं	**श्रीकालाष्टमी**, व्यतीपात पुण्यम्।
२५	८ बु	।
२६	९ गु	**भद्रारंभः२७:५७घं·, जीवितपुत्रिका व्रत पारणा**।
२७	१0 शु	**भद्रांतः१५:५९घं·**, हस्तेरविःघं·१६:१३।
२८	११ श	**गण्डान्तारम्भः२३:२६**, हस्तेबुधःघं·0९:१६।
२९	१२ र	**गण्डान्तः१२:१३**, मघा श्राद्ध।
३0	१३ चं	**भद्रा १८:४८–३१:४0घं·**।
अक्टूबर	१४ मं	**भद्रांतः७:३९घं·**। ② पुनर्वसौमङ्गलःघं·१७:५७।
२	३0 बु	**पितृ विसर्जन**, महात्मा गाँधी–लालबहादुर शास्त्री जयन्ती, ②

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
१	११:५६–१३:३३
३0	११:५२–१३:२६

❀ सर्वश्रेष्ठ कर्म है श्राद्ध ❀

ब्रह्म पुराण–जो अपनी संपत्ति के अनुकूल व्यय करता हुआ श्राद्ध करता है वह ब्रह्माण्ड को प्रसन्न कर लेता है। श्राद्ध का फल कभी भी व्यर्थ नहीं जाता––*न किंचिद् व्यर्थतां व्रजेत्॥* जो लोग देवता, पितर, अग्नि और ब्राह्मण की पूजा करते हैं वे सभी प्राणियों के आत्मा विष्णु की ही आराधना करते हैं––*विष्णुमेव यजन्ति ते।*– यमस्मृति। **इच्छा शक्ति होने पर श्राद्ध कराना पहाड़ तोड़ना नहीं बल्कि फूल तोड़ने जैसा कार्य है।**

देव कार्य से भी महत्त्वपूर्ण है श्राद्ध कार्य – देवता से पूर्व पितरों का पूजन करना चाहिए। पितृपूजा देवपूजा से अधिक महत्त्वपूर्ण है––*देवकार्यादपि सदा पितृकार्यं विशिष्यते। देवताभ्यः पितृनां हि पूर्वमाप्यायनं शुभम्।* (ब्रह्मवैवर्त)। ब्रह्मपुराण और अधिक महत्त्व को बतलाते हुए कहता है यदि कोई शाक से भी श्राद्ध करता है तो उसके कुल में कोई कष्ट नहीं भोगता–– *शाकैरपि यथाविधिः।*

अशक्ति में श्राद्ध कैसे करायें नौकरी में छुट्टी न मिलने की स्थिति में, कारागार में रहने पर, रोग से ग्रस्त रहने पर या अन्य किसी भी अवरोध के होने पर सुयोग्य ब्राह्मण को संकल्पपूर्वक धन दे कर श्राद्ध कराना चाहिए– *राजकार्येनियुक्तस्य बन्धनिग्रहवर्तिनः । व्यसनेषु च सर्वेषु श्राद्धं विप्रेणकारयेत्॥* –धर्मसिन्धु, परि. ३ **श्राद्ध त्याग का दुष्परिणाम** आदित्य पुराण में है कि जो लोग मन में यह सोचते हैं कि पितर नहीं होते हैं श्राद्ध क्या करना? ऐसे लोगों के परिवार का रक्त पितृगण पीते हैं– *न सन्ति पितरश्चेति कृत्वा मनसि यो नरः। श्राद्धन् न कुरुते तत्र तस्य रक्तं पिबन्ति ते॥* वंश हीनता और निर्धनता से बचने के लिए श्राद्ध अवश्य करना चाहिए। सुमन्तु मुनि ने भी कहा है कि– **"श्राद्ध से पुण्यशाली अन्य कोई कर्म नहीं है"** – श्राद्धात्परतरं नान्यत् श्रेयस्करमुदाहृतम्।

❀ श्राद्धतिथि पर अन्नदानात्मक सांकल्पिक श्राद्ध ❀

यदि श्रद्धतिथि पर ब्राह्मण भोजन कराना सम्भव न हो तो निम्न विधि से संकल्प करके सूखे अन्न, घृत, चीनी, नमक आदि षड् रस वस्तुओं को दक्षिणा सहित श्राद्ध भोजन के निमित्त ब्राह्मण को दे देना चाहिये–

❀ **प्रतिज्ञासंकल्प**– हाथ में तिल, जल लेकर संकल्प करे – ॐ अद्य ... देशकालसंकीर्त्य... अमुक गोत्रः अमुक नामाहं अस्मत् पिता/ पितामहानां/ माता/... क्षुधापिपासानिवृत्तिपूर्वम् अक्षयतृप्ति सम्पादनार्थं सोपस्करम् आमान्नदानात्मकं सांकल्पिक श्राद्धं करिष्ये।

हाथ से संकल्प–जल जमीन पर छोड़े।

❀ **आमान्नदानका संकल्प**– अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर हाथ में मोटक, तिल, जल लेकर आमान्नदान का निम्न संकल्प करे– ॐ अद्य अमुक गोत्राय पित्रे (पितृ का नाम) शर्माय/वर्माय/गुप्ताय सांकल्पिक श्राद्धे एक/त्रि/पंच ब्राह्मणभोजनतृप्तिपर्याप्तं इदमन्नं ते नमः

कहकर संकल्पजल आमान्न सामग्री पर छोड़ दे और आमान्न ब्राह्मण को प्रदान करे तथा दक्षिणा भी दे।

❀ **पितरों की तृप्ति हेतु वस्त्र आदि दान का संकल्प –** ॐ ...देशकाल संकीर्त्य... अमुक गोत्रः अमुक नामाहं अमुकगोत्राणां अस्मत् पिता/पितामहः/ (पितृ का नाम) शर्मा/वर्मा/गुप्तानां श्राद्धे क्षुधापिपासानिवृत्तिपूर्वम् अक्षयतृप्तिप्राप्त्यर्थम् असद्गतीनां सद्गतिप्राप्तये सद्गतीनाञ्च अपुनरावर्तिविष्णवादिलोकप्राप्तिकामनया शास्त्रोक्त फल प्राप्त्यर्थं वस्त्रं दक्षिणाद्रव्यं च अमुकगोत्राय–नामाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

सितम्बर	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१९	१९:४६	२१:२१	२३:१७	0१:३१	0३:५१	0६:0८	0८:२३	१0:४२	१३:0१	१५:0६	१६:५१	१८:२0
२0	१९:४२	२१:१८	२३:१३	0१:२७	0३:४७	0६:0४	0८:१९	१0:३८	१२:५७	१५:0२	१६:४७	१८:१६
२१	१९:३८	२१:१४	२३:0९	0१:२३	0३:४३	0६:00	0८:१५	१0:३४	१२:५३	१४:५८	१६:४३	१८:१२
२२	१९:३४	२१:१0	२३:0५	0१:१९	0३:३९	0५:५६	0८:११	१0:३0	१२:४९	१४:५४	१६:३९	१८:0८
२३	१९:३0	२१:0६	२३:0१	0१:१५	0३:३६	0५:५२	0८:0७	१0:२६	१२:४५	१४:५0	१६:३५	१८:0४
२४	१९:२६	२१:0२	२२:५७	0१:११	0३:३२	0५:४८	0८:0३	१0:२२	१२:४१	१४:४६	१६:३१	१८:00
२५	१९:२२	२0:५८	२२:५३	0१:0७	0३:२८	0५:४४	0७:५९	१0:१८	१२:३७	१४:४२	१६:२७	१७:५६
२६	१९:१८	२0:५४	२२:४९	0१:0४	0३:२४	0५:४0	0७:५५	१0:१४	१२:३३	१४:३८	१६:२३	१७:५२
२७	१९:१४	२0:५0	२२:४५	0१:00	0३:२0	0५:३६	0७:५१	१0:१0	१२:२९	१४:३५	१६:१९	१७:४८
२८	१९:१0	२0:४६	२२:४२	00:५६	0३:१६	0५:३२	0७:४८	१0:0६	१२:२५	१४:३१	१६:१५	१७:४४
२९	१९:0६	२0:४२	२२:३८	00:५२	0३:१२	0५:२८	0७:४४	१0:0२	१२:२१	१४:२७	१६:११	१७:४0
३0	१९:0२	२0:३८	२२:३४	00:४८	0३:0८	0५:२४	0७:४0	0९:५८	१२:१७	१४:२३	१६:0७	१७:३६
अक्टूबर	१८:५८	२0:३४	२२:३0	00:४४	0३:0४	0५:२0	0७:३६	0९:५५	१२:१३	१४:१९	१६:0३	१७:३२
२	१८:५४	२0:३0	२२:२६	00:४0	0३:00	0५:१६	0७:३२	0९:५१	१२:0९	१४:१५	१५:५९	१७:२८

सित·	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
१९	**सर्वार्थ** १0·५३ से, **अमृत** २७·३३ से
२0	**सर्वार्थ** अहोरात्र, **अमृत** २५·0९ से
२१	**सिद्ध** २२·५३ तक
२२	**अमृत** २0·५0 तक, **रवियोग** २८·५५ से
२३	**सर्वार्थ** २८·00 तक, **रवियोग** २८·00 तक, **सिद्ध** १९·0३ तक, **सर्वार्थ** २८·00 से
२४	**अमृत** १७·३७ तक, **द्विपुष्कर** १७·३७ तक, **सिद्ध** १७·३७ से
२५	**दग्ध·तिथि·0८** १६·३६ तक
२६	**सर्वार्थ** २७·३८ तक, **सिद्ध** १६·0२ से, **सर्वार्थ** २७·३८ से
२७	**सिद्ध** १५·५९ से,
२८	**अमृत** १६·२६ तक
२९	**सिद्ध** १७·२३ से
२	**सर्वार्थ** १२·१५ से, **अमृत** २२·३५ से

कन्याराशिस्थ सूर्य और **आश्विन कृष्णपक्ष** का जब सम्मिलन होता है तब एक त्रिकोण में सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी की स्थिति बनती है और पितृगण सीधे धरती पर उतर आते हैं। यह खगोलीय स्थिति **पितृपक्ष** के लिए अनिवार्य होती है। अदृष्ट भाग दिखने वाले से करोड़ों करोड़ गुणा महत्वपूर्ण है। अतः **वेद–शास्त्र को प्रमाण मानकर श्राद्ध करना चाहिए।** संतुष्ट पितृगण राज्य, वंश और आयु प्रदान करते हैं। जिस वंश में पितृगण मुक्त नहीं होते, उसके वंशधर मोक्ष नहीं प्राप्त कर सकते। मोक्ष तो बड़ी बात है उनका पुनर्जन्म तक नहीं होता, अंततः श्रीमद्भागवत का सप्ताहयज्ञ कराना पड़ता है।

"जिनके घर श्राद्ध नहीं होता उनके कुल में वीर पुत्र उत्पन्न नहीं होते, कोई निरोग नहीं रहता, दीर्घायु नहीं होती और किसी तरह का कल्याण नहीं होता।" –मार्कण्डेयपुराण

न तत्र वीराः जायन्ते निरोगी न शतायुषः।
न तत्र श्रेयः कांक्षन्ते यत्र श्राद्धः विवर्जितः॥

आश्विन शुक्लपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, ३ अक्टूबर से १७ अक्टूबर, २०२४ ईस्वी

ग्रहस्थितिः ३:१०:२०२४– मार्गी गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः, वक्री शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, मार्गी बुधःपूर्वास्तः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
अक्टू.	वार	घ.प.	घं:मि	नक्षत्र	घ.प.	घं:मि	योग	घ.प.	घं:मि	क१	घ.प.	क२	घ.प.	घ.प.	घं:मि	घं:मि	राशि घ.प.	घं:मि	योग	अक्टू.	३ अक्टूबर से १७ अक्टूबर २०२४
३	१ गु	४५:४७	२४.४१	हस्त	२१:१३	१४.५२	ऐन्द्र	५५:४३	२८.३९	बव	१३:०९	बाल	४५:४७	२९:२२	६:२२	१८:०७	तु.५४:२९	२८.१०	राक्षस	३	शारदीय नवरात्रारम्भ, कलशस्थापना, शैलपुत्री दर्शन, ध्वजा रोपण
४	२ शु	५०:४५	२६.४१	चित्रा	२७:३८	१७.२६	वैधृ.	५६:५६	२९.०९	बाल	१८:१८	कौल	५०:४५	२९:१८	६:२३	१८:०६	तुला	अहोरात्र	मुसल	४	ब्रह्मचारिणीदेवी दर्शन, वैधृति पुण्यम्
५	३ श	५५:०४	२८.२५	स्वाती	३३:३३	१९.४९	विष्कु.	५७:३८	२९.२७	तैति	२२:५९	गर	५५:०४	२९:१४	६:२३	१८:०५	तुला	अहोरात्र	सिद्धि	५	चन्द्रघण्टादेवी दर्शन
६	४ र	५८:२७	२९.४७	विशा.	३८:३९	२१.५१	प्रीति	५७:३६	२९.२६	वणि	२६:५३	विष	५८:२७	२९:१०	६:२४	१८:०४	वृश्.२२:२८	१५.२३	उत्पात	६	वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी, कूष्माण्डादेवी दर्शन, रथोत्सव चतुर्थी
७	५ चं	६०:००	अहोरात्र	अनु.	४२:४१	२३.२९	आयु.	५६:४१	२९.०५	बव	२९:४१	बाल	६०:००	२९:०६	६:२४	१८:०३	वृश्चिक	अहोरात्र	मानस	७	स्कन्दमातादेवी दर्शन, उपांग ललिता व्रत, ललिता पंचमी
८	५ मं	००:३८	०६.४०	ज्ये.	४५:३२	२४.३८	सौभा.	५४:४८	२८.२०	बाल	००:३८	कौल	३१:१८	२९:०२	६:२५	१८:०२	ध.४५:३२	२४.३८	मुद्गर	८	कात्यायनीदेवी दर्शन
९	६ बु	०१:३७	०७.०४	मूल	४७:०८	२५.१७	शोभ.	५१:५४	२७.११	तैति	०१:३७	गर	३१:३८	२८:५८	६:२५	१८:०१	धनु	अहोरात्र	ध्वज	९	कालरात्रिदेवी दर्शन, श्री सरस्वती आवाहन (मूलेषु)
१०	७ गु ८ गु	०१:१८ ५८:२९	०६.५७ २९:५०	पू.षा.	४७:३०	२५.२६	अतिग.	४८:०२	२५.३९	वणि	०१:१८	विष	३०:४२	२८:५४	६:२६	१८:००	धनु	अहोरात्र	धाता	१०	महाष्टमी, महागौरी दर्शन, श्री सरस्वती पूजन (पू.षाढ़ासु)
११	९ शु	५७:०६	२९.१७	उ.षा.	४६:४४	२५.०८	सुकर्मा	४३:१४	२३.४४	बाल	२८:३४	कौल	५७:०६	२८:५०	६:२६	१७:५८	म.०२:२४	०७.२४	आनन्द	११	महानवमी, सिद्धिदात्री दर्शन, सरस्वती बलिदान (उ.षाढ़ासु) ①
१२	१० श	५३:२५	२७.४९	श्रवण	४४:५७	२४.२६	धृति	३७:३६	२१.२९	तैति	२५:२१	गर	५३:२५	२८:४६	६:२७	१७:५७	मकर	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	१२	विजयादशमी, नवरात्र व्रतपारणा, सरस्वती विसर्जन (श्रवणेषु)
१३	११ र	४८:५४	२६.०१	धनि.	४२:१९	२३.२३	शूल	३१:१६	१८.५८	वणि	२१:१४	विष	४८:५४	२८:४२	६:२७	१७:५६	कुं.१३:४३	११.५७	मातङ्ग	१३	श्री पापाङ्कुशा एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त)
१४	१२ चं	४३:४२	२३.५७	शत.	३८:६०	२२.०४	गण्ड	२४:२०	१६.१२	बव	१६:२२	बाल	४३:४२	२८:३८	६:२८	१७:५५	कुंभ	अहोरात्र	अमृत	१४	श्री पापाङ्कुशा एकादशी (निम्बार्क), श्रीपद्मनाभद्वादशी
१५	१३ मं	३८:०२	२१.४१	पू.भा.	३५:१०	२०.३३	वृद्धि	१६:५७	१३.१५	कौल	१०:५४	तैति	३८:०२	२८:३४	६:२९	१७:५४	मी.२१:०९	१४.५६	काण	१५	प्रदोष व्रतम्, ①पाठ हवन पूर्णाहुति महाबलिदान
१६	१४ बु	३२:०४	१९.१९	उ.भा.	३१:०३	१८.५४	ध्रुव	०९:१६	१०.१२	गर	०५:०४	वणि	३२:०४	२८:३०	६:२९	१७:५३	मीन	अहोरात्र	लुम्ब	१६	शरदपूर्णिमा, पूर्णिमा (व्रत), कोजागरी लक्ष्मी पूजा
१७	१५ गु	२६:०१	१६.०१	रेवती	२६:५०	१७.१४	व्याघ. हर्षण	०१:२६ ५२:१३	०७.०४ २७:२३	बव	२६:०१	बाल	५३:०२	२८:२६	६:३०	१७:५२	मे.२६:५०	१७.१४	मित्र	१७	पूर्णिमा (स्नान–दान), सत्यनारायण पूर्णिमा, वाल्मीकि जयन्ती

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	गुरुः (मा/व)	शुक्रः	वक्री शनिः	केतुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
अक्टूबर	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मिःसे	
३	१ गु	०५:१५:३०:१२	०५:१९:०५:०४	०२:२०:१६:१३	०५:१८:३७:०८	०१:२८:४५:०७	०६:१८:५४:४०	१०:१६:०९:०४	०५:१४:२८:४९	४४:४१:१२	द.०३:२१:२२	+११:२७	०६:३९
४	२ शु	०५:१६:२९:२४	०६:०१:०६:५५	०२:२०:४६:५८	०५:२०:२३:३०	०१:२८:४६:०८	०६:२०:०७:२७	१०:१६:०५:०९	०५:१४:२५:३८	४४:३९:११	द.०३:४५:१३	+११:४७	०७:३१
५	३ श	०५:१७:२८:३८	०६:१३:१२:०५	०२:२१:१७:३१	०५:२२:०९:५६	०१:२८:४६:५८	०६:२१:२०:१२	१०:१६:०१:१८	०५:१४:२२:२७	४४:३७:१०	द.०४:०९:०१	+१२:०६	०८:२५
६	४ र	०५:१८:२७:५४	०६:२५:२३:५६	०२:२१:४७:५०	०५:२३:५६:२३	०१:२८:४७:३४	०६:२२:३२:५६	१०:१५:५७:३२	०५:१४:१९:१६	४४:३५:०८	द.०४:३२:४६	+१२:२५	०९:२०
७	५ चं	०५:१९:२७:१३	०७:०७:४५:२५	०२:२२:१७:५५	०५:२५:४२:४४	वक्री२८:४७:५८	०६:२३:४५:३८	१०:१५:५३:५०	०५:१४:१६:०६	४४:३३:०७	द.०४:५६:२९	+१२:४३	१०:१५
८	५ मं	०५:२०:२६:३४	०७:२०:१९:०३	०२:२२:४७:४७	०५:२७:२८:५६	०१:२८:४८:१०	०६:२४:५८:१९	१०:१५:५०:१२	०५:१४:१२:५५	४४:३१:०६	द.०५:२०:०७	+१३:०१	११:११
९	६ बु	०५:२१:२५:५८	०८:०३:०६:४२	०२:२३:१७:२४	०५:२९:१४:५६	०१:२८:४८:०९	०६:२६:१०:५८	१०:१५:४६:४०	०५:१४:०९:४४	४४:२९:०६	द.०५:४३:४२	+१३:१९	१२:०८
१०	७ गु	०५:२२:२५:२३	०८:१६:०९:३०	०२:२३:४६:४७	०६:०१:००:३९	०१:२८:४७:५५	०६:२७:२३:३६	१०:१५:४३:१२	०५:१४:०६:३३	४४:२७:०५	द.०६:०७:१३	+१३:३६	१२:५९
११	९ शु	०५:२३:२४:५१	०८:२९:२७:५३	०२:२४:१५:५५	०६:०२:४६:०४	०१:२८:४७:२९	०६:२८:३६:१३	१०:१५:३९:४९	०५:१४:०३:२२	४४:२५:०५	द.०६:३०:३९	+१३:५३	१३:५०
१२	१० श	०५:२४:२४:२२	०९:१३:०१:२८	०२:२४:४४:४९	०६:०४:३१:०७	०१:२८:४६:५०	०६:२९:४८:४७	१०:१५:३६:३१	०५:१४:००:११	४४:२३:०५	द.०६:५३:५९	+१४:०९	१४:३५
१३	११ र	०५:२५:२३:५४	०९:२६:४९:०८	०२:२५:१३:२७	०६:०६:१५:४५	०१:२८:४५:५९	०७:०१:०१:२०	१०:१५:३३:१८	०५:१३:५७:०१	४४:२१:०५	द.०७:१७:१५	+१४:२५	१५:१९
१४	१२ च	०५:२६:२३:२९	१०:१०:४९:०४	०२:२५:४१:५०	०६:०७:५९:५४	०१:२८:४४:५५	०७:०२:१३:५१	१०:१५:३०:१०	०५:१३:५३:५०	४४:१९:०५	द.०७:४०:२४	+१४:४०	१५:५९
१५	१३ मं	०५:२७:२३:०६	१०:२४:५८:४९	०२:२६:०९:५७	०६:०९:४३:३२	०१:२८:४३:३८	०७:०३:२६:२०	१०:१५:२७:०८	०५:१३:५०:३९	४४:१७:०६	द.०८:०३:२७	+१४:५५	१६:३७
१६	१४ बु	०५:२८:२२:४६	११:०९:१५:२४	०२:२६:३७:४८	०६:११:२६:३४	०१:२८:४२:०९	०७:०४:३८:४८	१०:१५:२४:११	०५:१३:४७:२८	४४:१५:०७	द.०८:२६:२४	+१५:०९	१७:१६
१७	१५ गु	०५:२९:२२:२७	११:२३:३५:३०	०२:२७:०५:२२	०६:१३:०८:५७	०१:२८:४०:२८	०७:०५:५१:१३	१०:१५:२१:२०	०५:१३:४४:१७	४४:१३:०९	द.०८:४९:१४	+१५:२३	१७:५५

६ अक्टूबर सूर्योदयकालीन तिथिः४
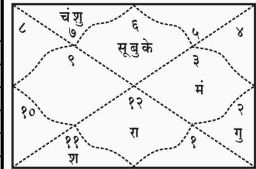
१३ अक्टूबर सूर्योदयकालीन तिथिः११
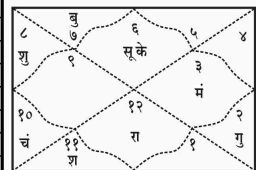
आश्विन शुक्लपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, ३ अक्टूबर से १७ अक्टूबर, २०२४ ईस्वी

पक्षान्तः– कालः उत्तर । ऋतुः शरद । दक्षिणायनं । सौम्यगोलः तुलार्कतः याम्यगोलः । ति·१५ अयनांशाः २२:५२:५७

दिनाङ्क अक्टूबर	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
३	१ गु	**दुर्गा सप्तशती पाठारम्भ, महाराजा श्री अग्रसेन जयन्ती।**
४	२ शु	विशाखायांशुक्रः घं·०४:०५।
५	३ श	चित्रायांबुधः घं·२२:२१।
६	४ र	**भद्रा १७:०९–२९:४७घं·**, मान चतुर्थी (उड़ीसा)।
७	५ चं	वक्रः गुरुः घं·२२:२८।
८	५ मं	**गण्डान्तारम्भः१८:२४।**
९	६ बु	**गण्डान्तः६:५१, बिल्वसप्तमी,** आमेर मेला, तुलायांबुधः घं·१६:४८।
१०	७ गु ८ गु	**भद्रा ६:५८–१८:४३घं·, दुर्गाष्टमी।**
११	९ शु	**दुर्गा महानवमी, अभिजितः१९:१४–२६:४२,** मन्वादि, चित्रायांरविः घं·०४:३०।
१२	१० श	**श्रीअपराजिता पूजा, श्रीसुदर्शनादि सर्वायुध पूजा।**
१३	११ र	**पंचकारंभः११:५७,** जगद्गुरु श्रीमाधवाचार्य जयन्ती, **भद्रा १४:५८–२६:०२घं** ⓘ
१४	१२ च	**पंचक।** ⓘ वृश्चिकेशुक्रः घं·१०:१८, दुग्ध दान, स्वात्यांबुधः घं·१२:१२।
१५	१३ मं	**पंचक,** अनुराधायांशुक्रः घं·०४:३२।
१६	१४ बु	**पंचक, महारास पूर्णिमा, श्रीलक्ष्मी–इन्द्र–कुबेर पूजा, भद्रा १९:१९–३०:०४घं·।**
१७	१५ गु	**पंचकान्तः१७:१४, गण्डान्तः११:३९–२२:४९, कार्तिकस्नान आरम्भ, तुला संक्रान्ति पुण्यकालं १२:११–१७:५२घं·,** मेला श्रीसालासर बालाजी, तुलायांरविः घं·२१:३५।

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
१	११:५२–१३:२६
१५	११:४९–१३:२०

❀ आश्विन मास कृत्य ❀

❀ **शारदीय नवरात्रि–** आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त्। प्रथम दिन वैधृति एवं चित्रा रहित शुभमुहूर्त में कलशस्थापन करे।

✻ **नवरात्र घटस्थापना मुहूर्त्त** – सूर्योदय से १० घटी पर्यन्त श्रेष्ठ ०६:२२–१०:२२, अभिजित् काल ११:५० – १२:३८ ✻

नवरात्रि में देवी की प्रीति हेतु श्रीसप्तशती पाठ करें व अखण्ड दीप निम्न मन्त्र से प्रज्वलित करें –

अखण्डदीपकं देव्याः प्रीतये नवरात्रिकम्। प्रज्वालयेद् अहोरात्रं एकचित्तं दृढव्रतः।।

❀ **विजयादशमी निर्णय–** उदये दशमीकिञ्चित् सम्पूर्णैकादशी यदि श्रवणः यदा काले सा तिथिः विजयाऽभिधः।। अन्यञ्च–

इषस्य दशमी शुक्ला पूर्वविद्धा न कारयेत्। श्रवणेनापि संयुक्ता राज्ञां पट्टाभिषेचने।।

सूर्योदये यदा राजन दृश्यते दशमी तिथिः। आश्विने मासि शुक्ले तु विजयां ता विदुर्बुधा ।।

विजयादशमी अपराह्नव्यापिनी श्रवण नक्षत्र युक्त ग्राह्य होने से इस वर्ष १२ अक्टू. को विजयादशमी, आयुधपूजन, राज्याभिषेक आदि शास्त्रानुसार होगा। **शमी वृक्ष पूजन–** दशहरा के दिन शमीवृक्ष पूजन से पाप, दुःस्वप्न तथा यात्राकष्ट का निवारण होता है।

❀ **पापांकुशा एकादशी** (पद्मपुराण) – पापी पुरुषों के पापों को वश में करने के लिए आश्विन शुक्ल एकादशी अंकुश के समान है। इसी कारण इसका नाम 'पापांकुशा' है। यह स्वर्ग और मोक्ष को देने वाली, शरीर को नीरोग रखने वाली, सुन्दरी, सुशीला, स्त्री, सदाचारी पुत्र और सुस्थिर धन देने वाली है। दिन में भगवान् का पूजन और रात्रि में उनके सम्मुख जागरण करके दूसरे दिन पूर्वाह्न में पारण करके व्रत को समाप्त करे।

❀ **शरद पूर्णिमा** –आज मनुष्यों को आयु देने वाली चन्द्र किरणों का वर्षण होता है। आज की रात में भगवती लक्ष्मी जागने वाले अपने भक्तों को ढूंढती रहती हैं– ***को जागर्ति इति भाषिणी।*** **मेरी आराधना में कौन जाग रहा है, उसे मैं धन समृद्धि दूंगी।** यही कोजागरी है। कोजागरी में ऐरावत हाथी पर सवार लक्ष्मी की पूजा करे। शरदपूर्णिमा को **रासोत्सव** करे। नारद पुराण में कहा है– **'हे ब्राह्मण श्रेष्ठ! जो रासलीला महोत्सव करता है उसके मन में जब तक इन्द्र का राज्य है तब तक श्रीकृष्ण भगवान् परम भक्ति देते हैं।'** ''वह पूर्णिमा विद्ध होकर अधिक हो तो पर दिन में करे। चतुर्दशी विद्धा अमावस्या और पूर्णिमा को कभी ग्रहण न करे।'', यह ब्रह्मवैवर्त में कहा है।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

अक्टूबर	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
३	१८:५०	२०:२६	२२:२२	००:३६	०२:५६	०५:१३	०७:२८	०९:४७	१२:०५	१४:११	१५:५५	१७:२४
४	१८:४६	२०:२२	२२:१८	००:३२	०२:५२	०५:०९	०७:२४	०९:४३	१२:०२	१४:०७	१५:५१	१७:२१
५	१८:४२	२०:१८	२२:१४	००:२८	०२:४८	०५:०५	०७:२०	०९:३९	११:५८	१४:०३	१५:४७	१७:१७
६	१८:३९	२०:१४	२२:१०	००:२४	०२:४४	०५:०१	०७:१६	०९:३५	११:५४	१३:५९	१५:४४	१७:१३
७	१८:३५	२०:११	२२:०६	००:२०	०२:४०	०४:५७	०७:१२	०९:३१	११:५०	१३:५५	१५:४०	१७:०९
८	१८:३१	२०:०७	२२:०२	००:१६	०२:३६	०४:५३	०७:०८	०९:२७	११:४६	१३:५१	१५:३६	१७:०५
९	१८:२७	२०:०३	२१:५८	००:१२	०२:३२	०४:४९	०७:०४	०९:२३	११:४२	१३:४७	१५:३२	१७:०१
१०	१८:२३	१९:५९	२१:५४	००:०८	०२:२९	०४:४५	०७:००	०९:१९	११:३८	१३:४३	१५:२८	१६:५७
११	१८:१९	१९:५५	२१:५०	००:०४	०२:२५	०४:४१	०६:५६	०९:१५	११:३४	१३:३९	१५:२४	१६:५३
१२	१८:१५	१९:५१	२१:४६	००:००	०२:२१	०४:३७	०६:५२	०९:११	११:३०	१३:३५	१५:२०	१६:४९
१३	१८:११	१९:४७	२१:४२	२३:५७	०२:१७	०४:३३	०६:४८	०९:०७	११:२६	१३:३१	१५:१६	१६:४५
१४	१८:०७	१९:४३	२१:३८	२३:५३	०२:१३	०४:२९	०६:४४	०९:०३	११:२२	१३:२७	१५:१२	१६:४१
१५	१८:०३	१९:३९	२१:३४	२३:४९	०२:०९	०४:२५	०६:४०	०८:५९	११:१८	१३:२३	१५:०८	१६:३७
१६	१७:५९	१९:३५	२१:३१	२३:४५	०२:०५	०४:२१	०६:३६	०८:५५	११:१४	१३:२०	१५:०४	१६:३३
१७	१७:५५	१९:३१	२१:२७	२३:४१	०२:०१	०४:१७	०६:३३	०८:५१	११:१०	१३:१६	१५:००	१६:२९

अक्टू	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
५	**सर्वार्थ** १९·४९ तक, **रवियोग** १९·४९ से, **सिद्ध** २८·२५ से
६	**रवियोग** २१·५१ तक, **अमृत** २९·४७ से
७	**सर्वार्थ** २३·२९ तक, **अमृत** अहोरात्र, **रवियोग** २३·२९ से
८	**रवियोग** २४·३८ तक
९	**अमृत** ०७·०४ तक, **सिद्ध** ०७·०४ से
१०	**अमृत** ०६·५७ से, **रवियोग** २५·२६ से, **दग्ध·तिथि·८**
११	**अमृत** २९·१७ तक, **सर्वार्थ–रवियोग** २५·०८ से
१२	**सर्वार्थ** २४·२६ तक, **रवियोग** अहोरात्र, **अमृत** १५·४९ से
१३	**रवियोग** २३·२३ तक
१५	**सिद्ध** २१·४१ तक, **सर्वार्थ–रवियोग** २०·३३ से
१६	**रवियोग** १८·५४ तक
१७	**सर्वार्थ** अहोरात्र, **सिद्ध** १६·०१ तक

❀ नवार्ण मन्त्र की व्यापकता ❀

मूल– "ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे"

यह सांसारिक सुख और मोक्ष दोनों को देने वाला मन्त्र है। इस मन्त्र का जप किसी भी वर्ण, जाति, धर्म, सम्प्रदाय वाला व्यक्ति कर सकता है। यह गायत्री मन्त्र की तरह अपने भीतर गुप्तरूप से २४ वर्णाक्षरों को समेटे है। ऐ, म्, ह, र, ई, म्, क, ल, ई, म्, च, आ, म, उ, म्, ड, आ, य, ऐ, व, इ, च्, च, ए। सावित्री मन्त्र की तरह इसमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश समाहित हैं। यह ब्रह्मस्वरूपिणी महाशक्ति का मन्त्र है, जो सगुणरूप में महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती होती है। ॐ रहित नवार्ण का जप श्रेयस्कर है। इसी से सप्तशती का सम्पुटित पाठ, हवन किया जाता है। यह भगवती महाशक्ति का ब्रह्ममय विग्रह है।

कार्तिक कृष्णपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, १८ अक्टूबर से १ नवम्बर, २०२४ ईस्वी

ग्रहस्थितिः १८:१०:२०२४– वक्री गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः, वक्री शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, मार्गी बुधःपूर्वास्त

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
अक्टूबर	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	अक्टूबर	१८ अक्टूबर से १ नवम्बर, २०२४
१८	१ शु	२०:०५	१४·३२	अश्वि·	२२:४४	१५·३६	वज्र	४६:०२	२४·५५	कौल	२०:०५	तैति	४७:१५	२८:२२	६:३०	१७:५१	मेष	अहोरात्र	वज्र	१८	**त्याग व्रतारम्भ, आकाश दीपदान आरम्भ,** अशून्यशयन व्रत
१९	२ श	१४:२९	१२·१८	भरणी	१८:५९	१४·०६	सिद्धि	३८:४५	२२·०१	गर	१४:२९	वणि	४१:५३	२८:१८	६:३१	१७:५०	वृ·३३:०७	१९·४६	ध्वांक्ष	१९	गुरु रामदास जयन्ती
२०	३ र	०९:२४	१०·१७	कृत्ति·	१५:४५	१२·४९	व्यति·	३१:५७	१९·१८	विष	०९:२४	बव	३७:०८	२८:१४	६:३१	१७:४९	वृष	अहोरात्र	धूम्र	२०	**करवा चौथ, करक संकष्टी चतुर्थी, चन्द्रोदय घं·२०:११**
२१	४ चं	०५:०२	०८·३३	रोहि·	१३:१४	११·५०	वरी·	२५:४५	१६·५०	बाल	०५:०२	कौल	३३:१०	२८:१०	६:३२	१७:४८	मि·४२:१८	२३·२७	प्रवर्द्ध	२१	श्रीललिता चतुर्थी व्रत
२२	५ मं ६ मं	०१:३१ ५७:३३	०७·०९ २९:३४	मृग·	११:३५	११·११	परिघ	२०:१८	१४·४०	तैति	०१:३१	गर	३०:०९	२८:०६	६:३३	१७:४७	मिथुन	अहोरात्र	राक्षस	२२	**श्रीस्कन्द षष्ठी**
२३	७ बु	५७:४५	२९·३९	आर्द्रा	१०:५९	१०·५७	शिव	१५:४२	१२·५०	विष	२८:१५	बव	५७:४५	२८:०२	६:३३	१७:४६	क·५६:१८	२९·०५	मुसल	२३	
२४	८ गु	५७:४२	२९·३९	पुन·	११:३२	११·११	सिद्ध	१२:०२	११·२३	बाल	२७:३३	कौल	५७:४२	२७:५९	६:३४	१७:४५	कर्क	अहोरात्र	सिद्धि	२४	**श्रीअहोई अष्टमी, श्रीकालाष्टमी,** दाम्पत्य अष्टमी
२५	९ शु	५८:५६	३०·०९	पुष्य	१३:१९	११·५४	साध्य	०९:२२	१०·१९	तैति	२८:०८	गर	५८:५६	२७:५५	६:३४	१७:४५	कर्क	अहोरात्र	उत्पात	२५	गुरु हरिराय पुण्यदिवस
२६	१० श	६०:००	अहोरात्र	आश्ले·	१६:२१	१३·०८	शुभ	०७:४१	०९·४०	वणि	३०:०१	विष	६०:००	२७:५१	६:३५	१७:४४	सिं·१६:२१	१३·०८	मानस	२६	
२७	१० र	०१:२४	०७·०९	मघा	२०:३४	१४·४९	शुक्ल	०६:५७	०९·२३	विष	०१:२४	बव	३३:०६	२७:४७	६:३६	१७:४३	सिंह	अहोरात्र	मुद्गर	२७	
२८	११ चं	०५:०२	०८·३७	पू·फा·	२५:४८	१६·५६	ब्रह्म	०७:०४	०९·२३	बाल	०५:०२	कौल	३७:१३	२७:४३	६:३६	१७:४२	कं·४२:१६	२३·३१	ध्वज	२८	**श्रीरमा एकादशी (सर्वेषाम्), श्रीगोवत्सद्वादशी** (प्रदोषे)
२९	१२ मं	०९:३४	१०·२७	उ·फा·	३१:५०	१९·२१	ऐन्द्र	०७:५१	०९·४६	तैति	०९:३४	गर	४२:०६	२७:४०	६:३७	१७:४१	कन्या	अहोरात्र	धाता	२९	**प्रदोष व्रतम्, धनत्रयोदशी, यमनिमित्त चौमुखा दीपदान**
३०	१३ बु	१४:४२	१२·३०	हस्त	३८:१७	२१·५७	वैधृ·	०९:०५	१०·१६	वणि	१४:४२	विष	४७:२३	२७:३६	६:३८	१७:४०	कन्या	अहोरात्र	आनन्द	३०	**धन्वन्तरि जयन्ती, नरक चतुर्दशी, रूपचौदस, मासशिवरात्रि**
३१	१४ गु	२०:०१	१४·३९	चित्रा	४४:४६	२४·३३	विष्कु·	१०:३०	१०·५०	शकु	२०:०१	चतु	५२:३७	२७:३२	६:३८	१७:३९	तु·११:३२	११·१५	सुस्थिर	३१	**दीपावली** (प्रदोष–मध्यरात्रिव्यापिनी अमावस्या में)
नवम्बर	३० शु	२५:०४	१६·४१	स्वाती	५०:५०	२६·५९	प्रीति	११:४४	११·२१	नाग	२५:०४	किं	५७:२३	२७:२९	६:३९	१७:३९	तुला	अहोरात्र	गद	नवम्बर	**अमावस्या (देव–पितृकार्य),** श्रीमहावीर निर्वाण दिवस

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	वक्री गुरुः	शुक्रः	वक्री शनिः	केतुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
अक्टूबर	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
१८	१ शु	०६:००:२२:११	००:०७:५५:१४	०२:२७:३२:४०	०६:१४:५०:३७	०१:२८:३८:३४	०७:०७:०३:३७	१०:१५:१८:३४	०५:१३:४१:०६	४४:११:१०	द·०९:११:५६	+१५:३६	१८:३७
१९	२ श	०६:०१:२१:५७	००:२२:१०:५१	०२:२७:५९:४१	०६:१६:३१:३१	०१:२८:३६:२८	०७:०८:१५:५८	१०:१५:१५:५४	०५:१३:३७:५५	४४:०९:१३	द·०९:३४:३०	+१५:४८	१९:२२
२०	३ र	०६:०२:२१:४५	०१:०६:१९:०४	०२:२८:२६:२५	०६:१८:११:३४	०१:२८:३४:१०	०७:०९:२८:१७	१०:१५:१३:१९	०५:१३:३४:४५	४४:०७:१५	द·०९:५६:५७	+१५:००	२०:११
२१	४ चं	०६:०३:२१:३६	०१:२०:१७:००	०२:२८:५२:५१	०६:१९:५०:४१	०१:२८:३१:४०	०७:१०:४०:३४	१०:१५:१०:५१	०५:१३:३१:३४	४४:०५:१९	द·१०:१९:१४	+१६:११	२१:०४
२२	५ मं	०६:०४:२१:२८	०२:०४:०२:१९	०२:२९:१८:५९	०६:२१:२८:४९	०१:२८:२८:५७	०७:११:५२:४९	१०:१५:०८:२८	०५:१३:२८:२३	४४:०३:२२	द·१०:४१:२३	+१६:२१	२२:००
२३	७ बु	०६:०५:२१:२३	०२:१७:३३:१७	०२:२९:४४:४८	०६:२३:०५:५३	०१:२८:२६:०३	०७:१३:०५:०१	१०:१५:०६:१२	०५:१३:२५:१२	४४:०१:२७	द·११:०३:२२	+१६:३१	२३:००
२४	८ गु	०६:०६:२१:२०	०३:००:४८:५६	०३:००:१०:१९	०६:२४:४१:४८	०१:२८:२२:५६	०७:१४:१७:११	१०:१५:०४:०१	०५:१३:२२:०१	४३:५९:३१	द·११:२५:१२	+१६:४०	२३:५८
२५	९ शु	०६:०७:२१:१९	०३:१३:४९:०१	०३:००:३५:३१	०६:२६:१६:२७	०१:२८:१९:३८	०७:१५:२९:१८	१०:१५:०१:५६	०५:१३:१८:५०	४३:५७:३७	द·११:४६:५१	+१६:४८	२४:५६
२६	१० श	०६:०८:२१:२१	०३:२६:३४:०५	०३:०१:००:२३	०६:२७:४९:४७	०१:२८:१६:०८	०७:१६:४१:२३	१०:१४:५९:५८	०५:१३:१५:३९	४३:५५:४३	द·१२:०८:१९	+१६:५६	२५:५२
२७	१० र	०६:०९:२१:२४	०४:०९:०५:२५	०३:०१:२४:५६	०६:२९:२१:३९	०१:२८:१२:२६	०७:१७:५३:२५	१०:१४:५८:०६	०५:१३:१२:२९	४३:५३:४९	द·१२:२९:३७	+१७:०३	२६:४६
२८	११ चं	०६:१०:२१:२९	०४:२१:२४:६०	०३:०१:४९:०८	०७:००:५१:५९	०१:२८:०८:३३	०७:१९:०५:२४	१०:१४:५६:२०	०५:१३:०९:१८	४३:५१:५७	द·१२:५०:४३	+१७:०९	२७:३९
२९	१२ मं	०६:११:२१:३७	०५:०३:३५:२५	०३:०२:१२:६०	०७:०२:२०:४०	०१:२८:०४:२९	०७:२०:१७:२१	१०:१४:५४:४१	०५:१३:०६:०७	४३:५०:०५	द·१३:११:३७	+१७:१४	२८:३१
३०	१३ बु	०६:१२:२१:४७	०५:१५:३९:४४	०३:०२:३६:३०	०७:०३:४७:३३	०१:२८:००:१३	०७:२१:२९:१४	१०:१४:५३:०८	०५:१३:०२:५६	४३:४८:१४	द·१३:३२:१८	+१७:१९	२९:२३
३१	१४ गु	०६:१३:२१:५८	०५:२७:४१:२१	०३:०२:५९:४०	०७:०५:१२:३२	०१:२७:५५:४६	०७:२२:४१:०५	१०:१४:५१:४१	०५:१२:५९:४५	४३:४६:२४	द·१३:५२:४७	+१७:२२	३०:१६
नवम्बर	३० शु	०६:१४:२२:१२	०६:०९:४४:१५	०३:०३:२२:२७	०७:०६:३५:२७	०१:२७:५१:०९	०७:२३:५२:५२	१०:१४:५०:२१	०५:१२:५६:३४	४३:४४:३४	द·१४:१३:०३	+१७:२५	०७:१०

२१ अक्टूबर सूर्योदयकालीन तिथि:**४**
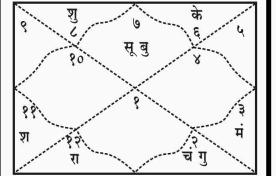
२८ अक्टूबर सूर्योदयकालीन तिथि:**११**

कार्तिक कृष्णपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, १८ अक्टूबर से १ नवम्बर, २०२४ ईस्वी
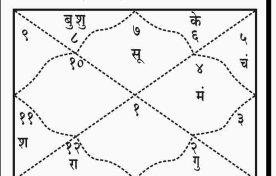
पक्षान्तः– कालः उत्तर । ऋतुः शरद । दक्षिणायनं । याम्यगोलः । ति·३० अयनांशाः २२:५२:६०

दिनाङ्क अक्टूबर	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
१८	१ शु	।
१९	२ श	**भद्रारंभः२३ः१७घं·।**
२०	३ र	**भद्रांतः१०ः१८घं·**, व्यतीपात पुण्यम्, दशरथ चतुर्थी (बंगाल)।
२१	४ चं	विशाखायांबुधःघं·०८ः५७।
२२	५ मं	**भद्रारंभः३०ः११घं·।**
२३	७ बु	**भद्रांतः१७ः५२घं·**, कर्केमङ्गलःघं·२०ः५७।
२४	८ गु	श्रीराधाकुण्ड स्नान (गोवर्धन), प्रथमाष्टमी (उड़ीसा), ①
२५	९ शु	। ① स्वात्यांरविःघं·१४ः०३।
२६	१० श	**भद्रा १८ः३६–३१ः१०घं·, गण्डान्तः६ः४७–१९ः३१**, ज्येष्ठायांशुक्रःघं·६ः१६।
२७	१० र	**भद्रांतः७ः१०घं·**, वृश्चिकेबुधःघं·१६ः५२।
२८	११ चं	।
२९	१२ मं	**धनतेरस**, अनुराधायांबुधःघं·२३ः०६।
३०	१३ बु	**भद्रा १२ः३१–२५ः३५घं·, नरकनिमित्त चौमुखा दीपदान, श्रीहनुमान जयन्ती** (१४ सायंकाले मेषलग्ने) ②
३१	१४ गु	**सायं दीपदान, श्री लक्ष्मी–गणेश–सरस्वती–इन्द्र–कुबेर पूजा, उल्कादान, महाकाली पूजा** निशीथे।
नवम्बर	३० शु	प्रातः अभ्यंग औषध स्नान, पुष्येमङ्गलःघं·०४ः१२। ② कामेश्वरी जयन्ती, श्रीपद्मप्रभ जयन्ती, वैधृति पुण्यम्।

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
१	११ः४८–१३ः१९
३०	११ः४७–१३ः१५

ॐ ❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀ ॐ

दीपावली लक्ष्मीपूजन मुहूर्त्त

३१ अक्टूबर २०२४

ॐ ❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀ ॐ

❀ प्रदोषकाल –
१७ः३९ – २०ः०३

❀ सर्वश्रेष्ठ स्थिर वृष लग्न –
१८ः३६ – २०ः३१

वृष लग्न में सिंह नवांश–
१८ः४६ – १८ः५७

वृष लग्न में वृष नवांश –
१९ः२३ – १९ः३५

❀ रात्रिकालीन सिंह लग्न –
२५ः०६ – २७ः२२

❀ कार्तिक मास कृत्य ❀

कार्तिक मास श्रीकृष्ण भागवान को अत्यधिक प्रिय है। जो गृहस्थ कार्तिक मास में व्रत नहीं करता है, उसके इष्ट–पूर्तादि सब कर्म नाश हो जाते हैं। संन्यासी हो, विधवा हो, अथवा बालक ही क्यों न हो, ये वैष्णव होने पर कार्तिक में व्रत न करें तो वे नरक को अवश्य जाते हैं। अतः कार्तिक में स्नान दान ध्यान आदि नियमपूर्वक अवश्य करें। **कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी** को श्रीधन्वन्तरि भगवान् का पूजन करें। संध्या समय धर्मराज के निमित्त घृत दीपक प्रज्वलित करें। **कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी** को प्रातःकाल तैलाभ्यंग करके स्नान करें तथा रात्रि को दीप दान करें।

❀ **कार्तिक** अमावस्या **दीपावली– उबटन प्रयोग–** चतुर्दशी, अमावस्या या प्रतिपदा में से किसी भी दिन प्रातःकाल में स्वाति नक्षत्र हो तो उबटन अवश्य लगावें, इससे शीतकाल तक स्वास्थ्य बना रहता है (ब्रह्मपुराण)। **सफेद रंग की प्रधानता–** पूजनकर्त्ता को श्वेत वस्त्र व सफेदमाला पहननी चाहिए– *सित वस्त्रोपशोभिना*।। सफेद चूने(सुधा) से दीवाल को लीपना चाहिए– *सुधाधवलिताकार्या पुष्पमालोपशोभिता*। दीपावली को प्रदोषकाल में भगवती लक्ष्मी, इन्द्र एवं कुबेर की पूजा व दीपोत्सव करें। लक्ष्मीपूजन में प्रदोषकाल मुख्य है और अर्धरात्रिकाल गौण है। **लक्ष्मी प्रार्थना मंत्र– नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये। या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात् त्वदर्चनात्।।** निर्णय सिन्धु के अनुसार पहले लक्ष्मी पूजन करे, बाद में दीप दान करे। ***प्रदोषसमये लक्ष्मीं पूजयित्वा ततः क्रमात्। दीप वृक्षाश्च दातव्याः शक्त्या देवगृहेषु च।।*** चौराहे, नदी, पर्वत, वृक्ष, गृह, गोशाला तथा चबूतरा आदि सभी जगहों पर दीप जलाना चाहिए। कमल और पान के पत्ते की माला भगवती लक्ष्मी को अतिशय प्रिय है। लाजा, गुड़, मिष्ठान्न, मेवा, देवी को चढ़ाएं और प्रसाद खाएं। कार्तिक मास में आकाश दीपदान करने वाले को समस्त दानों का फल मधुसूदन देते हैं।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

अक्टूबर	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१८	१७:५१	१९:२७	२१:२३	२३:३७	०१:५७	०४:१३	०६:२९	०८:४७	११:०६	१३:१२	१४:५६	१६:२५
१९	१७:४७	१९:२३	२१:१९	२३:३३	०१:५३	०४:०९	०६:२५	०८:४३	११:०२	१३:०८	१४:५२	१६:२१
२०	१७:४३	१९:१९	२१:१५	२३:२९	०१:४९	०४:०६	०६:२१	०८:३९	१०:५८	१३:०४	१४:४८	१६:१७
२१	१७:३९	१९:१५	२१:११	२३:२५	०१:४५	०४:०२	०६:१७	०८:३६	१०:५४	१३:००	१४:४४	१६:१३
२२	१७:३५	१९:११	२१:०७	२३:२१	०१:४१	०३:५८	०६:१३	०८:३२	१०:५०	१२:५६	१४:४०	१६:०९
२३	१७:३१	१९:०७	२१:०३	२३:१७	०१:३७	०३:५४	०६:०९	०८:२८	१०:४६	१२:५२	१४:३६	१६:०५
२४	१७:२७	१९:०३	२०:५९	२३:१३	०१:३३	०३:५०	०६:०५	०८:२४	१०:४३	१२:४८	१४:३२	१६:०२
२५	१७:२३	१८:५९	२०:५५	२३:०९	०१:२९	०३:४६	०६:०१	०८:२०	१०:३९	१२:४४	१४:२८	१५:५८
२६	१७:२०	१८:५५	२०:५१	२३:०५	०१:२५	०३:४२	०५:५७	०८:१६	१०:३५	१२:४०	१४:२५	१५:५४
२७	१७:१६	१८:५२	२०:४७	२३:०१	०१:२१	०३:३८	०५:५३	०८:१२	१०:३१	१२:३६	१४:२१	१५:५०
२८	१७:१२	१८:४८	२०:४३	२२:५७	०१:१७	०३:३४	०५:४९	०८:०८	१०:२७	१२:३२	१४:१७	१५:४६
२९	१७:०८	१८:४४	२०:३९	२२:५३	०१:१४	०३:३०	०५:४५	०८:०४	१०:२३	१२:२८	१४:१३	१५:४२
३०	१७:०४	१८:४०	२०:३५	२२:४९	०१:१०	०३:२६	०५:४१	०८:००	१०:१९	१२:२४	१४:०९	१५:३८
३१	१७:००	१८:३६	२०:३१	२२:४५	०१:०६	०३:२२	०५:३७	०७:५६	१०:१५	१२:२०	१४:०५	१५:३४
नवम्बर	१६:५६	१८:३२	२०:२७	२२:४१	०१:०२	०३:१८	०५:३३	०७:५२	१०:११	१२:१६	१४:०१	१५:३०

अक्टू·	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
१८	**सर्वार्थ** १५·३६ तक, **सिद्ध** १४·३२ तक
२०	**सिद्ध** १०·१७ तक
२१	**सर्वार्थ** अहोरात्र, **अमृत** ०८·३३ से
२२	**रवियोग** ११·११ से, **अमृत** ०७·०९ से,
२३	**सिद्ध** २९·३९ तक, **रवियोग** १०·५७ तक
२४	**सर्वार्थ** अहोरात्र, **अमृत** २९·३९ से ①
२५	**अमृत** ३०·०९ तक ① **गुरुपुष्य योग** ११·११ से
१८	**सर्वार्थ** १५·३६ तक, **सिद्ध** १४·३२ तक
२०	**सिद्ध** १०·१७ तक
२७	**अमृत** ०७·०९ तक
२८	**सिद्ध** ०८·३७ तक, **दग्ध·तिथि·१२** ०८·३७ से
२९	**अमृत–त्रिपुष्कर** १०·२७ तक, **सिद्ध** १०·२७ से ②
३०	**सर्वार्थ** २१·५७ से ② **दग्ध·तिथि·१२** १०·२७ तक
३१	**सिद्ध** १४·३९ से
१	**सिद्ध** १६·४१ से

❀ **दीपावली का समय–** दीपावली में दीपप्रदीपन और लक्ष्मीपूजा के तीन काल महत्वपूर्ण हैं – प्रदोषकाल, वृष और सिंह लग्न। सूर्यास्त के एक घण्टा बारह मिनट बाद तक प्रदोषकाल श्रेष्ठ होता है। इसके तत्काल बाद वृषलग्न होता है और सिंहलग्न प्रायः ढलती रात में आता है।

❀ **पूजन सामग्री–** धूप, गोघृतदीप, नैवेद्य,ऋतुफल, वस्त्र, रोली, मिष्ठान्न, लाजा, पंचामृत, बिल्व पत्र, कमल, कनेर, जाती, चम्पा, जूही, मालती, पारिजात पुष्प, तुलसी आदि।

❀ **हवन–** दीपावली की रात्रि में आम, बेल, अनार की लकड़ी पर खीर, बेलफल, लाजा,कमलगट्टा, लोंग, इलायची, कमलपुष्प से हवन करने का अमोघ फल होता है। **श्रीसूक्त के मन्त्रों का पाठ–हवन चमत्कारी होता है।** बिल्ववृक्ष के **मूल** में बैठकर जो श्रीसूक्त का जप करता है एक वर्ष के भीतर सुखी, धनाढ्य, प्रभावशाली हो जाता है। **“श्रीम्”** एकाक्षर मन्त्र का जप हवनकर्ता समृद्ध, दानदाता हो जाता है।

कार्तिक शुक्लपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, २ नवम्बर से १५ नवम्बर, २०२४ ईस्वी

ग्रहस्थितिः २:११:२०२४– वक्री गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः, वक्री शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, मार्गी बुधःपश्चिमोदितः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	✠ व्रत–पर्व–उत्सव ✠
नवम्बर	वार	घ.प.	घं:मि	नक्षत्र	घ.प.	घं:मि	योग	घ.प.	घं:मि	क१	घ.प.	क२	घ.प.	घ.प.	घं:मि	घं:मि	राशि घ.प.	घं:मि	योग	नवम्बर	२ नवम्बर से १५ नवम्बर, २०२४
२	१ श	२९:२८	१८.२७	विशा.	५६:०९	२९.०७	आयु.	१२:३३	११.४१	बव	२९:२८	बाल	६०:००	२७:२५	६:४०	१७:३८	वृश्.३९:५४	२२.३७	शुभ	२	**श्रीगोवर्धन पूजा, अन्नकूटमहोत्सव, गौ क्रीडा,** मार्गपाली
३	२ र	३२:५५	१९.५०	अनु.	६०:००	अहोरात्र	सौभा.	१२:४०	११.४५	बाल	०१:१९	कौल	३२:५५	२७:२१	६:४०	१७:३७	वृश्चिक	अहोरात्र	मृत्यु	३	**भ्रातृ द्वितीया, भैया दूज, यम द्वितीया,** चित्रगुप्त पूजा
४	३ चं	३५:११	१८.४६	अनु.	००:२५	०६.५१	शोभ.	११:५७	११.२८	तैति	०४:११	गर	३५:११	२७:१८	६:४१	१७:३६	वृश्चिक	अहोरात्र	मानस	४	
५	४ मं	३६:१३	२१.११	ज्ये.	०३:३३	०८.०७	अतिग.	१०:१७	१०.४९	वणि	०५:५१	विष	३६:१३	२७:१४	६:४२	१७:३६	ध.०३:३३	०८.०७	मुद्गर	५	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी,** छठ व्रतारम्भ नहाय खाय (बिहार)
६	५ बु	३५:५६	२१.०५	मूल	०५:२७	०८.५३	सुकर्मा	०७:३८	०९.४६	बव	०६:१३	बाल	३५:५६	२७:११	६:४३	१७:३५	धनु	अहोरात्र	ध्वज	६	**लाभ पंचमी,** श्रीसूर्यषष्ठी छठ व्रत द्वितीयदिन (खरना)
७	६ गु	३४:२६	२०.३०	पू.षा.	०६:०६	०९.१०	धृति शूल	०३:५८ ५५:२३	०८.१९ २८:५२	कौल	०५:१९	तैति	३४:२६	२७:०७	६:४३	१७:३४	म.२१:०५	१५.०९	धाता	७	श्रीसूर्यषष्ठी छठ व्रतम् (सायंकालीन अर्घ्यदान)
८	७ शु	३१:४७	१९.२७	उ.षा.	०५:३५	०८.५८	गण्ड	५३:५७	२८.१९	गर	०३:१३	वणि	३१:४७	२७:०४	६:४४	१७:३४	मकर	अहोरात्र	कालदंड	८	अरुणोदये द्वितीयअर्घ्यदान, श्रीसूर्यषष्ठी छठ व्रतपारणा
९	८ श	२८:०८	१८.००	श्रवण	०४:०१	०८.२१	वृद्धि	४७:४६	२५.५१	विष	००:०३	बव	२८:०८	२७:०१	६:४५	१७:३३	कुं.३२:५५	१९.५५	प्रवर्द्ध	९	**श्रीगोपाष्टमी, दुर्गाष्टमी**
१०	९ र	२३:३९	१६.१३	धनि. शत	०१:३५ ५६:५१	०७.२३ २९:३०	ध्रुव	४०:५७	२३.०८	कौल	२३:३९	तैति	५१:१०	२६:५७	६:४६	१७:३३	कुंभ	अहोरात्र	मातङ्ग	१०	**अक्षय नवमी, श्रीआँवला नवमी,** जगधात्री पूजा (बंगाल)
११	१० चं	१८:३०	१४.१०	पू.भा.	५४:४३	२८.३९	व्याघ.	३३:३८	२०.१३	गर	१८:३०	वणि	४५:४६	२६:५४	६:४६	१७:३२	मी.४०:४०	२३.०२	मुसल	११	
१२	११ मं	१२:५३	११.५६	उ.भा.	५०:३९	२७.०३	हर्षण	२५:५९	१७.११	विष	१२:५३	बव	३९:५९	२६:५१	६:४७	१७:३२	मीन	अहोरात्र	सिद्धि	१२	**श्रीदेवप्रबोधिनी एकादशी (सर्वेषाम्)**
१३	१२ बु	०६:५९	०९.३५	रेवती	४६:२६	२५.२२	वज्र	१८:०८	१४.०३	बाल	०६:५९	कौल	३४:००	२६:४८	६:४८	१७:३१	मे.४६:२६	२५.२२	उत्पात	१३	**प्रदोष व्रतम्,** चातुर्मास्य व्रत समाप्तिः, गरुड़ द्वादशी
१४	१३ गु १४ गु	००:६० ५४:११	०७.१३ २८:२९	अश्वि.	४२:१८	२३.४४	सिद्धि	१०:१५	१०.५५	तैति	००:६०	गर	२८:०४	२६:४४	६:४९	१७:३१	मेष	अहोरात्र	मानस	१४	**श्रीवैकुण्ठचतुर्दशी व्रतम्,** श्रीराधावल्लभजी पाटोत्सव (वृन्दावन)
१५	१५ शु	४९:४०	२६.४१	भरणी	३८:२८	२२.१२	व्यति. वरी	०२:३१ ५२:३४	०७.५० २७:५१	विष	२२:२२	बव	४९:४०	२६:४१	६:४९	१७:३०	वृ.५२:३४	२७.५१	मुद्गर	१५	**कार्तिक पूर्णिमा (स्नान–दान), देव दीपावली, पूर्णिमा व्रतम्**

✻ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ✻

दिनाङ्क नवम्बर	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	वक्री गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः (मा/व) रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
२	१ श	०६:१५:२२:२८	०६:२१:५२:०३	०३:०३:४४:५२	०७:०७:५६:११	०१:२७:४६:२१	०७:२५:०४:३७	१०:१४:४९:०७	०५:१२:५३:२४	४३:४२:४६	द.१४:३३:०५	+१७:२७	०७:११
३	२ र	०६:१६:२२:४५	०७:०४:०७:५७	०३:०४:०६:५४	०७:०९:१४:३४	०१:२७:४१:२२	०७:२६:१६:१८	१०:१४:४७:६०	०५:१२:५०:१३	४३:४०:५८	द.१४:५२:५४	+१७:२९	०८:०६
४	३ चं	०६:१७:२३:०५	०७:१६:३४:४२	०३:०४:२८:३३	०७:१०:३०:२४	०१:२७:३६:१३	०७:२७:२७:५५	१०:१४:४६:५९	०५:१२:४७:०२	४३:३९:११	द.१५:१२:२७	+१७:२९	०९:०१
५	४ मं	०६:१८:२३:२६	०७:२९:१४:३२	०३:०४:४९:४८	०७:११:४३:३३	०१:२७:३०:५४	०७:२८:३९:२९	१०:१४:४६:०६	०५:१२:४३:५१	४३:३७:२६	द.१५:३१:४६	+१७:२८	०९:५७
६	५ बु	०६:१९:२३:५०	०८:१२:०८:५९	०३:०५:१०:३९	०७:१२:५३:४८	०१:२७:२५:२५	०७:२९:५०:६०	१०:१४:४५:१८	०५:१२:४०:४०	४३:३५:४१	द.१५:५०:५०	+१७:२७	१०:५१
७	६ गु	०६:२०:२४:१५	०८:२५:१८:५३	०३:०५:३१:०६	०७:१४:००:५६	०१:२७:१९:४७	०८:०१:०२:२६	१०:१४:४४:३८	०५:१२:३७:२९	४३:३३:५८	द.१६:०९:३८	+१७:२५	११:४१
८	७ शु	०६:२१:२४:४२	०९:०८:४४:१७	०३:०५:५१:०७	०७:१५:०४:४६	०१:२७:१३:५९	०८:०२:१३:४९	१०:१४:४४:०४	०५:१२:३४:१९	४३:३२:१६	द.१६:२८:१०	+१७:२१	१२:३०
९	८ श	०६:२२:२५:११	०९:२२:२४:२८	०३:०६:१०:४३	०७:१६:०५:०४	०१:२७:०८:०२	०८:०३:२५:०८	१०:१४:४३:३७	०५:१२:३१:०८	४३:३०:३५	द.१६:४६:२५	+१७:१७	१३:१३
१०	९ र	०६:२३:२५:४२	१०:०६:१७:५८	०३:०६:२९:५२	०७:१७:०१:३४	०१:२७:०१:५५	०८:०४:३६:२३	मार्गी १४:४३:१६	०५:१२:२७:५७	४३:२८:५५	द.१७:०४:२३	+१७:१२	१३:५५
११	१० चं	०६:२४:२६:१५	१०:२०:२२:४०	०३:०६:४८:३५	०७:१७:५४:०३	०१:२६:५५:४०	०८:०५:४७:३४	१०:१४:४३:०३	०५:१२:२४:४६	४३:२७:१६	द.१७:२२:०४	+१७:०७	१४:३३
१२	११ मं	०६:२५:२६:५०	११:०४:३५:५१	०३:०७:०६:५१	०७:१८:४२:१४	०१:२६:४९:१७	०८:०६:५८:४०	१०:१४:४२:५६	०५:१२:२१:३५	४३:२५:३९	द.१७:३९:२७	+१६:००	१५:१२
१३	१२ बु	०६:२६:२७:२६	११:१८:५४:२३	०३:०७:२४:३९	०७:१९:२५:५२	०१:२६:४२:४६	०८:०८:०९:४२	१०:१४:४२:५५	०५:१२:१८:२४	४३:२४:०४	द.१७:५६:३१	+१६:५२	१५:५०
१४	१३ गु	०६:२७:२८:०४	००:०३:१४:४४	०३:०७:४१:५९	०७:२०:०४:४१	०१:२६:३६:०६	०८:०९:२०:३९	१०:१४:४३:०२	०५:१२:१५:१४	४३:२२:२९	द.१८:१३:१७	+१६:४४	१६:३०
१५	१५ शु	०६:२८:२८:४३	००:१७:३२:५५	०३:०७:५८:५०	०७:२०:३८:२३	०१:२६:२९:१९	०८:१०:३१:३२	१०:१४:४३:१५	०५:१२:१२:०३	४३:२०:५७	द.१८:२९:४४	+१६:३४	१७:१५

५ नवम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः४
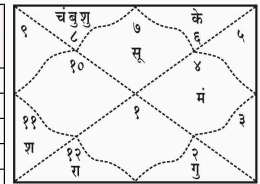
१२ नवम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः११

कार्तिक शुक्लपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, २ नवम्बर से १५ नवम्बर, २०२४ ईस्वी

पक्षान्तः– कालः उत्तर । ऋतुः शरद । दक्षिणायनं ।
याम्यगोलः । ति·१५ अयनांशाः २२:५३:०२

दिनाङ्क नवम्बर	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
२	१ श	**बलिराज पूजा**, जैन नवसंवत् २५५१ आरम्भः।
३	२ र	**कलमदान पूजा**, विश्वकर्मा पूजा, यमुना स्नान।
४	३ चं	**गण्डान्तारम्भः२५:५२।**
५	४ मं	**भद्रा ९:०३–२१:११घं·, गण्डान्तः१४:२२।** (१) मूलेधनुषिशुक्रः घं·०९:५२।
६	५ बु	सौभाग्यपञ्चमी, पाण्डव पंचमी, ज्ञान पंचमी (जैन), विशाखायांरविः घं·२१:०६, (१)
७	६ गु	**अभिजितारम्भः२७:०३**, कल्पादि।
८	७ शु	**अभिजितान्तः१०:३२, भद्रारंभः१९:२७घं·**, श्रीकार्तवीर्यसहस्रार्जुन जयन्ती।
९	८ श	**पंचकारंभः१९:५५, भद्रांतः६:४६घं·**, रंगनाथ जयन्ती, ज्येष्ठायांबुधः घं·२१:३३।
१०	९ र	**पंचक**, कृतयुगादि, कूष्माण्ड नवमी, मार्गी शनिः घं·२६:०२।
११	१० चं	**पंचक, भद्रारंभः२५:०५घं·।**
१२	११ मं	**पंचक, भद्रांतः११:५७घं·, श्रीतुलसी विवाह, भीष्मपंचक आरम्भ।**
१३	१२ बु	**पंचकान्तः२५:२३, गण्डान्तारम्भः१९:४८**, मन्वादि, हरिवासराभाव। (२) चौमासी चौदस जैन।
१४	१३ गु	**भद्रारंभः२८:५३घं·, गण्डान्तः६:५८**, श्रीकाशी विश्वनाथ प्रतिष्ठादिवस, **त्रिपुरोत्सव** (२)
१५	१५ शु	**भद्रांतः१५:४६घं·, सत्यनारायण पूर्णिमा, आद्य श्रीमद्भगवन् निम्बार्काचार्य जयन्ती, भीष्मपंचक समाप्त, कार्तिकेय जयन्ती**, कार्तिक स्नान समाप्तिः, व्यतीपात पुण्यम्, मन्वादि, गुरुनानक जयन्ती।

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	११:४७–१३:१५
१५	११:४९–१३:१४

❀ कार्तिक मास कृत्य ❀

❀ **यमद्वितीया–** कार्तिक शुक्ल द्वितीया के दिन यमद्वितीया होती है। आज के दिन यमुना जी में स्नान कर यम का पूजन करने से यमलोक का दर्शन नहीं होता है। आज बहन का सत्कार करना चाहिए।

❀ **सूर्यषष्ठी (छठ व्रत)–** षष्ठी तिथि में सायं सूर्यार्घ्य दान तथा सप्तमी तिथि में उदित सूर्य को अर्घ्य दान देकर पारणा की जाती है। यह व्रत त्रिदिनात्मक होता है। बिहार में यह प्रमुख पर्व है।

❀ **कार्तिक शुक्ल नवमी –** धात्री नवमी को आंवला वृक्ष की छाया में बैठकर भोजन करे, आंवला वृक्षारोपण करे। ''पीपल और आंवले को अगल बगल लगावे, बड़े हो जाने पर पीपल से धात्री का विवाह करे। इससे वही पुण्य होता है जो श्री तुलसी शालग्राम विवाह कराने का होता है।''–व्रतराज

❀ **कार्तिक शुक्ल प्रबोधिनी एकादशी–** रात्रि में स्नानादि करके शयन करते हुए भगवान् श्रीहरि का अभिषेक कर, नृत्य–गीत–वाद्य और पुरुषसूक्त व विष्णुस्तोत्रों से भगवान् को जगावे। **उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविंद उत्तिष्ठ गरुडध्वज। उत्तिष्ठ कमलाकान्त त्रैलोक्यं मंगलं कुरु।।** आज श्रीविष्णु एवं तुलसीजी का विवाह सम्पन्न करे।

❀ **भीष्मपंचक (पचभीकम) –** यह व्रत प्रबोधिनी एकादशी से पूर्णिमा तक होता है। गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्यादि से लक्ष्मीनारायण का पूजन करके पाँच दिन तक निराहार, फलाहार, एकभुक्त, या नक्त व्रत करे। पूजन में सामान्य पूजा के सिवा– पहले दिन भगवान् के हृदय का कमल पुष्पों से, दूसरे दिन कटिप्रदेश का बिल्वपत्रों से, तीसरे दिन घुटनों का केतकी (केवड़े) पुष्पों से, चौथे दिन चरणों का चमेली पुष्पों से और पाँचवें दिन सम्पूर्ण अंग का तुलसी की मंजरियों से पूजन करे। नित्यप्रति *'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'* के सौ, हजार या यथाशक्ति जप करे और व्रतान्त में पारणा के समय ब्राह्मणदम्पति को भोजन कराकर स्वयं भोजन करे।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

नवम्बर	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२	१६:५२	१८:२८	२०:२३	२२:३८	००:५८	०३:१४	०५:२९	०७:४८	१०:०७	१२:१२	१३:५७	१५:२६
३	१६:४८	१८:२४	२०:१९	२२:३४	००:५४	०३:१०	०५:२५	०७:४४	१०:०३	१२:०८	१३:५३	१५:२२
४	१६:४४	१८:२०	२०:१५	२२:३०	००:५०	०३:०६	०५:२१	०७:४०	०९:५९	१२:०४	१३:४९	१५:१८
५	१६:४०	१८:१६	२०:११	२२:२६	००:४६	०३:०२	०५:१७	०७:३६	०९:५५	१२:००	१३:४५	१५:१४
६	१६:३६	१८:१२	२०:०८	२२:२२	००:४२	०२:५८	०५:१३	०७:३२	०९:५१	११:५६	१३:४१	१५:१०
७	१६:३२	१८:०८	२०:०४	२२:१८	००:३८	०२:५४	०५:०९	०७:२८	०९:४७	११:५२	१३:३७	१५:०६
८	१६:२८	१८:०४	२०:००	२२:१४	००:३४	०२:५०	०५:०५	०७:२४	०९:४३	११:४९	१३:३३	१५:०२
९	१६:२४	१८:००	१९:५६	२२:१०	००:३०	०२:४७	०५:०१	०७:२०	०९:३९	११:४५	१३:२९	१४:५८
१०	१६:२०	१७:५६	१९:५२	२२:०६	००:२६	०२:४३	०४:५८	०७:१६	०९:३५	११:४१	१३:२५	१४:५४
११	१६:१६	१७:५२	१९:४८	२२:०२	००:२२	०२:३९	०४:५४	०७:१२	०९:३१	११:३७	१३:२१	१४:५०
१२	१६:१२	१७:४८	१९:४४	२१:५८	००:१८	०२:३५	०४:५०	०७:०८	०९:२७	११:३३	१३:१७	१४:४६
१३	१६:०८	१७:४४	१९:४०	२१:५४	००:१४	०२:३१	०४:४६	०७:०४	०९:२३	११:२९	१३:१३	१४:४२
१४	१६:०४	१७:४०	१९:३६	२१:५०	००:१०	०२:२७	०४:४२	०७:००	०९:१९	११:२५	१३:०९	१४:३८
१५	१६:००	१७:३६	१९:३२	२१:४६	००:०६	०२:२३	०४:३८	०६:५६	०९:१५	११:२१	१३:०५	१४:३४

नवम्बर	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
२	**अमृत** १८·२७ तक, **त्रिपुष्कर** १८·२७ से २९·०७ तक
३	**सिद्ध** १९·५० से
५	**रवियोग** ०८·०७ तक
६	**रवियोग** ०८·५३ से, **अमृत** २१·०५ से
७	**रवियोग** ०९·१० से
८	**रवियोग** ०८·५८ तक, **सर्वार्थ** ०८·५८ से
९	**सर्वार्थ** ०८·२१ तक, **सिद्ध** १८·०० से
१०	**रवियोग** ०७·२३ से, **अमृत** १६·१३ से, **रवियोग** ०७·२३ से
११	**अमृत** १४·१० तक, **रवियोग** २८·३९ तक, **सिद्ध** १४·१० से
१२	**सर्वार्थ** २७·०३ तक, **अमृत** २७·०३ से, **दग्ध·तिथि·१२**
१३	**सिद्ध** ०९·३५ तक, **रवियोग** २५·२२ से, **दग्ध·तिथि·१२**
१४	**सर्वार्थ–रवियोग** २३·४४ तक, **अमृत** ०७·१३ तक **सिद्ध** ०७·१३ से
१५	**सिद्ध** २६·४१ से

जो पाप आदि अपकर्म से तार दे उसे तीर्थ कहते हैं– तारयति पापादिकेभ्यः। जहाँ जाने, दर्शन करने से लौकिक–पारलौकिक दुःखोंसे मुक्ति मिलती हो उसे तीर्थ कहते हैं। गुरु, ऋषि की तप–स्थली, जल–प्रवाह और पवित्र क्षेत्र का सम्मिलन तीर्थ कहलाता है। भक्त, गुरु, माता–पिता, पति–पत्नी यह छह भी तीर्थ हैं। गुरु ज्ञान मूर्ति होने से तीर्थ होते हैं।

तीर्थ भेद– तपस्वी ब्राह्मण चलता फिरता जंगम तीर्थ है। पवित्र भाव मानस तीर्थ हैं। पृथ्वी पर विद्यमान पूज्यस्थल भौम तीर्थ हैं।

तीर्थ यात्रा का फल– भगवान परशुराम जी ने अपने तेज हरण के बाद तीर्थ यात्रा कर पुनः सभी लोकों को प्राप्त कर लिया।

तीर्थ यात्रा तप है पिकनिक नहीं– बिना जूता चप्पल पहने पैदल, उपवास पूर्वक, स्नान करके तीर्थदर्शन से अपूर्व फल की प्राप्ति होती है। तीर्थ में किया पाप वज्रलेप हो जाता है।

मार्गशीर्ष कृष्णपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, १६ नवम्बर से १ दिसम्बर, २०२४ ईस्वी

ग्रहस्थितिः १६:११:२०२४– वक्री गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः, मार्गी शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, मार्गी बुधःपश्चिमोदितः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
नवम्बर	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	नवम्बर	१६ नवम्बर से १ दिसम्बर, २०२४
१६	१ श	४४:४१	२४·४३	कृत्ति·	३५:०५	२०·५२	परिघ	४८:०४	२६·०४	बाल	१७:०५	कौल	४४:४१	२६:३८	६:५०	१७:३०	वृष	अहोरात्र	ध्वज	१६	कार्तिकमास व्रत पारणा
१७	२ र	४०:२६	२३·०१	रोहि·	३२:२४	१९·४९	शिव	४१:३८	२३·३०	तैति	१२:२७	गर	४०:२६	२६:३५	६:५१	१७:२९	वृष	अहोरात्र	धाता	१७	अशून्य शयन व्रत
१८	३ चं	३७:०२	२१·४१	मृग·	३०:३३	१९·०५	सिद्ध	३५:५४	२१·१३	वणि	०८:३६	विष	३७:०२	२६:३२	६:५२	१७:२९	मि·०१:२१	०७·२४	आनन्द	१८	संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय घं·१९:५४
१९	४ मं	३४:४२	२०·४५	आर्द्रा	२९:४२	१८·४५	साध्य	३०:५८	१९·१६	बव	०५:४३	बाल	३४:४२	२६:३०	६:५३	१७:२९	मिथुन	अहोरात्र	सुस्थिर	१९	
२०	५ बु	३३:३२	२०·१८	पुन·	२९:६०	१८·५३	शुभ	२६:५८	१७·४१	कौल	०३:५७	तैति	३३:३२	२६:२७	६:५३	१७:२८	क·१४:४८	१२·४९	गद	२०	सुविधानाथ जयन्ती, दीक्षा दिवस (जैन)
२१	६ गु	३३:३७	२०·२१	पुष्य	३१:३०	१९·३०	शुक्ल	२३:५६	१६·२८	गर	०३:२४	वणि	३३:३७	२६:२४	६:५४	१७:२८	कर्क	अहोरात्र	शुभ	२१	
२२	७ शु	३५:०१	२०·५५	आश्ले·	३४:१५	२०·३७	ब्रह्म	२१:५४	१५·४०	विष	०४:०९	बव	३५:०१	२६:२१	६:५५	१७:२८	सिं·३४:१५	२०·३७	मृत्यु	२२	
२३	८ श	३७:४०	२२·००	मघा	३८:१३	२२·१३	ऐन्द्र	२०:४९	१५·१५	बाल	०६:११	कौल	३७:४०	२६:१९	६:५६	१७:२७	सिंह	अहोरात्र	पद्म	२३	श्रीकालभैरवाष्टमी, श्री कालाष्टमी
२४	९ र	४१:२६	२३·३१	पू·फा·	४३:१५	२४·१४	वैधृ·	२०:३८	१५·१२	तैति	०९:२५	गर	४१:२६	२६:१६	६:५६	१७:२७	कं·५९:४०	३०·४८	छत्र	२४	श्री जम्भेश्वर पुण्य दिवस (विश्नोई)
२५	१० चं	४६:०७	२५·२४	उ·फा·	४९:०८	२६·३६	विष्कु·	२१:११	१५·२६	वणि	१३:४१	विष	४६:०७	२६:१४	६:५७	१७:२७	कन्या	अहोरात्र	श्रीवत्स	२५	महावीर स्वामी तपकल्याणक दिवस (जैन)
२६	११ मं	५१:२२	२७·३१	हस्त	५५:३२	२९·११	प्रीति	२२:१५	१५·५२	बव	१८:४१	बाल	५१:२२	२६:११	६:५८	१७:२७	कन्या	अहोरात्र	सौम्य	२६	श्रीउत्पन्ना एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त)
२७	१२ बु	५६:४६	२९·४१	चित्रा	६०:००	अहोरात्र	आयु·	२३:३५	१६·२५	कौल	२४:०४	तैति	५६:४६	२६:०९	६:५९	१७:२७	तु·२८:४८	३०·३०	कालदंड	२७	श्रीउत्पन्ना एकादशी (निम्बार्क)
२८	१३ गु	६०:००	अहोरात्र	चित्रा	०२:०२	०७·४९	सौभा·	२४:५२	१६·५६	गर	२९:२३	वणि	६०:००	२६:०७	७:००	१७:२७	तुला	अहोरात्र	सुस्थिर	२८	प्रदोष व्रतम्
२९	१३ शु	०१:५१	०७·४५	स्वाती	०८:१५	१०·१८	शोभ·	२५:४७	१७·१९	वणि	०१:५१	विष	३४:११	२६:०४	७:००	१७:२६	वृश्·५७:२९	३०·०१	गद	२९	मासशिवरात्रि व्रतम्
३०	१४ श	०६:१८	०९·३२	विशा·	१३:४७	१२·३२	अतिग·	२६:०७	१७·२८	शकु	०६:१८	चतु	३८:१०	२६:०२	७:०१	१७:२६	वृश्चिक	अहोरात्र	शुभ	३०	अमावस्या (पितृकार्य)
दिसम्बर	३० र	०९:४५	१०·५६	अनु·	१८:२०	१४·२२	सुकर्मा	२५:३८	१७·१७	नाग	०९:४५	किं	४१:०२	२६:००	७:०२	१७:२६	वृश्चिक	अहोरात्र	मृत्यु	दिसम्बर	अमावस्या (देवकार्य)

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः (मा/व)	वक्री गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
नवम्बर	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
१६	१ श	०६:२९:२९:२५	०१:०१:४५:२५	०३:०८:१५:१२	०७:२१:०६:४५	०१:२६:२२:२५	०८:११:४२:२०	१०:१४:४३:३५	०५:१२:०८:५२	४३:१९:२५	द·१८:४५:५२	+१६:२४	१८:००
१७	२ र	०७:००:३०:०८	०१:१५:४९:०८	०३:०८:३१:०३	०७:२१:२९:३०	०१:२६:१५:२३	०८:१२:५३:०२	१०:१४:४४:०२	०५:१२:०५:४१	४३:१७:५६	द·१९:०१:३९	+१६:१२	१८:५४
१८	३ च	०७:०१:३०:५२	०१:२९:४१:२६	०३:०८:४६:२५	०७:२१:४६:२४	०१:२६:०८:१५	०८:१४:०३:४०	१०:१४:४४:३६	०५:१२:०२:३०	४३:१६:२८	द·१९:१७:०७	+१६:००	१९:४७
१९	४ म	०७:०२:३१:३८	०२:१३:२०:१३	०३:०९:०१:१५	०७:२१:५७:१७	०१:२६:०१:००	०८:१५:१४:१२	१०:१४:४५:१६	०५:११:५९:१९	४३:१५:०२	द·१९:३२:१३	+१५:४७	२०:४८
२०	५ बु	०७:०३:३२:२६	०२:२६:४४:०८	०३:०९:१५:३४	वक्री२२:०१:५७	०१:२५:५३:४०	०८:१६:२४:३८	१०:१४:४६:०३	०५:११:५६:०९	४३:१३:३७	द·१९:४६:५९	+१५:३३	२१:४६
२१	६ गु	०७:०४:३३:१५	०३:०९:५२:३०	०३:०९:२९:२१	०७:२२:००:१७	०१:२५:४६:१३	०८:१७:३४:५९	१०:१४:४६:५७	०५:११:५२:५८	४३:१२:१५	द·२०:०१:२२	+१५:१९	२२:४५
२२	७ शु	०७:०५:३४:०६	०३:२२:४५:२८	०३:०९:४२:३४	०७:२१:५२:१७	०१:२५:३८:४१	०८:१८:४५:१५	१०:१४:४७:५८	०५:११:४९:४७	४३:१०:५४	द·२०:१५:२४	+१५:०३	२३:४२
२३	८ श	०७:०६:३४:५८	०४:०५:२३:५५	०३:०९:५५:१५	०७:२१:३७:५७	०१:२५:३१:०४	०८:१९:५५:२४	१०:१४:४९:०५	०५:११:४६:३६	४३:०९:३५	द·२०:२९:०४	+१४:४६	२४:३८
२४	९ र	०७:०७:३५:५२	०४:१७:४९:२८	०३:१०:०७:२२	०७:२१:१७:२८	०१:२५:२३:२२	०८:२१:०५:२७	१०:१४:५०:१९	०५:११:४३:२५	४३:०८:१९	द·२०:४२:२१	+१४:२९	२५:३१
२५	१० च	०७:०८:३६:४७	०५:००:०४:२२	०३:१०:१८:५४	०७:२०:५१:०२	०१:२५:१५:३६	०८:२२:१५:२३	१०:१४:५१:३९	०५:११:४०:१५	४३:०७:०४	द·२०:५५:१५	+१४:११	२६:२४
२६	११ मं	०७:०९:३७:४४	०५:१२:११:२७	०३:१०:२९:५१	०७:२०:१९:०४	०१:२५:०७:४६	०८:२३:२५:१३	१०:१४:५३:०७	०५:११:३७:०४	४३:०५:५२	द·२१:०७:४६	+१३:५२	२७:१६
२७	१२ बु	०७:१०:३८:४२	०५:२४:१३:५७	०३:१०:४०:१२	०७:१९:४२:०४	०१:२४:५९:५२	०८:२४:३४:५६	१०:१४:५४:४०	०५:११:३३:५३	४३:०४:४१	द·२१:१९:५२	+१३:३२	२८:०९
२८	१३ गु	०७:११:३९:४१	०६:०६:१५:३१	०३:१०:४९:५७	०७:१९:००:३८	०१:२४:५१:५४	०८:२५:४४:३२	१०:१४:५६:२१	०५:११:३०:४२	४३:०३:३३	द·२१:३१:३५	+१३:१२	२९:०३
२९	१३ शु	०७:१२:४०:४१	०६:१८:२०:०६	०३:१०:५९:०५	०७:१८:१५:३३	०१:२४:४३:५४	०८:२६:५४:०१	१०:१४:५८:०८	०५:११:२७:३१	४३:०२:२७	द·२१:४२:५३	+१२:५०	२९:५७
३०	१४ श	०७:१३:४१:४३	०७:००:३१:०४	०३:११:०७:३६	०७:१७:२७:४१	०१:२४:३५:५१	०८:२८:०३:२३	१०:१५:००:०१	०५:११:२४:२१	४३:०१:२४	द·२१:५३:४७	+१२:२८	३०:५२
दिसम्बर	३० र	०७:१४:४२:४६	०७:१२:५१:२७	०३:११:१५:२८	०७:१६:३७:५८	०१:२४:२७:४६	०८:२९:१२:३७	१०:१५:०२:०१	०५:११:२१:१०	४३:००:२२	द·२२:०४:१५	+१२:०५	०७:४८

१९ नवम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः४

२६ नवम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः११
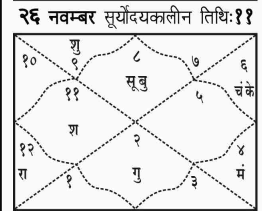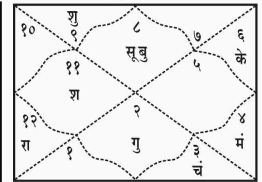
मार्गशीर्ष कृष्णपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, १६ नवम्बर से १ दिसम्बर, २०२४ ईस्वी

पक्षान्तः– कालः पूर्व । ऋतुः शरद वृश्चिकार्कतः ऋतुः हेमन्त । दक्षिणायनं । याम्यगोलः । ति·३० अयनांशाः २२:५३:४

दिनाङ्क नवम्बर	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
१६	१ श	**संक्रान्ति पुण्यकालं १२:१०–१७:३०घं·**, वृश्चिकेरविः घं·१८:५७।
१७	२ र	पूर्वाषाढ़ेशुक्रः घं·१६:०८।
१८	३ चं	**भद्रा १०:१९–२१:४१घं·**, सौभाग्य सुन्दरी व्रत।
१९	४ मं	।
२०	५ बु	वक्रीःबुधः घं·१८:३९, अनुराधायांरविः घं·०२:००।
२१	६ गु	**भद्रारंभ:२०:२२घं·।**
२२	७ शु	**भद्रांत:८:३५घं·, गण्डान्त:१४:१८–२६:५९।**
२३	८ श	।
२४	९ र	अनलानवमी (उड़ीसा), अन्वष्टका श्राद्ध, वैधृति पुण्यम्।
२५	१० चं	**भद्रा १२:२६–२५:२५घं·**, वक्रःबुधः२९:२२।
२६	११ मं	।
२७	१२ बु	।
२८	१३ गु	**भद्रारंभ:३१:४५घं·।**
२९	१३ शु	**भद्रा ७:४६–२०:४२घं·**, उत्तराषाढ़ेशुक्रः घं·०२:१५।
३०	१४ श	।
दिसम्बर	३० र	अनुराधायांबुधः घं·०६:०९, मकरेशुक्रः घं·२३:३५।

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
१	११:४९–१३:१४
३०	११:५४–१३:१७

❋ मार्गशीर्ष मास कृत्य ❋

इसके नाम से ही सिद्ध होता है कि यह मासों में शीर्ष पर स्थित होने के कारण अग्रणी एवं महत्त्वपूर्ण है। ***तत्रादौ मार्गशीर्षे तु प्रभातस्नानपूर्वकम्। पूजयेद्राधिकाकृष्णौ भक्त्या परमया सुधीः।। (वाराहपुराण)*** मार्गशीर्ष मास में प्रभातकाल में स्नानादिपूर्वक परम अनन्य भक्ति के साथ श्रीराधाकृष्ण की समर्चना करें।

❋ आठ–महाद्वादशी ❋

उन्मीलिनी, वञ्जुलिनी, त्रिस्पर्शा, पक्षवर्धिनी, जया, विजया, जयन्ती और पापनाशिनी ये आठ महाद्वादशियां पुण्यप्रद हैं और सम्पूर्ण पापों को हरण करने वाली हैं। *उन्मीलिनी वञ्जुलिनी त्रिस्पर्शा पक्षवर्द्धिनी। जया च विजया चैव जयन्ती पापनाशिनी।। द्वादश्योऽष्टौ महापुण्याः सर्वपापहरा द्विज।। (ब्रह्मवैवर्त)* इनका योग जानने का क्रम निम्नप्रकार से हैं –

१.जैसे एकादशी पूर्ण हो दूसरे दिन भी कुछ एकादशी हो, तो वह महाद्वादशी **'उन्मीलिनी'** कहलाती है।
२.एकादशी तथा द्वादशी सम्पूर्ण हो और फिर त्रयोदशी को भी कुछ अवशिष्ट हो, तो **'वञ्जुलिनी'** महाद्वादशी होती है।
३.प्रातःकाल एकादशी हो फिर द्वादशी का क्षय होकर रात्रि शेष में त्रयोदशी हो, तो वह महाद्वादशी **'त्रिस्पर्शा'** होती है।
४.अमावस्या या पूर्णिमा तिथि यदि दो हो जाय तो वह महाद्वादशी **'पक्षवर्द्धिनी'** नाम से कही जाती है।
५.किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी यदि पुनर्वसु नक्षत्र से युक्त हो तो वह **'जया'** नाम महाद्वादशी होती है।
६.किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी यदि श्रवण नक्षत्र से युक्त हो तो वह **'विजया'** नाम की महाद्वादशी होती है।
७.किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी रोहिणी नक्षत्र से युक्त हो, तो वह **'जयन्ती'** नाम की महाद्वादशी कहलाती है।
८.किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी पुष्य नक्षत्र से युक्त हो तो वह **'पापनाशिनी'** महाद्वादशी कहलाती है।

अतः इन आठों महाद्वादशियों में से किसी का भी योग आ जावे तो शुद्धा वेध रहित एकादशी को भी छोड़कर महाद्वादशी में व्रत करना चाहिये।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

नवम्बर	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१६	१५:५६	१७:३२	१९:२८	२१:४२	००:०२	०२:१९	०४:३४	०६:५३	०९:११	११:१७	१३:०१	१४:३१
१७	१५:५२	१७:२८	१९:२४	२१:३८	२३:५८	०२:१५	०४:३०	०६:४९	०९:०७	११:१३	१२:५७	१४:२७
१८	१५:४९	१७:२५	१९:२०	२१:३४	२३:५५	०२:११	०४:२६	०६:४५	०९:०४	११:०९	१२:५३	१४:२३
१९	१५:४५	१७:२१	१९:१६	२१:३०	२३:५१	०२:०७	०४:२२	०६:४१	०९:००	११:०५	१२:५०	१४:१९
२०	१५:४१	१७:१७	१९:१२	२१:२६	२३:४७	०२:०३	०४:१८	०६:३७	०८:५६	११:०१	१२:४६	१४:१५
२१	१५:३७	१७:१३	१९:०८	२१:२२	२३:४३	०१:५९	०४:१४	०६:३३	०८:५२	१०:५७	१२:४२	१४:११
२२	१५:३३	१७:०९	१९:०४	२१:१९	२३:३९	०१:५५	०४:१०	०६:२९	०८:४८	१०:५३	१२:३८	१४:०७
२३	१५:२९	१७:०५	१९:००	२१:१५	२३:३५	०१:५१	०४:०६	०६:२५	०८:४४	१०:४९	१२:३४	१४:०३
२४	१५:२५	१७:०१	१८:५६	२१:११	२३:३१	०१:४७	०४:०२	०६:२१	०८:४०	१०:४५	१२:३०	१३:५९
२५	१५:२१	१६:५७	१८:५२	२१:०७	२३:२७	०१:४३	०३:५८	०६:१७	०८:३६	१०:४१	१२:२६	१३:५५
२६	१५:१७	१६:५३	१८:४८	२१:०३	२३:२३	०१:३९	०३:५४	०६:१३	०८:३२	१०:३७	१२:२२	१३:५१
२७	१५:१३	१६:४९	१८:४५	२०:५९	२३:१९	०१:३५	०३:५०	०६:०९	०८:२८	१०:३३	१२:१८	१३:४७
२८	१५:०९	१६:४५	१८:४१	२०:५५	२३:१५	०१:३२	०३:४७	०६:०५	०८:२४	१०:२९	१२:१४	१३:४३
२९	१५:०५	१६:४१	१८:३७	२०:५१	२३:११	०१:२८	०३:४३	०६:०१	०८:२०	१०:२५	१२:१०	१३:३९
३०	१५:०१	१६:३७	१८:३३	२०:४७	२३:०७	०१:२४	०३:३९	०५:५८	०८:१६	१०:२१	१२:०६	१३:३५
दिसम्बर	१४:५७	१६:३३	१८:२९	२०:४३	२३:०३	०१:२०	०३:३५	०५:५४	०८:१२	१०:१८	१२:०२	१३:३१

नव·	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
१६	**अमृत** २४·४३ तक, **सर्वार्थ** २०·५२ से
१७	**द्विपुष्कर** १९·४९ से २३·११ तक, **सिद्ध** २३·०१ से
१८	**सर्वार्थ** १९·०५ तक
२०	**अमृत** २०·१८ से ① **गुरुपुष्य योग** १९·३० तक
२१	**सर्वार्थ** १९·३० तक, **रवियोग** १९·३० से ①
२२	**रवियोग** २०·३७ तक
२३	**सिद्ध** २२·०० से
२४	**सर्वार्थ** २४·१४ से, **अमृत** २३·३१ से
२५	**अमृत** २५·२४ तक, **सिद्ध** २५·२४ से, **दग्ध·तिथि·१०**
२६	**अमृत** २७·३१ से, **द्विपुष्कर** २९·११ से
२७	**सिद्ध** २९·४१ तक
२८	**अमृत** अहोरात्र
२९	**अमृत** ०७·४५ से
३०	**सिद्ध** ०९·३२ तक
१	**अमृत** १०·५६ तक

❋ **व्रत के भेद–** व्रत के तीन भेद होते हैं, १· एकभुक्त व्रत, २·नक्तव्रत और ३·अयाचितव्रत।

❋ **एकभुक्त व्रत–** में रात्रि में उपवास कर दूसरे दिन दोपहर बाद पारणा करते हैं– *मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्या एकभुक्ते सदा तिथिः।*

❋ **नक्तव्रत–** दिन में उपवास रहकर रात्रि में पारणा करते हैं। इसमें प्रदोष में पारणा की जाती है– *प्रदोष व्यापिनी ग्राह्या तिथिः नक्तव्रते सदा।*

❋ **अयाचित व्रत–** बिना मांगे जो कुछ मिल जाये उसे खाकर रहना, न मिले तो नहीं खाना अयाचित व्रत कहलाता है। दूसरों से प्राप्त व्रत भी अयाचित कहलाता है। इसमें केवल उपवास होता है पूजन गौण होता है।

❋ **व्रत निषेध–** अधिक मास, क्षय मास, गुरु, शुक्र के अस्त होने पर नया व्रत आरम्भ नहीं करते हैं न ही उद्यापन करते हैं।

❋ **व्रत में ग्राह्य–** सावा, नीवार, सिंघाड़ा, तिल, कंद, आलू, केला, नारियल, हरड़, पिपली, आवंला, गन्ना रस हमेशा व्रत में ग्राह्य होता है।

मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, २ दिसम्बर से १५ दिसम्बर, २०२४ ईस्वी

ग्रहस्थितिः २:१२:२०२४– वक्री गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः, मार्गी शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, वक्री बुधःपश्चिमास्तः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	ᗢ व्रत–पर्व–उत्सव ᗢ
दिसम्बर	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	दिसम्बर	२ दिसम्बर से १५ दिसम्बर, २०२४
२	१ चं	१२:०१	११·५१	ज्ये·	२१:४६	१५·४५	धृति	२४:१४	१६·४५	बव	१२:०१	बाल	४२:४२	२५:५८	७:०३	१७:२६	ध·२१:४६	१५·४५	पद्म	२	भैरव षट्रात्र उत्सव आरम्भ (महाराष्ट्र)
३	२ मं	१३:०२	१२·१६	मूल	२३:५८	१६·३९	शूल	२१:५२	१५·४८	कौल	१३:०२	तैति	४३:०३	२५:५६	७:०४	१७:२६	धनु	अहोरात्र	छत्र	३	
४	३ बु	१२:४४	१२·१०	पू·षा·	२४:५४	१७·०२	गण्ड	१८:३०	१४·२८	गर	१२:४४	वणि	४२:०८	२५:५५	७:०४	१७:२६	कुं·३९:५७	२३·०३	श्रीवत्स	४	**रम्भा तृतीया**
५	४ गु	११:१३	११·३४	उ·षा·	२४:४०	१६·५७	वृद्धि	१४:१०	१२·४५	विष	११:१३	बव	४०:०१	२५:५३	७:०५	१७:२७	मकर	अहोरात्र	सौम्य	५	**अंगारकी वैनायकी गणेश चतुर्थी**
६	५ शु	०८:३३	१०·३१	श्रवण	२३:२१	१६·२६	ध्रुव	०८:५७	१०·४१	बाल	०८:३३	कौल	३६:५१	२५:५१	७:०६	१७:२७	कुं·५२:२०	२८·०२	धूम्र	६	**विवाह पञ्चमी, श्री सीताराम विवाहोत्सव, श्री स्कन्दषष्ठी**
७	६ श	०४:५५	०९·०४	धनि·	२१:०७	१५·३३	व्याघ· हर्षण	०२:५८ ५३:२२	०८·१८ २८:२८	तैति	०४:५५	गर	३२:४६	२५:५०	७:०७	१७:२७	कुंभ	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	७	चम्पा षष्ठी, अन्नपूर्णा व्रतारम्भ
८	७ र ८ र	००:२६ ५४:५३	०७·१८ २९:०४	शत·	१८:०६	१४·२२	वज्र	४९:०८	२६·४७	वणि	००:२६	विष	२७:५७	२५:४८	७:०७	१७:२७	कुंभ	अहोरात्र	राक्षस	८	**श्री दुर्गाष्टमी**, विष्णुसप्तमी, त्रितयसप्तमी, नन्दासप्तमी
९	९ चं	४९:४४	२७·०२	पू·भा·	१४:३०	१२·५६	सिद्धि	४१:३४	२३·४६	बाल	२२:३४	कौल	४९:४४	२५:४७	७:०८	१७:२७	मी·००:२७	०७·१९	मुसल	९	महानन्दा नवमी, कल्पादि
१०	१० मं	४३:५३	२४·४२	उ·भा·	१०:३१	११·२१	व्यति·	३३:४४	२०·३९	तैति	१६:४९	गर	४३:५३	२५:४६	७:०९	१७:२७	मीन	अहोरात्र	सिद्धि	१०	व्यतीपात पुण्यम्
११	११ बु	३७:५७	२२·२०	रेवती	०६:२०	०९·४२	वरी·	२५:५०	१७·३०	वणि	१०:५४	विष	३७:५७	२५:४५	७:१०	१७:२८	मे·०६:२०	०९·४२	उत्पात	११	**श्री मोक्षदा एकादशी (वैष्णव,स्मार्त्त) ,श्री गीता जयन्ती**
१२	१२ गु	३२:११	२०·०३	अश्वि· भरणी	०२:११ ५६:०६	०८·०३ २९:३६	परिघ	१८:००	१४·२२	बव	०५:०२	बाल	३२:११	२५:४३	७:१०	१७:२८	मेष	अहोरात्र	मानस	१२	**श्री मोक्षदा एकादशी (निम्बार्क), व्यञ्जन द्वादशी**
१३	१३ शु	२६:४६	१७·४३	कृत्ति·	५४:४८	२९·०६	शिव	१०:२६	११·२१	तैति	२६:४६	गर	५४:१५	२५:४३	७:११	१७:२८	वृ·१२:२२	१२·०८	छत्र	१३	**प्रदोष व्रतम्**
१४	१४ श	२१:५४	१५·५७	रोहि·	५१:५८	२७·५९	सिद्ध साध्य	०३:१४ ५३:२१	०८·२९ २८:३२	वणि	२१:५४	विष	४९:४३	२५:४२	७:१२	१७:२८	वृष	अहोरात्र	श्रीवत्स	१४	**पूर्णिमा (व्रत), श्री दत्तात्रेय जयन्ती (प्रदोषे)**
१५	१५ र	१७:४५	१४·१८	मृग·	४९:५६	२७·११	शुभ	५०:३५	२७·२६	बव	१७:४५	बाल	४६:०१	२५:४१	७:१२	१७:२९	मि·२०:५०	१५·३२	सौम्य	१५	**पूर्णिमा (स्नान–दान)**, श्री त्रिपुरभैरवी जयन्ती

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क दिसम्बर	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः (मा/व) रा अं क वि	वक्री गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
२	१ चं	०७:१५:४३:५०	०७:२५:२३:४६	०३:११:२२:४२	०७:१५:४७:२६	०१:२४:१९:३८	०९:००:२१:४३	१०:१५:०४:०८	०५:११:१७:५९	४२:५९:२४	द·२२:१४:१८	+११:४२	०७:४९
३	२ मं	०७:१६:४४:५५	०८:०८:०९:५७	०३:११:२९:१७	०७:१४:५७:१९	०१:२४:११:३०	०९:०१:३०:४०	१०:१५:०६:२०	०५:११:१४:४८	४२:५८:२७	द·२२:२३:५५	+११:१८	०८:४४
४	३ बु	०७:१७:४६:०२	०८:२१:११:१३	०३:११:३५:१२	०७:१४:०८:४२	०१:२४:०३:२०	०९:०२:३९:३०	१०:१५:०८:४०	०५:११:११:३७	४२:५७:३४	द·२२:३३:०६	+१०:५३	०९:३४
५	४ गु	०७:१८:४७:१०	०९:०४:२८:०१	०३:११:४०:२६	०७:१३:२२:३४	०१:२३:५५:०९	०९:०३:४८:१०	१०:१५:११:०५	०५:११:०८:२७	४२:५६:४२	द·२२:४१:५१	+१०:२७	१०:२६
६	५ शु	०७:१९:४८:१८	०९:१८:००:०५	०३:११:४४:६०	०७:१२:३९:४८	०१:२३:४६:५८	०९:०४:५६:४२	१०:१५:१३:३७	०५:११:०५:१६	४२:५५:५४	द·२२:५०:०९	+१०:०१	११:०९
७	६ श	०७:२०:४९:२८	१०:०१:४६:२१	०३:११:४८:५२	०७:१२:०१:१२	०१:२३:३८:४७	०९:०६:०५:०५	१०:१५:१६:१५	०५:११:०२:०५	४२:५५:०८	द·२२:५७:६०	+ ९:३५	११:५२
८	७ र	०७:२१:५०:३९	१०:१५:४५:०१	०३:११:५२:०२	०७:११:२७:२६	०१:२३:३०:३६	०९:०७:१३:१८	१०:१५:१८:५९	०५:१०:५८:५४	४२:५४:२५	द·२३:०५:२४	+ ९:०७	१२:३१
९	९ चं	०७:२२:५१:५१	१०:२९:५३:४३	०३:११:५४:३०	०७:१०:५९:०४	०१:२३:२२:२६	०९:०८:२१:२१	१०:१५:२१:५०	०५:१०:५५:४३	४२:५३:४४	द·२३:१२:२१	+ ८:४०	१३:०९
१०	१० मं	०७:२३:५३:०३	११:१४:०९:३१	०३:११:५६:१५	०७:१०:३६:३०	०१:२३:१४:१५	०९:०९:२९:१४	१०:१५:२४:४६	०५:१०:५२:३३	४२:५३:०६	द·२३:१८:५०	+ ८:१२	१४:२६
११	११ बु	०७:२४:५४:१७	११:२८:२९:०७	०३:११:५७:१६	०७:१०:२०:०२	०१:२३:०६:०४	०९:१०:३६:५७	१०:१५:२७:४९	०५:१०:४९:२२	४२:५२:३२	द·२३:२४:५१	+ ७:४३	१४:२६
१२	१२ गु	०७:२५:५५:३२	००:१२:४८:४२	०३:११:५७:३४	मार्गी१०:०९:५०	०१:२२:५७:५३	०९:११:४४:२९	१०:१५:३०:५७	०५:१०:४६:११	४२:५२:००	द·२३:३०:२५	+ ७:१४	१५:०९
१३	१३ शु	०७:२६:५६:४७	००:२७:०४:२८	०३:११:५७:०७	०७:१०:०६:००	०१:२२:४९:४२	०९:१२:५१:५०	१०:१५:३४:१२	०५:१०:४३:००	४२:५१:३०	द·२३:३५:३०	+ ६:४४	१५:५४
१४	१४ श	०७:२७:५८:०४	०१:११:१३:०६	०३:११:५५:५५	०७:१०:०८:३१	०१:२२:४१:३२	०९:१३:५८:५९	१०:१५:३७:३२	०५:१०:३९:५०	४२:५१:०४	द·२३:४०:०७	+ ६:१४	१६:४५
१५	१५ र	०७:२८:५९:२१	०१:२५:११:४१	०३:११:५३:५८	०७:१०:१७:१७	०१:२२:३३:२३	०९:१५:०५:५५	१०:१५:४०:५८	०५:१०:३६:३९	४२:५०:४१	द·२३:४४:१५	+ ५:४४	१७:३९

५ दिसम्बर सूर्योदयकालीन तिथि:४

११ दिसम्बर सूर्योदयकालीन तिथि:११

मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, २ दिसम्बर से १५ दिसम्बर, २०२४ ईस्वी

पक्षान्तः– कालः पूर्व । ऋतुः हेमन्त । दक्षिणायनं ।
याम्यगोलः । ति·१५ अयनांशाः २२:५३:६

दिनाङ्क दिसम्बर	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
२	१ चं	**गण्डान्तः९:२८–२२:०२**, भगवान् पुष्पदन्त जन्म व तप कल्याणक।
३	२ मं	ज्येष्ठायांरविः घं·०५:०९।
४	३ बु	**भद्रारंभः२३:५६घं·**।
५	४ गु	**भद्रांतः११:३५घं·, अभिजितः११:०१–१८:३२**, गुरुतेगबहादुर पु·दि·।
६	५ शु	**पंचकारंभः२८:०२**, श्रीबिहारीजी प्राकट्योत्सव वृंदावन।
७	६ श	**पंचक**, श्रीमार्तण्ड भैरवोत्थापन (महाराष्ट्र)।
८	७ र	**पंचक, भद्रा ७:१८–१८:१९घं·**, मित्रसप्तमी, रोहिण्यांगुरुः घं·१८:५६।
९	९ चं	**पंचक**।
१०	१० मं	**पंचक, गण्डान्तारम्भः२८:०७**, श्रवणायांशुक्रः घं·१८:०७।
११	११ बु	**पंचकान्तः९:४२, भद्रा ११:३२–२२:२१घं·, गण्डान्तः१५:१७**।
१२	१२ गु	**श्रीदेवर्षि नारद जयन्ती, मत्स्यद्वादशी**, अखण्डद्वादशी, मार्गी बुधः घं·२८:२४।
१३	१३ शु	
१४	१४ श	**भद्रा १५:५८–२७:०६घं·**, संभवनाथ जयन्ती।
१५	१५ र	**मार्गशीर्ष श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा**, श्री अन्नपूर्णा जयन्ती।

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
१	११:५४–१३:१७
१५	१२:००–१३:२३

❀ वारों में करणीय अनुकूल कार्य ❀

❀ **रविवार** को राज्याभिषेक, उत्सव, वाहन क्रय–विक्रय, सेवा नौकरी, गो, अग्नि, मन्त्र से सम्बन्धित कर्म, औषध, शास्त्र, स्वर्ण, ताँबा, ऊन, चमड़ा, काष्ठ, युद्ध और व्यापारादि से सम्बन्धित कार्य करना चाहिए। चित्रकला, धातुकला, आभूषण निर्माण, बाजार सम्बन्धी कार्य भी रविवार को होता है।

❀ **सोमवार** को शंख, कमल, मोती, चाँदी, ईख, भोजन सम्बन्धी कार्य, स्त्री, वृक्ष, कृषि–कर्म, जल, आभूषण, गीत, यज्ञ, दुग्ध, पुष्प, विद्यारम्भ, वास्तुकर्म, नृत्यारम्भ आदि कार्य करना चाहिए।

❀ **मंगलवार** को भेद नीति, झूठ, चोरी, आरोप, जहर, अग्नि, शस्त्र, बंधन, अभिघात, युद्ध, कपट, दंभ, सैन्यकर्म, खनिज कर्म, स्वर्ण, धातु, मूँगा, रक्त एवं लाल वस्तु से सम्बन्धित कार्य किया जाता है।

❀ **बुधवार** को विद्या, चातुर्य, पुण्य, कल्प, शिल्पविद्या, नौकरी, लेखन लिपि, धातुकर्म, स्वर्ण, युक्ति, मित्रता, व्यायाम, वाद विवाद, गणितविद्या, वेदाध्ययन, नैपुण्य कर्म आदि से सम्बन्धित कार्य करना चाहिए।

❀ **गुरूवार** को धार्मिक, पौष्टिक, यंत्र, विद्या, मांगल्य सुवर्ण, वस्त्र, घर, यात्रा, रथ, घोड़ा, औषध, आभूषण, उद्यान सम्बन्धित व शुभकार्य करना चाहिए।

❀ **शुक्रवार** को स्त्री, संगीत, शय्या, मणि, रत्न, गंध, वस्त्र, उत्सव, अलंकार, भूमि, व्यापार, गौ, द्रव्य, कोष, कृषि, हीरा, मोती, चाँदी, सुगन्ध, उद्यान, पुष्प, रचनात्मक, अश्वकर्म आदि अनेक शुभ कार्य किये जाते हैं।

❀ **शनिवार** को लोहा, पत्थर, जस्ता, शीशा, पीतल, नौकर, शस्त्र, झूठ, पाप, चोरी, विष, निंद्यकर्म, शराब, निर्माणादि, वाहन क्रय, गृहप्रवेश, दीक्षा, स्थिर कर्म, गदहा, ऊँट, तुलादान, शनि सम्बन्धित कार्य किया जाता है।

❀ बाल दृष्टि (नजर) दोष निवारण ❀

छोटे, सुकुमार, सुन्दर, सजे, हंसमुख और वाचाल बच्चों पर दृष्टि (नजर) दोष लग जाने से वे बीमार हो जाते हैं, या रुदन करने लगते हैं।

दृष्टिदोष उतारने की भस्मधारण विधि–
हवन के भस्म या पवित्राग्नि भस्म को अभिमंत्रित कर बच्चे के शिर, ललाट, हृदय आदि अंगों पर लगाना चाहिए। मंत्र यह है–

वासुदेवो जगन्नाथः पूतना तर्जनो हरिः।
रक्षतु त्वरितो बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ।१।
कृष्ण रक्ष शिशुं शंख–मधु–कैटभमर्दन।
प्रातः संगव–मध्याह्न–सायांह्नेषु संध्ययोः ।२।
महानिशि सदा रक्ष कंसारिष्टनिषूदन।
पद्मोरगपिशाचांश्च ग्रहान्मातृग्रहान्नपि ।३।
बालग्रहान् विशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान्।
त्राहि–त्राहि हरे! नित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम् ।४।

दृष्टिदोष उतारने की यन्त्रधारण विधि–
भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही या लाल स्याही से निम्न मंत्र को लिखकर उसे धूप–दीप दिखाकर बालक के बाहुमूल में बाँधने से नजर दूर होता है।

रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर ।
ग्रहैस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ।।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

दिसम्बर	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
२	१४:५३	१६:२९	१८:२५	२०:३९	२२:५९	०१:१६	०३:३१	०५:५०	०८:०८	१०:१४	११:५८	१३:२७
३	१४:४९	१६:२५	१८:२१	२०:३५	२२:५५	०१:१२	०३:२७	०५:४६	०८:०४	१०:१०	११:५४	१३:२३
४	१४:४५	१६:२१	१८:१७	२०:३१	२२:५१	०१:०८	०३:२३	०५:४२	०८:००	१०:०६	११:५०	१३:१९
५	१४:४१	१६:१७	१८:१३	२०:२७	२२:४७	०१:०४	०३:१९	०५:३८	०७:५६	१०:०२	११:४६	१३:१५
६	१४:३७	१६:१३	१८:०९	२०:२३	२२:४३	०१:००	०३:१५	०५:३४	०७:५२	०९:५८	११:४२	१३:१२
७	१४:३४	१६:०९	१८:०५	२०:१९	२२:४०	००:५६	०३:११	०५:३०	०७:४८	०९:५४	११:३८	१३:०८
८	१४:३०	१६:०६	१८:०१	२०:१५	२२:३६	००:५२	०३:०७	०५:२६	०७:४४	०९:५०	११:३४	१३:०४
९	१४:२६	१६:०२	१७:५७	२०:११	२२:३२	००:४८	०३:०३	०५:२२	०७:४१	०९:४६	११:३१	१३:००
१०	१४:२२	१५:५८	१७:५३	२०:०८	२२:२८	००:४४	०२:५९	०५:१८	०७:३७	०९:४२	११:२७	१२:५६
११	१४:१८	१५:५४	१७:४९	२०:०४	२२:२४	००:४०	०२:५५	०५:१४	०७:३३	०९:३८	११:२३	१२:५२
१२	१४:१४	१५:५०	१७:४५	२०:००	२२:२०	००:३६	०२:५१	०५:१०	०७:२९	०९:३४	११:१९	१२:४८
१३	१४:१०	१५:४६	१७:४१	१९:५६	२२:१६	००:३२	०२:४७	०५:०६	०७:२५	०९:३०	११:१५	१२:४४
१४	१४:०६	१५:४२	१७:३७	१९:५२	२२:१२	००:२८	०२:४३	०५:०२	०७:२१	०९:२६	११:११	१२:४०
१५	१४:०२	१५:३८	१७:३४	१९:४८	२२:०८	००:२५	०२:४०	०४:५८	०७:१७	०९:२२	११:०७	१२:३६

दिसम्बर	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, अमृत, रवि आदि योग 卐
२	**सिद्ध** ११·५१ तक
३	**अमृत** १२·१६ तक, **सिद्ध** १२·१६ से
४	**रवियोग** १७·०२ से
५	**रवियोग** १६·५७ तक, **सिद्ध** ११·३४ से
६	**सर्वार्थ** १६·२६ तक, **सिद्ध** १०·३१ से, **रवियोग** १६·२६ से
७	**अमृत** ०९·०४ तक, **रवियोग** १५·३३ तक, **द्विपुष्कर** ०९·०४–१५·३३
८	**सिद्ध** ०७·१८ से
९	**रवियोग** १२·५६ से, **अमृत** २७·०२ से
१०	**सर्वार्थ** ११·२१ तक, **रवियोग** अहोरात्र, **दग्ध·तिथि·१०** २४·४२ तक
११	**अमृत** २२·२० तक, **रवियोग** ०९·४२ तक, **सिद्ध** २२·२० से
१२	**सर्वार्थ** ०८·०३ तक, **अमृत** २०·०३ से, **रवियोग** ०८·०३ से
१३	**रवियोग** २९·०३ तक, **अमृत** १७·४३ से
१४	**सर्वार्थ** २७·५९ तक, **सिद्ध** १५·५७ तक
१५	**अमृत** १४·१८ तक

श्रीकृष्ण ने गीताजी में कहा है कि "*मासानां मार्गशीर्षोऽहं*" अतः यह माह अत्यंत पवित्र है। मार्गशीर्ष में यत्नपूर्वक तुलसी के पवित्र वन में जाकर परम भक्ति से भगवान् श्रीविष्णु की पूजा करें।

श्रीमोक्षदा एकादशी एवं **श्रीगीता जयन्ती** मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी के दिन कुरुक्षेत्र में भगवान् ने अर्जुन को युद्धकाल में मोह होने पर श्रीगीताजी का उपदेश किया। मार्गशीर्ष शुक्ल द्वादशी **श्रीव्यंजन द्वादशी** कहलाती है, विभिन्न व्यञ्जनों का श्रीठाकुर जी को भोग लगावें। इसी दिन कल्पभेद से **श्रीनारद जयन्ती** होती है, भक्ति–ज्ञान–वैराग्य आदि समस्त साधनों का समस्त लोकों में घूम–घूमकर प्रचार करने वाले कीर्तनकला विशेषज्ञ देवर्षिवर्य श्रीनारद जी सभी जीवों पर समान भाव रखते हुए सबका हितचिन्तन किया करते हैं।

पौष कृष्णपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, १६ दिसम्बर से ३० दिसम्बर, २०२४ ईस्वी

ग्रहस्थितिः १६:१२:२०२४– वक्री गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः, मार्गी शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, मार्गी बुधःपूर्वोदितः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	व्रत–पर्व–उत्सव
दिसम्बर	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	दिसम्बर	१६ दिसम्बर से ३० दिसम्बर, २०२४
१६	१ चं	१४:३०	१३·०१	आर्द्रा	४८:५१	२६·४५	शुक्ल	४५:२२	२५·२२	कौल	१४:३०	तैति	४३:१६	२५:४०	७:१३	१७:२९	मिथुन	अहोरात्र	कालदंड	१६	श्रीरसिकमाधुरी जयन्ती, **धनु मलमास प्रारम्भ**
१७	२ मं	१२:१९	१२·०९	पुन·	४८:५३	२६·४७	ब्रह्म	४१:०२	२३·३८	गर	१२:१९	वणि	४१:४०	२५:४०	७:१४	१७:३०	क·३३:४६	२०·४४	प्रवर्द्ध	१७	
१८	३ बु	११:१९	११·४६	पुष्य	५०:०७	२७·१७	ऐन्द्र	३७:३९	२२·१८	विष	११:१९	बव	४१:१७	२५:३९	७:१४	१७:३०	कर्क	अहोरात्र	मातङ्ग	१८	**संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय घं·२०:३५**
१९	४ गु	११:३५	११·५३	आश्ले·	५२:३७	२८·१८	वैधृ·	३५:१५	२१·२१	बाल	११:३५	कौल	४२:१२	२५:३९	७:१५	१७:३०	सिं·५२:३७	२८·१८	अमृत	१९	वैधृति पुण्यम्
२०	५ शु	१३:०९	१२·३१	मघा	५६:२०	२९·४७	विष्कु·	३३:५१	२०·४८	तैति	१३:०९	गर	४४:२४	२५:३८	७:१५	१७:३१	सिंह	अहोरात्र	काण	२०	
२१	६ श	१५:५७	१३·३९	पू·फा·	६०:००	अहोरात्र	प्रीति	३३:२१	२०·३६	वणि	१५:५७	विष	४७:४८	२५:३८	७:१६	१७:३१	सिंह	अहोरात्र	लुम्ब	२१	
२२	७ र	१९:५३	१५·१४	पू·फा·	०१:०९	०७·४४	आयु·	३३:४०	२०·४४	बव	१९:५३	बाल	५२:१२	२५:३८	७:१६	१७:३२	कं·१७:३०	१४·१७	छत्र	२२	**श्रीकालाष्टमी**
२३	८ चं	२४:४१	१७·१०	उ·फा·	०६:५३	१०·०२	सौभा·	३४:३४	२१·०७	कौल	२४:४१	तैति	५७:१९	२५:३८	७:१७	१७:३२	कन्या	अहोरात्र	श्रीवत्स	२३	
२४	९ मं	३०:०२	१९·१८	हस्त	१३:१३	१२·३५	शोभ·	३५:५०	२१·३७	गर	३०:०२	वणि	६०:००	२५:३८	७:१७	१७:३३	तु·४६:३०	२५·४३	सौम्य	२४	अष्टका श्राद्ध
२५	१० बु	३५:३०	२१·३०	चित्रा	१९:४६	१५·१३	अतिग·	३७:०९	२२·१०	वणि	०२:४७	विष	३५:३०	२५:३९	७:१८	१७:३४	तुला	अहोरात्र	कालदंड	२५	**श्रीपार्श्वनाथ जन्मकल्याणक जयन्ती (जैन)**
२६	११ गु	४०:३७	२३·३३	स्वाती	२६:०७	१७·४५	सुकर्मा	३८:१३	२२·३६	बव	०८:०८	बाल	४०:३७	२५:३९	७:१८	१७:३४	तुला	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	२६	**श्रीसफला एकादशी (सर्वेषाम्)**
२७	१२ शु	४५:०२	२५·२०	विशा·	३१:५१	२०·०३	धृति	३८:४६	२२·४९	कौल	१२:५६	तैति	४५:०२	२५:३९	७:१९	१७:३५	वृश्·१५:२९	१३·३१	मातङ्ग	२७	सुरूपा द्वादशी (गुजरात)
२८	१३ श	४८:२७	२६·४२	अनु·	३६:४१	२२·०१	शूल	३८:३४	२२·४५	गर	१६:५३	वणि	४८:२७	२५:४०	७:१९	१७:३५	वृश्चिक	अहोरात्र	अमृत	२८	**शनि प्रदोष व्रतम्**
२९	१४ र	५०:४०	२७·३६	ज्ये·	४०:२४	२३·२९	गण्ड	३७:२९	२२·१९	विष	१९:४३	बव	५०:४०	२५:४१	७:२०	१७:३६	ध·४०:२४	२३·२९	काण	२९	**मासशिवरात्रि व्रतम्**
३०	३० चं	५१:३६	२७·५९	मूल	४२:५४	२४·३०	वृद्धि	३५:२७	२१·३१	चतु	२१:१८	नाग	५१:३६	२५:४१	७:२०	१७:३७	धनु	अहोरात्र	लुम्ब	३०	**अमावस्या (देव–पितृकार्य), सोमवती**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः (मा/व)	बुधः	वक्री गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
दिसम्बर	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
१६	१ च	०८:००:००:३९	०२:०८:५७:५०	०३:११:५१:१६	०७:१०:३२:१०	०१:२२:२५:१६	०९:१६:१२:३९	१०:१५:४४:३१	०५:१०:३३:२८	४२:५०:२१	द·२३:४७:५४	+ ५:१३	१८:३६
१७	२ म	०८:०१:०१:५७	०२:२२:२९:४६	०३:११:४७:४८	०७:१०:५२:५९	०१:२२:१७:११	०९:१७:१९:०९	१०:१५:४८:०८	०५:१०:३०:१७	४२:५०:०३	द·२३:५१:०५	+ ४:४३	१९:३६
१८	३ बु	०८:०२:०३:१७	०३:०५:४६:२५	०३:११:४३:३४	०७:११:१९:२९	०१:२२:०९:०८	०९:१८:२५:२५	१०:१५:५१:५२	०५:१०:२७:०७	४२:४९:४९	द·२३:५३:४७	+ ४:१२	२०:३५
१९	४ गु	०८:०३:०४:३७	०३:१८:४७:३१	०३:११:३८:३४	०७:११:५१:२७	०१:२२:०१:०७	०९:१९:३१:२८	१०:१५:५५:४१	०५:१०:२३:५६	४२:४९:३७	द·२३:५६:००	+ ३:४०	२१:३३
२०	५ शु	०८:०४:०५:५८	०४:०१:३३:३२	०३:११:३२:४७	०७:१२:२८:३७	०१:२१:५३:०९	०९:२०:३७:१५	१०:१५:५९:३६	०५:१०:२०:४५	४२:४९:२९	द·२३:५७:४४	+ ३:०९	२२:२९
२१	६ श	०८:०५:०७:१९	०४:१४:०५:४०	०३:११:२६:१४	०७:१३:१०:४१	०१:२१:४५:१५	०९:२१:४२:४८	१०:१६:०३:३६	०५:१०:१७:३४	४२:४९:२४	द·२३:५८:५८	+ २:३७	२३:२३
२२	७ र	०८:०६:०८:४१	०४:२६:२५:५१	०३:११:१८:५४	०७:१३:५७:२६	०१:२१:३७:२५	०९:२२:४८:०५	१०:१६:०७:४२	०५:१०:१४:२३	४२:४९:२२	द·२३:५९:४४	+ २:०६	२४:१६
२३	८ च	०८:०७:१०:०४	०५:०८:३६:३६	०३:११:१०:४७	०७:१४:४८:३३	०१:२१:२९:३८	०९:२३:५३:०७	१०:१६:११:५३	०५:१०:११:१३	४२:४९:२२	द·२३:५९:६०	+ १:३४	२५:०९
२४	९ म	०८:०८:११:२७	०५:२०:४०:५७	०३:११:०१:५३	०७:१५:४३:४८	०१:२१:२१:५६	०९:२४:५७:५१	१०:१६:१६:०९	०५:१०:०८:०२	४२:४९:२६	द·२३:५९:४७	+ १:०२	२६:०१
२५	१० बु	०८:०९:१२:५०	०६:०२:४२:१६	०३:१०:५२:१३	०७:१६:४२:५६	०१:२१:१४:१९	०९:२६:०२:१९	१०:१६:२०:३०	०५:१०:०४:५१	४२:४९:३३	द·२३:५९:०४	+ ०:३०	२६:५५
२६	११ गु	०८:१०:१४:१४	०६:१४:४४:२९	०३:१०:४१:४७	०७:१७:४५:४२	०१:२१:०६:४६	०९:२७:०६:२९	१०:१६:२४:५७	०५:१०:०१:४१	४२:४९:४३	द·२३:५७:५३	– ०:०२	२७:४९
२७	१२ शु	०८:११:१५:३९	०६:२६:५१:१७	वक्री १०:३०:३५	०७:१८:५१:५२	०१:२०:५९:१९	०९:२८:१०:२१	१०:१६:२९:२९	०५:०९:५८:३०	४२:४९:५६	द·२३:५६:१२	– ०:३३	२८:४५
२८	१३ श	०८:१२:१७:०३	०७:०९:०५:५२	०३:१०:१८:३६	०७:२०:०१:१२	०१:२०:५१:५८	०९:२९:१३:५५	१०:१६:३४:०६	०५:०९:५५:१९	४२:५०:१२	द·२३:५४:०२	– १:०५	२९:३९
२९	१४ र	०८:१३:१८:२८	०७:२१:३१:०३	०३:१०:०५:५३	०७:२१:१३:३२	०१:२०:४४:४३	१०:००:१७:०९	१०:१६:३८:४८	०५:०९:५२:०८	४२:५०:३१	द·२३:५१:२२	– १:३६	३०:३५
३०	३० च	०८:१४:१९:५३	०८:०४:०९:०६	०३:०९:५२:२४	०७:२२:२८:३८	०१:२०:३७:३४	१०:०१:२०:०३	१०:१६:४३:३५	०५:०९:४८:५८	४२:५०:५३	द·२३:४८:१४	– २:०८	०७:२७

१९ दिसम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः४
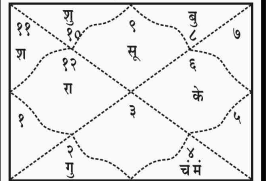
२६ दिसम्बर सूर्योदयकालीन तिथिः११
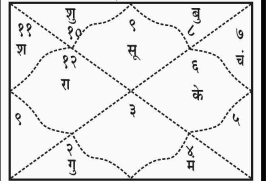
पौष कृष्णपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, १६ दिसम्बर से ३० दिसम्बर, २०२४ ईस्वी

पक्षान्तः– कालः पूर्व । ऋतुः हेमन्त । दक्षिणायनं । याम्यगोलः । ति·३० अयनांशाः२२:५३:८

दिनाङ्क दिसम्बर	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
१६	१ चं	**संक्रान्ति पुण्यकालं ७:१३–१२:२१घं·**, मूलेधनुषिरविः घं·०६:५९।
१७	२ मं	**भद्रारंभः२३:५४घं·।**
१८	३ बु	**भद्रांतः११:४६घं·।**
१९	४ गु	**गण्डान्तारम्भः२२:००।**
२०	५ शु	**गण्डान्तः१०:३८।**
२१	६ श	**भद्रा १३:३९–२६:२३घं·।**
२२	७ र	धनिष्ठायांशुक्रः घं·१९:०५।
२३	८ चं	स्वामी श्रद्धानन्द पुण्य दिवस।
२४	९ मं	**भद्रारंभः३२:२५घं·।** ① अटलबिहारी जयन्ती, ज्येष्ठायांबुधः घं·०६:११।
२५	१० बु	**भद्रा ८:२५–२१:३०घं·**, महामना मदनमोहन मालवीय जयन्ती, ①
२६	११ गु	उत्तराफल्गुन्यांकेतुः घं·१९:५९।
२७	१२ शु	वक्री मंगलः घं·०७:११।
२८	१३ श	**भद्रारंभः२६:४३घं·।** ② कुम्भेशुक्रः घं·००:५०।
२९	१४ र	**भद्रांतः१५:१३घं·, गण्डान्तः१७:१०–२९:४८,** पूर्वाषाढ़ेरविः घं·०७:५६, ②
३०	३० चं	**श्रीचन्द्रप्रभु जयन्ती।** श्री जयप्रभु विजय पुण्य त्रिस्तुति (जैन)।

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	१२:०१–१३:२३
३०	१२:०८–१३:३०

❀ धनु मलमास ❀

बृहस्पति ग्रह की धनु एवं मीन राशि में सूर्य के प्रवेश करते ही खरमास दोष लगता है। अतः समस्त शुभकर्म वर्जित हो जाते हैं। १६ दिसम्बर २०२४, ०६:५९ बजे से, १४ जनवरी २०२५ दिन १४:५३ बजे तक धनु संक्रान्ति जनित खरमास/मलमास दोष रहेगा।

❀ मासों में करणीय दान ❀

(विष्णुधर्मोत्तरे)

चैत्र – चित्र व वस्त्रदान से सौभाग्य प्राप्ति
वैशाख – पूआदान से स्वर्ग प्राप्ति
ज्येष्ठ – छत्रदान से कामनापूर्ति
आषाढ़–चन्दन, कर्पूर से महाफल प्राप्ति
श्रावण– वस्त्रदान से कीर्ति महाफल प्राप्ति
भाद्रपद – गुड़ दान से कफ/रोगमुक्ति
आश्विन – घृतदान से रूपवान हो
कार्तिक – दीपदान से उज्ज्वलता प्राप्ति
मार्गशीर्ष – लवणदान से सौभाग्य प्राप्ति
पौष – स्वर्णदान से परापुष्टि प्राप्ति
माघ – तिलदान से यमलोक न जाना पड़े
फाल्गुन– प्रियंगुदान से भूतल पर प्रिय हो

❀ प्राणायाम की दुर्लभ एवं पूर्ण विधि ❀

क्रमः--१. पूरक, २. अन्तः-कुम्भक, ३. रेचक, ४. बाह्य कुम्भक

पूरक – तीन सावित्री मन्त्र तेजी से पढ़ते हुए सम गति से श्वास अन्दर लेना।

अन्तः-कुम्भक – तीन सावित्री मन्त्र तेजी से पढ़ते हुए श्वास अन्दर रोकना।

रेचक – तीन सावित्री मन्त्र तेजी से पढ़ते हुए सम गति से श्वास बाहर त्यागना।

बाह्य कुम्भक–तीन सावित्री मन्त्र तेजी से पढ़ते हुए श्वास बाहर त्यागकर रोकना।

गायत्री मन्त्र का ही विस्तारित रूप है सावित्री मन्त्र। प्राणायाम में जप हेतु **सावित्री मन्त्र–**

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम्।
भर्गो देवस्य धीमहि। धि यो यो नः प्रचोदयात्॥
ॐ आपो ज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वर्॥ ॐ॥

"स्वर्॥ ॐ" का उच्चारण है "स्वरोम्"॥

बाह्य कुम्भक कष्टदायक होता है, अतः अधिकाँश जगह लिखा नहीं होता है। बाह्य कुम्भक जितना कष्टदायक होता है उतने ही पिछले और वर्तमान जन्मों के प्रकट (क्रियमाण) और छुपे हुए (सञ्चित) कुसंस्कार नष्ट होते हैं और सद्-बुद्धि बढती है। प्राणायाम वैदिक सन्ध्यावन्दन का अनिवार्य भाग है। प्रातः (और सम्भव हो तो सन्ध्याकाल में भी) नित्यकर्म के पश्चात न्यूनतम तीन प्राणायाम बाएँ नाक से और तीन दाहिने नाक से करने चाहिए: बारी-बारी से, अर्थात पहले बाएँ, फिर दाँए, फिर बाएँ..। बाह्य कुम्भक अचेतन मन के कुसंस्कारों को ध्वस्त करने और पूर्ण चैतन्य बनने का सर्वोत्तम साधन है। जो जनेऊ नहीं पहनते हैं वे उतने ही काल तक अपने इष्टदेव के मन्त्र का जप कर सकते हैं।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी। घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

दिसम्बर	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१६	१३:५८	१५:३४	१७:३०	१९:४४	२२:०४	००:२१	०२:३६	०४:५४	०७:१३	०९:१८	११:०३	१२:३२
१७	१३:५४	१५:३०	१७:२६	१९:४०	२२:००	००:१७	०२:३२	०४:५१	०७:०९	०९:१४	१०:५९	१२:२८
१८	१३:५०	१५:२६	१७:२२	१९:३६	२१:५६	००:१३	०२:२८	०४:४७	०७:०५	०९:१०	१०:५५	१२:२४
१९	१३:४६	१५:२२	१७:१८	१९:३२	२१:५२	००:०९	०२:२४	०४:४३	०७:०१	०९:०७	१०:५१	१२:२०
२०	१३:४२	१५:१८	१७:१४	१९:२८	२१:४८	००:०५	०२:२०	०४:३९	०६:५७	०९:०३	१०:४७	१२:१६
२१	१३:३८	१५:१४	१७:१०	१९:२४	२१:४४	००:०१	०२:१६	०४:३५	०६:५३	०८:५९	१०:४३	१२:१२
२२	१३:३४	१५:१०	१७:०६	१९:२०	२१:४०	२३:५७	०२:१२	०४:३१	०६:५०	०८:५५	१०:३९	१२:०८
२३	१३:३०	१५:०६	१७:०२	१९:१६	२१:३६	२३:५३	०२:०८	०४:२७	०६:४६	०८:५१	१०:३५	१२:०४
२४	१३:२६	१५:०२	१६:५८	१९:१२	२१:३३	२३:४९	०२:०४	०४:२३	०६:४२	०८:४७	१०:३१	१२:०१
२५	१३:२३	१४:५९	१६:५४	१९:०८	२१:२९	२३:४५	०२:००	०४:१९	०६:३८	०८:४३	१०:२७	११:५७
२६	१३:१९	१४:५५	१६:५०	१९:०४	२१:२५	२३:४१	०१:५६	०४:१५	०६:३४	०८:३९	१०:२३	११:५३
२७	१३:१५	१४:५१	१६:४६	१९:००	२१:२१	२३:३७	०१:५२	०४:११	०६:३०	०८:३५	१०:२०	११:४९
२८	१३:११	१४:४७	१६:४२	१८:५७	२१:१७	२३:३३	०१:४८	०४:०७	०६:२६	०८:३१	१०:१६	११:४५
२९	१३:०७	१४:४३	१६:३८	१८:५३	२१:१३	२३:२९	०१:४४	०४:०३	०६:२२	०८:२७	१०:१२	११:४१
३०	१३:०३	१४:३९	१६:३४	१८:४९	२१:०९	२३:२५	०१:४०	०३:५९	०६:१८	०८:२३	१०:०८	११:३७

दिसम्बर	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
१६	**सिद्ध** १३·०१ तक, **दग्ध·तिथि·२** १३·०१ से
१७	**अमृत** १२·०९ तक, **त्रिपुष्कर** १२·०९ तक, **सिद्ध** १२·०९ से, **दग्ध·तिथि·२** १२·०९ तक
१९	**सिद्ध** ११·५३ से
२०	**सिद्ध** १२·३१ से, **रवियोग** २९·४७ से
२१	**अमृत** १३·३९ तक, **रवियोग** अहोरात्र
२२	**रवियोग** ०७·४४ तक, **सर्वार्थ** ०७·४४ से, **त्रिपुष्कर** ७·४४ से १५·१४ तक, **सिद्ध** १५·१४ से
२५	**अमृत** २१·३० से
२७	**सर्वार्थ** २०·०३ से
२८	**सिद्ध** २६·४२ से
२९	**सर्वार्थ** २३·२९ से, **अमृत** २७·३६ से
३०	**अमृत** २७·५९ तक, **सिद्ध** २७·५९ से

❀ **व्रत परिभाषा–**ऋषि,मुनि व परमाचार्यों द्वारा प्रसिद्धि प्राप्त विषय के संकल्प विशेष को व्रत कहते हैं। अतः सामान्य व्यक्ति नया व्रत नहीं बना सकता।
अभियुक्तप्रसिद्धिविषयो यः संकल्पविशेषः स एव व्रतम्।

❀ **व्रत के अंग–** किसी भी व्रत के तीन अंग होते हैं १· उपवास, २· पूजन और ३· पारण। तत् पूजनोपवासपारणारूपम्। वस्तुतः उपवास ही मुख्य रूप से व्रत होता है पर पूजन और पारणा के बिना यह पूर्ण नहीं होता है। "उपवासएवव्रतम्"

❀ **व्रत फल–** व्रत करने से जीवन में अलभ्य का लाभ तथा असाध्य की प्राप्ति होती है।

❀ **व्रत नाशक तत्व–** बारबार जल पीना, पान खाना, दिन में सोना, मैथुन, मिथ्याभाषण, जुआ खेलना, पाप करना, दो बार अल्पाहार लेना मना है।

❀ **व्रत में अनिवार्य–** प्रत्येक व्रत के देवता की पूजा अवश्य करनी चाहिए। क्षमा, सत्य, दया, दान, शौच, इन्द्रियनिग्रह, देवपूजा, हवन, संतोष और अचौर्य ये दशतत्व व्रत में अनिवार्य हैं।

पौष शुक्लपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, ३१ दिसम्बर २०२४ से १३ जनवरी २०२५

ग्रहस्थितिः ३१:१२:२०२४– वक्री गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः, मार्गी शनिःपूर्वोदितः, वक्री कुजःपूर्वोदितः, मार्गी बुधःपूर्वोदितः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क
दिसम्बर	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	दिसम्बर
३१	१ मं	५१:१५	२७·५०	पू·षा·	४४:०९	२५·०१	ध्रुव	३२:२५	२०·१९	किं	२१:३५	बव	५१:१५	२५:४२	७:२०	१७:३७	म·५९:१६	३१·०४	मित्र	३१
जनवरी	२ बु	४९:४०	२७·१३	उ·षा·	४४:१२	२५·०२	व्याघ·	२८:२५	१८·४३	बाल	२०:३७	कौल	४९:४०	२५:४३	७:२१	१७:३८	मकर	अहोरात्र	वज्र	जनवरी
२	३ गु	४६:५७	२६·०८	श्रवण	४३:०९	२४·३६	हर्षण	२३:३०	१६·४५	तैति	१८:२७	गर	४६:५७	२५:४४	७:२१	१७:३९	मकर	अहोरात्र	ध्वज	२
३	४ शु	४३:१६	२४·४०	धनि·	४१:०७	२३·४८	वज्र	१७:४६	१४·२८	वणि	१५:१३	विष	४३:१६	२५:४५	७:२१	१७:४०	कुं·१२:१५	१२·१५	धाता	३
४	५ श	३८:४६	२२·५२	शत·	३८:१८	२२·४१	सिद्धि	११:२०	११·५४	बव	११:०७	बाल	३८:४६	२५:४६	७:२२	१७:४०	कुंभ	अहोरात्र	आनन्द	४
५	६ र	३३:३८	२०·४९	पू·भा·	३४:५१	२१·१८	व्यति· वरी	०४:१९ ५२:३२	०९·०६ २८:२३	कौल	०६:१७	तैति	३३:३८	२५:४८	७:२२	१७:४१	मी·२०:४५	१५·४०	सुस्थिर	५
६	७ चं	२८:०३	१८·३५	उ·भा·	३०:५७	१९·४५	परिघ	४९:०७	२७·०१	गर	००:५४	वणि	२८:०३	२५:४९	७:२२	१७:४२	मीन	अहोरात्र	गद	६
७	८ मं	२२:१३	१६·१५	रेवती	२६:४९	१८·०६	शिव	४१:१४	२३·५२	बव	२२:१३	बाल	४९:१५	२५:५१	७:२२	१७:४३	मे·२६:४९	३०·०६	शुभ	७
८	९ बु	१६:२०	१३·५४	अश्वि·	२२:४०	१६·२६	सिद्ध	३३:२२	२०·४३	कौल	१६:२०	तैति	४३:२६	२५:५२	७:२२	१७:४३	मेष	अहोरात्र	मृत्यु	८
९	१० गु	१०:३७	११·३७	भरणी	१८:४२	१४·५१	साध्य	२५:४२	१५·३९	गर	१०:३७	वणि	३७:५३	२५:५४	७:२२	१७:४४	वृ·३२:४६	२०·२९	पद्म	९
१०	११ शु	०५:१७	०९·२९	कृत्ति·	१५:०८	१३·२६	शुभ	१८:२३	१४·४४	विष	०५:१७	बव	३२:४८	२५:५६	७:२३	१७:४५	वृष	अहोरात्र	छत्र	१०
११	१२ श १३ श	००:३० ५५:५७	०७·३५ २९:४६	रोहि·	१२:०९	१२·१४	शुक्ल	११:३२	११·५९	बाल	००:३०	कौल	२८:२२	२५:५७	७:२३	१७:४६	मि·४०:५६	२३·४५	श्रीवत्स	११
१२	१४ र	५३:१९	२८·४२	मृग·	०९:५६	११·२१	ब्रह्म ऐन्द्र	०५:१९ ५४:३०	०९·३० २९:११	गर	२४:४६	वणि	५३:१९	२५:५९	७:२३	१७:४७	मिथुन	अहोरात्र	सौम्य	१२
१३	१५ चं	५१:१६	२७·५३	आर्द्रा	०८:३९	१०·५०	वैधृ·	५५:११	२९·२७	विष	२२:०९	बव	५१:१६	२६:०१	७:२३	१७:४७	क·५३:२२	२८·४४	कालदंड	१३

卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐

३१ दिसम्बर २०२४ से १३ जनवरी २०२५

दिनाङ्क	व्रत–पर्व–उत्सव
३१	
जनवरी	**ईस्वी २०२५ आरम्भ**
२	श्रीयतीन्द्र सूरीश्वर पुण्यत्रिस्तुति (जैन)
३	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी**
४	
५	अनरुपा षष्ठी (बंगाल), व्यतीपात पुण्यम्
६	गुरु गोविन्दसिंह जयन्ती, श्रीराजेन्द्रसूरीश्वर स्तुति (जैन)
७	**श्रीदुर्गाष्टमी, शाकम्भरी देवी नवरात्र प्रारम्भ**
८	आचार्य जिनानन्द सागर पुण्य खरतरगच्छ (जैन)
९	सूर्यपूजा व साम्बदशमी (उड़ीसा)
१०	**श्रीपुत्रदा एकादशी (सर्वेषाम्)**, मन्वादि
११	**श्रीजयन्ती महाद्वादशी, शनि प्रदोष व्रतम्**
१२	स्वामी श्री विवेकानन्द जयन्ती, राष्ट्रीय युवा दिवस
१३	**पौष पूर्णिमा (स्नान–दान–व्रत), माघ स्नानारम्भ**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क दिसम्बर	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	वक्री मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	वक्री गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
३१	१ मं	०८:१५:२१:१८	०८:१७:०१:३८	०३:०९:३८:१२	०७:२३:४६:२०	०१:२०:३०:३२	१०:०२:२२:३६	१०:१६:४८:२७	०५:०९:४५:४७	४२:५१:१८	द·२३:४४:३७	– २:३९	०७:२७
जनवरी	२ बु	०८:१६:२२:४३	०९:००:०९:३२	०३:०९:२३:१६	०७:२५:०६:२७	०१:२०:२३:३७	१०:०३:२४:४८	१०:१६:५३:२३	०५:०९:४२:३६	४२:५१:४६	द·२३:४०:३१	– ३:०९	०८:१८
२	३ गु	०८:१७:२४:०९	०९:१३:३२:५६	०३:०९:०७:३७	०७:२६:२८:५०	०१:२०:१६:५०	१०:०४:२६:३८	१०:१६:५८:२५	०५:०९:३९:२५	४२:५२:१७	द·२३:३५:५६	– ३:४०	०९:०५
३	४ शु	०८:१८:२५:३४	०९:२७:११:१२	०३:०८:५१:१५	०७:२७:५३:२२	०१:२०:१०:१०	१०:०५:२८:०६	१०:१७:०३:३१	०५:०९:३६:१५	४२:५२:५०	द·२३:३०:५२	– ४:१०	०९:४८
४	५ श	०८:१९:२६:५९	१०:११:०२:५७	०३:०८:३४:१२	०७:२९:१९:५१	०१:२०:०३:३७	१०:०६:२९:११	१०:१७:०८:४१	०५:०९:३३:०४	४२:५३:२७	द·२३:२५:२०	– ४:४०	१०:२९
५	६ र	०८:२०:२८:२४	१०:२५:०६:०६	०३:०८:१६:२९	०८:००:४८:११	०१:१९:५७:१३	१०:०७:२९:५१	१०:१७:१३:५६	०५:०९:२९:५३	४२:५४:०६	द·२३:१९:२०	– ५:०९	११:०७
६	७ चं	०८:२१:२९:४९	११:०९:१८:०२	०३:०७:५८:०८	०८:०२:१८:१३	०१:१९:५०:५८	१०:०८:३०:०७	१०:१७:१९:१६	०५:०९:२६:४३	४२:५४:४९	द·२३:१२:५२	– ५:३८	११:४५
७	८ मं	०८:२२:३१:१३	११:२३:३५:३७	०३:०७:३९:०९	०८:०३:४९:५२	०१:१९:४४:५१	१०:०९:२९:५६	१०:१७:२४:४०	०५:०९:२३:३२	४२:५५:३३	द·२३:०५:५६	– ६:०७	१२:०४
८	९ बु	०८:२३:३२:३७	००:०७:५५:२४	०३:०७:१९:३४	०८:०५:२२:६०	०१:१९:३८:५३	१०:१०:२९:१८	१०:१७:३०:०८	०५:०९:२०:२१	४२:५६:२१	द·२२:५८:३२	– ६:३५	१३:०४
९	१० गु	०८:२४:३४:००	००:२२:१३:२४	०३:०६:५९:२५	०८:०६:५७:३१	०१:१९:३३:०४	१०:११:२८:१२	१०:१७:३५:४०	०५:०९:१७:१०	४२:५७:११	द·२२:५०:४१	– ७:०३	१३:४९
१०	११ शु	०८:२५:३५:२४	०१:०६:२६:०४	०३:०६:३८:४४	०८:०८:३३:२०	०१:१९:२७:२४	१०:१२:२६:३८	१०:१७:४१:१७	०५:०९:१३:६०	४२:५८:०४	द·२२:४२:२३	– ७:३०	१४:३६
११	१२ श	०८:२६:३६:४६	०१:२०:३०:१५	०३:०६:१७:३३	०८:१०:१०:२०	०१:१९:२१:५४	१०:१३:२४:३३	१०:१७:४६:५८	०५:०९:१०:४९	४२:५९:००	द·२२:३३:३८	– ७:५७	१५:३०
१२	१४ र	०८:२७:३८:०८	०२:०४:२३:१७	०३:०५:५५:५३	०८:११:४८:२८	०१:१९:१६:३४	१०:१४:२१:५८	१०:१७:५२:४३	०५:०९:०७:३८	४२:५९:५८	द·२२:२४:२६	– ८:२३	१६:२५
१३	१५ चं	०८:२८:३९:३०	०२:१८:०३:०१	०३:०५:३३:४८	०८:१३:२७:३७	०१:१९:११:२५	१०:१५:१८:५०	१०:१७:५८:३१	०५:०९:०४:२८	४३:००:५८	द·२२:१४:४८	– ८:४८	१७:२५

३ जनवरी सूर्योदयकालीन तिथि:४

१० जनवरी सूर्योदयकालीन तिथि:११

पौष शुक्लपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, ३१ दिसम्बर २०२४ से १३ जनवरी २०२५

पक्षान्तः– कालः पूर्व । ऋतुः हेमन्त । दक्षिणायनं । याम्यगोलः । ति·१५ अयनांशाः २२:५३:१०

दिनाङ्क दिसम्बर	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
३१	१ मं	।
जनवरी	२ बु	**अभिजितः१९:०४–२६:३७।**
२	३ गु	।
३	४ शु	**पंचकारंभः१२:१५, भद्रा १३:२७–२४:४०घं·।**
४	५ श	**पंचक**, मूलेधनुषिबुधः घं·१८:२१, शतभिषायांशुक्रः घं·११:३९।
५	६ र	**पंचक।**
६	७ चं	**पंचक, भद्रा १८:३६–२९:१४घं·।**
७	८ मं	**पंचकान्तः१८:०६, गण्डान्तः१२:३२–२३:४१।**
८	९ बु	श्री हरि जयन्ती।
९	१० गु	**भद्रारंभः२२:३२घं·।**
१०	११ शु	**भद्रांतः९:३०घं·।**
११	१२ श	**श्रीकूर्म द्वादशी**, उत्तराषाढ़ेरविः घं·०८:३९।
१२	१४ र	**भद्रारंभः२८:४३घं·।** ① **शाकम्भरी जयन्ती**, पूर्वाषाढ़ेबुधः घं·०५:३५।
१३	१५ चं	**भद्रांतः१६:१५घं·, श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा, लोहड़ी**, वैधृति पुण्यम् ①

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	१२:०९–१३:३१
१५	१२:१५–१३:३८

❀ भूमि सम्बन्धी समस्त अवरोध निवारक अचूक प्रयोग ❀ – *'नवग्रह विज्ञान'*

भूमि के क्रय विक्रय व भवननिर्माण सम्बन्धी समस्त अवरोधों-विघ्नबाधाओं के निवारण हेतु श्रीमद्देवीभागवत महापुराण के पृथ्वी स्तोत्र/भूमिदेवी महास्तोत्र का १२०० पाठ एक दुर्लभ एवं अविफल प्रयोग है। इसे इच्छित संकल्पपूर्वक स्वयं या ब्राह्मण द्वारा कराना चाहिए। जन्मकुण्डली के लग्न या चन्द्र से चतुर्थ भाव पर जब मंगल का गोचर होता है या दृष्टि पड़ती है तब भूमि संबंधी कार्य का योग बनता हैं। **प्रारूप संकल्प** – देशकाल संकीर्त्य अमुक गोत्रोत्पन्नोऽहं अमुक नामाहं मम भूमिसम्बन्धी क्रय-विक्रय-भवननिर्माण सम्बन्धी समस्त विघ्नबाधा-शत्रुकृतअवरोध निवारणार्थं उत्तमोत्तम मूल्ये भूमि विक्रयार्थं / उत्तमोत्तम शुभभूमि प्राप्त्यर्थं / सर्वबाधानिवृत्ति पूर्वकं ग्रहादीनां स्थितिवशात् उत्पन्नदोषेण च विघ्नानां प्रशमनपूर्वकं श्रीभूमिदेवी प्रीत्यर्थं श्रीभूमिदेवी महास्तोत्रस्य द्वादश शत पाठ कर्माहं करिष्ये/ब्राह्मणानां कारयिष्ये।

ध्यान–

श्वेतपंकजवर्णाभां शरच्चन्द्रनिभाननाम्।
चन्दनोत्क्षिप्तसर्वांगीं रत्नभूषणभूषिताम्।
रत्नाधारां रत्नगर्भां रत्नाकरसमन्विताम्।
वह्निशुद्धांशुकाधानां सस्मितां वन्दितां भजे।

श्वेतकमल के समान आभा युक्त, शरदपूर्णिमा के चन्द्रमा के समान मुख वाली, जिनके सम्पूर्ण अंग चन्दन से लिप्त हैं, जो रत्नमय अलंकारों से सुशोभित हैं, रत्नों की आधारस्वरूपा हैं, रत्नगर्भा हैं व रत्नों के आकर (खान) से समन्वित हैं। जो अग्नि सदृश शुद्ध वस्त्र धारण किए हैं, मुस्कान से युक्त हैं व सभी के द्वारा वन्दित हैं। मैं ऐसी पृथ्वीदेवी का ध्यान करता हूँ।

पृथ्वीस्तोत्र–

श्रीनारायण उवाच

जये जये जलाधारे जलशीले जलप्रदे।
यज्ञसूकरजाये त्वं जयं देहि जयावहे ॥
मङ्गले मङ्गलाधारे माङ्गल्ये मङ्गलप्रदे।
मङ्गलार्थं मङ्गलेशे मङ्गलं देहि मे भवे ॥
सर्वाधारे च सर्वज्ञे सर्वशक्तिसमन्विते।
सर्वकामप्रदे देवि सर्वेष्टं देहि मे भवे ॥
पुण्यस्वरूपे पुण्यानां बीजरूपे सनातनि।
पुण्याश्रये पुण्यवतामालये पुण्यदे भवे ॥
सर्वशस्यालये सर्वशस्याढ्ये सर्वशस्यदे।
सर्वशस्यहरे काले सर्वशस्यात्मिके भवे॥
भूमे भूमिपसर्वस्वे भूमिपालपरायणे ।
भूमिपानां सुखकरे भूमिं देहि च भूमिदे ॥
इदं स्तोत्रं महापुण्यं प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
कोटिजन्मसु स भवेद्बलवान्भूमिपेश्वरः॥
भूमिदानकृतं पुण्यं लभ्यते पठनाज्जनैः।
भूमिदानहरात्पापान्मुच्यते नात्र संशयः॥
अम्बुवाची भूकरणपापात्स मुच्यते ध्रुवम्।
अन्यकूपे कूपखननपापात्स मुच्यते ध्रुवम्॥
परभूमिहरात्पापान्मुच्यते नात्र संशयः।
भूमौ वीर्यत्यागपापाद्भूमौ दीपादिस्थापनात्॥
पापेन मुच्यते सोऽपि स्तोत्रस्य पठनान्मुने।
अश्वमेधशतं पुण्यं लभते नात्र संशयः ॥
भूमिदेव्या महास्तोत्रं सर्वकल्याणकारकम्॥

॥ इति भूमिदेवीमहास्तोत्रम् ॥

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

दिसम्बर	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
३१	१२:५९	१४:३५	१६:३०	१८:४५	२१:०५	२३:२१	०१:३६	०३:५५	०६:१४	०८:१९	१०:०४	११:३३
जनवरी	१२:५५	१४:३१	१६:२६	१८:४१	२१:०१	२३:१७	०१:३२	०३:५१	०६:१०	०८:१५	१०:००	११:२९
२	१२:५१	१४:२७	१६:२३	१८:३७	२०:५७	२३:१४	०१:२९	०३:४७	०६:०६	०८:११	०९:५६	११:२५
३	१२:४७	१४:२३	१६:१९	१८:३३	२०:५३	२३:१०	०१:२५	०३:४३	०६:०२	०८:०७	०९:५२	११:२१
४	१२:४३	१४:१९	१६:१५	१८:२९	२०:४९	२३:०६	०१:२१	०३:४०	०५:५८	०८:०३	०९:४८	११:१७
५	१२:३९	१४:१५	१६:११	१८:२५	२०:४५	२३:०२	०१:१७	०३:३६	०५:५५	०७:५९	०९:४४	११:१३
६	१२:३५	१४:११	१६:०७	१८:२१	२०:४१	२२:५८	०१:१३	०३:३२	०५:५१	०७:५६	०९:४०	११:०९
७	१२:३१	१४:०७	१६:०३	१८:१७	२०:३७	२२:५४	०१:०९	०३:२८	०५:४७	०७:५२	०९:३६	११:०५
८	१२:२७	१४:०३	१५:५९	१८:१३	२०:३३	२२:५०	०१:०५	०३:२४	०५:४३	०७:४८	०९:३२	११:०१
९	१२:२३	१३:५९	१५:५५	१८:०९	२०:२९	२२:४६	०१:०१	०३:२०	०५:३९	०७:४४	०९:२८	१०:५७
१०	१२:१९	१३:५५	१५:५१	१८:०५	२०:२५	२२:४२	००:५७	०३:१६	०५:३५	०७:४०	०९:२४	१०:५३
११	१२:१५	१३:५१	१५:४७	१८:०१	२०:२१	२२:३८	००:५३	०३:१२	०५:३१	०७:३६	०९:२०	१०:४९
१२	१२:११	१३:४७	१५:४३	१७:५७	२०:१८	२२:३४	००:४९	०३:०८	०५:२७	०७:३२	०९:१६	१०:४६
१३	१२:०८	१३:४४	१५:३९	१७:५३	२०:१४	२२:३०	००:४५	०३:०४	०५:२३	०७:२८	०९:१२	१०:४२

दिसम्बर	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
३१	**अमृत** २७·५० से, **त्रिपुष्कर** २७·५० से
१	**सिद्ध** २७·१३ तक, **दग्ध·तिथि·२** २७·१३ तक
२	**अमृत** २६·०८ तक, **रवियोग** २४·३६ से
३	**अमृत** २४·४० तक, **रवियोग** २३·४८ तक,
४	**रवियोग** २२·४१ से, **अमृत** २२·५२ से
५	**रवियोग** २१·१८ तक, **त्रिपुष्कर** २०·४९ से २१·१८ तक, **सर्वार्थ** २१·१८ से
७	**सिद्ध** १६·१५ तक, **सर्वार्थ** १८·०६ से, **रवियोग** १८·०६ से
८	**रवियोग** अहोरात्र
९	**सिद्ध** ११·३७ तक, **रवियोग** १४·५१ तक
१०	**सिद्ध** ०९·२९ तक
११	**सर्वार्थ** १२·१४ तक, **सिद्ध** ०७·३५ से
१२	**रवियोग** ११·२१ से, **अमृत** २८·४२ से
१३	**रवियोग** १०·५० तक, **सिद्ध** २७·५३ से

द्विज का दाहिना कान पवित्र होता है।

कान में वेदमन्त्र सुनते सुनते प्रभास आदि तीर्थ, गंगा आदि नदियों का पावित्र्य और प्रभाव रहता है– ***प्रभासादीनि तीर्थानि गंगाद्याः सरितस्तथा। द्विजस्य दक्षिणे कर्णे नित्यं तिष्ठन्ति देवताः॥*** इसी कान से दीक्षा ग्रहण की जाती है। इसी के ऊपर हमेशा यज्ञोपवीत चढ़ाकर मल–मूत्र का त्याग किया करते हैं। कर्णवेध के समय इसी में स्वर्णकुण्डल धारण किया जाता है। पराशर स्मृति में लिखा है कि छींक, थूक, दांत खोदने के बाद दाहिना कान स्पर्श करना चाहिए– ***क्षुते निष्ठीविते चैव दंतश्लिष्टे तथाऽनृते। पतितानाम् च संभाषे दक्षिणम् श्रवणं स्पृशेत्॥***

पैर की द्वितीय उंगली में चांदी की अंगूठी पहनने की रीति प्राचीनकाल में थी। इससे मानसिक शान्ति बनी रहती है। मणि, मन्त्र और औषधि का प्रभाव अतुलनीय होता है।

माघ कृष्णपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, १४ जनवरी से २९ जनवरी, २०२५ ईस्वी

ग्रहस्थितिः १४:१:२०२५– वक्री गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः, मार्गी शनिःपूर्वोदितः, वक्री कुजःपूर्वोदितः, मार्गी बुधःपूर्वास्तः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	व्रत–पर्व–उत्सव
जनवरी	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	जनवरी	१४ जनवरी से २९ जनवरी, २०२५
१४	१ मं	५०:२४	२७·३२	पुन·	०८:२६	१०·४५	विष्कु·	५१:२९	२७·५८	बाल	२०:४१	कौल	५०:२४	२६:०४	७:२३	१७:४८	कर्क	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	१४	मकर संक्रान्ति पुण्यकालं ०७:२३–१७:४८ घं·,
१५	२ बु	५०:४८	२७·४२	पुष्य	०९:२५	११·०९	प्रीति	४८:४६	२६·५३	तैति	२०:२७	गर	५०:४८	२६:०६	७:२३	१७:४९	कर्क	अहोरात्र	मातङ्ग	१५	
१६	३ गु	५२:३१	२८·२३	आश्ले·	११:३८	१२·०२	आयु·	४७:०३	२६·१२	वणि	२१:३१	विष्ट	५२:३१	२६:०८	७:२३	१७:५०	सिं·११:३८	१२·०२	अमृत	१६	सौभाग्य सुन्दरी व्रत
१७	४ शु	५५:२८	२९·३४	मघा	१५:०६	१३·२५	सौभा·	४६:१७	२५·५३	बव	२३:५१	बाल	५५:२८	२६:१०	७:२३	१७:५१	सिंह	अहोरात्र	काण	१७	संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय घं·२१:१६
१८	५ श	५९:३०	३१·१०	पू·फा·	१९:४२	१५·१५	शोभ·	४६:२१	२५·५५	कौल	२७:२२	तैति	५९:३०	२६:१३	७:२२	१७:५२	कं·३६:००	२१·४७	लुम्ब	१८	
१९	६ र	६०:००	अहोरात्र	उ·फा·	२५:१६	१७·२९	अतिग·	४७:०६	२६·१३	गर	३१:५२	वणि	६०:००	२६:१५	७:२२	१७:५३	कन्या	अहोरात्र	मित्र	१९	
२०	६ चं	०४:२४	०९·०८	हस्त	३१:३१	१९·५८	सुकर्मा	४८:१८	२६·४१	वणि	०४:२४	विष्ट	३७:०२	२६:१८	७:२२	१७:५३	कन्या	अहोरात्र	वज्र	२०	
२१	७ मं	०९:४७	११·१७	चित्रा	३८:०५	२२·३६	धृति	४९:४१	२७·१४	बव	०९:४७	बाल	४२:३१	२६:२०	७:२२	१७:५४	तु·०४:४८	०९·१७	ध्वांक्ष	२१	श्रीकालाष्टमी, श्रीमद् रामानन्दाचार्य जयन्ती
२२	८ बु	१५:१४	१३·२७	स्वाती	४४:३२	२५·१०	शूल	५०:५३	२७·४३	कौल	१५:१४	तैति	४७:५०	२६:२३	७:२२	१७:५५	तुला	अहोरात्र	धूम्र	२२	बुधाष्टमी
२३	९ गु	२०:१९	१५·२९	विशा·	५०:२७	२७·३२	गण्ड	५१:४०	२८·०२	गर	२०:१९	वणि	५२:३५	२६:२६	७:२१	१७:५६	वृश्·३४:०२	२०·५८	प्रवर्द्ध	२३	अन्वष्टका श्राद्ध, नेताजी सुभाषचन्द्रबोस जयन्ती
२४	१० शु	२४:३९	१७·१३	अनु·	५५:३२	२९·३४	वृद्धि	५१:४७	२८·०४	विष्ट	२४:३९	बव	५६:२६	२६:२९	७:२१	१७:५७	वृश्चिक	अहोरात्र	राक्षस	२४	
२५	११ श	२७:५७	१८·३२	ज्ये·	५९:३२	३१·१०	ध्रुव	५१:०३	२७·४६	बाल	२७:५७	कौल	५९:०९	२६:३१	७:२१	१७:५८	ध·५९:३२	३१·१०	मुसल	२५	श्री षट्तिला एकादशी (सर्वेषाम्)
२६	१२ र	३०:०४	१९·२२	मूल	६०:००	अहोरात्र	व्याघ·	४९:२४	२७·०६	तैति	३०:०४	गर	६०:००	२६:३४	७:२१	१७:५९	धनु	अहोरात्र	सिद्धि	२६	श्री गणतन्त्र दिवस, ध्वजारोहण, परेड
२७	१३ चं	३०:५३	१९·४१	मूल	०२:२२	०८·१७	हर्षण	४६:४४	२६·०२	गर	००:३८	वणि	३०:५३	२६:३७	७:२०	१७:५९	धनु	अहोरात्र	लुम्ब	२७	सोम प्रदोष व्रतम्, मास शिवरात्रि व्रतम्
२८	१४ मं	३०:२४	१९·२९	पू·षा·	०३:५६	०८·५४	वज्र	४३:०६	२४·३४	विष्ट	००:४८	बव	३०:२४	२६:४०	७:२०	१८:००	म·१९:०७	१४·५९	मित्र	२८	
२९	३० बु	२८:४२	१८·४८	उ·षा·	०४:१६	०९·०२	सिद्धि	३८:३२	२२·४४	नाग	२८:४२	किं	५७:२५	२६:४४	७:१९	१८:०१	मकर	अहोरात्र	मुद्गर	२९	अमावस्या (देव–पितृकार्य), मौनी अमावस्या

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क	तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	वक्री मङ्गलः	बुधः	वक्री गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर	चन्द्रोदयः
जनवरी	वार	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि			मि:से	
१४	१ म	०८:२९:४०:५०	०३:०१:२७:५९	०३:०५:११:१८	०८:१५:०७:४४	०१:१९:०६:२५	१०:१६:१५:१०	१०:१८:०४:२४	०५:०९:०१:१७	४३:०२:०१	द·२२:०४:४४	– ९:१३	१८:२४
१५	२ बु	०९:००:४२:१०	०३:१४:३७:२९	०३:०४:४८:२८	०८:१६:४८:४५	०१:१९:०१:३६	१०:१७:१०:५४	१०:१८:१०:२०	०५:०८:५८:०६	४३:०३:०७	द·२१:५४:१४	– ९:३७	१९:२३
१६	३ गु	०९:०१:४३:३०	०३:२७:३१:३२	०३:०४:२५:१९	०८:१८:३०:३४	०१:१८:५६:५७	१०:१८:०६:०४	१०:१८:१६:२०	०५:०८:५४:५६	४३:०४:१४	द·२१:४३:१८	–१०:००	२०:२१
१७	४ शु	०९:०२:४४:४८	०४:१०:१०:५७	०३:०४:०१:५३	०८:२०:१३:०८	०१:१८:५२:३०	१०:१९:००:३६	१०:१८:२२:२४	०५:०८:५१:४५	४३:०५:२४	द·२१:३१:५८	–१०:२३	२१:१६
१८	५ श	०९:०३:४६:०६	०४:२२:३७:१७	०३:०३:३८:१५	०८:२१:५६:२३	०१:१८:४८:१३	१०:१९:५४:२९	१०:१८:२८:३१	०५:०८:४८:३४	४३:०६:३६	द·२१:२०:१२	–१०:४५	२२:०९
१९	६ र	०९:०४:४७:२३	०५:०४:५२:४३	०३:०३:१४:२६	०८:२३:४०:१५	०१:१८:४४:०७	१०:२०:४७:४३	१०:१८:३४:४२	०५:०८:४५:२४	४३:०७:५१	द·२१:०८:०२	–११:०७	२३:०२
२०	६ च	०९:०५:४८:३९	०५:१७:००:००	०३:०२:५०:३४	०८:२५:२४:४२	०१:१८:४०:१३	१०:२१:४०:१६	१०:१८:४०:५७	०५:०८:४२:१३	४३:०९:०७	द·२०:५५:२८	–११:२७	२३:५४
२१	७ म	०९:०६:४९:५५	०५:२९:०२:२१	०३:०२:२६:४१	०८:२७:०९:३९	०१:१८:३६:३०	१०:२२:३२:०५	१०:१८:४७:१४	०५:०८:३९:०२	४३:१०:२६	द·२०:४२:३१	–११:४७	२४:४६
२२	८ बु	०९:०७:५१:०९	०६:११:०३:१८	०३:०२:०२:४९	०८:२८:५५:०४	०१:१८:३२:५९	१०:२३:२३:१०	१०:१८:५३:३५	०५:०८:३५:५२	४३:११:४६	द·२०:२९:०९	–१२:०६	२५:४१
२३	९ गु	०९:०८:५२:२२	०६:२३:०६:५३	०३:०१:३९:०३	०९:००:४०:५२	०१:१८:२९:३९	१०:२४:१३:२८	१०:१८:५९:५९	०५:०८:३२:४१	४३:१३:०९	द·२०:१५:२५	–१२:२४	२६:३५
२४	१० शु	०९:०९:५३:३५	०७:०५:१६:२८	०३:०१:१५:२५	०९:०२:२७:०१	०१:१८:२६:३१	१०:२५:०२:५९	१०:१९:०६:२७	०५:०८:२९:३०	४३:१४:३३	द·२०:०१:१८	–१२:४२	२७:३
२५	११ श	०९:१०:५४:४६	०७:१७:३५:०९	०३:००:५१:५७	०९:०४:१३:२९	०१:१८:२३:३५	१०:२५:५१:३९	१०:१९:१२:५७	०५:०८:२६:२०	४३:१५:५९	द·१९:४६:४९	–१२:५८	२८:२६
२६	१२ र	०९:११:५५:५७	०८:००:०५:२९	०३:००:२८:४३	०९:०६:००:१०	०१:१८:२०:५१	१०:२६:३९:२७	१०:१९:१९:३१	०५:०८:२३:०९	४३:१७:२७	द·१९:३१:५८	–१३:१४	२९:१९
२७	१३ च	०९:१२:५७:०६	०८:१२:४९:२९	०३:००:०५:४६	०९:०७:४७:०४	०१:१८:१८:१९	१०:२७:२६:२१	१०:१९:२६:०७	०५:०८:१९:५८	४३:१८:५७	द·१९:१६:४५	–१३:२९	३०:०९
२८	१४ म	०९:१३:५८:१४	०८:२५:४८:२७	०२:२९:४३:०७	०९:०९:३४:०६	०१:१८:१५:६०	१०:२८:१२:१९	१०:१९:३२:४६	०५:०८:१६:४८	४३:२०:२८	द·१९:०१:१२	–१३:४३	३०:५९
२९	३० बु	०९:१४:५९:२२	०९:०९:०२:५६	०२:२९:२०:५०	०९:११:२१:१०	०१:१८:१३:५२	१०:२८:५७:१८	१०:१९:३९:२८	०५:०८:१३:३७	४३:२२:०१	द·१८:४५:१७	–१३:५६	०७:४२

१७ जनवरी सूर्योदयकालीन तिथिः४

२५ जनवरी सूर्योदयकालीन तिथिः११

माघ कृष्णपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, १४ जनवरी से २९ जनवरी, २०२५ ईस्वी

पक्षान्तः– कालःपूर्व । ऋतुः हेमन्त दक्षिणायनं मकरार्कतः ऋतुः शिशिर उत्तरायणं । याम्यगोलः । ति·३० अयनांशाः २२:५३:१३

दिनाङ्क जनवरी	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
१४	१ मं	**पतंगोत्सव**, मलमास समाप्त, मकरेरविःघं·१४:५३ ①
१५	२ बु	**गण्डान्तारम्भः२९:४६।** ① गंगासागर स्नान, पोंगल (केरल) ।
१६	३ गु	**भद्रा १५:५९–२८:२४घं·, गण्डान्तः१८:२०।**
१७	४ शु	**तिलकुट चौथ।**
१८	५ श	पूर्वभाद्रेशुक्रःघं·०९:५४।
१९	६ र	**भद्रारंभः३३:०८घं·**, पुनर्वसौमङ्गलःघं·०१:५०।
२०	६ चं	**भद्रा ९:०८–२२:१२घं·।**
२१	७ मं	**श्रीस्वामी विवेकानन्द जयन्ती** (तिथि),उत्तराषाढ़ेबुधःघं·००:४०।
२२	८ बु	मकरेबुधःघं·२२:१०।
२३	९ गु	**भद्रारंभः२८:२४घं·।**
२४	१० शु	**भद्रांतः१७:१३घं·**, श्रवणायांरविःघं·०९:५३।
२५	११ श	**गण्डान्तारम्भः२४:४९।**
२६	१२ र	**गण्डान्तः१३:३०**, तिल द्वादशी, श्रीशीतलनाथ जयन्ती।
२७	१३ चं	**भद्रारंभः१९:४२घं·**, मेरु त्रयोदशी (जैन), मिथुनेमङ्गलःघं·१३:५१।
२८	१४ मं	**अभिजितारम्भः२७:०२, भद्रांतः७:४०घं·**, श्रवणायांबुधःघं·१३:१३।
२९	३० बु	**अभिजितान्तः१०:३७**, द्वापरयुगादि, मेला हरिद्वार, प्रयाग ।

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	१२:१५–१३:३८
३०	१२:१९–१३:४५

❀ मकर संक्रान्ति कृत्य ❀

❀ मकर संक्रान्ति– सूर्यसिद्धान्तीय गणना से सूर्य १४ जनवरी को १४ बजके ५३ मिनट पर मकर में प्रवेश करेगा अतः **मकर संक्रान्ति १४ जनवरी को ही होगी, उसी दिन सूर्योदय से सूर्यास्त तक पुण्यकाल स्नान दान होगा।** अतः **संशयरहित होकर मकर संक्रान्ति १४ जनवरी २०२४ को ही मनाएं।** मकर संक्रान्ति से ही देवताओं का दिन आरम्भ होता है। यहीं से उत्तरायण का शुभारम्भ होता है। **मकर संक्रान्ति को स्नान न करने वाला व्यक्ति जन्म–जन्मान्तर में रोगी तथा निर्धन होता है–**

रविसंक्रमणे प्राप्ते न स्नायाद्यस्तु मानवः । सप्तजन्मनि रोगी स्यान्निर्धनश्चैव जायते। (धर्मसिन्धु)

यह भगवान सूर्य नारायण का विशेष व्रत है। अतः **मकर संक्रान्ति के दिन स्नान, दान, हवन करने का शुभफल जन्मजन्मान्तर में भगवान् श्री सूर्यनारायण द्वारा प्रदान किया जाता है–** *संक्रान्तौ यानि दत्तानि हव्यकव्यानि दातृभिः। तानि नित्यं ददात्यर्कः पुनर्जन्मनि जन्मनि। (धर्मसिन्धु)* **मकर संक्रान्ति** के दिन शिवलिंग का घी से अभिषेक करने का विशेषफल होता है। स्वर्ण दान तथा तिल से भरे पात्र का दान करना अक्षय फल देता है। इस दिन श्रीआदित्यहृदयस्तोत्र के पाठ करें और भगवान् श्रीसूर्यनारायण को तांबे के कलश में लाल चन्दन, लाल पुष्प, चावल, तिल डालकर अर्घ्य देवें। *अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणः। तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः ॥* – गीता८/२४

मकर राशि में सूर्य के प्रवेश के साथ ही देवमार्ग खुलता है। अनेक आकाशीय वीथियों का वर्णन वैदिक वांग्मय में वर्णित है। उत्तरायण शुभ आत्मा का सहचर पथ है। इस पथ पर आरूढ़ आत्मा भटकती नहीं, शुभलोक में जाती है।

स्कन्दपुराण में वर्णित श्रीसूर्यनारायण की स्तुति श्रीजयादित्य अष्टकम् के १२०० पाठ करने से सूर्य भगवान् प्रसन्न होते हैं व सूर्यजनित अशुभ फल, विशेषतः त्वचा, नेत्र सम्बन्धी रोग–व्याधि, धन, राजकार्य आदि समस्या में लाभ होता है।

❀ षट्तिला एकादशी – माघ कृष्ण एकादशी को प्रातः स्नान करके '**श्रीकृष्ण**' इस मन्त्र के ८, २८, १०८ या १००० जप करे। उपवास रखे। रात्रि में जागरण और हवन करे। भगवान का पूजन करे और '**सुब्रह्मण्य नमस्तेऽस्तु महापुरुषपूर्वज । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं लक्ष्म्या सह जगत्पते ॥**' इस मन्त्र से अर्घ्य दे। 'षट्तिला' एकादशी में १. तिलों के जल से स्नान करे, २. पिसे हुए तिलों का उबटन करे, ३. तिलों का हवन करे, ४. तिल मिला हुआ जल पीये, ५. तिलों का दान करे और ६. तिलों के बने (लड्डू, बर्फी आदि) का भोजन करे तो पापों का नाश हो जाता है।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

जनवरी	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१४	१२:०४	१३:४०	१५:३५	१७:४९	२०:१०	२२:२६	००:४१	०३:००	०५:१९	०७:२४	०९:०९	१०:३८
१५	१२:००	१३:३६	१५:३१	१७:४५	२०:०६	२२:२२	००:३७	०२:५६	०५:१५	०७:२०	०९:०५	१०:३४
१६	११:५६	१३:३२	१५:२७	१७:४१	२०:०२	२२:१८	००:३३	०२:५२	०५:११	०७:१६	०९:०१	१०:३०
१७	११:५२	१३:२८	१५:२३	१७:३८	१९:५८	२२:१४	००:२९	०२:४८	०५:०७	०७:१२	०८:५७	१०:२६
१८	११:४८	१३:२४	१५:१९	१७:३४	१९:५४	२२:१०	००:२५	०२:४४	०५:०३	०७:०८	०८:५३	१०:२२
१९	११:४४	१३:२०	१५:१५	१७:३०	१९:५०	२२:०६	००:२१	०२:४०	०४:५९	०७:०४	०८:४९	१०:१८
२०	११:४०	१३:१६	१५:११	१७:२६	१९:४६	२२:०२	००:१७	०२:३६	०४:५५	०७:००	०८:४५	१०:१४
२१	११:३६	१३:१२	१५:०७	१७:२२	१९:४२	२१:५८	००:१३	०२:३२	०४:५१	०६:५६	०८:४१	१०:१०
२२	११:३२	१३:०८	१५:०४	१७:१८	१९:३८	२१:५४	००:०९	०२:२८	०४:४७	०६:५३	०८:३७	१०:०६
२३	११:२८	१३:०४	१५:००	१७:१४	१९:३४	२१:५०	००:०५	०२:२४	०४:४३	०६:४९	०८:३३	१०:०२
२४	११:२४	१३:००	१४:५६	१७:१०	१९:३०	२१:४७	००:०२	०२:२०	०४:३९	०६:४५	०८:२९	०९:५८
२५	११:२०	१२:५६	१४:५२	१७:०६	१९:२६	२१:४३	२३:५८	०२:१६	०४:३५	०६:४१	०८:२५	०९:५४
२६	११:१६	१२:५२	१४:४८	१७:०२	१९:२२	२१:३९	२३:५४	०२:१२	०४:३१	०६:३७	०८:२१	०९:५०
२७	११:१२	१२:४८	१४:४४	१६:५८	१९:१८	२१:३५	२३:५०	०२:०९	०४:२७	०६:३३	०८:१७	०९:४६
२८	११:०८	१२:४४	१४:४०	१६:५४	१९:१४	२१:३१	२३:४६	०२:०५	०४:२३	०६:२९	०८:१३	०९:४२
२९	११:०४	१२:४०	१४:३६	१६:५०	१९:१०	२१:२७	२३:४२	०२:०१	०४:१९	०६:२५	०८:०९	०९:३८

जनवरी	卐 सर्वार्थसिद्धि, रवि आदि योग 卐
१४	**अमृत** २७·३२ से
१५	**सिद्ध** २७·४२ तक
१६	**अमृत** २८·२३ तक
१७	**अमृत** २९·३४ तक
१८	**अमृत** ३१·१० से
१९	**सर्वार्थ** अहोरात्र, **रवियोग** १७·२९ से
२०	**सिद्ध** ०९·०८ तक, **रवियोग** १९·५८ तक **दग्ध·नक्षत्र·चि·** १९·५८ से
२१	**अमृत** ११·१७ तक, **सिद्ध** ११·१७ से **द्विपुष्कर** ११·१७ तक
२३	**सिद्ध** १५·२९ से, **सर्वार्थ** २७·३२ से,
२४	**सर्वार्थ** २९·३४ तक, **सिद्ध** १७·१३ से **दग्ध·नक्षत्र·ज्ये·** २९·३४ से,
२५	**अमृत** १८·३२ तक ① **दग्ध·तिथि·१२**
२६	**सर्वार्थ** अहोरात्र, **सिद्ध** १९·२२ से ①

❀ माघमास में स्नान दान व्रत नियम का महत्व ❀

पद्मपुराण के उत्तरखण्ड में माघमास के माहात्म्य का वर्णन करते हुए कहा है कि व्रत, दान और तपस्या से भी भगवान् श्रीहरि को उतनी प्रसन्नता नहीं होती, जितनी कि माघ महीने में स्नानमात्र से होती है। इसलिये स्वर्गलाभ, सभी पापों से मुक्ति और भगवान् वासुदेव की प्रीति प्राप्त करने के लिये प्रत्येक मनुष्य को माघ स्नान करना चाहिये।*(पद्मपुराण)* माघमास में पूर्णिमा को जो व्यक्ति ब्रह्मवैवर्त पुराण दान करता है, उसे ब्रह्मलोक प्राप्ति होती है । *(मत्स्यपुराण ५३/३५)* माघ मास में स्नान, दान, उपवास और भगवान् माधव की पूजा अत्यन्त फलदायी है।

महाभारत के अनुशासनपर्व में कहा है– हे भरतश्रेष्ठ ! माघमास की अमावास्या को प्रयागराज में तीन करोड़ दस हजार अन्य तीर्थों का समागम होता है। जो नियमपूर्वक उत्तम व्रत का पालन करते हुए माघमास में प्रयाग में स्नान करता है, वह सब पापों से मुक्त होकर स्वर्ग में जाता है। *(महा, अनु)* जो माघमास में ब्राह्मणों को तिल दान करता है, वह समस्त जन्तुओं से भरे हुए नरक का दर्शन नहीं करता। जो माघ मास को नियमपूर्वक एक समय के भोजन से व्यतीत करता है, वह धनवान् कुल में जन्म लेकर अपने कुटुम्बीजनों में महत्त्व को प्राप्त होता है। *(महा,अनु)*

माघ शुक्लपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, ३० जनवरी से १२ फरवरी, २०२५ ईस्वी

ग्रहस्थितिः ३०:१:२०२५– वक्री गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः, मार्गी शनिःपूर्वोदितः, वक्री कुजःपूर्वोदितः, मार्गी बुधःपूर्वास्त

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
जनवरी	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	जनवरी	३० जनवरी से १२ फरवरी, २०२५ ईस्वी
३०	१ गु	२५:५४	१७·४०	श्रवण	०३:२८	०८·४२	व्यति·	३३:०६	२०·३३	बव	२५:५४	बाल	५४:०६	२६:४७	७:१९	१८:०२	कुं·३२:४०	२०·२३	ध्वज	३०	**गुप्त नवरात्र आरम्भः**, श्रीमद् वल्लभाचार्य जयन्ती
३१	२ शु	२२:०७	१६·०९	धनि· शत·	०१:४० ५७:२०	०७·५९ ३०:१५	वरी·	२६:५६	१८·०५	कौल	२२:०७	तैति	४९:५५	२६:५०	७:१९	१८:०३	कुंभ	अहोरात्र	धाता	३१	
फरवरी	३ श	१७:३३	१४·१९	पू·भा·	५५:४२	२९·३५	परिघ	२०:०८	१५·२१	गर	१७:३३	वणि	४५:००	२६:५३	७:१८	१८:०४	मी·४१:३५	२३·५६	कालदंड	फरवरी	**गौरी तृतीया**
२	४ र	१२:२१	१२·१४	उ·भा·	५१:५४	२८·०३	शिव	१२:५१	१२·२६	विष	१२:२१	बव	३९:३४	२६:५६	७:१८	१८:०४	मीन	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	२	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी**, उमा चतुर्थी, तिल चौथ
३	५ चं	०६:४४	०९·५९	रेवती	४७:५०	२६·२५	सिद्ध साध्य	०५:१४ ५२:०९	०९·२३ २९:०९	बाल	०६:४४	कौल	३३:४८	२७:००	७:१७	१८:०५	मे·४७:५०	२६·२५	मातङ्ग	३	**श्री वसन्त पंचमी, श्री सरस्वती पूजन**, मदनोत्सव,
४	६ मं ७ मं	००:५२ ५४:०५	०७·३७ २८:५५	अश्वि·	४३:४०	२४·४५	शुभ	४९:३२	२७·०५	तैति	००:५२	गर	२७:५४	२७:०३	७:१७	१८:०६	मेष	अहोरात्र	अमृत	४	**भानुसप्तमी**, मन्दार षष्ठी, श्री देवनारायण जयन्ती
५	८ बु	४९:१५	२६·५८	भरणी	३९:४०	२३·०८	शुक्ल	४१:४९	२४·०१	विष	२२:०५	बव	४९:१५	२७:०७	७:१६	१८:०७	वृ·५३:४२	२८·४५	काण	५	**श्री दुर्गाष्टमी व्रतम्**, श्री भीष्माष्टमी (मध्याह्नव्यापिनी)
६	९ गु	४३:५६	२४·५०	कृत्ति·	३५:६०	२१·३९	ब्रह्म	३४:२४	२१·०१	बाल	१६:३३	कौल	४३:५६	२७:१०	७:१५	१८:०८	वृष	अहोरात्र	लुम्ब	६	**गुप्त नवरात्र समाप्तिः**, महानन्दा नवमी, श्री हरि जयन्ती
७	१० शु	३९:१२	२२·५५	रोहि·	३२:५३	२०·२४	ऐन्द्र	२७:२५	१८·१३	तैति	११:३०	गर	३९:१२	२७:१४	७:१५	१८:०८	वृष	अहोरात्र	मित्र	७	**गुप्त नवरात्रोत्थापन**, मुनि श्री अजीतनाथ जयन्ती (जैन)
८	११ श	३५:१३	२१·१९	मृग·	३०:२९	१९·२६	वैधृ·	२१:०१	१५·३९	वणि	०७:०७	विष	३५:१३	२७:१७	७:१४	१८:०९	मि·०१:३५	०७·५२	वज्र	८	**श्री जया एकादशी (सर्वेषाम्)**, वैधृति पुण्यम्
९	१२ र	३२:०९	२०·०५	आर्द्रा	२८:५९	१८·४९	विष्कु·	१५:१९	१३·२१	बव	०३:३४	बाल	३२:०९	२७:२१	७:१३	१८:१०	मिथुन	अहोरात्र	ध्वांक्ष	९	**श्री भीष्म द्वादशी**, तिलद्वादशी, श्रीवाराह द्वादशी,
१०	१३ चं	३०:१०	१९·१७	पुन·	२८:३२	१८·३७	प्रीति	१०:२५	११·२३	कौल	०१:०२	तैति	३०:१०	२७:२४	७:१३	१८:११	क·१३:३३	१२·३८	धूम्र	१०	**प्रदोष व्रतम्**, मुनि श्री गोरखनाथ जयन्ती
११	१४ मं	२९:२३	१८·५७	पुष्य	२९:१४	१८·५४	आयु·	०६:२७	०९·४७	वणि	२९:२३	विष	५९:२६	२७:२८	७:१२	१८:११	कर्क	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	११	**पूर्णिमा व्रतम्**, श्री रामचरण स्नेही जयन्ती
१२	१५ बु	२९:५२	१९·०८	आश्ले·	३१:११	१९·४०	सौभा·	०३:२७	०८·३४	बव	२९:५२	बाल	६०:००	२७:३२	७:११	१८:१२	सिं·३१:११	१९·४०	राक्षस	१२	**माघी पूर्णिमा (स्नान–दान), माघी पूर्णिमा, होलिका रोपण**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क जनवरी	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः (मा/व) रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः (मा/व) रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
३०	१ गु	०९:१६:००:२८	०९:२२:३२:४३	०२:२८:५८:५८	०९:१३:०८:१३	०१:१८:११:५७	१०:२९:४१:१७	१०:१९:४६:१३	०५:०८:१०:२६	४३:२३:३६	द·१८:२९:०३	–१४:०९	०७:४१
३१	२ शु	०९:१७:०१:३२	१०:०६:१६:५१	०२:२८:३७:३२	०९:१४:५५:१३	०१:१८:१०:१४	११:००:२४:१२	१०:१९:५२:६०	०५:०८:०७:१६	४३:२५:१२	द·१८:१२:२८	–१४:२०	०८:२५
फरवरी	३ श	०९:१८:०२:३६	१०:२०:१३:३७	०२:२८:१६:३५	०९:१६:४२:०५	०१:१८:०८:४३	११:०१:०६:०२	१०:१९:५९:५०	०५:०८:०४:०५	४३:२६:४९	द·१७:५५:३४	–१४:३१	०९:०२
२	४ र	०९:१९:०३:३९	११:०४:२०:४४	०२:२७:५६:१०	०९:१८:२८:४७	०१:१८:०७:२५	११:०१:४६:४३	१०:२०:०६:४२	०५:०८:००:५४	४३:२८:२८	द·१७:३८:२१	–१४:४०	०९:४१
३	५ चं	०९:२०:०४:४०	११:१८:३५:१८	०२:२७:३६:१८	०९:२०:१५:१५	०१:१८:०६:१९	११:०२:२६:१३	१०:२०:१३:३७	०५:०७:५७:४४	४३:३०:०८	द·१७:२०:४९	–१४:४९	१०:५८
४	६ मं	०९:२१:०५:४०	००:०२:५४:०५	०२:२७:१७:०२	०९:२२:०१:२८	०१:१८:०५:२६	११:०३:०४:२९	१०:२०:२०:३४	०५:०७:५४:३३	४३:३१:५०	द·१७:०२:५९	–१४:५७	१०:५८
५	८ बु	०९:२२:०६:३८	००:१७:१३:२२	०२:२६:५८:२३	०९:२३:४७:२०	०१:१८:०४:४५	११:०३:४१:२७	१०:२०:२७:३३	०५:०७:५१:२२	४३:३३:३३	द·१६:४४:५१	–१५:०४	११:४२
६	९ गु	०९:२३:०७:३६	०१:०१:२९:१४	०२:२६:४०:२३	०९:२५:३२:५०	०१:१८:०४:१७	११:०४:१७:०५	१०:२०:३४:३५	०५:०७:४८:१२	४३:३५:१७	द·१६:२६:२६	–१५:११	१२:२७
७	१० शु	०९:२४:०८:३२	०१:१५:३८:२३	०२:२६:२३:०४	०९:२७:१७:५३	०१:१८:०४:०१	११:०४:५१:२०	१०:२०:४१:३८	०५:०७:४५:०१	४३:३७:०२	द·१६:०७:४४	–१५:१६	१३:२०
८	११ श	०९:२५:०९:२६	०१:२९:३७:५०	०२:२६:०६:२८	०९:२९:०२:२७	मार्गी १८:०३:५८	११:०५:२४:०८	१०:२०:४८:४४	०५:०७:४१:५०	४३:३८:४९	द·१५:४८:४५	–१५:२१	१४:१४
९	१२ र	०९:२६:१०:२०	०२:१३:२५:०७	मार्गी २५:५०:३५	१०:००:४६:२६	०१:१८:०४:०८	११:०५:५५:२६	१०:२०:५५:५२	०५:०७:३८:४०	४३:४०:३६	द·१५:२९:३१	–१५:२४	१५:१३
१०	१३ चं	०९:२७:११:११	०२:२६:५८:२४	०२:२५:३५:२६	१०:०२:२९:४९	०१:१८:०४:२९	११:०६:२५:१०	१०:२१:०३:०१	०५:०७:३५:२९	४३:४२:२४	द·१५:१०:००	–१५:२७	१६:१३
११	१४ मं	०९:२८:१२:०२	०३:१०:१६:३२	०२:२५:२१:०४	१०:०४:१२:३०	०१:१८:०५:०४	११:०६:५३:१७	१०:२१:१०:१३	०५:०७:३२:१८	४३:४४:१४	द·१४:५०:१५	–१५:२९	१७:१२
१२	१५ बु	०९:२९:१२:५०	०३:२३:१९:०७	०२:२५:०७:२८	१०:०५:५४:२५	०१:१८:०५:५०	११:०७:१९:४२	१०:२१:१७:२६	०५:०७:२९:०८	४३:४६:०४	द·१४:३०:१५	–१५:३०	१८:११

२ फरवरी सूर्योदयकालीन तिथि:**४**

१२ चं शु रा | श ११ | १० सू बु | ९ | ८ | १ | ७ | ४ | २ गु | ६ | ३ मं | ५

८ फरवरी सूर्योदयकालीन तिथि:**११**

माघ शुक्लपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, ३० जनवरी से १२ फरवरी, २०२५ ईस्वी

पक्षान्तः– कालः दक्षिण । ऋतुः शिशिर । उत्तरायणं । याम्यगोलः । ति·१५ अयनांशाः २२:५३:१५

दिनाङ्क जनवरी	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
३०	१ गु	**पंचकारंभः२०:२३**, व्यतीपात पुण्यम्, मीनेशुक्रः घं·१७:४७।
३१	२ शु	**पंचक।**
फरवरी	३ श	**पंचक, भद्रारंभः२५:१९घं·**, पूर्वभाद्रेशनिः घं·०८:०१।
२	४ र	**पंचक, भद्रांतः१२:१५घं·**, तिल चतुर्थी, कुन्द चतुर्थी, ब्रज महोत्सव ३ दिन भरतपुर।
३	५ चं	**पंचकान्तः२६:२५, गण्डान्तारम्भः२०:५०, श्रीगोविन्ददेवजी पाटोत्सव,जयपुर**, रतिकाममहोत्सव।
४	६ मं	**भद्रारंभः२९:१६घं·, गण्डान्तः८:००**, दरिद्रहरण षष्ठी (स्कान्दे), उ·भाद्रेशुक्रः घं·१७:२०, मन्वादि, ①
५	८ बु	**भद्रांतः१६:०६घं·**, भीष्मोद्देशेन श्राद्धतर्पणं, बुधाष्टमी, धनिष्ठायांबुधः घं·०१:१०।
६	९ गु	धनिष्ठायांरविः घं·१२:०९।
७	१० शु	। ① **अचला सप्तमी, रथसप्तमी**, मर्यादा महोत्सव (जैन), मेला तामड़िया भैरूंजी (चाकसू)।
८	११ श	**भद्रा १०:०५–२१:२०घं·**, मेला बेणेश्वर प्रारम्भ १० दिन (डूंगरपुर), मार्गी गुरुः घं·२५:०८, कुम्भेबुधः घं·२०:३५।
९	१२ र	भीष्मोद्देशेन श्राद्धतर्पणं, दीर्घायुलाभाय तिल से विष्णुपूजन, सन्तान द्वादशी, मार्गी मंगलः घं·०७:५७।
१०	१३ चं	विश्वकर्मा जयन्ती, मुनि धर्मनाथ जयन्ती, गुरु हरिराय जयन्ती, मरू महोत्सव ३ दिन (जैसलमेर)।
११	१४ मं	**भद्रा १८:५८–३०:५९घं·**, अग्निउत्सव उड़ीसा, श्री जिनेन्द्र रथयात्रा (जैन)।
१२	१५ बु	**माघस्नान समाप्त, श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी राजराजेश्वरी ललिता जयन्ती**, गुरु रविदास जयन्ती, बेणेश्वर मुख्यमेला डूंगरपुर, **गण्डान्तः१३:२६–२५:५६**, शतभिषायांबुधः घं·१८:०६।

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	१२:१९–१३:४५
१५	१२:२०–१३:४८

❀ वसन्त पञ्चमी सरस्वती पूजन ❀

विद्यार्थी यदि एक पीत पुष्प चढ़ाकर भगवती सरस्वती का कोई स्तोत्र पाठ करले तब भी वह विद्या के क्षेत्र में सफलता को प्राप्त करता है। सरस्वती देवी की आराधना से साधारण व्यक्ति को विशिष्ट प्रतिभा प्राप्त होती है और विशिष्ट बुद्धि वाला अतीन्द्रिय ज्ञान सम्पन्न हो जाता है।

❀ वैदिक मन्त्र ❀

ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञम् वष्टु धिया वसुः ।। *ऋग्वेद १/३/१०*
ॐ चोदयित्री सुनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम्। यज्ञम् दधे सरस्वती ।। *ऋग्वेद १/३/११*
ॐ अम्बितमे नदीतमे देवीतमे सरस्वती। अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तिमम्ब नस्कृधि।। *१/४१/१६*

❀ महर्षि आश्वलायन कृत स्तोत्र ❀

ॐ चतुर्मुख-मुखाम्भोज-वनहंस-वधूर्मम । मानसे रमतां नित्यं सर्वशुक्ला सरस्वती ।।
ॐ नमस्ते शारदे देवि काश्मीर-पुर-वासिनी । त्वामहं प्रार्थये नित्यं विद्यादानं च्र देहि मे ।।
ॐ अक्षसूत्र-धरा पाश- पुस्तक- धारिणी । मुक्ताहार-समायुक्ता वाचि तिष्ठतु मे सदा ।।
ॐ कम्बुकण्ठी सुताम्रोष्ठी सर्वाभरणभूषिता । महासरस्वती देवी जिह्वाग्रे संनिविश्यताम् ।।
ॐ या श्रद्धा धारणा मेधा वाग्देवी विधिवल्लभा। भक्तजिह्वाग्र-सदना शमादि-गुणदायिनी ।।
ॐ नमामि यामिनीनाथ लेखालंकृत-कुन्तलाम् । भवानीं भव- संताप -निर्वापण -सुधानदीम् ।।

❀ सरस्वती - स्तोत्र ❀

या कुन्देन्दु-तुषार-हार-धवला या शुभ्रवस्त्रावृता। या वीणा वर दण्ड मण्डित करा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माच्युत शंकर प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता। सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ।।
शुक्लां ब्रह्म विचारसार परमामाद्यां जगद्व्यापिनीं। वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फटिकमालिकां च दधतीम् पद्मासनेसंस्थितां। वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्।।
सरस्वति महाभागे विद्ये कमल-लोचने । विद्यारूपे विशालाक्षि विद्यां देहि नमोस्तुते ।।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

जनवरी	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
३०	११:००	१२:३६	१४:३२	१६:४६	१९:०६	२१:२३	२३:३८	०१:५७	०४:१६	०६:२१	०८:०५	०९:३४
३१	१०:५६	१२:३२	१४:२८	१६:४२	१९:०२	२१:१९	२३:३४	०१:५३	०४:१२	०६:१७	०८:०१	०९:३०
फरवरी	१०:५२	१२:२८	१४:२४	१६:३८	१८:५८	२१:१५	२३:३०	०१:४९	०४:०८	०६:१३	०७:५७	०९:२७
२	१०:४८	१२:२४	१४:२०	१६:३४	१८:५४	२१:११	२३:२६	०१:४५	०४:०४	०६:०९	०७:५३	०९:२३
३	१०:४५	१२:२०	१४:१६	१६:३०	१८:५०	२१:०७	२३:२२	०१:४१	०४:००	०६:०५	०७:४९	०९:१९
४	१०:४१	१२:१७	१४:१२	१६:२६	१८:४६	२१:०३	२३:१८	०१:३७	०३:५६	०६:०१	०७:४६	०९:१५
५	१०:३७	१२:१३	१४:०८	१६:२२	१८:४३	२०:५९	२३:१४	०१:३३	०३:५२	०५:५७	०७:४२	०९:११
६	१०:३३	१२:०९	१४:०४	१६:१८	१८:३९	२०:५५	२३:१०	०१:२९	०३:४८	०५:५३	०७:३८	०९:०७
७	१०:२९	१२:०५	१४:००	१६:१४	१८:३५	२०:५१	२३:०६	०१:२५	०३:४४	०५:४९	०७:३४	०९:०३
८	१०:२५	१२:०१	१३:५६	१६:१०	१८:३१	२०:४७	२३:०२	०१:२१	०३:४०	०५:४५	०७:३०	०८:५९
९	१०:२१	११:५७	१३:५२	१६:०७	१८:२७	२०:४३	२२:५८	०१:१७	०३:३६	०५:४१	०७:२६	०८:५५
१०	१०:१७	११:५३	१३:४८	१६:०३	१८:२३	२०:३९	२२:५४	०१:१३	०३:३२	०५:३७	०७:२२	०८:५१
११	१०:१३	११:४९	१३:४४	१५:५९	१८:१९	२०:३५	२२:५०	०१:०९	०३:२८	०५:३३	०७:१८	०८:४७
१२	१०:०९	११:४५	१३:४०	१५:५५	१८:१५	२०:३१	२२:४६	०१:०५	०३:२४	०५:२९	०७:१४	०८:४३

जनवरी	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
३१	**रवियोग** ०७·५९ से
१	**रवियोग** २९·३५ तक, **सिद्ध** १४·१९ से
२	**सर्वार्थ** २८·०३ तक, **अमृत** १२·१४ से, **रवियोग** २८·०३ से
३	**अमृत** ०९·५९ तक, **रवियोग** २६·२५ तक, **सिद्ध** ०९·५९ से
४	**सर्वार्थ** २४·४५ तक, **अमृत** ०७·३७ से, **सिद्ध** ०७·३७ से
५	**सर्वार्थ** २३·०८ से, **रवियोग** २३·०८ २३·०८ से
६	**रवियोग** अहोरात्र, **सिद्ध** २४·५० से
७	**रवियोग** अहोरात्र, **सिद्ध** २२·५५ से
८	**अमृत** २१·१९ तक, **रवियोग** १९·२६ तक
९	**त्रिपुष्कर** १८·४९ से २०·०५ तक, **सिद्ध** २०·०५ से ①
१०	**सर्वार्थ** १८·३७ से, **रवियोग** १८·३७ से
११	**रवियोग** १८·५४ तक, **सर्वार्थ** १८·५४ से
१२	**अमृत** १९·०८ से ① **दग्ध·तिथि·१२** २०·०५ तक

❀ **माघ शुक्ल प्रतिपदा से नवमी** तक **गुप्त नवरात्रि** की आराधना चलती है।

❀ कुंदचतुर्थी, **तिलचतुर्थी** में गणेश जी को तिल का लड्डू चढ़ाया जाता है। गौरी माता को कुंद अर्पित किया जाता है।

❀**माघ शुक्ल पञ्चमी** के दिन विद्या की अधिष्ठात्री भगवती सरस्वती का पूजन करें। नैवेद्य भी अधिकाधिक पीले व्यंजनों का भोग लगावें। **वसंत पंचमी** के दिन से संवत् होलिका गाड़कर उसमें ईंधन डालने की प्रक्रिया लोक में शुरू होती है जो होलिकादाह के दिन जलाई जाती है।

❀**माघी पूर्णिमा** को कल्पवास की समाप्ति व भगवती ललिता महात्रिपुरसुन्दरी की जयन्ती मनाई जाती है। माघी पूर्णिमा को पितृलोक का द्वार खुला रहता है, इस दिन दान–धर्म, श्राद्ध–तर्पण का अपूर्व महत्व है। माघ स्नान और दान का मास है।

फाल्गुन कृष्णपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, १३ फरवरी से २८ फरवरी, २०२५ ईस्वी

ग्रहस्थितिः १३:२:२०२५– मार्गी गुरुःपूर्वोदितः, मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः, मार्गी शनिःपूर्वोदितः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, मार्गी बुधःपश्चिमोदितः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	ॐ व्रत–पर्व–उत्सव ॐ
फरवरी	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	फरवरी	१३ फरवरी से २८ फरवरी, २०२५
१३	१ गु	३१:३९	१९·५०	मघा	३४:२३	२०·५६	शोभ·	०१:२७	०७·४६	बाल	००:३७	कौल	३१:३९	२७:३५	७:११	१८:१३	सिंह	अहोरात्र	मुसल	१३	
१४	२ शु	३४:३९	२१·०१	पू·फा·	३८:४४	२२·४०	अतिग·	००:२५	०७·२०	तैति	०३:०१	गर	३४:३९	२७:३९	७:१०	१८:१४	कं·५४:५९	२९·१०	सिद्धि	१४	
१५	३ श	३८:४३	२२·३८	उ·फा·	४४:०७	२४·४८	सुकर्मा	००:१७	०७·१६	वणि	०६:३४	विष	३८:४३	२७:४३	७:०९	१८:१४	कन्या	अहोरात्र	उत्पात	१५	कल्पादि
१६	४ र	४३:३७	२४·३५	हस्त	५०:१५	२७·१४	धृति	००:५३	०७·३०	बव	११:०६	बाल	४३:३७	२७:४७	७:०८	१८:१५	कन्या	अहोरात्र	मानस	१६	**संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय घं· २१:४७**
१७	५ चं	४८:५८	२६·४३	चित्रा	५६:४७	२९·५०	शूल	०२:०१	०७·५६	कौल	१६:१६	तैति	४८:५८	२७:५०	७:०८	१८:१६	तु·२३:३०	२८·३२	मुद्गर	१७	श्रीमहाकाल शिवनवरात्र महोत्सव (उज्जैन)
१८	६ मं	५४:२२	२८·५१	स्वाती	६०:००	अहोरात्र	गण्ड	०३:२५	०८·२९	गर	२१:४२	वणि	५४:२२	२७:५४	७:०७	१८:१७	तुला	अहोरात्र	ध्वज	१८	
१९	७ बु	५९:२०	३०·५०	स्वाती	०३:२०	०८·२६	वृद्धि	०४:४७	०९·०१	विष	२६:५६	बव	५९:२०	२७:५८	७:०६	१८:१७	वृश्·५२:५६	२८·१६	धूम्र	१९	
२०	८ गु	६०:००	अहोरात्र	विशा·	०९:२५	१०·५१	ध्रुव	०५:४७	०९·२४	बाल	३१:३५	कौल	६०:००	२८:०२	७:०५	१८:१८	वृश्चिक	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	२०	**श्रीकालाष्टमी**, श्रीनाथजी पाटोत्सव (नाथद्वारा)
२१	८ शु	०३:३५	०८·३०	अनु·	१४:४४	१२·५८	व्याघ·	०६:१२	०९·३३	कौल	०३:३५	तैति	३५:१८	२८:०६	७:०४	१८:१९	वृश्चिक	अहोरात्र	राक्षस	२१	
२२	९ श	०६:४५	०९·४५	ज्ये·	१९:००	१४·३९	हर्षण	०५:४९	०९·२३	गर	०६:४५	वणि	३७:५३	२८:१०	७:०३	१८:१९	ध·१९:००	२६·३९	मुसल	२२	समर्थ गुरु रामदास जयन्ती
२३	१० र	०८:४३	१०·३२	मूल	२२:०७	१५·५३	वज्र	०४:३२	०८·५१	विष	०८:४३	बव	३९:१२	२८:१४	७:०२	१८:२०	धनु	अहोरात्र	सिद्धि	२३	स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती (आर्यसमाज)
२४	११ चं	०९:२३	१०·४७	पू·षा·	२३:५८	१६·३६	सिद्धि व्यती	०२:१५ ५६:४२	०७·५६ २९:४२	बाल	०९:२३	कौल	३९:१३	२८:१८	७:०१	१८:२१	ध·३९:१३	२२·४३	उत्पात	२४	**श्री विजया एकादशी (सर्वेषाम्)**
२५	१२ मं	०८:४६	१०·३१	उ·षा·	२४:३५	१६·५०	वरी·	५४:४३	२८·५४	तैति	०८:४६	गर	३७:५९	२८:२२	७:००	१८:२१	मकर	अहोरात्र	मानस	२५	**भौम प्रदोष व्रतम्**
२६	१३ बु	०६:५७	०९·४६	श्रवण	२४:०३	१६·३७	परिघ	४९:३७	२६·५०	वणि	०६:५७	विष	३५:३६	२८:२६	६:५९	१८:२२	कुं·५३:२१	२८·२०	छत्र	२६	**श्रीमहाशिवरात्रि व्रतम् सर्वत्रशिवपूजन–अभिषेक**
२७	१४ गु	०४:०१	०८·३५	धनि·	२२:२८	१५·५८	शिव	४३:४३	२४·२८	शकु	०४:०१	चतु	३२:१०	२८:३०	६:५९	१८:२३	कुंभ	अहोरात्र	श्रीवत्स	२७	**अमावस्या (पितृकार्य)**
२८	३० शु १ शु	००:०८ ५५:१८	०७·०१ २९:०५	शत·	२०:०१	१४·५८	सिद्ध	३७:१०	२१·४९	नाग	००:०८	किं	२७:५३	२८:३४	६:५८	१८:२३	कुंभ	अहोरात्र	सौम्य	२८	**अमावस्या (देवकार्य)**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क फरवरी	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः (मा/व) रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
१३	१ गु	१०:००:१३:३८	०४:०६:०६:३२	०२:२४:५४:४०	१०:०७:३५:३०	०१:१८:०६:५०	११:०७:४४:२२	१०:२१:२४:४०	०५:०७:२५:५७	४३:४७:५५	द·१४:०९:६०	–१५:३१	१९:०७
१४	२ शु	१०:०१:१४:२३	०४:१८:३९:५५	०२:२४:४२:४०	१०:०९:१५:४१	०१:१८:०८:०१	११:०८:०७:१३	१०:२१:३१:५७	०५:०७:२२:४६	४३:४९:४८	द·१३:४९:३१	–१५:३०	२०:०१
१५	३ श	१०:०२:१५:०७	०५:०१:०१:०५	०२:२४:३१:३०	१०:१०:५४:५२	०१:१८:०९:२५	११:०८:२८:१२	१०:२१:३९:१५	०५:०७:१९:३६	४३:५१:४०	द·१३:२८:४९	–१५:२९	२०:५५
१६	४ र	१०:०३:१५:५०	०५:१३:१२:३०	०२:२४:२१:०८	१०:१२:३२:५९	०१:१८:११:०१	११:०८:४७:१३	१०:२१:४६:३४	०५:०७:१६:२५	४३:५३:३४	द·१३:०७:५४	–१५:२७	२१:४७
१७	५ च	१०:०४:१६:३१	०५:२५:१७:०६	०२:२४:११:३६	१०:१४:०९:५६	०१:१८:१२:५०	११:०९:०४:१३	१०:२१:५३:५५	०५:०७:१३:१५	४३:५५:२९	द·१२:४६:४६	–१५:२४	२२:३९
१८	६ म	१०:०५:१७:१०	०६:०७:१८:१४	०२:२४:०२:५४	१०:१५:४५:३६	०१:१८:१४:५१	११:०९:१९:०९	१०:२२:०१:१७	०५:०७:१०:०४	४३:५७:२४	द·१२:२५:२६	–१५:२१	२३:३२
१९	७ बु	१०:०६:१७:४८	०६:१९:१९:४६	०२:२३:५५:०३	१०:१७:१९:५५	०१:१८:१७:०३	११:०९:३१:५५	१०:२२:०८:४१	०५:०७:०६:५३	४३:५९:१९	द·१२:०३:५४	–१५:१६	२४:२६
२०	८ गु	१०:०७:१८:२३	०७:०१:२५:२६	०२:२३:४८:०१	१०:१८:५२:४५	०१:१८:१९:२८	११:०९:४२:२९	१०:२२:१६:०५	०५:०७:०३:४३	४४:०१:१६	द·११:४२:११	–१५:११	२५:२१
२१	८ शु	१०:०८:१८:५७	०७:१३:३८:२९	०२:२३:४१:४९	१०:२०:२३:५९	०१:१८:२२:०५	११:०९:५०:४६	१०:२२:२३:३१	०५:०७:००:३२	४४:०३:१३	द·११:२०:१७	–१५:०५	२६:१६
२२	९ श	१०:०९:१९:३०	०७:२६:०१:४९	०२:२३:३६:२७	१०:२१:५३:३१	०१:१८:२४:५४	११:०९:५६:४३	१०:२२:३०:५८	०५:०६:५७:२१	४४:०५:१०	द·१०:५८:१३	–१४:५९	२७:११
२३	१० र	१०:१०:२०:००	०८:०८:३७:४५	०२:२३:३१:५५	१०:२३:२१:११	०१:१८:२७:५५	वक्री१०:००:१६	१०:२२:३८:२६	०५:०६:५४:११	४४:०७:०९	द·१०:३५:५८	–१४:५२	२८:०१
२४	११ च	१०:११:२०:२९	०८:२१:२७:५९	०२:२३:२८:१३	१०:२४:४६:५२	०१:१८:३१:०८	११:१०:०१:२३	१०:२२:४५:५४	०५:०६:५१:००	४४:०९:०७	द·१०:१३:३४	–१४:४४	२८:५१
२५	१२ म	१०:१२:२०:५६	०९:०४:३३:३१	०२:२३:२५:१९	१०:२६:१०:२४	०१:१८:३४:३२	११:१०:००:०१	१०:२२:५३:२४	०५:०६:४७:४९	४४:११:०६	द·०९:५१:००	–१४:३५	२९:३६
२६	१३ बु	१०:१३:२१:२१	०९:१७:५४:३५	०२:२३:२३:१५	१०:२७:३१:३७	०१:१८:३८:०८	११:०९:५६:०८	१०:२३:००:५४	०५:०६:४४:३९	४४:१३:०६	द·०९:२८:१८	–१४:२६	३०:१९
२७	१४ गु	१०:१४:२१:४४	१०:०१:३०:३७	०२:२३:२१:५८	१०:२८:५०:२२	०१:१८:४१:५५	११:०९:४९:४१	१०:२३:०८:२५	०५:०६:४१:२८	४४:१५:०६	द·०९:०५:२७	–१४:१६	३०:५८
२८	३० शु	१०:१५:२२:०५	१०:१५:२०:२२	०२:२३:२१:२९	११:००:०६:२७	०१:१८:४५:५४	११:०९:४०:४१	१०:२३:१५:५६	०५:०६:३८:१७	४४:१७:०६	द·०८:४२:२९	–१४:०६	०७:३६

१६ फरवरी सूर्योदयकालीन तिथिः४
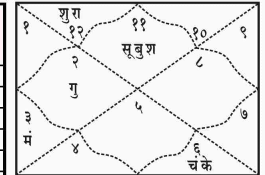
२४ फरवरी सूर्योदयकालीन तिथिः११
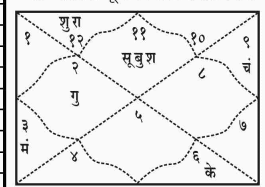
फाल्गुन कृष्णपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, १३ फरवरी से २८ फरवरी, २०२५ ईस्वी

पक्षान्तः– कालः दक्षिण । ऋतुः शिशिर । उत्तरायणं । याम्यगोलः । तिः३० अयनांशाः २२:५३:१७

दिनाङ्क फरवरी	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
१३	१ गु	**कुम्भ संक्रान्ति पुण्यकालं ७:११–१२:४२घं·**, कुम्भेरविःघं·०१:४८।
१४	२ शु	मासादिः।
१५	३ श	**भद्रा ९:४७–२२:३९घं·**।
१६	४ र	।
१७	५ चं	।
१८	६ मं	**भद्रारंभः२८:५२घं·**, ।
१९	७ बु	**भद्रांतः१७:५३घं·**, शतभिषायांरविःघं·१५:५४।
२०	८ गु	सीताष्टमी, अष्टका श्राद्ध।
२१	८ शु	पूर्वभाद्रेबुधःघं·००:५१।
२२	९ श	**भद्रारंभः२२:१३घं·, गण्डान्तः८:१७–२१:०१**।
२३	१० र	**भद्रांतः१०:३२घं·**, वक्री शुक्रःघं·२०:५८।
२४	११ चं	व्यतीपात पुण्यम्।
२५	१२ मं	**अभिजितः१०:४९–१८:२६**।
२६	१३ बु	**पंचकारंभः२८:२०, भद्रा ९:४७–२१:१४घं·**, वीर सावरकर पुण्यतिथि।
२७	१४ गु	**पंचक**, बैद्यनाथ जयन्ती।
२८	३० शु	**पंचक**, मीनेबुधःघं·०५:२०।

ति	**श्राद्धकालं** घं·मि·
१	१२:२०–१३:४८
३०	१२:१८–१३:४९

❀ श्रीशिवपंचाक्षरी मन्त्रप्रयोगविधिः ❀

❀ **विनियोगः**– ॐ अस्य श्रीशिवपंचाक्षरीमंत्रस्य वामदेव ऋषिः, पंक्तिः छन्दः शिवो देवता, मं बीजं, यं शक्तिः, वां कीलकं, सदाशिवकृपाप्रसादोपलब्धिपूर्वक अखिलपुरुषार्थ सिद्धये जपे विनियोगः ।

❀ **ऋष्यादिन्यासः** ॐ अस्य श्रीशिवपंचाक्षरीमंत्रस्य वामदेवर्षये नमः– शिरसि। ॐ पंक्तिछन्दसे नमः– मुखे। ॐ शिवाय देवतायै नमः– हृदये। ॐ मं बीजाय नमः– गुह्ये। ॐ यं शक्तये नमः– पादयोः। ॐ वां कीलकाय नमः– नाभौ। ॐ सदाशिव कृपाप्रसादोपलब्धिपूर्वक अखिलपुरुषार्थसिद्धये जपे विनियोगाय नमः– सर्वांगे।

❀ **अथ करन्यासः**ॐ ॐ नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ नं नमः तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ मं नमः मध्यमाभ्यां नमः। ॐ शिं नमः अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ वां नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ यं नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

❀ **अथ हृदयादिन्यासः** ॐ ॐ नमः हृदयाय नमः। ॐ नं नमः शिरसे स्वाहा। ॐ मं नमः शिखायै वषट्। ॐ शिं नमः कवचाय हुम्। ॐ वां नमः नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ यं नमः अस्त्राय फट्। ॐ भूर्भुवःस्वरोमिति दिग्बन्धः।

❀ **अथ ध्यानम् :** ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं। रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नं। पद्मासीनं समन्तात्स्तुतम् अमरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं। विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं।

❀ **श्रीशिव पंचाक्षर मन्त्रः– ॐ नमः शिवाय**

❀ फाल्गुन मास कृत्य ❀

❀ **महाशिवरात्रि व्रत**– फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को मध्यरात्रि में चतुर्दशी विद्यमान् होने पर महाशिवरात्रि व्रत होता है। यह त्रयोदशी विद्धा श्रेष्ठ होती है– ***पूर्वविद्धैवकर्तव्याशिवरात्रिः*** *(निर्णयसिन्धु)*। १. यदि दोनों दिन अर्धरात्रि में चतुर्दशी न हो तब दूसरे दिन व्रत करे। २. यदि दोनों दिन अर्धरात्रि में चतुर्दशी हो तो पूर्व दिन व्रत करे। ऐसा हेमाद्रि और कौस्तुभ का वचन है। ३. परातिथि अर्थात् चतुर्दशी उदया में ही महाशिवरात्रि करनी चाहिए यह मत माधव, निर्णयसिन्धु और पुरुषार्थचिन्तामणि आदि बहुतों का है। ४. यदि पूर्व दिन मध्यरात्रि में चतुर्दशी हो, दूसरे दिन मध्यरात्रि में न हो तो पूर्वदिन ही व्रत करना चाहिए। ५. पूर्व मध्यरात्रि में न हो और अगले दिन मध्यरात्रि में चतुर्दशी हो तो पर (अगले) दिन ही व्रत करना चाहिए। ६. महाशिवरात्रि की पारणा चतुर्दशी में ही की जाती है।

यह व्रत नित्य और काम्य दोनों है अर्थात् इसे प्रतिवर्ष शिव की आराधना के रूप में किया जा सकता है। साथ ही पुत्र प्राप्ति तथा दीर्घायु प्राप्ति की कामना से भी इसे किया जाता है। काम्य व्रत में १२ वर्ष अथवा २४ वर्ष का संकल्प लिया जाता है– ***एवमेतद् व्रतं कुर्यात् प्रतिसंवत्सरं व्रती। द्वादशाब्दिकमेव स्याच्चतुर्विंशाब्दिकं तु वा।।***

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

फरवरी	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१३	१०:०५	११:४१	१३:३६	१५:५१	१८:११	२०:२७	२२:४२	०१:०१	०३:२०	०५:२५	०७:१०	०८:३९
१४	१०:०१	११:३७	१३:३३	१५:४७	१८:०७	२०:२३	२२:३८	००:५७	०३:१६	०५:२१	०७:०६	०८:३५
१५	०९:५७	११:३३	१३:२९	१५:४३	१८:०३	२०:१९	२२:३४	००:५३	०३:१२	०५:१७	०७:०२	०८:३१
१६	०९:५३	११:२९	१३:२५	१५:३९	१७:५९	२०:१५	२२:३०	००:४९	०३:०८	०५:१४	०६:५८	०८:२७
१७	०९:४९	११:२५	१३:२१	१५:३५	१७:५५	२०:११	२२:२६	००:४५	०३:०४	०५:१०	०६:५४	०८:२३
१८	०९:४५	११:२१	१३:१७	१५:३१	१७:५१	२०:०८	२२:२२	००:४१	०३:००	०५:०६	०६:५०	०८:१९
१९	०९:४१	११:१७	१३:१३	१५:२७	१७:४७	२०:०४	२२:१९	००:३७	०२:५६	०५:०२	०६:४६	०८:१५
२०	०९:३७	११:१३	१३:०९	१५:२३	१७:४३	२०:००	२२:१५	००:३३	०२:५२	०४:५८	०६:४२	०८:११
२१	०९:३३	११:०९	१३:०५	१५:१९	१७:३९	१९:५६	२२:११	००:२९	०२:४८	०४:५४	०६:३८	०८:०७
२२	०९:२९	११:०५	१३:०१	१५:१५	१७:३५	१९:५२	२२:०७	००:२५	०२:४४	०४:५०	०६:३४	०८:०३
२३	०९:२५	११:०१	१२:५७	१५:११	१७:३१	१९:४८	२२:०३	००:२२	०२:४०	०४:४६	०६:३०	०८:००
२४	०९:२१	१०:५७	१२:५३	१५:०७	१७:२७	१९:४४	२१:५९	००:१८	०२:३६	०४:४२	०६:२६	०७:५६
२५	०९:१८	१०:५३	१२:४९	१५:०३	१७:२३	१९:४०	२१:५५	००:१४	०२:३२	०४:३८	०६:२२	०७:५२
२६	०९:१४	१०:५०	१२:४५	१४:५९	१७:१९	१९:३६	२१:५१	००:१०	०२:२९	०४:३४	०६:१८	०७:४८
२७	०९:१०	१०:४६	१२:४१	१४:५५	१७:१५	१९:३२	२१:४७	००:०६	०२:२५	०४:३०	०६:१४	०७:४४
२८	०९:०६	१०:४२	१२:३७	१४:५१	१७:१२	१९:२८	२१:४३	००:०२	०२:२१	०४:२६	०६:१०	०७:४०

फरवरी	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
१५	**सिद्ध** २२·३८ से
१६	**सर्वार्थ** २७·१४ तक, **अमृत** २४·३५ से, **दग्ध·तिथि·४**
१७	**अमृत** २६·४३ तक, **दग्ध·नक्षत्र·चि·** २९·५० तक, **सिद्ध** २६·४३ से, **रवियोग** २९·५० से
१८	**रवियोग** अहोरात्र, **अमृत·** २८·५१ से
१९	**सिद्ध** ३०·५० तक, **रवियोग** अहोरात्र
२०	**अमृत** अहोरात्र, **रवियोग** १०·५१ तक, ①
२१	**सर्वार्थ** १२·५८ तक, **दग्ध·नक्षत्र·ज्ये·**१२·५८ से ②
२२	**सिद्ध** ०९·४५ तक ① **सर्वार्थ** १०·५१ से
२३	**सर्वार्थ** १५·५३ तक, **अमृत** १०·२० तक
२४	**सिद्ध** १०·४७ तक ② **अमृत** ०८·३० से
२५	**अमृत** १०·३१ तक, **त्रिपुष्कर** १०·३१ तक, **दग्ध·नक्षत्र·उषा·** १६·५० तक, **सिद्ध** १०·३१ से
२७	**सिद्ध** ०८·३५ तक
२८	**सिद्ध** ०७·०१ से

❀ फाल्गुन मास का नाम उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के नाम पर पड़ा है। **महाशिवरात्रि** मध्यरात्रिव्यापिनी चतुर्दशी में मानी जाती है। शिवरात्रिव्रत की पारणा चतुर्दशी में ही की जाती है। मध्यरात्रि में शिवशक्ति की पूजा करके पारण किया जाता है। यदि अगले दिन भी चतुर्दशी हो तो अगले दिन पारण करते हैं।

❀ ***नमः प्रदानेन मनः ददासि*** – हे आशुतोष भगवान् शिव शंकर! आप नमः कहते ही अपना मनः (प्रेम) प्रदान कर देते हैं।

❀ ***र व प्रदानेन वरं ददासि*** – हे भगवान् शिव! आप र व शब्द उच्चारण करने पर वर दे देते हैं। ज्ञात हो गाल फुलाकर बकरे की आवाज में गाल बजाने से भगवान् शिव प्रसन्न होते हैं। यह शब्द दक्ष प्रजापति के मुख से निकलने के कारण भूतभावन भगवान् भोलेनाथ को प्रिय है।

फाल्गुन शुक्लपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, १ मार्च से १४ मार्च, २०२५ ईस्वी

ग्रहस्थितिः १:३:२०२५– मार्गी गुरुःपूर्वोदितः, वक्री शुक्रःपश्चिमोदितः, मार्गी शनिःपश्चिमास्तः, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, मार्गी बुधःपश्चिमोदितः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
मार्च	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	मार्च	१ मार्च से १४ मार्च २०२५
१	२ श	५०:१०	२७·०१	पू·भा·	१६:५१	१३·४१	साध्य	३०:०४	१८·५८	बाल	२२:५३	कौल	५०:१०	२८:३८	६:५७	१८:२४	मी·०२:४२	०८·०२	कालदंड	१	पयो व्रतारम्भ, **फूलेरा दौज,**
२	३ र	४४:२८	२४·४३	उ·भा·	१३:१०	१२·११	शुभ	२२:३५	१५·५८	तैति	१७:२३	गर	४४:२८	२८:४२	६:५६	१८:२४	मीन	अहोरात्र	प्रवर्द्ध	२	श्रीखाटूश्यामजी मेला आरम्भ, मधूक तृतीया
३	४ चं	३८:३३	२२·२०	रेवती	०९:०८	१०·३४	शुक्ल	१४:५२	१२·५१	वणि	११:३३	विष	३८:३३	२८:४६	६:५५	१८:२५	मे·०९:०८	१०·३४	मातङ्ग	३	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी,**
४	५ मं	३२:३८	१९·५७	अश्वि·	०४:५९	०८·५३	ब्रह्म ऐन्द्र	०७:०३ ५२:१५	०९·४३ २७:४८	बव	०५:३६	बाल	३२:३८	२८:५०	६:५४	१८:२६	मेष	अहोरात्र	अमृत	४	
५	६ बु	२६:५४	१७·३८	भरणी कृत्तिका	००:५५ ५६:१३	०७·१५ २९:२२	वैधृ·	५१:४९	२७·३६	तैति	२६:५४	गर	५४:०९	२८:५४	६:५३	१८:२६	वृ·१४:५७	१२·५१	काण	५	गोरूपिणी छठ बंगाल, वैधृति पुण्यम्
६	७ गु	२१:३४	१५·२९	रोहि·	५३:५३	२८·२४	विष्कु·	४४:४४	२४·४५	वणि	२१:३४	विष	४९:०५	२८:५८	६:५१	१८:२७	वृष	अहोरात्र	उत्पात	६	कामदा सप्तमी, **होलाष्टक प्रारम्भ,**
७	८ शु	१६:४९	१३·३४	मृग·	५१:१९	२७·२२	प्रीति	३८:११	२२·०७	बव	१६:४९	बाल	४४:४२	२९:०२	६:५०	१८:२७	मि·२२:३१	१५·५१	मानस	७	**श्रीदुर्गाष्टमी,** सन्त दादूदयाल जयन्ती
८	९ श	१२:५०	११·५७	आर्द्रा	४९:३५	२६·४०	आयु·	३२:१८	१९·४५	कौल	१२:५०	तैति	४१:०९	२९:०६	६:४९	१८:२८	मिथुन	अहोरात्र	मुद्गर	८	ब्रज–बरसाना में होली आरम्भ
९	१० र	०९:४६	१०·४३	पुन·	४८:५३	२६·२२	सौभा·	२७:१२	१७·४१	गर	०९:४६	वणि	३८:३७	२९:१०	६:४८	१८:२९	क·३३:५८	२०·२४	ध्वज	९	लट्ठमार होली (नन्दगाँव)
१०	११ चं	०७:४८	०९·५४	पुष्य	४९:२०	२६·३१	शोभ·	२२:६०	१५·५९	विष	०७:४८	बव	३७:१४	२९:१४	६:४७	१८:२९	कर्क	अहोरात्र	धाता	१०	**श्रीआमलकी एकादशी (सर्वेषाम्)**
११	१२ मं	०७:०१	०९·३४	आश्ले·	५०:५९	२७·१०	अतिग·	१९:४५	१४·४०	बाल	०७:०१	कौल	३७:०५	२९:१८	६:४६	१८:३०	सिं·५०:५९	२७·१०	आनन्द	११	**प्रदोष व्रतम्,** खाटूश्यामजी मेला समाप्त
१२	१३ बु	०७:३०	०९·४५	मघा	५३:५४	२८·१९	सुकर्मा	१७:३०	१३·४५	तैति	०७:३०	गर	३८:१३	२९:२३	६:४५	१८:३०	सिंह	अहोरात्र	सुस्थिर	१२	नन्द त्रयोदशी व्रत
१३	१४ गु	०९:१७	१०·२७	पू·फा·	५८:००	२९·५६	धृति	१६:१४	१३·१४	वणि	०९:१७	विष	४०:३७	२९:२७	६:४४	१८:३१	सिंह	अहोरात्र	गद	१३	**पूर्णिमा व्रतम्, होलिका दहन (२२:५९ बाद)**
१४	१५ शु	१२:१६	११·३७	उ·फा·	६०:००	अहोरात्र	शूल	१५:५४	१३·०४	बव	१२:१६	बाल	४४:०९	२९:३१	६:४३	१८:३१	कं·१४:१४	१२·२४	शुभ	१४	**फाल्गुन पूर्णिमा (स्नान–दान), धुलण्डी**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क मार्च	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	वक्री शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
१	२ श	१०:१६:२२:२५	१०:२९:२१:४९	०२:२३:२१:४८	११:०१:१९:४१	०१:१८:५०:०५	११:०९:२९:०६	१०:२३:२३:२९	०५:०६:३५:०७	४४:१९:०७	द·०८:१९:२२	–१३:५५	०७:३५
२	३ र	१०:१७:२२:४२	११:१३:३२:२६	०२:२३:२२:५३	११:०२:२९:५०	०१:१८:५४:२६	११:०९:१४:५६	१०:२३:३१:०१	०५:०६:३१:५६	४४:२१:०८	द·०७:५६:०९	–१३:४३	०८:१४
३	४ चं	१०:१८:२२:५८	११:२७:४९:१०	०२:२३:२४:४४	११:०३:३६:४२	०१:१८:५८:५९	११:०८:५८:१५	१०:२३:३८:३४	०५:०६:२८:४६	४४:२३:०९	द·०७:३२:४९	–१३:३१	०८:५२
४	५ मं	१०:१९:२३:११	००:१२:०८:३५	०२:२३:२७:२१	११:०४:४०:०२	०१:१९:०३:४३	११:०८:३९:०२	१०:२३:४६:०८	०५:०६:२५:३५	४४:२५:११	द·०७:०९:२२	–१३:१९	०९:३४
५	६ बु	१०:२०:२३:२३	००:२६:२६:४५	०२:२३:३०:४२	११:०५:३९:३५	०१:१९:०८:३८	११:०८:१७:२३	१०:२३:५३:४१	०५:०६:२२:२४	४४:२७:१२	द·०६:४५:४९	–१३:०५	१०:१९
६	७ गु	१०:२१:२३:३२	०१:१०:४०:०३	०२:२३:३४:४७	११:०६:३५:०७	०१:१९:१३:४४	११:०७:५३:२२	१०:२४:०१:१५	०५:०६:१९:१४	४४:२९:१४	द·०६:२२:११	–१२:५२	११:०८
७	८ शु	१०:२२:२३:३९	०१:२४:४५:१८	०२:२३:३९:३६	११:०७:२६:२०	०१:१९:१९:०१	११:०७:२७:०४	१०:२४:०८:४९	०५:०६:१६:०३	४४:३१:१७	द·०५:५८:२८	–१२:३८	१२:०३
८	९ श	१०:२३:२३:४५	०२:०८:३९:४३	०२:२३:४५:०७	११:०८:१२:५९	०१:१९:२४:२८	११:०६:५८:३७	१०:२४:१६:२३	०५:०६:१२:५२	४४:३३:१९	द·०५:३४:४०	–१२:२३	१३:००
९	१० र	१०:२४:२३:४८	०२:२२:२१:०७	०२:२३:५१:२०	११:०८:५४:४६	०१:१९:३०:०६	११:०६:२८:०८	१०:२४:२३:५७	०५:०६:०९:४२	४४:३५:२२	द·०५:१०:४८	–१२:०८	१४:००
१०	११ चं	१०:२५:२३:४९	०३:०५:४७:५५	०२:२३:५८:१४	११:०९:३१:२३	०१:१९:३५:५४	११:०५:५५:४८	१०:२४:३१:३१	०५:०६:०६:३१	४४:३७:२५	द·०४:४६:५१	–११:५३	१५:००
११	१२ मं	१०:२६:२३:४८	०३:१८:५९:१९	०२:२४:०५:४८	११:१०:०२:३५	०१:१९:४१:५३	११:०५:२१:४७	१०:२४:३९:०५	०५:०६:०३:२०	४४:३९:२८	द·०४:२२:५१	–११:३७	१६:००
१२	१३ बु	१०:२७:२३:४५	०४:०१:५५:१४	०२:२४:१४:०२	११:१०:२८:०४	०१:१९:४८:०२	११:०४:४६:१७	१०:२४:४६:३९	०५:०६:००:१०	४४:४१:३१	द·०३:५८:४८	–११:२१	१६:५८
१३	१४ गु	१०:२८:२३:४०	०४:१४:३६:२३	०२:२४:२२:५४	११:१०:४७:३६	०१:१९:५४:२१	११:०४:०९:३२	१०:२४:५४:१३	०५:०५:५६:५९	४४:४३:३४	द·०३:३४:४३	–११:०५	१७:५३
१४	१५ शु	१०:२९:२३:३३	०४:२७:०४:१३	०२:२४:३२:२५	११:११:००:५६	०१:२०:००:५०	११:०३:३१:४५	१०:२५:०१:४७	०५:०५:५३:४९	४४:४५:३७	द·०३:१०:३४	–१०:४८	१८:४७

३ मार्च सूर्योदयकालीन तिथि:**२**

१० मार्च सूर्योदयकालीन तिथि:**११**

फाल्गुन शुक्लपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, १ मार्च से १४ मार्च, २०२५ ईस्वी

पक्षान्तः – कालः दक्षिण । ऋतुः शिशिर मीनार्कतः ऋतुःवसन्त । उत्तरायणं । याम्यगोलः । ति·१५ अयनांशाः २२:५३:१९

दिनाङ्क मार्च	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
१	२ श	पंचक।
२	३ र	पंचक, गण्डान्तारम्भः२८:५९, पं· लेखराम जयन्ती।
३	४ चं	पंचकान्तः१०:३४, भद्रा ११:३२–२२:२०घं·, गण्डान्तः१६:०९, ①
४	५ मं	पूर्वभाद्रेरविः घं·२१:३४। ① उत्तरभाद्रेबुधः घं·००:५६।
५	६ बु	।
६	७ गु	भद्रा १५:३०–२६:३०घं·, कल्याणसप्तमी व्रत, अर्कपुटसप्तमी व्रत।
७	८ शु	।
८	९ श	विश्व महिला दिवस।
९	१० र	भद्रारंभः२२:१६घं·, फागु दशमी (उड़ीसा)।
१०	११ चं	भद्रांतः९:५५घं·, रंगभरी एकादशी, मुख्यमेला श्रीखाटूश्यामजी।
११	१२ मं	श्रीगोविन्द द्वादशी, श्रीनृसिंह द्वादशी, गण्डान्तारम्भः२०:५८।
१२	१३ बु	गण्डान्तः९:२४।
१३	१४ गु	भद्रा १०:२७–२२:५९घं·, हुताशनी। ② मीनेरविः घं·२१:२०, पूर्वभाद्रेशुक्रः घं·१४:१३।
१४	१५ शु	श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा, होलिका विभूतिधारणम्, डोलोत्सव, श्रीचैतन्यमहाप्रभु जयन्ती, मन्वादि, गौरीपूजन आरम्भ, हाथीउत्सव जयपुर, होलाष्टक समाप्त, संक्रान्ति पुण्यकालं १२:३७–१८:३१घं·, ③

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	१२:१८–१३:४९
१५	१२:१४–१३:४८

❀ फाल्गुन कृत्य ❀

फाल्गुन पूर्णिमा को भद्रा रहित प्रदोष काल में होलिकादहन का मुख्य काल होता है। यथा *'सा प्रदोष व्यापिनी भद्रा रहिता ग्राह्या'*। होलिका दहन भद्रा, प्रतिपदा और चतुर्दशी में शास्त्रनिषिद्ध है। अतः शास्त्रवचन है कि चतुर्दशी तिथि को मध्याह्न के बाद पूर्णिमा तिथि हो तो भद्रा के उपरांत सूर्योदय के पूर्व भद्रारहित शुद्ध पूर्णिमा मिले तो उसी में होलिकादहन करना चाहिए, इस वर्ष १३ मार्च को १०:२७ पर पूर्णिमा तिथि लग रही है तथा रात्रि में २२:५९ के पश्चात् भद्रा रहित शुद्ध पूर्णिमा मिल रही है, **अतः १३ मार्च को रात्रि में २२:५९ के पश्चात् ही होलिका दहन करना शास्त्रोचित है।**

❀ जयन्ती ❀

कुछ समय से एक अपप्रचार हुआ है कि जयन्ती शब्द केवल मरणशील लोगों के सन्दर्भ में प्रयुक्त होता है। जबकि जयन्ती के अर्थ हैं– पताका, इन्द्र की पुत्री, दुर्गा। जयन्ती – जि जये + शतृ + डीप् अर्थात्– वह जिसकी जय हो। कोई भी अर्थ मर्त्य मानव को सूचित नहीं करता। जयन्ती किसी महत्त्वपूर्ण कार्य के आरंभ/घटित होने की वार्षिक तिथि पर होने वाले उत्सव को कहते हैं। जैसे किसी की जन्मतिथि पर मनाया जानेवाला उत्सव चाहे वह भगवान् हों या मनुष्य। जन्माष्टमी भी जयन्ती–व्रत है।

जयन्त्याम् उपवासश्च महापातकनाशनः। सर्वैः कार्यो महाभक्त्या पूजनीयश्च केशवः।। (भविष्य पुराण, विष्णुधर्मोत्तर०) – *''श्रीकृष्ण जयन्ती का व्रत महापातक का विनाश कर देता है। अतः भक्तिपूर्वक यह व्रत करते हुए भगवान् श्रीकृष्ण का पूजन करें।''* ; *''रोहिणी नक्षत्र संयुक्ता जन्माष्टमी जयन्ती कहलाती है।''* – विष्णुधर्मोत्तर पुराण०। श्रीजीव गोस्वामीजी के मत में तो श्रीकृष्ण जन्माष्टमी ही एकमात्र जयन्ती है।

कलियुग में सात चिरंजीवी शास्त्रों में बताये गये हैं। *'अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः। कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरंजीविनः।।'* इनमें व्यासजी, हनुमानजी व परशुरामजी के जन्मोत्सव शास्त्र में जयन्ती नाम से ही प्रसिद्ध हैं। पराशर सहिंता में ''हनुमान जयन्ती'' का विधान दिया है। अतः श्रीहनुमान जयन्ती आदि अवसरों पर जयन्ती शब्द पर विवाद करना शास्त्रविमुखता का परिचायक है। चिरंजीवी परशुरामजी, हनुमानजी, वेदव्यास जी का जन्मदिवस भी जयंती ही कहलाता हैं। इसलिए जयंती का अर्थ हुआ जन्मोत्सव दिवस। अतः हनुमान जयंती, परशुराम जयंती कहने में कोई दोष नही हैं।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

मार्च	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१	०९:०२	१०:३८	१२:३३	१४:४७	१७:०८	१९:२४	२१:३९	२३:५८	०२:१७	०४:२२	०६:०७	०७:३६
२	०८:५८	१०:३४	१२:२९	१४:४३	१७:०४	१९:२०	२१:३५	२३:५४	०२:१३	०४:१८	०६:०३	०७:३२
३	०८:५४	१०:३०	१२:२५	१४:४०	१७:००	१९:१६	२१:३१	२३:५०	०२:०९	०४:१४	०५:५९	०७:२८
४	०८:५०	१०:२६	१२:२१	१४:३६	१६:५६	१९:१२	२१:२७	२३:४६	०२:०५	०४:१०	०५:५५	०७:२४
५	०८:४६	१०:२२	१२:१७	१४:३२	१६:५२	१९:०८	२१:२३	२३:४२	०२:०१	०४:०६	०५:५१	०७:२०
६	०८:४२	१०:१८	१२:१३	१४:२८	१६:४८	१९:०४	२१:१९	२३:३८	०१:५७	०४:०२	०५:४७	०७:१६
७	०८:३८	१०:१४	१२:१०	१४:२४	१६:४४	१९:००	२१:१५	२३:३४	०१:५३	०३:५८	०५:४३	०७:१२
८	०८:३४	१०:१०	१२:०६	१४:२०	१६:४०	१८:५६	२१:११	२३:३०	०१:४९	०३:५४	०५:३९	०७:०८
९	०८:३०	१०:०६	१२:०२	१४:१६	१६:३६	१८:५२	२१:०७	२३:२६	०१:४५	०३:५०	०५:३५	०७:०४
१०	०८:२६	१०:०२	११:५८	१४:१२	१६:३२	१८:४८	२१:०३	२३:२२	०१:४१	०३:४६	०५:३१	०७:००
११	०८:२२	०९:५८	११:५४	१४:०८	१६:२८	१८:४५	२०:५९	२३:१८	०१:३७	०३:४३	०५:२७	०६:५६
१२	०८:१८	०९:५४	११:५०	१४:०४	१६:२४	१८:४१	२०:५६	२३:१४	०१:३३	०३:३९	०५:२३	०६:५२
१३	०८:१४	०९:५०	११:४६	१४:००	१६:२०	१८:३७	२०:५२	२३:१०	०१:२९	०३:३५	०५:१९	०६:४९
१४	०८:१०	०९:४६	११:४२	१३:५६	१६:१६	१८:३३	२०:४८	२३:०६	०१:२५	०३:३१	०५:१५	०६:४५

मार्च	卐 सर्वार्थसिद्धि, अमृत, रवि आदि योग 卐
१	**त्रिपुष्कर** १३·४१ तक
२	**सर्वार्थ** १२·११ तक, **सिद्ध** २४·४३ तक, **रवियोग** १२·११ से
३	**रवियोग** १०·३४ तक, **अमृत** २२·२० से ①
४	**सर्वार्थ** ०८·५३ तक, **रवियोग** ०८·५३ से
५	**अमृत** १७·३८ तक, **सर्वार्थ** ०७·१५ से, **रवियोग** ०७·१५–२९·२२ से, **सिद्ध** १७·३८ से
६	**अमृत** १५·२९ से ① **दग्ध·तिथि·४** २२·२० तक
७	**अमृत** १३·३४ से, **रवियोग** २७·२२ से
८	**सिद्ध** ११·५७ तक, **रवियोग** अहोरात्र
९	**अमृत** १०·४३ तक, **रवियोग** २६·२२ तक, **सर्वार्थ** २६·२२ से
१०	**सर्वार्थ** २६·३१ तक, **सिद्ध** ०९·५४ तक
११	**सर्वार्थ** २७·१० तक, **अमृत** ०९·३४ तक, **सिद्ध** ०९·३४ से, **रवियोग** २७·१० से
१२	**रवियोग** २८·१९ तक
१३	**सिद्ध** १०·२७ से, **दग्ध·नक्षत्र·उफा·** २९·५६ से
१४	**सिद्ध** ११·३७ से

होलिका पूजन– ढूँढा राक्षसी की तृप्ति के लिए और बाल रक्षा के लिए होलिका की पूजा करे। इसमें संकल्प लें– "मैं सपरिवार ढूंढा नामक राक्षसी के प्रीत्यर्थ, उसकी पीड़ा मुक्ति के लिए होलिका पूजन कर रहा हूँ।" उपला,कण्डा,लकड़ी एकत्रित कर पुष्पादि से पूजाकर अग्निदीपन करे। ***"होलिकायै नमः"***

अस्माभिर्भय संत्रस्तैः कृता त्वं होलिके यतः।
अतस्त्वां पूजयिष्यामि भूते भूति प्रदा भव।

बोलते हुए उसे प्रणाम कर तीन परिक्रमा करे। इसके बाद मन में जो भी आ रहा हो वह गाओ, हँसो, गप्प लड़ाओ, स्वेच्छ से निःशंक होकर अपना मत प्रकट करो। होलिका दहन के बाद होलिका की भस्म धारण करे। आम्र मञ्जरी का भक्षण करे। कच्चा अन्न भूनकर खाए। सायं काल नवीन वस्त्र धारण कर बड़ों, छोटों को अबीर गुलाल लगाकर प्रणाम, आशीर्वाद लिया दिया जाता है। चाण्डाल आदि को गले लगा ले। दूसरे दिन रंग खेले, फाग गाए, गीत नृत्य करे।

चैत्र कृष्णपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, १५ मार्च से २९ मार्च, २०२५ ईस्वी

ग्रहस्थितिः १५:३:२०२५– मार्गी गुरुःपूर्वोदितः, वक्री शुक्रःपश्चिमास्तः, मार्गी शनिःपश्चिमास्त, मार्गी कुजःपूर्वोदितः, वक्री बुधःपश्चिमोदितः

दिनाङ्क	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				दिनमानं	सूर्योदयः	सूर्यास्तः	चन्द्र राशिप्रवेश		आनंदादि	दिनाङ्क	卐 व्रत–पर्व–उत्सव 卐
मार्च	वार	घ·प·	घं:मि	नक्षत्र	घ·प·	घं:मि	योग	घ·प·	घं:मि	क१	घ·प·	क२	घ·प·	घ·प·	घं:मि	घं:मि	राशि घ·प·	घं:मि	योग	मार्च	१५ मार्च से २९ मार्च, २०२५
१५	१ श	१६:१९	१३·१३	उ·फा·	०३:१२	०७·५९	गण्ड	१६:२२	१३·१५	कौल	१६:१९	तैति	४८:३८	२९:३५	६:४२	१८:३२	कन्या	अहोरात्र	उत्पात	१५	**वसन्तोत्सव**, मेला फूलडोल ब्यावर
१६	२ र	२१:०९	१५·०८	हस्त	०९:१२	१०·२१	वृद्धि	१७:२६	१३·३९	गर	२१:०९	वणि	५३:४५	२९:३९	६:४१	१८:३२	तु·४२:२३	२३·३८	मानस	१६	**भैया दूज, श्रीचित्रगुप्त पूजा**, संत तुकाराम जयन्ती
१७	३ चं	२६:२६	१७·१४	चित्रा	१५:४१	१२·५६	ध्रुव	१८:५१	१४·१२	विष	२६:२६	बव	५९:०६	२९:४३	६:४०	१८:३३	तुला	अहोरात्र	मुद्गर	१७	**संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी, चन्द्रोदय घं**·२१:२५
१८	४ मं	३१:४४	१९·२०	स्वाती	२२:१५	१५·३२	व्याघ·	२०:२०	१४·४७	बाल	३१:४४	कौल	६०:००	२९:४७	६:३८	१८:३३	तुला	अहोरात्र	ध्वज	१८	
१९	५ बु	३६:३६	२१·१६	विशा·	२८:२८	१८·०१	हर्षण	२१:३३	१५·१५	कौल	०४:१५	तैति	३६:३६	२९:५१	६:३७	१८:३४	वृश्·११:५८	११·२५	धाता	१९	**रंगपंचमी, श्रीपंचमी**
२०	६ गु	४०:४१	२२·५३	अनु·	३३:५९	२०·१२	वज्र	२२:१५	१५·३०	गर	०८:४६	वणि	४०:४१	२९:५५	६:३६	१८:३५	वृश्चिक	अहोरात्र	आनन्द	२०	**श्रीस्कन्द षष्ठी**, श्रीवनचन्द्र जयन्ती, रांधा पुआ
२१	७ शु	४३:४२	२४·०४	ज्ये·	३८:३०	२१·५९	सिद्धि	२२:१२	१५·२८	विष	१२:२१	बव	४३:४२	२९:५९	६:३५	१८:३५	ध·३८:३०	२१·५९	सुस्थिर	२१	**शीतलाष्टमी, बास्योड़ा**, श्रीप्रेमभाया महोत्सव
२२	८ श	४५:३२	२४·४७	मूल	४१:५४	२३·१९	व्यति·	२१:१५	१५·०४	बाल	१४:४८	कौल	४५:३२	३०:०४	६:३४	१८:३६	धनु	अहोरात्र	गद	२२	**श्रीकालाष्टमी**, व्यतीपात पुण्यम्, ऋषभदेव जयन्ती
२३	९ र	४६:०४	२४·५९	पू·षा·	४४:०२	२४·१०	वरी·	१९:२१	१४·१७	तैति	१५:५९	गर	४६:०४	३०:०८	६:३३	१८:३६	म·५९:२२	३०·१८	शुभ	२३	**भगवान आदिनाथ जयन्ती व तपकल्याणक दिवस**
२४	१० चं	४५:२०	२४·४०	उ·षा·	४४:५६	२४·३०	परिघ	१६:२६	१३·०६	वणि	१५:५२	विष	४५:२०	३०:१२	६:३२	१८:३७	मकर	अहोरात्र	मृत्यु	२४	दशामाता व्रत
२५	११ मं	४३:२३	२३·५२	श्रवण	४४:३९	२४·२२	शिव	१२:३३	११·३२	बव	१४:३१	बाल	४३:२३	३०:१६	६:३१	१८:३७	मकर	अहोरात्र	लुम्ब	२५	**श्रीपापविमोचनी एकादशी (वैष्णव,स्मार्त्त)**
२६	१२ बु	४०:२०	२२·३७	धनि·	४३:१८	२३·४९	सिद्ध	०७:४५	०९·३५	कौल	१२:००	तैति	४०:२०	३०:२०	६:२९	१८:३८	कुं·१४:०७	१२·०८	मित्र	२६	**श्रीपापविमोचनी एकादशी (निम्बार्क)**
२७	१३ गु	३६:२१	२१·०१	शत·	४१:०३	२२·५३	साध्य शुभ	०२:०८ ५३:३९	०७·१९ २७:५६	गर	०८:२८	वणि	३६:२१	३०:२४	६:२८	१८:३८	कुंभ	अहोरात्र	वज्र	२७	**प्रदोष व्रतम्, मासशिवरात्रि व्रतम्**
२८	१४ शु	३१:३६	१९·०५	पू·भा·	३८:०२	२१·४०	शुक्ल	४८:५४	२६·०१	विष	०४:०५	बव	३१:३६	३०:२८	६:२७	१८:३९	मी·२३:५१	१६·०१	ध्वांक्ष	२८	काम महोत्सव
२९	३० श	२६:१४	१६·५६	उ·भा·	३४:२६	२०·१३	ब्रह्म	४१:३४	२३·०४	नाग	२६:१४	किं	५३:२३	३०:३२	६:२६	१८:३९	मीन	अहोरात्र	धूम्र	२९	**सोमवती अमावस्या (देव–पितृकार्य)**

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

दिनाङ्क मार्च	तिथि वार	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः (मा/व) रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	वक्री शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से	चन्द्रोदयः
१५	१ श	११:००:२३:२३	०५:०९:२०:४९	०२:२४:४२:३२	वक्री११:०७:५४	०१:२०:०७:२८	११:०२:५३:११	१०:२५:०९:२२	०५:०५:५०:३८	४४:४७:४०	द·०२:४६:२४	–१०:३१	१९:४०
१६	२ र	११:०१:२३:१२	०५:२१:२८:५३	०२:२४:५३:१६	११:११:०८:२१	०१:२०:१४:१७	११:०२:१४:०६	१०:२५:१६:५६	०५:०५:४७:२७	४४:४९:४३	द·०२:२२:१२	–१०:१४	२०:३२
१७	३ चं	११:०२:२२:५८	०६:०३:३१:३३	०२:२५:०४:३६	११:११:०२:१५	०१:२०:२१:१६	११:०१:३४:४६	१०:२५:२४:३१	०५:०५:४४:१७	४४:५१:४७	द·०१:५७:५९	– ९:५६	२१:२५
१८	४ मं	११:०३:२२:४२	०६:१५:३२:१९	०२:२५:१६:३१	११:१०:४९:३७	०१:२०:२८:२३	११:००:५५:३२	१०:२५:३२:०५	०५:०५:४१:०६	४४:५३:५०	द·०१:३३:४५	– ९:३९	२२:१९
१९	५ बु	११:०४:२२:२३	०६:२७:३५:११	०२:२५:२८:६०	११:१०:३०:३५	०१:२०:३५:४१	११:००:१६:४२	१०:२५:३९:३९	०५:०५:३७:५५	४४:५५:५३	द·०१:०९:३०	– ९:२१	२३:१३
२०	६ गु	११:०५:२२:०३	०७:०९:४३:३८	०२:२५:४२:०२	११:१०:०५:२४	०१:२०:४३:०७	१०:२९:३८:३१	१०:२५:४७:१३	०५:०५:३४:४५	४४:५७:५६	द·००:४५:१५	– ९:०२	२४:०७
२१	७ शु	११:०६:२१:४०	०७:२२:००:४५	०२:२५:५५:३७	११:०९:३४:२७	०१:२०:५०:४३	१०:२९:०१:१४	१०:२५:५४:४७	०५:०५:३१:३४	४४:५९:५९	द·००:२१:००	– ८:४४	२५:०२
२२	८ श	११:०७:२१:१५	०८:०४:२९:१४	०२:२६:०९:४४	११:०८:५८:१७	०१:२०:५८:२८	१०:२८:२५:०७	१०:२६:०२:२०	०५:०५:२८:२३	४५:०२:०२	उ·००:०३:१४	– ८:२६	२५:५४
२३	९ र	११:०८:२०:४८	०८:१७:११:०८	०२:२६:२४:२२	११:०८:१७:३३	०१:२१:०६:२२	१०:२७:५०:२२	१०:२६:०९:५३	०५:०५:२५:१३	४५:०४:०५	उ·००:२७:२७	– ८:०७	२६:४३
२४	१० चं	११:०९:२०:१८	०९:००:०७:५१	०२:२६:३९:३०	११:०७:३३:०५	०१:२१:१४:२५	१०:२७:१७:११	१०:२६:१७:२५	०५:०५:२२:०२	४५:०६:०८	उ·००:५१:३८	– ७:४८	२७:३१
२५	११ मं	११:१०:१९:४७	०९:१३:२०:०४	०२:२६:५५:०९	११:०६:४५:४८	०१:२१:२२:३६	१०:२६:४५:४७	१०:२६:२४:५७	०५:०५:१८:५२	४५:०८:११	उ·०१:१५:४८	– ७:३०	२८:१३
२६	१२ बु	११:११:१९:१२	०९:२६:४७:३९	०२:२७:११:१६	११:०५:५६:४५	०१:२१:३०:५६	१०:२६:१६:१८	१०:२६:३२:२८	०५:०५:१५:४१	४५:१०:१४	उ·०१:३९:५६	– ७:११	२८:५५
२७	१३ गु	११:१२:१८:३६	१०:१०:२९:४७	०२:२७:२७:५२	११:०५:०७:०३	०१:२१:३९:२५	१०:२५:४८:५३	१०:२६:३९:५९	०५:०५:१२:३०	४५:१२:१६	उ·०२:०४:०२	– ६:५२	२९:३२
२८	१४ शु	११:१३:१७:५८	१०:२४:२४:५०	०२:२७:४४:५६	११:०४:१८:०३	०१:२१:४८:०१	१०:२५:२३:४१	१०:२६:४७:२९	०५:०५:०९:२०	४५:१४:१८	उ·०२:२८:०४	– ६:३३	३०:१०
२९	३० श	११:१४:१७:१७	११:०८:३०:३४	०२:२८:०२:२७	११:०३:३०:५२	०१:२१:५६:४७	१०:२५:००:४७	१०:२६:५४:५८	०५:०५:०६:०९	४५:१६:२०	उ·०२:५२:०४	– ६:१४	०६:४८

१८ मार्च सूर्योदयकालीन तिथिः४

२५ मार्च सूर्योदयकालीन तिथिः११
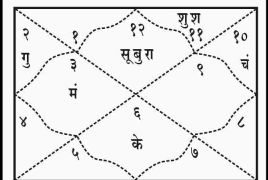
चैत्र कृष्णपक्षः कालयुक्त नाम संवत् २०८१ शाके १९४६, १५ मार्च से २९ मार्च, २०२५ ईस्वी

पक्षान्तः– कालः दक्षिण । ऋतुः वसन्त । उत्तरायणं । याम्यगोलः । ति·३० अयनांशः २२:५३:२१

दिनाङ्क मार्च	तिथि वार	卐 व्रत–पर्वोत्सव भद्रादिविचार नक्षत्रसंचार (स्टै·टा·घं·मि·) 卐
१५	१ श	आम्र पुष्प भक्षण, वक्रीःबुधःघं·१०:१४।
१६	२ र	**भद्रारंभः२८:११घं·**, कलमदान पूजा।
१७	३ चं	**भद्रांतः१७:१४घं·**, छत्रपति शिवाजी जयन्ती (तिथि प्रमाण)।
१८	४ मं	उत्तरभाद्रेरविःघं·०५:३६।
१९	५ बु	कुम्भेशुक्रःघं·१७:३०।
२०	६ गु	**भद्रारंभः२२:५३घं·**, श्रीएकनाथ षष्ठी।
२१	७ शु	**भद्रांतः११:३२घं·**, **गण्डान्तः१५:३५–२८:२३**, मेला शील की डूंगरी चाकसू।
२२	८ श	केसरियाजी मेला मेवाड़।
२३	९ र	।
२४	१० चं	**अभिजितः१८:२८–२६:०७**, **भद्रा १२:५३–२४:४०घं·**।
२५	११ मं	।
२६	१२ बु	**पंचकारंभः१२:०८**, मेला कैलादेवी प्रारम्भ (करौली)।
२७	१३ गु	**पंचक**, **भद्रारंभः२१:०१घं·**, **महावारुणी योग ०७:१९–२१:०१ तक**।
२८	१४ शु	**पंचक**, **भद्रांतः८:०६घं·**, प्रेतत्व मुक्ति हेतु शिवसन्निधि में स्नान।
२९	३० श	**पंचक**, शनैश्चरी अमावस्या, पूर्वभाद्रेबुधःघं·१२:१९।

ति	श्राद्धकालं घं·मि·
१	१२:१४–१३:४८
३०	१२:०९–१३:४६

❀ वास्तुखण्ड जीर्णोद्धार / तोड़ने की संक्षिप्त विधि ❀

अपने भवन वास्तु में किसी कारणवश तोड़फोड़ कराने से वास्तुभङ्ग का दोष लगता है। वास्तु में पहले से स्थित सूक्ष्म जीव, भूत आदि को अकस्मात् उस स्थान से हटाने पर वे अशुभ परिणाम देते देखे जाते हैं। इसलिए भवन में किसी बड़ी तोड़ फोड़ से पूर्व तत्तत् जीवों की प्रसन्नता हेतु बलि विधान वास्तुशास्त्र में बताया गया है। इसका सूक्ष्म रूप निम्न है।

२ इमरती, २ केले, उड़द की सूखी साबुत दाल दही में मिलाकर भिगो लें, इसपर थोड़ा घी भी डाल दें व दूध, दही, अक्षत, जल, खिचड़ी, चावल, जौ अन्न, खीर आदि में से यथाशक्ति लेकर जिस वास्तु को तोड़ना है वहाँ जाएं और एक चार मुँह का दीपक जलाएं। इस सामग्री को तोड़े जाने वाले वास्तुखण्ड में सब स्थानों पर घुमाकर लाएं।

फिर निम्न मन्त्र पढ़कर प्रार्थना करे :-

भूताः पिशाचाः नागाश्च असुराः राक्षसाः ग्रहाः।
सर्वे ते व्यपगच्छन्तु बलितुष्टाः यथा तथम् ।।
देवानां च द्विजानां च स्थानं सम्यक् करोम्यहम्।
वासुदेवस्य देवस्य सर्व भूतात्मकस्य च ।।
यक्षाः पिशाचाः नागाश्च येऽत्र तिष्ठन्ति सर्वदा।
सर्वे प्रयांतु तेऽन्यत्र स्व स्थानं करोम्यहम् ।।
अपक्रामन्तु भूतानि देवताश्च सराक्षसाः।
वासान्तरं व्रजन्त्वस्मात् कुर्यां भूमिपरिग्रहम् ।।
उत्क्रामन्तु पिशाचाः ये भूताः भूमिभागगाः।
ये भूताः विघ्नकर्तारः ते गच्छन्त्वाज्ञया हरेः ।।
अपक्रमान्तु भूतानि पिशाचप्रेतगुह्यकाः।
सर्वेषां अविरोधेन वास्तु कर्म समारभे ।।

प्रार्थना करे – इस भूखंड वास्तु में निवास कर रहे सभी भूत प्रेत, पिशाच, शक्तियाँ डाकिनी शाकिनी, जीव जंतु, समस्त ज्ञात अज्ञात जीवों योनियों से सादर सविनय निवेदन है कि कृपया इस भूखंड वास्तु के इस भाग जिसे तोड़ा जाना है को छोड़कर अन्यत्र अन्य स्थान पर चले जाएं व वहाँ पर सुखपूर्वक निवास करें, व हमारे द्वारा प्रदान की जा रही इस बलि को स्वीकार करके तृप्त होकर जाएं व अशुभता की निवृत्ति करें ताकि इस भूखंड पर बने इस भाग को शान्तिपूर्वक तोड़ा जा सके। हाथ जोड़कर प्रणाम कर लें।

वास्तुखण्ड को तोड़ने हेतु पहला प्रहार सोने की किसी चीज से करें।

इसके बाद वह सब सामग्री और दीपक जलता हुआ ही वास्तु से दूर जाकर कहीं शान्त स्थान पर रख दें, व पीछे मुड़कर न देखें।

दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी । घं·मि भारतीय मानक समयानुसार

मार्च	मेष	वृष्	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१५	०८:०७	०९:४२	११:३८	१३:५२	१६:१२	१८:२९	२०:४४	२३:०३	०१:२१	०३:२७	०५:११	०६:४१
१६	०८:०३	०९:३९	११:३४	१३:४८	१६:०८	१८:२५	२०:४०	२२:५९	०१:१७	०३:२३	०५:०७	०६:३७
१७	०७:५९	०९:३५	११:३०	१३:४४	१६:०४	१८:२१	२०:३६	२२:५५	०१:१३	०३:१९	०५:०३	०६:३३
१८	०७:५५	०९:३१	११:२६	१३:४०	१६:०१	१८:१७	२०:३२	२२:५१	०१:१०	०३:१५	०४:५९	०६:२९
१९	०७:५१	०९:२७	११:२२	१३:३६	१५:५७	१८:१३	२०:२८	२२:४७	०१:०६	०३:११	०४:५५	०६:२५
२०	०७:४७	०९:२३	११:१८	१३:३२	१५:५३	१८:०९	२०:२४	२२:४३	०१:०२	०३:०७	०४:५२	०६:२१
२१	०७:४३	०९:१९	११:१४	१३:२९	१५:४९	१८:०५	२०:२०	२२:३९	००:५८	०३:०३	०४:४८	०६:१७
२२	०७:३९	०९:१५	११:१०	१३:२५	१५:४५	१८:०१	२०:१६	२२:३५	००:५४	०२:५९	०४:४४	०६:१३
२३	०७:३५	०९:११	११:०७	१३:२१	१५:४१	१७:५७	२०:१२	२२:३१	००:५०	०२:५५	०४:४०	०६:०९
२४	०७:३१	०९:०७	११:०३	१३:१७	१५:३७	१७:५३	२०:०८	२२:२७	००:४६	०२:५१	०४:३६	०६:०५
२५	०७:२७	०९:०३	१०:५९	१३:१३	१५:३३	१७:४९	२०:०४	२२:२३	००:४२	०२:४७	०४:३२	०६:०१
२६	०७:२३	०८:५९	१०:५५	१३:०९	१५:२९	१७:४५	२०:००	२२:१९	००:३८	०२:४३	०४:२८	०५:५७
२७	०७:१९	०८:५५	१०:५१	१३:०५	१५:२५	१७:४२	१९:५६	२२:१५	००:३४	०२:३९	०४:२४	०५:५३
२८	०७:१५	०८:५१	१०:४७	१३:०१	१५:२१	१७:३८	१९:५३	२२:११	००:३०	०२:३६	०४:२०	०५:४९
२९	०७:११	०८:४७	१०:४३	१२:५७	१५:१७	१७:३४	१९:४९	२२:०७	००:२६	०२:३२	०४:१६	०५:४५

मार्च	卐 सर्वार्थसिद्धि, त्रिपुष्कर, रवि आदि योग 卐
१५	**अमृत** १३·१३ तक, **दग्ध·तिथि·२** १३·१३ से
१६	**सर्वार्थ** १०·२१ तक, **सिद्ध** १५·०८ से, **द्विपुष्कर** १०·२१ से १५·०८ तक, **दग्ध·तिथि·२**
१९	**सर्वार्थ** १८·०१ से, **अमृत** २१·१६ से
२०	**सर्वार्थ** २०·१२ तक, **रवियोग** २०·१२ से
२१	**रवियोग** २१·५९ तक, **दग्ध·नक्षत्र·ज्ये·** २१·५९ तक
२२	**सिद्ध** २४·४७ से
२३	**सर्वार्थ** २४·१० से, **अमृत** २४·५९ से
२४	**अमृत** २४·४० तक, **सर्वार्थ** २४·३० से, **सिद्ध** २४·४० से
२५	**अमृत** २३·५२ से, **द्विपुष्कर** २४·२२ से
२६	**सिद्ध** २२·३७ तक, **दग्ध·नक्षत्र·धनि·** २३·४९ तक
२७	**अमृत** २१·०१ तक
२८	**अमृत** १९·०५ तक
२९	**अमृत** १६·५६ से, **दग्ध·नक्षत्र·रे·** २०·१३ से

❀ गणगौर पूजन ❀

स्त्रियाँ फाल्गुन पूर्णिमा से चैत्र कृष्णपक्षभर व्रती रहकर चैत्र शुक्ल तृतीया को ईसरजी और ईसरीजी की प्रतिमा में शिव-पार्वती का प्रतिदिन पूजन करती हैं। **स्त्रियाँ गणगौर पूजन के समय यह गीत गाती हैं-** गौर गौर गोमती ईसर पूजे पार्वती
पार्वती का आला-गीला , गौर का सोना का टीका
टीका दे, टमका दे, बालारानी बरत करयो, करता करता आस
आयो, वास आयो, खेरे खांडे लाडू आयो, लाडू ले बीरा ने दियो,
बीरो ले मने पाल दी, पाल को मै बरत करयो,
सन मन सोला, सात कचौला, ईशर गौरा, दोन्यू जोड़ा,
जोड़ ज्वारा, गेंहू ग्यारा, रानी पूजे राज ने, मैं पूजा सुहाग ने,
राण्या को राज बढ़तो जाए, म्हाको सुहाग बढ़तो जाय,
कीड़ी- कीड़ी, कीड़ी ले, कीड़ी थारी जात है, जात है गुजरात है,
गुजरात्यां को पाणी, दे दे थाम्बा ताणी, ताणी में सिंघोड़ा, बाड़ी में भिजोड़ा, म्हारो भाई एम्ल्यो खेमल्यो, सेमल्यो सिंघाड़ा ल्यो, लाडू ल्यो, पेड़ा ल्यो, सेव ल्यो, सिघाड़ा ल्यो,
झरझरती जलेबी ल्यो, हरीहरी दूब ल्यो, गणगौर पूजल्यो
एक, दो, तीन, चार, पाँच, छः, सात, आठ, नौ, दस, ग्यारह,
बारह, तेरह, चौदह, पंद्रह, सोलह....

✻ संवत् 2081, सन् 2024-25 में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ✻

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
7 अप्रैल	22:51 से	उ.भा.	3	झ	मीन	लोहा
8 अप्रैल	04:26 से	उ.भा.	4	ञ	मीन	लोहा
	10:02 से	रेवती	1	दे	मीन	सोना
	15:38 से	रेवती	2	दो	मीन	सोना
	21:15 से	रेवती	3	चा	मीन	सोना
9 अप्रैल	02:52 से	रेवती	4	ची	मीन	सोना
	08:29 से	अश्विनी	1	चू	मेष	सोना
	14:08 से	अश्विनी	2	चे	मेष	सोना
	19:47 से	अश्विनी	3	चो	मेष	सोना
10 अप्रैल	01:26 से	अश्विनी	4	ला	मेष	सोना
	07:06 से	भरणी	1	ली	मेष	सोना
	12:36 से	भरणी	2	लू	मेष	सोना
	18:06 से	भरणी	3	ले	मेष	सोना
	23:36 से	भरणी	4	लो	मेष	सोना
11 अप्रैल	05:06 से	कृत्ति.	1	अ	मेष	सोना
	11:07 से	कृत्ति.	2	ई	वृष	सोना
	17:09 से	कृत्ति.	3	ऊ	वृष	सोना
	23:11 से	कृत्ति.	4	ए	वृष	सोना
12 अप्रैल	05:12 से	रोहिणी	1	ओ	वृष	सोना
	11:06 से	रोहिणी	2	वा	वृष	सोना
	17:00 से	रोहिणी	3	वी	वृष	सोना
	22:54 से	रोहिणी	4	वू	वृष	सोना
13 अप्रैल	04:48 से	मृगशि.	1	वे	वृष	सोना
	10:37 से	मृगशि.	2	वो	वृष	सोना
	16:26 से	मृगशि.	3	का	मिथुन	सोना
	22:15 से	मृगशि.	4	की	मिथुन	सोना
14 अप्रैल	04:05 से	आर्द्रा	1	कू	मिथुन	चाँदी
	10:24 से	आर्द्रा	2	घ	मिथुन	चाँदी
	16:43 से	आर्द्रा	3	ङ	मिथुन	चाँदी
	23:02 से	आर्द्रा	4	छ	मिथुन	चाँदी
15 अप्रैल	05:22 से	पुनर्वसु	1	के	मिथुन	चाँदी
	11:37 से	पुनर्वसु	2	को	मिथुन	चाँदी
	17:53 से	पुनर्वसु	3	ह	मिथुन	चाँदी
16 अप्रैल	00:09 से	पुनर्वसु	4	ही	कर्क	चाँदी
	06:24	पुष्य	1	हू	कर्क	चाँ

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
16 अप्रैल	12:46 से	पुष्य	2	हे	कर्क	चाँदी
	19:09 से	पुष्य	3	हो	कर्क	चाँदी
17 अप्रैल	01:31 से	पुष्य	4	डा	कर्क	चाँदी
	07:54 से	आश्ले	1	डी	कर्क	चाँदी
	14:23 से	आश्ले	2	डू	कर्क	चाँदी
	20:53 से	आश्ले	3	डे	कर्क	चाँदी
18 अप्रैल	03:22 से	आश्ले	4	डो	कर्क	चाँदी
	09:52 से	मघा	1	मा	सिंह	चाँदी
	16:24 से	मघा	2	मी	सिंह	चाँदी
	22:56 से	मघा	3	मू	सिंह	चाँदी
19 अप्रैल	05:28 से	मघा	4	मे	सिंह	चाँदी
	12:01 से	पू.फा.	1	मो	सिंह	चाँदी
	18:41 से	पू.फा.	2	टा	सिंह	चाँदी
20 अप्रैल	01:22 से	पू.फा.	3	टी	सिंह	चाँदी
	08:02 से	पू.फा.	4	टू	सिंह	चाँदी
	14:43 से	उ.फा.	1	टे	सिंह	चाँदी
	21:17 से	उ.फा.	2	टो	कन्या	चाँदी
21 अप्रैल	03:52 से	उ.फा.	3	पा	कन्या	चाँदी
	10:27 से	उ.फा.	4	पी	कन्या	चाँदी
	17:02 से	हस्त	1	पू	कन्या	चाँदी
	23:44 से	हस्त	2	ष	कन्या	चाँदी
22 अप्रैल	06:26 से	हस्त	3	ण	कन्या	चाँदी
	13:08 से	हस्त	4	ठ	कन्या	चाँदी
	19:51 से	चित्रा	1	पे	कन्या	चाँदी
23 अप्रैल	02:25 से	चित्रा	2	पो	कन्या	चाँदी
	08:59 से	चित्रा	3	रा	तुला	चाँदी
	15:33 से	चित्रा	4	री	तुला	चाँदी
	22:07 से	स्वाति	1	रू	तुला	चाँदी
24 अप्रैल	04:35 से	स्वाति	2	रे	तुला	चाँदी
	11:04 से	स्वाति	3	रो	तुला	चाँदी
	17:32 से	स्वाति	4	ता	तुला	चाँदी
25 अप्रैल	00:01 से	विशाखा	1	ती	तुला	ताम्बा
	06:22 से	विशाखा	2	तू	तुला	ताम्बा
	12:44 से	विशाखा	3	ते	तुला	ताम्बा
	19:05 से	विशाखा	4	तो	वृश्चिक	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
26 अप्रैल	01:27 से	अनुराधा	1	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	07:41 से	अनुराधा	2	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	13:56 से	अनुराधा	3	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	20:10 से	अनुराधा	4	ने	वृश्चिक	ताम्बा
27 अप्रैल	02:25 से	ज्येष्ठ	1	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	08:31 से	ज्येष्ठ	2	या	वृश्चिक	ताम्बा
	14:38 से	ज्येष्ठ	3	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	20:45 से	ज्येष्ठ	4	यू	वृश्चिक	ताम्बा
28 अप्रैल	02:52 से	मूल	1	ये	धनु	ताम्बा
	08:51 से	मूल	2	यो	धनु	ताम्बा
	14:51 से	मूल	3	भा	धनु	ताम्बा
	20:51 से	मूल	4	भी	धनु	ताम्बा
29 अप्रैल	02:51 से	पू.षा.	1	भू	धनु	ताम्बा
	08:44 से	पू.षा.	2	धा	धनु	ताम्बा
	14:37 से	पू.षा.	3	फा	धनु	ताम्बा
	20:30 से	पू.षा.	4	ढा	धनु	ताम्बा
30 अप्रैल	02:24 से	उ.षा.	1	भे	धनु	ताम्बा
	08:11 से	उ.षा.	2	भो	मकर	ताम्बा
	13:58 से	उ.षा.	3	जा	मकर	ताम्बा
	19:45 से	उ.षा.	4	जी	मकर	ताम्बा
1 मई	01:33 से	श्रवण	1	खी	मकर	ताम्बा
	07:15 से	श्रवण	2	खू	मकर	ताम्बा
	12:58 से	श्रवण	3	खे	मकर	ताम्बा
	18:41 से	श्रवण	4	खो	मकर	ताम्बा
2 मई	00:24 से	धनिष्ठा	1	गा	मकर	ताम्बा
	06:03 से	धनिष्ठा	2	गी	मकर	ताम्बा
	11:42 से	धनिष्ठा	3	गू	कुम्भ	ताम्बा
	17:21 से	धनिष्ठा	4	गे	कुम्भ	ताम्बा
	23:01 से	शतभिषा	1	गो	कुम्भ	ताम्बा
3 मई	04:37 से	शतभिषा	2	सा	कुम्भ	ताम्बा
	10:13 से	शतभिषा	3	सी	कुम्भ	ताम्बा
	15:49 से	शतभिषा	4	सू	कुम्भ	ताम्बा
	21:25 से	पू.भा.	1	से	कुम्भ	लोहा
4 मई	03:00 से	पू.भा.	2	सो	कुम्भ	लोहा
	08:35 से	पू.भा.	3	दा	कुम्भ	लोहा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
4 मई	14:10 से	पू.भा.	4	दी	मीन	लोहा
	19:45 से	उ.भा.	1	दू	मीन	लोहा
5 मई	01:20 से	उ.भा.	2	थ	मीन	लोहा
	06:55 से	उ.भा.	3	झ	मीन	लोहा
	12:30 से	उ.भा.	4	ञ	मीन	लोहा
	18:05 से	रेवती	1	दे	मीन	सोना
	23:49 से	रेवती	2	दो	मीन	सोना
6 मई	05:34 से	रेवती	3	चा	मीन	सोना
	11:18 से	रेवती	4	ची	मीन	सोना
	17:03 से	अश्विनी	1	चू	मेष	सोना
	22:33 से	अश्विनी	2	चे	मेष	सोना
7 मई	04:04 से	अश्विनी	3	चो	मेष	सोना
	09:34 से	अश्विनी	4	ला	मेष	सोना
	15:05 से	भरणी	1	ली	मेष	सोना
	20:47 से	भरणी	2	लू	मेष	सोना
8 मई	02:29 से	भरणी	3	ले	मेष	सोना
	08:11 से	भरणी	4	लो	मेष	सोना
	13:54 से	कृत्ति.	1	अ	मेष	सोना
	19:41 से	कृत्ति.	2	ई	वृष	सोना
9 मई	01:28 से	कृत्ति.	3	ऊ	वृष	सोना
	07:15 से	कृत्ति.	4	ए	वृष	सोना
	13:02 से	रोहिणी	1	ओ	वृष	सोना
	18:54 से	रोहिणी	2	वा	वृष	सोना
10 मई	00:47 से	रोहिणी	3	वी	वृष	सोना
	06:40 से	रोहिणी	4	वू	वृष	सोना
	12:33 से	मृगशि.	1	वे	वृष	सोना
	18:32 से	मृगशि.	2	वो	वृष	सोना
11 मई	00:31 से	मृगशि.	3	का	मिथुन	सोना
	06:30 से	मृगशि.	4	की	मिथुन	सोना
	12:29 से	आर्द्रा	1	कू	मिथुन	चाँदी
	18:35 से	आर्द्रा	2	घ	मिथुन	चाँदी
12 मई	00:41 से	आर्द्रा	3	ङ	मिथुन	चाँदी
	06:47 से	आर्द्रा	4	छ	मिथुन	चाँदी
	12:54 से	पुनर्वसु	1	के	मिथुन	चाँदी
	19:07 से	पुनर्वसु	2	को	मिथुन	चाँदी
13 मई	01:21 से	पुनर्वसु	3	ह	मिथुन	चाँदी

❊ संवत् 2081, सन् 2024-25 में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ❊

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
13 मई	07:35 से	पुनर्वसु	4	ही	कर्क	चाँदी
	13:49 से	पुष्य	1	हू	कर्क	चाँदी
	20:10 से	पुष्य	2	हे	कर्क	चाँदी
14 मई	02:31 से	पुष्य	3	हो	कर्क	चाँदी
	08:52 से	पुष्य	4	डा	कर्क	चाँदी
	15:14 से	आश्ले	1	डी	कर्क	चाँदी
	21:41 से	आश्ले	2	डू	कर्क	चाँदी
15 मई	04:09 से	आश्ले	3	डे	कर्क	चाँदी
	10:37 से	आश्ले	4	डो	कर्क	चाँदी
	17:05 से	मघा	1	मा	सिंह	चाँदी
	23:34 से	मघा	2	मी	सिंह	चाँदी
16 मई	06:03 से	मघा	3	मू	सिंह	चाँदी
	12:32 से	मघा	4	मे	सिंह	चाँदी
	19:02 से	पू.फा.	1	मो	सिंह	चाँदी
17 मई	01:32 से	पू.फा.	2	टा	सिंह	चाँदी
	08:03 से	पू.फा.	3	टी	सिंह	चाँदी
	14:34 से	पू.फा.	4	टू	सिंह	चाँदी
	21:05 से	उ.फा.	1	टे	सिंह	चाँदी
18 मई	03:55 से	उ.फा.	2	टो	कन्या	चाँदी
	10:46 से	उ.फा.	3	पा	कन्या	चाँदी
	17:37 से	उ.फा.	4	पी	कन्या	चाँदी
19 मई	00:28 से	हस्त	1	पू	कन्या	चाँदी
	07:06 से	हस्त	2	ष	कन्या	चाँदी
	13:44 से	हस्त	3	ण	कन्या	चाँदी
	20:22 से	हस्त	4	ठ	कन्या	चाँदी
20 मई	03:01 से	चित्रा	1	पे	कन्या	चाँदी
	09:36 से	चित्रा	2	पो	कन्या	चाँदी
	16:11 से	चित्रा	3	रा	तुला	चाँदी
	22:46 से	चित्रा	4	री	तुला	चाँदी
21 मई	05:21 से	स्वाति	1	रू	तुला	चाँदी
	11:51 से	स्वाति	2	रे	तुला	चाँदी
	18:21 से	स्वाति	3	रो	तुला	चाँदी
22 मई	00:51 से	स्वाति	4	ता	तुला	चाँदी
	07:21 से	विशाखा	1	ती	तुला	ताम्बा
	13:44 से	विशाखा	2	तू	तुला	ताम्बा
	20:08 से	विशाखा	3	ते	तुला	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
23 मई	02:31 से	विशाखा	4	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	08:55 से	अनुराधा	1	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	15:11 से	अनुराधा	2	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	21:27 से	अनुराधा	3	नू	वृश्चिक	ताम्बा
24 मई	03:44 से	अनुराधा	4	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	10:00 से	ज्येष्ठ	1	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	16:08 से	ज्येष्ठ	2	या	वृश्चिक	ताम्बा
	22:17 से	ज्येष्ठ	3	यी	वृश्चिक	ताम्बा
25 मई	04:25 से	ज्येष्ठ	4	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	10:34 से	मूल	1	ये	धनु	ताम्बा
	16:26 से	मूल	2	यो	धनु	ताम्बा
	22:19 से	मूल	3	भा	धनु	ताम्बा
26 मई	04:11 से	मूल	4	भी	धनु	ताम्बा
	10:04 से	पू.षा.	1	भू	धनु	ताम्बा
	16:07 से	पू.षा.	2	धा	धनु	ताम्बा
	22:11 से	पू.षा.	3	फा	धनु	ताम्बा
27 मई	04:14 से	पू.षा.	4	ढा	धनु	ताम्बा
	10:18 से	उ.षा.	1	भे	धनु	ताम्बा
	16:06 से	उ.षा.	2	भो	मकर	ताम्बा
	21:55 से	उ.षा.	3	जा	मकर	ताम्बा
28 मई	03:44 से	उ.षा.	4	जी	मकर	ताम्बा
	09:33 से	श्रवण	1	खी	मकर	ताम्बा
	15:16 से	श्रवण	2	खू	मकर	ताम्बा
	21:00 से	श्रवण	3	खे	मकर	ताम्बा
29 मई	02:44 से	श्रवण	4	खो	मकर	ताम्बा
	08:28 से	धनिष्ठा	1	गा	मकर	ताम्बा
	14:07 से	धनिष्ठा	2	गी	मकर	ताम्बा
	19:47 से	धनिष्ठा	3	गू	कुम्भ	ताम्बा
30 मई	01:27 से	धनिष्ठा	4	गे	कुम्भ	ताम्बा
	07:07 से	शतभिषा	1	गो	कुम्भ	ताम्बा
	12:22 से	शतभिषा	2	सा	कुम्भ	ताम्बा
	17:37 से	शतभिषा	3	सी	कुम्भ	ताम्बा
	22:54 से	शतभिषा	4	सू	कुम्भ	ताम्बा
31 मई	04:04 से	पू.भा.	1	से	कुम्भ	लोहा
	10:02 से	पू.भा.	2	सो	कुम्भ	लोहा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
31 मई	16:00 से	पू.भा.	3	दा	कुम्भ	लोहा
	21:58 से	पू.भा.	4	दी	मीन	लोहा
1 जून	03:56 से	उ.भा.	1	दू	मीन	लोहा
	09:31 से	उ.भा.	2	थ	मीन	लोहा
	15:06 से	उ.भा.	3	झ	मीन	लोहा
	20:41 से	उ.भा.	4	ञ	मीन	लोहा
2 जून	02:16 से	रेवती	1	दे	मीन	सोना
	07:51 से	रेवती	2	दो	मीन	सोना
	13:27 से	रेवती	3	चा	मीन	सोना
	19:03 से	रेवती	4	ची	मीन	सोना
3 जून	00:39 से	अश्विनी	1	चू	मेष	सोना
	06:17 से	अश्विनी	2	चे	मेष	सोना
	11:55 से	अश्विनी	3	चो	मेष	सोना
	17:33 से	अश्विनी	4	ला	मेष	सोना
	23:12 से	भरणी	1	ली	मेष	सोना
4 जून	04:53 से	भरणी	2	लू	मेष	सोना
	10:34 से	भरणी	3	ले	मेष	सोना
	16:15 से	भरणी	4	लो	मेष	सोना
	21:57 से	कृत्ति.	1	अ	मेष	सोना
5 जून	03:43 से	कृत्ति.	2	ई	वृष	सोना
	09:29 से	कृत्ति.	3	ऊ	वृष	सोना
	15:15 से	कृत्ति.	4	ए	वृष	सोना
	21:01 से	रोहिणी	1	ओ	वृष	सोना
6 जन	02:52 से	रोहिणी	2	वा	वृष	सोना
	08:43 से	रोहिणी	3	वी	वृष	सोना
	14:34 से	रोहिणी	4	वू	वृष	सोना
	20:26 से	मृगशि.	1	वे	वृष	सोना
7 जून	02:23 से	मृगशि.	2	वो	वृष	सोना
	08:21 से	मृगशि.	3	का	मिथुन	सोना
	14:18 से	मृगशि.	4	की	मिथुन	सोना
	20:16 से	आर्द्रा	1	कू	मिथुन	चाँदी
8 जून	02:20 से	आर्द्रा	2	घ	मिथुन	चाँदी
	08:25 से	आर्द्रा	3	ङ	मिथुन	चाँदी
	14:30 से	आर्द्रा	4	छ	मिथुन	चाँदी
	20:35 से	पुनर्वसु	1	के	मिथुन	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
9 जून	02:47 से	पुनर्वसु	2	को	मिथुन	चाँदी
	08:59 से	पुनर्वसु	3	ह	मिथुन	चाँदी
	15:11 से	पुनर्वसु	4	ही	कर्क	चाँदी
	21:23 से	पुष्य	1	हू	कर्क	चाँदी
10 जून	03:42 से	पुष्य	2	हे	कर्क	चाँदी
	10:02 से	पुष्य	3	हो	कर्क	चाँदी
	16:21 से	पुष्य	4	डा	कर्क	चाँदी
	22:41 से	आश्ले	1	डी	कर्क	चाँदी
11 जून	05:07 से	आश्ले	2	डू	कर्क	चाँदी
	11:34 से	आश्ले	3	डे	कर्क	चाँदी
	18:00 से	आश्ले	4	डो	कर्क	चाँदी
12 जून	00:27 से	मघा	1	मा	सिंह	चाँदी
	06:59 से	मघा	2	मी	सिंह	चाँदी
	13:32 से	मघा	3	मू	सिंह	चाँदी
	20:04 से	मघा	4	मे	सिंह	चाँदी
13 जून	02:37 से	पू.फा.	1	मो	सिंह	चाँदी
	09:14 से	पू.फा.	2	टा	सिंह	चाँदी
	15:51 से	पू.फा.	3	टी	सिंह	चाँदी
	22:28 से	पू.फा.	4	टू	सिंह	चाँदी
14 जून	05:05 से	उ.फा.	1	टे	सिंह	चाँदी
	11:44 से	उ.फा.	2	टो	कन्या	चाँदी
	18:23 से	उ.फा.	3	पा	कन्या	चाँदी
15 जून	01:02 से	उ.फा.	4	पी	कन्या	चाँदी
	07:42 से	हस्त	1	पू	कन्या	चाँदी
	14:20 से	हस्त	2	ष	कन्या	चाँदी
	20:59 से	हस्त	3	ण	कन्या	चाँदी
16 जून	03:38 से	हस्त	4	ठ	कन्या	चाँदी
	10:17 से	चित्रा	1	पे	कन्या	चाँदी
	16:53 से	चित्रा	2	पो	कन्या	चाँदी
	23:29 से	चित्रा	3	रा	तुला	चाँदी
17 जून	06:05 से	चित्रा	4	री	तुला	चाँदी
	12:42 से	स्वाति	1	रू	तुला	चाँदी
	19:13 से	स्वाति	2	रे	तुला	चाँदी
18 जून	01:44 से	स्वाति	3	रो	तुला	चाँदी
	08:15 से	स्वाति	4	ता	तुला	चाँदी

❋ संवत् 2081, सन् 2024-25 में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ❋

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
18 जून	14:47 से	विशाखा	1	ती	तुला	ताम्बा
	21:12 से	विशाखा	2	तू	तुला	ताम्बा
19 जून	03:37 से	विशाखा	3	ते	तुला	ताम्बा
	10:02 से	विशाखा	4	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	16:27 से	अनुराधा	1	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	22:45 से	अनुराधा	2	नी	वृश्चिक	ताम्बा
20 जून	05:03 से	अनुराधा	3	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	11:21 से	अनुराधा	4	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	17:39 से	ज्येष्ठ	1	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	23:44 से	ज्येष्ठ	2	या	वृश्चिक	ताम्बा
21 जून	05:50 से	ज्येष्ठ	3	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	11:56 से	ज्येष्ठ	4	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	18:02 से	मूल	1	ये	धनु	ताम्बा
22 जून	00:09 से	मूल	2	यो	धनु	ताम्बा
	06:17 से	मूल	3	भा	धनु	ताम्बा
	12:25 से	मूल	4	भी	धनु	ताम्बा
	18:33 से	पू.षा.	1	भू	धनु	ताम्बा
23 जून	00:29 से	पू.षा.	2	धा	धनु	ताम्बा
	06:25 से	पू.षा.	3	फा	धनु	ताम्बा
	12:21 से	पू.षा.	4	ढा	धनु	ताम्बा
	18:17 से	उ.षा.	1	भे	धनु	ताम्बा
24 जून	00:07 से	उ.षा.	2	भो	मकर	ताम्बा
	05:57 से	उ.षा.	3	जा	मकर	ताम्बा
	11:47 से	उ.षा.	4	जी	मकर	ताम्बा
	17:37 से	श्रवण	1	खी	मकर	ताम्बा
	23:22 से	श्रवण	2	खू	मकर	ताम्बा
25 जून	05:07 से	श्रवण	3	खे	मकर	ताम्बा
	10:52 से	श्रवण	4	खो	मकर	ताम्बा
	16:37 से	धनिष्ठ	1	गा	मकर	ताम्बा
	22:17 से	धनिष्ठ	2	गी	मकर	ताम्बा
26 जून	03:58 से	धनिष्ठ	3	गू	कुम्भ	ताम्बा
	09:38 से	धनिष्ठ	4	गे	कुम्भ	ताम्बा
	15:19 से	शतभिषा	1	गो	कुम्भ	ताम्बा
	20:52 से	शतभिषा	2	सा	कुम्भ	ताम्बा
27 जून	02:25 से	शतभिषा	3	सी	कुम्भ	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
27 जून	07:58 से	शतभिषा	4	सू	कुम्भ	ताम्बा
	13:31 से	पू.भा.	1	से	कुम्भ	लोहा
	19:11 से	पू.भा.	2	सो	कुम्भ	लोहा
28 जून	00:51 से	पू.भा.	3	दा	कुम्भ	लोहा
	06:31 से	पू.भा.	4	दी	मीन	लोहा
	12:11 से	उ.भा.	1	दू	मीन	लोहा
	17:46 से	उ.भा.	2	थ	मीन	लोहा
	23:21 से	उ.भा.	3	झ	मीन	लोहा
29 जून	04:56 से	उ.भा.	4	ञ	मीन	लोहा
	10:31 से	रेवती	1	दे	मीन	सोना
	16:06 से	रेवती	2	दो	मीन	सोना
	21:42 से	रेवती	3	चा	मीन	सोना
30 जून	03:17 से	रेवती	4	ची	मीन	सोना
	08:53 से	अश्विनी	1	चू	मेष	सोना
	14:30 से	अश्विनी	2	चे	मेष	सोना
	20:08 से	अश्विनी	3	चो	मेष	सोना
1 जुलाई	01:45 से	अश्विनी	4	ला	मेष	सोना
	07:23 से	भरणी	1	ली	मेष	सोना
	13:03 से	भरणी	2	लू	मेष	सोना
	18:44 से	भरणी	3	ले	मेष	सोना
2 जुलाई	00:25 से	भरणी	4	लो	मेष	सोना
	06:06 से	कृत्ति.	1	अ	मेष	सोना
	11:41 से	कृत्ति.	2	ई	वृष	सोना
	17:15 से	कृत्ति.	3	ऊ	वृष	सोना
	22:51 से	कृत्ति.	4	ए	वृष	सोना
3 जुलाई	04:37 से	रोहिणी	1	ओ	वृष	सोना
	10:34 से	रोहिणी	2	वा	वृष	सोना
	16:31 से	रोहिणी	3	वी	वृष	सोना
	22:28 से	रोहिणी	4	वू	वृष	सोना
4 जुलाई	04:24 से	मृगशि.	1	वे	वृष	सोना
	10:20 से	मृगशि.	2	वो	वृष	सोना
	16:16 से	मृगशि.	3	का	मिथुन	सोना
	22:12 से	मृगशि.	4	की	मिथुन	सोना
5 जुलाई	04:09 से	आर्द्रा	1	कू	मिथुन	चाँदी
	10:07 से	आर्द्रा	2	घ	मिथुन	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
5 जुलाई	16:05 से	आर्द्रा	3	ङ	मिथुन	चाँदी
	22:03 से	आर्द्रा	4	छ	मिथुन	चाँदी
6 जुलाई	04:02 से	पुनर्वसु	1	के	मिथुन	चाँदी
	10:17 से	पुनर्वसु	2	को	मिथुन	चाँदी
	16:32 से	पुनर्वसु	3	ह	मिथुन	चाँदी
	22:47 से	पुनर्वसु	4	ही	कर्क	चाँदी
7 जुलाई	05:02 से	पुष्य	1	हू	कर्क	चाँदी
	11:20 से	पुष्य	2	हे	कर्क	चाँदी
	17:38 से	पुष्य	3	हो	कर्क	चाँदी
	23:56 से	पुष्य	4	डा	कर्क	चाँदी
8 जुलाई	06:14 से	आश्ले	1	डी	कर्क	चाँदी
	12:38 से	आश्ले	2	डू	कर्क	चाँदी
	19:03 से	आश्ले	3	डे	कर्क	चाँदी
9 जुलाई	01:28 से	आश्ले	4	डो	कर्क	चाँदी
	07:53 से	मघा	1	मा	सिंह	चाँदी
	14:24 से	मघा	2	मी	सिंह	चाँदी
	20:55 से	मघा	3	मू	सिंह	चाँदी
10 जुलाई	03:26 से	मघा	4	मे	सिंह	चाँदी
	09:58 से	पू.फा.	1	मो	सिंह	चाँदी
	16:34 से	पू.फा.	2	टा	सिंह	चाँदी
	23:10 से	पू.फा.	3	टी	सिंह	चाँदी
11 जुलाई	05:46 से	पू.फा.	4	टू	सिंह	चाँदी
	12:22 से	उ.फा.	1	टे	सिंह	चाँदी
	19:01 से	उ.फा.	2	टो	कन्या	चाँदी
12 जुलाई	01:40 से	उ.फा.	3	पा	कन्या	चाँदी
	08:19 से	उ.फा.	4	पी	कन्या	चाँदी
	14:58 से	हस्त	1	पू	कन्या	चाँदी
	21:37 से	हस्त	2	ष	कन्या	चाँदी
13 जुलाई	04:16 से	हस्त	3	ण	कन्या	चाँदी
	10:55 से	हस्त	4	ठ	कन्या	चाँदी
	17:34 से	चित्रा	1	पे	कन्या	चाँदी
14 जुलाई	00:11 से	चित्रा	2	पो	कन्या	चाँदी
	06:48 से	चित्रा	3	रा	तुला	चाँदी
	13:25 से	चित्रा	4	री	तुला	चाँदी
	20:02 से	स्वाति	1	रू	तुला	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
15 जुलाई	02:34 से	स्वाति	2	रे	तुला	चाँदी
	09:07 से	स्वाति	3	रो	तुला	चाँदी
	15:39 से	स्वाति	4	ता	तुला	चाँदी
	22:12 से	विशाखा	1	ती	तुला	ताम्बा
16 जुलाई	04:38 से	विशाखा	2	तू	तुला	ताम्बा
	11:05 से	विशाखा	3	ते	तुला	ताम्बा
	17:31 से	विशाखा	4	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	23:58 से	अनुराधा	1	ना	वृश्चिक	ताम्बा
17 जुलाई	06:17 से	अनुराधा	2	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	12:37 से	अनुराधा	3	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	18:57 से	अनुराधा	4	ने	वृश्चिक	ताम्बा
18 जुलाई	01:17 से	ज्येष्ठ	1	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	07:29 से	ज्येष्ठ	2	या	वृश्चिक	ताम्बा
	13:41 से	ज्येष्ठ	3	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	19:53 से	ज्येष्ठ	4	यू	वृश्चिक	ताम्बा
19 जुलाई	02:05 से	मूल	1	ये	धनु	ताम्बा
	08:09 से	मूल	2	यो	धनु	ताम्बा
	14:14 से	मूल	3	भा	धनु	ताम्बा
	20:19 से	मूल	4	भी	धनु	ताम्बा
20 जुलाई	02:24 से	पू.षा.	1	भू	धनु	ताम्बा
	08:21 से	पू.षा.	2	धा	धनु	ताम्बा
	14:19 से	पू.षा.	3	फा	धनु	ताम्बा
	20:17 से	पू.षा.	4	ढा	धनु	ताम्बा
21 जुलाई	02:15 से	उ.षा.	1	भे	धनु	ताम्बा
	07:57 से	उ.षा.	2	भो	मकर	ताम्बा
	13:39 से	उ.षा.	3	जा	मकर	ताम्बा
	19:21 से	उ.षा.	4	जी	मकर	ताम्बा
22 जुलाई	01:04 से	श्रवण	1	खी	मकर	ताम्बा
	06:58 से	श्रवण	2	खू	मकर	ताम्बा
	12:53 से	श्रवण	3	खे	मकर	ताम्बा
	18:48 से	श्रवण	4	खो	मकर	ताम्बा
23 जुलाई	00:43 से	धनिष्ठ	1	गा	मकर	ताम्बा
	06:24 से	धनिष्ठ	2	गी	मकर	ताम्बा
	12:06 से	धनिष्ठ	3	गू	कुम्भ	ताम्बा
	17:47 से	धनिष्ठ	4	गे	कुम्भ	ताम्बा

❊ संवत् 2081, सन् 2024-25 में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ❊

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
23 जुलाई	23:29 से	शतभिषा	1	गो	कुम्भ	ताम्बा
24 जुलाई	05:07 से	शतभिषा	2	सा	कुम्भ	ताम्बा
	10:45 से	शतभिषा	3	सी	कुम्भ	ताम्बा
	16:23 से	शतभिषा	4	सू	कुम्भ	ताम्बा
	22:01 से	पू.भा.	1	से	कुम्भ	लोहा
25 जुलाई	03:37 से	पू.भा.	2	सो	कुम्भ	लोहा
	09:13 से	पू.भा.	3	दा	कुम्भ	लोहा
	14:49 से	पू.भा.	4	दी	मीन	लोहा
	20:25 से	उ.भा.	1	दू	मीन	लोहा
26 जुलाई	01:59 से	उ.भा.	2	थ	मीन	लोहा
	07:34 से	उ.भा.	3	झ	मीन	लोहा
	13:09 से	उ.भा.	4	ञ	मीन	लोहा
	18:44 से	रेवती	1	दे	मीन	सोना
27 जुलाई	00:19 से	रेवती	2	दो	मीन	सोना
	05:55 से	रेवती	3	चा	मीन	सोना
	11:30 से	रेवती	4	ची	मीन	सोना
	17:06 से	अश्विनी	1	चू	मेष	सोना
	22:42 से	अश्विनी	2	चे	मेष	सोना
28 जुलाई	04:19 से	अश्विनी	3	चो	मेष	सोना
	09:56 से	अश्विनी	4	ला	मेष	सोना
	15:33 से	भरणी	1	ली	मेष	सोना
	21:12 से	भरणी	2	लू	मेष	सोना
29 जुलाई	02:52 से	भरणी	3	ले	मेष	सोना
	08:32 से	भरणी	4	लो	मेष	सोना
	14:12 से	कृत्ति.	1	अ	मेष	सोना
	19:55 से	कृत्ति.	2	ई	वृष	सोना
30 जुलाई	01:39 से	कृत्ति.	3	ऊ	वृष	सोना
	07:23 से	कृत्ति.	4	ए	वृष	सोना
	13:07 से	रोहिणी	1	ओ	वृष	सोना
	18:55 से	रोहिणी	2	वा	वृष	सोना
31 जुलाई	00:44 से	रोहिणी	3	वी	वृष	सोना
	06:32 से	रोहिणी	4	वू	वृष	सोना
	12:21 से	मृगशि.	1	वे	वृष	सोना
	18:15 से	मृगशि.	2	वो	वृष	सोना
1 अगस्त	00:10 से	मृगशि.	3	का	मिथुन	सोना

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
1 अगस्त	06:04 से	मृगशि.	4	की	मिथुन	सोना
	11:59 से	आर्द्रा	1	कू	मिथुन	चाँदी
	18:00 से	आर्द्रा	2	घ	मिथुन	चाँदी
2 अगस्त	00:01 से	आर्द्रा	3	ङ	मिथुन	चाँदी
	06:02 से	आर्द्रा	4	छ	मिथुन	चाँदी
	12:04 से	पुनर्वसु	1	के	मिथुन	चाँदी
	18:12 से	पुनर्वसु	2	को	मिथुन	चाँदी
3 अगस्त	00:21 से	पुनर्वसु	3	ह	मिथुन	चाँदी
	06:29 से	पुनर्वसु	4	ही	कर्क	चाँदी
	12:38 से	पुष्य	1	हू	कर्क	चाँदी
	18:54 से	पुष्य	2	हे	कर्क	चाँदी
4 अगस्त	01:10 से	पुष्य	3	हो	कर्क	चाँदी
	07:26 से	पुष्य	4	डा	कर्क	चाँदी
	13:43 से	आश्ले	1	डी	कर्क	चाँदी
	20:06 से	आश्ले	2	डू	कर्क	चाँदी
5 अगस्त	02:29 से	आश्ले	3	डे	कर्क	चाँदी
	08:52 से	आश्ले	4	डो	कर्क	चाँदी
	15:16 से	मघा	1	मा	सिंह	चाँदी
	21:45 से	मघा	2	मी	सिंह	चाँदी
6 अगस्त	04:15 से	मघा	3	मू	सिंह	चाँदी
	10:45 से	मघा	4	मे	सिंह	चाँदी
	17:15 से	पू.फा.	1	मो	सिंह	चाँदी
	23:50 से	पू.फा.	2	टा	सिंह	चाँदी
7 अगस्त	06:25 से	पू.फा.	3	टी	सिंह	चाँदी
	13:00 से	पू.फा.	4	टू	सिंह	चाँदी
	19:36 से	उ.फा.	1	टे	सिंह	चाँदी
8 अगस्त	02:14 से	उ.फा.	2	टो	कन्या	चाँदी
	08:52 से	उ.फा.	3	पा	कन्या	चाँदी
	15:30 से	उ.फा.	4	पी	कन्या	चाँदी
	22:09 से	हस्त	1	पू	कन्या	चाँदी
9 अगस्त	04:48 से	हस्त	2	ष	कन्या	चाँदी
	11:27 से	हस्त	3	ण	कन्या	चाँदी
	18:06 से	हस्त	4	ठ	कन्या	चाँदी
10 अगस्त	00:46 से	चित्रा	1	पे	कन्या	चाँदी
	07:23 से	चित्रा	2	पो	कन्या	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
10 अगस्त	14:01 से	चित्रा	3	रा	तुला	चाँदी
	20:38 से	चित्रा	4	री	तुला	चाँदी
11 अगस्त	03:16 से	स्वाति	1	रू	तुला	चाँदी
	09:49 से	स्वाति	2	रे	तुला	चाँदी
	16:23 से	स्वाति	3	रो	तुला	चाँदी
	22:57 से	स्वाति	4	ता	तुला	चाँदी
12 अगस्त	05:31 से	विशाखा	1	ती	तुला	ताम्बा
	11:59 से	विशाखा	2	तू	तुला	ताम्बा
	18:27 से	विशाखा	3	ते	तुला	ताम्बा
13 अगस्त	00:55 से	विशाखा	4	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	07:23 से	अनुराधा	1	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	13:44 से	अनुराधा	2	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	20:05 से	अनुराधा	3	नू	वृश्चिक	ताम्बा
14 अगस्त	02:26 से	अनुराधा	4	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	08:47 से	ज्येष्ठ	1	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	15:00 से	ज्येष्ठ	2	या	वृश्चिक	ताम्बा
	21:14 से	ज्येष्ठ	3	यी	वृश्चिक	ताम्बा
15 अगस्त	03:28 से	ज्येष्ठ	4	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	09:42 से	मूल	1	ये	धनु	ताम्बा
	15:48 से	मूल	2	यो	धनु	ताम्बा
	21:54 से	मूल	3	भा	धनु	ताम्बा
16 अगस्त	04:00 से	मूल	4	भी	धनु	ताम्बा
	10:07 से	पू.षा.	1	भू	धनु	ताम्बा
	16:06 से	पू.षा.	2	धा	धनु	ताम्बा
	22:05 से	पू.षा.	3	फा	धनु	ताम्बा
17 अगस्त	04:04 से	पू.षा.	4	ढा	धनु	ताम्बा
	10:04 से	उ.षा.	1	भे	धनु	ताम्बा
	15:56 से	उ.षा.	2	भो	मकर	ताम्बा
	21:49 से	उ.षा.	3	जा	मकर	ताम्बा
18 अगस्त	03:42 से	उ.षा.	4	जी	मकर	ताम्बा
	09:35 से	श्रवण	1	खी	मकर	ताम्बा
	15:22 से	श्रवण	2	खू	मकर	ताम्बा
	21:09 से	श्रवण	3	खे	मकर	ताम्बा
19 अगस्त	02:56 से	श्रवण	4	खो	मकर	ताम्बा
	08:43 से	धनिष्ठा	1	गा	मकर	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
19 अगस्त	14:25 से	धनिष्ठा	2	गी	मकर	ताम्बा
	20:07 से	धनिष्ठा	3	गू	कुम्भ	ताम्बा
20 अगस्त	01:49 से	धनिष्ठा	4	गे	कुम्भ	ताम्बा
	07:32 से	शतभिषा	1	गो	कुम्भ	ताम्बा
	13:10 से	शतभिषा	2	सा	कुम्भ	ताम्बा
	18:49 से	शतभिषा	3	सी	कुम्भ	ताम्बा
21 अगस्त	00:27 से	शतभिषा	4	सू	कुम्भ	ताम्बा
	06:06 से	पू.भा.	1	से	कुम्भ	लोहा
	11:41 से	पू.भा.	2	सो	कुम्भ	लोहा
	17:16 से	पू.भा.	3	दा	कुम्भ	लोहा
	22:52 से	पू.भा.	4	दी	मीन	लोहा
22 अगस्त	04:28 से	उ.भा.	1	दू	मीन	लोहा
	10:03 से	उ.भा.	2	थ	मीन	लोहा
	15:38 से	उ.भा.	3	झ	मीन	लोहा
	21:13 से	उ.भा.	4	ञ	मीन	लोहा
23 अगस्त	02:51 से	रेवती	1	दे	मीन	सोना
	08:26 से	रेवती	2	दो	मीन	सोना
	14:01 से	रेवती	3	चा	मीन	सोना
	19:36 से	रेवती	4	ची	मीन	सोना
24 अगस्त	01:11 से	अश्विनी	1	चू	मेष	सोना
	06:47 से	अश्विनी	2	चे	मेष	सोना
	12:24 से	अश्विनी	3	चो	मेष	सोना
	18:00 से	अश्विनी	4	ला	मेष	सोना
	23:37 से	भरणी	1	ली	मेष	सोना
25 अगस्त	05:15 से	भरणी	2	लू	मेष	सोना
	10:54 से	भरणी	3	ले	मेष	सोना
	16:33 से	भरणी	4	लो	मेष	सोना
	22:12 से	कृत्ति.	1	अ	मेष	सोना
26 अगस्त	03:54 से	कृत्ति.	2	ई	वृष	सोना
	09:37 से	कृत्ति.	3	ऊ	वृष	सोना
	15:20 से	कृत्ति.	4	ए	वृष	सोना
	21:03 से	रोहिणी	1	ओ	वृष	सोना
27 अगस्त	02:50 से	रोहिणी	2	वा	वृष	सोना
	08:37 से	रोहिणी	3	वी	वृष	सोना
	14:24 से	रोहिणी	4	वू	वृष	सोना

✻ संवत् 2081, सन् 2024-25 में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ✻

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
27 अगस्त	20:12 से	मृगशि.	1	वे	वृष	सोना
28 अगस्त	02:05 से	मृगशि.	2	वो	वृष	सोना
	07:58 से	मृगशि.	3	का	मिथुन	सोना
	13:51 से	मृगशि.	4	की	मिथुन	सोना
	19:44 से	आर्द्रा	1	कू	मिथुन	चाँदी
29 अगस्त	01:43 से	आर्द्रा	2	घ	मिथुन	चाँदी
	07:43 से	आर्द्रा	3	ङ	मिथुन	चाँदी
	13:42 से	आर्द्रा	4	छ	मिथुन	चाँदी
	19:42 से	पुनर्वसु	1	के	मिथुन	चाँदी
30 अगस्त	01:46 से	पुनर्वसु	2	को	मिथुन	चाँदी
	07:51 से	पुनर्वसु	3	ह	मिथुन	चाँदी
	13:56 से	पुनर्वसु	4	ही	कर्क	चाँदी
	20:01 से	पुष्य	1	हू	कर्क	चाँदी
31 अगस्त	02:17 से	पुष्य	2	हे	कर्क	चाँदी
	08:34 से	पुष्य	3	हो	कर्क	चाँदी
	14:50 से	पुष्य	4	डा	कर्क	चाँदी
	21:07 से	आश्ले	1	डी	कर्क	चाँदी
1 सितंबर	03:28 से	आश्ले	2	डू	कर्क	चाँदी
	09:50 से	आश्ले	3	डे	कर्क	चाँदी
	16:11 से	आश्ले	4	डो	कर्क	चाँदी
	22:33 से	मघा	1	मा	सिंह	चाँदी
2 सितंबर	05:01 से	मघा	2	मी	सिंह	चाँदी
	11:30 से	मघा	3	मू	सिंह	चाँदी
	17:58 से	मघा	4	मे	सिंह	चाँदी
3 सितंबर	00:27 से	पू.फा.	1	मो	सिंह	चाँदी
	07:01 से	पू.फा.	2	टा	सिंह	चाँदी
	13:35 से	पू.फा.	3	टी	सिंह	चाँदी
	20:09 से	पू.फा.	4	टू	सिंह	चाँदी
4 सितंबर	02:43 से	उ.फा.	1	टे	सिंह	चाँदी
	09:20 से	उ.फा.	2	टो	कन्या	चाँदी
	15:58 से	उ.फा.	3	पा	कन्या	चाँदी
	22:35 से	उ.फा.	4	पी	कन्या	चाँदी
5 सितंबर	05:13 से	हस्त	1	पू	कन्या	चाँदी
	11:41 से	हस्त	2	ष	कन्या	चाँदी
	18:09 से	हस्त	3	ण	कन्या	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
6 सितंबर	00:37 से	हस्त	4	ठ	कन्या	चाँदी
	07:05 से	चित्रा	1	पे	कन्या	चाँदी
	13:54 से	चित्रा	2	पो	कन्या	चाँदी
	20:44 से	चित्रा	3	रा	तुला	चाँदी
7 सितंबर	03:33 से	चित्रा	4	री	तुला	चाँदी
	10:23 से	स्वाति	1	रू	तुला	चाँदी
	16:57 से	स्वाति	2	रे	तुला	चाँदी
	23:32 से	स्वाति	3	रो	तुला	चाँदी
8 सितंबर	06:06 से	स्वाति	4	ता	तुला	चाँदी
	12:41 से	विशाखा	1	ती	तुला	ताम्बा
	19:10 से	विशाखा	2	तू	तुला	ताम्बा
9 सितंबर	01:40 से	विशाखा	3	ते	तुला	ताम्बा
	08:09 से	विशाखा	4	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	14:39 से	अनुराधा	1	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	20:59 से	अनुराधा	2	नी	वृश्चिक	ताम्बा
10 सितंबर	03:20 से	अनुराधा	3	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	09:40 से	अनुराधा	4	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	16:01 से	ज्येष्ठ	1	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	22:18 से	ज्येष्ठ	2	या	वृश्चिक	ताम्बा
11 सितंबर	04:36 से	ज्येष्ठ	3	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	10:54 से	ज्येष्ठ	4	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	17:12 से	मूल	1	ये	धनु	ताम्बा
	23:20 से	मूल	2	यो	धनु	ताम्बा
12 सितंबर	05:28 से	मूल	3	भा	धनु	ताम्बा
	11:36 से	मूल	4	भी	धनु	ताम्बा
	17:44 से	पू.षा.	1	भू	धनु	ताम्बा
	23:44 से	पू.षा.	2	धा	धनु	ताम्बा
13 सितंबर	05:45 से	पू.षा.	3	फा	धनु	ताम्बा
	11:45 से	पू.षा.	4	ढा	धनु	ताम्बा
	17:46 से	उ.षा.	1	भे	धनु	ताम्बा
	23:40 से	उ.षा.	2	भो	मकर	ताम्बा
14 सितंबर	05:34 से	उ.षा.	3	जा	मकर	ताम्बा
	11:28 से	उ.षा.	4	जी	मकर	ताम्बा
	17:22 से	श्रवण	1	खी	मकर	ताम्बा
	23:10 से	श्रवण	2	खू	मकर	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
15 सितंबर	04:58 से	श्रवण	3	खे	मकर	ताम्बा
	10:46 से	श्रवण	4	खो	मकर	ताम्बा
	16:35 से	धनिष्ठा	1	गा	मकर	ताम्बा
	22:18 से	धनिष्ठा	2	गी	मकर	ताम्बा
16 सितंबर	04:01 से	धनिष्ठा	3	गू	कुम्भ	ताम्बा
	09:44 से	धनिष्ठा	4	गे	कुम्भ	ताम्बा
	15:28 से	शतभिषा	1	गो	कुम्भ	ताम्बा
	21:07 से	शतभिषा	2	सा	कुम्भ	ताम्बा
17 सितंबर	02:46 से	शतभिषा	3	सी	कुम्भ	ताम्बा
	08:25 से	शतभिषा	4	सू	कुम्भ	ताम्बा
	14:05 से	पू.भा.	1	से	कुम्भ	लोहा
	19:41 से	पू.भा.	2	सो	कुम्भ	लोहा
18 सितंबर	01:18 से	पू.भा.	3	दा	कुम्भ	लोहा
	06:55 से	पू.भा.	4	दी	मीन	लोहा
	12:32 से	उ.भा.	1	दू	मीन	लोहा
	18:07 से	उ.भा.	2	थ	मीन	लोहा
	23:42 से	उ.भा.	3	झ	मीन	लोहा
19 सितंबर	05:17 से	उ.भा.	4	ञ	मीन	लोहा
	10:53 से	रेवती	1	दे	मीन	सोना
	16:27 से	रेवती	2	दो	मीन	सोना
	22:02 से	रेवती	3	चा	मीन	सोना
20 सितंबर	03:37 से	रेवती	4	ची	मीन	सोना
	09:12 से	अश्विनी	1	चू	मेष	सोना
	14:48 से	अश्विनी	2	चे	मेष	सोना
	20:24 से	अश्विनी	3	चो	मेष	सोना
21 सितंबर	02:00 से	अश्विनी	4	ला	मेष	सोना
	07:36 से	भरणी	1	ली	मेष	सोना
	12:54 से	भरणी	2	लू	मेष	सोना
	18:12 से	भरणी	3	ले	मेष	सोना
	23:30 से	भरणी	4	लो	मेष	सोना
22 सितंबर	04:50 से	कृत्ति.	1	अ	मेष	सोना
	10:51 से	कृत्ति.	2	ई	वृष	सोना
	16:52 से	कृत्ति.	3	ऊ	वृष	सोना
	22:53 से	कृत्ति.	4	ए	वृष	सोना
23सितंबर	04:55 से	रोहिणी	1	ओ	वृष	सोना

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
23 सितंबर	10:40 से	रोहिणी	2	वा	वृष	सोना
	16:25 से	रोहिणी	3	वी	वृष	सोना
	22:10 से	रोहिणी	4	वू	वृष	सोना
24 सितंबर	04:00 से	मृगशि.	1	वे	वृष	सोना
	09:52 से	मृगशि.	2	वो	वृष	सोना
	15:44 से	मृगशि.	3	का	मिथुन	सोना
	21:36 से	मृगशि.	4	की	मिथुन	सोना
25 सितंबर	03:26 से	आर्द्रा	1	कू	मिथुन	चाँदी
	09:24 से	आर्द्रा	2	घ	मिथुन	चाँदी
	15:22 से	आर्द्रा	3	ङ	मिथुन	चाँदी
	21:20 से	आर्द्रा	4	छ	मिथुन	चाँदी
26 सितंबर	03:18 से	पुनर्वसु	1	के	मिथुन	चाँदी
	09:23 से	पुनर्वसु	2	को	मिथुन	चाँदी
	15:28 से	पुनर्वसु	3	ह	मिथुन	चाँदी
	21:33 से	पुनर्वसु	4	ही	कर्क	चाँदी
27 सितंबर	03:38 से	पुष्य	1	हू	कर्क	चाँदी
	09:50 से	पुष्य	2	हे	कर्क	चाँदी
	16:03 से	पुष्य	3	हो	कर्क	चाँदी
	22:16 से	पुष्य	4	डा	कर्क	चाँदी
28 सितंबर	04:29 से	आश्ले	1	डी	कर्क	चाँदी
	10:49 से	आश्ले	2	डू	कर्क	चाँदी
	17:09 से	आश्ले	3	डे	कर्क	चाँदी
	23:29 से	आश्ले	4	डो	कर्क	चाँदी
29 सितंबर	05:49 से	मघा	1	मा	सिंह	चाँदी
	12:15 से	मघा	2	मी	सिंह	चाँदी
	18:42 से	मघा	3	मू	सिंह	चाँदी
30 सितंबर	01:09 से	मघा	4	मे	सिंह	चाँदी
	07:36 से	पू.फा.	1	मो	सिंह	चाँदी
	14:08 से	पू.फा.	2	टा	सिंह	चाँदी
	20:41 से	पू.फा.	3	टी	सिंह	चाँदी
1 अक्टूबर	03:14 से	पू.फा.	4	टू	सिंह	चाँदी
	09:47 से	उ.फा.	1	टे	सिंह	चाँदी
	16:24 से	उ.फा.	2	टो	कन्या	चाँदी
	23:01 से	उ.फा.	3	पा	कन्या	चाँदी
2 अक्टूबर	05:38 से	उ.फा.	4	पी	कन्या	चाँदी

✲ संवत् 2081, सन् 2024-25 में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ✲

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
2 अक्टूबर	12:15 से	हस्त	1	पू	कन्या	चाँदी
2 अक्टूबर	18:54 से	हस्त	2	ष	कन्या	चाँदी
3 अक्टूबर	01:33 से	हस्त	3	ण	कन्या	चाँदी
	08:12 से	हस्त	4	ठ	कन्या	चाँदी
	14:52 से	चित्रा	1	पे	कन्या	चाँदी
	21:30 से	चित्रा	2	पो	कन्या	चाँदी
4 अक्टूबर	04:09 से	चित्रा	3	रा	तुला	चाँदी
	10:47 से	चित्रा	4	री	तुला	चाँदी
	17:26 से	स्वाति	1	रू	तुला	चाँदी
5 अक्टूबर	00:01 से	स्वाति	2	रे	तुला	चाँदी
	06:37 से	स्वाति	3	रो	तुला	चाँदी
	13:13 से	स्वाति	4	ता	तुला	चाँदी
	19:49 से	विशाखा	1	ती	तुला	ताम्बा
6 अक्टूबर	02:19 से	विशाखा	2	तू	तुला	ताम्बा
	08:50 से	विशाखा	3	ते	तुला	ताम्बा
	15:20 से	विशाखा	4	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	21:51 से	अनुराधा	1	ना	वृश्चिक	ताम्बा
7 अक्टूबर	04:15 से	अनुराधा	2	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	10:40 से	अनुराधा	3	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	17:04 से	अनुराधा	4	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	23:29 से	ज्येष्ठ	1	नो	वृश्चिक	ताम्बा
8 अक्टूबर	05:46 से	ज्येष्ठ	2	या	वृश्चिक	ताम्बा
	12:03 से	ज्येष्ठ	3	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	18:20 से	ज्येष्ठ	4	यू	वृश्चिक	ताम्बा
9 अक्टूबर	00:38 से	मूल	1	ये	धनु	ताम्बा
	06:47 से	मूल	2	यो	धनु	ताम्बा
	12:57 से	मूल	3	भा	धनु	ताम्बा
	19:07 से	मूल	4	भी	धनु	ताम्बा
10 अक्टूबर	01:17 से	पू.षा.	1	भू	धनु	ताम्बा
	07:19 से	पू.षा.	2	धा	धनु	ताम्बा
	13:21 से	पू.षा.	3	फा	धनु	ताम्बा
	19:23 से	पू.षा.	4	ढा	धनु	ताम्बा
11 अक्टूबर	01:26 से	उ.षा.	1	भे	धनु	ताम्बा
	07:21 से	उ.षा.	2	भो	मकर	ताम्बा
	13:17 से	उ.षा.	3	जा	मकर	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
11 अक्टूबर	19:12 से	उ.षा.	4	जी	मकर	ताम्बा
12 अक्टूबर	01:08 से	श्रवण	1	खी	मकर	ताम्बा
	06:57 से	श्रवण	2	खू	मकर	ताम्बा
	12:47 से	श्रवण	3	खे	मकर	ताम्बा
	18:36 से	श्रवण	4	खो	मकर	ताम्बा
13 अक्टूबर	00:26 से	धनिष्ठ	1	गा	मकर	ताम्बा
	06:10 से	धनिष्ठ	2	गी	मकर	ताम्बा
	11:54 से	धनिष्ठ	3	गू	कुम्भ	ताम्बा
	17:38 से	धनिष्ठ	4	गे	कुम्भ	ताम्बा
	23:23 से	शतभिषा	1	गो	कुम्भ	ताम्बा
14 अक्टूबर	05:03 से	शतभिषा	2	सा	कुम्भ	ताम्बा
	10:43 से	शतभिषा	3	सी	कुम्भ	ताम्बा
	16:23 से	शतभिषा	4	सू	कुम्भ	ताम्बा
	22:04 से	पू.भा.	1	से	कुम्भ	लोहा
15 अक्टूबर	03:41 से	पू.भा.	2	सो	कुम्भ	लोहा
	09:18 से	पू.भा.	3	दा	कुम्भ	लोहा
	14:55 से	पू.भा.	4	दी	मीन	लोहा
	20:33 से	उ.भा.	1	दू	मीन	लोहा
16 अक्टूबर	02:08 से	उ.भा.	2	थ	मीन	लोहा
	07:43 से	उ.भा.	3	झ	मीन	लोहा
	13:18 से	उ.भा.	4	ञ	मीन	लोहा
	18:54 से	रेवती	1	दे	मीन	सोना
17 अक्टूबर	00:29 से	रेवती	2	दो	मीन	सोना
	06:04 से	रेवती	3	चा	मीन	सोना
	11:39 से	रेवती	4	ची	मीन	सोना
	17:14 से	अश्विनी	1	चू	मेष	सोना
	22:49 से	अश्विनी	2	चे	मेष	सोना
18 अक्टूबर	04:25 से	अश्विनी	3	चो	मेष	सोना
	10:00 से	अश्विनी	4	ला	मेष	सोना
	15:36 से	भरणी	1	ली	मेष	सोना
	21:13 से	भरणी	2	लू	मेष	सोना
19 अक्टूबर	02:51 से	भरणी	3	ले	मेष	सोना
	08:28 से	भरणी	4	लो	मेष	सोना
	14:06 से	कृत्ति.	1	अ	मेष	सोना
	19:46 से	कृत्ति.	2	ई	वृष	सोना

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
20 अक्टूबर	01:27 से	कृत्ति.	3	ऊ	वृष	सोना
	07:08 से	कृत्ति.	4	ए	वृष	सोना
	12:49 से	रोहिणी	1	ओ	वृष	सोना
	18:23 से	रोहिणी	2	वा	वृष	सोना
	23:57 से	रोहिणी	3	वी	वृष	सोना
21 अक्टूबर	05:31 से	रोहिणी	4	वू	वृष	सोना
	11:05 से	मृगशि.	1	वे	वृष	सोना
	17:06 से	मृगशि.	2	वो	वृष	सोना
	23:08 से	मृगशि.	3	का	मिथुन	सोना
22 अक्टूबर	05:09 से	मृगशि.	4	की	मिथुन	सोना
	11:11 से	आर्द्रा	1	कू	मिथुन	चाँदी
	17:07 से	आर्द्रा	2	घ	मिथुन	चाँदी
	23:04 से	आर्द्रा	3	ङ	मिथुन	चाँदी
23 अक्टूबर	05:00 से	आर्द्रा	4	छ	मिथुन	चाँदी
	10:57 से	पुनर्वसु	1	के	मिथुन	चाँदी
	17:00 से	पुनर्वसु	2	को	मिथुन	चाँदी
	23:04 से	पुनर्वसु	3	ह	मिथुन	चाँदी
24 अक्टूबर	05:07 से	पुनर्वसु	4	ही	कर्क	चाँदी
	11:11 से	पुष्य	1	हू	कर्क	चाँदी
	17:21 से	पुष्य	2	हे	कर्क	चाँदी
	23:32 से	पुष्य	3	हो	कर्क	चाँदी
25 अक्टूबर	05:43 से	पुष्य	4	डा	कर्क	चाँदी
	11:54 से	आश्ले	1	डी	कर्क	चाँदी
	18:12 से	आश्ले	2	डू	कर्क	चाँदी
26 अक्टूबर	00:31 से	आश्ले	3	डे	कर्क	चाँदी
	06:49 से	आश्ले	4	डो	कर्क	चाँदी
	13:08 से	मघा	1	मा	सिंह	चाँदी
	19:33 से	मघा	2	मी	सिंह	चाँदी
27 अक्टूबर	01:58 से	मघा	3	मू	सिंह	चाँदी
	08:23 से	मघा	4	मे	सिंह	चाँदी
	14:49 से	पू.फा.	1	मो	सिंह	चाँदी
	21:20 से	पू.फा.	2	टा	सिंह	चाँदी
28 अक्टूबर	03:52 से	पू.फा.	3	टी	सिंह	चाँदी
	10:24 से	पू.फा.	4	टू	सिंह	चाँदी
	16:56 से	उ.फा.	1	टे	सिंह	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
28 अक्टूबर	23:32 से	उ.फा.	2	टो	कन्या	चाँदी
29 अक्टूबर	06:08 से	उ.फा.	3	पा	कन्या	चाँदी
	12:44 से	उ.फा.	4	पी	कन्या	चाँदी
	19:21 से	हस्त	1	पू	कन्या	चाँदी
30 अक्टूबर	02:00 से	हस्त	2	ष	कन्या	चाँदी
	08:39 से	हस्त	3	ण	कन्या	चाँदी
	15:18 से	हस्त	4	ठ	कन्या	चाँदी
	21:57 से	चित्रा	1	पे	कन्या	चाँदी
31 अक्टूबर	04:36 से	चित्रा	2	पो	कन्या	चाँदी
	11:15 से	चित्रा	3	रा	तुला	चाँदी
	17:54 से	चित्रा	4	री	तुला	चाँदी
1 नवंबर	00:33 से	स्वाति	1	रू	तुला	चाँदी
	07:09 से	स्वाति	2	रे	तुला	चाँदी
	13:46 से	स्वाति	3	रो	तुला	चाँदी
	20:22 से	स्वाति	4	ता	तुला	चाँदी
2 नवंबर	02:59 से	विशाखा	1	ती	तुला	ताम्बा
	09:31 से	विशाखा	2	तू	तुला	ताम्बा
	16:03 से	विशाखा	3	ते	तुला	ताम्बा
	22:35 से	विशाखा	4	तो	वृश्चिक	ताम्बा
3 नवंबर	05:07 से	अनुराधा	1	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	11:33 से	अनुराधा	2	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	17:59 से	अनुराधा	3	नू	वृश्चिक	ताम्बा
4 नवंबर	00:25 से	अनुराधा	4	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	06:51 से	ज्येष्ठ	1	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	13:10 से	ज्येष्ठ	2	या	वृश्चिक	ताम्बा
	19:29 से	ज्येष्ठ	3	यी	वृश्चिक	ताम्बा
5 नवंबर	01:48 से	ज्येष्ठ	4	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	08:07 से	मूल	1	ये	धनु	ताम्बा
	14:18 से	मूल	2	यो	धनु	ताम्बा
	20:30 से	मूल	3	भा	धनु	ताम्बा
6 नवंबर	02:41 से	मूल	4	भी	धनु	ताम्बा
	08:53 से	पू.षा.	1	भू	धनु	ताम्बा
	14:55 से	पू.षा.	2	धा	धनु	ताम्बा
	20:57 से	पू.षा.	3	फा	धनु	ताम्बा
7 नवंबर	02:59 से	पू.षा.	4	ढा	धनु	ताम्बा

✻ संवत् 2081, सन् 2024-25 में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ✻

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
7 नवंबर	09:01 से	उ.षा.	1	भे	धनु	ताम्बा
	15:00 से	उ.षा.	2	भो	मकर	ताम्बा
	20:59 से	उ.षा.	3	जा	मकर	ताम्बा
8 नवंबर	02:58 से	उ.षा.	4	जी	मकर	ताम्बा
	08:58 से	श्रवण	1	खी	मकर	ताम्बा
	14:48 से	श्रवण	2	खू	मकर	ताम्बा
	20:39 से	श्रवण	3	खे	मकर	ताम्बा
9 नवंबर	02:30 से	श्रवण	4	खो	मकर	ताम्बा
	08:21 से	धनिष्ठ	1	गा	मकर	ताम्बा
	14:06 से	धनिष्ठ	2	गी	मकर	ताम्बा
	19:52 से	धनिष्ठ	3	गू	कुम्भ	ताम्बा
10 नवंबर	01:37 से	धनिष्ठ	4	गे	कुम्भ	ताम्बा
	07:23 से	शतभिषा	1	गो	कुम्भ	ताम्बा
	12:55 से	शतभिषा	2	सा	कुम्भ	ताम्बा
	18:27 से	शतभिषा	3	सी	कुम्भ	ताम्बा
11 नवंबर	00:01 से	शतभिषा	4	सू	कुम्भ	ताम्बा
	05:30 से	पू.भा.	1	से	कुम्भ	लोहा
	11:18 से	पू.भा.	2	सो	कुम्भ	लोहा
	17:06 से	पू.भा.	3	दा	कुम्भ	लोहा
	23:54 से	पू.भा.	4	दी	मीन	लोहा
12 नवंबर	04:39 से	उ.भा.	1	दू	मीन	लोहा
	10:15 से	उ.भा.	2	थ	मीन	लोहा
	15:51 से	उ.भा.	3	झ	मीन	लोहा
	21:27 से	उ.भा.	4	ञ	मीन	लोहा
13 नवंबर	03:03 से	रेवती	1	दे	मीन	सोना
	08:37 से	रेवती	2	दो	मीन	सोना
	14:12 से	रेवती	3	चा	मीन	सोना
	19:47 से	रेवती	4	ची	मीन	सोना
14 नवंबर	01:22 से	अश्विनी	1	चू	मेष	सोना
	06:57 से	अश्विनी	2	चे	मेष	सोना
	12:33 से	अश्विनी	3	चो	मेष	सोना
	18:08 से	अश्विनी	4	ला	मेष	सोना
	23:44 से	भरणी	1	ली	मेष	सोना
15 नवंबर	05:21 से	भरणी	2	लू	मेष	सोना
	10:58 से	भरणी	3	ले	मेष	सोना

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
15 नवंबर	16:35 से	भरणी	4	लो	मेष	सोना
	22:12 से	कृत्ति.	1	अ	मेष	सोना
16 नवंबर	03:52 से	कृत्ति.	2	ई	वृष	सोना
	09:32 से	कृत्ति.	3	ऊ	वृष	सोना
	15:12 से	कृत्ति.	4	ए	वृष	सोना
	20:52 से	रोहिणी	1	ओ	वृष	सोना
17 नवंबर	02:36 से	रोहिणी	2	वा	वृष	सोना
	08:20 से	रोहिणी	3	वी	वृष	सोना
	14:04 से	रोहिणी	4	वू	वृष	सोना
	19:49 से	मृगशि.	1	वे	वृष	सोना
18 नवंबर	01:38 से	मृगशि.	2	वो	वृष	सोना
	07:27 से	मृगशि.	3	का	मिथुन	सोना
	13:16 से	मृगशि.	4	की	मिथुन	सोना
	19:05 से	आर्द्रा	1	कू	मिथुन	चाँदी
19 नवंबर	01:00 से	आर्द्रा	2	घ	मिथुन	चाँदी
	06:55 से	आर्द्रा	3	ङ	मिथुन	चाँदी
	12:50 से	आर्द्रा	4	छ	मिथुन	चाँदी
	18:45 से	पुनर्वसु	1	के	मिथुन	चाँदी
20 नवंबर	00:47 से	पुनर्वसु	2	को	मिथुन	चाँदी
	06:49 से	पुनर्वसु	3	ह	मिथुन	चाँदी
	12:51 से	पुनर्वसु	4	ही	कर्क	चाँदी
	18:53 से	पुष्य	1	हू	कर्क	चाँदी
21 नवंबर	00:55 से	पुष्य	2	हे	कर्क	चाँदी
	06:58 से	पुष्य	3	हो	कर्क	चाँदी
	13:00 से	पुष्य	4	डा	कर्क	चाँदी
	19:03 से	आश्ले	1	डी	कर्क	चाँदी
22 नवंबर	01:26 से	आश्ले	2	डू	कर्क	चाँदी
	07:50 से	आश्ले	3	डे	कर्क	चाँदी
	14:13 से	आश्ले	4	डो	कर्क	चाँदी
	20:37 से	मघा	1	मा	सिंह	चाँदी
23 नवंबर	03:01 से	मघा	2	मी	सिंह	चाँदी
	09:25 से	मघा	3	मू	सिंह	चाँदी
	15:49 से	मघा	4	मे	सिंह	चाँदी
	22:13 से	पू.फा.	1	मो	सिंह	चाँदी
24नवंबर	04:43 से	पू.फा.	2	टा	सिंह	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
24 नवंबर	11:13 से	पू.फा.	3	टी	सिंह	चाँदी
	17:43 से	पू.फा.	4	टू	सिंह	चाँदी
25 नवंबर	00:14 से	उ.फा.	1	टे	सिंह	चाँदी
	06:49 से	उ.फा.	2	टो	कन्या	चाँदी
	13:25 से	उ.फा.	3	पा	कन्या	चाँदी
	20:00 से	उ.फा.	4	पी	कन्या	चाँदी
26 नवंबर	02:36 से	हस्त	1	पू	कन्या	चाँदी
	09:14 से	हस्त	2	ष	कन्या	चाँदी
	15:53 से	हस्त	3	ण	कन्या	चाँदी
	22:32 से	हस्त	4	ठ	कन्या	चाँदी
27 नवंबर	05:11 से	चित्रा	1	पे	कन्या	चाँदी
	11:50 से	चित्रा	2	पो	कन्या	चाँदी
	18:30 से	चित्रा	3	रा	तुला	चाँदी
28 नवंबर	01:09 से	चित्रा	4	री	तुला	चाँदी
	07:49 से	स्वाति	1	रू	तुला	चाँदी
	14:26 से	स्वाति	2	रे	तुला	चाँदी
	21:03 से	स्वाति	3	रो	तुला	चाँदी
29 नवंबर	03:40 से	स्वाति	4	ता	तुला	चाँदी
	10:18 से	विशाखा	1	ती	तुला	ताम्बा
	16:51 से	विशाखा	2	तू	तुला	ताम्बा
	23:25 से	विशाखा	3	ते	तुला	ताम्बा
30 नवंबर	05:58 से	विशाखा	4	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	12:32 से	अनुराधा	1	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	18:59 से	अनुराधा	2	नी	वृश्चिक	ताम्बा
1 दिसंबर	01:27 से	अनुराधा	3	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	07:54 से	अनुराधा	4	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	14:22 से	ज्येष्ठ	1	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	20:42 से	ज्येष्ठ	2	या	वृश्चिक	ताम्बा
2 दिसंबर	03:03 से	ज्येष्ठ	3	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	09:24 से	ज्येष्ठ	4	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	15:45 से	मूल	1	ये	धनु	ताम्बा
	21:58 से	मूल	2	यो	धनु	ताम्बा
3 दिसंबर	04:12 से	मूल	3	भा	धनु	ताम्बा
	10:25 से	मूल	4	भी	धनु	ताम्बा
	16:39 से	पू.षा.	1	भू	धनु	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
3दिसंबर	22:44 से	पू.षा.	2	धा	धनु	ताम्बा
4 दिसंबर	04:50 से	पू.षा.	3	फा	धनु	ताम्बा
	10:56 से	पू.षा.	4	ढा	धनु	ताम्बा
	17:02 से	उ.षा.	1	भे	धनु	ताम्बा
	23:00 से	उ.षा.	2	भो	मकर	ताम्बा
5 दिसंबर	04:59 से	उ.षा.	3	जा	मकर	ताम्बा
	10:58 से	उ.षा.	4	जी	मकर	ताम्बा
	16:57 से	श्रवण	1	खी	मकर	ताम्बा
	22:49 से	श्रवण	2	खू	मकर	ताम्बा
6 दिसंबर	04:41 से	श्रवण	3	खे	मकर	ताम्बा
	10:33 से	श्रवण	4	खो	मकर	ताम्बा
	16:26 से	धनिष्ठ	1	गा	मकर	ताम्बा
	22:12 से	धनिष्ठ	2	गी	मकर	ताम्बा
7 दिसंबर	03:59 से	धनिष्ठ	3	गू	कुम्भ	ताम्बा
	09:46 से	धनिष्ठ	4	गे	कुम्भ	ताम्बा
	15:33 से	शतभिषा	1	गो	कुम्भ	ताम्बा
	21:15 से	शतभिषा	2	सा	कुम्भ	ताम्बा
8 दिसंबर	02:57 से	शतभिषा	3	सी	कुम्भ	ताम्बा
	08:39 से	शतभिषा	4	सू	कुम्भ	ताम्बा
	14:22 से	पू.भा.	1	से	कुम्भ	लोहा
	20:00 से	पू.भा.	2	सो	कुम्भ	लोहा
9 दिसंबर	01:39 से	पू.भा.	3	दा	कुम्भ	लोहा
	07:17 से	पू.भा.	4	दी	मीन	लोहा
	12:56 से	उ.भा.	1	दू	मीन	लोहा
	18:32 से	उ.भा.	2	थ	मीन	लोहा
10 दिसंबर	00:08 से	उ.भा.	3	झ	मीन	लोहा
	05:44 से	उ.भा.	4	ञ	मीन	लोहा
	11:21 से	रेवती	1	दे	मीन	सोना
	16:56 से	रेवती	2	दो	मीन	सोना
	22:31 से	रेवती	3	चा	मीन	सोना
11 दिसंबर	04:06 से	रेवती	4	ची	मीन	सोना
	09:42 से	अश्विनी	1	चू	मेष	सोना
	15:17 से	अश्विनी	2	चे	मेष	सोना
	20:52 से	अश्विनी	3	चो	मेष	सोना
12दिसंबर	02:27 से	अश्विनी	4	ला	मेष	सोना

✻ संवत् 2081, सन् 2024-25 में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ✻

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
12 दिसंबर	08:03 से	भरणी	1	ली	मेष	सोना
	13:26 से	भरणी	2	लू	मेष	सोना
	18:49 से	भरणी	3	ले	मेष	सोना
13 दिसंबर	00:22 से	भरणी	4	लो	मेष	सोना
	05:36 से	कृत्ति.	1	अ	मेष	सोना
	11:29 से	कृत्ति.	2	ई	वृष	सोना
	17:23 से	कृत्ति.	3	ऊ	वृष	सोना
	23:16 से	कृत्ति.	4	ए	वृष	सोना
14 दिसंबर	05:06 से	रोहिणी	1	ओ	वृष	सोना
	10:49 से	रोहिणी	2	वा	वृष	सोना
	16:32 से	रोहिणी	3	वी	वृष	सोना
	22:15 से	रोहिणी	4	वू	वृष	सोना
15 दिसंबर	03:59 से	मृगशि.	1	वे	वृष	सोना
	09:47 से	मृगशि.	2	वो	वृष	सोना
	15:35 से	मृगशि.	3	का	मिथुन	सोना
	21:23 से	मृगशि.	4	की	मिथुन	सोना
16 दिसंबर	03:11 से	आर्द्रा	1	कू	मिथुन	चाँदी
	09:04 से	आर्द्रा	2	घ	मिथुन	चाँदी
	14:58 से	आर्द्रा	3	ङ	मिथुन	चाँदी
	20:51 से	आर्द्रा	4	छ	मिथुन	चाँदी
17 दिसंबर	02:45 से	पुनर्वसु	1	के	मिथुन	चाँदी
	08:45 से	पुनर्वसु	2	को	मिथुन	चाँदी
	14:46 से	पुनर्वसु	3	ह	मिथुन	चाँदी
	20:46 से	पुनर्वसु	4	ही	कर्क	चाँदी
18 दिसंबर	02:47 से	पुष्य	1	हू	कर्क	चाँदी
	08:54 से	पुष्य	2	हे	कर्क	चाँदी
	15:02 से	पुष्य	3	हो	कर्क	चाँदी
	21:09 से	पुष्य	4	डा	कर्क	चाँदी
19 दिसंबर	03:17 से	आश्ले	1	डी	कर्क	चाँदी
	09:32 से	आश्ले	2	डू	कर्क	चाँदी
	15:47 से	आश्ले	3	डे	कर्क	चाँदी
	22:02 से	आश्ले	4	डो	कर्क	चाँदी
20 दिसंबर	04:18 से	मघा	1	मा	सिंह	चाँदी
	10:40 से	मघा	2	मी	सिंह	चाँदी
	17:02 से	मघा	3	मू	सिंह	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
20 दिसंबर	23:24 से	मघा	4	मे	सिंह	चाँदी
21 दिसंबर	05:47 से	पू.फा.	1	मो	सिंह	चाँदी
	12:16 से	पू.फा.	2	टा	सिंह	चाँदी
	18:45 से	पू.फा.	3	टी	सिंह	चाँदी
22 दिसंबर	01:14 से	पू.फा.	4	टू	सिंह	चाँदी
	07:44 से	उ.फा.	1	टे	सिंह	चाँदी
	14:18 से	उ.फा.	2	टो	कन्या	चाँदी
	20:53 से	उ.फा.	3	पा	कन्या	चाँदी
23 दिसंबर	03:27 से	उ.फा.	4	पी	कन्या	चाँदी
	10:02 से	हस्त	1	पू	कन्या	चाँदी
	16:40 से	हस्त	2	ष	कन्या	चाँदी
	23:18 से	हस्त	3	ण	कन्या	चाँदी
24 दिसंबर	05:56 से	हस्त	4	ठ	कन्या	चाँदी
	12:35 से	चित्रा	1	पे	कन्या	चाँदी
	19:14 से	चित्रा	2	पो	कन्या	चाँदी
25 दिसंबर	01:54 से	चित्रा	3	रा	तुला	चाँदी
	08:33 से	चित्रा	4	री	तुला	चाँदी
	15:13 से	स्वाति	1	रू	तुला	चाँदी
	21:51 से	स्वाति	2	रे	तुला	चाँदी
26 दिसंबर	04:29 से	स्वाति	3	रो	तुला	चाँदी
	11:07 से	स्वाति	4	ता	तुला	चाँदी
	17:45 से	विशाखा	1	ती	तुला	ताम्बा
27 दिसंबर	00:19 से	विशाखा	2	तू	तुला	ताम्बा
	06:54 से	विशाखा	3	ते	तुला	ताम्बा
	13:28 से	विशाखा	4	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	20:03 से	अनुराधा	1	ना	वृश्चिक	ताम्बा
28 दिसंबर	02:32 से	अनुराधा	2	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	09:02 से	अनुराधा	3	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	15:31 से	अनुराधा	4	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	22:01 से	ज्येष्ठ	1	नो	वृश्चिक	ताम्बा
29 दिसंबर	04:23 से	ज्येष्ठ	2	या	वृश्चिक	ताम्बा
	10:45 से	ज्येष्ठ	3	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	17:07 से	ज्येष्ठ	4	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	23:29 से	मूल	1	ये	धनु	ताम्बा
30दिसंबर	05:37 से	मूल	2	यो	धनु	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
30 दिसंबर	11:46 से	मूल	3	भा	धनु	ताम्बा
	17:54 से	मूल	4	भी	धनु	ताम्बा
31 दिसंबर	00:03 से	पू.षा.	1	भू	धनु	ताम्बा
	06:17 से	पू.षा.	2	धा	धनु	ताम्बा
	12:32 से	पू.षा.	3	फा	धनु	ताम्बा
	18:46 से	पू.षा.	4	ढा	धनु	ताम्बा
1 जनवरी	01:01 से	उ.षा.	1	भे	धनु	ताम्बा
	07:01 से	उ.षा.	2	भो	मकर	ताम्बा
	13:01 से	उ.षा.	3	जा	मकर	ताम्बा
	19:01 से	उ.षा.	4	जी	मकर	ताम्बा
2 जनवरी	01:02 से	श्रवण	1	खी	मकर	ताम्बा
	06:55 से	श्रवण	2	खू	मकर	ताम्बा
	12:49 से	श्रवण	3	खे	मकर	ताम्बा
	18:42 से	श्रवण	4	खो	मकर	ताम्बा
3 जनवरी	00:36 से	धनिष्ठा	1	गा	मकर	ताम्बा
	06:24 से	धनिष्ठा	2	गी	मकर	ताम्बा
	12:12 से	धनिष्ठा	3	गू	कुम्भ	ताम्बा
	18:00 से	धनिष्ठा	4	गे	कुम्भ	ताम्बा
	23:48 से	शतभिषा	1	गो	कुम्भ	ताम्बा
4 जनवरी	05:31 से	शतभिषा	2	सा	कुम्भ	ताम्बा
	11:14 से	शतभिषा	3	सी	कुम्भ	ताम्बा
	16:57 से	शतभिषा	4	सू	कुम्भ	ताम्बा
	22:41 से	पू.भा.	1	से	कुम्भ	लोहा
5 जनवरी	04:20 से	पू.भा.	2	सो	कुम्भ	लोहा
	09:59 से	पू.भा.	3	दा	कुम्भ	लोहा
	15:38 से	पू.भा.	4	दी	मीन	लोहा
	21:18 से	उ.भा.	1	दू	मीन	लोहा
6 जनवरी	02:54 से	उ.भा.	2	थ	मीन	लोहा
	08:31 से	उ.भा.	3	झ	मीन	लोहा
	14:08 से	उ.भा.	4	ञ	मीन	लोहा
	19:45 से	रेवती	1	दे	मीन	सोना
7 जनवरी	01:20 से	रेवती	2	दो	मीन	सोना
	06:55 से	रेवती	3	चा	मीन	सोना
	12:30 से	रेवती	4	ची	मीन	सोना
	18:06 से	अश्विनी	1	चू	मेष	सोना

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
7 जनवरी	23:41 से	अश्विनी	2	चे	मेष	सोना
8 जनवरी	05:16 से	अश्विनी	3	चो	मेष	सोना
	10:51 से	अश्विनी	4	ला	मेष	सोना
	16:26 से	भरणी	1	ली	मेष	सोना
	22:02 से	भरणी	2	लू	मेष	सोना
9 जनवरी	03:38 से	भरणी	3	ले	मेष	सोना
	09:14 से	भरणी	4	लो	मेष	सोना
	14:51 से	कृत्ति.	1	अ	मेष	सोना
	20:29 से	कृत्ति.	2	ई	वृष	सोना
10 जनवरी	02:08 से	कृत्ति.	3	ऊ	वृष	सोना
	07:47 से	कृत्ति.	4	ए	वृष	सोना
	13:26 से	रोहिणी	1	ओ	वृष	सोना
	19:08 से	रोहिणी	2	वा	वृष	सोना
11 जनवरी	00:50 से	रोहिणी	3	वी	वृष	सोना
	06:32 से	रोहिणी	4	वू	वृष	सोना
	12:14 से	मृगशि.	1	वे	वृष	सोना
	18:00 से	मृगशि.	2	वो	वृष	सोना
	23:47 से	मृगशि.	3	का	मिथुन	सोना
12 जनवरी	05:34 से	मृगशि.	4	की	मिथुन	सोना
	11:21 से	आर्द्रा	1	कू	मिथुन	चाँदी
	17:02 से	आर्द्रा	2	घ	मिथुन	चाँदी
	22:43 से	आर्द्रा	3	ङ	मिथुन	चाँदी
13 जनवरी	04:24 से	आर्द्रा	4	छ	मिथुन	चाँदी
	10:05 से	पुनर्वसु	1	के	मिथुन	चाँदी
	16:15 से	पुनर्वसु	2	को	मिथुन	चाँदी
	22:25 से	पुनर्वसु	3	ह	मिथुन	चाँदी
14 जनवरी	04:35 से	पुनर्वसु	4	ही	कर्क	चाँदी
	10:45 से	पुष्य	1	हू	कर्क	चाँदी
	16:51 से	पुष्य	2	हे	कर्क	चाँदी
	22:57 से	पुष्य	3	हो	कर्क	चाँदी
15 जनवरी	05:03 से	पुष्य	4	डा	कर्क	चाँदी
	11:09 से	आश्ले	1	डी	कर्क	चाँदी
	17:22 से	आश्ले	2	डू	कर्क	चाँदी
	23:35 से	आश्ले	3	डे	कर्क	चाँदी
16 जनवरी	05:48 से	आश्ले	4	डो	कर्क	चाँदी

❊ संवत् 2081, सन् 2024-25 में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ❊

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
16 जनवरी	12:02 से	मघा	1	मा	सिंह	चाँदी
	18:22 से	मघा	2	मी	सिंह	चाँदी
17 जनवरी	00:43 से	मघा	3	मू	सिंह	चाँदी
	07:04 से	मघा	4	मे	सिंह	चाँदी
	13:25 से	पू.फा.	1	मो	सिंह	चाँदी
	19:52 से	पू.फा.	2	टा	सिंह	चाँदी
18 जनवरी	02:20 से	पू.फा.	3	टी	सिंह	चाँदी
	08:47 से	पू.फा.	4	टू	सिंह	चाँदी
	15:15 से	उ.फा.	1	टे	सिंह	चाँदी
	21:48 से	उ.फा.	2	टो	कन्या	चाँदी
19 जनवरी	04:22 से	उ.फा.	3	पा	कन्या	चाँदी
	10:55 से	उ.फा.	4	पी	कन्या	चाँदी
	17:29 से	हस्त	1	पू	कन्या	चाँदी
20 जनवरी	00:06 से	हस्त	2	ष	कन्या	चाँदी
	06:43 से	हस्त	3	ण	कन्या	चाँदी
	13:20 से	हस्त	4	ठ	कन्या	चाँदी
	19:58 से	चित्रा	1	पे	कन्या	चाँदी
21 जनवरी	02:37 से	चित्रा	2	पो	कन्या	चाँदी
	09:17 से	चित्रा	3	रा	तुला	चाँदी
	15:56 से	चित्रा	4	री	तुला	चाँदी
	22:36 से	स्वाति	1	रू	तुला	चाँदी
22 जनवरी	05:12 से	स्वाति	2	रे	तुला	चाँदी
	11:48 से	स्वाति	3	रो	तुला	चाँदी
	18:24 से	स्वाति	4	ता	तुला	चाँदी
23 जनवरी	01:01 से	विशाखा	1	ती	तुला	ताम्बा
	07:38 से	विशाखा	2	तू	तुला	ताम्बा
	14:16 से	विशाखा	3	ते	तुला	ताम्बा
	20:54 से	विशाखा	4	तो	वृश्चिक	ताम्बा
24 जनवरी	03:32 से	अनुराधा	1	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	10:02 से	अनुराधा	2	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	16:33 से	अनुराधा	3	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	23:03 से	अनुराधा	4	ने	वृश्चिक	ताम्बा
25 जनवरी	05:34 से	ज्येष्ठा	1	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	11:55 से	ज्येष्ठा	2	या	वृश्चिक	ताम्बा
	18:17 से	ज्येष्ठा	3	यी	वृश्चिक	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
26 जनवरी	00:39 से	ज्येष्ठा	4	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	07:01 से	मूल	1	ये	धनु	ताम्बा
	13:20 से	मूल	2	यो	धनु	ताम्बा
	19:39 से	मूल	3	भा	धनु	ताम्बा
27 जनवरी	01:58 से	मूल	4	भी	धनु	ताम्बा
	08:17 से	पू.षा.	1	भू	धनु	ताम्बा
	14:26 से	पू.षा.	2	धा	धनु	ताम्बा
	20:35 से	पू.षा.	3	फा	धनु	ताम्बा
28 जनवरी	02:44 से	पू.षा.	4	ढा	धनु	ताम्बा
	08:54 से	उ.षा.	1	भे	धनु	ताम्बा
	14:56 से	उ.षा.	2	भो	मकर	ताम्बा
	20:58 से	उ.षा.	3	जा	मकर	ताम्बा
29 जनवरी	03:00 से	उ.षा.	4	जी	मकर	ताम्बा
	09:02 से	श्रवण	1	खी	मकर	ताम्बा
	14:57 से	श्रवण	2	खू	मकर	ताम्बा
	20:52 से	श्रवण	3	खे	मकर	ताम्बा
30 जनवरी	02:47 से	श्रवण	4	खो	मकर	ताम्बा
	08:42 से	धनिष्ठा	1	गा	मकर	ताम्बा
	14:31 से	धनिष्ठा	2	गी	मकर	ताम्बा
	20:20 से	धनिष्ठा	3	गू	कुम्भ	ताम्बा
31 जनवरी	02:09 से	धनिष्ठा	4	गे	कुम्भ	ताम्बा
	07:59 से	शतभिषा	1	गो	कुम्भ	ताम्बा
	13:25 से	शतभिषा	2	सा	कुम्भ	ताम्बा
	19:01 से	शतभिषा	3	सी	कुम्भ	ताम्बा
	23:38 से	शतभिषा	4	सू	कुम्भ	ताम्बा
1 फरवरी	06:15 से	पू.भा.	1	से	कुम्भ	लोहा
	12:05 से	पू.भा.	2	सो	कुम्भ	लोहा
	17:55 से	पू.भा.	3	दा	कुम्भ	लोहा
	23:45 से	पू.भा.	4	दी	मीन	लोहा
2 फरवरी	05:35 से	उ.भा.	1	दू	मीन	लोहा
	11:12 से	उ.भा.	2	थ	मीन	लोहा
	16:49 से	उ.भा.	3	झ	मीन	लोहा
	22:26 से	उ.भा.	4	ञ	मीन	लोहा
3 फरवरी	04:03 से	रेवती	1	दे	मीन	सोना
	09:38 से	रेवती	2	दो	मीन	सोना

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
3 फरवरी	15:14 से	रेवती	3	चा	मीन	सोना
	20:49 से	रेवती	4	ची	मीन	सोना
4 फरवरी	02:25 से	अश्विनी	1	चू	मेष	सोना
	08:00 से	अश्विनी	2	चे	मेष	सोना
	13:35 से	अश्विनी	3	चो	मेष	सोना
	19:10 से	अश्विनी	4	ला	मेष	सोना
5 फरवरी	00:45 से	भरणी	1	ली	मेष	सोना
	06:20 से	भरणी	2	लू	मेष	सोना
	11:56 से	भरणी	3	ले	मेष	सोना
	17:32 से	भरणी	4	लो	मेष	सोना
	23:08 से	कृत्ति.	1	अ	मेष	सोना
6 फरवरी	04:45 से	कृत्ति.	2	ई	वृष	सोना
	10:23 से	कृत्ति.	3	ऊ	वृष	सोना
	16:01 से	कृत्ति.	4	ए	वृष	सोना
	21:39 से	रोहिणी	1	ओ	वृष	सोना
7 फरवरी	03:20 से	रोहिणी	2	वा	वृष	सोना
	09:01 से	रोहिणी	3	वी	वृष	सोना
	14:42 से	रोहिणी	4	वू	वृष	सोना
	20:24 से	मृगशि.	1	वे	वृष	सोना
8 फरवरी	02:09 से	मृगशि.	2	वो	वृष	सोना
	07:55 से	मृगशि.	3	का	मिथुन	सोना
	13:40 से	मृगशि.	4	की	मिथुन	सोना
	19:26 से	आर्द्रा	1	कू	मिथुन	चाँदी
9 फरवरी	01:16 से	आर्द्रा	2	घ	मिथुन	चाँदी
	07:07 से	आर्द्रा	3	ङ	मिथुन	चाँदी
	12:58 से	आर्द्रा	4	छ	मिथुन	चाँदी
	18:49 से	पुनर्वसु	1	के	मिथुन	चाँदी
10 फरवरी	00:46 से	पुनर्वसु	2	को	मिथुन	चाँदी
	06:43 से	पुनर्वसु	3	ह	मिथुन	चाँदी
	12:40 से	पुनर्वसु	4	ही	कर्क	चाँदी
	18:37 से	पुष्य	1	हू	कर्क	चाँदी
11 फरवरी	00:41 से	पुष्य	2	हे	कर्क	चाँदी
	06:45 से	पुष्य	3	हो	कर्क	चाँदी
	12:49 से	पुष्य	4	डा	कर्क	चाँदी
	18:54 से	आश्ले	1	डी	कर्क	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
12 फरवरी	00:56 से	आश्ले	2	डू	कर्क	चाँदी
	06:59 से	आश्ले	3	डे	कर्क	चाँदी
	13:01 से	आश्ले	4	डो	कर्क	चाँदी
	19:04 से	मघा	1	मा	सिंह	चाँदी
13 फरवरी	01:32 से	मघा	2	मी	सिंह	चाँदी
	08:00 से	मघा	3	मू	सिंह	चाँदी
	14:28 से	मघा	4	मे	सिंह	चाँदी
	20:56 से	पू.फा.	1	मो	सिंह	चाँदी
14 फरवरी	03:13 से	पू.फा.	2	टा	सिंह	चाँदी
	09:30 से	पू.फा.	3	टी	सिंह	चाँदी
	15:47 से	पू.फा.	4	टू	सिंह	चाँदी
	22:04 से	उ.फा.	1	टे	सिंह	चाँदी
15 फरवरी	04:45 से	उ.फा.	2	टो	कन्या	चाँदी
	11:26 से	उ.फा.	3	पा	कन्या	चाँदी
	18:07 से	उ.फा.	4	पी	कन्या	चाँदी
16 फरवरी	00:48 से	हस्त	1	पू	कन्या	चाँदी
	07:24 से	हस्त	2	ष	कन्या	चाँदी
	14:01 से	हस्त	3	ण	कन्या	चाँदी
	20:37 से	हस्त	4	ठ	कन्या	चाँदी
17 फरवरी	03:14 से	चित्रा	1	पे	कन्या	चाँदी
	09:41 से	चित्रा	2	पो	कन्या	चाँदी
	16:09 से	चित्रा	3	रा	तुला	चाँदी
	22:37 से	चित्रा	4	री	तुला	चाँदी
18 फरवरी	05:05 से	स्वाति	1	रू	तुला	चाँदी
	11:55 से	स्वाति	2	रे	तुला	चाँदी
	18:45 से	स्वाति	3	रो	तुला	चाँदी
19 फरवरी	01:35 से	स्वाति	4	ता	तुला	चाँदी
	08:26 से	विशाखा	1	ती	तुला	ताम्बा
	15:02 से	विशाखा	2	तू	तुला	ताम्बा
	21:38 से	विशाखा	3	ते	तुला	ताम्बा
20 फरवरी	04:14 से	विशाखा	4	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	10:51 से	अनुराधा	1	ना	वृश्चिक	ताम्बा
	17:22 से	अनुराधा	2	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	23:54 से	अनुराधा	3	नू	वृश्चिक	ताम्बा
21 फरवरी	06:26 से	अनुराधा	4	ने	वृश्चिक	ताम्बा

✻ संवत् 2081, सन् 2024-25 में जन्मे बच्चों के नामाक्षर, नक्षत्र चरण, राशि व पाया ✻

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
21 फरवरी	12:58 से	ज्येष्ठ	1	नो	वृश्चिक	ताम्बा
	19:23 से	ज्येष्ठ	2	या	वृश्चिक	ताम्बा
22 फरवरी	01:48 से	ज्येष्ठ	3	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	08:13 से	ज्येष्ठ	4	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	14:39 से	मूल	1	ये	धनु	ताम्बा
	20:57 से	मूल	2	यो	धनु	ताम्बा
23 फरवरी	03:16 से	मूल	3	भा	धनु	ताम्बा
	09:34 से	मूल	4	भी	धनु	ताम्बा
	15:53 से	पू.षा.	1	भू	धनु	ताम्बा
	22:03 से	पू.षा.	2	धा	धनु	ताम्बा
24 फरवरी	04:14 से	पू.षा.	3	फा	धनु	ताम्बा
	10:25 से	पू.षा.	4	ढा	धनु	ताम्बा
	16:36 से	उ.षा.	1	भे	धनु	ताम्बा
	22:28 से	उ.षा.	2	भो	मकर	ताम्बा
25 फरवरी	04:20 से	उ.षा.	3	जा	मकर	ताम्बा
	10:12 से	उ.षा.	4	जी	मकर	ताम्बा
	16:05 से	श्रवण	1	खी	मकर	ताम्बा
	22:13 से	श्रवण	2	खू	मकर	ताम्बा
26 फरवरी	04:21 से	श्रवण	3	खे	मकर	ताम्बा
	10:29 से	श्रवण	4	खो	मकर	ताम्बा
	16:37 से	धनिष्ठ	1	गा	मकर	ताम्बा
	22:27 से	धनिष्ठ	2	गी	मकर	ताम्बा
27 फरवरी	04:17 से	धनिष्ठ	3	गू	कुम्भ	ताम्बा
	10:07 से	धनिष्ठ	4	गे	कुम्भ	ताम्बा
	15:58 से	शतभिषा	1	गो	कुम्भ	ताम्बा
	21:43 से	शतभिषा	2	सा	कुम्भ	ताम्बा
28 फरवरी	03:28 से	शतभिषा	3	सी	कुम्भ	ताम्बा
	09:13 से	शतभिषा	4	सू	कुम्भ	ताम्बा
	14:58 से	पू.भा.	1	से	कुम्भ	लोहा
	20:38 से	पू.भा.	2	सो	कुम्भ	लोहा
1 मार्च	02:19 से	पू.भा.	3	दा	कुम्भ	लोहा
	08:00 से	पू.भा.	4	दी	मीन	लोहा
	13:41 से	उ.भा.	1	दू	मीन	लोहा
	19:18 से	उ.भा.	2	थ	मीन	लोहा
2 मार्च	00:56 से	उ.भा.	3	झ	मीन	लोहा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
2 मार्च	06:33 से	उ.भा.	4	ञ	मीन	लोहा
	12:11 से	रेवती	1	दे	मीन	सोना
	17:46 से	रेवती	2	दो	मीन	सोना
	23:22 से	रेवती	3	चा	मीन	सोना
3 मार्च	04:58 से	रेवती	4	ची	मीन	सोना
	10:34 से	अश्विनी	1	चू	मेष	सोना
	16:08 से	अश्विनी	2	चे	मेष	सोना
	21:43 से	अश्विनी	3	चो	मेष	सोना
4 मार्च	03:18 से	अश्विनी	4	ला	मेष	सोना
	08:53 से	भरणी	1	ली	मेष	सोना
	14:28 से	भरणी	2	लू	मेष	सोना
	20:04 से	भरणी	3	ले	मेष	सोना
5 मार्च	01:39 से	भरणी	4	लो	मेष	सोना
	07:15 से	कृत्ति.	1	अ	मेष	सोना
	12:32 से	कृत्ति.	2	ई	वृष	सोना
	17:49 से	कृत्ति.	3	ऊ	वृष	सोना
	23:06 से	कृत्ति.	4	ए	वृष	सोना
6 मार्च	05:22 से	रोहिणी	1	ओ	वृष	सोना
	11:07 से	रोहिणी	2	वा	वृष	सोना
	16:52 से	रोहिणी	3	वी	वृष	सोना
	22:37 से	रोहिणी	4	वू	वृष	सोना
7 मार्च	04:24 से	मृगशि.	1	वे	वृष	सोना
	10:08 से	मृगशि.	2	वो	वृष	सोना
	15:53 से	मृगशि.	3	का	मिथुन	सोना
	21:37 से	मृगशि.	4	की	मिथुन	सोना
8 मार्च	03:22 से	आर्द्रा	1	कू	मिथुन	चाँदी
	09:02 से	आर्द्रा	2	घ	मिथुन	चाँदी
	14:43 से	आर्द्रा	3	ङ	मिथुन	चाँदी
	20:23 से	आर्द्रा	4	छ	मिथुन	चाँदी
9 मार्च	02:04 से	पुनर्वसु	1	के	मिथुन	चाँदी
	08:08 से	पुनर्वसु	2	को	मिथुन	चाँदी
	14:13 से	पुनर्वसु	3	ह	मिथुन	चाँदी
	20:17 से	पुनर्वसु	4	ही	कर्क	चाँदी
10 मार्च	02:22 से	पुष्य	1	हू	कर्क	चाँदी
	08:24 से	पुष्य	2	हे	कर्क	चाँदी

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
10 मार्च	14:26 से	पुष्य	3	हो	कर्क	चाँदी
	20:28 से	पुष्य	4	डा	कर्क	चाँदी
11 मार्च	02:31 से	आश्ले	1	डी	कर्क	चाँदी
	08:38 से	आश्ले	2	डू	कर्क	चाँदी
	14:46 से	आश्ले	3	डे	कर्क	चाँदी
	20:53 से	आश्ले	4	डो	कर्क	चाँदी
12 मार्च	03:01 से	मघा	1	मा	सिंह	चाँदी
	09:20 से	मघा	2	मी	सिंह	चाँदी
	15:40 से	मघा	3	मू	सिंह	चाँदी
	21:59 से	मघा	4	मे	सिंह	चाँदी
13 मार्च	04:19 से	पू.फा.	1	मो	सिंह	चाँदी
	10:43 से	पू.फा.	2	टा	सिंह	चाँदी
	17:07 से	पू.फा.	3	टी	सिंह	चाँदी
	23:31 से	पू.फा.	4	टू	सिंह	चाँदी
14 मार्च	05:56 से	उ.फा.	1	टे	सिंह	चाँदी
	12:26 से	उ.फा.	2	टो	कन्या	चाँदी
	18:57 से	उ.फा.	3	पा	कन्या	चाँदी
15 मार्च	01:28 से	उ.फा.	4	पी	कन्या	चाँदी
	07:59 से	हस्त	1	पू	कन्या	चाँदी
	14:34 से	हस्त	2	ष	कन्या	चाँदी
	21:10 से	हस्त	3	ण	कन्या	चाँदी
16 मार्च	03:45 से	हस्त	4	ठ	कन्या	चाँदी
	10:21 से	चित्रा	1	पे	कन्या	चाँदी
	16:59 से	चित्रा	2	पो	कन्या	चाँदी
	23:38 से	चित्रा	3	रा	तुला	चाँदी
17 मार्च	06:17 से	चित्रा	4	री	तुला	चाँदी
	12:56 से	स्वाति	1	रू	तुला	चाँदी
	19:35 से	स्वाति	2	रे	तुला	चाँदी
18 मार्च	02:14 से	स्वाति	3	रो	तुला	चाँदी
	08:53 से	स्वाति	4	ता	तुला	चाँदी
	15:32 से	विशाखा	1	ती	तुला	ताम्बा
	22:09 से	विशाखा	2	तू	तुला	ताम्बा
19 मार्च	04:46 से	विशाखा	3	ते	तुला	ताम्बा
	11:23 से	विशाखा	4	तो	वृश्चिक	ताम्बा
	18:01 से	अनुराधा	1	ना	वृश्चिक	ताम्बा

दिनांक माह	समय घं.मि.	जन्म नक्षत्र	चरण	जन्म अक्षर	राशि	पाया
20 मार्च	00:33 से	अनुराधा	2	नी	वृश्चिक	ताम्बा
	07:06 से	अनुराधा	3	नू	वृश्चिक	ताम्बा
	13:39 से	अनुराधा	4	ने	वृश्चिक	ताम्बा
	20:12 से	ज्येष्ठ	1	नो	वृश्चिक	ताम्बा
21 मार्च	02:38 से	ज्येष्ठ	2	या	वृश्चिक	ताम्बा
	09:05 से	ज्येष्ठ	3	यी	वृश्चिक	ताम्बा
	15:32 से	ज्येष्ठ	4	यू	वृश्चिक	ताम्बा
	21:59 से	मूल	1	ये	धनु	ताम्बा
22 मार्च	04:19 से	मूल	2	यो	धनु	ताम्बा
	10:39 से	मूल	3	भा	धनु	ताम्बा
	16:59 से	मूल	4	भी	धनु	ताम्बा
	23:19 से	पू.षा.	1	भू	धनु	ताम्बा
23 मार्च	05:29 से	पू.षा.	2	धा	धनु	ताम्बा
	11:40 से	पू.षा.	3	फा	धनु	ताम्बा
	17:50 से	पू.षा.	4	ढा	धनु	ताम्बा
24 मार्च	00:01 से	उ.षा.	1	भे	धनु	ताम्बा
	06:01 से	उ.षा.	2	भो	मकर	ताम्बा
	12:02 से	उ.षा.	3	जा	मकर	ताम्बा
	18:02 से	उ.षा.	4	जी	मकर	ताम्बा
25 मार्च	00:03 से	श्रवण	1	खी	मकर	ताम्बा
	06:07 से	श्रवण	2	खू	मकर	ताम्बा
	12:12 से	श्रवण	3	खे	मकर	ताम्बा
	18:17 से	श्रवण	4	खो	मकर	ताम्बा
26 मार्च	00:22 से	धनिष्ठ	1	गा	मकर	ताम्बा
	06:13 से	धनिष्ठ	2	गी	मकर	ताम्बा
	12:05 से	धनिष्ठ	3	गू	कुम्भ	ताम्बा
	17:57 से	धनिष्ठ	4	गे	कुम्भ	ताम्बा
	23:49 से	शतभिषा	1	गो	कुम्भ	ताम्बा
27 मार्च	05:35 से	शतभिषा	2	सा	कुम्भ	ताम्बा
	11:21 से	शतभिषा	3	सी	कुम्भ	ताम्बा
	17:07 से	शतभिषा	4	सू	कुम्भ	ताम्बा
	22:53 से	पू.भा.	1	से	कुम्भ	लोहा
28 मार्च	04:25 से	पू.भा.	2	सो	कुम्भ	लोहा
	09:58 से	पू.भा.	3	दा	कुम्भ	लोहा
	15:31 से	पू.भा.	4	दी	मीन	लोहा

❊ नाड़ीदोष विचार ❊

जन्मकुण्डली में आदिनाड़ी, मध्यनाड़ी तथा अन्त्यनाड़ी नाम से तीन नाड़ियों का विवेचन प्राप्त होता है।

आदि नाड़ी - अश्विनी, आर्द्रा, पुनर्वसु, उ.फाल्गुनी, हस्त, ज्येष्ठा, मूल, शतभिषा, पूर्वाभाद्र.

मध्य नाड़ी - भरणी, मृगशीर्ष, पुष्य, पू.फाल्गुनी, चित्रा, अनुराधा, पू.षाढ़ा, धनिष्ठा, उ.भाद्र.

अन्त्यनाड़ी- कृतिका, रोहिणी, आश्लेषा, मघा, स्वाती, विशाखा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, रेवती

यदि वर एवं कन्या की नाड़ी अलग-अलग होती है तो आठ गुण प्राप्त होते हैं। यदि वर कन्या की नाड़ी समान हो तो शून्य गुण मिलता है। इसे ही नाड़ी दोष कहते हैं। नाड़ी दोष की तीन स्थिति बनती है- 1. वर-कन्या दोनों की आदि नाड़ी हो। 2. वर-कन्या दोनों की मध्य नाड़ी हो तथा 3. वर-कन्या दोनों की अन्त्य नाड़ी हो।

यदि दोनों की आदिनाड़ी हो तो विवाह करने पर वर की मृत्यु होती है। यदि दोनों की मध्यनाड़ी हो तो विवाह करने पर कन्या की मृत्यु होती है। यदि दोनों की अन्त्य नाड़ी हो तो विवाह के पश्चात् दोनों की मृत्यु होती है। अत: नाड़ी दोष त्याज्य होता है।

आदिनाडीवरं हन्ति मध्यनाडी च कन्यकाम् ।
अन्त्यनाडी द्वयोहन्ति नाडीदोषं त्यजेद् बुधः ।।

यह वचन प्राचीन काल से ही समादृत है। यदि वर-कन्या का एक नक्षत्र हो और नक्षत्र चरण अलग-अलग हो तो नाड़ी दोष नहीं लगता है। यदि वर-कन्या का एक नक्षत्र हो और राशि अलग-अलग हो तो भी नाड़ी दोष नहीं लगता है।

राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव ।
नाडीदोषो नो गणानाञ्च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात् ।। -मु.चि.

जातिभेद से नाड़ीदोष परिहार

प्राचीन परम्परा से प्राप्त ज्योतिर्विदों के द्वारा 'नाडीदोष' का त्याग केवल विप्रवर्ण के लिए आदिष्ट हैं। क्षत्रिय वर्ण के लिए 'वर्णदोष' का त्याग कहा गया है। वैश्यवर्ण के लिए 'गणदोष' तथा शूद्रवर्ण के लिए 'योनिदोष' का त्याग आदिष्ट किया गया है-

नाडीदोषस्तु विप्राणां वर्णदोषस्तु भूभुजाम्। गणदोषस्तु वैश्यानां योनिदोषस्तु पादजे।।

यदि नाड़ीदोष के कारण सभी वर्गों में विवाह को रोक दिया जाये तो फिर सोलह गुण पर विवाह होना ही कठिन हो जायेगा। कभी-कभी तो अठ्ठाईस गुण होते हुए भी नाड़ीदोष की प्राप्ति होने से समस्या उत्पन्न हो जाती है। फलतः सोलह गुण पर विवाह सम्पन्न होने का शास्त्रीय आदेश सिद्ध करता है कि ब्राह्मण वर्ण के लिए ही नाड़ी दोष सर्वथा वर्ज्य है। नाड़ी दोष का ज्योतिष द्वारा प्राप्त परिहार ही एकमात्र उपाय नहीं होता है, धर्मशास्त्र द्वारा बतलाया उपाय ज्यादा महत्त्वपूर्ण और प्रभावशाली होता है।

फलत: नाड़ीदोष परिहार के लिए ज्योतिषशास्त्रीय परिहार के अतिरिक्त धर्मशास्त्रीय परिहार का भी अवलम्बन लेना चाहिए। भारत में प्राचीन काल से ही धर्मशास्त्रीय परिहारों की मान्यता बनी हुयी है। यह भी देखा गया है कि धर्मशास्त्रीय परिहार के बाद नवदम्पती के जीवन में विवाह के बाद किसी प्रकार की कोई दुर्घटना नहीं होती है। यह आवश्यक है कि परिहार विद्वान् वैदिक द्वारा सम्पन्न कराया जाय।

❊ नाड़ीदोष परिहार ❊

यदि ज्योतिषशास्त्रोक्त परिहार न मिले तो धर्मशास्त्रोक्त परिहार द्वारा नाड़ीदोष का निवारण करके विवाह किया जाता है। ऐसा करने पर नाड़ीदोष से उत्पन्न दुष्प्रभाव वर-कन्या को नहीं प्राप्त होता है। धर्मशास्त्रीय परिहार में बृहस्पति के वचन के अनुसार सवालाख महामृत्युंजय मंत्र जप कन्या का पिता कराकर तब विवाह करे। साथ ही विवाह मण्डप में नाड़ीदोष परिहार हेतु कन्या का पिता ब्राह्मण को गोदान-स्वर्णदान करे -

दोषापनुत्तये नाड्या मृत्युञ्जयजपादिकम्।
विधाय ब्राह्मणांश्चैव तर्पयेत्काञ्चनादिना।। -बृहस्पतिः

नारायणभट्ट द्वारा दी गयी धर्मशास्त्रीय व्यवस्था पूरे देश में मान्य है। आज भी यही धर्मशास्त्रीय व्यवस्था नाड़ी दोष के लिए प्रभावशाली उपाय है। नारायणभट्ट के अनुसार वर-कन्या की नाड़ी यदि एक हो जाये तो विवाह मण्डप में प्रत्यक्ष गोदान एवं स्वर्णदान करके ही कन्या का पिता विवाह करे -

द्वयर्के ताम्रसुवर्णमष्टरिपुके गोयुग्ममर्थांकके।
रौप्यं कांस्यमथैकनाडियुजिभे गोस्वर्णादिदत्वोद्वहेत्।।

इस उपाय को करके हजारों की संख्या में नाड़ी दोष युक्त विवाह का परिहार किया गया है। इस परिहार के पश्चात् दम्पती के जीवन में कोई अनिष्ट नहीं होता है। ध्येय है कि कन्या का पिता मण्डप में पाणिग्रहण संस्कार से पूर्व ही अपने कुल पुरोहित या श्रेष्ठ विद्वान् को संकल्पपूर्वक गोदान तथा स्वर्णदान करे। संकल्प में नाड़ीदोष परिहारार्थ गोदान तथा स्वर्णदान का उल्लेख आवश्यक होता है। इस उल्लेख के बिना किया हुआ संकल्प या दान व्यर्थ होता है। अत: विद्वान् वैदिक द्वारा ही इस कृत्य का संपादन होना चाहिए। निष्कर्षत: नाड़ीदोष होने पर विवाह का त्याग ही एकमात्र मार्ग नहीं होता, बल्कि परिहारपूर्वक विवाह करना श्रेष्ठ मार्ग है।

नाड़ीकूट सर्वश्रेष्ठ है

आठ प्रकार के कूटों में नाड़ी सर्वश्रेष्ठ कूट होने के कारण कूटशिरोमणि नाम से प्रसिद्ध है। अत: नाड़ीदोष को लेकर पारम्परिक विद्वानों में भारी सजगता देखी जाती है। प्रायशः विद्वान् सामान्य ग्रन्थों में कहे गये परिहार को स्वीकार नहीं करते। फलत: मुहूर्त्तचिंतामणि या फिर नारायणभट्ट द्वारा कहा गया परिहार ही आज विद्वानों में स्वीकार्य है।

✻ मंगली कुण्डली विचार ✻

मंगल को लेकर ज्योतिषीगण न भ्रम में रहें, न भ्रमयुक्त निर्णय दें। भ्रमयुक्त निर्णय दाम्पत्य का नाश कर सकता है। अतः सावधानीपूर्वक मंगली कुण्डली का निर्णय दें।

✻ कुण्डली में 1, 4, 7, 8, 12वें भाव में मंगल बैठा हो तो कुण्डली मंगली होती है। इसी तरह से चन्द्रमा के साथ मंगल बैठा हो या चन्द्रमा से 4, 7, 8, 12वें भाव में बैठा हो तो कुण्डली चन्द्र मंगली होती है। प्रमाणवचन-

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तुविनाशाय भत्ता पत्नी विनाशकृत्।।

✻ यदि लड़की मंगली कुण्डली वाली है तो लड़का भी मंगली कुण्डली वाला होना चाहिए।

✻ मंगल दोष का परिहार शनि करता है। यदि शनि कुण्डली में लग्न या चन्द्रमा से1, 4, 7, 8, 12वें भाव में बैठा हो तो वह मंगल दोष का शमन (नाश) करता है-

जामित्रे च यदा सौरिः लग्ने वा हिबुकेऽथवा। अष्टमे द्वादशे वाऽपि भौमदोषविनाशकृत्।।

✻ यह व्यवस्था पूरे देश में मान्य है। सॉफ्टवेयर द्वारा कुण्डली मेलापक में चन्द्रमंगली दोष पर विचार नहीं किया गया है। यह घातक प्रवृत्ति है।

✻ मंगल दोष का परिहार अपनी ही कुण्डली में नहीं देखा जाता है।

✻ यदि कन्या की कुण्डली मंगली है तो परिहार वर की कुण्डली में देखा जाता है ।

✻ यदि वर की कुण्डली मंगली है तो परिहार कन्या की कुण्डली में देखा जाता है।

✻ 1, 4, 7 केन्द्रों में बैठा मेष, वृश्चिक, मकर का मंगल राजयोगकारी होने पर भी मंगली-कुण्डली का दोष देता है। यह दाम्पत्य के लिए बाधक होता है।

परिहार (उपाय)

✻ यदि लड़की की कुण्डली मंगली है और लड़के की कुण्डली मंगली नहीं है और कोई ज्योतिषीय परिहार न निकले तो धर्मशास्त्रीय परिहार करना चाहिए। ऐसा करने से विच्छेद या वैधव्यादि दोष नहीं उत्पन्न होता है।

✻ कुम्भ विवाह, विष्णु प्रतिमा विवाह और अश्वत्थविवाह ये तीन धर्मशास्त्रीय परिहार कन्या के लिए बतलाये गये हैं। ये उपाय आज भी व्यवहार में हैं।

✻ अर्कविवाह वर के लिए होता है। इससे कन्या के जीवन की रक्षा होती है।

✻ मंगलदोष परिहार के लिए लड़का या लड़की (जो मंगल दोष से ग्रस्त हो) हेतु ब्राह्मणों द्वारा सवा लाख महामृत्युंजय मंत्र का जप कराया जाता है। यह भी परम्परा प्राप्त एवं शास्त्रोक्त परिहार है।

✻ धर्मशास्त्रीय परिहार प्रायशः विवाह से पूर्व और तिलकोत्सव के बाद किया जाता है। अभी बहुतायत में यही परम्परा सक्रिय है।

✻ शनि की साढ़ेसाती ✻

शनिग्रह जिस राशि पर रहता है उससे एक राशि आगे और एक राशि पीछे इस प्रकार कुल तीन राशि को प्रभावित करता है। शनि एक राशि पर ढ़ाई वर्ष रहता है। कुल तीन राशि पर इसका काल साढ़ेसात वर्ष का होता है। इसे ही शनि की सार्द्धसप्तवार्षिकी (साढ़ेसाती) कहते हैं।

द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चरः। सार्द्धानि सप्तवर्षाणि तदा दुःखैर्युतो भवेत्।

सूर्यसिद्धान्त अनुसार संवत् 2081 मे शनि पूरे वर्ष कुम्भ राशि में रहेगा।

✻ अतः **9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक** शनि की साढ़ेसाती मकर, कुम्भ व मीन राशियों पर चलेगी।

कुम्भ एवं मीन पर शनि का प्रभाव अत्यधिक होगा। अतः शनि का जप हवन तथा श्रीहनुमान जी की आराधना करने से साढ़ेसाती का दुष्प्रभाव शान्त होगा।

✻ शनि की ढैय्या ✻

जब अपनी जन्मराशि से शनि चतुर्थ या अष्टम में स्थित हो तो शनि की ढैय्या चलती है। इसकी अवधि ढाई वर्ष की होती है। शनि की ढैया का प्रभाव भी जातक को प्रभावित करता है। यदि कुण्डली में चन्द्रमा शुभ स्थान में स्थित होकर योगकारी हो तो शनि की ढैया का प्रभाव कल्याणकारी होता है। कतिपय लोग इसे शनि की कल्याणी भी कहते हैं। **वर्षारम्भ से शनि की ढैया कर्क व वृश्चिक राशि के ऊपर है।**

मेष - कर्क, वृश्चिक का शनि ढैया कारक।
वृष - सिंह, धनु का शनि ढैया कारक।
मिथुन - कन्या, मकर का शनि ढैया कारक।
कर्क - तुला, कुम्भ का शनि ढैया कारक।
सिंह - वृश्चिक, मीन का शनि ढैया कारक।
कन्या - धनु, मेष का शनि ढैया कारक।
तुला - मकर, वृष का शनि ढैया कारक।
वृश्चिक - कुम्भ, मिथुन का शनि ढैया कारक।
धनु - मीन, कर्क का शनि ढैया कारक।
मकर - मेष, सिंह का शनि ढैया कारक।
कुम्भ - वृष, कन्या का शनि ढैया कारक।
मीन - मिथुन, तुला का शनि ढैया कारक।

शनि साढ़ेसाती शांति स्तोत्र

महर्षि पिप्लाद कृत शनि की साढ़ेसाती के शांति स्तोत्र के पाठ से साढ़ेसाती जनित रोग, कष्ट, जीविका तथा कलह आदि बाधाएं दूर होती हैं। शनिवार को 108 पाठ कल्याणकारी है:--

नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाय नमोऽस्तु ते। नमस्ते बंधु रूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो ।।
नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च ।।

*ज्येष्ठ कृष्णपक्ष, पर **शनि शान्ति के उपाय** दिए गए हैं*

पुरुष की जन्मकुण्डली में द्वादश भावों में स्थित ग्रहों के फल

ग्रह	तनु 1	धन 2	भ्राता 3	सुख 4	पुत्र 5	शत्रु 6	स्त्री 7	मृत्यु 8	धर्म 9	कर्म 10	लाभ 11	व्यय 12
सूर्य	अङ्गपीड़ा	धननाश	निरोगी	दुःखी	सुतहानि	शत्रुनाश	स्त्रीदुष्टा	अल्पायु	दुष्टमति	शूर	धनी	दुष्ट स्वभाव
चन्द्र	कान्तिसुख	सम्पत्तिवान्	कीर्तिमान्	सुखभोगी	धनी, पुत्रवान्	अल्पायु	सुभार्यावान्	योगी	धर्मात्मा	तेजयुक्त	धनी	कामी
मंगल	रक्तकोप	ऋणी	विक्रमी	दुःखी	पुत्रहीन	शत्रुनाश	स्त्रीनाश	शरीर पीड़ा	पापरत	तेजस्वी	धनी	पतितदार
बुध	सुखी	धनी, गुणी	अरिमर्दन	सुखी	अल्पपुत्र	रोगी	धर्मज्ञ	गुणी	सुखी	कीर्तिमान	धनी	दरिद्र
गुरु	विद्वान्	धनागम	पापी	सुखी	प्रतापी	कामी	सुभार्या	नीचस्व	धार्मिक	सम्पत्तिवान्	सुलाभ	खल
शुक्र	सुखी	धनी	पापी	सुखी	बुद्धिमान्	रोगी	कामी	नीच	तपस्वी	सम्पत्ति	सुमति	रोगी
शनि	दुःखी	धनहानि	पराक्रमी	दुःखी	पुत्रहीन	शत्रुजित्	स्त्रीकुलटा	नेत्ररोगी	दुष्टबुद्धि	पराक्रमी	धनवान्	दुःखी
राहु	रोगी	निर्धन	विक्रमी	मातृहानि	कुमति	सबल	स्त्री रोगी	रोगी	देन्ययुक्त	मानी	सुख्यात	पतित
केतु	सकाम	खल	शूर	दुःखी	मूर्ख	सबल	स्त्री हानि	क्लेशयुक्त	पापी	पितृहीन	धनी	दुर्जन

स्त्री की जन्मकुण्डली में द्वादश भावों में स्थित ग्रहों के फल

ग्रह	तनु 1	धन 2	भ्राता 3	सुख 4	पुत्र 5	शत्रु 6	स्त्री 7	मृत्यु 8	धर्म 9	कर्म 10	लाभ 11	व्यय 12
सूर्य	क्रोधनी	दरिद्रा	सुसुता	सपीड़ा	विपुत्रा	सुखिनी	दुःखार्ता	विधवा	धर्मज्ञा	सुकर्मा	सुलाभा	सरोगा
चन्द्र	अल्पायुषी	बहुधना	सुखिनी	सुभगा	सुपुत्रा	सरोगा	पतिप्रिया	रोगिणी	सुखिनी	धर्मज्ञा	गुणज्ञा	हीनांगी
मंगल	विधवा	बन्ध्या	विसहजा	सुःखार्ता	विपुत्रा	अरोगा	विधवा	नेत्ररोगणी	दुःखिनी	कुपुत्रा	सुलाभा	खला
बुध	सौभाग्या	धनाढ्य	पुत्रवती	सुगृहा	धीकान्तियुक्ता	सकोपा	पतिव्रता	कृतघ्ना	सुभोगा	सत्कर्मा	पतिव्रता	कृशाङ्गी
गुरु	सती	धनाढ्य	सुसहजा	सुखिनी	सुगुणा	सापदा	कीर्तियुक्ता	सरोगा	पुत्राढ्या	साधवी	सुपुत्रा	सुव्यया
शुक्र	ससुखा	सुभगा	धनाढ्य	सुखिनी	पुत्रवती	दरिद्रा	पतिप्रिया	विसुखा	धर्मरता	सधना	सुपुत्रा	सुव्यया
शनि	बन्ध्या	दुःखिनी	सुदक्षा	हृद्रोगा	विपुत्रा	गुणज्ञा	विधवा	दुःखनी	बन्ध्या	पापिनी	सुलाभा	मूढा
राहु	पुत्रहीना	दरिद्रा	सवित्ता	रोगार्त्ता	विपुत्रा	सधना	दुःखिता	विधवा	बन्ध्या	दुष्कर्मा	नीरोगा	दुष्टा
केतु	दुःखिनी	दुःखार्ता	रोगणी	मातृहानि	अपुत्रा	धनयुता	विधवा	दुःखिनी	शोकयुक्ता	पापिनी	सुभगा	रोगिणी

गोचर कुण्डली में द्वादश भावों में स्थित ग्रहों के फल

ग्रह	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पञ्चम्	षष्ठम्	सप्तम्	अष्टम्	नवम्	दशम्	एकादश	द्वादश
सूर्य	स्थाननाश	भय	श्रीप्राप्ति	मानभंग	दैन्य	विजय	यात्रा	पीड़ा	सुकृतिनाश	सिद्धि	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र	अन्नलाभ	धननाश	सुख	रोग	कार्यनाश	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग	धर्मलाभ	सुख	धनलाभ	धननाश
मंगल	शत्रुभीति	धननाश	धनलाभ	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	द्रव्यनाश	शत्रुभय	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	धननाश
बुध	बन्धन	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुख	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सुख	धनलाभ	धननाश
गुरु	भय	धननाश	क्लेश	धननाश	सुख	शोक	राजमान	पीड़ा	सुख	दैन्य	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र	शत्रुनाश	धनलाभ	सुख	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुःख	धनलाभ	धननाश
शनि	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभय	पुत्रनाश	धनलाभ	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मनस्य	धनलाभ	धननाश
राहु	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक	श्रीप्राप्ति	कलह	मृत्यु	दुःख	वैर	सुख	शोक
केतु	रोग	वैर	सुख	भय	सुख	धनलाभ	कलह	रोग	पाप	शोक	कीर्ति	शत्रुभय

जयपुर के लग्न प्रवेश से प्रमुख शहरों के लग्न प्रवेश संस्कार

लग्न / नगर	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	लग्न / नगर	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.		मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.
अजमेर	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५	+४	+४	+४	+४	+५	अम्बाला	+७	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	−२	−४	−३	०	+३
अलवर	−३	−४	−४	−४	−३	−३	−३	−२	−१	−२	−३	−३	अमृतसर	−१	−४	−८	−६	−३	+२	+६	+१०	+१४	+१३	+१०	+६
बांसवाड़ा	+८	+११	+१३	+१३	+९	+६	+२	००	−१	−१	+३	+६	अलीगढ़	−१०	−१०	−१०	−१०	−९	−९	−९	−८	−७	−८	−३	−२
बारां	−१	+१	+१	००	−२	−३	−५	−६	−७	−७	−४	−२	अयोध्या	−२६	−२५	−२४	−२४	−२६	−२५	−२५	−२५	−२५	−२६	−२६	−२६
बाड़मेर	+१९	+२०	+२०	+२०	+१८	+१७	+१६	+१५	+१५	+१५	+१७	+१९	अहमदाबाद	+१६	+२०	+२१	+२१	+१७	+१४	+१०	+६	+५	+५	+८	+१२
भरतपुर	−७	−७	−७	−७	−७	−७	−७	−६	−६	−६	−६	−६	आगरा	−९	−९	−९	−९	−९	−९	−९	−९	−९	−८	−७	−८
भीलवाड़ा	+७	+८	+८	+७	+६	+४	+३	+२	+१	+२	+४	+६	अकोला	−१	+५	+८	−११	−८	−८	−८	−८	−८	−८	−८	−९
बीकानेर	+९	+८	+८	+७	+९	+१०	+११	+१२	+१२	+१२	+११	+१०	इंदोर	+३	+७	+९	+८	+५	००	−४	−७	−१०	−९	−४	००
बूंदी	+२	+४	+४	+३	+२	००	−२	−२	−३	−२	००	+१	इलाहाबाद	−२३	−२१	−२१	−२१	−२२	−२४	−२६	−२६	−२८	−२७	−२५	−२४
चित्तौड़	+६	+९	+९	+९	+७	+५	+३	+१	००	+१	+४	+६	उज्जैन	+३	+७	+८	+७	+४	+१	−३	−६	−८	−७	−३	००
चूरू	+३	+२	००	००	+१	+२	+३	+५	+६	+६	+६	+५	गुड़गाँव	−६	−७	−८	−८	−७	−५	−४	−२	−२	−२	−२	−३
दौसा	−२	−२	−३	−३	−४	−४	−४	−४	−३	−३	−२	−२	गौरखपुर	−३१	−३०	−३०	−३०	−३०	−३०	−३१	−३१	−३०	−३१	−३०	−३१
धौलपुर	−७	−७	−८	−८	−९	−९	−९	−९	−९	−८	−७	−७	गोहाटी	−५९	−५८	−५८	−५८	−५९	−६०	−६१	−६१	−६१	−६१	−६०	−६०
डूंगरपुर	+११	+१३	+१५	+१४	+१२	+९	+५	+३	+१	+२	+६	+१०	गोवा	+१६	+२६	+३१	+२९	+२१	+१०	+२	−१०	−१५	−१३	−४	+१
हनुमानगढ़	+४	+२	+१	+१	+२	+४	+७	+१०	+११	+१०	+१०	+८	चण्डीगढ़	−८	−११	−१३	−१२	−९	−५	००	+३	+४	+३	+१	−३
जैसलमेर	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०	+२०	जलगाँव	+४	+९	+११	+१०	+७	+४	−३	+७	+९	+९	+४	+१
जालौर	+१४	+१६	+१६	+१५	+१४	+१२	+१०	+१०	+९	+९	+१०	+१२	डिब्रुगढ़	−७३	−७३	−७४	−७४	−७३	−७३	−७३	−७२	−७१	−७२	−७१	−७२
झालावाड़	+१	+३	+४	+३	+१	−१	−४	−५	−७	−६	−३	००	नासिक	+१३	+१९	+२२	+२१	+१६	+९	+२	−३	−७	−५	+१	+८
झुंझुनूं	+१	००	−१	−१	००	+१	+२	+३	+३	+४	+४	+३	पटना	−३७	−३५	−३५	−३५	−३६	−३७	−३९	−३९	−४०	−४०	−३८	−३७
जोधपुर	+१३	+१३	+१३	+१३	+१२	+१२	+१२	+१२	+११	+११	+१२	+१२	बड़ौदा	+१४	+१८	+२०	+२०	+१६	+११	+६	+३	००	+१	+६	+११
करौली	−४	−४	−४	−४	−४	−५	−५	−६	−६	−५	−४	−४	भोपाल	−४	०	+१	+१	−२	−६	−९	−११	−१५	−१४	−१०	−७
कोटा	+१	+२	+४	+४	+३	+१	−१	−३	−५	−४	−२	−१	रतलाम	+६	+९	+१०	+१०	+७	+४	००	−३	−५	−४	००	+३
नागौर	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+९	+९	+९	+९	+९	लखनऊ	−२१	−२०	−२०	−२०	−२०	−२१	−२१	−२०	−२१	−२१	−२०	−२०
पाली	+१०	+१२	+१२	+१२	+११	+१०	+८	+७	+७	+७	+९	+१०	वाराणसी	−२८	−२६	−२६	−२६	−२६	−२८	−३०	−३२	−३३	−३३	−३१	−३०
प्रतापगढ़	+८	+१०	+११	+१०	+८	+५	+२	००	−१	−१	+२	+५	सूरत	+१६	+२२	+२४	+२३	+१९	+१३	+७	+३	००	+१	+६	+१२
राजसमंद	+१०	+१२	+१२	+११	+९	+८	+५	+४	+३	+४	+६	+८	दिल्ली	−७	−८	−९	−८	−७	−४	−४	−२	−१	−२	−४	−५
सवाईमाधोपुर	−१	००	−१	−१	−२	−३	−४	−४	−४	−४	−२	−१	कोलकाता	−४७	−४३	−४०	−४१	−४४	−५०	−५४	−५७	−६०	−५९	−५६	−५०
सीकर	+२	+२	+१	+१	+१	+	+३	+३	+३	+४	+५	+४	चेन्नई	−७	+४	+१०	+८	−२	−१६	−२८	−४०	−४६	−४४	−३३	−२०
सिरोही	+९	+११	+१२	+११	+१०	+८	+५	+५	+३	+३	+८	+६	मुम्बई	+१८	+२५	+२९	+२७	+२१	+१३	+६	−१	−५	−४	+३	+११
टोंक	+१	+२	+१	+१	००	−१	−२	−२	−२	−२	००	+१	बैंगलुरु	+३	+१५	+२०	+१८	+८	−४	−१७	−२९	−३४	−३२	−२२	−१०
उदयपुर	+१०	+१३	+१४	+१३	+१२	+१०	+७	+५	+३	+३	+५	+८	देहरादून	−८	−११	−१३	−१३	−१०	−६	−३	+२	+३	+२	+१	+६

❀ राजस्थान के प्रमुख नगरों की अक्षांश–रेखांश सारिणी ❀

स्टैण्डर्ड अन्तर = स्थानीय देशी टाइम व स्टैण्डर्ड टाइप का अन्तर

देशान्तर = जयपुर से पूर्व में (+) तथा पश्चिम में (−)

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
अजमेर				
अजमेर	२६–२७	७४–४०	३१–२०	–४/३६
किशनगढ़	२६–३४	७४–५२	३०–३२	–३/४८
केकड़ी	२५–५६	७५–१०	२९–२०	–२/३६
टॉडगढ़	२५–४२	७४–००	३४–००	–७/१६
नसीराबाद	२६–१८	७४–४४	३१–०४	–४/२०
पीसांगन	२६–२५	७४–२३	३२–२८	–५/४४
पुष्कर	२६–३०	७४–२३	३१–४८	–५/०४
ब्यावर	२६–०६	७४–२०	३२–४०	–५/५६
बांदनवाडा	२६–०९	७४–४२	३१–१२	–४/२८
विजयनगर	२५–५५	७४–३८	३१–२८	–४/४४
भिनाय	२६–०४	७४–४७	३०–५२	–४/०८
मसूदा	२६–०५	७४–३०	३२–००	–५/१६
रामसर	२६–१३	७४–५३	३०–२८	–३/४४
रूपनगर	२६–४८	७४–५४	३०–२४	–३/४०
सरवाड़	२६–०२	७४–५५	३०–२०	–३/३६
अलवर				
अलवर	२७–३४	७६–३८	२३–२८	–३/१६
कटूमर	२७–१८	७७–०२	२१–५२	–४/५२
किशनगढ़बास	२७–४५	७६–४९	२२–४४	–४/००
खैरथल	२७–४८	७६–३६	२३–३६	–३/०८
खेड़ली	२७–१२	७६–०६	२१–३६	–५/०८
कोटकासिम	२७–०३	७६–४४	२३–०४	–३/४०
तिजारा	२७–५५	७६–५०	२२–४०	–४/०४
थानागाजी	२७–२५	७६–१९	२४–४४	–२/००
बहरोड	२७–५४	७६–१८	२४–४८	–१/५६
बानसूर	२७–४१	७६–२२	२४–३२	–२/१२
मण्डावर	२७–५३	७६–३६	२३–३६	–३/०८
राजगढ़	२७–१५	७६–३८	२३–२८	–३/१६
रामगढ़	२७–३६	७६–४९	२२–४४	–४/००
लक्ष्मणगढ़	२७–२३	७६–५२	२२–३२	–४/१२
उदयपुर				
उदयपुर	२४–३५	७३–४१	३५–१६	–८/३२
एकलिंगजी	२४–४३	७३–४६	३४–५६	–८/१२
ऋषभदेव	२४–०४	७३–४२	३५–१२	–८/२८
कोटड़ा	२४–२०	७३–१०	३७–२०	–१०/३६
खेरवाड़ा	२४–००	७३–३५	३५–४०	–८/५६
गोगुंदा	२४–४४	७३–३५	३५–४०	–८/५६
झाड़ोल	२४–२४	७३–२९	३६–०६	–९/२२
धरियाबाद	२४–०७	७४–२७	३२–१२	–५/२८
परसाद	२४–११	७३–४२	३५–१२	–८/२८
फतेहनगर	२४–४८	७४–०६	३३–३६	–६/५२
भिंडर	२४–३०	७४–१२	३३–१२	–६/२८
मावली	२४–४७	७३–५८	३४–०८	–७/२४
मोदरी	२४–२५	७३–२५	३६–२०	–९/३६
वल्लभनगर	२४–४१	७४–०२	३३–५२	–७/०८
सलुम्बर	२४–०६	७४–०६	३३–३६	–६/५२
सराड़ा	२४–०८	७३–४८	३४–४८	–८/०४
करौली				
करनपुर	२६–१२	७६–५४	२२–२४	+४/२०
करौली	२६–३०	७७–०१	२१–५६	+४/४८
केलादेवी	२६–२१	७६–५४	२२–२४	+४/२०
टोड़ाभीम	२६–५४	७६–४८	२२–४८	+३/५६
नादौती	२६–४३	७६–४४	२३–०४	+३/४०
लसारड़ा	२६–०९	७७–०२	२१–५२	+४/५२
शहर	२६–३६	७६–४४	२३–०४	+३/४०
श्रीमहावीरजी	२६–४१	७६–५९	२२–०४	+४/४०
सपोटरा	२६–१७	७६–४५	२३–००	+३/४४
हिण्डौनसिटी	२६–४३	७७–०१	२१–५६	+४/४८
कोटा				
इन्द्रगढ़	२५–४४	७६–१२	२५–१२	+१/३२
कोटा	२५–१०	७५–५२	२६–३२	+०/१२
दीगोद	२५–१३	७४–०५	२५–४०	+१/०४
पीपलदाकला	२५–३३	७६–२७	२४–१२	+२/३२
मुकंदरा	२४–४९	७५–५९	२६–०४	+०/४०
रामगंज मंडी	२४–३६	७५–५४	२६–२४	+०/२०
रावतभाटा	२४–४५	७५–३५	२७–४०	–०/५६
सांगोद	२४–५५	७६–२१	२४–३६	+२/०८
गंगानगर				
अनूपगढ़	२९–०७	७३–०६	३७–३६	–१०/५२
केसरीसिंहपुर	२९–५८	७३–४५	३५–००	–८/१६
गंगानगर	२९–४९	७३–५०	३४–४०	–७/५६
गजसिंहपुर	२९–४२	७३–२४	३६–२४	–९/४०
घड़साना	२८–५९	७३–०१	३७–५६	–११/१२
जेतसर	२९–२२	७३–२३	३६–२८	–९/४४
पदमपुर	२९–३५	७३–३१	३५–५६	–९/१२
रामसिंहपुर	२९–१०	७३–२४	३६–२४	–९/४०
रायसिंह नगर	२९–३२	७३–२७	३६–१२	–९/२८
श्रीविजयनगर	२९–१३	७३–३०	३६–००	–९/१६
करणपुर	२९–५०	७३–५०	३४–४४	–८/००
सरूपसर	२९–२२	७३–३७	३५–३२	–८/४८
सूरतगढ़	२९–१९	७३–५७	३४–१२	–७/२८
हिन्दूमलकोट	३०–००	७३–५४	३४–२४	–७/४०
चित्तौड़गढ़				
अरनोद	२३–५३	७४–४९	३०–४४	–४/००
कपासन	२४–५४	७४–१८	३२–४८	–६/०४
गंगरार	२५–०३	७४–३८	३१–२८	–४/४४
चित्तौड़गढ़	२४–५४	७४–४०	३१–२०	–४/३६
छोटीसादड़ी	२४–२४	७४–४२	३१–१२	–४/२८
डूंगरा	२४–२९	७४–२१	३२–३६	–५/५२
देवलिया	२४–०३	७४–४३	३१–०८	–४/२४
निम्बाहेड़ा	२४–३७	७४–४५	३१–००	–४/१६
प्रतापगढ़	२४–०२	७४–४७	३०–५२	–४/०८
पिपलोदा	२३–३५	७४–५०	३०–४०	–३/५६
बड़ी सादड़ी	२४–२५	७४–२८	३२–०८	–५/२४
बेगूं	२४–५७	७५–०६	२९–३६	–२/५२
भदेसर	२४–३९	७४–३१	३१–५६	–५/१२
भैसरोड़गढ़	२४–४८	७५–३३	२७–४८	–१/०४
राशमी	२५–०४	७४–२३	३२–२८	–५/४४
चूरू				
चूरू	२८–१९	७५–०१	२९–५६	–३/१२
छापर	२७–५०	७४–२५	३२–२०	–५/३६
जोधासर	२८–०७	७३–५०	३४–४०	–७/५६
तारानगर	२८–४२	७५–०६	२९–३६	–२/५२
पुनरासर	२८–१२	७३–४७	३४–५२	–८/०८
बीदासर	२७–५०	७४–२५	३२–२०	–५/३६
रतनगढ़	२८–०५	७४–३७	३१–३२	–४/४८
रतननगर	२८–१३	७४–५७	३०–१२	–३/२८
राजगढ़	२८–३९	७५–२६	२८–१६	–१/३२
राजावास	२८–३४	७४–४४	३१–०४	–४/२०
राजलदेसर	२८–०२	७४–२८	३२–०८	–५/२४
रेनी	२८–४१	७५–०५	२९–४०	–२/५६
श्रीडूंगरगढ़	२८–०६	७४–०१	३३–५६	–७/२
सरदारशहर	२८–२७	७४–३०	३२–००	–५/१६
सार्दुलपुर	२८–३८	७५–२४	२८–२४	–१/४०
सालासर	२७–४३	७४–४०	३१–२०	–४/३६
साहवा	२८–५३	७४–४९	३०–४४	–४/००
सुजानगढ़	२७–४२	७४–३०	३२–००	–४/१६

राजस्थान के प्रमुख नगरों की अक्षांश-रेखांश सारिणी

स्टैण्डर्ड अन्तर = स्थानीय देशी टाइम व स्टैण्डर्ड टाइप का अन्तर

देशान्तर = जयपुर से पूर्व में (+) तथा पश्चिम में (-)

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
जयपुर				
अचरोल	२७-०२	७५-५४	२६-२४	+०/२०
आमेर	२६-५९	७५-५२	२६-३२	+०/१२
आसलपुर	२६-५५	७५-२६	२८-१६	-१/३२
कालाडेरा	२७-११	७५-३८	२७-२८	-०/४४
कोटपूतली	२७-४२	७६-१२	२५-१२	+१/३२
चाकसू	२६-३६	७५-५९	२६-०४	+०/४०
चौमूँ	२७-०८	७५-४७	२६-५२	-०/०८
जयपुर	२६-५५	७५-४९	२६-४४	०/००
जमवारामगढ़	२७-०१	७६-०१	२५-५६	+०/४८
जोबनेर	२६-५७	७५-२४	२८-२४	-१/४०
दूदू	२६-४१	७५-१६	२८-५६	-२/१२
नरैना	२६-५०	७५-११	२९-१६	-२/३२
पावटा	२७-३७	७६-०६	२५-३६	+१/०८
फागी	२६-३४	७५-३५	२७-४०	-०/५६
फुलेरा	२६-५२	७५-१६	२८-५६	-२/१२
बस्सी	२६-५२	७६-०३	२५-४८	+०/५६
बगरू	२६-४७	७५-३३	२७-४८	-१/०४
बैराठ	२७-२७	७६-११	२५-१६	+१/२८
महलां	२६-५०	७५-३०	२८-००	-१/१६
वनस्थली	२६-२३	७५-५०	२६-४०	+०/०४
शाहपुरा	२७-२३	७५-५८	२६-०८	+०/३६
सामोद	२७-१२	७५-४८	२६-४८	-०/०४
सांगानेर	२६-४९	७५-४६	२६-५६	-०/१२
सांभरलेक	२६-५४	७५-१२	२९-१२	-२/२८
जालोर				
आहोर	२५-२३	७२-५२	३८-३२	-११/४८
जसवंतपुरा	२४-४९	७२-३०	४०-००	-१३/१६
जालोर	२५-२२	७२-३८	३९-२८	-१२/४४
बागरा	२५-१५	७२-२८	४०-०८	-१३/२४
बाकरा	२५-१२	७२-३२	३९-५२	-१३/०८
भीनमाल	२५-००	७२-१९	४०-४४	-१४/००
मोरसीम	२५-०९	७१-५४	४२-२४	-१५/४०
रानीवाड़ा	२४-४४	७२-१४	४१-०४	-१४/२०
सांचोर	२४-४५	७१-५०	४२-४०	-१५/५६
सीयाणा	२५-०९	७२-४०	३९-२०	-१२/२६
जैसलमेर				
किशनगढ़	२७-५२	७०-३४	४७-४४	-२१/००
खुड़ी	२६-४२	७०-४०	४७-२०	-२०/३६
खुईआला	२७-०६	७०-२५	४८-२०	-२१/३६
घोटारू	२७-१८	७०-०४	४९-४४	-२३/००
चांदन	२६-५९	७१-१९	४४-४४	-१८/००
जैसलमेर	२६-५५	७०-५४	४६-२४	-१९/४०
तनोट	२७-४८	७०-२१	४८-३६	-२१/५२
देओरा	२६-३०	७०-४२	४७-१२	-२०/२८
देधा	२६-५१	७०-४२	४७-१२	-२०/२८
देवीकोट	२६-४२	७१-१२	४५-१२	-१८/२८
नाचना	२७-२९	७१-४५	४३-००	-१६/१६
पोकरण	२६-५७	७१-५६	४२-१६	-१५/३२
मियालजर	२६-१८	७०-२२	४८-३२	-२१/४८
रामगढ़	२७-२२	७०-३०	४८-००	-२१/१६
रामदेवरा	२७-००	७१-५२	४२-३२	-१५/४८
लाठी	२७-०३	७१-३०	४४-००	-१७/१६
शाहगढ़	२७-०८	६९-५३	५०-२८	-२३/४४
श्रीभादरिया	२७-०५	७१-४१	४३-१६	-१६/३२
श्रीमोहनगढ़	२७-१८	७१-१५	४५-००	-१८/१६
सम	२६-५०	७०-३१	४७-५६	-२१/१२
जोधपुर				
आसोप	२६-४८	७३-३५	३५-४०	-८/५६
ओसियां	२६-४३	७२-५५	३८-२०	-११/३६
जोधपुर	२६-१७	७३-०३	३७-४८	-११/०४
देचूं	२६-४७	७२-२०	४०-४०	-१३/५६
पीपाड़ रोड़	२६-२७	७३-२७	३६-१२	-९/२८
फलौदी	२७-०९	७२-२२	४०-३२	-१३/४८
बाप	२७-२२	७२-२२	४०-३२	-१३/४८
बालेसर	२६-२२	७२-३१	३९-५६	-१३/१२
बिलाड़ा	२६-१०	७३-४२	३५-१२	-८/२८
भोपालगढ़	२६-३९	७३-३०	३६-००	-९/१६
भोजासर	२७-००	७२-५०	३८-४०	-११/५६
मथानियां	२६-३१	७२-५९	३८-०४	-११/२०
लूनी	२६-००	७२-५२	३८-३२	-११/४८
लोहावट	२६-५९	७२-३६	३९-३६	-१२/५२
शेरगढ़	२६-२५	७२-२१	४०-३६	-१३/५२
झालावाड़				
अकलेरा	२४-२३	७६-३६	२३-३६	+३/०८
खानपुर	२४-४४	७६-२३	२४-२८	+२/१६
गंगधार	२३-५७	७५-३८	२७-२८	-०/४४
झालावाड़	२४-३६	७६-०९	२५-२४	+१/२०
झालरापाटन	२४-३३	७६-१०	२५-२०	+१/२४
देवगढ़	२३-५९	७५-४५	२७-००	-०/१६
पचपहाड़	२४-२४	७५-४७	२६-५२	-०/०८
पिड़ावा	३४-१३	७६-०३	२५-४८	+०/५६
भवानीमण्डी	२४-२४	७५-४८	२६-४८	-०/०४
भवानीगंज	२४-२६	७५-४९	२६-४४	+०/००
मण्डावर	२४-३५	७६-१५	२५-००	+१/४४
मनोहरथाना	२४-१४	७६-४८	२२-४८	+३/५६
झुंझुनू				
अलसीसर	२८-१९	७५-१८	२८-४८	-२/०४
उदयपुरवाटी	२७-४३	७५-२९	२८-०४	-१/२०
खेतड़ी	२८-००	७५-४८	२६-४८	-०/०४
गुढ़ा	२७-५३	७५-३६	२७-३६	-०/५२
चिड़ावा	२८-१५	७५-३८	२७-२८	-०/४४
झुंझुनू	२८-०५	७५-२५	२८-२०	-१/३६
नवलगढ़	२७-५१	७५-१८	२८-४८	-२/०४
पिलानी	२८-२३	७५-३५	२७-४०	-०/५६
बगड़	२८-१२	७५-३०	२८-००	-१/१६
बबाई	२७-५३	७५-४५	२७-००	-०/१६
बिसाऊ	२८-१३	७५-०५	२९-४०	-२/५६
मण्डावा	२८-०३	७५-१०	२९-२०	-२/३६
मलसीसर	२८-२४	७५-१४	२९-०४	-२/२०
मुकुन्दगढ़	२७-५७	७५-१५	२९-००	-२/१६
सूरजगढ़	२८-१९	७५-४५	२७-००	-०/१६
टोंक				
अलीगढ़	२५-५८	७६-०७	२५-३२	+१/१२
उनियारा	२५-५४	७६-०६	२५-३६	+१/०८
गंगापुर	२६-२९	७६-३६	२३-३६	+३/०८
गनवर	२६-३०	७५-१५	२९-००	-२/१६
चाँदसेन	२६-१९	७५-२९	२८-०४	-१/२०
टोंक	२६-११	७५-५०	२६-४०	+०/०४
टोडारायसिंह	२६-००	७५-२९	२८-०४	-१/२०
डिग्गी	२६-२२	७५-२७	२८-१२	-१/२८
देवली	२५-४६	७५-२५	२८-२०	-१/३६
नगर (देवली)	२५-५५	७५-५०	२६-४०	+०/०४
नगर (मालपुरा)	२६-२७	७५-१४	२९-०४	-२/२०
निवाई	२६-२४	७५-५४	२६-२४	+०/२०
पचेवर	२६-२९	७५-२०	२८-४०	-१/५६
बम्बोर	२६-०९	७५-५२	२६-३२	+०/१२
मण्डावर	२६-१०	७५-५९	२६-०४	+०/४०
मालपुरा	२६-१८	७५-२५	२८-२०	-१/३६
लाम्बाहरिसिंह	२६-१६	७५-१०	२९-२०	-२/३६

राजस्थान के प्रमुख नगरों की अक्षांश–रेखांश सारिणी

स्टैण्डर्ड अन्तर = स्थानीय देशी टाइम व स्टैण्डर्ड टाइप का अन्तर

देशान्तर = जयपुर से पूर्व में (+) तथा पश्चिम में (–)

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
डूंगरपुर				
आसपुर	२३–५८	७४–०३	३३–४८	–७/०४
गलियाकोट	२३–३१	७४–०१	३३–५६	–७/१२
डूंगरपुर	२३–५०	७३–४३	३५–०८	–८/२४
पीठ	२३–३१	७३–४५	३५–००	–८/१६
बीछीवाड़ा	२३–५१	७३–३२	३५–५२	–९/०८
रामगढ़	२३–५८	७३–५७	३४–१२	–७/२८
सागवाड़ा	२३–४१	७४–०१	३३–५६	–७/१२
सिमलवाड़ा	२३–३४	७३–४७	३४–५२	–८/०८
दौसा				
गीजगढ़	२६–५६	७६–३८	२३–२८	+३/१६
दौसा	२६–५३	७६–२०	२४–४०	+२/०४
बसवा	२७–०६	७६–३२	२३–५२	+२/५२
बांदीकुई	२७–०३	७६–३४	२३–४४	+३/००
महवा	२७–०३	७६–५६	२२–१६	+४/२८
लालसोट	२६–३४	७६–२३	२४–२८	+२/१६
सिकराय	२६–५५	७६–४०	२३–०४	+३/४०
धौलपुर				
धौलपुर	२६–४२	७७–५३	१८–२८	+८/१६
बसईनवाब	२६–५५	७७–४८	१८–४८	+७/५६
बसेड़ी	२६–४५	७७–२३	२०–२८	+६/१६
बाड़ी	२६–३९	७७–३६	१९–३६	+७/०८
राजाखेड़ा	२६–५४	७८–१२	१७–१२	+९/३२
वनसराय	२६–४१	७७–२५	२०–२०	+६/२४
सरमथुरा	२६–३१	७७–२२	२०–३२	+६/१२
नागौर				
कुचामनसिटी	२७–०९	७४–५२	३०–३२	–३/४८
कुचेरा	२७–००	७३–५४	३४–२४	–७/४०
खाटू	२७–०७	७४–१७	३२–५२	–६/०८
गोटन	२६–३९	७३–४४	३५–०४	–८/२०
चान्दरूप	२६–५७	७४–२१	३२–३६	–५/५२
जसवन्तगढ़	२७–४९	७४–२७	३२–१२	–५/२८
जायल	२७–१५	७४–१२	३३–१२	–६/२८
डीडवाना	२७–२४	७४–३४	३१–४४	–५/००
डेगाना	२६–५०	७४–१८	३२–४८	–६/०४
नागौर	२७–११	७३–४४	३५–०४	–८/२०
नावां	२७–००	७५–०१	२९–५६	–३/१२
परबतसर	२६–५२	७४–४५	३१–००	–४/१६
पीपासर	२७–३३	७३–४१	३५–१६	–८/३२
बालसमन्द	२७–३६	७४–२८	३२–०८	–५/२४
बोरावड़	२७–०१	७४–३६	३१–३६	–४/५२
भदवासी	२७–१२	७३–४०	३५–२०	–८/३६
मकराना	२७–०३	७४–४३	३१–०८	–४/२४
मेड़ता सिटी	२६–३९	७४–०६	३३–३६	–६/५२
मेड़ता रोड़	२६–४३	७३–५५	३४–२०	–७/३६
लाडनू	२७–३९	७४–२३	३२–२८	–५/४४
पाली				
अटबड़ा	२६–०५	७३–४५	३५–००	–८/१६
ऐरनपुर	२५–०९	७३–०६	३७–३६	–१०/५२
खारची	२५–४३	७३–३६	३५–३६	–८/५२
घाणेराव	२५–१५	७३–३३	३५–४८	–९/०४
चंदावल	२६–००	७३–५०	३४–४०	–७/५६
जवाईबांध	२५–०४	७३–१५	३७–००	–१०/१६
जैतारन	२६–१३	७३–५६	३४–१६	–७/३२
टाडगढ़	२५–४२	७४–००	३४–००	–७/१६
देसुरी	२५–२०	७३–३७	३५–३२	–८/४८
निम्बाज	२६–१०	७४–००	३४–००	–७/१६
पाली	२५–४६	७३–२०	३६–४०	–९/५६
फालना	२५–१२	७३–१२	३७–१२	–१०/२८
बर	२६–०६	७४–०८	३३–२८	–६/४४
बाली	२५–०५	७३–१८	३६–४८	–१०/०४
बीजापुर	२५–०७	७३–१०	३७–२०	–१०/३६
भंवर	२५–४१	७३–०६	३७–३६	–१०/५२
मुण्डारा	२५–१२	७३–२३	३६–२८	–९/४४
राणावास	२५–३९	७३–४५	३५–००	–८/१६
रानी	२५–२२	७३–१८	३६–४८	–१०/०४
रायपुर	२६–०३	७४–०२	३३–५२	–७/०८
रोहट	२५–५७	७३–०८	३७–२८	–१०/४४
सरदारसमंद	२५–५८	७३–२३	३६–२८	–९/४४
साण्डेराव	२५–१८	७३–१०	३७–२०	–१/३६
सोजत	२६–५६	७२–४२	३५–१२	–८/२८
सेंदडा	२६–०५	७४–११	३३–१६	–६/३२
बाड़मेर				
आसोतरा	२५–४६	७२–१९	४०–४४	–१४/००
गडरा रोड	२५–४०	७०–३७	४७–३२	–२०/४८
गागरिया	२५–४४	७०–४५	४७–००	–२०/१६
गिराव	२६–०२	७०–३५	४७–४०	–२०/५६
गुढ़ामालानी	२५–१२	७१–४८	४२–४८	–१६/००४
गूंगा	२६–१५	७१–१३	४५–०८	–१८/२४
चौहटन	२५–२९	७१–०४	४५–४४	–१९/००
जसोल	३५–५०	७२–१४	४१–०४	–१४/२०
धोरीमना	२५–१२	७१–२५	४४–२०	–१७/३६
पचपदरा	२५–५५	७२–२१	४०–३६	–१३/५२
पाटोदी	२६–०५	७२–१६	४०–५६	–१४/१२
पुजांसर	२५–०९	७१–०२	४५–५२	–१९/०८
बनियासांडधोरा	२५–५३	७१–४१	४३–१६	–१६/३२
बंबोरा	२५–१९	७१–१८	४४–४८	–१८/०४
बाड़मेर	२५–४६	७१–२३	४४–२८	–१७/४४
बालोतरा	२५–४९	७२–१४	४१–०४	–१४/२०
बायतू	२५–५५	७१–४६	४२–५६	–१६/१२
मूनबाव	२५–४३	७०–१५	४९–००	–२२/१६
रामसर	२५–४५	७०–५४	४६–२४	–१९/४०
रावतसर	२५–३२	७०–५६	४६–१६	–१९/३२
शिव	२६–११	७१–१५	४५–००	–१८/१६
समदड़ी	२५–४९	७२–३५	३९–४०	–१२/५६
सिन्दरी	२५–३३	७१–५५	४२–२०	–१५/३६
सिवाना	२५–३६	७२–२७	४२–१२	–१३/२८
बारां				
अटरू	२४–५०	७६–३३	२३–४८	+२/५६
किशनगंज	२५–०६	७६–३९	२३–२४	+३/२०
छबड़ा	२४–४०	७६–५०	२२–४०	+४/०४
छीपाबड़ोद	२४–३६	७६–४३	२३–०८	+३/३६
थानाकस्बा	२५–१३	७७–२०	२०–४०	+६/०४
देवरी	२५–२२	७७–१२	२१–१२	+५/३२
बारां	२५–०६	७६–३१	२३–५६	+२/४८
भंवरगढ़	२५–०६	७६–५०	२२–४०	+४/०४
मनोहरथाना	२५–२२	७६–०९	२५–२४	+१/२०
मांगरोल	२५–२०	७६–३०	२४–००	+२/४४
शाहबाद	२५–२०	७७–०८	२१–२८	+५/१६
बांसवाड़ा				
अर्थुना	२३–३५	७४–०६	३३–३६	–६/५२
कलिंजरा	२३–२१	७४–१८	३२–४८	–६/०४
कुशलगढ़	२३–१०	७४–२७	३२–१२	–५/२८
खांटू	२३–२८	७४–२२	३२–३२	–५/४८
गढ़ी	२३–३६	७४–०८	३३–२८	–६/४४
घाटोल	२३–४६	७४–२४	३२–२४	–५/४०
दानपुर	२३–३२	७४–४४	३१–०४	–४/२०
परतापुर	२३–३६	७४–१०	३३–२०	–६/३६
बागीदौरा	२३–२५	७४–१८	३२–४८	–६/०४
बांसवाड़ा	२३–३०	७४–२४	३२–२४	–५/४०
लौहरिया	२३–४८	७४–१५	३३–००	–६/१६

राजस्थान के प्रमुख नगरों की अक्षांश-रेखांश सारिणी

स्टैण्डर्ड अन्तर = स्थानीय देशी टाइम व स्टैण्डर्ड टाइप का अन्तर

देशान्तर = जयपुर से पूर्व में (+) तथा पश्चिम में (-)

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
बीकानेर				
ककराला	२८-३८	७२-५९	३८-०४	-११/२०
कपुरीसर	२८-३९	७३-५६	३४-१६	-७/३२
कालू	२८-२२	७३-५२	३४-३२	-७/४८
कोलायत	२७-५०	७२-५७	३८-१२	-११/२८
गजनेर	२७-५८	७३-०४	३७-४४	-११/००
चारणवाला	२७-५३	७२-१०	४१-२०	-१४/३६
चीलो	२७-२२	७३-३०	३६-००	-९/१६
छतरगढ़	२८-४१	७३-०८	३७-२८	-१०/४४
जसरासर	२७-४५	७३-५०	३४-४०	-७/५६
जोधासर	२८-०७	७३-४०	३५-२०	-८/३६
दांतौर	२८-२६	७२-३१	३९-५६	-१३/१२
देशनोक	२७-४८	७३-२१	३६-३६	-९/५२
नापासर	२७-५८	७३-३३	३५-४८	-९/०४
नोखा	२७-३५	७३-२९	३६-०४	-९/२०
नोरंगदेसर	२८-०५	७३-३३	३५-४८	-९/०४
पूगल	२८-३१	७३-४७	३८-५२	-१२/०८
बज्जू	२७-५९	७३-३०	३६-००	-९/१६
बीकानेर	२८-०१	७३-२०	३४-४०	-९/५६
महाजन	२८-४८	७३-५३	३४-२८	-७/४४
लूणकसर	२८-३०	७३-४५	३५-००	-८/१६
धौलपुर				
धौलपुर	२५-२९	७५-५१	२६-३६	+०/०८
बसईनवाब	२५-२४	७६-०६	२५-३६	+१/०८
बसेड़ी	२५-१८	७५-५६	२६-१६	+०/२८
बाड़ी	२५-२७	७५-४०	२७-२०	-०/३६
राजाखेड़ा	२५-४५	७५-५७	२६-१२	+०/३२
वनसराय	२५-३६	७६-१२	२५-१२	+१/३२
सरमथुरा	२५-३४	७५-३०	२८-००	-१/१६
भरतपुर				
कामां	२७-४०	७७-१६	२०-५६	+५/४८
कुम्हेर	२७-१९	७७-२३	२०-२८	+६/१६
डीग	२७-२८	७७-२०	२०-४०	+६/०४
नदबई	२७-१४	७७-१२	२१-१२	+५/३२
नगर	२७-२६	७७-०६	२१-३६	+५/०८
पहाड़ी	२७-४१	७७-०६	२१-३६	+५/०८
बयाना	२६-५४	७७-१७	२०-५२	+५/५२
बल्लभगढ़	२६-५८	७७-०६	२१-३६	+५/०८
भरतपुर	२७-१५	७७-३०	२०-००	+६/४४
रूपवास	२७-००	७७-३५	१९-४०	+७/०४
वैर	२७-००	७७-१२	२१-१२	+५/३२
सिकरीपट्टी	२७-२५	७७-०६	२१-३६	+५/०८
हेलाना	२७-०७	७७-१०	२१-२०	+५/२४
भीलवाड़ा				
आकोला	२५-१७	७४-५३	३०-२८	-३/४४
आसीन्द	२५-४२	७४-१८	३२-४८	-६/०४
कोटड़ी	२५-२५	७४-५४	३०-२४	-३/४०
खमनोर	२५-४६	७४-४७	३०-५२	-४/०८
गंगापुर	२५-१४	७४-१७	३३-००	-६/१६
गुलाबपुरा	२५-५४	७४-४२	३१-१२	-४/२८
जहाजपुर	२५-३८	७५-१८	२८-४८	-२/०४
पाटन	२५-४५	७४-२३	३२-२८	-५/४४
पुरा	२५-१९	७४-३३	३१-४८	-५/०४
बनेड़ा	२५-३१	७४-४०	३१-२०	-४/३६
बिजोलिया	२५-१०	७५-२०	२८-४०	-१/५६
बिगोद	२५-१५	७५-००	३०-००	-३/१६
भीलवाड़ा	२५-२१	७४-२०	३१-२०	-४/३६
मांडल	२५-२७	७४-३६	३१-३६	-४/५२
माण्डलगढ़	२५-१२	७५-२४	२९-२४	-०/४०
रायपुर	२५-२५	७४-२४	३३-२४	-६/४०
लसाड़िया	२५-२२	७४-१२	३२-१२	-५/२८
शंभूगढ़	२५-५०	७४-२०	३२-२०	-५/३६
शाहपुरा	२५-४०	७४-५०	३०-४०	-३/५६
सहाड़ा	२५-१२	७४-१६	३२-५६	-६/१२
हुरड़ा	२५-५५	७४-४४	३१-०४	-४/२०
राजसमन्द				
आमेट	२५-२०	७३-५९	३४-०४	-७/२०
कांकरोली	२५-०४	७३-५४	३४-२४	-७/४०
कुम्भलगढ़	२५-०९	७४-३६	३५-३६	-८/५२
खेतश्वर	२५-५८	७३-५१	३४-३६	-७/५२
देवगढ़	२५-३०	७३-५४	३४-२४	-७/४०
नाथद्वारा	२५-५६	७३-५०	३४-४०	-७/५६
भीम	२५-३९	७४-०९	३३-२४	-६/४०
राजसमन्द	२५-०४	७३-५२	३४-३२	-७/४८
रेलमगरा	२५-०३	७४-१२	३३-१२	-६/२८
राजसमन्द				
खण्डार	२६-०१	७६-३७	२३-३२	+३/१२
गंगापुर	२६-२९	७६-४५	२३-००	+३/४४
बोनली	२६-१९	७६-१४	२५-०४	+१/४०
भगवतगढ़	२६-०९	७७-१५	२१-००	+५/४४
मलारनाडूंगर	२६-१७	७६-२९	२४-०४	+२/४०
रणथम्भौर	२६-०२	७६-२७	२४-१२	+२/३२
वामनवास	२६-३३	७६-३३	२३-४८	+२/५६
सवाईमाधोपुर	२५-५८	७६-२५	२४-२०	+२/२४
सिरोही				
अनादरा	२४-३५	७२-३८	३९-२८	-१२/४४
आबूरोड	२४-२९	७२-४७	३८-५२	-१२/०८
आबू	२४-३७	७२-४५	३९-००	-१२/१६
पिंडवाड़ा	२४-४९	७३-०५	३७-४०	-१०/५६
रेवदर	२४-३७	७२-३१	३९-५६	-१३/१२
शिवगंज	२५-०९	७३-०४	३७-४४	-११/००
स्वरूपगंज	२४-४०	७२-५६	३८-१६	-११/३२
सिरोही	२४-५३	७२-५४	३८-२४	-११/४०
सीकर				
अजीतगढ़	२७-२५	७५-४८	२६-४८	-०/०४
कावंट	२७-३६	७५-४२	२७-१२	-०/२८
कोछोर	२७-२६	७५-१६	२८-५६	-२/१२
खण्डेला	२७-३७	७५-३२	२७-५२	-१/०८
खाटूश्यामजी	२७-२२	७५-२५	२८-२०	-१/३६
दातारामगढ़	२७-१५	७५-१२	२९-१२	-२/२८
दातां	२७-१८	७५-१२	२९-१२	-२/२८
धोद	२७-२४	७५-०१	२९-५६	-३/१२
नीम का थाना	२७-४४	७५-४८	२६-४८	-०/०४
पलसाना	२७-२५	७५-२६	२८-१६	-१/३२
पाटन	२७-४८	७५-५९	२६-०४	-०/४०
फतेहपुर	२८-००	७५-००	३०-००	-३/१६
रामगढ़	२८-१०	७४-५९	३०-०४	-३/२०
रींगस	२७-२१	७५-३४	२७-४४	-१/००
लक्ष्मणगढ़	२७-४५	७५-०४	२९-४४	-३/००
लोसल	२७-२६	७४-५४	३०-२४	-३/४०
श्रीमाधोपुर	२७-२५	७५-३६	२७-३६	-०/५२
सीकर	२७-३६	७५-०९	२९-२४	-२/४०
हनुमानगढ़				
कानसर	२८-५८	७४-२५	३२-२०	-५/३६
टीबी	२९-३३	७४-३१	३१-५६	-५/१२
नोहर	२९-११	७४-४६	३०-५६	-४/१२
पल्लू	२८-५६	७४-१३	३३-०८	-६/२४
पीलबिंगा	२९-३६	७४-०६	३३-३६	-६/५२
बड़ोपल	२९-२१	७४-०५	३३-४०	-६/५६
भादरा	२९-०५	७५-१५	२९-००	-२/१६
मलसीसर	२८-४५	७५-०५	२९-४०	-२/५६
रावतसर	२९-१६	७४-२४	३२-२४	-५/४०
संगरिया	२९-४८	७४-२५	३२-२०	-५/३६
सादुलशहर	२९-५४	७४-१२	३३-१२	-६/२८
हनुमानगढ़	२९-३५	७४-२१	३२-३६	-५/५२

❁ भारत के प्रमुख नगरों की अक्षांश–रेखांश सारिणी ❁

स्टैण्डर्ड अन्तर = स्थानीय देशी टाइम व स्टैण्डर्ड टाइप का अन्तर

देशान्तर = जयपुर से पूर्व में (+) तथा पश्चिम में (–)

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
अकोला	२०–४३	७७–०२	–२१/५२	+४/५२
अल्मोड़ा	२९–३७	७९–४०	–११/२०	+१५/२४
अलीगढ़	२७–५४	७८–०५	–१७/४०	+९/०४
अयोध्या	२६–४८	८२–१४	–१/०४	+२५/४०
अमेठी	२६–०८	८१–४८	–२/४८	+२३/५६
अम्बाला	३०–२१	७६–५२	–२२/३२	+४/१२
अगरतला	२३–४९	९१–१८	+३५/१२	+६१/५६
अहमदाबाद	२३–०२	७२–२७	–३९/३२	–१२/४८
आइजोल	२३–४५	९२–४५	+४१/००	+६७/४४
अमृतसल	३१–३७	७४–५३	–३०/२८	–३/४४
आगरा	२७–११	७८–०२	–१७/५२	+८/५२
आरा (बि॰)	२५–३६	८४–४२	+८/४८	+३५/३२
आदिलाबाद	१९–४०	७८–३१	–१५/५६	+१०/४८
आसनसोल–बि॰	२४–१४	८७–१५	+१९/००	+४५/४४
इटानगर	२६–५४	९३–३६	–४४/२४	+७१/०८
इन्दौर	२२–४३	७५–५३	–२६/२८	+०/१६
इम्फाल	२४–५४	९३–५४	+४५/३६	+७२/२०
इलाहाबाद	२५–२८	८१–५२	–२/३२	+२४/१२
एलोरा	२०–०५	७५–१०	–२९/२०	–२/३६
उज्जैन	२३–११	७५–४४	–२७/०४	–०/२०
उधमपुर	३२–५५	७५–०७	–२९/३२	–२/४८
ऊँझा	२३–४७	७२–२४	–४०/२४	–१३/४०
औरंगाबाद महा॰	१९–५२	७५–१९	–२८/४४	–२/००
औरंगाबाद बि॰	२४–४५	८४–२५	+७/४०	+३४/२४
कन्नौज	२७–०२	७९–५८	–१०/०८	+१६/३६
कन्याकुमारी	०८–०४	७७–३६	–१९/३६	+७/०८
करनाल	२९–४२	७७–०२	–२१/५२	+४/५२
कलकत्ता	२२–३५	८८–२४	+२३/३६	+५०/२०
कटक	२०–२८	८५–५४	+१३/३६	+४०/२०
कटनी	२३–५०	८०–२३	–८/२८	+१८/१६
कोण्णूर	११–५१	७५–२१	–२८/३६	–१/५२
कांगड़ा	३२–०९	७६–१८	–२४/४८	+१/५६
कांचिपुरम्	१२–५१	७९–५३	–१०/२८	+१६/१६
कानपुर	२६–२७	८०–२१	–८/३६	+१८/०८

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
कारगिल	३०–३०	७६–१३	–२५/०८	+१/३६
कालका	३०–४७	७६–५७	–२२/१२	+४/३२
कालीकट	११–१५	७५–४५	–२७/००	–०/१६
काशी	२५–२०	८३–००	+२/००	+२८/४४
कुरूक्षेत्र	३०–००	७६–४८	–२२/४८	+३/५६
कुभकोणम	१०–५८	७९–२३	–१२/२८	+१४/१६
कूचबिहार	२६–२०	८९–२५	+२७/४०	+५४/२४
कोचीन	१०–००	७६–१५	–२५/००	+१/४४
कोल्हापुर	१६–४१	७४–१३	–३३/०८	–६/२४
कोहिमा	२५–४१	९४–००	+४६/००	+७२/४४
कोन्नूर	११–२०	७६–४८	–२२/४८	+३/५६
खण्डवा	२१–५०	७६–२०	–२४/४०	+२/०४
खण्डाला	१८–४५	७३–२२	–३६/३२	–९/४८
खंभांत	२२–१९	७२–३६	–३९/३६	–१२/५२
खडगपुर	२२–२०	८७–१९	+१९/१६	+४६/००
खेडब्रह्म	२४–०३	७३–०४	–३७/४४	–११/००
गुड़गांव	२८–२७	७७–०४	–२१/४४	+५/००
गयाजी	२४–४८	८५–०१	+१०/०४	+३६/४८
ग्वालियर	२६–१४	७८–१०	–१७/२०	+९/२४
गंगटोक	२७–२०	८८–२५	+२३/४०	+५०/२४
गुना	२४–४०	७७–३०	–२०/००	+६/४४
गुरूदासपुर	३२–०३	७५–२७	–२८/१२	–१/२८
गौहाटी	२६–११	९१–४५	+३७/००	+६३/४४
गौरखपुर	२६–४७	८३–२४	+३/३६	+३०/२०
गोवा	१५–२५	७३–४७	–३४/५२	–८/०८
चण्डीगढ़	३०–४०	७६–५२	–२२/३२	+४/१२
चिकमंगलूर	१३–१९	७५–४७	–२६/५२	–०/०८
चित्रकूट	२५–१२	८०–५४	–६/२४	+२०/२०
चेरापूंजी	२५–१६	९१–४५	+३७/००	+६३/४४
छपरा (बी)	२५–४७	८४–४७	+०९/०८	+३५/५२
छतपरपुर	२४–५५	७९–३६	–११/३६	+१५/०८
जगन्नाथपुरी	१९–४६	८५–५०	+१३/२०	+४०/०४
जबलपुर	२३–१८	७९–५८	–१०/०८	+१६/३६
जम्मूकश्मीर	३२–४४	७४–५४	–३०/२४	–३/४०

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
जलपाईगुड़ी	२६–३२	८८–४४	+२४/५६	+५१/४०
जलगांव	२१–०१	७५–३९	–२७/२४	–०/४०
जमशेदपुर	२२–५०	८६–१०	+१४/४०	+४१/२४
जामनगर	२२–२७	७०–०५	–४९/४०	–२२/५६
जालंधर	३१–१९	७५–३५	–२७/४०	–०/५६
जींद	२९–१९	७६–२३	–२४/२८	+२/१६
जूनागढ़	२१–३२	७०–२७	–४८/१२	–२१/२८
जोनपुर	२५–४३	८२–४३	+०/५२	+२७/३६
झाँसी	२५–२६	७८–३४	–१५/४४	+११/००
टाटानगर	२४–४६	८६–१३	+१४/५२	+४१/३६
टूंड़ला जं॰	२७–१३	७८–१३	–१७/०८	+९/३६
टेहरी गढ़वाल	३०–२३	७८–३०	–१६/००	+१०/४४
डिबरूगढ़	२७–२९	९४–५६	+४९/४४	+७६/२८
तिरूपति	१३–४०	७९–२०	–१२/४०	+१४/०४
त्रिचनापल्ली	१०–५०	७८–४६	–१४/५६	+११/४८
त्रिवेन्द्रम	८–३०	७६–५७	–२२/१२	+४/३२
दरभंगा	२६–१०	८५–५५	+१३/४०	+४०/२४
दार्जिलिंग	२७–०३	८८–१७	+२३/०८	+४९/५२
दिल्ली	२८–३८	७७–१४	–२१/०४	+५/४०
दिसपुर	२६–२०	९२–१०	+३८/४०	+६५/२४
देवप्रयाग	३०–०९	७८–३७	–१५/३२	+११/१२
देहरादून	३०–१९	७८–०४	–१७/४४	+९/००
दौलताबाद	१९–५७	७५–१२	–२९/१२	–२/२८
धनबाद	२३–४७	८६–३०	+१६/००	+४२/४४
धारवाड़	१५–२८	७५–०२	–२९/५२	–३/०८
नडियावाद	२२–४१	७२–५२	–३८/३२	–११/४८
नागपुर	२१–०९	७९–०६	–१३/३६	+१३/०८
नारनौल	२८–०२	७६–०७	–२५/३२	+१/१२
नासिक	२१–००	७३–४७	–३४/५२	–८/०८
नीमच	२४–२८	७४–५१	–३०/३६	–३/५२
नैनीताल	२९–२५	७९–२७	–१२/१२	–१४/३२
पंचमढ़ी	२२–३०	७८–२२	–१६/३२	–१०/१२
पंचकूला	३०–४२	७६–५२	–२२/३२	+४/१२
पटना	२५–३७	८५–१३	+१०/५२	+३७/३६

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
पटियाला	३०–२२	७६–२५	–२४/२०	+२/२४
पठानकोट	३२–१८	७५–४२	–२७/१२	–०/२८
पणजी	१५–४१	७३–१०	–३७/२०	–१०/३६
प्रयागराज	२५–२५	८१–५३	–२/२८	+२४/१६
पाण्डिचेरी	११–५६	७९–४८	–१०/४८	+१५/५६
पानीपत	२९–२७	७६–५९	–२२/०४	+४/४०
पालनपुर	२४–११	७२–२७	–४०/१२	–१३/२८
पीलीभीत	२८–४२	७९–४८	–१०/४८	+१५/५६
पालमपुर	३२–०७	७६–३२	–२३/५२	+२/५२
पूर्णिया	२५–४९	८७–३१	+२०/०४	+४६/४८
पुरूलिया	२३–२०	८६–२४	+१५/३६	+४०/२०
पूंछ	३३–५१	७४–०८	–३३/२८	–६/४४
पूना	१८–३१	७३–५२	–३४/३२	–७/४८
पोर्टब्लेयर	११–५०	९२–४६	+४१/०४	+६७/४८
पोरबन्दर	२१–३८	६९–३६	–५१/३६	–२४/५२
फतेहपुरसिकरी	२७–०६	७७–४०	–१९/२०	+७/२४
फरीदकोट	३०–४०	७४–४५	–३१/००	–४/१६
फिरोजपुर	३०–५७	७४–३६	–३१/३६	–४/५२
फिरोजाबाद	२७–०९	७८–२४	–१६/२४	+१०/२०
फैजाबाद	२६–४७	८२–०८	–१/२८	+२५/१६
बक्सर	२५–३४	८३–५९	+५/५६	+३२/४०
बंगलौर	१२–५८	७७–३५	–१९/४०	+७/०४
बड़ौदा	२२–१८	७३–१२	–३७/१२	–१०/२८
बद्रीनाथ कर्ना॰	१५–३४	७६–५२	–२२/३२	+४/१२
बद्रीनाथ उ॰प्र॰	३०–४४	७९–३२	–११/५२	+१४/५२
बरेली	२८–२२	७९–२४	–१२/२४	+१४/२०
बलिया	२४–४४	८४–०९	+६/३६	+३३/२०
बहराइच	२७–३४	८१–३७	–३/३२	+२३/१२
बागलकोट	१६–१२	७५–४२	–२७/१२	–०/२८
बाराबंकी	२६–५६	८१–१०	–५/२०	+२१/२४
बारामूला	३४–१०	७४–२०	–३२/४०	–५/५६
बिलासपुर म॰प्र॰	२२–०५	८२–१०	–१/२०	+२२/२४
बिलासपुर हि॰प्र॰	३१–१९	७६–५०	–२२/४०	+४/०४
बीजापुर	१६–५०	७५–४२	–२७/१२	–०/२८

भारत के प्रमुख नगरों की अक्षांश–रेखांश सारिणी

नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.	नगर का नाम	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	देशान्तर फल ऋण मि. सै.
बुलन्दशहर	२८–२४	७७–५२	–१८/३२	+८/१२	रोपड़	३०–५७	७६–३०	–२४/००	+२/४४
बेलगाँव	१५–५५	७४–३१	–३१/५६	–५/१२	रोहतक	२८–५४	७६–३८	–२३/२८	+३/१६
बेल्लारी	१५–११	७६–५४	–२२/२४	+४/२०	लखनऊ	२६–५१	८०–५९	–६/०४	+२०/४०
भटिंडा	३०–११	७४–५७	–३०/१२	–३/२८	लद्दाख	३३–००	७८–४८	–१४/४८	+११/५६
भंडारा	२१–१०	७९–४०	–११/२०	+१५/२४	लुधियाना	३०–५५	७५–५३	–२६/२८	+०/१६
भद्रावती	१३–५२	७५–४०	–२७/२०	–०/३६	लेह	३४–१०	७७–४०	–१९/२०	+७/२४
भागलपुर	२५–१३	८६–५९	+१७/५६	+४४/४०	लोहारू	२८–२६	७५–४७	–२६/५२	–०/०८
भावनगर	२१–४७	७२–१०	+४१/२०	–१४/३६	वर्धा	२०–४५	७८–३९	–१५/२४	+११/२०
भिवानी	२८–४८	७६–०८	–२५/२८	+१/१६	वाराणसी	२५–२०	८३–००	+२/००	+२८/४४
भुवनेश्वर	२०–५४	८५–५२	+१३/२८	+४०/१२	विजयवाड़ा	१६–३०	८०–३६	–७/३६	+१९/०८
भोपाल	२३–१६	७७–२३	–२०/२८	+६/१६	विशाखपट्टनम्	१७–४२	८३–१८	+३/१२	+२९/५६
मणिपुर	२४–२०	९३–५८	+४५/५२	+७२/३६	शाजापुर	२३–२४	७६–१४	–२५/०४	+१/४०
मथुरा	२७–२८	७७–४१	–१९/१६	+७/२८	शाहदरा	२८–४०	७७–२०	–२०/४०	+६/०४
मद्रास	१३–०५	८०–१७	–८/५२	+१७/५२	शिमला	३१–०६	७७–१०	–२१/२०	+५/२४
मुदरई	९–५५	७८–०७	–१७/३२	+९/१२	शिलांग	२५–३४	९१–५४	+३७/३६	+६४/२०
महेन्द्रगढ़	२८–१७	७६–०९	–२५/२४	+१/२०	श्रीनगर	३४–०६	७४–५१	–३०/३६	–३/५२
मुम्बई	१८–५५	७२–५०	–३८/४०	–११/५६	सिरसा	२९–३२	७५–०४	–२९/४४	–३/००
मुगलसराय	२५–१७	८३–११	+२/४४	+२९/२८	सिंहभूम	२२–२४	८५–३०	+१२/००	+३८/४४
मुजफ्फरपुर	२६–०७	८५–२७	+११/४८	+३८/३२	सीतापुर	२७–३६	८०–४०	–७/२०	+१९/२४
मुजफ्फरनगर	२९–३०	७७–४४	–१९/०४	+७/४०	सीतामढ़ी	२६–३५	८५–२९	+११/५६	+३८/४०
मुजफ्फरबाद	३४–३३	७३–२७	–३६/१२	–९/२८	सूरत	२१–१२	७२–५०	–३८/४०	–११/५६
मेघालय	२५–५७	९२–००	+३८/००	+६४/४४	सेलम	११–३९	७८–१५	–१७/००	+९/४४
मेरठ	२९–०१	७७–४५	–१९/००	+७/४४	सोनपुर	२०–५१	८३–५५	+५/४०	+३२/२४
मैसूर	१२–२९	७६–४०	–२३/२०	+३/२४	सोमनाथ	२१–०१	७०–२६	–४८/१६	–२१/३२
मैनपुरी	२७–१३	७९–०२	–१३/५२	+१२/५२	सोनीपत	२८–५९	७७–०१	–२१/५६	+४/४८
रत्नागिरी	१६–५९	७३–१९	–३६/४४	–१०/००	सोलन	३०–५५	७७–०९	–२१/२४	+५/२०
रतलाम	२३–१९	७५–०६	–२९/४८	–३/०४	सोलापुर	१७–४०	७४–४८	–३०/४८	–४/०४
राँची	२३–२०	८५–२०	+११/२०	+३८/०४	हजारीबाग	२४–००	८५–२३	+११/३२	+३८/१६
राजकोट	२२–१८	७०–५०	–४६/४०	–१९/५६	हरिद्वार	२९–५८	७८–१३	–१७/०८	+९/३६
रामेश्वरम्	९–१७	७९–१८	–१२/४८	+१३/५६	हापुड़	२८–४३	७७–५०	–१८/४०	+८/०४
रायगढ़	२१–५८	८३–२६	+३/४४	+३०/२८	हिसार	२९–१४	७५–४४	–२७/०४	–०/२०
रायपुर	२१–१५	८१–३८	–३/२८	+२३/१६	हुबली	१५–२०	७५–१२	–२९/१२	–२/२८
रायबरेली	२६–१४	८१–१३	–५/०८	+२१/३६	हैदराबाद	१७–२७	७८–३०	–१६/००	+१०/४४
रेवाड़ी जं.	२८–१२	७६–४०	–२३/२०	+३/२४	होशंगाबाद	२२–४६	७७–४३	–१९/०८	+७/३६
					होशियारपुर	३१–३२	७५–५५	–२६/२०	+०/२४

विश्व के कुछ देशों के अक्षांश आदि

विदेशी नगर का नाम कोष्ठक में देश का नाम	अक्षांश उत्तर / दक्षिण	रेखांश पूर्व / पश्चिम	क्षेत्रीय स्टैट से स्थानीय समयान्तर मि. सै.	ग्रीनवीच समय से क्षेत्रीय स्टे अन्तर घ. मि.	भारतीय स्टैट से क्षेत्रीय स्टैट समयान्तर घ. मि.
अंकारा (तुर्किस्तान)	३९–५२ उ.	३२–५९ पू.	+११/५६	+२/००	–३/३०
अर्जेन्टाइना (द.अमेरिका)	२६–१२ द.	६४–४५ प.	+४१/००	–५/००	–१०/३०
कोटावा (कनाडा)	४५–२६ उ.	७५–४१ प.	–२/४४	–५/००	–१०/३०
अदन (एडन)	१३–२५ उ.	४५–०० पू.	+००/००	+३/००	–२/३०
अमन (जोर्डन)	३१–५७ उ.	३५–५७ पू.	+२३/४८	+२/००	–३/३०
एडन (एडन)	१२–५८ उ.	४५–०१ पू.	+०/०४	+३/००	–२/३०
एथेन्स (ग्रीस)	३७–५९ उ.	२३–२० पू.	–२६/४०	+२/००	–३/३०
करांची (पाकिस्तान)	२४–५१ उ.	६७–०० पू.	–३२/००	+५/००	–०/३०
काबुल (अफगानिस्तान)	३४–३१ उ.	६९–१२ पू.	+६/४८	+४/३०	–१/००
काहिरा (मिश्र)	३०–०१ उ.	३१–१३ पू.	+४/५२	+२/००	–३/३०
ग्रीनविच (इंग्लैण्ड)	५१–२९ उ.	०–०० पू.	+०/००	+०/००	–५/३०
जकार्ता (इण्डोनेशिया)	७–५७ द.	११०–२० पू.	–८/४०	+७/३०	+२/००
जिनेवा (स्विट्जरलैण्ड)	४६–१२ उ.	६–०९ पू.	–३५/२४	+१/००	–४/००
टोकियो (जापान)	३५–३९ उ.	१३९–४५ पू.	+१९/००	+९/००	+३/३०
ढाका (बांग्लादेश)	२३–४३ उ.	९०–२५ पू.	+१/४०	+६/००	+०/३०
तेहरान (इरान)	३५–४४ उ.	५१–२७ पू.	–४/१२	+३/३०	–२/००
न्यूयार्क (अमेरिका)	४०–४३ उ.	७४–०० पू.	+४/००	–५/००	–१०/३०
पीकिंग (चीन)	३९–५० उ.	११६–२० पू.	–१४/४०	+८/००	+२/३०
पेरिस (फ्रांस)	४८–५० उ.	२–२० पू.	–५०/४०	+१/००	–४/३०
बगदाद (ईराक)	३३–१८ उ.	४४–३० पू.	–२/००	+३/००	–२/३०
बर्लिन (प. जर्मनी)	५२–३२ उ.	१३–२४ पू.	–६/२४	+१/००	–४/३०
बेल्ग्रेड (यूगोस्लाविया)	४४–५० उ.	२०–३७ पू.	+२२/२८	+१/००	–४/३०
बैंकाक (स्याम)	१३–४५ उ.	१००–३० पू.	–१८/००	+७/००	+१/३०
ब्रुसेल्स (बेल्जियम)	५०–५१ उ.	४–२१ प.	–४२/३६	+१/००	–४/३०
मैड्रिड (स्पेन)	४०–२५ उ.	३–४५ प.	–७५/००	+१/००	–४/३०
मास्को (रूस)	५५–४५ उ.	३७–३५ पू.	–२९/४०	+३/००	–२/३०
मांडले (बर्मा)	२२–०० उ.	९६–०५ पू.	–५/४०	+६/३०	+१/००
मैक्सिको (मैक्सिको)	१९–२५ उ.	९९–१७ प.	–३७/०८	–६/३०	–११/३०
रियादं (सऊदी अरब)	२४–५० उ.	४६–१८ पू.	+५/१२	+३/००	–२/३०
रोम (इटली)	४१–४५ उ.	१२–२९ पू.	–१०/०४	+१/००	–४/३०
रंगून (बर्मा)	१६–४८ उ.	९६–०८ पू.	–५/२८	+६/३०	+१/००
लंदन (इंग्लैण्ड)	५१–३२ उ.	०–०५ प.	–०/२०	–०/००	–५/३०
ल्हासा (तिब्बत)	२९–४० उ.	९१–०८ पू.	+३४/३२	+५/३०	+०/००
वाशिंगटन (अमेरिका)	३८–५३ उ.	७७–०४ प.	–८/१६	–५/००	–१०/३०
वैलिंगटन (न्यूजीलैण्ड)	४१–१९ द.	१७४–४६ पू.	–२०/५६	+१२/००	+६/३०
सिंगापुर (मलाया)	१–१६ उ.	१०३–४७ पू.	–३४/५२	+७/३०	+२/००
सियोल (द. कोरिया)	३७–४० उ.	१२७–०० पू.	–३२/००	+९/००	+३/३०
हांगकांग (हांगकांग)	२२–१८ उ.	११४–१० पू.	–२३/२०	+८/००	+२/३०

❊ राजस्थान के प्रमुख शहरों के सूर्योदय एवं सूर्यास्त का समय ❊

(सभी समय स्टैण्डर्ड टाइम घंटा मिनट में हैं)

महीना	दिनांक	अजमेर		जोधपुर		बीकानेर		नागौर		कोटा		भरतपुर		उदयपुर		चित्तौड़गढ़		स.माधोपुर		अलवर		श्रीगंगानगर		हनुमानगढ़		दिनांक	महीना
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त		
जनवरी	**1**	07:20	17:48	07:26	17:56	07:29	17:50	07:26	17:51	07:12	17:45	07:11	17:35	07:22	17:55	07:17	17:52	07:12	17:42	07:15	17:38	07:31	17:44	07:29	17:43	**1**	जनवरी
	7	07:22	17:52	07:28	18:00	07:30	17:54	07:27	17:55	07:14	17:49	07:12	17:39	07:23	17:59	07:19	17:56	07:14	17:46	07:16	17:42	07:32	17:48	07:30	17:47	**7**	
	14	07:22	17:57	07:28	18:06	07:30	17:59	07:27	18:00	07:14	17:54	07:12	17:44	07:24	18:04	07:19	18:01	07:14	18:52	07:17	17:47	07:32	17:54	07:30	17:53	**14**	
	21	07:21	18:03	07:27	18:11	07:29	18:05	07:26	18:06	07:14	18:00	07:11	17:50	07:24	18:08	07:18	18:06	07:13	18:57	07:16	17:53	07:31	18:00	07:28	17:59	**21**	
	28	07:19	18:08	07:25	18:17	07:27	18:11	07:24	18:11	07:12	18:05	07:09	17:55	07:22	18:14	07:16	18:11	07:11	18:02	07:14	17:59	07:28	18:06	07:26	18:05	**28**	
फरवरी	**1**	07:18	18:11	07:23	18:20	07:25	18:14	07:22	18:15	07:11	18:08	07:08	17:59	07:21	18:17	07:15	18:14	07:09	18:05	07:12	18:02	07:26	18:09	07:24	18:08	**1**	फरवरी
	7	07:15	18:16	07:20	18:24	07:22	18:19	07:19	18:19	07:08	18:12	07:04	18:03	07:17	18:21	07:12	18:18	07:06	18:10	07:09	18:07	07:23	18:14	07:20	18:13	**7**	
	14	07:10	18:20	07:15	18:29	07:17	18:24	07:14	18:24	07:03	18:17	07:00	18:08	07:13	18:25	07:07	18:23	07:01	18:14	07:04	18:12	07:17	18:20	07:14	18:19	**14**	
	21	07:04	18:25	07:09	18:34	07:11	18:29	07:08	18:29	06:58	18:21	06:54	18:13	07:09	18:29	07:02	18:27	06:56	18:19	0658:	18:17	07:11	18:25	07:08	18:24	**21**	
	28	06:58	18:29	07:03	18:38	07:05	18:34	07:02	18:33	06:52	18:25	06:47	18:18	06:03	18:32	06:56	18:31	06:50	18:23	06:51	18:21	06:04	18:30	07:01	18:29	**28**	
मार्च	**1**	06:57	18:30	07:01	18:39	07:04	18:34	07:01	18:34	06:51	18:26	06:47	18:18	06:02	18:33	06:55	18:31	06:49	18:24	06:50	18:22	06:03	18:31	07:00	18:30	**1**	मार्च
	7	06:51	18:33	06:55	18:43	06:57	18:28	06:55	18:37	06:46	18:29	06:40	18:22	06:56	18:36	06:50	18:35	06:43	18:27	06:44	18:25	06:56	18:35	06:53	18:34	**7**	
	14	06:44	18:27	06:48	18:46	06:50	18:42	06:47	18:41	06:39	18:32	06:33	18:26	06:49	18:39	06:43	18:38	06:36	18:30	06:37	18:29	06:48	18:40	06:45	18:38	**14**	
	21	06:37	18:41	06:40	18:50	06:42	18:46	06:39	18:45	06:31	18:35	06:25	18:29	06:42	18:42	06:36	18:41	06:28	18:34	06:29	18:33	06:40	18:44	06:37	18:43	**21**	
	28	06:29	18:44	06:32	18:53	06:34	18:50	06:32	18:49	06:24	18:38	06:18	18:33	06:35	18:45	06:28	18:44	06:21	18:37	06:21	18:37	06:32	18:48	06:29	18:47	**28**	
अप्रैल	**1**	06:25	18:46	06:28	18:55	06:29	18:52	06:27	18:49	06:20	18:40	06:13	18:35	06:31	18:47	06:24	18:46	06:17	18:39	06:17	18:39	06:27	18:51	06:24	18:49	**1**	अप्रैल
	7	06:18	18:49	06:22	18:58	06:23	18:55	06:21	18:54	06:14	18:43	06:06	18:38	06:25	18:50	06:18	18:48	06:10	18:42	06:10	18:42	06:20	18:54	06:17	18:53	**7**	
	14	06:11	18:52	06:14	19:02	06:15	18:59	06:13	18:57	06:07	18:46	05:59	18:42	06:18	18:52	06:11	18:51	06:03	18:45	06:03	18:46	06:12	18:58	06:09	18:57	**14**	
	21	06:04	18:56	06:08	19:05	06:08	19:03	06:07	19:01	06:00	18:49	05:52	18:45	06:11	18:56	06:05	18:55	05:57	18:48	05:55	18:49	06:04	19:03	06:01	19:01	**21**	
	28	05:58	18:59	06:02	19:09	06:01	19:07	06:00	19:05	05:54	18:53	05:46	18:49	06:06	18:59	05:59	18:58	05:51	18:52	05:49	18:54	05:57	19:07	05:55	19:05	**28**	
मई	**1**	05:55	19:01	05:59	19:11	05:59	19:08	05:58	19:06	05:52	18:54	05:53	18:51	06:05	19:00	05:57	18:59	05:48	19:54	05:46	18:55	05:54	19:09	05:52	19:07	**1**	मई
	7	05:51	19:04	05:55	19:14	05:54	19:12	05:53	19:10	05:48	18:57	05:39	18:54	06:01	19:03	05:53	19:02	05:44	19:57	05:42	18:58	05:49	19:13	05:47	19:11	**7**	
	14	05:47	19:08	05:51	19:18	05:49	19:16	05:49	19:14	05:44	19:01	05:34	18:58	05:57	19:07	05:49	19:06	05:40	19:01	05:37	19:02	05:44	19:17	05:42	19:16	**14**	
	21	05:43	19:12	05:47	19:22	05:45	19:20	05:45	19:18	05:40	19:04	05:30	19:02	05:53	19:11	05:46	19:10	05:36	19:04	05:34	19:06	05:40	19:22	05:38	19:20	**21**	
	28	05:41	19:16	05:45	19:25	05:43	19:24	05:43	19:21	05:38	19:08	05:28	19:06	05:52	19:12	05:44	19:13	05:34	19:08	05:31	19:10	05:37	19:26	05:35	19:24	**28**	
जून	**1**	05:40	19:18	05:44	19:27	05:42	19:26	05:42	19:23	05:37	19:10	05:27	19:08	05:51	19:14	05:43	19:15	05:33	19:10	05:30	19:12	05:36	19:28	05:34	19:26	**1**	जून
	7	05:39	19:20	05:44	19:30	05:41	19:29	05:41	19:26	05:36	19:12	05:26	19:11	05:51	19:16	05:42	19:17	05:33	19:12	05:29	19:16	05:35	19:31	05:33	19:29	**7**	
	14	05:39	19:23	05:44	19:33	05:41	19:32	05:41	19:29	05:37	19:15	05:26	19:14	05:50	19:19	05:42	19:20	05:33	19:15	05:29	19:18	05:35	19:34	05:33	19:32	**14**	
	21	05:40	19:25	05:45	19:34	05:42	19:34	05:42	19:31	05:37	19:17	05:27	19:16	05:50	19:22	05:44	19:22	05:34	19:17	05:30	19:20	05:35	19:36	05:34	19:34	**21**	
	28	05:42	19:26	05:47	19:35	05:43	19:35	05:44	19:32	05:39	19:18	05:29	19:17	05:53	19:23	05:45	19:23	05:36	19:18	05:32	19:21	05:37	19:37	05:36	19:35	**28**	

✻ राजस्थान के प्रमुख शहरों के सूर्योदय एवं सूर्यास्त का समय ✻

(सभी समय स्टैण्डर्ड टाइम घंटा मिनट में हैं)

महीना	दिनांक	अजमेर		जोधपुर		बीकानेर		नागौर		कोटा		भरतपुर		उदयपुर		चित्तौड़गढ़		स.माधोपुर		अलवर		श्रीगंगानगर		हनुमानगढ़		दिनांक	महीना
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त		
जुलाई	1	05:43	19:26	05:48	19:36	05:44	19:35	05:45	07:32	05:40	05:40	05:30	07:17	07:54	19:23	05:46	19:23	05:37	19:18	05:33	19:21	05:38	07:37	05:37	19:35	1	जुलाई
	7	05:45	19:26	05:51	19:35	05:47	19:35	05:48	17:32	19:18	19:18	05:32	07:17	07:57	19:22	05:49	19:23	05:39	19:18	05:35	19:21	05:41	07:37	05:40	19:34	7	
	14	05:48	19:25	05:54	19:34	05:50	19:33	05:51	17:30	05:42	05:42	05:35	07:15	07:59	19:21	05:51	19:22	05:42	19:17	05:38	19:20	05:44	07:35	05:43	19:33	14	
	21	05:51	19:23	05:57	19:31	05:53	19:31	05:54	17:28	19:18	19:18	05:38	07:13	06:02	19:20	05:55	19:19	05:45	19:14	05:42	19:17	05:48	07:33	05:47	19:30	21	
	28	05:55	19:20	06:01	19:28	05:57	19:28	05:58	17:24	05:45	05:45	05:42	07:10	06:04	19:16	05:58	19:16	05:49	19:11	05:45	19:14	05:52	07:29	05:51	19:26	28	
अगस्त	1	05:57	19:17	06:03	19:25	05:59	19:25	06:00	17:22	19:17	19:17	05:44	07:07	06:07	19:14	06:00	19:14	05:51	19:09	05:47	19:12	05:54	07:26	05:53	19:23	1	अगस्त
	7	06:00	19:13	06:06	19:21	06:03	19:21	06:03	17:17	05:48	05:48	05:47	07:03	06:10	19:11	06:03	19:10	05:54	19:05	05:51	19:07	05:58	07:22	05:57	19:19	7	
	14	06:03	19:08	06:10	19:15	06:06	19:15	06:07	17:12	19:15	19:15	05:51	06:57	06:13	19:07	06:06	19:05	05:57	18:59	05:54	19:01	06:02	07:16	06:01	19:12	14	
	21	06:06	19:01	06:16	19:02	06:10	19:08	06:10	17:05	05:52	05:52	05:54	06:51	06:15	19:01	06:09	18:59	06:00	18:53	05:58	18:55	06:06	07:09	06:05	19:05	21	
	28	06:10	18:55	06:18	18:58	06:13	19:01	06:13	18:58	19:12	19:12	05:58	06:44	06:19	18:55	06:11	18:52	06:03	18:46	06:01	18:48	06:10	07:01	06:09	18:58	28	
सितंबर	1	06:11	18:50	06:20	18:51	06:15	18:57	06:15	18:54	05:54	05:54	05:59	06:40	06:20	18:51	06:13	18:48	06:05	18:42	06:03	18:44	06:12	18:56	06:11	18:53	1	सितंबर
	7	06:14	18:44	06:23	18:43	06:18	18:50	06:18	18:47	19:10	19:10	06:02	06:33	06:21	18:45	06:15	18:42	06:07	18:35	06:06	18:37	06:15	18:49	06:14	18:46	7	
	14	06:17	18:36	06:26	18:35	06:21	18:42	06:21	18:39	05:57	05:57	06:05	06:25	06:24	18:37	06:18	18:35	06:10	18:28	06:09	18:29	06:19	18:41	06:18	18:38	14	
	21	06:20	18:28	06:29	18:27	06:25	18:34	06:24	18:31	19:06	19:06	06:08	06:17	06:27	18:30	06:20	18:27	06:13	18:20	06:12	18:21	06:23	18:32	06:21	18:29	21	
	28	06:23	18:21	06:31	18:24	06:28	18:26	06:27	18:23	06:00	06:00	06:12	06:09	06:30	18:22	06:23	18:20	06:16	18:12	06:15	18:13	06:26	18:23	06:25	18:20	28	
अक्टूबर	1	06:24	18:17	06:33	18:18	06:30	18:22	06:29	18:20	19:01	19:01	06:13	06:06	06:31	18:19	06:24	18:17	06:17	18:09	06:17	18:09	06:28	18:20	06:27	18:17	1	अक्टूबर
	7	06:27	18:11	06:37	18:10	06:33	18:15	06:32	18:13	06:03	06:03	06:16	05:59	06:33	18:13	06:27	18:10	06:20	18:03	06:20	18:03	06:32	18:13	06:30	18:10	7	
	14	06:30	18:04	06:41	18:04	06:37	18:08	06:35	18:06	18:55	18:55	06:20	05:52	06:36	18:06	06:30	18:04	06:23	17:56	06:24	17:55	06:36	18:05	06:34	18:02	14	
	21	06:34	17:57	06:45	17:58	06:41	18:01	06:39	17:59	06:06	06:06	06:24	05:45	06:39	18:00	06:33	17:57	06:27	17:49	06:28	17:48	06:41	17:57	06:39	17:54	21	
	28	06:38	17:51	06:48	17:55	06:45	17:54	06:44	17:53	18:48	18:48	06:28	05:39	06:43	17:55	06:37	17:52	06:31	17:44	06:32	17:42	06:45	17:50	06:44	17:48	28	
नवंबर	1	06:41	17:48	06:52	17:51	06:48	17:51	06:46	17:50	06:07	06:07	06:31	05:36	06:45	17:53	06:40	17:49	06:34	17:41	06:35	17:39	06:48	17:47	06:47	17:45	1	नवंबर
	7	06:45	17:44	06:57	17:48	06:52	17:47	06:51	17:46	18:44	18:44	06:35	05:32	06:49	17:49	06:43	17:46	06:38	17:37	06:39	17:35	06:53	17:42	06:52	17:40	7	
	14	06:50	17:40	07:02	17:46	06:58	17:43	06:56	17:43	06:09	06:09	06:40	05:28	06:53	17:46	06:48	17:42	06:43	17:34	06:44	17:31	06:59	17:38	06:57	17:36	14	
	21	06:55	17:38	07:07	17:45	07:03	17:40	07:01	17:40	18:38	18:38	06:45	05:25	06:59	17:43	06:53	17:40	06:48	17:31	06:49	17:28	07:05	17:35	07:03	17:55	21	
	28	07:00	17:37	07:10	17:45	07:09	17:39	07:06	17:39	06:12	06:12	06:50	05:24	07:03	17:43	06:58	17:40	06:53	17:30	06:55	17:27	07:10	17:33	07:09	17:32	28	
दिसंबर	1	07:03	17:37	07:14	17:45	07:11	17:39	07:09	17:39	18:31	18:31	06:53	05:24	07:05	17:43	07:00	17:40	06:55	17:31	06:57	17:27	07:13	17:33	07:11	17:32	1	दिसंबर
	7	07:07	17:37	07:18	17:47	07:15	17:39	07:13	17:40	06:15	06:15	06:57	05:24	07:09	17:44	07:04	17:40	06:59	17:33	07:02	17:27	07:17	17:33	07:16	17:32	7	
	14	07:12	17:39	07:22	17:50	07:20	17:41	07:18	17:41	18:23	18:23	07:02	05:26	07:14	17:46	07:09	17:45	07:04	17:33	07:06	17:29	07:22	17:35	07:20	17:34	14	
	21	07:16	17:41	07:25	17:54	07:24	17:43	07:22	17:44	06:17	06:17	07:06	05:29	07:19	17:47	07:13	17:45	07:08	17:36	07:10	17:32	07:26	17:37	07:24	17:36	21	
	28	07:19	17:45	05:48	17:36	07:28	17:47	07:25	17:48	18:15	18:15	07:09	05:32	07:22	17:52	07:16	17:49	07:11	17:40	07:14	17:35	07:30	17:41	07:28	18:40	28	

❊ देश के प्रमुख शहरों के सूर्योदय एवं सूर्यास्त का समय ❊

(सभी समय स्टैण्डर्ड टाइम घंटा मिनट में हैं)

महीना	दिनांक	मुंबई		दिल्ली		अहमदाबाद		वाराणसी		पटना		बैंगलोर		हैदराबाद		कोलकाता		मथुरा		ऋषिकेश		अमृतसर		उज्जैन		दिनांक	महीना
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त		
जनवरी	1	07:13	18:11	07:15	17:34	07:22	18:04	06:43	17:19	06:37	17:08	06:41	18:04	06:46	17:52	06:18	17:02	07:11	17:34	7:12	17:27	07:31	17:36	07:09	17:51	1	जनवरी
	7	07:15	18:16	07:16	17:38	07:23	18:08	06:44	17:23	06:38	17:12	06:43	18:07	06:48	17:56	06:19	17:06	07:12	17:39	7:13	17:32	07:32	17:41	07:11	17:55	7	
	14	07:16	18:19	07:16	17:43	07:24	18:12	06:45	17:28	06:38	17:18	06:45	18:11	06:49	18:00	06:20	17:11	07:12	17:44	7:13	17:38	07:32	17:46	07:11	18:00	14	
	21	07:16	18:24	07:15	17:49	07:23	18:17	06:44	17:33	06:38	17:23	06:46	18:15	06:49	18:05	06:20	17:16	07:11	17:50	7:09	17:50	07:30	17:53	07:22	18:05	21	
	28	07:15	18:28	07:13	17:55	07:22	18:22	06:42	17:39	06:36	17:28	06:46	18:18	06:49	18:09	06:18	17:20	07:09	17:55	7:07	17:53	07:27	17:59	07:09	18:09	28	
फरवरी	1	07:14	18:30	07:11	17:58	07:20	18:25	06:41	17:42	06:34	17:31	06:45	18:20	06:48	18:11	06:17	17:23	07:07	17:58	7:03	17:58	07:25	18:03	07:08	18:12	1	फरवरी
	7	07:12	18:33	07:07	18:03	07:18	18:29	06:38	17:46	06:31	17:35	06:44	18:22	06:46	18:14	06:14	17:27	07:03	18:03	6:57	18:04	07:20	18:08	07:05	18:16	7	
	14	07:09	18:37	07:02	18:09	07:14	18:33	06:33	17:50	06:26	17:40	06:42	18:25	06:43	18:17	06:10	17:31	06:58	18:08	6:51	18:09	07:15	18:14	07:01	18:20	14	
	21	07:05	18:40	06:56	18:14	07:09	18:37	06:28	17:55	06:21	17:44	06:39	18:26	06:39	18:20	06:06	17:35	06:53	18:13	6:44	18:14	07:08	18:20	06:56	18:24	21	
	28	06:00	18:42	06:49	18:18	07:03	18:40	06:22	17:59	06:15	17:49	06:36	18:28	06:35	18:22	06:00	17:38	06:46	18:17	6:41	18:16	07:00	18:25	06:51	18:28	28	
मार्च	1	06:59	18:43	06:48	18:19	07:02	18:41	06:20	18:00	06:14	17:49	06:35	18:28	06:34	18:22	05:59	17:38	06:45	18:18	6:35	18:20	06:59	18:26	06:50	18:28	1	मार्च
	7	06:55	18:44	06:41	18:23	06:57	18:43	06:14	18:03	06:08	17:52	06:31	18:29	06:29	18:24	05:54	17:41	06:39	18:22	6:26	18:24	06:52	18:31	06:44	18:31	7	
	14	06:49	18:46	06:34	18:27	06:51	18:46	06:07	18:06	06:01	17:56	06:27	18:30	06:24	18:26	05:58	17:44	06:31	18:25	6:18	18:29	06:43	18:36	06:38	18:34	14	
	21	06:43	18:48	06:25	18:31	06:44	18:49	06:00	18:09	05:53	17:59	06:22	18:30	06:18	18:27	05:41	17:46	06:23	18:29	6:09	18:33	06:34	18:41	06:31	18:36	21	
	28	06:37	18:50	06:17	18:35	06:37	18:52	05:52	18:13	05:46	18:02	06:17	18:31	06:13	18:28	05:35	17:49	06:16	18:33	6:05	18:36	06:25	18:45	06:24	18:39	28	
अप्रैल	1	06:34	18:51	06:12	18:37	06:33	18:53	05:48	18:14	05:42	18:04	06:15	18:31	06:10	18:29	05:31	17:50	06:11	18:35	5:57	18:39	06:20	18:48	06:20	18:41	1	अप्रैल
	7	06:29	18:52	06:06	18:41	06:27	18:55	05:42	18:17	05:36	18:07	06:11	18:31	06:05	18:30	05:25	17:52	06:05	18:38	5:50	18:43	06:13	18:52	06:15	18:43	7	
	14	06:24	18:54	05:58	18:45	06:21	18:58	05:35	18:20	05:29	18:10	06:07	18:32	06:00	18:32	05:19	17:55	05:57	18:42	5:42	18:48	06:04	18:57	06:08	18:46	14	
	21	06:19	18:56	05:51	18:49	06:15	17:01	05:29	18:23	05:22	18:13	06:03	18:33	05:55	18:33	05:13	17:58	06:50	18:46	5:35	18:52	05:57	19:01	06:02	18:48	21	
	28	06:14	18:58	05:44	18:53	06:10	17:04	05:23	18:27	05:16	18:17	05:59	18:34	05:51	18:35	05:08	18:00	06:44	18:49	5:33	18:54	05:49	19:06	05:57	18:51	28	
मई	1	06:12	18:59	05:42	18:55	06:07	17:05	05:21	18:28	05:14	18:18	05:58	18:34	05:49	18:36	05:06	18:02	06:41	18:51	5:28	18:58	05:46	19:08	05:55	18:53	1	मई
	7	06:09	19:01	05:37	18:58	06:04	17:08	05:17	18:31	05:10	18:22	05:56	18:35	05:46	18:38	06:02	18:04	06:37	18:55	5:23	19:03	05:41	19:12	05:51	18:55	7	
	14	06:06	19:04	05:32	19:03	06:00	17:11	05:13	18:35	05:06	18:25	05:54	18:37	05:44	18:40	04:58	18:07	06:32	18:59	5:19	19:07	05:36	19:17	05:47	18:59	14	
	21	06:04	19:07	05:28	19:07	05:57	17:14	05:10	18:39	05:02	18:29	05:52	18:39	05:42	18:43	04:55	18:11	06:29	19:02	5:16	19:11	05:32	19:22	05:44	19:02	21	
	28	06:02	19:09	05:26	19:11	05:55	17:18	05:08	18:42	05:00	18:32	05:52	18:41	05:41	18:45	04:54	18:14	06:26	19:06	7:12	17:27	05:28	19:26	05:42	19:05	28	
जून	1	06:02	19:11	05:25	19:13	05:55	17:19	05:07	18:44	04:59	18:34	05:52	18:42	05:40	18:47	04:53	18:15	06:25	19:08	7:13	17:32	05:27	19:29	05:42	19:07	1	जून
	7	06:02	19:13	05:24	19:16	05:54	17:22	05:07	18:47	04:59	18:37	05:52	18:44	05:41	18:49	04:53	18:18	06:25	19:11	7:13	17:38	05:26	19:32	05:41	19:09	7	
	14	06:02	19:15	05:24	19:19	05:55	17:24	05:07	18:49	04:59	18:39	05:53	18:46	05:41	18:51	04:53	18:20	06:25	19:14	7:09	17:50	05:26	19:34	05:42	19:12	14	
	21	06:03	19:17	05:25	19:20	05:56	17:26	05:08	18:51	05:00	18:41	05:54	18:48	05:43	18:53	04:54	18:22	06:26	19:16	7:07	17:53	05:27	19:36	05:43	19:13	21	
	28	06:05	19:18	05:27	19:21	05:57	17:27	05:10	18:52	05:02	18:42	05:56	18:49	05:44	18:54	04:56	18:23	06:28	19:17	7:03	17:58	05:29	19:37	05:45	19:15	28	

✻ देश के प्रमुख शहरों के सूर्योदय एवं सूर्यास्त का समय ✻

(सभी समय स्टैण्डर्ड टाइम घंटा मिनट में हैं)

महीना	दिनांक	मुंबई		दिल्ली		अहमदाबाद		वाराणसी		पटना		बैंगलोर		हैदराबाद		कोलकाता		मथुरा		ऋषिकेश		अमृतसर		उज्जैन		दिनांक	महीना
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त		
जुलाई	1	06:06	19:18	05:28	19:21	05:58	19:27	05:11	18:52	05:03	18:42	05:57	18:49	05:45	18:54	04:57	18:23	05:29	19:17	05:19	19:22	05:30	19:37	05:45	19:15	1	जुलाई
	7	06:08	19:18	05:30	19:21	06:01	19:27	05:13	18:52	05:05	18:42	05:59	18:50	05:47	18:55	04:59	18:23	05:31	19:16	05:22	19:21	05:33	19:37	05:48	19:15	7	
	14	06:10	19:18	05:34	19:19	06:03	19:26	05:16	18:51	05:08	18:41	06:00	18:50	05:49	18:54	05:02	18:22	05:34	19:15	05:25	19:20	05:36	19:35	05:50	19:14	14	
	21	06:13	19:16	05:37	19:17	06:06	19:24	05:20	18:48	05:11	18:39	06:02	18:49	05:52	18:53	05:05	18:21	05:38	19:12	05:29	19:17	05:40	19:32	05:53	19:12	21	
	28	06:15	19:14	05:41	19:13	06:09	19:21	05:23	18:45	05:15	18:36	06:04	18:47	05:54	18:51	05:08	18:18	05:42	19:09	05:33	19:12	05:45	19:28	05:56	19:09	28	
अगस्त	1	06:17	19:12	05:43	19:10	06:11	19:19	05:25	18:43	05:17	18:33	06:05	18:46	05:55	18:49	05:09	18:16	05:44	19:06	05:36	19:10	05:47	19:25	05:58	19:07	1	अगस्त
	7	06:18	19:09	05:47	19:06	06:13	19:16	05:28	18:39	05:20	18:29	06:06	18:44	05:57	18:46	05:12	18:12	05:47	19:02	05:39	19:05	05:51	19:20	06:01	19:03	7	
	14	06:20	19:05	05:51	19:00	06:16	19:11	05:31	18:33	05:23	18:24	06:07	18:41	05:59	18:42	05:14	18:07	05:50	18:56	05:44	18:58	05:55	19:13	06:03	18:58	14	
	21	06:22	19:00	05:54	18:53	06:19	19:05	05:34	18:27	05:26	18:18	06:08	18:37	06:00	18:37	05:17	18:02	05:54	18:50	05:48	18:51	06:00	19:05	06:06	18:53	21	
	28	06:24	18:55	05:58	18:45	06:21	18:59	05:37	18:20	05:29	18:11	06:08	18:32	06:01	18:32	05:19	17:56	05:57	18:43	05:52	18:43	06:04	18:57	06:08	18:46	28	
सितंबर	1	06:25	18:52	06:00	18:41	06:22	18:55	05:38	18:16	05:30	18:07	06:08	18:30	06:02	18:29	05:20	17:52	05:59	18:38	05:54	18:39	06:07	18:52	06:10	18:43	1	सितंबर
	7	06:26	18:47	06:03	18:34	06:24	18:49	05:41	18:10	05:33	18:00	06:08	18:26	06:03	18:24	05:22	17:46	06:02	18:32	05:57	18:31	06:10	18:45	06:12	18:37	7	
	14	06:27	18:40	06:06	18:26	06:26	18:42	05:43	18:03	05:36	17:53	06:08	18:21	06:04	18:19	05:24	17:39	06:05	18:24	06:01	18:23	06:15	18:36	06:14	18:30	14	
	21	06:28	18:34	06:10	18:17	06:29	18:35	05:46	17:55	05:38	17:45	06:08	18:16	06:05	18:13	05:26	17:32	06:08	18:15	06:05	18:14	06:19	18:27	06:16	18:22	21	
	28	06:30	18:28	06:13	18:09	06:31	18:28	05:49	17:47	05:41	17:38	06:08	18:11	06:06	18:07	05:28	17:26	06:11	18:07	06:09	18:05	06:23	18:18	06:18	18:15	28	
अक्टूबर	1	06:30	18:25	06:15	18:05	06:32	18:25	05:50	17:44	05:42	17:34	06:08	18:09	06:06	18:04	05:29	17:23	06:13	18:04	06:10	18:01	06:25	18:14	06:19	18:12	1	अक्टूबर
	7	06:32	18:21	06:18	17:59	06:34	18:19	05:53	17:38	05:45	17:28	06:09	18:05	06:07	18:00	05:31	17:17	06:16	17:57	06:14	17:54	06:29	18:06	06:21	18:07	7	
	14	06:33	18:15	06:22	18:51	06:37	18:13	05:56	17:31	05:48	17:21	06:09	18:01	06:09	17:55	05:34	17:11	06:20	17:50	06:18	17:46	06:34	17:58	06:24	18:00	14	
	21	06:36	18:10	06:31	18:44	06:40	18:07	05:59	17:25	05:52	17:15	06:10	17:57	06:11	17:50	05:37	17:05	06:24	17:43	06:23	17:39	06:39	18:50	06:27	17:54	21	
	28	06:38	18:06	06:27	18:38	06:43	18:02	06:03	17:19	05:56	17:09	06:12	17:54	06:13	17:46	05:40	17:00	06:28	17:37	06:28	17:32	06:44	18:43	06:31	17:49	28	
नवंबर	1	06:40	18:04	06:31	18:34	06:45	18:00	06:06	17:17	05:58	17:06	06:13	17:52	06:14	17:44	05:42	16:58	06:31	17:34	06:31	17:29	06:47	18:39	06:33	17:47	1	नवंबर
	7	06:43	18:01	06:34	18:30	06:49	17:56	06:10	17:13	06:02	17:03	06:15	17:51	06:17	17:42	05:45	16:55	06:35	17:30	06:36	17:25	06:52	18:35	06:36	17:44	7	
	14	06:47	17:59	06:39	18:26	06:53	17:54	06:14	17:10	06:07	16:59	06:18	17:50	06:20	17:40	05:50	16:52	06:40	17:26	06:41	17:21	06:58	18:30	06:41	17:41	14	
	21	06:51	17:58	06:44	18:24	06:59	17:52	06:19	17:08	06:12	16:57	06:21	17:50	06:24	17:39	05:54	16:50	06:46	17:24	06:47	17:18	07:05	18:27	06:45	17:39	21	
	28	06:55	17:58	06:55	18:22	07:03	17:51	06:24	17:07	06:17	16:56	06:24	17:50	06:28	17:39	05:59	16:50	06:51	17:23	06:53	17:16	07:11	18:25	06:50	17:38	28	
दिसंबर	1	06:57	17:58	06:58	18:22	07:05	17:51	06:27	17:07	06:20	16:56	06:26	17:51	06:30	17:40	06:01	16:50	06:53	17:23	06:55	17:16	07:13	18:25	06:52	17:38	1	दिसंबर
	7	07:00	18:59	07:02	18:22	07:09	17:52	06:31	17:08	06:24	16:57	06:29	17:53	06:34	17:41	06:05	16:51	06:58	17:23	07:00	17:16	07:18	18:25	06:56	17:39	7	
	14	07:04	18:02	07:07	18:24	07:13	17:54	06:35	17:10	06:28	16:59	06:33	17:55	06:38	17:44	06:09	18:53	07:02	17:25	07:05	17:18	07:23	18:26	07:01	17:41	14	
	21	07:08	18:05	07:11	18:27	07:17	17:57	06:39	17:13	06:32	17:02	06:37	17:58	06:41	17:47	06:13	18:56	07:06	17:28	07:09	17:21	07:27	18:29	06:05	17:44	21	
	28	07:11	18:09	07:14	18:31	07:20	18:01	06:42	17:17	06:35	17:06	06:40	18:02	06:45	17:51	06:16	17:00	07:09	17:32	07:11	17:25	07:30	18:33	06:08	17:48	28	

✻ शास्त्रानुसार व्रतोपवासादि में सूर्यसिद्धान्तपक्षीय पञ्चाङ्गों की ग्राह्यता ✻

पण्डित गङ्गाधर पाठक 'वेदाद्याचार्य' (मुख्याचार्य- श्रीरामजन्मभूमिशिलापूजन, अयोध्या)

साङ्गोपाङ्गाय वेदाय ज्योतिषां ज्योतिषे नमः ।
सूर्याय सूर्यसिद्धान्तज्योतिर्विद्भ्यो नमो नमः ।।

व्रतोत्सवादि सम्पादनार्थ एवं यज्ञोपनयनादि धार्मिककृत्यों के लिये सम्यक् कालपरिज्ञानार्थ तिथि-वार-नक्षत्र-योग-करणात्मक विशुद्ध **आर्षपञ्चाङ्ग** की आवश्यकता होती है। परन्तु विविध भारतीय पञ्चाङ्गों में भी व्रतोपवासादि के वैमत्य से प्रायः सर्वत्र कोलाहलश्रवण होता रहता है, एतदर्थ किञ्चिच्चिन्तन अपेक्षित है।

सम्प्रति कई प्रकार के पञ्चाङ्ग उपलब्ध होते हैं- **सूर्यसिद्धान्तपक्षीय, आर्यसिद्धान्तपक्षीय (वाक्यविधि), ब्राह्मसिद्धान्तपक्षीय, दृग्गणितपक्षीय** आदि। मकरन्द-ग्रहलाघवादि के भेद से सूर्यसिद्धान्तपक्षीय पञ्चाङ्ग का भी वैविध्य है तथा चित्रा-रैवतादिपक्षीय गणित के भेद से दृक्पञ्चाङ्ग भी कई प्रकार के हैं। कोई सूर्य-चन्द्रान्तरलक्षण से तथा कोई कलालक्षणभेद से तिथियों का द्वैविध्य वर्णन करते हैं।

भारत में ही कुछ पञ्चाङ्ग चैत्रशुक्लप्रतिपत् से, कुछ आषाढ़शुक्लप्रतिपत् से, कुछ श्रावणकृष्णप्रतिपत् से और कुछ कार्तिकशुक्लप्रतिपत् से प्रारम्भ किये जाते हैं। कोई विक्रमसंवत्, कोई शकसंवत् तथा कोई अन्य स्थानीय लौकिकसंवत् का उपयोग करते हैं। कहीं पूर्णिमान्त तो कहीं अमान्तमास ग्रहण किये जाते हैं। सम्प्रदायभेदवाले पञ्चाङ्गों की तो इयत्ता ही नहीं है। परिणामत: भारत के सार्वभौम व्रतोत्सवादि भी दो या तीन विभिन्न दिनों में सम्पादित होते हैं तथा कुछ कृत्य तो पूर्णिमान्त-अमान्तमास के भेद से पक्ष-मासपर्यन्त भी आगे- पीछे हो जाते हैं।

वर्त्तमान में आर्षज्ञानविहीन नवीनों के द्वारा दृक्पञ्चाङ्ग के रूप में एक बड़ी समस्या खड़ी कर दी गई है, जो नाविकपञ्चाङ्ग (नॉटिकल एल्मानैक) पर आधारित है, जहाँ ग्रहण जैसी घटनायें मांसचक्षुर्दृष्ट ही मान्य हैं।

शास्त्रनिष्ठ प्रामाणिक सनातनियों के लिये तो दृक्पञ्चाङ्ग सर्वथा अग्राह्य है। प्रत्येक धार्मिककृत्य के संकल्प में कल्प मन्वन्तर आदि का स्मरण करने के लिये प्राचीन आर्षसिद्धान्तपक्षीय पञ्चाङ्गों की ही उपयोगिता सिद्ध होती है।

दृग्गणितके पक्षपाती विद्वान् तिथ्यादिनिर्णय में इस पद्धति की उपयोगिता सिद्ध करते हैं-
यस्मिन्पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यम् । दृश्यते तेन पक्षेण कुर्यात्तिथ्यादिनिर्णयम् ।।

परन्तु महान् दैवज्ञ ब्रह्मगुप्त तो पैर से भी दृग्गणितके पादमात्र का स्पर्श नहीं करना चाहते-
प्रतिदिवसविसंवादात्तिथिकरणर्क्षदिवसमासानाम्। ग्रहणग्रहयोगादिषु पादं पादेन कः स्पृशेत् ।।

ग्रहलाघवकार ने भी **'सौरार्कोऽपि..'** में इसपर विचार किया है।

स्थूल दृग्गणित का भी जनक भारतीय ज्योतिषशास्त्र ही है। मल्लारि एवं सूर्यसिद्धान्तादि ने भी किञ्चित् कार्यभेद से दृक्पक्ष को ग्रहण किया है। भास्कराचार्य ने-
यात्राविवाहोत्सवजातकादौ खेटैः स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम् ।
स्यात्प्रोच्यते तेन नभश्चराणां स्फुटक्रिया दृग्गणितैककृद्या ।।

यद्यपि कतिपयमतेन सूर्यसिद्धान्त का बीजोपनयनाध्याय सूर्यांशोक्तापेक्षया प्रक्षिप्त है, तथापि मयरचित सूर्यसिद्धान्त में इसे अप्रक्षिप्त और यात्रादि में प्रशस्त माना गया है-
कालेन दृक्समो यः स्यात्ततो बीजक्रियोच्यते ।
बीजं विशेषसिद्धान्तरहस्यं परमं स्फुटम् । यात्रापाणिग्रहादीनां कार्याणां शुभसिद्धिदम् ।।

वराहमिहिर ने भी बीजसंस्कार को ग्रहण किया है-
पूर्वाचार्यमतेभ्यो यद्यच्छ्रेष्ठं लघु स्फुटं बीजम् । तत्तदिहाविकलमहरहरस्म्यभ्युद्यतो वक्तुम् ।।

मकरन्दानुसारि पञ्चाङ्गों में भी बीजसंस्कार किया जाता है, जिसपर विचारकों ने नित्य-नैमित्तिक-काम्यकर्मों में तत्तत् सिद्धान्तों के ग्रहण की चर्चा की है। इसका स्पष्टीकरण करते हुए महामहोपाध्याय श्रीसुधाकर द्विवेदी ने ब्रह्मगुप्त के तन्त्रभ्रंश की व्याख्या में कहा है कि जिस तन्त्र में दृग्गणित इष्ट है, वहीं वह आदरणीय है-
''यात्राविवाहोत्सवजातकादौ खेटैः स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम्''
इति विषयविषयेण वाक्येन दृग्गणितैक्यकृत्स्फुटक्रिया
यात्राविवाहोत्सरवविशेषविषयेष्वेव ग्राह्या, न तु धर्मशास्त्रोपयोगितिथ्यानयने ।

अर्थात् कदाचित् यात्रा - विवाहोत्सव आदि में ही दृग्गणित की ग्राह्यता हो सकती है, धर्मशास्त्रोपयोगी तिथ्यानयन में नहीं। **इस विवेचन से सर्वविध धर्मकृत्यों में दृग्गणित की ग्राह्यता निरस्त हो गई।**

सिद्धान्ततत्त्वविवेककार ने भी अदृष्ट फलसिद्ध्यर्थ सूर्योक्तप्रमाण की ही श्रुतिवद् ग्राह्यता सिद्ध की है- **अदृष्टफलसिद्ध्यर्थं निर्बीजार्कोक्तमेव हि ।**
प्रमाणं श्रुतिवद् ग्राह्यं कर्मानुष्ठानतत्परैः ।।

शाकल्य संहिता में भी **'दृक् सिद्धा नेष्यते तिथि:'** से यही कहा है।

कालनिर्णय में भी **'तिथिनक्षत्रयोगानयनेऽबीजसंस्कृतो ग्राह्यः'** से यही बात कही है ।

भास्कराचार्यादि ने दृग्गणित को स्थूल और पुलस्त्य-वसिष्ठ-गर्गादि मुनिप्रणीत गणित को सूक्ष्म कहा है- **स्थूलं कृतं भानयनं यदेतज्ज्योतिर्विदां संव्यवहारहेतोः ।**
सूक्ष्मं प्रवक्ष्येऽथ मुनिप्रणीतं विवाहयात्रादिफलप्रसिद्ध्यै ।।

वासनाकार ने भी यही पक्ष ग्रहण किया है-

स्थूलं लोकव्यवहारमात्रम्, यात्राविवाहादावपि सम्यक्फलसिद्धयर्थं मुनिप्रणीतं सूक्ष्ममेव ग्राह्यम्।

कथञ्चित् लोकव्यवहारमात्र के लिये ग्रहणास्तोदयादि में आवश्यकतानुसार स्थूल दृक्पक्ष को ग्रहण किया जा सकता है, परन्तु यात्रा-विवाहादि में भी अज्ञातज्ञापक सम्यक् फल की सिद्धि के लिये प्रत्यक्षानुमानागम्य और 'अज्ञातज्ञापकं शास्त्रम्'' के और अनुसार शास्त्रैकसमधिगम्य मुनिप्रोक्त सिद्धान्तपक्षीय सूक्ष्म गणित को ही ग्रहण करना उत्तम पक्ष है।

नृसिंह दैवज्ञ ने भी- **'भास्कराचार्याणामयमेवाशयः'** से इसी पक्ष को ग्रहण किया है।

तिथिस्वरूपनिर्णय में तो स्पष्ट घोषणा की गई है-

ततो धर्मशास्त्राद्युपयुक्ततिथिसाधनं नक्षत्रयोगकरणज्ञानं चोक्तम् ।

मत्स्यमहापुराण में **भगवान् वेदव्यास** का स्पष्ट उद्घोष है-

नैष शक्य: परिज्ञातुं याथातथ्येन केनचित् ।
गतागतं मनुष्येण ज्योतिषां मांसचक्षुषा ।।

ग्रहों की सूक्ष्म गति मनुष्यों के द्वारा अदृश्य है, एतदर्थ प्रत्यक्षातिरिक्त सभी व्रत-पर्व श्रौत-स्मार्तानुष्ठानार्थ आर्षसिद्धान्त की ही उपयोगिता सिद्ध है। **सनातनधर्मानुयायियों के सभी सिद्धान्त श्रुति-स्मृति-पुराण-तन्त्रागमादिमूलक ही हैं, इसलिये अनार्ष दृग्गणितमात्रदुराग्रही प्रत्यक्षवादियों के द्वारा धर्म-व्रताद्यनुष्ठानों का सूक्ष्म निर्णय असम्भव है।** ऋषिगण तपो-योगजसामर्थ्यातिशय के कारण अतीन्द्रियार्थदर्शी होते थे, यन्त्रादिनिर्माण-प्रयोगकुशल वैज्ञानिक सूक्ष्मज्ञ होते हुए भी ऋतम्भराप्रज्ञायुक्त अदृश्यदर्शी ऋषि नहीं हो सकते।

विष्णुधर्मोत्तर, कालार्क, ज्योति:सिद्धान्तसंग्रह, लल्ल, मुञ्जाल, श्रीनिवासीय धर्मशास्त्रादि में उपर्युक्त आर्ष पक्ष ही सम्मानित है।

स्कन्दमहापुराण के कलिमाहात्म्य में तो सिद्धान्तपक्ष के त्याग का भयावह फल और सिद्धान्तपक्ष के ग्रहण का सुखद फल भी बता दिया गया है-

दृक्सिद्धखेटग्रहसाधितासु कुर्वन्ति केचित्तिथिषु प्रमादात् ।
श्राद्धादिकं तत्पितृशापतस्ते पुण्यक्षयं दुर्गतिमाप्नुवन्ति ।।
तथापि सन्तो बहवोऽत्र धार्मिकाः पुरातनाचारमथाजहन्तः ।
सूर्यांशजोक्तार्जितकाल एव कर्माणि कुर्वन्ति सुखं लभन्ते ।।

भगवान् वेदव्यास पुनः दृढ़ता से सूर्यसिद्धान्तारिक्त सिद्धान्त को अग्राह्य बताते हैं-

सौरोपनिषदेवाद्या कल्पे त्वस्मिन् सनातनी ।
यामादित्यः स्वयं प्राह मयाय परिपृच्छते ।।
कालज्ञानं तु तत्सिद्धं विशुद्धं नान्यदुच्यते ।
तद्विरुद्धं तु यत्सर्वमपरिग्राह्यमेव तत् ।।

जब दृग्गणितवादियों के यहाँ भी चित्रा- रेवत्यादि के भेद से अयनांशभेद होता है तब तदनुसार पञ्चाङ्गीय तिथ्यादिकों में भी भेद का होना स्वाभाविक ही है। ऐसी परिस्थिति में निर्दुष्ट शास्त्रीय आर्षपक्ष का आश्रय ग्रहणकर एक स्थिर पञ्चाङ्गनिर्माण की महती उपयोगिता सिद्ध होती है।

सम्प्रति दक्षिणदेश में भी तिथि-नक्षत्र-मुहूर्त्तादि वैदिक विषयों में आर्षग्रन्थसिद्ध ग्रहस्थिति को ही ग्रहण करने की परम्परा है और ग्रहण तथा जातकर्मादि लौकिक विषयों में दृक्सिद्ध ग्रहों को ग्रहण किया जाता है।

सम्पूर्ण ज्योतिर्मण्डल गतिशील है, कालान्तर में अथवा देशभेदादि से गत्यादिमूलक गणितीय भेद हो सकते हैं; परन्तु कालान्तर या देशभेदादि के भी गणितीय भेद की उपपत्ति मुनिप्रणीत सूक्ष्म ज्योतिषीय सिद्धान्तों में ही बता दी गई है। इसलिये नवीन-प्राचीन का मानापमान अत्यन्त उपहासास्पद है। सम्प्रदायादि के भेद से भी व्रत-पर्वों का भेद दूषण नहीं, अपितु अमुकामुक सम्प्रदायनिष्ठों के लिये सम्मान्य है।

सभी प्राचीन आप्त आचार्यों और 'कुम्भतिथ्यादिनिर्णयः' आदि धर्मशास्त्रपरक ज्योतिषीय निबन्धों में सर्वभूतहृदय धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाभाग आदि ने भी समारोहपूर्वक इसी पक्ष को समुद्घाटित किया है। मौलिक अध्येताओं के लिये भारतीय सूक्ष्म गणितसिद्धान्त सर्वकाल में मान्य रहेंगे।

वर्तमान में अतिशय चिन्ता का विषय यह है कि विविधपक्षीय पञ्चाङ्गनिर्माण के लिये अगणित सॉफ्टवेयर्स उपलब्ध हैं, जिनसे अल्प प्रयास में ही पञ्चाङ्ग तो तैयार हो जाते हैं; परन्तु पञ्चाङ्गों का सम्मान व्रतोपवासादि के मीमांसामूलक धर्मशास्त्रीय सूक्ष्मविचार से ही होता है, जिसकी सम्पूर्ति पारम्परिक शास्त्राध्ययन के अत्यन्ताभाव में प्रायः नहीं हो रही है।

अन्यों के लिये भी, विशेषत: ज्योतिषियों के लिये तो सन्ध्या-गायत्र्यादि के माध्यम से ज्योति:शास्त्र के प्रथम प्रवर्त्तक भगवान् श्रीसूर्यनारायण की सम्यक् उपासना अत्यन्त अनिवार्य है। मैं पञ्चाङ्गविभाग के प्रबुद्ध प्रणेतृमण्डल एवं प्रयोक्ताओं से इस कमी को सदा के लिये दूर करने की महती अपेक्षा रखता हूँ और पञ्चाङ्ग किसी सम्प्रदायविशेष में बँधकर अल्पोपयोगी न हो जाय, इसका भी ध्यान रखना आवश्यक है।

श्रीनिम्बार्कपरिषद्, जयपुर, राजस्थान के द्वारा **सूर्यसिद्धान्तपक्षीय श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्गम्** का प्रकाशन शास्त्रवादी सनातनियों के लिये अत्यन्त ही हर्ष का विषय है । सर्वेश्वर भगवान् श्रीराधाकृष्ण की अहैतुकी कृपा से पञ्चाङ्गप्रणेता, पञ्चाङ्गप्रयोक्ता एवं एतत्सिद्धान्तानुसार व्रत पर्वादि श्रौत-स्मार्तधर्मों के अनुष्ठाता के दृश्यादृश्य लोकद्वय मङ्गलमय हों।

शुभमिति दिक्

❊ भारतीय ज्योतिष का विश्व को योगदान ❊

आचार्य विनय झा (त्रिस्कन्ध ज्योतिर्विद्, सूर्यसिद्धान्तीय गणितकर्त्ता)

पश्चिम का मनगढ़न्त तर्क-

भारतीय ज्योतिष का विश्व को क्या योगदान है इस विषय पर आज विश्व मौन है। यह अवश्य सुनने को मिलेगा कि ग्रीस या मध्यपूर्व से प्राचीन भारत ने अमुक-अमुक बातें सीखीं। वराहमिहिर द्वारा विदेशी शब्दों की चर्चा तथा यवनाचार्यों की प्रशंसा और रोमक सिद्धान्त के हवाले कहा जाता है कि सिकन्दरिया के ज्योतिष का भारत पर प्रभाव पड़ा था। टॉलेमी के गणितीय ग्रन्थ अलमाजेस्ट का भारतीय सिद्धान्त ग्रन्थों, विशेषतया सूर्यसिद्धान्त से अनेक महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर साम्य और टॉलेमी के ही फलित ग्रन्थ टेट्राबिब्लॉस का भारतीय फलित ग्रन्थों, विशेषतया पाराशरी से काफी मेल बैठता है, जिनके आधार पर कहा जाता है कि सिकन्दरिया से ही भारतीयों ने गणित और फलित सीखा, और पश्चिम का ज्ञान भारत में आने से पहले भारत में जैनों के सूर्यप्रज्ञप्ति और महात्मा लगध के वेदाङ्गज्योतिष जैसे आधे-अधूरे ग्रन्थ ही थे जिनके आधार पर कुण्डली बनाना भी असम्भव था।

भाषा विज्ञान का काल्पनिक आवरण-

भारोपीय परिवार के भाषाविज्ञान के मौजूदा सिद्धान्त के आलोक में भारतीय ज्योतिष का इतिहास दूर तक नहीं जा सकता। यदि वेद ही 1500 ईसापूर्व के बाद रचा गया तो इसके अङ्ग ज्योतिष की उत्पत्ति बाद में ही हुई होगी। मिस्र और सुमेर में इससे बहुत पहले ही ज्योतिष विद्यमान था। भारतीय ज्योतिष का विकास मध्यपूर्व से आयातित ज्ञान के प्रभाववश हुआ, यह विचार वेद के भाषावैज्ञानिक कालनिर्धारण पर ही आधारित है।

19वीं शती के पूर्वार्ध में अधिकांश यूरोपीय विद्वानों का मत था कि यूरोपीय आर्यों का मूल प्रदेश भारत में या भारत के आसपास था। श्लाइखेर ने तुलनात्मक व्याकरण के आधार पर ट्री मॉडल सुझाया। उत्तरी यूरोप की भाषायें स्लावो-जर्मेनिक शाखा में हैं। दक्षिणी यूरोप की भाषायें ग्रीक-इटैलो-केल्टिक शाखा में हैं। इन दो शाखाओं का आपस में हल्का किन्तु संस्कृत से घनिष्ठ सम्बन्ध है। अतः निष्कर्ष यह होना चाहिए कि भारत ही मूलप्रदेश था, किन्तु केन्द्रीय एशिया को आर्यों का मूल प्रदेश कहा गया, यद्यपि 19वीं शताब्दी में केन्द्रीय एशिया से किसी भी आर्य भाषा का कोई प्रमाण नहीं मिला था। यूरोपीय विद्वान जानते थे कि साक्ष्यों के आधार पर मूल प्रदेश केन्द्रीय एशिया नहीं भारत ही था। अतः मन लायक साक्ष्य जुटाने में वे लग गये। श्रोडेर ने सुझाया कि संस्कृत कारकान्त प्रत्यय 'भिस्' का समानार्थक केल्टिक एवं जर्मेनिक समूहों में प्रत्यक्ष 'मिस' है। अतएव उत्तरी एवं दक्षिणी यूरोप की शाखाओं में इस एक सम्बन्ध के आधार पर कहा गया कि भारोपीय भाषाओं का सम्बन्ध छल्ले या रिंग के रूप में था, जिसके केन्द्र में मूल प्रदेश पूर्वी यूरोप में था। भारतीय-ईरानी समूह की कल्पना रुमानिया के आसपास रहने वाले छोटे कबीलों के रूप में की गई। केवल एक भाषाई लक्षण के आधार पर यूरोप से अधिक जनसंख्या वाले हिन्द-ईरानी जनसमूहों को एक छोटा सा झुण्ड बताकर यूरोप के छोटे से कोने में डाल दिया गया। इस मत को झुठलाने वाले अनेक अकाट्य प्रमाण प्रकाश में आ चुके हैं किन्तु यूरोपवादी विद्वानों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उन्हें मनचाहा होमलैण्ड मिल गया, अब साक्ष्यों से क्या लेना देना ?

सच्चाई यह है कि सभी पाश्चात्य विद्वानों के समस्त निष्कर्ष एक भयङ्कर पूर्वाग्रह से ग्रस्त थे। भारतीय इतिहास की किसी भी घटना को ग्रीक इतिहास की प्राचीनतम घटना से पहले का नहीं माना जा सकता था। इस पूर्वाग्रह के पक्ष में भाषा विज्ञान के हवाले कहा जाता था कि चूँकि ऋग्वैदिक संस्कृति पशुचारी थी, अतः वह उसी स्तर की ग्रीक संस्कृति की समकालीन हो सकती थी, क्योंकि वैदिक एवं ग्रीक आर्यों के पूर्वज एक ही मूल से निकले थे। ग्रीक इतिहास की प्राचीनतम ज्ञात घटना ट्रॉय का युद्ध (लगभग ईसापूर्व 1200) है। अत: ऋग्वैदिक युग का मध्यमान भी वही माना गया। 1952 ईस्वी में माइकेल वेण्ट्रिस ने लीनियर-बी अभिलेखों को पढ़ने में सफलता प्राप्त की, जिसके आधार पर सिद्ध हो गया कि 15वीं शती ईसापूर्व तक ग्रीक भाषा बोलने वाले विकसित नागरिक सभ्यता वाले माइसीनियन ग्रीक में रहते थे, जो होमर के काव्यों के पशुचारी डोरियन ग्रीक पात्रों के पूर्ववर्ती थे। अतः माइसीनियन-ग्रीक के पशुचारी पूर्वजों का काल किसी भी स्थिति में 1425 ईसापूर्व के कई शती पूर्व होना चाहिए। जब ग्रीक में विकसित नागरिक सभ्यता के लोग रहते थे, तभी ऋग्वैदिक गड़रियों और उनके अनपढ़ गवैयों (ऋषियों) का भारत पर हमला युक्तिसङ्गत नहीं है। 1750 ईसापूर्व में हड़प्पा सभ्यता का लोप आर्यों के आक्रमण का परिणाम था, यह अब लोग नहीं मानते, क्योंकि सिन्धुघाटी में यूरोपियन हमले के भौतिक अवशेष नहीं मिलते। अतः हड़प्पाई सभ्यता से पहले वेद का काल रखा जाना चाहिए। पाश्चात्य प्रचार पर विश्वास करने के बजाय विद्वानों को स्वयं वैज्ञानिक पद्धति द्वारा वेद के कालनिर्धारण की जाँच करनी चाहिए। आधुनिक भाषाविज्ञान की पद्धति बहुत आसान है।

अंग्रेजों का संगठित आक्रमण-

भारोपीय भाषापरिवार के भाषाविज्ञान में हमारे 12 वर्षों तक शोधकार्य के भिन्न निष्कर्ष मिले। यूरोपीय भाषाविदों के मूल ग्रन्थों विशेषकर कार्ल ब्रुगमैन के प्रसिद्ध ग्रन्थ Grundriss der Vergleichenden Grammatik der indogermanischen Sprachen (भारोपीय भाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण) में एक भी पृष्ठ पर सही तर्क एवं प्रमाण सहित निष्कर्ष निकालने की प्रवृत्ति नहीं मिली। **यूरोप के समस्त भाषाविद् और इतिहासकार एक-दूसरे को उद्धृत करने को ही विचारों को प्रमाणित करना मानते हैं। यूरोप की महानता के बारे में उनके पूर्वाग्रह ग्रीस से पहले उन्हें जाने नहीं देता, जबकि यूरोप का मूल अर्थ ही था पूरब से आने वाले।** आधुनिक भाषाविज्ञान की पद्धति द्वारा जितने धातुओं के प्राचीन भाषाओं में पर्याप्त संख्या में रूप मिले उनकी जाँच ने शत-प्रतिशत मामलों में वैदिक भाषा को ही प्राग्भारोपीय भाषा सिद्ध किया। किन्तु पश्चिम के विद्वान् ऐसे शोधकार्यों की जाँच करने के बदले हिन्दुत्ववाद का हौआ खड़ा करने लगते हैं। तथ्यों को नकारने के लिए आपस में एक दूसरे को उद्धृत करते रहना इन लोगों की 'वैज्ञानिक' पद्धति है, जिसके सामने छिटपुट और असङ्गठित रूप से शोध करने वाले शोधकर्ता ठहर नहीं पाते। **पाश्चात्य विद्वानों में एकता और सङ्गठन के साथ हर प्रकार के वित्तीय, यान्त्रिक एवं अकादमिक संसाधन हैं, किन्तु यदि मूल प्रमाणों की ईमानदारी से जाँच की जाय तो भारतीय विद्याओं के नाम पर पिछले दो शतियों के दुष्प्रचार का पर्दाफाश किया जा सकता है।**

सूर्यसिद्धान्त और अलमाजेस्ट

जहाँ तक खगोलीय गणित की मौलिकता और विश्वसनीयता का प्रश्न है, इस क्षेत्र में भी पश्चिम के विद्वानों ने तथ्यों को सङ्गठित प्रचार द्वारा झुठलाया। टॉलेमी के गणित का सूर्यसिद्धान्त से साम्य

है, इसमें दो राय नहीं। अधिकांश पाश्चात्य विद्वानों का मत है कि वराहमिहिर के काल तक सूर्यसिद्धान्त एक आधा-अधूरा ग्रन्थ था जिसे प्राचीन सूर्यसिद्धान्त की संज्ञा दी गई है। इन लोगों का कहना है कि सूर्यसिद्धान्त 1100 ईस्वी तक धीरे-धीरे विकसित हुआ, जिसे आधुनिक सूर्यसिद्धान्त कहा जाता है, और 1500 ईस्वी के बाद भारतीय सिद्धान्तों में बीज संस्कार जोड़कर दृक्तुल्यता की चेष्टा हुई। भारतीय सिद्धान्त गणित के बारे में पाश्चात्य दृष्टिकोण का यही निचोड़ है, जिसे अनेक भारतीय विद्वान् भी मानते हैं; किन्तु टॉलेमी के मैथमेटिका सिनेटैक्सिस या अलमाजेस्ट में कई ऐसी नवीनतायें है जिनका सूर्यसिद्धान्त में अभाव है। **उदाहरणार्थ मध्यम चन्द्र में सूर्यसिद्धान्त केवल एक ही बार मन्दफल संस्कार करता है, जो आधुनिक खगोलविज्ञान की भाषा में 'केन्द्र का समीकरण' कहलाता है, किन्तु अलमाजेस्ट में द्वितीय संस्कार भी है जिसे आधुनिक विज्ञान में 'इवेक्शन' कहते हैं। ऐसे साक्ष्यों के आधार पर बर्जेस ने मत व्यक्त किया था कि सूर्यसिद्धान्त में प्रतिपादित विचार आदिम होने के कारण टॉलेमी से पहले के हैं।** किन्तु ऐसे साक्ष्यों के आधार पर यह नहीं कहा गया कि सूर्य सिद्धान्त टॉलेमी से पहले का है, बल्कि यह कहा गया है कि टॉलेमी से पहले ही पाश्चात्य ज्ञान भारत में आ चुका था। किसी एक ही स्रोत से दोनों प्रेरित हुये होंगे, यह सूर्यसिद्धान्त के भाष्यकार बर्जेस का मत है, किन्तु बर्जेस के मतानुसार वह स्रोत ग्रीस नहीं बल्कि टॉलेमी से पहले का मिस्र या सुमेर था। **सूर्यसिद्धान्त समस्त प्राचीन भारतीय सिद्धान्तों में सर्वाधिक विकसित एवं समग्र सिद्धान्त है, किन्तु इसे भी मध्यपूर्व से आयातित विचारों के आधार पर धीरे-धीरे विकसित हुआ माना गया। अतः कुल मिलाकर निष्कर्ष यही है कि खगोलीय गणित के क्षेत्र में भारत ने विश्व को कोई भी योगदान किया यह पश्चिम नहीं स्वीकारता।**

पाराशरी और टेट्राबिब्लॉस

फलित के क्षेत्र में भी टॉलेमी के टेट्राबिब्लॉस और पाराशरी में साम्य हैं। इसमें दो मत नहीं कि मिस्र, सुमेर, चीन और भारत की ज्योतिषीय अवधारणाओं का कोई एक ही मूल स्रोत था। वह स्रोत मिस्र था या सुमेर इस पर विद्वान् बहस करते हैं। भारत के मूल स्रोत होने की सम्भावना पर भी विचार नहीं किया जाता। जब वेद ही अप्रामाणिक हैं तो वेदाङ्ग की प्रामाणिकता का प्रश्न ही नहीं उठता। अतः ज्योतिष के प्रमाणों की चर्चा करने से पहले वेद की प्रामाणिकता का कुछ कहना आवश्यक है। भारतीय स्रोत तो झूठे हैं, ग्रीक स्रोतों की देखें। ईसापूर्व पाँचवीं शती के ग्रीक कॉमेडियन अरिस्तोफेनीस् का हास्य नाटक 'दि बर्ड' या 'पक्षी' देखें, जिसमें इस तथ्य का प्रमाण है कि **प्रागैतिहासिक यवनों में कर्मकाण्डीय यज्ञ का प्रचलन था।** इसका संक्षिप्त कथानक इस प्रकार है:

'प्रागैतिहासिक ग्रीस के लोग यज्ञ में जो आहुति देते थे उससे देवों को भोजन मिलता था। ऐथेन्स के एक बुड्ढ़े को खुराफात सूझा। उसने पक्षियों को सिखाकर आकाश की घेराबन्दी करवा दी, ताकि यज्ञ की हवि स्वर्ग तक न जा पाये। देवगण भूखों मरने लगे। देवप्रमुख ज्यूस ने दूत को बुड्ढ़े के पास भेजा तो बुड्ढ़े ने शर्त रखी की ज्यूस अपनी पुत्री बुड्ढ़े को सौंप दे तभी आकाश की घेराबन्दी हटेगी। बुड्ढ़े को मनाने के लम्बे प्रयास में विफल होकर अन्त में अपनी प्रतिष्ठा का विचार त्यागकर बुड्ढ़े के पास ज्यूस ने अपनी पुत्री भेज दी, तब जाकर देवों को हवि मिलनी आरम्भ हुई एवं उनकी जान बची।'

उस समय के ग्रीक नाटक विशाल मैदान में खेले जाते थे। जिसमें प्रायः 25000 लोगों की भीड़ जुटती थी। इसी कारण दृश्य बदलने पर पर्दे का प्रयोग अनिवार्य था, जिससे भारतीय नाटककारों ने भी यवनिका का प्रयोग सिखा। विशाल भीड़ के सामने देवी-देवताओं के विरुद्ध वीभत्स नाटक का आनन्द पूरा देश उठाता था। स्पष्ट है कि प्राग्भारोपीय काल के वैदिक धर्म में ग्रीक लोगों की आस्था समाप्त हो गई थी, अन्यथा ऐसे नाटक लिखने वाले को प्राणदण्ड दिया जाता।

सुकरात का आत्मबलिदान-

सुकरात को जिस आरोप में विष दिया गया वह था 'ग्रीस की युवा पीढ़ी को प्रचलित धर्म के विरुद्ध भड़काना', प्रचलित कानून के अनुसार जिसका दण्ड था प्राणदण्ड। सुकरात ने जान-बूझकर ऐसा 'अपराध' क्यों किया? वे ग्रीस के सबसे बड़े विद्वान् थे, धन लेकर ज्ञान बेचने वाले सभी सोफिस्ट जिनसे शास्त्रार्थ में पराजित हो चुके थे। **तुलनात्मक भाषाविज्ञान के साक्ष्य स्पष्ट कहते हैं कि तथाकथित प्राग्भारोपीय काल में आर्यों के समस्त देवी देवता वैदिक ही थे; एक भी वेद- बाह्य देवी-देवता की स्तुति नहीं की जाती थी। सुकरात इसी पुरातन वैदिक धर्म की ग्रीस में पुनर्स्थापना का प्रयास कर रहे थे जिसके विरुद्ध ग्रीस हो चुका था। उन्होंने जानबूझकर आत्मबलिदान दिया, ताकि कम से कम युवा पीढ़ी जाग सके। जिस उद्देश्य के रक्षार्थ उन्होंने बलिदान दिया उसे आधुनिक यूरोप के विद्वान् जानबूझकर छुपा रहे हैं।**

यूरोप में वैदिक कर्मकाण्ड के साक्ष्य-

19वीं शती के यूरोपीय स्नातकों को ग्रीक एवं लैटिन अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती थी। अतः यूरोप के भाषाविदों और इतिहासकारों ने प्राचीन ग्रीस के महानतम कामेडियन अरिस्तोफेनीज का नाटक 'पक्षी' नहीं पढ़ा होगा, यह विश्वास करने योग्य नहीं है। किन्तु यूरोपवासियों के आर्य - पूर्वज वैदिक कर्मकाण्ड करते थे, यह यूरोप या भारत का एक भी धर्मनिरपेक्ष इतिहासकार नहीं स्वीकारता। यूरोपीय विद्वानों ने जानबूझकर ऐसे साक्ष्यों पर पर्दा डाल रखा है। प्राग्भारोपीय लोगों में मित्र, वरुण, अग्नि, सोम, द्युपितृ जैसे वैदिक देवों की ही स्तुति होती थी, यह प्रमाणित हो जाने पर तर्क दिया जाता है कि केवल स्तुति होती थी, यज्ञ नहीं था (यद्यपि 'यज्ञ' शब्द का यज् धातु यूरोप की मुख्य भाषाओं में प्रचलित था), और **इस मनगढ़न्त आधार पर कहा जाता है कि भारत में जब आर्य आये तो केवल आग के सामने देवों की स्तुति होती थी, कर्मकाण्डीय यज्ञ नहीं होते थे। कालान्तर में जब ब्राह्मण, जो अनार्य थे, भी आर्यों के समाज में सम्मिलत हो गये तो उन्होंने आर्यों में याज्ञिक कर्मकाण्ड आरम्भ करवा दिये। ये मनगढ़न्त विचार आज भी भारत के छात्र पढ़ने के लिए विवश हैं।** ग्रीक नाटक 'पक्षी' यज्ञ के धुँए या हवि से देवों की क्षुधा मिटने का स्पष्ट उल्लेख करता है। यवनों के पूर्वजों में याज्ञिक कर्मकाण्ड का यह साक्ष्य है, जिसे प्रगतिवादी और वामपन्थी विचारों वाले इतिहासकार नहीं मानते। **यदि भारत के पुराणकार झूठे थे, तो ग्रीक साक्ष्य को प्रामाणिक क्यों नहीं माना जाता? क्योंकि तब जो सत्य स्वीकारना पड़ेगा वह भारतीय संस्कृति को हेय दृष्टि से देखने वाले गोरे और ब्राउन साहबों को नहीं पचेगा। बिना ब्राह्मणों के वैदिक कर्मकाण्ड सम्भव नहीं थे, और यूरोप में ब्राह्मणों का कभी अस्तित्व नहीं रहा। अतः पुरातन ग्रीकों में याज्ञिक कर्मकाण्ड का अर्थ यह है कि यूरोप के आर्यों का मूल प्रदेश भारत ही था।**

प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में भी यवनों के भारतीय मूल की चर्चा है। व्यास जी और अरिस्तोफेनीज को हम प्रमाण मानें, या रामशरण शर्मा के वामपन्थी गुरु गॉर्डन चाइल्ड को, जिसने भारतीय सभ्यता के प्रति अपनी घृणा को खुलकर व्यक्त किया: 'ह्वाट हैप्पेण्ड इन हिस्ट्री' पुस्तक में चाइल्ड ने लिखा है कि भारत और चीन की संस्कृतियाँ पाश्चात्य सभ्यता के महासागर में गिरकर विलीन होने वाली

नालियाँ हैं। प्राचीन मिस्र एवं सुमेर की सभ्यताओं को पाश्चात्य सभ्यता के पूर्वज मानने में इन इतिहासकारों को हिचक नहीं है, क्योंकि वे सभ्यताएं नष्ट हो चुकी हैं। किन्तु एक जीवित वैदिक धर्म को अन्य धर्म वाले अपना पूर्वज कैसे मानेंगे ? प्राचीन विश्व का समूचा इतिहास संकीर्ण दृष्टिकोण से लिखा गया है जिसे पढ़कर भारत के बुद्धिजीवी भ्रमित हो रहे हैं। प्राचीन मिस्र के भूगर्भीय मन्दिरों की भित्तियों पर करछुल के आकार के बड़े चमचों (जुहू) से धुँएदार हवि देवों को देने के अनेक चित्र मिले तो पाश्चात्य विद्वानों को वैदिक यज्ञ से सादृश्य नहीं दिखा बल्कि यह अर्थ लगाया गया कि धुँआ सूँघकर तुष्ट होने वाले कोकेन का सेवन करने वाले नशेबाज थे। निराधार तर्कों के बल पर मिस्र में यज्ञ के साक्ष्य का मजाक बनाया जाता है। राजस्थान के कालीबङ्गा में दर्जनों अग्निकुण्ड मिले जिनमें वैदिक यज्ञकुण्ड की भाँति कूप, पिण्ड आदि मिले, किन्तु उन्हें तन्दूर कहा जाता है।

द्वादश भाव और दर्शनशास्त्र का सम्बन्ध-

भारतीय ज्योतिष का भारतीय धर्म और दर्शन से जीवन्त सम्बन्ध है। टॉलेमी के फलित ग्रन्थ टेट्राबिब्लॉस में द्वादश भावों के विषयों, राशीशों, ग्रहों के उच्च-नीच आदि का जो वर्णन है वह पाराशरी से शत-प्रतिशत मेल खाता है। केवल इस मेल के आधार पर पाराशर को टॉलेमी का नकलची घोषित किया जाता है। किन्तु द्वादशभावों के विषयों की व्याख्या कुछ और ही सिद्ध करती है। सभी ग्रह सम्मुख भाव पर पूर्ण दृष्टि रखते हैं, जिसका एक कारण है- परस्पर सम्मुख भावों में कारण और परिणाम का सम्बन्ध रहता है। इस घनिष्ठ सम्बन्ध के कारण ही सम्मुख भाव पर पूर्ण दृष्टि रहती है। प्रथम भाव है देह और सम्मुख में सप्तम भाव है काम। काम से देह तथा निष्कामता से विदेहभाव की प्राप्ति होती है। अत: देह और काम के भावों में कारण और परिणाम का सम्बन्ध है। द्वितीय भाव है मारकेश और सम्मुख में अष्टम मृत्यु भाव है। तृतीय भाव है पराक्रम और सम्मुख में भाग्य है, जो पराक्रम का फल है। चतुर्थ भाव है भूमि और सम्मुख राज्य एवं प्रतिष्ठा। पञ्चम है विद्या और सम्मुख है आय। षष्ठ भाव है शत्रु और रोग, तथा सम्मुख है हानि। यह सरलीकृत वर्णन है। विदेहभाव से मोक्ष और देहभाव से काम का सम्बन्ध है, ऐसा दर्शन और ऐसा धर्म भारत से बाहर ढूँढ़ न मिलेगा। निष्काम कर्म करने से देह में बारम्बार आने से मुक्ति मिलती है। दूसरा भाव है धन, जो बन्धन अर्थात् मृत्यु का कारण है, क्योंकि भारतीय धर्म के अनुसार अपरिग्रह मोक्ष हेतु अनिवार्य है। इस प्रकार हम देखते हैं कि द्वादशभावों का निरूपण ऊटपटाँग नहीं है, बल्कि इसके पीछे एक सुसङ्गत दर्शन और धार्मिक मान्यता छुपी है जो वेद और इसके उपानों से ही सम्बद्ध है। प्राचीन ग्रीस, मिस्र, सुमेर और चीन के ज्योतिष में द्वादशभाव तो हैं किन्तु द्वादशभाव की सन्तोषप्रद व्याख्या करने वाला धर्म और दर्शन केवल भारत में ही था। **अतः द्वादशभाव और उनके विषयों की अवधारणाओं की उत्पत्ति भारतीय परिवेश में ही सम्भव थी, अन्यत्र नहीं। अतः भारत से ही ये विचार बाहर फैले। मिस्र से चीन तक के प्रदेश के लगभग मध्य में भारत है भी। चूँकि द्वादशभावों के बिना ज्योतिषशास्त्र कोई अर्थ नहीं रखता। अतः सम्पूर्ण ज्योतिषशास्त्र की उत्पत्ति भारत में ही हुई। ज्योतिष पर जितना प्राचीन साहित्य भारत में बचा है उसका दशमांश भी अन्य प्राचीन देशों ने नहीं छोड़ा। ऐसे अकाट्य साक्ष्यों के बावजूद भारतीय ज्योतिष को मध्यपूर्व से आयातित बतलाया जाता है।** भारतीय ज्योतिष का महत्त्व वही समझ सकेगा जो समझना चाहेगा, पश्चिम के विद्वान् भारतीय ज्योतिष को समझने से पहले ही उसे नकारने का हठ पाले रहते हैं। ऐसे तथाकथित वैज्ञानिक दृष्टिकोण लिए वेद- वेदाङ्गों को गाली पढ़ना प्रगतिशीलता और विकास का द्योतक है। अतः यह मत निकृष्ट एवं त्याज्य है।

बारह राशियों एवं भावों का जनक भारत-

ईसापूर्व चौथी और तीसरी सहस्राब्दि के सुमेर में 12 राशियों के नामों के वही अर्थ थे जो पाराशरी में हैं। मिस्र के थीबिज और देन्देर्रा में 12 राशियों और सभी ग्रहों के चित्र मिले हैं। तुर्की के मेत्सामोर में ईसापूर्व 2800 के साक्ष्य बताते हैं कि 12 राशियों की अवधारणा वहाँ विद्यमान थी। चीन में भी द्वादशभाव प्रचलित थे। आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार आकाश में लगभग एक सौ तारा मण्डल हैं। टॉलेमी ने 48 और उससे पहले ईसापूर्व 270 के ग्रीस में 44 तारामण्डलों के नाम अरातुस् ने गिनाये, जिसका आधार प्राचीन मिस्र के 43 तारामण्डलों की सूची है। किन्तु आकाश के दर्जनों तारामण्डलों में केवल 12 की ही राशियों में गिनती सभी देशों में थी। 12 राशियों का सम्बन्ध ज्योतिष से है, भौतिकविज्ञान से नहीं। न केवल द्वादशभावों की संख्या ही समान थी, भावों के नाम भी समानार्थक थे और उनके ज्योतिषीय फल भी समान थे। टॉलेमी और पराशर के द्वादशभावों के नामों और विषयों में रत्ती भर भी अन्तर नहीं है। इसी कारण विद्वानों का मत है कि इन ज्योतिषीय अवधारणाओं का कोई एक ही उद्गम होगा, जो उनकी दृष्टि में मिस्र या सुमेर होना चाहिए; किन्तु द्वादशभावों में जो कारण परिणाम के दर्शनशास्त्रीय सम्बन्ध हैं वे सिद्ध करते हैं कि ज्योतिषशास्त्र का मूल स्रोत भारत था। मिस्र या सुमेर नहीं। पाराशरी की तुलना में टॉलेमी का फलित ग्रन्थ टेट्राबिब्लॉस स्थूल एवं अधूरा ग्रन्थ है।

पलड़ा भारत का भारी-

अब प्रश्न यह उठता है कि ज्योतिषशास्त्र की उत्पत्ति का काल कैसे तय किया जाय? अफ्रीका में क्वाजुलु सीमा पर ईसापूर्व 32500 की गुफा में तारामण्डल का चित्र पाया गया। जर्मनी की आख घाटी में मैमथ दाँत पर तारामण्डल का गुहाचित्र पाया गया जिसका काल ईसापूर्व 32500 से 38000 के बीच माना जाता है। साइबेरिया में 32000 से 22000 ईसापूर्व के स्थलों से सौरवर्ष और चान्द्र तिथियों की गणना हेतु स्थूल यन्त्र पाये गये हैं। फ्रांस के लैस्को में ईसापूर्व 16000 के गुहाचित्रों में तारामण्डल हैं जिसे विशेषज्ञों ने वृष राशि माना है। ध्रुवतारा के चारों ओर प्रत्येक तीन मास पर सप्तर्षि की स्थिति देखकर सौरमास और ऋतु का ज्ञान होता है, जिससे स्वस्तिक की आकृति बनी। चीन, जापान, भारत और दक्षिणी यूरोप में ईसा से पहले से ही इसका प्रचलन था।

चीनी कब्रों में स्वस्तिक के प्रमाण ईसापूर्व 6000 के हैं। सिन्धुदेश के मेहरगढ़ में चीन से भी एक हजार साल पहले स्वस्तिक का साक्ष्य मिला है। हित्ती, ग्रीक और केल्टो में इसका प्रचलन था। नाविकों के लिए सप्तर्षि तारामण्डल का विशेष महत्त्व तो था ही, सामान्य जन भी स्वस्तिक द्वारा सौरमास का ज्ञान कर सकते थे। सम्भवतः लम्बी यात्राओं में दिशाज्ञानजनित सुरक्षा में सहायक होने के कारण स्वस्तिक का प्रचलन और नामकरण हुआ था, ऐसा कुछ पाश्चात्य विद्वान् मानते हैं। अफ्रीका से लेकर फ्रांस और साइबेरिया तक राशियों, सौरवर्ष और चान्द्र तिथि के प्रचलन के जो साक्ष्य मिले हैं उनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि आधुनिक मानव ज्योतिषशास्त्र के ज्ञान के साथ ही उत्पन्न हुआ था, क्योंकि आधुनिक मानव का प्रादुर्भाव ईसापूर्व 40000 वर्ष माना जाता है, जबकि राशियों, तिथियों और वर्ष का ज्ञान ईसापूर्व 32 से 38 हजार वर्ष पहले हो गया था। यह गुहामानवों के चित्रों से स्पष्ट है। इतने पुराने लिखित साक्ष्य उपलब्ध न होने के कारण यह कहना कठिन है कि ईसापूर्व 30-40 हजार वर्ष पहले जब ज्योतिषशास्त्र पृथ्वी पर आया तो किस देश में और किस भाषा के साथ आया? तथ्यों के आधार पर पलड़ा भारत का ही भारी है, जबकि पाश्चात्य विद्वान् भारत को महत्त्व नहीं देते।

वेदों की उत्पत्ति-

12 वर्षों तक भारोपीय भाषाविज्ञान पर आधुनिक पद्धति द्वारा शोधकार्य के पश्चात् हमारा निष्कर्ष निकला कि सभी प्राग्भारोपीय धातु वैदिक धातुओं से पूर्ण साम्य रखते हैं। शत-प्रतिशत मामलों में वेद की भाषा ही सबकी पूर्वज निकली। इसके बाद मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि यदि वेद इतना प्राचीन है तो मानवजाति का सभ्यता की ओर विकास की कहानी पर वेद के अध्ययन से अवश्य कुछ न कुछ प्रकाश पड़ेगा। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से वेद का अध्ययन मैंने आरम्भ किया तो चौंकाने वाले निष्कर्ष सामने आये। इस तथ्य के प्रमाण मिले कि मानव समाज में शब्दों के जो लौकिक अर्थ प्रचलित हैं, उनके आधार पर वेद का अर्थ स्पष्ट नहीं हो सकता। उदाहरणार्थ, ऋग्वेद में 'भ्रातृ' शब्द अपने सभी रूपों में 33 स्थलों पर प्रयुक्त हुआ है, जिनमें 32 स्थलों पर 'भाई' से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। केवल 'सूर्य' के लिए इसका प्रयोग हुआ है। केवल एक स्थल पर सूर्य के बदले सूर्यपुत्र के लिए इसका प्रयोग हुआ है। दसवें मण्डल के यम यमी संवाद में, किन्तु वहाँ भी 'भाई' के साथ साथ 'सूर्यपुत्र' अर्थ भी है। इसी कारण वैयाकरणों ने 'भ्रातृ' की व्युत्पत्ति भृ एवं भ्राश् या भ्राज् (चमकना) दोनों धातुओं से सम्भावित बतलायी। कन्या का भरण पहले पिता और बाद में भर्त्ता करता है, भाई भरण नहीं करता। भाई चमकता भी नहीं। अतः 'भाई' लौकिक अर्थ है, जबकि सूर्य भ्रातृ का वैदिक अर्थ है। इसी प्रकार अग्नि शब्द भी जो अग् धातु से बना है वह लौकिक आग या Fire से दूर का भी सम्बन्ध नहीं रखता, बल्कि अग्निदेव के अदृश्य रूप से सर्वत्र गमन करने के लक्षण का बोध कराता है। व्युत्पत्यर्थ प्राचीन और लौकिक अर्थ बाद के होते हैं। वेद में लौकिक अर्थो का गौण महत्त्व है। वैदिक पदों के ऐसे अर्थों से सङ्केत मिलता है कि वेद पहले बने, लोक बाद में अस्तित्त्व में आये। अग्निदेव पहले से थे, भौतिक अग्नि बाद की वस्तु है। ऋग्वेद विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ है, यह पहले ही स्पष्ट हो चुका था। अब यह भी साफ हो गया कि 'मानव समाज में प्रचलित अर्थ रूढ़ होने से पूर्व ही वेद की भाषा अन्तिम रूप ले चुकी थी। मनुष्यों ने वेद नहीं बनाई तो फिर किसने बनाई ? नास्तिकों को वेद का भाषाविज्ञान समझाना सम्भव नहीं है; वे पूर्वाग्रही हैं, प्रमाण नहीं मानते।

कोलब्रुक की गणना में भारी त्रुटि है-

वेदाङ्गज्योतिष में उल्लेख है कि उत्तरायण होने पर दिनवृद्धि तथा दक्षिणायन होने पर इसका विपरीत होता है। दिन या रात की वृद्धि या ह्रास सायन पर निर्भर है, निरयन पर नहीं। सायन मकर संक्रान्ति के समय दिनमान न्यूनतम होता है, तथा उसी दिन से दिनवृद्धि आरम्भ होती है। वेदाङ्ग ज्योतिष के अनुसार दिनवृद्धि निरयन धनिष्ठारम्भ से आरम्भ थी, जब साय मकरसंक्रान्ति थी। किन्तु तिथि का भी योग मिलना चाहिए। वेदाङ्ग ज्योतिष में लिखा है कि जब सूर्य और चन्द्र सायन धनिष्ठा में आते हैं तब माघ शुक्लादि से उत्तरायण आरम्भ होता है। कोलब्रुक ने ईसापूर्व 1400 में वेदाङ्ग ज्योतिष का उपरोक्त योग माना। आजकल अयनांश + 23° के आसपास है। दृक्पक्षीय गणनानुसार ईसापूर्व 1387 में -23°:20' दृक्पक्षीय अयनांश था। सायन उत्तरायण अर्थात् 270° परसूर्य का अर्थ था कि निरयन सूर्य 293°:20' पर थे, जो कि धनिष्ठारम्भ था। यहाँ तक तो कोलब्रुक ठीक थे। किन्तु कोलब्रुक ने तिथि की जाँच नहीं की और उनके समस्त देशी-विदेशी चेलों ने रोयाल एशियाटिक सोसायटी के उनके रुतबे को देखकर उनकी गलत गणना को मान लिया। प्रत्येक 2459 वर्षों पर मेष संक्रान्ति एक मास आगे भागती है। इसी कारण कलियुगादि में मेष संक्रान्ति माघ शुक्लादि को थी किन्तु अब चैत्र शुक्लादि को है। 5000 वर्षों में दो मास का अन्तर पड़ा है।

ईसापूर्व 1400 में माघशुक्लादि निरयन 337°:46' या सायन 44°:20' की भयङ्कर त्रुटि है। पिछले 20000 वर्षों की जाँच में ऐसा एक भी वर्ष नहीं मिला जिसमें वेदाङ्गज्योतिष में बताया गया योग वास्तव में घटित हुआ हो। अतः वेदाङ्गज्योतिष उससे भी पहले की वस्तु है। कोलब्रुक का गणित सर्वथा अशुद्ध है इसमें सन्देह नहीं, किन्तु अनेक भारतीय लेखक आज भी बेहिचक कोलब्रुक के मत को ही दुहरा रहे हैं। अब प्रचार हो रहा है कि भाषा के आधार पर वेदाङ्ग ज्योतिष का काल ईसापूर्व 300 के आसपास का है, आकाशीय योग के आधार पर मूल ग्रन्थ का कालनिर्धारण करने की विधि को ही त्याग दिया गया है।

लाप्लास एवं रेवरेण्ड विंसी का मत-

अब पश्चिम के ही कुछ शीर्षस्थ वैज्ञानिकों के मत देखें। अपने समय के विश्व के महानतम खगोलवैज्ञानिक लाप्लास का कहना था कि उनके सिद्धान्त के अनुसार ईसापूर्व 3102 में शनि और बृहस्पति की वार्षिक औसत गति भारतीय खगोलशास्त्र के मान से पूर्णतः मेल खाती हैं। अपने ग्रन्थ A Complete System of Astronomy के द्वितीय खण्ड के पृष्ठ 252 में कैम्ब्रिज के खगोलशास्त्री प्रोफेसर रेवरेण्ड विंसी लिखते हैं कि हिन्दूओं में शनि का परम मन्दफल.... 3102 ईसापूर्व में उनके (कलि) युग आरम्भ होने के काल में वैज्ञानिक मन्दफल से काफी मेल खाता है। ऐसे तथ्यों का उल्लेख करते हुए **प्रो. विंसी कहते हैं: "ऐसे अनेक साम्यों के आधार पर इस बात की अत्यधिक संभावना है कि भारतीय खगोलशास्त्र उतना प्राचीन होना चाहिए जितना ब्राह्मणों द्वारा बताया जाता है।"**

न्यूटन ने कलन पर कार्य तो किया था, किन्तु उनकी 'प्रिंसिपिया' ज्यामितीय उपपत्तियों पर ही आश्रित थी, जिसके कारण ग्रह सूत्रों के अल्पमान वाले पद स्पष्ट नहीं हो पाते थे। लाप्लास ने सम्पूर्ण खगोलविज्ञान को कैलकुलस के ठोस आधार पर खड़ा किया। अतः डिफ्रैंशल सूत्रों के अल्पमान वाले पदों की गणना भी सम्भव हो गई। इसके अलावा लाप्लास ट्रांसफॉर्म द्वारा कठिन सूत्रों को आसान रूपों में बदल कर उनका हल ढूंढ़ना सुगम हो गया। इन अल्पमान वाले पदों का मान दीर्घ काल में बहुत बढ़ जाता है, जिसके कारण न्यूटन की विधि से सही हल नहीं मिलते। लाप्लास की विधि द्वारा 5000 वर्ष पहले की ग्रह कक्षाओं का सही स्वरूप निर्धारित करना सम्भव हो गया। इसी विधि द्वारा लाप्लास ने पाया कि शनि और बृहस्पति के सूर्यसिद्धान्तीय मान वर्तमान दृक्पक्षीय मान से नहीं बल्कि 3102 ईस्वी के दृक्पक्षीय मान से मेल खाते हैं। भाषा वैज्ञानिकों का विश्वास है कि ईसापूर्व 3000 में भारत में आर्य थे ही नहीं। अतः कहा जाता है कि भारतीय ज्योतिष में वर्णित जिन तथ्यों का ईसापूर्व 3000 से सम्बन्ध है वे ईसापूर्व 3000 में मिस्र या सुमेर में खोजी गई होगी। इस प्रकार आर्य आक्रमण की कल्पना द्वारा तथ्यों की गलत व्याख्या की जाती है। **लाप्लास और विंसी जैसे शीर्षस्थ वैज्ञानिकों के शोधकार्यों को चर्चा के लायक नहीं समझा जाता और बर्जेस तथा बेण्टली की गलत गणनाओं को घड़ल्ले से प्रचारित किया जाता है।** न्यूटन और आइंसटाइन के बीच ढाई शतियों के अन्तराल में लाप्लास जैसा खगोलविदब और गणितज्ञ कहीं नहीं हुआ, जबकि बर्जेस और बेण्टली की गणनाओं में ऐसी त्रुटियाँ हैं जिनपर स्कूली छात्रों को भी शर्म आनी चाहिए। नया रास्ता बनाने के कारण न्यूटन का नाम अधिक है, किन्तु न्यूटन का केवल ऐतिहासिक महत्त्व रह गया है। **आधुनिक वैज्ञानिक लाप्लास और आइंसटाइन के सूत्रों द्वारा गणना करते हैं। किन्तु वेद या ज्योतिष पर कलम चलाने वाला एक भी लेखक भारतीय खगोलशास्त्र पर लाप्लास या विंसी के मतों की चर्चा भी नहीं करता।**

ब्रिटेन के स्टोनहेन्ज और आउटर हेब्राइडीज के कैलेनिश इन दोनों स्थलों पर प्रागैतिहासिक वेधशालायें थीं। स्टोनहेन्ज ऐसे अक्षांश पर है जहाँ चन्द्र- अक्षांश सूर्य से 90° तक का कोण बना लेता है, और कैलेनिश ऐसे अक्षांश पर है जहाँ चन्द्रमा का परम अक्षांश क्षितिज तक चला जाता है। अतः इन दो वेधशालाओं से प्राप्त आँकड़ों से पृथ्वी की गोलाई और आकार सिद्ध हो जाती है। हजारों मील दूर की वेधशालाओं में साम्य से स्पष्ट है क इन प्रागैतहासिक वेधशालाओं के निर्माताओं की योजना वैश्विक थी। **ग्वाटेमाला में माया जाति के धर्म ग्रन्थ 'पापुल-वुह' में लिखा है कि आदिमानव अत्यधिक मेधावी थे और आकाशीय गोल के चारो कोनों तथा पृथ्वी के गोल चेहरे का उन्हें ज्ञान था।** भारतीय गणित ग्रन्थों में इसके लिए शब्द ही थे भूगोल और खगोल। टॉम्पकिन्स ने 'एट दि सेण्टर ऑव दि वर्ल्ड' में लिखा है कि मिस्र में शून्य रेखांश मानकर न केवल मध्यपूर्व के सूसा जैसे प्राचीनतम नगरों बल्कि चीन की प्राचीनतम राजधानी अनयाङ्ग तक के रेखांश निर्धारित किये जाते थे। **मिस्र के थीबिज, ग्रीस के डेल्फी जैसे धार्मिक केन्द्रों में शिवलिङ्गाकार के पत्थर मिले हैं जिन्हें पाश्चात्य लेखक पृथ्वी की नाभि कहते हैं।** कई जगह इनपर लिपटे सर्प की मूर्तियाँ पायी गयी हैं। इन शिवलिङ्गों के आधार पर न केवल रेखांश मापे जाते थे, बल्कि सम्भवतः वार्षिक राष्ट्रीय कुण्डलियाँ भी बनती थीं। रोमन चर्च ने प्राचीन ज्ञान को कुचलकर पृथ्वी को चपटी घोषित किया। मिस्र और सुमेर के बचे-खुचे प्राचीन ज्ञान का सफाया मुसलमानों ने कर दिया। मिस्रवासियों को मङ्गल के वक्री होने और सूर्य के चतुर्दिक् बुध और शुक्र के घूमने का ज्ञान था। सिकन्दरिया के क्लीमेण्ट ने चार प्राचीन मिस्री ग्रन्थों के नाम बताये थे, जो पुरोहित केवल अपने पास रखते थे। वे थे : स्थिर राशियों के स्वभाव, ग्रहों के स्वभाव, तिथिनिर्णय एवं उदय। पहले ग्रन्थ का नाम ही था स्थिर राशि। निरयन पद्धति का मिस्र में प्रचलन का यह एक साक्ष्य है। टॉलेमी के ग्रन्थ में भी राशियों को बारम्बार स्थिर कहा गया है। एक अध्याय का नाम ही है 'स्थिर राशि'। किन्तु समस्त पाश्चात्य टीकाकार मूल अर्थ को तोड़-मरोड़कर मिस्र और ग्रीस का सायन पद्धति प्रचलित होने की झूठी कल्पना करते हैं।

सायन पद्धति का सीमित उपयोग था, जैसे कि सूर्योदय और लग्नसाधन में। ज्योतिषशास्त्र सर्वत्र निरयन पद्धति पर ही आश्रित था। किन्तु सभी पाश्चात्य लेखक सायन के प्रति वर्तमान पाश्चात्य पूर्वाग्रह को बलपूर्वक इतिहास पर थोपते हैं। सुमेर में वसन्त संक्रान्ति के दिन नववर्ष का आरम्भ होता था, जिसका अर्थ आधुनिक लेखक लगाते हैं कि सायन मेषारम्भ से वर्षारम्भ होता था। टॉलेमी के टेट्राबिब्लॉस में एक अध्याय का शीर्षक है 'नववर्ष का नया चाँद', जिसे टॉलेमी ने मेषारम्भ के पास की अमावस के रूप में परिभाषित किया। टीकाकारों ने इसका गलत अर्थ लगाया कि सायन मेषारम्भ से ही नया वर्ष शुरु होता था, किन्तु टॉलेमी ने इसी ग्रन्थ में राशियों को बारम्बार स्थिर कहा है। अतः निरयन मेष संक्रान्ति की निकटतम अमावस से वर्ष का आरम्भ होता था, जैसा कि भारत में आज भी होता अर्थात् चैत्र शुक्लादि से। राजकाज हेतु एक स्थूल सौरवर्ष का मिस्र में प्रचलन था जिसमें चान्द्रमास का उपयोग नहीं था। अतः टॉलेमी ने जिस शुक्लादि वाले वर्ष का उल्लेख किया वह धार्मिक वर्ष था, जैसा कि भारत के पञ्चाङ्गों में है। टॉलेमी का विषय भी ज्योतिष था जिसका सम्बन्ध धर्म से है। निरयन प्रणाली को पश्चिम भूल चुका है। अतः इतिहास से भी इसे मिटा देना चाहता है। सुमेर में भी इसी निरयन सौरवर्ष के साथ चान्द्रमास की प्रथा थी और मलमास का भी प्रचलन था। रोम का कैलेण्डर भी सौरवर्ष एवं चान्द्रमासों का मिश्रण था। प्रागैतिहासि रोम में वर्ष का आरम्भ मार्च में था, जिसका साक्ष्य है जुलाई से दिसम्बर मासों में संख्यावाचक नाम, दशम मास दशमवर के बाद ग्यारहवाँ जनवरी और बारहवाँ फरवरी था। उन दिनों निरयन और सायन दोनो मेष संक्रान्तियाँ मार्च में ही थीं। किन्तु ईद पर्व मास मध्य में होते थे जो निरयन संक्रान्ति से मेल खाते थे, सायन से नहीं। बाद में रोमन गणतन्त्र के ही काल में जनवरी से वर्ष का आरम्भ माना जाने लगा।

अयनांश और सम्पातचलन (Equinoxes) में भेद-

भारतीय ज्योतिष में आकाश को स्थिर माना गया है, जिसमें विभिन्न पिण्ड गतिशील हैं। इस निरयन पद्धति में **आकाश के राश्यात्मक एवं नक्षत्रात्मक विभाग स्थिर रहते हैं। यूरोप में निरयन पद्धति अब नहीं है। अयनांश की अवधारणा का किसी यूरोपियन भाषा में अब प्रचलन नहीं है, क्योंकि दृक्पक्षीय खगोल विज्ञान में इसकी आवश्यकता नहीं पड़ती। दृपक्षीय विषुव-सम्पात बिन्दु के पुरस्सरण (precession of the equinoxes) की वार्षिक गति (50.3'') अयनांश परिवर्तन की वार्षिक गति (54'') से एक सीमा तक भ्रामक साम्य रखती है। किन्तु पुरस्सरण पूरे 360° के भचक्र में होता है जबकि सूर्यसिद्धान्तीय अयनांश + 27° से - 27° के बीच कुल 108° लोलक की भाँति दोलन करता है।** 360° का चक्रभ्रमण का सिद्धान्त भी प्राचीन भारतीयों को ज्ञात था, जिसके एक प्रवक्ता मुञ्जाल थे। सौरपक्षीय पुरस्सरण-चक्रभ्रमण 24000 वर्षों में 360° का होता है, जिसमें 0.3 से गुणा करने पर अयनांश - दोलाभ्रमण का आवर्त्तकाल 7200 वर्ष में 108° का एक दोलन अथवा 1800 वर्ष में 27° का एक पाद-दोलन निकलता है। अपनी पुस्तक Small Commentary to the Handy Tables में ग्रीक लेखक थिओन ने अज्ञानतावश 0.3 से दुबारा गुणा कर दिया, जिस कारण 27° तक के स्थान पर 8° तक के अयनांश की अवधारणा बनी। किन्तु थिओन की भ्रान्त धारणा प्रचलित नहीं हो सकी। मध्ययुग के लातीनी और अरब खगोल शास्त्र में सर्वमान्य अयनांश दोलन चक्र उतने ही काल का था जितना सूर्यसिद्धान्त में वर्णित है, जिसे आधुनिक वैज्ञानिकों ने खगोलविज्ञान से हटाया और अब भारतीय ज्योतिष से भी हटाने के प्रयास चल रहे हैं। अयनांश की अवधारणा को अवैज्ञानिक माना जाता है, किन्तु एक अवैज्ञानिक अवधारणा भारत, यूरोप और अरबों में पृथक रूप से उत्पन्न नहीं हो सकती, इसका कोई एक ही स्रोत होना चाहिए। **चूँकि 7200 वर्षीय दोलनचक्र वाले अयनांश की स्वीकृति का प्राचीनतम साक्ष्य सूर्यसिद्धान्त में ही मिलता है। अतः अयनांश के इतिहास पर कुछ भी लिखना पाश्चात्य विद्वानों को नापसन्द है।** 13वीं शती की अल्फोन्साइन सारिणियों में अरब लेखक थबित के मार्फत सूर्यसिद्धान्त से आयातित अयनांश ही प्रयुक्त किया गया, किन्तु 24000 वर्षों के सम्पूर्ण अयनांश- चक्र और 25800 वर्षों के पुरस्सरण-चक्र को जोड़कर लगभग 49000 वर्षों के चक्र की कल्पना की गई; इसी भ्रान्त अवधारणा का उपयोग कॉपरनिकस ने भी किया।

'सूर्यसिद्धान्त' ग्रन्थ की विश्व व्यापकता-

19वीं और 20वीं शती में जब भारतीय ज्योतिष का पाश्चात्य पद्धति से अध्ययन आरम्भ हुआ तो पुरस्सरण को ही अयनांश घोषित कर दिया गया। सूर्यसिद्धान्त में ऐसे मौलिक परिवर्तन करने वालों में से एक भी 'विद्वान्' ऐसा नहीं था जिसे सूर्यसिद्धान्तीय गणित का ज्ञान हो। सूर्यसिद्धान्त का जितना अंश इन दोनों के पल्ले पड़ा उतने को 'सूर्यसिद्धान्त' से निकाल बाहर कर दिया गया। पाश्चात्य विद्वानों ने सूर्यसिद्धान्त की वास्तविक परम्परा को प्रकाश में लाने की चेष्टा नहीं की, क्योंकि उनका मूल उद्देश्य सूर्यसिद्धान्त को समझना नहीं, सूर्यसिद्धान्त का खण्डन करना और यवनों की

तुलना में प्राचीन भारतीय आचार्यों को मूर्ख सिद्ध करना ही था। कैम्ब्रिज के खगोलशास्त्री प्रोफेसर विंसी लिखते हैं कि 638 ईस्वी को गणना का आधार मानने वाली एक हिन्दू पञ्चाङ्ग निर्माण सारिणी थाईलैण्ड (सिआम) से 1687 ईस्वी में राजदूत लूबेर वापस लाये थे जिसमें सूर्य और चन्द्र स्पष्ट करने के नियम भी थे। इसमें चन्द्रमा का परममन्दफल 4छ:56' था जो पञ्चसिद्धान्तोक्त सूर्यसिद्धान्तीय चन्द्र मन्दपरिध्यंश 31 को 2π से भाग देने पर प्राप्त फल था।

सूर्य का परममन्दफल सूर्यसिद्धान्तीय सम एवं विषम परिध्यंशों के औसत को 2π से विभक्त करने पर फल के तुल्य था, जो केवल तथाकथित आधुनिक सूर्यसिद्धान्त से ही मेल खाता है। इस थाई सारिणी का चन्द्रोच्च-आवर्त्तकाल भी तथाकथित आधुनिक सूर्यसिद्धान्त से मेल खाता है। प्रो. विंसी ने इस सारिणी का जो वर्षमान बताया वह सूर्यसिद्धान्तीय वर्षमान से 1 सेकेण्ड का भी अन्तर नहीं रखता। 19 वर्षीय सारिणी द्वारा चान्द्रमास बनाये जाते थे। आज भी मलमाससाधन हेतु कई परम्परागत पञ्चाङ्गकार 19 वर्षीय मलमास सारिणी का प्रयोग करते हैं। तात्पर्य यह है कि तथाकथित आधुनिक सूर्यसिद्धान्त भारत में प्रचलित होने से पहले ही थाईलैण्ड में 638 ईस्वी में स्थापित हो चुका था! सूर्यसिद्धान्त को मिस्र से आयातित सिद्ध करना था, अत: थाईलैण्ड के प्रमाण की चर्चा भी कोई नहीं करता।

दृश्यपक्षीय ग्रहस्थिति (वेधमान) के साथ सूर्यसिद्धान्तीय (अर्थात् सौरपक्षीय) ग्रहस्थिति का सामञ्जस्य न बैठने के कारण सूर्यसिद्धान्त पर अंग्रेजों के आगमन से पहले से ही प्रश्नचिह्न लगाये जाते थे। पिछली ढाई शतियों से सूर्यसिद्धान्त की मूल पद्धति द्वारा पञ्चाङ्ग बनना बन्द है, यद्यपि बीसवीं शती के पूर्वार्ध तक अनेक परम्परावादी पञ्चाङ्गकार सूर्यसिद्धान्त को अपौरुषेय ग्रन्थ मानते हुये धूप-दीप दिखाते रहे। पाश्चात्य विशेषज्ञों ने इस कसर को भी पूरा कर दिया, न केवल सूर्यसिद्धान्तको पौरुषेय कहा बल्कि अन्य सिद्धान्तों की तुलना में इसे परवर्ती भी घोषित किया। उनके विचारों की निष्पक्ष जाँच करने का प्रयास किसी ने नहीं किया, यद्यपि पं. सुधाकर द्विवेदी ने सूर्यसिद्धान्त के पक्ष में पण्डितों को एकजुट करने का अथक प्रयास किया था।

चिदाकाश और भूताकाश की पृथकता

आकाश दिखता नहीं। इसका अंशों में विभाग करके उसे स्थिर मानने पर भौतिकवादियों द्वारा प्रश्नचिन्ह लगाया जाता है। आधुनिक विज्ञान पूर्णतया भौतिकवादी है। जिन वस्तुओं एवं परिघटनाओं का मानवीय पञ्चेन्द्रियों द्वारा प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूप से सत्यापन सम्भव नहीं, उनके अस्तित्त्व को आधुनिक विज्ञान, स्वीकृति नहीं देता। अतः आत्मा, देवता, परलोक, कर्मफल, पुनर्जन्म, जैसे विषय आधुनिक विज्ञान के क्षेत्र से बाहर हैं। न्यूटन के नियमानुसार बुध की कक्षा में 0.0175' वार्षिक त्रुटि रह जाती है जिसकी कोई व्याख्या भौतिकी में नहीं थी। 500 वर्षों में यह त्रुटि इकट्ठी होकर प्राय: 9'' हो जाती है। आइंसटाइन ने गणित द्वारा इस समस्या का समाधान कर दिया, किन्तु जब तक कैमरे द्वारा चित्र खींचकर आइंसटाइन के सिद्धान्त को सत्यापित नहीं किया जा सका तब तक उनके विचारों को मान्यता नहीं मिली। सूर्य के गुरुत्त्वाकर्षण के कारण आकाश की वक्रता का जो आकलन आइंसटाइन ने 1905 ईस्वी में किया था, 13 वर्षों के पश्चात् दूरस्थ तारे की स्थिति में ठीक उतना ही वक्रताजनित विचलन सूर्यग्रहण काल में देखी गई। फलतः यह सिद्ध हो गया कि भौतिक पदार्थ की भाँति आकाश भी एक भौतिक तत्त्व है, जिस पर गुरुत्त्वाकर्षण जैसी भौतिक शक्तियों का प्रभाव पड़ता है। **भारतीय दर्शन में इसे पञ्चभौतिक भूताकाश कहा जाता है, जो ब्रह्मस्वरूप चिदाकाश से नितान्त भिन्न है। दृक्पक्ष का आकाश भूताकाश है, जिसका भौतिक ग्रहपिण्ड स्थित हैं। सौरपक्ष का आकाश ब्रह्म है, जिसमें चैतन्य ग्रह (देवता) स्थित हैं।** कैमरे द्वारा भूताकाश के सत्यापन के पश्चात् भी भूताकाश को आधुनिक विज्ञान एक पृथक् तत्त्व के रूप में मान्यता नहीं देता, क्योंकि आकाश का प्रत्यक्ष दर्शन सम्भव नहीं है। फिर चैतन्य ब्रह्मस्वरूप सौरपक्षीय चिदाकाश का बाह्य चक्षु द्वारा दर्शन किये बिना आधुनिक वैज्ञानिक ब्रह्म के अस्तित्व का प्रमाणपत्र कैसे दे सकते हैं? भूताकाश सर्वत्र एकसमान समरस नहीं रहता। इसमें प्रकाश की गति भी सर्वत्र है। वह हमें दिखती नहीं। किन्तु चिदाकाश सर्वत्र एकसमान समरस एवं सदैव स्थिर है।

चिदाकाश के निरयन विभागों में चैतन्य ग्रहों की स्थिति पर ही भारतीय फलित ज्योतिष का समस्त फलादेश निर्भर करता है। प्राणियों के पिछले कर्म के अनुरूप चैतन्य ग्रह ही फल देते हैं तथा जप-तप द्वारा चैतन्य देव को ही मना सकते हैं। भौतिक ग्रह तो पिण्डमात्र हैं, जो प्राणियों का भूत भविष्य जानने और उसे बदलने की शक्ति रखते हों यह अवधारणा भौतिकविज्ञान एवं वेद दोनों के विरुद्ध है। यूरोप-अमरीका के बहुसंख्यक वैज्ञानिक ऐसी भ्रान्ति नहीं रखते; किन्तु भारत में ऐसे विज्ञानवादियों की भरमार हैजो शास्त्र में आस्था नहीं रखते, विज्ञान का हवाला देकर शास्त्र को आउट-ऑफ -डेट सिद्ध करते हैं, किन्तु विज्ञान की बजाय ज्योतिषशास्त्र में बलपूर्वक अपना बहुमूल्य योगदान करने के लिए कटिबद्ध हैं। भाँति-भाँति के अयनांश, एफेमेरिस, यहाँ तक कि नये फलितसिद्धान्त भी प्रचलित किये जा रहे हैं।

विश्व का प्राचीनतम गणित ग्रन्थ सूर्यसिद्धान्त

निरयन गणना को आधार बनायें तो सौरपक्ष तथा दृक्पक्ष के मध्यमसूर्य में 2000 ईस्वी में परस्पर नगण्य अन्तर था। **अतः सूर्यसिद्धान्त का रचनाकाल 2000 ईस्वी से 152492 वर्ष पहले मानना पड़ेगा, क्योंकि प्रत्येक 152492 वर्षों में सौरपक्ष तथा दृपक्ष के मध्यमसूर्य पुनः समान स्थान पर चले आते हैं।** अतः बर्जेस, बेण्टली जैसे विद्वानों ने सायन पद्धति से ही सूर्यसिद्धान्त की जाँच को उचित समझा। मध्यम सायन गणना के आधार पर सूर्यसिद्धान्तीय सूर्य का वेध से मेल 782 ईस्वी में और स्पष्ट गणना के आधार पर 908 ईस्वी में वेध से मेल था। एक छोटे से तारे जीटा पीशियम को रेवती मानकर दोनों का मेल 560 ईस्वी में बिठाने की चेष्टा थीबो जैसों ने की। बेण्टली ने मध्यमसूर्य से मध्यमग्रहों के अन्तरों के आधार पर 1091 ईस्वी सूर्यसिद्धान्त का रचनाकाल निर्धारित किया। बेण्टली ने सूर्यसिद्धान्त के आँकड़ों में भी मनमाना परिवर्तन कर दिया, जिस कारण हिटनी ने बेण्टली को वर्थलेस और बर्जेस ने आलोचनात्मक बुद्धि से विहीन व्यक्ति की संज्ञा दी। किन्तु बर्जेस ने स्वयं आँकड़ों में हेराफेरी करके सूर्यसिद्धान्त का रचनाकाल 250 ईस्वी निकाला, जबकि गणना में त्रुटि दूर की जाय तो 108 ईस्वी निकलती है। आधुनिक विज्ञान में आस्था रखने वाले अधिकांश लोग सूर्यसिद्धान्त का रचनाकाल सायन गणना द्वारा निर्धारित काल में ही मानते हैं। इसे 'आधुनिक सूर्यसिद्धान्त' की संज्ञा दी जाती है; और कहा जाता है कि वराहमिहिर की पञ्चसिद्धान्तिका में वर्णित सूर्यसिद्धान्त आधुनिक सूर्यसिद्धान्त का था।

बेण्टली और बर्जेस की अज्ञानता-

तथ्यों को तोड़-मरोड़कर अथवा एकपक्षीय रीति से प्रस्तुत करके सूर्यसिद्धान्त के विरुद्ध झूठा प्रचार किया गया है। **वास्तव में यह तथाकथित 'आधुनिक' सूर्यसिद्धान्त ही विश्व के समस्त**

प्राचीन एवं अर्वाचीन खगोलविषयक सिद्धान्तों का मूल स्त्रोत है, इसके कई प्रमाण हैं। पश्चिमी विद्वानों ने जानबूझकर केवल सायनसूर्य की तुलना के आधारपर सूर्यसिद्धान्त का रचनाकाल निर्धारित किया, क्योंकि सभी ग्रहों की तुलना करने पर यूरोपियन विद्वानों के निष्कर्षो का स्वतः खण्डन हो जाता है। **ऐसा कोई काल नहीं है जिसमें सभी ग्रहों के दृक्पक्षीय मान सौरपक्षीय मान से लगभग भी मेल खाते हों। यह तथ्य बर्जेस भी स्वीकारते हैं। आर्यभटीय और वराहमिहिर की पञ्चसिद्धान्तिका में सूर्य का महायुगभगणमान वही है जो तथाकथित आधुनिक सूर्यसिद्धान्त में है। चूंकि कालनिर्धारण का आधार सूर्य हैं; अतः आर्यभटीय, वराहमिहिर एवं सूर्यसिद्धान्त तीनों को 908 ईस्वी के आसपास रखना पड़ेगा।**

किन्तु ऐसा काल निर्धारण ऐतिहासिक तथ्यों से मेल नहींखाता। महायुगभगणमान में अन्तर के कारण पञ्चसिद्धान्तिका के सूर्यसिद्धान्त को प्राचीन तथा उपलब्ध सूर्यसिद्धान्त को आधुनिक कहने वालों को मालूम था कि पञ्चसिद्धान्तिका की पद्धति करण ग्रन्थ की थी, जबकि उपलब्ध सूर्यसिद्धान्त सिद्धान्त ग्रन्थ है। करण प्रक्रिया में पास के किसी काल में गणना आरम्भ की जाती है एवं सृष्टियादि से इष्टकाल तक का सारा बीजसंस्करण करणकाल से इष्टकाल तक के काल खण्ड पर बैठा दिया जाता है, जिस कारण महायुग-भगणमान में भारी अन्तर दिखने लगता है। **पञ्चसिद्धान्तिकाकरण ग्रन्थ होने के कारण बीजसंस्कृत है, जबकि सूर्यसिद्धान्त सिद्धान्त ग्रन्थ होने के कारण सैद्धान्तिक विषयों की विवेचना पर केन्द्रित है, न कि बीज संस्कार द्वारा व्यावहारिक पञ्चाङ्ग निर्माण पर।** व्यवहार में सूर्यसिद्धान्तीय परम्परा में बिना बीज संस्कार के ग्रहस्पष्ट करने की प्रथा नहीं थी। किन्तु **विदेशी लेखकों ने प्रचार किया कि सूर्यसिद्धान्त में बीजसंस्कार नहीं है और इसी भ्रान्ति के कारण पञ्चसिद्धान्तिका के बीजसंस्कार सूर्यसिद्धान्तीय करण प्रकार को प्राचीन सूर्यसिद्धान्त एवं बिना बीज संस्कार वाले सिद्धान्त ग्रन्थ को आधुनिक सूर्यसिद्धान्त की संज्ञा दी।** बर्जेस की अज्ञानता का एक साक्ष्य यह है कि टीका में उन्होंने बेण्टली को उद्धृत करते हुए लिखा है कि 16वीं शती के आरम्भ में सूर्यसिद्धान्तीय प्रणाली में बीज संस्कार करने की प्रथा का श्रीगणेश हुआ। बीज संस्कार की जो तालिका बर्जेस ने बेण्टली के सौजन्य से प्रकाशित की, वह मकरन्द सारिणी के बीज संस्कार से शत प्रतिशत मेल खाती है, केवल बुध में +16 के स्थान पर -16 छप गया था। मकरन्द सारिणी सूर्यसिद्धान्त पर आश्रित तन्त्र सारिणी है जो 1478 ई. में बनी, जबकि बर्जेस और बेण्टली ने 16वीं शती का हवाला दिया। **स्पष्ट है कि बीजसंस्कार की विधि का ज्ञान बर्जेस को नहीं था। अपने अज्ञान पर पर्दा डालने के लिए बीज संस्कार के महत्त्वपूर्ण विषय की जाँच करने के स्थान पर उसने बीज के 21 श्लाकों को सूर्यसिद्धान्त ही से बाहर कर दिया।**

मकरन्दीय ग्रहसारिणी का आधार सूर्यसिद्धान्त-

ग्रहलाघवकार ने लिखा है कि गुरु, मङ्गल, राहु और 5° से अधिक का शनि आर्यसिद्धान्त के अनुसार वेध से मिलता है। गणना करने पर हम देख हैं कि इन ग्रहों के ग्रहलाघवीय बीज मकरन्दीय बीज से नगण्य अन्तर रखते हैं, केवल मङ्गल का बीजसंस्करण मकरन्दाचार्य भूल गये थे। मकरन्दाचार्य ने अपनी सारिणियों को ङ्गश्रीसूर्यसिद्धान्तमतेन' कहा, जबकि आर्यभटीय के बीज संस्कार केवल परिमाण में बल्कि चिह्न में भी मकरन्दीय बीजों से बहुत अन्तर रखते हैं। अतः ग्रहलाघवकार ने आर्यभट्ट के जिस ग्रन्थ की सहायता ली वह आर्यभटीय न होकर आर्यभट्ट का ही सूर्यसिद्धान्तीय ग्रन्थ था जिसका उल्लेख अनेक प्राचीन आचार्य कर चुके हैं, किन्तु जो अब उपलब्ध नहीं हैं। 1646 ईस्वी में मुनीश्वर ने भी लिखा कि आर्यभट्ट ही सूर्यसिद्धान्त के भाष्यकार थे। आर्यभटीय के रचयिता से इस सूर्यसिद्धान्तीय भाष्यकार आर्यभट्ट का साम्य नहीं बैठता, क्योंकि युगविधान एवं ग्रहस्पष्टीकरण की रीति जैसे महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर सूर्यसिद्धान्त और आर्यभटीय में मौलिक अन्तर है। महासिद्धान्तकार ने पाताधिकार की 14वीं आर्या में कहा है कि वृद्ध आर्यभट्ट का जो सिद्धान्त नाना पाठभेदों के कारण नष्ट हो गया था मैंने प्रतिपादित किया है। **युगविधान, भूभ्रमण, कल्पारम्भ का वार, आदि महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर आर्यभटीय से महासिद्धान्त भिन्न है, परन्तु उन्हीं बिन्दुओं पर सूर्यसिद्धान्त से महासिद्धान्त का साम्य है। अलबेरुनी ने लिखा कि आर्यभटीय के रचयिता कुसुमपुर के आर्यभट्ट थे जो वृद्ध आर्यभट्ट के परवर्ती थे।**

सूर्यसिद्धान्त का यह भाष्य अब अनुपलब्ध है, किन्तु ग्रहलाघवकार ने इसी के आधार पर बाहरी ग्रहों का बीज निर्धारित किया, केवल बुध और शुक्र में ब्रहासिद्धान्त की सहायता ली थी, और मकरन्द सारिणी भी इसी के आधार पर बनी।

सूर्यसिद्धान्त भाष्यकार वृद्ध आर्यभट्ट को इस देश ने सदा श्रद्धा से स्मरण किया, केवल पिछले एक-डेढ़ शतियो में उन्हें पूरी तरह नकारने या आर्यभटीय के रचनाकार के साथ एकीकृत करने की चेष्टा चल रही है। ये वृद्ध आर्यभट्ट आर्यभटीय के लेखक से बहुत पहले हुए थे, क्योंकि बाद के किसी कालखण्ड में उन्हें रखना सम्भव नहीं है। सूर्यसिद्धान्त वृद्ध आर्यभट्ट से भी बहुत पहले की वस्तु है। किन्तु सूर्यसिद्धान्त में ही लिखा है कि यह रहस्य है। अतः प्राचीन काल में यह सर्वसुलभ नहीं था। सूर्यसिद्धान्त के कुछ रहस्यों की आज चर्चा करेंगे। पहला रहस्य तो यह है कि सूर्यसिद्धान्त के एक भी भाष्यकार को ग्रहस्पष्टीकरण की शास्त्रीय पद्धति का या तो ज्ञान नहीं था या फिर वे बताना नहीं चाहते थे। बर्जेस या बेण्टली को मकरन्दसारिणी का ज्ञान था किन्तु इस सूर्यसिद्धान्तीय सारिणी की गणितीय उपपत्ति में असफल होने के कारण इन लोगों ने मकरन्दसारिणी को सूर्यसिद्धान्तीय मानने से ही इंकार कर दिया। मकरन्दाचार्य का पहला श्लोक ही कहता है कि उनकी सारिणी सूर्यसिद्धान्तीय है। यह सारिणी जिन सूत्रों से बनी है। उनका ज्ञाता ही सूर्यसिद्धान्त का भाष्य लिखने को अधिकार रखता है।

बर्जेस की भयङ्कर त्रुटियाँ-

बर्जेस द्वारा सूर्यसिद्धान्त के कालनिर्धारण की जाँच करें। उन्होंने अपने काल के सूर्यसिद्धान्त एवं आधुनिक वैज्ञानिक मध्यमग्रहों के सायन मान अपनी टीका में दिये हैं। स्पष्टसूर्य का मान निर्धारित करने में बर्जेस ने 178° की भयङ्कर त्रुटि सर्वत्र की। यह सर्वविदित है कि 22-23 दिसम्बर को सायनसूर्य की मकर संक्रान्ति होती है, किन्तु बर्जेस ने कर्क में सूर्य दिखाया। बर्जेस ने सूर्य का जो मान 1 जनवरी हेतु दिया है, वह जुलाई के आरम्भ का मान है। दूसरी भयङ्कर त्रुटि है बुध के बीजसंस्कार में चिह्न का उलटना, जिस कारण कुल 13° से अधिक की त्रुटि हुई (इस त्रुटि का कारण था बेण्टली)। तीसरी त्रुटि को त्रुटि या लापरवाही के बदले मूर्खता कहना उचित होगा: बर्जेस ने जो सबीज एवं निर्बीज सूर्यसिद्धान्तीय मान दिये हैं वे मूल ग्रन्थ से कदापि मेल नहीं खाते, सभी ग्रहों में लगभग 2 अंशों की त्रुटि है। उसने सूर्य का परममन्दफल सभी ग्रहों में घटा दिया, जिसका कोई औचित्य नहीं है। ऐसे अनाड़ी को सूर्यसिद्धान्त का महानतम विशेषज्ञ होने की मान्यता पिछले डेढ़ सौ वर्षो से मिली हुई है। इस विचित्र पद्धति द्वारा बर्जेस ने जो मान निकाले, उसके आधार पर सूर्यसिद्धान्त का काल 250 ईस्वी निर्धारित किया। उसे यह नहीं सूझा कि सायन सूर्य में 1860

ईस्वी में जो त्रुटि उसे मिली थी उसमें निरयन वर्षों के अन्तर से नहीं, सायन वर्षों के अन्तर से भाग देना चाहिए था। गणना की पद्धति में एकरूपता नहीं रखने वाले को स्कूल की परीक्षा में उत्तीर्ण होना असम्भव हो जाता है। किन्तु बर्जेस मूर्ख नहीं था, और उसे महानतम भाष्यकार बताने वाले भी मूर्ख नहीं हैं। ये लोग मूर्ख नहीं, दुष्ट और बेईमान हैं। इन्हें मालूम था कि सायन वर्ष में अन्तर को सायन वर्ष के अन्तर से भाग देने पर सूर्य में शून्य त्रुटि का काल सुदूर प्रागैतिहासिक ईसापूर्व 1006 में चला जायगा। इस निष्कर्ष से बर्जेस घबड़ा गया, क्योंकि ऐसा यदि वह लिखता भी तो पश्चिम में उसकी पुस्तक प्रकाशित नहीं हो पाती। अतः उसने सायन अन्तर को जानबूझकर निरयन से भाग देकर 250 ईस्वी निकालने की बेईमानी की।

सही गणना करता तो मध्यम मान 782 ईस्वी और स्पष्ट मान 908 ईस्वी में मिलते। बर्जेस ने जिस बचकाने तरीके से सूर्यसिद्धान्त का काल निर्धारण किया और जिस हठधर्मिता के साथ समूचा पाश्चात्य जगत् ऐसे गलत भाष्यकार की वकालत में जुटा है वह अत्यन्त दुःखद है।

सच्चाई यह है कि टॉलेमी और ग्रीस के पूर्ववर्ती आचार्यों ने पूर्व से ज्योतिष सीखा, किन्तु बाद में भौतिकवाद का वर्चस्व होने के कारण ग्रीक ज्योतिष को दृक्पक्षवादी बनाने का प्रयास हुआ, जिसमें टॉलेमी की अग्रणी भूमिका है। भारत में भी ऐसे प्रयास होते रहे हैं; किन्तु सूर्यसिद्धान्त सदा ऐसे चार्वाकपन्थियों के विरुद्ध हिमालय की भाँति डटकर खड़ा रहा। भारतीय ज्योतिष वेद का अङ्ग रहा है। जैसा कि आदि शङ्कर बृहदारण्यकोपनिषद के भाष्य में लिखा है, बाह्य चक्षु द्वारा आत्मा, परमात्मा, परलोक, कर्मफल जैसी वस्तुओं का ज्ञान नहीं होता, ऐसी वस्तुओं का जो ज्ञान कराये उसे वेद कहते हैं। सङ्कलित मन्त्रों की संहिता वेद है, किन्तु वेद इससे कहीं अधिक है। वेद वास्तविक ज्ञान को कहते हैं। ऐसा ज्ञान जो मरने के बाद भी साथ न छोड़े। जन्मों के कर्मफल से बने संस्कार तले जीव दबा रहता है। संस्कारवश नये कर्म करता है और फिर अपने ही बुने कर्मफल के जाल में फँसता चला जाता है। इसी जञ्जाल से उद्धार का उपाय है वेद। जिसकी आँख है ज्योतिष।

ज्योतिष कर्मफल का ऐसा प्रत्यक्ष दर्शन कराता है कि मूर्ख से मूर्ख व्यक्ति की भी आँख खुल सकती है और वह आत्मकल्याण का मार्ग पकड़ सकता है। मनुष्य के सुख दुःख पिछले कर्मों के फल हैं। यह देख लेने के बाद जीव में अच्छे कर्म करने की प्रेरणा जागती है। अच्छे कर्मों द्वारा ग्रहशान्ति होती देखकर यह प्रेरणा और भी बलवती होती है। भारतीय ज्योतिष के पीछे जो जीवन दर्शन है वह भारतीय धर्म का अभिन्न अङ्ग है। भारतीय ज्योतिष भारतवर्ष की आत्मा से अभिन्न रूप से जुड़ा है। भारतीय ज्योतिष का गणित भी अपने आप में परिपूर्ण और समग्र है। ऐसा युगविधान विश्व के किसी अन्य अशुद्ध है- ज्योतिष में नहीं मिलेगा। इस युगविधान को पाश्चात्य लेखकों ने भारतीयों की कृत्रिम खोज घोषित किया, किन्तु इसी युगविधान पर समस्त सौरपक्षीय एवं वपक्षीय गणित खड़ा है। जिस सौर वर्ष को अशुद्ध कहा जाता है, उसके आधार पर न केवल दृपक्षीय सृष्टि का गणित खड़ा है, ब्रह्मा जी की परम का ऐसा गणित भी इस पर आधारित है जिसकी सूक्ष्मता मानवीय बुद्धि से परे की चीज है। यह गूढ़ सौरगणित हाल ही में प्रकाशित हुआ है। भारतीय ज्योतिषमें जो कुछ भी अभारतीय है वह हेय और त्याज्य है। ताजिक नीलकण्ठी द्वारा अशुद्ध वर्षफल बनता है, सूर्यसिद्धान्त द्वारा वर्षफल एवं मासफल सर्वथा शुद्ध बनते हैं।

इन सभी भौतिकवादियों ने इस तथ्य की अनदेखी की कि सूर्यसिद्धान्त के दो पक्ष हैं : सौरपक्ष एवं दृक्पक्ष सौरपक्ष प्राथमिक है; दृक्पक्ष गौण सा है। सौरपक्ष का उपयोग पञ्चाङ्ग एवं फलित हेतु होता आया है। दृक्पक्ष का उपयोग पञ्चभौतिक जगत् को परमसत्य समझने वाले भौतिकवादियों के विरुद्ध शास्त्र की रक्षार्थ किया जाता था। प्राचीन भारत में दृक्पक्ष के कई आचार्य हुये, किन्तु उनके कार्यों के छिटपुट अंश ही शेष हैं। सूर्यसिद्धान्त वेद का अङ्ग है, कालातीत है। न तो वेद-वेदाङ्ग की कभी रचना होती है, और न ही इनका कभी लोप हो सकता है। आज भी जो द्विज ब्रह्मचर्यपूर्वक विधिवत् ऋषियज्ञ करेगा वह किसी भी वेद-वेदाङ्ग की लुप्त शाखायें भी आवश्यकता पड़ने पर प्राप्त कर सकता है। **सूर्यसिद्धान्त का जो स्थूल स्वरूप आजकल उपलब्ध है, उसी में सूर्यसिद्धान्त के विस्मृत अंशों के भी बीज निहित हैं। सूर्यसिद्धान्त का अलौकिक गणित जो भलीभाँति समझ लेगा वह ऐसे विलक्षण ग्रन्थ को पौरुषेय कदापि नहीं मान सकेगा।**

सूर्यसिद्धान्त के कालनिर्धारण की विधि ही अशुद्ध है -

सौरपक्षीय सूर्य या शनि के मान जिस काल में दृक्पक्षीय मान के तुल्य हों, वही सूर्यसिद्धान्त का रचनाकाल होगा, यह मात्र एक भौतिकवादी पूर्वाग्रह है। **सूर्यसिद्धान्त की रचना न तो 1091 या 250 ईस्वी में हुई थी, और न ही 3102 या 4000 ईसापूर्व में, क्योंकि ऐसा कोई काल नहीं है जिसमें सभी ग्रहों के सारे लक्षण दृक्पक्ष से साम्य रखते हों।** आधुनिक विद्वानों का दृढ़ विश्वास है कि सौरपक्षीय सायनवर्ष का मान निर्धारित करने में भूल हुई थी। अतः दृक्पक्षीय सायनवर्ष से सौरपक्षीय सायनवर्ष मेल नहीं खाता। इस कल्पित त्रुटि के आधार पर सूर्यसिद्धान्त का रचनाकाल निर्धारित किया जाता है। सौरपक्षीय वर्षमान को अशुद्ध मानकर उसके आधार पर सूर्यसिद्धान्त का कालनिर्णय करने की विधि ही गलत है। सूर्यसिद्धान्त के विज्ञानसम्मत होने के अकाट्य प्रमाण ग्रन्थाकाररूप में प्रकाशित हो चुका है। इस ग्रन्थ में प्राचीन भारतीय तथा पाश्चात्य सिद्धान्तों की गूढ़ पहेलियों के समाधानों का स्रोत सूर्यसिद्धान्त में होने के भी प्रमाण दिये गये हैं। इस गूढ गणित की यहाँ चर्चा सम्भव नहीं है। सूर्यसिद्धान्त की सत्यता के कुछ सरल एवं अकाट्य प्रमाणों की यहाँ चर्चा करते हैं।

ग्रीनविच इंग्लैण्ड का केन्द्र है भूगोल का नहीं-

भारतीय ज्योतिष का विश्व को सबसे पहला योगदान तो यही हैं कि भारत ने ही विश्व को उज्जैन दिया है जहाँ से सृष्टि के आरम्भ में ग्रहों की गति आरम्भ होती है। भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों कालों का दर्शन ज्योतिष कराता है। अतः काल के इस विज्ञान का आरम्भ महाकाल के मन्दिर से होना स्वाभाविक ही है। भारत के सभी सिद्धान्तों में ग्रहगणित उज्जैन से ही बनता है। तत्पश्चात् उसमें देशान्तर संस्कार करके इष्टस्थान के पञ्चाङ्ग बनते हैं। ग्रीनविच तो इंग्लैण्ड का ही केन्द्र है, किन्तु धन और तलवार के बल पर उसे भूगोल का केन्द्र घोषित किया जाता है, जो कि सरासर अवैज्ञानिक प्रयास है। उज्जैन वास्तव में काल का आरम्भ बिन्दु न होता तो ऐसे सिद्धान्त के आधार पर बने पञ्चाङ्गों और कुण्डलियों के फलादेश वास्तव में घटित न होते। इस तथ्य के हमारे पास अकाट्य प्रमाण हैं जिनकी जाँच जो कोई चाहे कर सकता है।

उज्जैन, विदिशा और मेरु का महत्त्व-

उज्जैन देश का नहीं, काल का केन्द्र है। देश का केन्द्र भारत के लिए विदिशा और सृष्टि के लिए मेरु है। प्राचीन भारत को उत्तर-दक्षिण और फिर पूर्व-पश्चिम बराबर भागों में विभक्त करें तो केन्द्र में विदिशा मिलेगी। प्राचीन भारत से यहाँ तात्पर्य है सिन्धु से लेकर कामरूप तक के ब्रह्मपुत्र के बीच का प्रदेश। विदिशा का महत्त्व यही है कि मानचित्र पर राशिचक्र को रखकर विदिशा से यदि

कुण्डली बनाई जाय तो वह पूरे राष्ट्र का फल बताती है। मानचित्र पर स्थिर राशिचक्र इस प्रकार रखा जाता है कि मेष का मध्य सदैव पूर्व में रहे। स्थिर राशियों पर भावचलित चलायमान रहता है। स्थिर राशिचक्र के अनुसार ग्रहों के उच्च-नीच, वैर- मैत्री आदि बनते हैं, और भावफल भावचलित द्वारा बनाया जाता है। मेषसंक्रान्ति कालीन कुण्डली से वर्ष भर के राष्ट्रीय आय - व्यय, कृषि, उद्योग-व्यापार, वाणिज्य, युद्ध आदि के साथ-साथ क्षेत्रानुसार साल भर की वर्षा का पूर्वानुमान लगता है। नक्षत्र सञ्चारकालीन कुण्डलियों से वर्षा का ज्ञान होता है। विदिशा के बदले किसी दूसरे स्थान से गणना करने पर फलादेश घटित नहीं होता। राष्ट्रकेन्द्र होने के कारण अर्थात् दिशाओं के मध्य में होने के कारण ही ऋषियों ने विदिशा नाम रखा। विदिशा से बनी कुण्डलियों द्वारा वर्षा की भविष्यवाणियों की जाँच पिछले कई वर्षों से की जा रही है। ये फलादेश सत्य सिद्ध हुए हैं।

विज्ञान की विश्वप्रसिद्ध अमेरिकी संस्था नासा के मुख्यालय की क्लाइमेट नाम की शाखा में इन भविष्यवाणियों की जाँच हुई, जिसकी रिपोर्ट रखी हुई है। बङ्गलूर के 'इण्डियन इंस्टिट्यूट ऑफ सांइस' की अङ्गीभूत संस्था 'सेण्टर फॉर एटमॉसफेरिक एण्ड ऑर्सेनिक सांइस' ने भविष्यवाणियों पर शोध लेख को जाँच के बाद अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हेतु स्वीकृति दी। यह दूसरी बात है कि उस लेख में जानबूझकर ज्योतिष की चर्चा नहीं की गई थी, क्योंकि कई वैज्ञानिक ज्योतिष का नाम सुनते ही बिदक जाते हैं। राष्ट्रीय ज्योतिष की गिनती गोपनीय विद्याओं में होती थी, क्योंकि शत्रु राज्यों से अपने राज्य का भविष्यफल छुपाना आवश्यक समझा जाता था। मुस्लिम और ईसाई वर्चस्व के युगों में राष्ट्र ीय ज्योतिष को राज्याश्रय नहीं मिला। आर्थिक लाभ का अभाव तथा गोपनीयता, इन्हीं दो कारणों से राष्ट्रीय ज्योतिष की व्यावहारिक प्रक्रियाओं को कालान्तर में लोग भूल गये।

मेरु का रहस्य नहीं खोज सके विदेशी-

विदिशा में मेष संक्रान्ति की कुण्डली द्वारा भारत के सभी द्वादश भावों में स्थित प्रदेशों का वर्षा सम्बन्धी पूर्वानुमान लग जाता है, किन्तु पूरे राष्ट्र की वार्षिक वर्षा का पता नहीं चलता। इसके लिए मेरु से मेष संक्रान्ति कालीन कुण्डली बनानी पड़ती है। सूर्यसिद्धान्त में वर्णित है कि मेरु जम्बूनद के प्रदेश में भूमध्य में है, जिसका अर्थ बर्जेस ने भूकेन्द्र लगा लिया। भूकेन्द्र में पर्वत या नदी की कल्पना अस्वाभाविक है, किन्तु सूर्यसिद्धान्त को काल्पनिक सिद्ध करना बर्जेस का उद्देश्य ही था। वह एक ईसाई पादरी था। किसी अच्छे एटलस में भूमध्यरेखा पर स्थित माउण्ट केन्या को खोजें। उसी पर्वत की तलहटी में मेरु शहर मिल जायगा। अतः सूर्यसिद्धान्त में भूगोलमध्य का अर्थ भूमध्यरेखा है। मेरु का दूसरा प्रमाण यह है कि मेरु के अक्षांश-रेखांश से सूर्यसिद्धान्त की मूल पद्धति द्वारा जो मेषप्रवेशकालीन कुण्डली बनती है वह पूरे संसार का वर्षफल और वर्षा का फल बताती है। मेरु से बनी कुण्डलियों की जाँच पिछले 135 वर्षों के सरकारी आँकड़ों द्वारा सम्पन्न हो चुकी है। एक भी अपवाद नहीं मिला। जो कोई चाहे जाँच कर सकता है। मेरु में वर्षकुण्डली बनाकर पूरे कल्प का भूत और भविष्य जान सकते हैं। शर्त यही है कि गणित सूर्यसिद्धान्त की मूल पद्धति से और फलित पराशर के अनुसार हो।

सूर्यसिद्धान्त कलियुग की रचना नहीं है-

मेरु सृष्टि का केन्द्र न होता तो सही फल न देता। मेरु सभी लोकों का सनातन केन्द्र है। कलियुग में लोगों ने मानव जाति के आदि प्रदेश मेरु को भुला दिया। कलियुग के किसी आचार्य ने मेरु की सही स्थिति नहीं बताई। यह सिद्ध करता है सूर्यसिद्धान्त कलियुग की रचना नहीं है। पुराणकारों ने बारम्बार मेरु के सृष्टिकेन्द्र होने की चर्चा की और यहाँ तक लिखा कि ध्रुव भी समस्त तारों के साथ मेरु के चतुर्दिक ही घूमता है। पुराणों के ये अंश भी कलियुग के नहीं हैं। मेरुकेन्द्रिक सृष्टिचक्र का गणित अत्यन्त क्लिष्ट है। जिस प्रकार भौगोलिक उत्तर ध्रुव से अक्षांश और रेखांश बनाये जाते हैं, वैसे ही भौगोलिक विषुवत् रेखा पर स्थित मेरु को उत्तर ध्रुव मानकर अक्षांश बनायें और उन्हें 30-30 अंश की राशियों में बाँटे। इस राशिचक्र पर मेषप्रवेशकालीन भावचलित कुण्डली ही संसार का वर्षफल बताती है। अतः मेरु फलित हेतु उत्तर ध्रुव है, किन्तु आधुनिक टीकाकारों ने वराहमिहिर और भाष्कराचार्य का गलत अर्थ लगाया और कहा कि भौगोलिक उत्तर ध्रुव को मेरु कहते थे। आधुनिक वैज्ञानिक मानते हैं कि केन्या के आसपास ही मानवजाति के प्रथम पूर्वज उत्पन्न हुए थे। पुराणकार भी सृष्टि का आरम्भ मेरु से ही बताते हैं। मेरु से बनी वर्षकुण्डली द्वारा अलग-अलग देशों का वर्षफल जानने के लिए कुछ और भी चक्र हैं।

यामलादि तन्त्र के ग्रन्थों से नरपति ने 84 चक्रों का सङ्कलन किया, जिनमें से पञ्चशलाका, सप्तशलाका, सर्वतोभद्र, सप्तनाड़ी जैसे चक्रों की जाँच मेरु की वर्षकुण्डली में करने पर अच्छा परिणाम निकला। सभी चक्रों की जाँच अभी तक नहीं हो पाई है, क्योंकि कुछ चक्र तो ठीक से वर्णित ही नहीं है। यह प्राचीन वेदविज्ञान राष्ट्र के लिए बड़ा हितकारी सिद्ध होगा।

पृथ्वी की नाभि की खोज-

मेरु सृष्टि की मुख्य नाभि है। अलग- अलग देशों के लिए राष्ट्रीय नाभियाँ हुआ करती सकते हैं। हैं। भारत की नाभि विदिशा है। टॉलेमी ने भूमध्यसागर के पूर्वी भाग में संसार की नाभि मानी, क्योंकि वह भूमध्यसागर को भूमध्य में स्थित मानता था, जो सत्य नहीं है। अन्य देशों की नाभियाँ कहाँ- कहाँ हैं इसपर मैंने कोई कार्य नहीं किया है, किन्तु जर्मनी और ब्रिटेन के कुछ लोग इस खोज में जुटे हैं। उनका मानना है कि प्राचीन महापाषाणीय वेधशालाओं के भौगोलिक विवरण द्वारा ऐसी नाभियाँ ढूँढ़ी जा सकती हैं। मिस्र और ग्रीस में ऐसी नाभियाँ मिली हैं जहाँ कालसर्प से लिपटे विशालकाय लिङ्ग मिले हैं। इन लिङ्गों को ही नाभियाँ कहा जाता है। इन्हें उज्जैन महाकाल के क्षेत्रीय प्रतिरूप कहना चाहिए। भारत से सम्बन्ध टूट जाने के बहुत बाद ये नाभियाँ बनी होंगी, अतः यह भी सम्भव है कि ये वास्तविक राष्ट्रफल बताने में समर्थ न हों। इस विषय पर शोध की आवश्यकता है।

सूर्यसिद्धान्तीय कुण्डली के सॉफ्टवेयर का निःशुल्क वितरण किया जा रहा है। जन्मकाल सही हो तो फलादेश कभी गलत नहीं बनेगा। भारतीय ज्योतिष और उसके साथ-साथ भारतीय धर्म, दर्शन एवं संस्कृति की वैज्ञानिकता का यह सॉफ्टवेयर प्रत्यक्ष प्रमाण है। जो सूर्यसिद्धान्तीय पञ्चाङ्ग बनाना चाहें या राष्ट्रीय ज्योतिष, वर्षा के पूर्वानुमान आदि में रुचि रखते हैं वे भी सॉफ्टवेयर की निःशुल्क सेवा प्राप्त कर सकते हैं।

भारतीय ज्योतिष वेद का अङ्ग है, भौतिकविज्ञान का नहीं। ज्योतिष की सच्चाई की कसौटी फलादेश की सत्यता है, न कि आकाश के भौतिक पिण्ड। अतः सूर्यसिद्धान्तीय गणित और पाराशरी फलित द्वारा फलादेश की जाँच करें, सदा सही फल मिलेगा। खगोलविज्ञान के भौतिक पिण्डों से ज्योतिष के ग्रहों की तुलना में समय नष्ट न करें। क्योंकि हाथ कुछ नहीं लगेगा। माध्यन्दिन शाखा के यजुर्वेद का अन्तिम मन्त्र का अर्थ है : इस हिरण्यमय ढक्कन अर्थात् दृक्पक्षीय माया ने सत्य अर्थात् वेद-वेदाङ्ग का मुख ढाँप रखा है। अतः आप सब से निवेदन है कि इस दृवपक्षीय ढक्कन को हटाकर सूर्यसिद्धान्त के सत्य का लाभ उठायें-

हिरण्यमयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितंमुखम्। योसावादित्येपुरुषोश्सोसावहम्।। ॐ खं ब्रह्म ।।

(अखिल भारतीय विद्वत् परिषद् की 'त्रिस्कन्ध ज्योतिषम्' के जुलाई, 2010, अंक से साभार)

✻ गृहप्रवेश से भी महत्त्वपूर्ण है गृहारम्भ मुहूर्त्त ✻

गृहारम्भ यानि नींव का मुहूर्त्त भूमि का गर्भ धारण कहा गया है। जिस प्रकार जितना उत्तम गर्भ होता है उतनी ही उत्तम सन्तान होती है, उसी प्रकार भूमि का नींव रूपी गर्भाधान जितना उत्तम होता है वह गृह भी उतना ही उत्तम व शुभदायक बनता है। गर्भकाल में जिस तरह सुभद्रा ने अभिमन्यु को संस्कृत किया था, उसी तरह भूमि को नींव मुहूर्त्त से गृहप्रवेश के मध्य गर्भकाल में संस्कृत करना चाहिए। गृहारम्भ/नींव मुहूर्त्त रूपी भूमि के गर्भाधान के लिए वास्तुशास्त्र में बताए गए विधान को जितना समग्रता से किया जाए वह गृह उतना महान् बनता है। विश्वकर्मावास्तुशास्त्र 6.16-17 में कहा गया है,

स्त्रीगर्भेण यथा जीवो वर्धते भुवि नित्यशः । तथा भूगर्भमाहात्म्यात् जीवराशिस्तु वर्धते ।।
तत्रत्यानां सुखं दिव्यं यावद्गर्भो न नश्यति । तस्माद्गर्भं शिल्पिवरैश्शाश्वतं कारयेद्भुवि ।।

1. नींव मुहूर्त्त श्रेष्ठतम शुभ मुहूर्त्त में, उचित दिशा में करना चाहिए। मुहूर्त्त जितना ही शुद्ध होगा भवन निर्माण उतनी ही निर्विघ्नता से होगा व उस भवन में सदा शुभता भी बनी रहेगी, क्योंकि गृहारम्भ की कुण्डली ही उस भवन की कुण्डली वास्तुशास्त्र में बताई गई है। हमने देखा है क्षयतिथि में जिसने मुहूर्त्त किया उनके निर्माण कार्य का भी क्षय हो गया।

2. शास्त्र में बताए गए श्रेष्ठ, शुभ, मंगल पदार्थों की नींव में प्रयत्नपूर्वक स्थापना करनी चाहिए। नींव मुहूर्त्त से पहले इन्हें परिश्रम करके इकट्ठा करना चाहिए। नींव में डाली गई शुभ वस्तुएं तब तक रहती हैं जब तक वह भवन रहता है, इन्हें कोई चोरी नहीं कर सकता, पर भवन की कोख में रहकर यह उस भूमि को ऊर्जावान कर देती हैं। नींव का गर्त रूपी यह गर्भ अटल सम्पदा होती है, व किसी पदार्थ के कम रहने पर या गर्भन्यास न होने पर यह उस निर्मित भवन व उसके निवासियों के लिए विपत्तियों का कारण बनता है। मयमतम् 12.2-3 में मयाचार्य ने कहा है, ***सर्वद्रव्यैस्तुसम्पन्नं गर्भं तत्सम्पदां पदम् ।***
द्रव्यहीनमसम्पन्नं गर्भं सर्वविपत्करम् ।। तस्मात्सर्वप्रयत्नेन गर्भं सम्यग् विनिक्षिपेत् ।

यहाँ मयाचार्य द्वारा बताए गए नींव में डालने योग्य शुभपदार्थों की सूचि दी जा रही है:-

धान्य- गेंहू, चावल, मूंग, उड़द, जौ, तिल, सावाँ, तिन्नी, कुलथी, लाल मसूर, चना, कुल्थी, **रत्न**- पंच, सप्त या नवरत्न मोती, माणिक्य, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा/जर्कन, गोमेद, नीलम, लहसुनिया, **धातु**- पंचधातु आदि, सोना, चाँदी, तांबा, लोहा, राँगा, काँसा, सीसा, पारा, अभ्रक, **मिट्टियाँ**- राजद्वार की, हाथीशाला की, हाथीदाँत के अग्रभाग से खोदी हुई, साँड़ की खोदी हुई, गौशाला की, पर्वतशिखर की, वराह की खोदी हुई, अपने कुलदेवी-देवता के स्थान की, अपने इष्ट तीर्थस्थानों की, नदीतट-नदियों की, घोड़ाशाला की, चौराहे की, कमलसमूह के नीचे की/जड़, बिमौट दीमक की, अपने नगर के प्रमुख मंदिरों, तीर्थस्थानों की, खेत की, खस, **शुभ जल**- तीर्थों का जल, गंगाजल, नदियों के जल, सुगंधित जल, सर्वऔषधि जल, पंचामृत, शस्यपुष्पमिश्रित जल, स्वर्ण-रत्न मिश्रित, गाय के सींग से छुआ हुआ जल, पंचगव्य, गौमूत्र, अपराजिता, रक्तचन्दन, अगरू, श्रीखण्ड, सर्वौषधि, समुद्री शैवाल, लाल-कमल, नीलकमल, दूर्वा, इलायची, लौंग, शुभ वृक्षों की गोंद, पत्र, लकड़ी आदि, 12 अंगुल खैर की लकड़ी, बरगद, गूलर, पीपल, आम, जामुन, नवग्रह समिधा, सोने/चांदी का सर्प, चाँदी का कछुआ, शंख, चाँदी का सुअर, चाँदी का सिक्का, तांबे का लोटा। अधिक शुभता के लिए सामर्थ्यानुसार और भी वस्तुएं बताई गई हैं- चाँदी का सांड, चाँदी का घोड़ा, लोहे का सिंह, चाँदी का हाथी, स्वस्तिक, लोहे का हल, तांबे का केकड़ा, तलवार, धनुष, दण्ड, चक्र आदि।

गृहारम्भ नींव मूहूर्त्त से पूर्व भूमि की शुद्धि व पवित्रता भी आवश्यक है। भूमि शुद्धि के लिए मनुस्मृति 5.124 में कहा है कि, भूमि पर झाड़ू लगाना, गोमूत्र, गङ्गाजल आदि का अच्छे से छिड़काव कर गोबर से लीपना-पोतना, सींचना, और गायों को लाकर बान्धना, इन पाँच प्रकारों से भूमि की शुद्धि होती है।

सम्मार्जनोपाञ्जनेन सेकेनोल्लेखनेन च। गवां च परिवासेन भूमिः शुद्धयति पञ्चभिः।।

भूमि शुद्धि के लिए गायों का महत्त्व सर्वोपरि है। **मयमतम् में मयाचार्य कहते हैं**, ''वास्तुनिर्माण हेतु ग्रहण की जा रही भूमि में खुदाई कर अनेक प्रकार के गोबरमिश्रित बीजों को उसमें बो देना चाहिये। उन बीजों के उग जाने और उनमें पके हुए फल देखकर सांड़ एवं बछड़ों के साथ गायों को वहाँ बसा देना चाहिए, क्योंकि गायों के वहाँ चलने एवं सूँघने से वह भूमि पवित्र हो जाती है। प्रसन्न वृषों के नाद से एवं बछड़ों के मुख से गिरे हुये फेन से भूमि परिष्कृत हो जाती है एवं उसके सभी दोष धुल जाते हैं। गोमूत्र से सींची गई तथा गोबर से लीपी हुई, गायों के शरीर रगड़ने से गिरे हुये रोमों से युक्त, तथा गायों के पैरों द्वारा किये गये खेल से भूमि शुद्ध हो जाती है। गाय के गन्ध से युक्त, इसके पश्चात् पुण्यजल से पुनः पवित्र की गई भूमि पर निर्माणकार्य के लिये शुभ तिथि नक्षत्र से युक्त मूहूर्त्त का विचार करना चाहिए।''

कृष्ट्वा गोमयमिश्राणि सर्वबीजानि वापयेत् । दृष्ट्वा तानि विरूढानि फलपक्व गतानि च ।।
सवृषाश्च सवत्साश्च ततो गास्तत्र वासयेत् । यतो गोभिः परिक्रान्तमुपघ्राणैश्च पूजितम् ।।
संहृष्टवृषनादैश्च निर्धौतकलुषीकृतम् । वत्सवक्त्रच्युतैः फेनैः संस्कृतं प्रस्नवैरपि ।।
स्नातं गोमूत्रसेकैश्च गोपुरीषैः सलेपनम्। च्युतरोमन्थनोहारैर्गोष्पदैः कृतकौतुक ।।
गोगन्धेन समाविष्टं पुण्यतोयैः शुभं पुनः। पुण्यतिथोपेते नक्षत्रविषये शुभे।। *- मयमतम् 4.4-8*

गृहारम्भ कालिक कुंडली में विभिन्न राशियों, भावों, नक्षत्रों में स्थित ग्रहों के आधार पर भवन का विस्तृत फल वास्तुशास्त्र में बताया गया है। वर-वधु के विवाहार्थ मेलापक की तरह गृहारम्भ नक्षत्र के साथ गृहस्वामी के जन्मनक्षत्र का मेलापक देखने का भी निर्देश है। अतः गृहारम्भ कालिक कुंडली, नवांश आदि की शुद्धि करवाकर श्रेष्ठ मूहूर्त्त में गृहारम्भ (नींव मुहूर्त्त) करना चाहिए। भगवान् विश्वकर्मा कहते हैं-

न दोषो यत्र वेधादिर्नवं यत्राखिलं गृहम् । बहु द्वाराणि नो यत्र यत्र स्याद् धान्यसंचयम् ।।
पूज्यन्ते देवता यत्र यत्रान्वेक्षणमादरात् । रक्ता च जनिका यत्र यत्र स्यान्मार्जनादिकम् ।।
यत्र ज्येष्ठ-कनिष्ठादिव्यवस्था सुप्रतिष्ठिता । मा स्वीयपरजो भावो यत्र स्यात्समतीर्थता ।।
दीप्यते कोषको यत्र पालनं यत्र रोगिणाम् । श्रान्तसंवाहना यत्र तत्र स्यात्कमला गृहे ।।

जिस घर में यह 13 गुण होते हैं, उस गृह में चिरकाल तक लक्ष्मी निवास करती है :-

1. नवनिर्मित भवन की वास्तु का परिपूर्ण होना।
2. भवन का वास्तुशास्त्रोक्त वेधादि दोष से रहित होना।
3. घर में बहुत अधिक द्वारों का न होना।
4. देवताओं, गुरु में श्रद्धा, और उनका पूजन।
5. आपस में अपने पराए के भेद-भाव से रहित व्यवहार।
6. गृहस्वामी का दीन-हीनता से मुक्त होकर हर्षित रहना।
7. गाय घोड़ों यानि पशुओं को भी विश्राम देना।
8. अतिथियों का आदर सत्कार।
9. घर की उत्तम स्वच्छता।
10. बालकों की प्रसन्नता।
11. छोटे-बड़ों का दूसरे के प्रति कर्त्तव्य।
12. घर में कोई रोगी हो तो उसकी सेवा।
13. जन्म देने वाली माताओं की सेवा।

श्रीमद्भागवत महापुराण 4.22.11 में कहा गया है,

व्यालालयद्रुमा वै तेऽप्यरिक्ताखिलसम्पदः। यद्गृहास्तीर्थपादीय-पादतीर्थविवर्जिताः।।

जिन घरों में तीर्थपाद महाभागवतों के चरणामृत का छिड़काव नहीं हुआ हैं, वे घर सम्पूर्ण समृद्धियों से परिपूर्ण होने पर भी सर्पों से भरे हुए वृक्षों के समान मृत्यु का भय प्रदान करने वाले होते हैं।

गृहवास्तु जितना शुभ होगा, भवनवासियों की बुद्धि और जीवन भी उतना ही शुभ होगा, व जिन्हें देवताओं, गुरुजनों में श्रद्धा होती है, उनका वास्तु भी शुभ हो ही जाता है, क्योंकि वह सभी सुखों का आधार है।

- **मुदित मित्तल**, ज्योतिष एवं वास्तु

✲ संवत् 2081 में भारत में कोई ग्रहण नहीं ✲

(9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक)

संवत् 2081, सन 2024-25 ई में विश्व में कुल चार ग्रहण लगेंगे। जिसमें दो सूर्यग्रहण तथा दो चन्द्रग्रहण लगेगा। **भारत में कोई ग्रहण दृश्य नहीं होगा। चारों ग्रहण भारत में अदृश्य होने से धर्मशास्त्रीय महत्त्व के नहीं होंगे।** जो ग्रहण अपने भूखण्ड पर दिखाई नहीं देता उसका धार्मिक महत्त्व सूतक आदि नहीं होता। दिन का चन्द्रग्रहण व रात्रि का सूर्यग्रहण विफल होता है। **सूर्यग्रहो यदा रात्रै दिवा चन्द्रग्रहो यदि। तत्र स्नानं न कुर्वीत दद्याद् दानं न च क्वचित्।।**

1. खण्ड चन्द्रग्रहण - दिनांक 17-18 सितम्बर 2024 ई0 का खण्ड चन्द्रग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा। यह यूरोप के अधिकाधिक भाग, मध्य एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अटलान्टिक के समुद्री भाग, हिन्द महासागर, आर्कटिक तथा अन्टार्कटिका में दिखाई देगा। यह खण्ड चन्द्रग्रहण चन्द्रास्त के समय मध्य एशिया से यूनिर्वसल समयानुसार ग्रहण का प्रारम्भ 02 घण्टा 12 मिनट पर होगा तथा कनाडा के सूदूर पश्चिम के भाग में चन्द्रोदय के समय इसका मोक्ष 03 घण्टा 15 मिनट पर होगा। ग्रहण का मध्य 02 घण्टा 45 मिनट पर होगा। ग्रहण का ग्रासमान 0.0848 होगा।

2. कंकणाकृति सूर्यग्रहण - यह दिनांक 02 अक्टूबर 2024 ई0 को होगा। जो भारत में दृश्य नहीं होगा। यह ग्रहण अमेरिका के दक्षिणी उत्तरी भाग में, पैसेफिक भाग, अटलान्टिक भूभाग आर्कटिक भूभाग एवं अन्टार्कटिका में दृश्य होगा। यूनिवर्सल समयानुसार अमेरिका के पश्चिमी क्षेत्र में खण्ड सूर्यग्रहण के रूप में होगा । इसका प्रारम्भ 15 घण्टा 42 मिनट एवं मोक्ष 21 घण्टा 47 मिनट पर होगा। यह ग्रहण **कंक**णाकृति सूर्यग्रहण चिली एवं अर्जेन्टीना के भूभाग में दृश्य होगा। इसका प्रारम्भ 16 घण्टा 50 मिन्ट पर, मध्य 18 घण्टा 44 मिनट पर एवं मोक्ष 20 घण्टा 39 मिनट पर होगा। ग्रहण का ग्रासमान 0.9326 होगा।

3. खग्रास चन्द्रग्रहण - यह ग्रहण दिनांक 13/14 मार्च 2025 ई0 को होगा। जो भारत में दृश्य नहीं होगा। यह खग्रास चन्द्रग्रहण यूरोप, मध्य एशिया के भूभाग, पश्चिमी अफ्रीका, उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिका, पैसेफिक भूभाग, अटलान्टिक, आर्कटिक, अन्टार्कटिका के भूभाग दिखाई देगा। यूनिवर्सल समयानुसार खण्ड चन्द्रग्रहण का प्रारम्भ 05 घण्टा 79 मिनट, एवं मोक्ष 08 घण्टा 25 मिनट पर होगा। अमेरिका, मैक्सिको, आजील, पनामा एवं कोलम्बिया आदि के भूभाग में खग्रास चन्द्रग्रहण के रूप में दिखाई देगा। यहाँ पर यूनिवर्सल समयानुसार ग्रहण का प्रारम्भ 05 घण्टा 09 मिनट पर, मध्य 06 घण्टा 59 मि पर, एवं मोक्ष 07 घण्टा 31 मिनट पर होगा। ग्रहण का ग्रासमान 784 पर होगा ।

4. खण्ड ग्रहण- यह दिनांक 29 मार्च 2025 ई0 को होगा। जो भारत में दृश्य होगा। यह खण्ड सूर्यग्रहण यूरोप, पश्चिमोत्तर अफ्रीका, अटलान्टिको आर्कटिक आदि क्षेत्रों में दिखाई देगा। यूनिवर्सल समयानुसार ग्रहण का प्रारम्भ 08 घण्टा 50 मिनट पर, मध्य 10 घण्टा 47 मिनट पर एवं मोक्ष 12 घण्टा 43 मिनट पर होगा। इसका ग्रासमान 0.9361 पर होगा।

जिस स्थान पर ग्रहण दृश्य होगा उसी स्थान पर ग्रहण का सूतक मान्य होगा। अन्य स्थानों पर लगे ग्रहण का सूतक तथा धर्मशास्त्रीय नियमादि का विचार भारत में मान्य नहीं होगा।

✲ महाकुम्भ प्रयागराज संवत् 2081 ✲

(13 जनवरी 2025 से 26 फरवरी 2025 तक)

देवताओं के 12 दिन मानव के बारह वर्ष होते हैं अर्थात् देवताओं के एक दिन मानव के एव वर्ष तुल्य होता है। इस प्रकार देवताओं 12 दिन तुल्य मनुष्यों के 12 वर्ष में 12 कुम्भपर्व होते हैं। शास्त्रानुसार क्षीर सागर मन्थन में प्राप्त अमृत के बाद अमृतपान के लिए देवताओं एवं राक्षसों में भयंकर युद्ध छिड़ गया। इस क्रम में सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति ने अमृतघट की रक्षा करते हुए वर्षों तक 11 स्थानों पर कामाख्या, पुरी आदि स्थानों पर विश्राम करते हुए सरक्षित किया। जिन-जिन स्थानों पर सूर्य चन्द्रमा एवं गुरू की विश्राम करते हुए अमृतघट रक्षा की उन-उन स्थानों पर कुम्भपर्व होता है।

सूर्य, चन्द्र एवं गुरु के यथोक्त योगवशात सिंह राशि में नासिक (महाराष्ट्र) में, उक्त सूर्य, चन्द्र एवं गुरु के योग से मिथुन राशि में जगन्नाथ पुरी (ओडिसा) में, मीन राशि में तीनों के संयोग से कामाख्या (आसाम), धनु राशि में तीनों के संयोग से गंगासार (पश्चिम बंगाल) में, कुम्भ राशि में तीनों के संयोग से कुम्भकोण (तमिलनाडु) में, तुला राशि में इन तीनों के संयोग से शाल्मलीवन अर्थातब सिमरिया धाम (बिहार) में, इन तीनों के संयोग से वृश्चिक राशि में होने से कुरूक्षेत्र (हरियाणा) में, कर्क राशि में इन तीनों के संयोग से द्वारका (गुजरात) में, कन्या राशि में तीनों के संयोग से रामेश्वरम (तमिलनाडु) में, मेषार्क कुम्भ राशिगत गुरू में हरिद्वार (उत्तराखण्ड) में, मकरार्क मेष या वृष राशिगत गुरू होने पर प्रयाग (उत्तर प्रदेश) एवं मेषार्क सिंहस्थ गुरू में उज्जैन (मध्य प्रदेश) में कुम्भ पर्व का योग होता है।

अमृत कुम्भ ले जाते समय कुम्भ से अमृत के बुन्द हरिद्वार, नासिक, प्रयाग एवं उज्जैन इन चारों स्थानों पर गिर पड़ा था। इसलिए उपर्युक्त कुम्भ स्थानों में से चार स्थानों के कुम्भ पर्व की विशेष महिमा शास्त्रों में वर्णित है। इन सभी तीर्थ स्थानों में अमृत घट के संयोग से जल अमृतमय हो जाता है। सभी देवता कुम्भ के समय इन स्थानों पर निवास करते हैं। इसलिए उपर्युक्त वर्णित कुम्भ स्थानों पर स्नान, दान, दर्शन, मार्जन, पूजन एवं विविध प्रकार के धर्मानुष्ठान से अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है। यथा-

देवानां द्वादशाहोर्भिमात्यैर्द्वादशवत्सरैः । कुम्भपर्वाणि जायन्ते तथा द्वादश संख्यया ।।
देवाश्चागत्य मज्जन्ति तत्र मासं वसन्ति च। तस्मिन् स्नानेन दानेन पुण्याक्षय्यामाप्नुयात् ।।

प्रयाग में कुम्भ महापर्व सूर्य चन्द्रमा के मकर राशि में गुरू के मेष या वृष राशि के संयोग से माघमास अमावस्या का होता है। संवत् 2081, दिनांक 29 जनवरी 2025 ई. बुधवार को प्रयाग में महाकुम्भ पर्व का पुण्य संयोग बनेगा। यथा- **वृषराशिगते जीवे मकरे चन्द्रभास्करौ। अमावस्यां तदा योगः कुम्भाख्य तीर्थनायकौ।। मकरे च दिवानाथे वृषराशिगते गुरौ। प्रयागे कुम्भयोगो वै माघमासे विधुक्षये।।**

महाकुम्भ पर्व के स्नान- महाकुम्भ में सात स्नान होंगे। जिसमें तीन प्रमुख स्नान (शाहीस्नान) होंगे।

13 जनवरी 2025	सोमवार	पौष पूर्णिमा स्नान	
14 जनवरी 2025	मंगलवार	मकर संक्रान्ति	(मुख्य शाही स्नान)
29 जनवरी 2025	बुधवार	माघ कृष्ण मौनी अमावस्या	(मुख्य शाही स्नान)
03 फरवरी 2025	सोमवार	माघ शुक्ल 5, वसन्त पञ्चमी	(मुख्य शाही स्नान)
04 फरवरी 2025	मंगलवार	अचल सप्तमी स्नान	
12 फरवरी 2025	बुधवार	माघी पूर्णिमा स्नान	
26 फरवरी 2025	बुधवार	श्री महाशिवरात्रि स्नान	

✻ अवकहडाचक्रम् -- शतपदचक्रम् ✻

नक्षत्र अक्षर	चू.चे. चो.ला.	ली.लू. ले.लो.	अ.ई. उ.ए.	ओ.वा. वी.वू.	वे.वो. का.की.	कू.घ. ङ.छ.	के.को. हा.ही.	हू.हे. हो.डा.	डी.डू. डे.डो.
नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
राशि	मेष	मेष	मेष1, वृष3	वृष	वृष2, मिथु2	मिथुन	मिथु3, कर्क1	कर्क	कर्क
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रि1 वैश्य3	वैश्य	वैश्य2 शूद्र2	शूद्र	शूद्र3 विप्र1	विप्र	विप्र
वश्य	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतु2 मान2	मानव	मान3 जल1	जलचर	जलचर
योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जार	मेष	मार्जार
यो.वै.	महिष	सिंह	वानर	नकुल	नकुल	मृग	मूषक	वानर	मूषक
राशीश	भौम	भौम	भौम1,शुक्र3	शुक्र	शुक्र2,बुध2	बुध	बुध3,चन्द्र1	चन्द्र	चन्द्र
गण	देव	मनुष्य	राक्षस	मनुष्य	देव	मनुष्य	देव	देव	राक्षस
नाडी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

नक्षत्र अक्षर	मा.मी. मू.मे.	मो.टा. टी.टू.	टे.टो. पा.पी.	पू.ष. ण.ठ.	पे.पो. रा.री.	रू.रे. रा.ता.	ती. तू. ते.तो.	ना.नी. नू.ने.	नो.या. यी.यू.
नक्षत्र	मघा	पू.फा.	उ.फा	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनु.	ज्येष्ठा
राशि	सिंह	सिंह	सिंह1, कन्या3	कन्या	कन्या2, तुला2	तुला	तुला3, वृश्चि1	वृश्चिक	वृश्चिक
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रि1 वैश्य3	वैश्य	वैश्य2 शूद्र2	शूद्र	शूद्र3 विप्र1	विप्र	विप्र
वश्य	वनचर	वनचर	वन1 मान3	मानव	मानव	मानव	मान3 कीट1	कीट	कीट
योनि	मूषक	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	महिष	व्याघ्र	मृग	मृग
यो.वै.	मार्जार	मार्जार	व्याघ्र	अश्व	गौ	अश्व	गौ	श्वान	श्वान
राशीश	सूर्य	सूर्य	सूर्य1,बुध3	बुध	बुध2,शुक्र2	शुक्र	शुक्र3,भौम1	भौम	भौम
गण	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	देव	राक्षस	देव	राक्षस
नाडी	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि

नक्षत्र अक्षर	ये.यो. भा.भी.	भू.ध, फ.ढ.	भे,भो. जा.जी.	खी.खू. खे.खो.	गा.गी. गू.गे.	गो.सा. सी.सू.	से.सो. दा.दी	दू.थ. झ.ञ	दे.दो. चा.ची.
नक्षत्र	मूल	पू.षा	उ.षा	श्रवण	धनिष्ठा	शत	पू.भा	उ.भा	रेवती
राशि	धनु	धनु	धनु1, मक3	मकर	मक.2, कुंभ2	कुम्भ	कुम्भ3, मीन1	मीन	मीन
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रि1 वैश्य3	वैश्य	वैश्य2 शूद्र2	शूद्र	शूद्र3 विप्र1	विप्र	विप्र
वश्य	मानव	मान1 चतु3	चतुष्प	चतु1जल3	जल2 मान2	मानव	मान3 जल1	जलचर	जलचर
योनि	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गौ	गज
यो.वै.	मृग	मेष	सर्प	मेष	गज	महिष	गज	व्याघ्र	सिंह
राशीश	गुरु	गुरु	गुरु1,शनि3	शनि	शनि	शनि	शनि3,गुरु1	गुरु	गुरु
गण	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव
नाडी	आदि	मध्य	अन्त्य		मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

✻ नवग्रह स्तोत्रम् ✻

जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महद्द्युतिम् ।
तमोऽरिंसर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम् ।
नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुटभूषणम् ।।
धरणीगर्भ संभूतं विद्युत्कांति समप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणाम्यहम् ।।
प्रियंगुकलिकाश्यामं रुपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचनसन्निभम् ।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ।।
हिमकुंद मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ।।
नीलांजन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्ड संभूतं तं नमामि शनैश्चरम् ।।
अर्धकायं महावीर्यं चंद्रादित्य विमर्दनम् ।
सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रह मस्तकम् ।
रौद्रंरौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ।।
इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत्सुसमाहितः ।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति ।।
नरनारीनृपाणां च भवेद् दुःस्वप्ननाशनम् ।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ।।

✻ नवग्रहों के बीजमंत्र ✻

ग्रह	बीज मन्त्र	जपसंख्या
सूर्य -	ॐ ह्रीं ह्रौं सूर्याय नमः।	7500
चन्द्र -	ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।	19000
मंगल-	ॐ हूँ श्रीं भौमाय नमः।	10500
बुध -	ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः।	21000
गुरु -	ॐ ह्रीं क्लीं हूँ बृहस्पतये नमः	24000
शुक्र -	ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।	26000
शनि -	ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।	15000
राहु -	ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः।	15000
केतु -	ॐ ह्रीं ऐं केतवे नमः।	15000

✻ नवग्रहपीडाहर स्तोत्रम् ✻

ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणकारकः ।
विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु मे रविः ।।
रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः ।
विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु मे विधुः ।।
भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत् सदा ।
वृष्टिकृद् वृष्टिहर्ता च पीडां हरतु मे कुजः ।।
उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः ।
सूर्यप्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु मे बुधः।।
देवमन्त्री विशालाक्षः सदा लोकहिते रतः ।
अनेकशिष्यसम्पूर्णः पीडां हरतु मे गुरुः।।
दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः ।
प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीडां हरतु मे भृगुः।।
सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः ।
मन्दचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः।।
महाशिरा महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः ।
अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखी ।।
अनेकरूपवर्णैश्च शतशोऽथ सहस्रशः ।
उत्पातरूपो जगतां पीडां हरतु मे तमः ।।

दिन का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात
काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत
उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात्रि का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात
चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत
काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग
उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ

✻ नवग्रहों के वैदिक मन्त्र ✻

✻ सूर्य- **जपसंख्या** - 7000

विनियोगः- अस्य श्रीआकृष्णेनमंत्रस्य हिरण्यस्तूपऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः सवितादेवता श्रीसूर्यप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च ।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ।।

✻ चन्द्र- **जपसंख्या** - 11000

विनियोगः- अस्य श्रीइमन्देवामंत्रस्य गौतमऋषिः द्विपदाविराट् छन्दः सोमोदेवता, श्रीचन्द्रप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

इमं देवा ऽअसपत्नᳬ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते
जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै व्विश
एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाᳬ राजा ।।

✻ भौम- **जपसंख्या** - 10000

विनियोगः- अस्य श्रीअग्निमूर्धामंत्रस्य विरुपाक्षअङ्गिरस ऋषिः अग्निर्देवता गायत्री छन्दः श्रीभौमप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअय्यम् ।
अपाᳬ रेताᳬ सिजिन्वति ।।

✻ बुध- **जपसंख्या** - 9000

विनियोगः- अस्य श्रीउद्बुद्ध्यस्वाग्नेमंत्रस्य परमेष्ठी ऋषिः बुधोदेवता त्रिष्टुप् छन्दः श्रीबुधप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सᳬसृजेथामयञ्च।
अस्मिन्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च च सीदत।।

✻ गुरु- **जपसंख्या** - 19000

विनियोगः - अस्य श्रीबृहस्पतेमंत्रस्य गृत्समदऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः ब्रह्मादेवता श्रीबृहस्पतिप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐ बृहस्पतेऽअति यदर्योऽअर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।

✻ शुक्र- **जपसंख्या** - 16000

विनियोगः- अस्य श्रीअन्नात्परिस्रुतो मन्त्रस्य अश्विसरस्वतीन्द्रा देवताः प्रजापतिऋषिः जगतीछन्दः श्रीशुक्रप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियंविपानᳬ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतंमधु।।

✻ श्री सर्वेश्वर अष्टकम् ✻

(श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज विरचित)

सनन्दनाद्यैः परिसेविताय, युग्मस्वरूपेण विराजिताय ।
चक्राङ्किताया‌ऽतिमनोहराय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
श्रीनारदान्तर्हृदि संस्थिताय, मुनीन्द्रनिम्बार्कसुपूजिताय ।
सौन्दर्यलावण्यगुणार्णवाय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
केशेन्द्रदेवैरभिवन्दिताय, गोपाङ्गनागोकुलजीवनाय ।
निजाश्रिताऽतङ्कनिवर्तकाय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
राधाहृदागारनिमज्जिताय, निकुञ्जलीलारतिवर्द्धकाय ।
कालिन्दिकूले रसलासिताय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
वृन्दावनश्रीक्षणहर्षिताय, कदम्बकुञ्जान्तशोभिताय ।
सखीसहस्रैरनुरञ्जिताय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
नन्दात्मजायाऽखिलमोहनाय, सर्वैः समाराध्यशुचिस्मिताय।
कृष्णाय पूर्णाय सुकोमलाय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
वंशीरवाऽकर्षितश्रीवनाय, हैवङ्गीवीनाऽशननिर्गताय ।
श्रीरासलीलारससंप्लुताय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
गोचारणाऽनारतनैपुणाय, वेदान्तवेद्याय सुलोचनाय ।
संसारदावानलमोचनाय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।
सर्वेश्वराष्टकं स्तोत्रं भक्ताभीष्टप्रदायकम् ।
राधासर्वेश्वराख्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

✻ श्री जयादित्य अष्टकम् ✻

(श्रीस्कन्द महापुराणे)

न त्वं कृतः केवलसंश्रुतश्च यजुष्येवं व्याहरत्यादिदेव! ।
चतुर्विधा भारती दूरदूरं धृष्टः स्तौमि स्वार्थकामः क्षमैतत् ।।
मार्तण्डसूर्यांशुरविस्तथेन्द्रो भानुर्भगश्चाऽर्यमा स्वर्णरेताः ।
दिवाकरो मित्रविष्णुश्च देव! ख्यातस्त्वं वै द्वादशात्मा नमस्ते ।।
लोकत्रयं वै तव गर्भगेहं जलाधारः प्रोच्यसे खं समग्रम् ।
नक्षत्रमाला कुसुमाभिमाला तस्मै नमो व्योमलिङ्गाय तुभ्यम् ।।
त्वं देवदेवस्त्वमनाथनाथस्त्वं प्राप्यपालः कृपणे कृपालुः ।
त्वं नेत्रनेत्रं जनबुद्धिबुद्धिराकाशकाशो जय जीवजीवः ।।
दारिद्र्यदारिद्र्य निधे निधीनाममङ्गलामङ्गल शर्मशर्म ।
रोगप्ररोगः प्रथितः पृथिव्यां चिरं जयाऽऽदित्य! जयाऽऽप्रमेय! ।।
व्याधिग्रस्तं कुष्ठरोगाभिभूतं भग्नप्राणं शीर्णदिहं विसंज्ञम् ।
मातापिताबान्धवाः सन्त्यजन्ति सर्वैस्त्यक्तं पासि कोऽस्तित्वदन्यः।।
त्वं मे पिता त्वं जननी त्वमेव त्वं मे गुरुर्बान्धवाश्च त्वमेव ।
त्वं मे धर्मस्त्वञ्च मे मोक्षमार्गो दासस्तुभ्यं त्यज वा रक्ष देव! ।।
पापोऽस्मि मूढोऽस्मि महोग्रकर्मा रौद्रोऽस्मि नाऽऽचारनिधानमस्मि।
तथापि तुभ्यं प्रणिपत्य पादयोर्जयं भक्तानामर्पयं श्रीजयार्क! ।।
।। इति श्रीस्कन्दमहापुराणे श्रीजयादित्य अष्टकम् ।।

✻ शनि- **जपसंख्या** - 23000

विनियोगः- अस्य श्रीशन्नोदेवीमंत्रस्य दध्यङ्गअथर्वणऋषिः गायत्रीछन्दः आपो देवताः श्रीशनिप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये।
शं योरभि स्त्रवन्तु नः।।

✻ राहु- **जपसंख्या** - 18000

विनियोगः- अस्य श्रीकयानश्चित्रमंत्रस्य वामदेवऋषिः गायत्रीछन्दः राहुर्देवता श्रीराहुप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐ कया नश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा।
कया शचिष्ठ्या वृता।।

✻ केतु- **जपसंख्या** - 17000

विनियोगः- अस्य श्रीकेतुंकृण्वन्नमन्त्रस्य मधुच्छन्दाऋषिः गायत्री छन्दः केतुर्देवता श्रीकेतुप्रीत्यर्थे सकलरोगकष्टनिवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्याऽअपेशसे।
समुषद्भिरजायथाः।।

विश्वरूप जयादित्य जय विष्णो जयाच्युत।
जय केशव ईशान जय कृष्ण नमोऽस्तु ते।।
-- वराहपुराणम्, अध्यायः 169/ श्लोकः 23

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

जयादित्य जय स्वामिञ्जय भानो जयामल।
जय वेदपते शश्वत्तारयास्मानहर्पते।।
-- स्कन्दपुराणम्/खण्डः1/अध्यायः51/श्लोकः54

प्रकाशकः- श्रीनिम्बार्क परिषद् , जयपुर

✻ तंत्रसारोक्त (तांत्रिक) नवग्रह मंत्र ✻

सूर्य- ॐ घृणिः सूर्याय नमः **चन्द्र-** ॐ सों सोमाय नमः
मंगल- ॐ अं अंगारकाय नमः
बुध- ॐ बुं बुधाय नमः **गुरु-** ॐ बृं बृहस्पतये नमः
शुक्र- ॐ शुं शुक्राय नमः
शनि- ॐ शं शनैश्चराय नमः **राहु-** ॐ रां राहवे नमः
केतु- ॐ कें केतवे नमः

❊ श्रीसुदर्शन कवचम् ❊

विनियोग :- ॐ अस्य श्री सुदर्शनकवच-महामन्त्रस्य अहिर्बुध्न्यो भगवान् ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीसुदर्शनमहापुरुषो विष्णुर्देवता, ॐ बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकम्, श्री सुदर्शन-प्रसाद-सिद्धि-पुरस्सरं ममाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासा :- ॐ अहिर्बुध्न्याय भगवते ऋषये नमः शिरसि। ॐ अनुष्टुम्-छन्दसे नमो मुखे। ॐ श्रीसुदर्शन-महापुरुष-विष्णु-देवतायै नमो हृदये। ॐ ॐ बीजाय नमो गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। ॐ क्रौं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

दिग्बन्धनम् :-

ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, प्राचीं दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, आग्नेयीं दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, याम्यां दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, नैर्ऋतिं दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, वारुणीं दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, वायवीं दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, कौबेरीं दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, ऐशानीं दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, ऊर्ध्वां दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, अधो दिशं चक्रेण बध्नामि।
ॐ नमो भगवते ज्वाला-चक्राय ऐं ह्रीं, सर्वां दिशं चक्रेण बध्नामि।

विनियोग :- अस्य श्रीसुदर्शन-षडक्षर-महामन्त्रस्य अहिर्बुध्न्यो भगवान् ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री सुदर्शन-देवता, ॐ बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकम्, श्रीसुदर्शन-प्रसाद-सिद्धि- पुरस्सरं ममाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासा :- ॐ अहिर्बुध्न्याय भगवते ऋषये नमः शिरसि। ॐ अनुष्टुप्-छन्दसे नमो मुखे। ॐ सुदर्शन-देवतायै नमो हृदये। ॐ ॐ बीजाय नमो गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। ॐ क्रौं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

कर-न्यासाः- ॐ सं आचक्राय स्वाहा अङ्गुष्ठभ्यां नमः। ॐ हं विचक्राय स्वाहा तर्जनीभ्यां नमः। ॐ स्रां सुचक्राय स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः। ॐ रं त्रैलोक्य-रक्षण-चक्राय स्वाहा अनामिकाभ्यां नमः। ॐ हुं ज्वाला-चक्राय स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ फट् असुरान्तक-चक्राय स्वाहा करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि-न्यासा :- ॐ सं आचक्राय स्वाहा ज्ञानाय हृदयाय नमः। ॐ हं विचक्राय स्वाहा ऐश्वर्याय शिरसे स्वाहा। ॐ स्रां सुचक्राय स्वाहा शक्तये शिखायै वषट्। ॐ रं त्रैलोक्य-रक्षण-चक्राय स्वाहा बलाय कवचाय हुम्। ॐ हुं ज्वाला-चक्राय स्वाहा तेजसे नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ फट् असुरान्तक- चक्राय स्वाहा वीर्याय अस्त्राय फट्।

अक्षर-न्यासा :- ॐ नमो मस्तके। ॐ सं नमो भ्रुवोर्मध्ये। ॐ हं नमो मुखे। ॐ स्रां नमो हृदि। ॐ रं नमो गुह्ये। ॐ हुं नमो जान्वोः। ॐ फट् नमः पादयोः। ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति सर्वाङ्गे।

ध्यानम्-

सुदर्शन महाज्वाल सूर्य-कोटि-सम-प्रभ।
अज्ञानान्धस्य मे देव विष्णोर्मार्गं प्रदर्शय॥1॥
यस्य स्मरणमात्रेण विद्रवन्ति सुरारयः।
सहस्रार नमस्तुभ्यं विष्णु-पाणि-तलाश्रय॥2॥
क्षिप्रं सुदर्शन-चक्र ज्वाला-मालातिभीषण।
सर्व-रोग-प्रशान्तिं त्वं कुरु देववराऽच्युत॥3॥
सुदर्शन-महाज्वाल गोविन्द-स्वकरायुध।
तीक्ष्ण-धारमहावेग कोटि-सूर्य-सम-प्रभ॥4॥
त्रैलोक्यं रक्ष रक्ष त्वं दुष्ट-दानव-मर्दन।
सुदर्शन महाज्वाल छिन्धि छिन्धि महागदम्॥5॥
छिन्धि वातं च पित्तं च छिन्धि घोरं महाविषम्।
रुजं दाहं च शूलं च निमिषं जाल-गर्दभम्॥6॥
सुदर्शनस्य मन्त्रेण ग्रहा यान्तु दिशो दश।
चौर-व्यालादयो यान्तु सर्वबाधा प्रशाम्यतु॥7॥

(इति ध्यात्वा पञ्चोपचारैः सम्पूज्य सुदर्शन-षडक्षरमन्त्रमष्टोत्तर- शतं सुदर्शन गायत्रीं च द्वादशवारं जपित्वा सुदर्शन-कवच-पाठं कुर्यात्।)

श्रीसुदर्शन-षडक्षर-मन्त्र :- "ॐ सहस्रार हुँ फट्"

श्रीसुदर्शन-गायत्री-मन्त्र :- ॐ सुदर्शनाय विद्महे, हेतिराजाय धीमहि, तन्नश्चक्रं प्रचोदयात्।

श्री सुदर्शन-कवचम् :- ॐ नमो भगवते भो भो सुदर्शन दुष्ट-दारिद्र्यं दुरितं हन हन जहि जहि पापं मथ मथ ममाऽऽरोग्यं कुरु कुरु ठः ठः ह्रीं ह्रीं ह्रां ह्रुं ॐ सहस्त्रार हुं फट् स्वाहा।

ॐ त्रैलोक्याभयकर्ता त्वमाज्ञापय जनार्दन।
सर्व-दुःखानि रक्षांसि क्षयं नय च सत्वरम्॥
प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च दक्षिणोत्तरयोस्तथा।
रक्षां करोतु सर्वत्र नृसिंहस्य स्व-गर्जनैः॥
श्रीमहावैष्णव रक्ष, दुष्टान् हन हन फट् स्वाहा॥

ॐ सहस्रादित्य-संकाशं सहस्र-वदनं परम्।
सहस्रदोः सहस्रारं प्रपद्येऽहं सुदर्शनम्॥1॥
हसन्तं हार-केयूर-मुकुटाऽङ्गद-भूषणम्।
भूषणोद्भासिताङ्गं च प्रपद्येऽहं सुदर्शनम्॥2॥
स्राकारसहितं मन्त्रं जपता शत्रु-निग्रहम्।
सर्व-दोषस्य हर्त्तारं प्रपद्येऽहं सुदर्शनम्॥3॥
रणत्किङ्किणीजालेन राक्षसघ्नं महाद्भुतम्।
व्याप्तकेशं विरूपाक्षं प्रपद्येऽहं सुदर्शनम्॥4॥
हुङ्कारं भैरवं भीमं प्रपन्नार्त्तिहरं प्रभुम्।
धन-धान्य-प्रदातारं प्रपद्येऽहं सुदर्शनम्॥5॥
फट्-कारान्तमनिर्देश्यं महामन्त्रेण संयुतम्।
शिवं प्रसन्न-वक्त्रं च प्रपद्येऽहं सुदर्शनम्॥6॥
एतैः षड्भिः स्तुतो देवो भगवान् श्रीसुदर्शनः।
रक्षां करोतु सर्वत्र सर्वत्र विजयी भवेत्॥7॥

सर्वस्मिन् वैष्णवे धर्मे प्रीतिं वर्द्धयतां सदा।
सर्व-विघ्नान् समान् दोषान् विनाशयतु सत्वरम्॥8॥
ब्रह्मादिदेव - मुनि - वन्दित - पादपद्मं।
चक्रादि - षोडशभुजं - ज्वलन - प्रकाशम्॥
नानाविद्याभरण - भूषित - चारुगात्रं।
चक्रादिदेवमनिशं हृदि भावयामि॥9॥

शङ्खं चक्रं गदाब्जे शरमसिमिषुधिंचाप-पाशाङ्कुशाब्जान्
बिभ्राणं वज्र-खेटं-हल-मुसल-लसत्कुन्तमत्युग्रदंष्ट्रम्।
ज्वाला-केशं त्रिनेत्रं ज्वलदनलनिभं हार-केयूर-भूषं
ध्याये षट्कोण-संस्थं सकल-रिपु-जन-प्राण-संहार-चक्रम्॥10॥

ॐ नमो भगवते महासुदर्शनाय महोग्राय महाचक्राय महामन्त्र-महावीर-महातेजो भयङ्कराय सर्वदुष्ट-भयङ्कराय सर्वशत्रून् ग्रस ग्रस भक्ष भक्षं, परमन्त्रान् ग्रस ग्रस भक्ष भक्ष, परतन्त्रान् ग्रस ग्रस भक्ष भक्षं, पर-विद्यां ग्रस ग्रस भक्ष भक्ष, दैत्यान् ग्रस ग्रस भक्ष भक्ष, पर-शक्तिं ग्रस ग्रस भक्ष भक्ष, मूढान् ग्रहान् ग्रस ग्रस भक्ष भक्ष, दैत्य-दानव-राक्षसान् ग्रस ग्रस भक्ष भक्ष।

गन्धर्व-यक्ष-भूत-प्रेत-पिशाचान् ब्रह्मराक्षसादीन् ग्रहान् ग्रस ग्रस भक्ष भक्ष, दह दह, मर्दय मर्दय, छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि, खादय खादय कालय कालय, कुरु कुरु, हूँ फट् स्वाहा। ॐ श्रीचक्राय सुदर्शनाय स्वाहा।

प्रार्थना :-

भूम्यां च ह्यन्तरिक्षे च पार्श्वतः पृष्ठतोऽग्रतः।
रक्षां करोतु भगवान् विश्वरूपी जनार्दनः॥
यथा विष्णोः स्मृतेः सद्यः संक्षयं याति पातकम्।
तथैव सकलं दुःखं प्रशाम्यतु सुदर्शनः॥

फल-स्तुति :-

इदं वर्म पवित्रं वै सर्वथा भय-नाशनम्।
सर्वाभीष्ट-प्रदं सद्यः सर्व-रोग-निवारणम्॥

इति श्रीसुदर्शन-संहितान्तर्गतं सुदर्शन-कवचं सम्पूर्णम्।

✽ आचमन -

पूर्वाभिमुख वा उत्तराभिमुख हो हाथ में जल लेकर आचमन करे

ॐ केशवाय नमः ॐ माधवाय नमः ॐ नारायणाय नमः

आचमन करके हाथ धो ले

✽ पवित्रीकरण -

यह पढ़कर स्वयं पर जल छिड़के

ॐ अपवित्रः पवित्रे वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षः स बाह्याभ्यंतरः शुचिः।।

✽ आसन ग्रहण -

(यह पढ़ के जल धरती पर छोड़े)

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः

(हाथ जोड़ के पढ़े)

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवी पवित्रं कुरु चासनम् ।।

✽ पूजा संकल्प -

हाथ में जल अक्षत लेकर पढ़े-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः। ॐ परमात्मने नमः श्री पुराणपुरुषोत्तमस्य श्री विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य श्री ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावरतान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे अमुक प्रदेशे अमुकनगरे अमुकस्थाने बुद्धावतारे वर्तमाने संवत्..... अमुक नाम संवत्सरे दक्षिणायने महामांगल्यप्रदे मासानाम् उत्तमे कार्तिक मासे कृष्णपक्षे अमावस्यायां तिथौ दीपावली पर्वणि अमुकवासरे अमुक नक्षत्रे एवं गुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुक गोत्रोत्पन्नोऽहं अमुक नामाहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त फलावाप्तिकामनया दृढ़ां स्थिरां लक्ष्मीं प्राप्त्यर्थं प्रचुरधनसम्पदा प्राप्त्यर्थं सर्वत्र महालक्ष्मीकृपाकटाक्षप्राप्त्यर्थं अलक्ष्मीपरिहारार्थं प्राप्तश्रीरक्षणार्थं च अहं श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थं महालक्ष्मीपूजनं कुबेरादीनां च पूजनं करिष्ये ।

संकल्प पढ़कर जलाक्षतादि भूमि पर छोड़ दे।

✽ गणपति पूजन -

हाथ में फूल लेकर निम्न ध्यान करे-

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम् ।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम् ।।

ॐ गणपतये नमः । ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि। (कहकर फूल गणेशजी पर चढ़ा दे।)

'**ॐ गणपतये नमः**' - इस मन्त्र से गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि उपचारों द्वारा यथाशक्ति गणेशजी का पूजन करे।

प्रार्थना- हाथ जोड़कर प्रार्थना करे-

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।

✽ महालक्ष्मी की प्रधान-पूजा ✽

✽ ध्यान -

हाथमें फूल लेकर निम्न ध्यान करे-

या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी
गम्भीरावर्तनाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया ।
या लक्ष्मीर्दिव्यरूपैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भैः
सा नित्यं पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमांगल्ययुक्ता ।।
ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

(कहकर फूल महालक्ष्मी पर चढ़ा दे।)

✽ आवाहन -

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । आवाहनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि ।

(आवाहन के लिये पुष्प अर्पित करे।)

✽ आसन -

तप्तकाञ्चनवर्णाभं मुक्तामणिविराजितम् ।
अमलं कमलं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ।।
ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः। आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि ।

(आसनके लिये पुष्प अर्पित करे।)

✽ पाद्य -

गंगादितीर्थसम्भूतं गन्धपुष्पादिभिर्युतम् ।
पाद्यं ददाम्यहं देव गृहाणाशु नमोऽस्तु ते ।।
ॐ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । पादयोः पाद्यं समर्पयामि ।

(पाद्य के लिये चन्दनपुष्पादियुक्त जल आचमनी द्वारा अर्पण करे।)

✽ अर्घ्य -

अष्टगन्धसमायुक्तं स्वर्णपात्रप्रपूरितम् ।
अर्घ्यं गृहाणमदत्तं महालक्ष्मी नमोऽस्तुते ।।
ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मनीमीं शरणं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि ।

(अष्टगन्धमिश्रित-जल अर्घ्यपात्र से देवी के हाथों में दे।)

✽ आचमन -

कर्पूरण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम् ।
तोयमाचमनीयार्थं गृहाण परमेश्वरि ।।
ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु ममान्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ।।
ॐ महालक्ष्म्ये नमः । आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

(आचमन के लिये जल दे।)

✽ स्नान -

मन्दाकिन्यास्तु यद् वारि सर्वपापहरं शुभम् ।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । स्नानं समर्पयामि।

(स्नान के लिये जल चढ़ाये।)

स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

(स्नान के बाद '**ॐ महालक्ष्म्यै नमः**' ऐसा उच्चारण कर आचमन के लिये जल दे।)

✲ दुग्धस्नान –

कामधेनुसमुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम् ।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ।।
ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः ।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु माम् ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । पयः स्नानं समर्पयामि । पयः स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।
(गौ के कच्चे दूध से स्नान कराये, पुनः शुद्ध जल से स्नान कराये।)

✲ दधिस्नान –

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।
ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूँषि तारिषत् ।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।
दधिस्नानं समर्पयामि । दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
(दधि से स्नान कराये, फिर शुद्ध जल से स्नान कराये।)

✲ घृतस्नान –

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम् ।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम् ।।
ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा ।
दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । घृतस्नानं समर्पयामि । घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
(घृत से स्नान कराये तथा फिर शुद्ध जल से स्नान कराये।)

✲ मधुस्नान –

तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु ।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ।।
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवब रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता ।।
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमार अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । मधुस्नानं समर्पयामि । मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।
(मधु (शहद) से स्नान कराये, पुनः शुद्ध जलसे स्नान कराये।)

✲ शर्करास्नान –

इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका ।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।
ॐ अप रसमुद्वयसँ सूर्ये सन्तुं समाहितम् । अप रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । शर्करास्नानं समर्पयामि, शर्करा स्नानान्ते पुनः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।
(शर्करा से स्नान कराकर पश्चात् शुद्ध जल से स्नान कराये।)

✲ पञ्चामृतस्नान–

दूध, दही, घी, मधु तथा शर्करा को एक पात्र में मिलाकर पंचामृत तैयार कर ले और उस पञ्चामृत से एकतन्त्र से निम्न मन्त्र से स्नान कराये

पयो दधि घृतं चैव मधुशर्करयान्वितम् ।
पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।
ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः ।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत् सरित् ।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि, पञ्चामृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।
(पञ्चामृत स्नान के अनन्तर शुद्ध जल से स्नान कराये।)
(यदि भगवती महालक्ष्मी का अभिषेक करना हो तो शुद्ध जल या दुग्धादि से 'श्रीसूक्त' का पाठ करते हुए स्नान (अभिषेक) कराये।)

✲ गन्धोदकस्नान –

मलयाचलसम्भूतं चन्दनागरुसम्भवम् ।
चन्दनं देवदेवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । गन्धोदकस्नानं समर्पयामि ।
(गन्ध चन्दन मिश्रित जल से स्नान कराये।)

✲ शुद्धोदकस्नान –

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम् ।
तदिदं कल्पितं तुभ्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
(गंगाजल अथवा शुद्ध जलसे स्नान कराये।)

✲ आचमन –

शुद्धोदक स्नान के बाद '**ॐ महालक्ष्म्यै नमः**' (ऐसा कहकर आचमनीय जल अर्पित करे।) तदनन्तर प्रतिमाका अंग-प्रोक्षण कर (पोंछकर उसे यथास्थान आसनपर स्थापित करे और निम्नरूप से उत्तरांग-पूजन करे।

✲ वस्त्र –

दिव्याम्बरं नूतनं हि क्षौमं त्वतिमनोहरम् ।
दीयमानं मया देवि गृहाण जगदम्बिके ।।
ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । वस्त्रं समर्पयामि, आचमनीयं जलं च समर्पयामि । (वस्त्र अर्पित करे, आचमनीय जल दे।)

✲ उपवस्त्र –

कंचुकीमुपवस्त्रं च नानारत्नैः समन्वितम् ।
गृहाण त्वं मया दत्तं मंगले जगदीश्वरी ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
उपवस्त्रं समर्पयामि, आचमनीयं जलं च समर्पयामि ।
(देवी को उत्तरीय वस्त्र चढ़ाये, आचमनके लिये जल दे।)

✲ यज्ञोपवीत –

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंचशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तुतेजः ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
यज्ञोपवीतं समर्पयामि, आचमनीयं जलं च समर्पयामि । (देवीको यज्ञोपवीत चढ़ाये, आचमनके लिये जल दे।)

✲ मधुपर्क –

कांस्ये कांस्येन पिहितो दधिमध्वाज्यसंयुतः।
मधुपर्को मयानीतः पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । मधुपर्क समर्पयामि, आचमनीयं जलं च समर्पयामि।
(काँस्यपात्र में स्थित मधुपर्क समर्पित कर आचमन के लिये जल दे।)

✻ आभूषण-

रत्नकंकणवैदूर्यमुक्ताहारादिकानि च ।
सुप्रसन्नेन मनसा दत्तानि स्वीकुरुष्व भोः ।।
ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ।। ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।
नानाविधानि कुण्डलकटकादीनि आभूषणानि समर्पयामि ।
(आभूषण समर्पित करे।)

✻ गन्ध-

गन्धं कर्पूरसंयुक्तं दिव्यं चन्दनमुत्तमम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् ।।
ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । गन्धं समर्पयामि ।
(अनामिका अँगुली से कर्पूर- केसरादि मिश्रित चन्दन अर्पित करे।)

✻ रक्तचन्दन-

श्रीखण्डचन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ।।
रक्तचन्दनसम्मिश्रं पारिजातसमुद्भवम् ।
मया दत्तं महालक्ष्मि चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । रक्तचन्दनं समर्पयामि ।
(अनामिका से रक्त चन्दन चढ़ाये।)

✻ सिन्दूर-

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम् ।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ।।
ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो बात प्रमियः पतयन्ति यह्वाः ।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नुर्मिभिः पिन्वमानः ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । सिन्दूरं समर्पयामि। (सिन्दूर चढ़ाये।)

✻ कुंकुम-

कुंकुमं कामदं दिव्यं कुंकुमं कामरूपिणम् ।
अखण्डकामसौभाग्यं कुंकुमं प्रतिगृह्यताम् ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । कुंकुमं समर्पयामि।
(कुंकुम अर्पित करे।)

✻ पुष्पसार (इत्र) -

दिव्यगन्धसमायुक्तं महापरिमलाद्भुतम् ।
गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं वै परिगृह्यताम् ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।
सुगन्धिततैलं पुष्पसारं च समर्पयामि ।
(सुगन्धित तेल एवं इतर चढ़ाये।)

✻ अक्षत -

अक्षत अक्षताश्च सुरश्रेष्ठकुंकुमाक्ताः सुशोभिताः ।
या निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । अक्षतान् समर्पयामि ।
(कुंकुक्त अक्षत अर्पित करे।)

✻ पुष्प एवं पुष्पमाला -

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
मयानीतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् । ।
ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।
पुष्पं पुष्पमालां च समर्पयामि ।
(पुष्पों तथा पुष्पमालाओं से अलंकृत करे, देवीजी का यथासम्भव लाल कमल के फूलों से शृंगार करे।)

✻ दूर्वा -

विष्णवादिसर्वदेवानां प्रियां सर्वसुशोभनाम् ।
क्षीरसागरसम्भूते दूर्वा स्वीकुरु सर्वदा ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । दूर्वांकुरान् समर्पयामि ।
(दूर्वांकुर अर्पित करे।)

✻ अंग-पूजा -

देवी महालक्ष्मी की रोली, कुंकुममिश्रित अक्षत पुष्पों से निम्नांकित एक-एक नाममन्त्र पढ़ते हुए अंग-पूजा करे-

ॐ चपलायै नमः, पादौ पूजयामि।
ॐ चंचलायै नमः, जानुनी पूजयामि ।
ॐ कमलायै नमः, कटिं पूजयामि ।
ॐ कात्यायन्यै नमः, नाभिं पूजयामि ।
ॐ जगन्मात्रे नमः, जठरं पूजयामि ।
ॐ विश्ववल्लभायै नमः, वक्षःस्थलं पूजयामि ।
ॐ कमलवासिन्यै नमः, हस्तौ पूजयामि ।
ॐ पद्माननायै नमः, मुखं पूजयामि ।
ॐ कमलपत्राक्ष्यै नमः, नेत्रत्रयं पूजयामि ।
ॐ श्रियै नमः, शिरः पूजयामि ।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः सर्वांगं पूजयामि ।

✻ अष्टसिद्धि पूजन -

इस प्रकार अंग-पूजाके अनन्तर पूर्व से शुरू कर आठों दिशाओं में आठों सिद्धियों की पूजा कुंकुमाक्त अक्षतों से देवी महालक्ष्मी के पास निम्नांकित मन्त्रोंसे करे-

1-ॐ अणिम्ने नमः (पूर्वे)
2-ॐ महिम्ने नमः (अग्निकोणे)
3-ॐ गरिम्णे नमः (दक्षिणे)
4-ॐ लघिम्ने नमः (नैऋत्ये)
5-ॐ प्राप्त्यै नमः (पश्चिमे)
6-ॐ प्राकाम्यै नमः (वायव्ये)
7-ॐ ईशितायै नमः (उत्तरे)
8-ॐ वशितायै नमः (ऐशान्याम्)

✻ अष्टलक्ष्मी पूजन -

तदनन्तर पूर्व दिशा से शुरू कर आठों दिशाओं में महालक्ष्मी के पास कुंकुमाक्त अक्षत तथा पुष्पों से एक-एक नाम मन्त्र पढ़ते हुए आठ लक्ष्मियोंका पूजन करे-

1-ॐ आद्यलक्ष्म्यै नमः   2-ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः
3-ॐ सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः   4- ॐ अमृतलक्ष्म्यै नमः
5-ॐ कामलक्ष्म्यै नमः   6-ॐ सत्यलक्ष्म्यै नमः
7-ॐ भोगलक्ष्म्यै नमः   8-ॐ योगलक्ष्म्यै नमः ।

✻ धूप -

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यः सुमनोहरः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।।
ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । धूपमाघ्रापयामि।
(धूप दिखाए।)

✻ श्रीमहालक्ष्मी पूजन (दीपावली पूजन विधि) ✻

✻ दीप –

कार्पासवर्तिसंयुक्तं घृतयुक्तं मनोहरम् ।
तमोनाशकरं दीपं गृहाण परमेश्वर ।।
ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । दीपं दर्शयामि
(दीपक दिखाये और फिर हाथ धोले।)

✻ नैवेद्य-

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च ।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ।।
ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । नैवेद्यं निवेदयामि नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि, मध्ये पानीयम्, उत्तरापोऽशनार्थं हस्तप्रक्षालनार्थं मुखप्रक्षालनार्थं च जलं समर्पयामि। (पाँच मिठाइयाँ और सूखे मेवे आदि नैवेद्य निवेदित कर आचमनीय जल, पानीय जल एवं हस्त प्रक्षालनके लिये जल अर्पित करे।)

✻ करोद्वर्तन-

ॐ महालक्ष्म्यै नमः' यह कहकर करोद्वर्तनके लिये हाथोंमें चन्दन उपलेपित करे।

✻ ऋतुफल –

फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् ।
तस्मात् फलप्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । अखण्डऋतुफलं समर्पयामि ।
(सीताफल, गन्ना, सिंघाड़े, अनार आदि ऋतुफल अर्पित करे।)

✻ ताम्बूल- पूगीफल –

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ।
एलाचूर्णादिसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ।।
ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । मुखवासार्थे एलालवंगादिभिर्युतं ताम्बूलपत्रं पूगीफलं च समर्पयामि ।
(इलायची, लौंग, सुपारीयुक्त पान चढ़ाए।)

✻ दक्षिणा –

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ।।
ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । दक्षिणां समर्पयामि ।
(दक्षिणा चढ़ाये।)

✻ नीराजन –

चक्षुर्दं सर्वलोकानां तिमिरस्य निवारणम् ।
आर्तिक्यं कल्पितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।
नीराजनं समर्पयामि। (आरती करे तथा जल छोड़े, हाथ धो ले।)

✻ प्रदक्षिणा –

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।
प्रदक्षिणां समर्पयामि। (प्रदक्षिणा करे।)

✻ पुष्पांजलि –

अंजलिमें फूल लेकर यह मन्त्र पढ़े-
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः पुष्पाजलिं समर्पयामि।
(पुष्पांजलि अर्पित करे।)

✻ प्रार्थना – हाथ जोड़कर प्रार्थना करे-

सुरासुरेन्द्रादिकिरीटमौक्तिकैर्युक्तं सदा यत्तव पादपंकजम् ।
परावरं पातु वरं सुमंगलं नमामि भक्त्याखिलकामसिद्धये ।।
भवानि त्वं महालक्ष्मीः सर्वकामप्रदायिनी ।
सुपूजिता प्रसन्ना स्यान्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।
नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये ।
या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात् त्वदर्चनात् ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।
प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि ।
(प्रार्थना करते हुए नमस्कार करे।)

✻ समर्पण –

पूजनके अन्तमें- **कृतेनानेन पूजनेन महालक्ष्मीं प्रीयन्ताम् न मम।** (यह कह कर समस्त पूजन कर्म निवेदित करे तथा जल गिराये।) इस प्रकार गणेशजी तथा भगवती महालक्ष्मी के यथालब्धोपचार पूजन के अनन्तर महालक्ष्मी पूजन के अंग-रूप- श्रीदेहलीविनायक, मसिपात्र, लेखनी, सरस्वती, कुबेर, तुला-मान तथा दीपकों की पूजा की जाती है। संक्षेपमें उन्हें भी यहाँ दिया जा रहा है। सर्वप्रथम

✻ देहलीविनायक पूजन –

व्यापारिक प्रतिष्ठानादि में दीवालोंपर '**ॐ श्रीगणेशाय नमः**', 'स्वस्तिक चिह्न', 'शुभ- लाभ' आदि मांगलिक एवं कल्याणकर शब्द सिन्दूरादि से लिखे जाते हैं। इन्हीं शब्दों पर '**ॐ देहलीविनायकाय नमः**' इस नाम मन्त्रद्वारा गन्ध-पुष्पादिसे पूजन करे।

✻ श्रीमहाकाली (दावात) पूजन –

स्याही युक्त दावात को भगवती महालक्ष्मी के सामने पुष्प तथा अक्षतपुंज में रखकर उसमें सिन्दूरसे स्वस्तिक बना दे तथा मौली लपेट दें। '**ॐ श्रीमहाकाल्यै नमः**' इस नाम- मन्त्र से गन्ध-पुष्पादि पञ्चोपचारोंसे या षोडशोपचारों से दावात में भगवती महाकाली का पूजन करे और अन्तमें इस प्रकार प्रार्थनापूर्वक उन्हें प्रणाम करे-

कालिके ! त्वं जगन्मातर्मसिरूपेण वर्तसे ।
उत्पन्ना त्वं च लोकानां व्यवहारप्रसिद्धये ।।
या कालिका रोगहरा सुवन्द्या भक्तैः समस्तैर्व्यवहारदक्षैः ।
जनैर्जनानां भयहारिणी च सा लोकमाता मम सौख्यदास्तु ।।

✻ लेखनी-पूजन

लेखनी (कलम) पर मौली बाँधकर सामने रख ले और
लेखनी निर्मिता पूर्व ब्रह्मणा परमेष्ठिना ।
लोकानां च हितार्थाय तस्मात्तां पूजयाम्यहम् ।।
'**ॐ लेखनीस्थायै देव्यै नमः**' इस नाम मन्त्रद्वारा गन्ध-पुष्पाक्षत आदिसे पूजनकर इस प्रकार प्रार्थना करे-
शास्त्राणां व्यवहाराणां विद्यानामाप्नुयाद्यतः ।
अतस्त्वां पूजयिष्यामि मम हस्ते स्थिरा भव ।।

✻ श्रीमहालक्ष्मी पूजन (दीपावली पूजन विधि) ✻

✻ सरस्वती (पञ्जिका बही-खाता) पूजन

पञ्जिका बही, बसना में रोली या केसरयुक्त चन्दनसे स्वस्तिक चिह्न बनाये तथा उसमें सरस्वतीका पूजन करे सर्वप्रथम सरस्वतीजी का ध्यान इस प्रकार करे- **ध्यान -**

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता ।
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता ।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ।।

'**ॐ वीणापुस्तकधारिण्यै श्रीसरस्वत्यै नमः**' - इस मन्त्र से गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि उपचारों द्वारा पूजन करे।

✻ कुबेर पूजन -

तिजोरी अथवा रुपये रखे जानेवाले संदूक आदिको स्वस्तिकादिसे अलंकृत कर उसमें निधिपति कुबेर का आवाहन करे-

आवाहयामि देव त्वामिहायाहि कृपां कुरु ।
कोशं वर्द्धय नित्यं त्वं परिरक्ष सुरेश्वर ।।

आवाहनके पश्चात् '**ॐ कुबेराय नमः**' इस नाम मन्त्रसे गंध, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजन कर प्रार्थना करे-

धनदाय नमस्तुभ्यं निधिपद्माधिपाय च ।
भवन्तु त्वत्प्रसादेन धनधान्यादिसम्पदः ।।

इस प्रकार प्रार्थना कर पूर्वपूजित हल्दी, धनिया, कमलगट्टा, द्रव्य, दूर्वादिसे युक्त थैली (द्रव्यलक्ष्मीको) तिजोरी में रखे।

✻ तुला तथा मान-पूजन -

सिन्दूरसे तराजू आदिपर स्वस्तिक बना ले मौली लपेटकर तुलाधिष्ठातृदेवताका इस प्रकार ध्यान करना चाहिये-

नमस्ते सर्वदेवानां शक्तित्वे सत्यमाश्रिता ।
साक्षीभूता जगद्धात्री निर्मिता विश्वयोनिना ।।

ध्यान के बाद '**ॐ तुलाधिष्ठातृदेवतायै नमः**' इस नाम मन्त्र से गन्धाक्षतादि उपचारों द्वारा पूजन कर नमस्कार करे।

✻ दीपमालिका (दीपक) पूजन -

किसी पात्र में ग्यारह, इक्कीस या उससे अधिक दीपकों को प्रज्वलित कर महालक्ष्मी के समीप रखकर उस दीप ज्योति का '**ॐ दीपावल्यै नमः**' इस नाम मन्त्र से गन्धादि उपचारों द्वारा पूजन कर इस प्रकार प्रार्थना करे-

त्वं ज्योतिस्त्वं रविचन्द्रो विद्युदग्निश्च तारकाः ।
सर्वेषां ज्योतिषां ज्योतिर्दीपावल्यै नमो नमः ।।

दीपमालिकाओंका पूजन कर अपने आचार के अनुसार संतरा, ईख, पानीफल, धान का लावा इत्यादि पदार्थ चढ़ाये। धान का लावा (खील) गणेश, महालक्ष्मी तथा अन्य सभी देवी-देवताओंको भी अर्पित करे। अन्त में अन्य सभी दीपकों को प्रज्वलित कर सम्पूर्ण गृह अलंकृत करे।

✻ प्रधान आरती

इस प्रकार भगवती महालक्ष्मी तथा उनके सभी अंग-उपांगों का पूजन कर लेनेके अनन्तर प्रधान आरती करे। एक थाली में स्वस्तिक बनाकर अक्षत-पुष्पों के आसनपर दीपक प्रज्वलित करे। एक पृथक पात्र में कर्पूर भी प्रज्वलित कर थाली में रखे, खड़े होकर परिवार के साथ घण्टानादपूर्वक लक्ष्मीजी की आरती करे

✻ ✻ ✻ श्री लक्ष्मी जी की आरती ✻ ✻ ✻

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता ।
तुमको निशदिन सेवत हर-विष्णू-धाता ।।1।।
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग माता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ।।1।।
दुर्गारूप निरञ्जनि, सुख-सम्पति दाता ।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋधि सिधि-धन पाता ।।3।।
तुम पाताल निवासिनि, तुम ही शुभदाता ।
कर्म-प्रभाव - प्रकाशिनि, भवनिधिकी त्राता ।।4।।
जिस घर तुम रहती, तहँ सब सद्गुण आता ।
सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता ।।5।।
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता ।
खान-पानका वैभव सब तुमसे आता ।।6।।
शुभ-गुण-मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता ।
रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहिं पाता ।।7।।
महालक्ष्मी जी की आरति, जो कोई नर गाता ।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ।।8।।

✻ मन्त्र पुष्पाञ्जलि -

दोनों हाथों में कमल आदिके पुष्प लेकर हाथ जोड़े और मन्त्रों का पाठ करे-

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।।
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे ।
स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ।।
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ।
ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं माहाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुष आऽन्तादा परार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे ।
आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ।।
ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात् ।
सं बाहुभ्यां धमति संपतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः ।।
ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ।
ॐ या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ।।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।

(हाथ में लिये फूल गणेशजी तथा महालक्ष्मीपर चढ़ा दे) प्रदक्षिणा कर साष्टांग प्रणाम करे, पुनः हाथ जोड़कर क्षमा-प्रार्थना करे-

✻ क्षमा प्रार्थना -

नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये ।
या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्त्वदर्चनात् ।।
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि ।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्ण तदस्तु मे ।।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव ।।

पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः ।
त्राहि मां परमेशानि सर्वपापहरा भव ।।
अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ।।
सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ।।

पुनः प्रणाम करके '**ॐ अनेन यथाशक्त्यर्चनेन श्रीमहालक्ष्मीः प्रसीदतु**' यह कहकर जल छोड़ दे। ब्राह्मण एवं गुरुजनोंको प्रणाम कर प्रसाद वितरण करे। विसर्जन-पूजनके अन्तमें हाथमें अक्षत लेकर गणेश एवं महालक्ष्मीकी प्रतिमाको छोड़कर अन्य सभी आवाहित, प्रतिष्छित एवं पूजित देवताओंको अक्षत छोड़ते हुए निम्न मन्त्र से विसर्जित करे-

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम् ।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च ।।

✻ ✻ श्रीसूक्त ✻ ✻

दीपावली का पंचदिवसीय पर्व भगवती लक्ष्मी का प्रबोधकाल है, 'अमावस्यां तुलादित्ये लक्ष्मीर्निद्रां विमुंचति', तुला राशि के सूर्य में अमावस्या पर लक्ष्मी जी निद्रा को छोड़ देती हैं। शास्त्रों में लक्ष्मी जी को श्रीसूक्त से की गई उपासना सर्वाधिक प्रिय बताई गई है, 'भक्तानां श्रीसूक्तं जपेत्' निरंतर श्रीसूक्त का भक्तिपूर्वक जप करने वाला लक्ष्मीजी की कृपा का पात्र बनता है। कार्त्तिक मास में या धनत्रयोदशी से दीपावली तक यथाशक्ति 1200, 108, 54, 27, 16, की संख्या में श्रीसूक्त का पाठ और हवन करना चाहिए। बिल्ववृक्ष के मूल में बैठकर या बिल्व वृक्ष को गोद में रखकर पाठ करने वाला एक वर्ष में धनाढ्य और प्रभावशाली हो जाता है।

श्रीसूक्त के पाठ हवन से अक्षय समृद्धि होती है, दरिद्रता आदि अलक्ष्मी दूर हो जाती है। श्रीसूक्त की पहली ऋचा के जप से संपदा, दूसरी से पशुलाभ, तीसरी से धान्य, चौथी से पृथ्वी, पांचवी से नौकर-चाकर, छठी से महायश, सातवीं से राजसम्मान, आठवीं से धृति स्थिरता, नवीं से घोड़े, दसवीं से हाथी, ग्यारहवीं से वस्त्र, बारहवीं से पुत्र, तेरहवीं से नानारत्न, चौदहवीं से महामान, पन्द्रहवीं से शस्यसम्पन्न पृथ्वी और श्री की प्राप्ति होती है।

✻ ✻ श्रीसूक्त ✻ ✻

विनियोग :- अस्य श्रीसूक्तस्य आनन्दकर्दम चिक्लीतेन्दिरा सुता ऋषयः अनुष्टुब् - प्रस्तार - त्रिष्टुब - नानाछन्दांसि श्री विश्वावसुर्देवता स्थिरां लक्ष्मींप्राप्तये पाठे (होमे) विनियोगः ।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।। 1।।
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ।। 2।।
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ।। 3।।
कां सोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ।। 4।।
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ।। 5।।
आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु ममान्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ।।6।।
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ।।7।।
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ।।8।।
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।9।।
मनसः काममाकूतं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ।।10।।
कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ।।11।।
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ।।12।।
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।।13।।
आर्द्रां यष्करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।।14।।
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ।।15।।
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चञ्च च श्रीकामः सततं जपेत् ।।16।।
पद्मानने पद्मनिपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षिः ।
विश्वप्रिये विश्वमनोनुकूले त्वत्पादपद्म मयिसन्निधत्स्व ।।17।।
पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षी पद्मसम्भवे ।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ।।18।।
अश्वदायी गोदायी धनदायि महाधने ।
धनं मे जुषतां देवि सर्वान् कामांश्च देहि मे ।।19।।
पुत्रपौत्रधनं धान्यं हस्त्यश्वादिगवेरथम् ।
प्रजानां भवसी माता आयुष्मन्तं करोतु मे ।।20।।
धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः ।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणं धनमस्तु मे ।।21।।
वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा ।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ।।22।।
न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां श्रीसूक्तं जपेत् ।।23।।
सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुक गन्धमाल्यशुभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरिप्रसीद मह्यम् ।।24।।
विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् ।
लक्ष्मीप्रियसखीदेवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ।।25।।
महादेव्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ।।26।।
श्रीवर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते ।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ।।27।।

✲ गोरख-पतरा (यात्रा मुहूर्त्त) श्रीगोरक्षनाथ जी का वचनामृत ✲

पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्ग.	मासों की तिथियों का फल	प्रहर1	प्रहर2	प्रहर3	प्रहर4	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	बहुत सुख और अर्थ पूर्ण हो, क्लेश न हो।	अर्थ	सुख	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भीति	द्रव्यलाभ
2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	महाभय और जीव-नाश हो, पछतावा हो।	भय	क्लेश	सुख	सुख	शून्य	नेष्ट	दारिद्रय	चिन्ता
3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	कामना सिद्ध हो, अर्थपूर्ण हो।	लाभ	सुख	सुख	हानि	क्लेश	दु:ख	इष्टलाभ	धनप्राप्ति
4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	क्लेश व जीव नाश हो, कुशल से घर न आवे।	क्लेश	लाभ	क्लेश	विनाश	लाभ	सुख	मंगल	वित्तलाभ
5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	वस्तुलाभ हो, व्याधि व संकट मिटें, मित्र मिले।	संकट	क्लेश	भाग्य	सुख	लाभ	द्रव्यलाभ	धन	सुख
6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	घर की चिन्ता, मित्र संकट हो, कदाचित् घर आवे।	संकट	क्लेश	भय	अर्थ	भीति	लाभ	मृत्यु	अर्थागम
7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	भाग्योदय, मित्र और साधनों की प्राप्ति हो, रत्नादि सहित घर आवे।	विनाश	लाभ	सुख	सुख	लाभ	कष्ट	द्रव्यलाभ	सुख
8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	बहुत बुरा हो, लेन-देन करना नहीं, जीव-नाश हो।	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	कष्ट	सुख	क्लेश	सुख
9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	कामना सिद्ध हो, सौभाग्य का उदय हो।	लाभ	भाग्य	मित्र	मित्र	सुख	लाभ	कार्यसिद्धि	कष्ट
10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	सौभाग्य प्राप्त हो, बहुत दिन लगे, किन्तु कुशल से घर आवे।	लाभ	सम्पूर्ण	मरण	कुशल	क्लेश	कष्ट	अर्थ	धनप्राप्ति
11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	क्लेश हो, किन्तु जीव नाश नहीं, सौभाग्य पावें नहीं।	मरण	अर्थ	कुशल	मरण	मृत्यु	लाभ	द्रव्यलाभ	शून्य
12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	मार्ग में सिद्धि, मित्र मिले, विघ्न मिटे, धन-लाभ हो।	मरण	सुख	सुख	सुख	शून्य	सुख	मृत्यु	अतिकष्ट

श्री गोरखनाथ के पूछने पर गुरु मत्स्येन्द्रनाथ ने कहा था कि उपरोक्त यात्रा मुहूर्त के अनुसार यात्रा करने वाला कुशल पावेगा। यह मुहूर्तराज है। उसे चन्द्रदोष, भद्रा, दिशाशूल, योगिनी, काल, घातवार इत्यादि किसी कुयोग का दोष नहीं लगेगा, यह स्वयं सत्यसिद्ध भी है। वे लगभग सभी शतप्रतिशत सत्यसिद्ध हुए हैं। पंचांग प्रेमी पाठकों की विशेष जानकारी हेतु पूरे विवरण सहित यहाँ प्रकाशित किया जाता है। इससे प्रत्येक माह की, प्रत्येक तिथि और प्रत्येक प्रहर में एक दिशा की यात्रा का फल निर्दिष्ट किया गया है। प्रत्येक मासों के नीचे दी गई तिथियों का उस मास के कृष्ण व शुक्ल पक्ष दोनों की समझनी चाहिए इसमें 13।14।15 और 30 तिथियों का उल्लेख नहीं है। सो 13 तिथि का फल 3 तीज तिथि के समान, 14 का फल 4 चतुर्थी के समान और 15 का फल 5 पंचमी तिथि के समान समझना चाहिए। 30(अमावस्या) वर्ज्य है। इसी तरह 1 से 4 तक के प्रहरों को दिन और रात दोनों के लिए समान समझे।

✲✲✲✲

नोट :- दिनमान का चतुर्थांश दिन के एक प्रहर का मान होता है तथा रात्रिमान का चतुर्थांश रात्रि के एक प्रहर का मान होता है। प्रत्येक प्रहर लगभग तीन घण्टे का होता है।

✲ चन्द्रवासचक्रम् ✲

पूर्व
मेष सिंह धनु

सन्मुखेचार्थलाभ:
स्याद्दक्षिणे
सुखसम्पद:। पृष्ठे च
शोकसन्तापौ वामे चन्द्रे
धनक्षति:।। सर्वेदोषा
लयंयान्ति पूर्वचन्द्रे हि
सम्मुखे।।

उत्तर: मीन वृश्चिक कर्क
दक्षिण: वृष कन्या मकर
पश्चिम: कुंभ तुला मिथुन

✲ दिशाशूलदोषचक्रम् ✲

पूर्व
चन्द्र शनि

दिशाशूल ले
जावो वामे
राहु योगिनी पूठ।
सम्मुख लेवे चन्द्रमा
ल्यावे लक्ष्मी लूट।।

उत्तर: बुध मंगल
दक्षिण: गुरुवार
पश्चिम: रवि शुक्र

✲ योगिनीवासचक्रम् ✲

पूर्व 1/9
ईशान 8/30
आग्नेय 3/11

योगिनी सुखदा वामे
पृष्ठे वांछितदायिनी
दक्षिणे धन हंत्री च
सम्मुखे मरणाप्रदा।।

उत्तर 2/10
दक्षिण 5/13
वायव्य 7/15
पश्चिम 6/14
नैर्ऋत्य 4/12

✲ कालराहुचक्रम् ✲

पूर्व
ईशान रवि
शनि
आग्नेय शुक्र

अर्कोत्तरे वायुदिशांच
सोमेभौमेप्रतीच्यां
बुधनैर्ऋते च याम्ये
गुरौवन्हिदिशां
च शुक्रे
मंदे च पूर्वे
प्रवदंतिकाल:।।

उत्तर: रवि
दक्षिण: गुरु
वायव्य: चन्द्र
पश्चिम: मंगल
नैर्ऋत्य: बुध

✲ नक्षत्रशूलचक्रम् ✲

पूर्व
ज्ये. पूषा. उषा

आग्नेय पूर्वदिग्ज्ञेया
दक्षिणादिक् च
नैर्ऋती।
वायवी
पश्चिमादिक्
स्वादेशानी च
तथोत्तरा।।

उत्तर: पूफा. उफा. हस्त विशा.
दक्षिण: ध. श. पूभा. उभा. रे.
पश्चिम: श्र. मूल. रो.

✲ समयशूलचक्रम् ✲

पूर्व
उषा काल

उष: प्रशस्यते गर्ग:
शकुनं च बृहस्पति:।
अंगिराचणां
मनोत्साह:
विप्र वाक्यं
जनार्दन:।।

उत्तर: मध्यरात्रि
दक्षिण: मध्य दिवस
पश्चिम: गोधूलि

दिशाओं के स्वामी - पूर्व के सूर्य, आग्नेय के शुक्र, दक्षिण के मंगल, नैर्ऋत्य के राहु, पश्चिम के शनि, वायव्य के चन्द्र, उत्तर के बुध और ईशान के स्वामी गुरु है।

❊ श्रीराम शलाका प्रश्नावली ❊

सु	प्र	उ	बि	हो	मु	ग	ब	सु	नु	वि	घ	धि	इ	द
र	रु	फ	सि	सि	रे	बस	हि	मं	ल	न	ल	य	न	अं
सुज	सो	ग	सु	कु	म	स	ग	त	न	इ	ल	धा	बे	नो
त्य	र	न	कु	जो	म	रि	र	र	अ	की	हो	सं	रा	य
पु	सु	थ	सी	जे	इ	ग	म	सं	क	रे	हो	स	स	नि
त	र	त	र	स	हुँ	ह	ब	ब	प	चि	स	हि	स	तु
म	का	ा	र	र	म	मि	मी	म्हा	ा	जा	हु	हीं	ा	ा
ता	रा	रे	री	ह	का	फ	खा	जू	ई	र	रा	पू	द	ल
नि	को	जो	गो	न	मु	जि	यँ	ने	मनि	क	ज	प	स	ल
हि	रा	मि	स	रि	ग	द	न्मु	ख	म	खि	जि	म	त	जं
सिं	ख	नु	न	को	मि	निज	क	ग	धु	ध	सु	का	स	र
गु	ब	म	अ	रि	नि	म	ल	ा	न	ढ़	ती	न	क	भ
ना	पु	व	अ	ा	र	ल	ा	ए	तु	र	न	नु	वै	थ
सि	ह	सु	म्ह	रा	र	स	स	र	त	न	ख	ा	जा	ा
र	ा	ा	ला	धी	ा	री	ज	हू	हीं	खा	जू	ई	रा	रे

विधि-श्रीरामचन्द्रजी का ध्यान कर अपने प्रश्न को मन में दोहरायें। फिर ऊपर दी गई सारणी में से किसी एक अक्षर पर अंगुली रखें। अब उससे अगले अक्षर से क्रमशः नौवां अक्षर लिखते जायें जब तक पुनः उसी जगह नहीं पहुँच जायें। इस प्रकार एक चौपाई बनेगी, जो अभीष्ट प्रश्न का उत्तर होगी।

सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी।
यह चौपाई बालकाण्ड में श्रीसीताजी के गौरीपूजन के प्रसंग में है। गौरीजी ने श्रीसीताजी को आशीर्वाद दिया है। **फलः**- प्रश्नकर्ता का प्रश्न उत्तम है, कार्य सिद्ध होगा।

प्रबिसि नगर कीजै सब काजा। हृदय राखि कोसलपुर राजा।
यह चौपाई सुन्दरकाण्ड में हनुमानजी के लंका में प्रवेश करने के समय की है।
फलः-भगवान् का स्मरण करके कार्यारम्भ करो, सफलता मिलेगी।

उघरें अंत न होइ निबाहू। कालनेमि जिमि रावन राहू।।
यह चौपाई बालकाण्ड के आरम्भ में सत्संग-वर्णन के प्रसंग में है।
फलः-इस कार्य में भलाई नहीं है। कार्य की सफलता में सन्देह है।

बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं। फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं।।
यह चौपाई बालकाण्ड के आरम्भ में सत्संग-वर्णन के प्रसंग में है।
फलः-खोटे मनुष्यों का संग छोड़ दो। कार्य की सफलता में सन्देह है।

होइ है सोई जो राम रचि राखा। को करि तरक बढ़ावहि साषा।।
यह चौपाई बालकाण्डान्तर्गत शिव और पार्वती के संवाद में है।
फलः-कार्य होने में सन्देह है, अतः उसे भगवान् पर छोड़ देना श्रेयष्कर है।

मुद मंगलमय संत समाजू। जिमि जग जंगम तीरथ राजू ।।
यह चौपाई बालकाण्ड में संत-समाजरुपी तीर्थ के वर्णन में है।
फलः-प्रश्न उत्तम है। कार्य सिद्ध होगा।

गरल सुधा रिपु करय मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई ।।
यह चौपाई श्रीहनुमान जी के लंका प्रवेश करने के समय की है।
फलः-प्रश्न बहुत श्रेष्ठ है। कार्य सफल होगा।

बरुन कुबेर सुरेस समीरा। रन सनमुख धरि काह न धीरा।।
यह चौपाई लंकाकाण्ड में रावन की मृत्यु के पश्चात् मन्दोदरी के विलाप के प्रसंग में है। **फलः**-कार्य पूर्ण होने में सन्देह है।

सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे। राम लखनु सुनि भए सुखारे।।
यह चौपाई बालकाण्ड पुष्पवाटिका से पुष्प लाने पर विश्वामित्रजी का आशीर्वाद है।
फलः-प्रश्न बहुत उत्तम है। कार्य सिद्ध होगा।

श्रीनिम्बार्क परिषद्

मन्दिर श्रीसरसबिहारी जी गढ़ के सामने,
कलवाड़ा, जयपुर, राजस्थान - 302037
ssjayadityapanchang@gmail.com
Website- www.nimbarkparishad.com
Facebook- @SSJPanchang
Instagram- @Jayaditya_Panchang
Twitter- @SSJ_Panchang

❊ पर्व-त्यौहारों की प्रामाणिकता व एकरूपता के लिए सूर्यसिद्धान्त की अनिवार्यता ❊

गत 2 दशकों से पर्वों की एकरूपता में भयावह संकट की स्थिति उत्पन्न हुई है। एकादशी आदि अनेक पर्व दो या तीन दिन हो जा रहे हैं। यदि पर्वों की तिथि में यह वैषम्य सिद्धान्तगत हो तो यह माननीय है परन्तु गणितागत दोष से पर्वों में विखण्डन की स्थिति धर्मशास्त्रीय फल की नाशक है। ध्यातव्य है कि एकादशी को लेकर विभिन्न सिद्धान्त सम्प्रदाय परम्परा के भेद से शास्त्रों द्वारा कथित हैं। स्मार्त्त परम्परा में एकादशी तिथि होने पर दशमी विद्धा एकादशी में भी व्रत होता है। परन्तु वैष्णव परम्परा में एकादशी यदि दशमी विद्धा हो तो वह त्यागकर द्वादशी में व्रत होता है। रामानन्द, गौड़ीय, वल्लभ एवं अन्य वैष्णव सम्प्रदायों में 55 घटी से अधिक की दशमी का वेध माना जाता है, अर्थात् दशमी मान यदि 55 घटी से अधिक हो, सूर्योदय से दो घण्टे पूर्व एकादशी प्रारम्भ न हो तो ऐसी एकादशी विद्धा होकर व्रत के लिए त्याज्य होती है। निम्बार्क सम्प्रदाय में मध्यरात्रि का वेध माना जाता है, अर्थात् मध्यरात्रि में एकादशी उपस्थित हो तभी अगले दिन व्रत होता है। यह शास्त्र आधारित भेद परम्परा से पालनीय होता है।

आज से 2 दशक पूर्व जब अधिकांश पञ्चाङ्ग सूर्यसिद्धान्तीय रीति से प्रकाशित होते थे तब पर्वों में ऐसा सिद्धान्तगत भेद बहुत कम हुआ करता था व समाज में पर्व की दिनांक को लेकर भ्रम नहीं रहता था। परन्तु जब से '**बाणवृद्धिरसक्षयः**' सिद्धान्त का अपलाप करने वाले दृश्य गणित आधारित पञ्चाङ्ग बढ़े तब से पर्वों का यह सरस संयोग भी टूट गया व एक ही पर्व दो दो दिन होने लग गया।

व्रतपर्वों के काल निर्धारण का सर्वमान्य ग्रन्थ निर्णयसिंधु है, जिसे सभी पञ्चाङ्ग मानते हैं। निर्णयसिन्धुकार आचार्य कमलाकर भट्ट ने पर्व निर्णय हेतु अदृष्ट सूर्यसिद्धान्तीय गणित को वेद के समान कहकर स्वीकार किया है। स्पष्ट है कि व्रत पर्व का सटीक निर्धारण इसी गणित से हो सकता है। पर जब आचार्य कमलाकर के इस निर्णय को नकारकर सूर्यसिद्धान्त को छोड़ दिया जाएगा व भौतिक स्थूल दृश्य गणित अपनाकर उन्हीं के ग्रन्थ से व्रत पर्वों का निर्णय किया जाएगा तो वह निर्णय शास्त्रसम्मत कैसे हो सकेगा?

अदृष्टफलसिद्ध्यर्थं यथार्काद् युक्तितः कुरु।
गणितं यद्वि दृष्टार्थं तद्दृष्ट्युद्भवतः सदा।

– आचार्य कमलाकर भट्ट, सिद्धान्ततत्त्वविवेक, मध्य0 326

अर्थात् एकादशी आदि व्रत अदृष्टफल के जनक हैं, इनका निर्णय सूर्यसिद्धान्त-साधित ग्रहों द्वारा करे और जो सूर्यग्रहण आदि प्रत्यक्ष आकाश में दर्शनीय हैं, उनका दृश्यगणित से करे।

आचार्य आनन्दगिरि ने स्मृतिसमुच्चय में कहा है,

सूर्यसिद्धान्तशास्त्रेण सम्मानीता ग्रहाः सदा ।
नित्ये कर्मण्युपादेया न तु दृग्गणितागताः ।।
सूर्यसिद्धान्तपंचांगं विलोक्यैव प्रवर्तयेत् ।
प्रमाणं तदिति ज्ञेयमन्यथा व्याकुलं भवेत् ।।

अर्थात् सूर्यसिद्धान्तीय रीत्या प्राप्त ग्रह ही सदा सम्माननीय व नित्यकर्म में उपादेय हैं, दृग्गणित के ग्रह नहीं। सूर्यसिद्धान्त पञ्चाङ्ग का अवलोकन करके ही व्रत उपवसादि शास्त्रीय कर्मों को करना चाहिए। यह पञ्चाङ्ग ही (कालनिर्णय के लिए) प्रमाण है, ऐसा जानना चाहिए अन्यथा किया गया कर्मानुष्ठान व्याकुल (निष्फल या अल्पफल वाला) ही होता है।

सूर्यसिद्धान्तीय पञ्चाङ्ग में व्रत पर्वों का भेद केवल साम्प्रदायिक सिद्धान्त के भेद के कारण आता है अतः बहुत ही कम दृष्टिगोचर होता है, व पर्वों में एकरूपता रहती है। सूर्यसिद्धान्तीय गणित के पञ्चाङ्ग में कभी गणित के दोष से व्रत त्यौहार का विखण्डन नहीं होता। उदाहरणतया –

संवत्	वर्ष में स्मार्त्त वैष्णव में विभक्त एकादशियों की संख्या (जयपुर)		
	सूर्यसिद्धान्तीय पंचांग	दृग्गणितीय पंचांग	कुल एकादशी
2081	1	4	24
2080	0	3	26
2079	1	6	24
2078	2	6	24

दृश्य पंचांगों में जितनी भी अतिरिक्त एकादशियाँ गणितभेद से वैष्णव-स्मार्त्त में विभक्त हुई हैं, उसमें त्रुटिपूर्ण तिथि पर बिना पर्व के व्रत करने पर व्रती को कैसे पुण्यफल प्राप्त होगा? अन्य व्रत पर्वों की भी ऐसी ही स्थिति है। स्वयं विचार कीजिए, क्या ऐसा पर्व विखण्डन का कुचक्र शास्त्रसम्मत है? शास्त्रों के स्वानुकूल अंशों को ले लेना, मोहवश अन्यांशों का प्रतिकूलता के कारण छोड़ देना पतन का कारण है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने चन्द्रयान के वैज्ञानिकों से की सूर्यसिद्धान्त के महत्त्व पर बात

इस वर्ष ISRO द्वारा चन्द्रयान-3 मिशन की सफलता से राष्ट्र गौरवांवित है। इस अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 26 अगस्त 2023 को इसरो केन्द्र में इसरो वैज्ञानिकों को दिए अपने संदेश में भारतीय ज्योतिषशास्त्र के मूलभूत महान गणित ग्रन्थ सूर्यसिद्धान्त के प्रति अपना सम्मान प्रकट करते हुए सूर्यसिद्धान्त से श्लोक उद्धृत किए व युवाओं को भारतीय शास्त्रों में बताए गए गणितीय फार्मूलाज़ के शोध के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर चन्द्रयान के वैज्ञानिकों के बीच प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदीजी ने कहा,

''हमारे यहां सदियों पहले अनुसंधान परंपरा के आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, वराह मिहिर और भास्कराचार्य जैसे ऋषि मनीषी हुए थे। जब धरती के आकार को लेकर भ्रम था, तब आर्यभट्ट ने अपने महान ग्रंथ आर्यभट्टीयम में धरती के गोलाकार होने के बारे में विस्तार से लिखा था। उन्होंने एक्सिस पर पृथ्वी के रोटेशन और उसकी परिधि की गणना भी लिख दी थी। इसी तरह सूर्यसिद्धान्त, सूर्यसिद्धान्त जैसे ग्रन्थों में भी कहा गया है,

सर्वत्रैव महीगोले, स्वस्थानम् उपरि स्थितम् ।
मन्यन्ते खे यतो गोलस् तस्य क्व ऊर्ध्वम क्व वाधः।।

– सूर्यसिद्धान्त, भूगोलाध्याय, 53

अर्थात् पृथ्वी पर कुछ लोग अपनी जगह को सबसे ऊपर मानते हैं लेकिन यह गोलाकार पृथ्वी तो आकाश में स्थित है। उसमें ऊपर और नीचे क्या हो सकता है ? यह उस समय लिखा गया था। यह तो मैंने सिर्फ एक श्लोक आपको बताया है। ऐसी अनगिनत रचनाएं हमारे पूर्वजों ने लिखी हुई हैं। सूर्य चन्द्रमा और पृथ्वी के एक दूसरे के बीच में आने से ग्रहण की जानकारी हमारे कितने ही ग्रन्थों में लिखी हुई पाई जाती है। पृथ्वी के अलावा अन्य ग्रहों के आकार की गणनाएं, उनके मूवमेंट से जुड़ी जानकारी भी हमारे प्राचीन ग्रन्थों में मिलती है।''

धर्मनगरी जयपुर के आराध्य देव

श्रीमोती डूंगरी गणेश जी

श्रीसूर्यनारायण जी, गलताजी
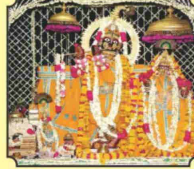
श्रीराधागोविन्ददेव जी

श्रीताड़केश्वर महादेव जी

श्रीशिला माता, आमेर

श्रीखोले के हनुमान जी

मार्गशीर्ष कृष्ण पञ्चमी, 2 दिसम्बर 2023 को श्रीमाधोबिहारी जी के मंदिर, जयपुर में आयोजित श्रीनिम्बार्क जयन्ती महोत्सव में श्रीशुकसम्प्रदाय पीठाधीश्वर अनन्तश्रीविभूषित श्रीअलबेलीमाधुरीशरण जी महाराज जयपुर, महन्त श्रीवृन्दावनदासजी वृन्दावन, आचार्य महामण्डलेश्वर श्रीमहन्त स्वामी श्रीपद्मनाभशरण देवाचार्यजी महाराज, जयपुर, श्री प्रवीण जी महाराज, महंत श्री योगेश जी स्वामी, महंत श्री अशोक जी, श्री देवेश चंद्र स्वामी अध्यक्ष श्रीनिम्बार्क परिषद्, श्री अमित शर्मा, महामंत्री श्रीनिम्बार्क परिषद्, श्री मुदित मित्तल द्वारा इस पंचांग को श्रीसर्वेश्वर प्रभु और श्रीनिम्बार्क भगवान् को समर्पित कर विमोचन किया गया।

संरक्षक-मार्गदर्शक

श्रीमहन्त
श्रीवृन्दावनबिहारीदास जी
महाराज 'काठिया बाबा'
सुखचर

महन्त
श्रीबनवारीशरण
जी महाराज, प्रन्यासी
अ.भा. निम्बार्काचार्यपीठ

महन्त श्रीवृन्दावनदास जी
महाराज, महामंत्री अ.भा.
श्रीनिम्बार्क महासभा, प्रन्यासी
अ.भा. निम्बार्काचार्यपीठ

आचार्य महामण्डलेश्वर
श्रीमहन्त स्वामी
श्रीपद्मनाभशरणदेवाचार्य
जी महाराज, परमाध्यक्ष
श्रीनिम्बार्क परिषद्

आचार्य श्री विनय झा
गणितज्ञ
श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग

पं. श्री आदित्यमोहन शर्मा
प्रधान सम्पादक
जयविनोदी जयपुर पञ्चाङ्ग

आ. श्री कामेश्वर उपाध्याय
राष्ट्रीय महासचिव
अ.भा. विद्वत्परिषद्

पं. श्री गंगाधर पाठक
मुख्याचार्य श्रीरामजन्मभूमि
शिलापूजन, अयोध्या

श्री सुराचार्यः

श्री भूमिपुत्रः

श्री जयादित्यः

श्री भार्गवः

श्री सौम्यः

श्री सूर्यनन्दनः

यह श्रीसूर्यसिद्धान्त पर आधारित राजस्थान का एकमात्र श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग, श्रीनिम्बार्क परिषद्, जयपुर ने एस.एस. ग्राफिक्स, जयपुर से छपवाकर प्रकाशित किया।

श्री सोमः

-: पञ्चाङ्ग प्राप्ति स्थल :-

श्रीसर्वेश्वर निम्बार्क सेवाधाम
36 ई (डी), बालाजी ब्लैसिंग 20, श्रीमंगलम गार्डन
से पहले, गणतपुरा रोड़, भांकरोटा, जयपुर-26
मो.: 9571108902

मन्दिर श्रीसरसबिहारी जी
मुख्य बाजार, कलवाड़ा
जयपुर-302027
मो.: 7425824413

श्री सिंहिकासुतः

पंडित मोहित शर्मा
शिवशक्ति ज्योतिष केन्द्र, 22, कैलाशपुरी
न्यू सांगानेर रोड़, सोड़ाला, जयपुर-302019
मो.: 9829486839

ईश्वरलाल बुक सैलर
त्रिपोलिया बाजार
जयपुर-302002
फोन : 0141-2575532

श्री ध्वजाकारः

E-mail : ssjayadityapanchang@gmail.com
Website : www.nimbarkparishad.com

मुद्रक : **एस. एस. ग्राफिक्स,** 240, सौंखियों का रास्ता
किशनपोल बाजार, जयपुर, मो.: 9828435238
ईमेल : ssgraphics1997@hotmail.com

₹ 120/-